

موسوعهفهبيه

شائع کرده وزارت او قاف واسلامی امور ،کویت

جمله هقو ق بحق وزارت اوقاف واسلامی امورکویت محفوظ بین پوسٹ بکس نمبر ۱۱۳ وزارت اوقاف واسلامی امور کویت

اردو ترجمه

اسلا مک فقه اکی**ر می** (انڈیا) 161-F ،جوگلائی، پوسٹ بمس9746، جامعۀگر،نی دیلی -110025 فون:26982583, 971-11

Website: http/www.ifa-india.org Email: ifa@vsnl.net

اشاعت اول: وسيما صر ومنهاء

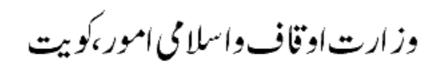
ناشر

جينوين پېليكيشنز اينكميكيا(پرائيويت لميشيك)

Genuine Publications & Media Pvt. Ltd. B-35, Basement, Opp. Mogra House

Nizamuddin West, New Delhi - 110 013

----Tel: 24352732, 23259526,



موسوعه فقهيه

اردوترجمه

جلد – ۱۰

ــــ تحياة

تأبد

مجمع الفقاء الإسالامي الهنا

ينيه الغالجيني

﴿ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَافَةً فَيُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللّ

(سورۇتۇپەر ۱۲۲)

'' اورمومنوں کو نہ چاہئے کہ (آئندہ) سب کے سب نکل کھڑے ہوں ، یہ کیوں نہ ہو کہ ہر گروہ میں سے ایک حصہ نکل کھڑا ہوا کر ہے، تا کہ (بیہ باقی لوگ) دین کی سمجھے ہو جھ حاصل کرتے رہیں اور تا کہ بیہ اپنی قوم والوں کو جب وہ ان کے پاس واپس آ جائیں ڈراتے رہیں، عجب کیا کہ وہ مختلط رہیں!''۔

"من يود الله به خيرًا يفقهه في الدين" (بخارى وسلم) "الله تعالى جس كے ساتھ خير كاار ادوكرتا ہے اسے دين كى سمجھ عطافر ماديتا ہے"۔

فهرست موسوعه فقهيه

علد - ۱۰

| pr pr | تأبد | |
|----------------|---|--------------|
| | و کیسے: آبد | |
| m ~- mm | تأبيد | r" - 1 |
| propr | تعريف | 1 |
| prpr | متعاقبه الفاظة تتخليد | * |
| ما سو | تا بیدیاعدم تا بید کے اعتبار سے تضرفات | \$ ** |
| ٣,٣ | تاً بين | |
| | د کیجین: رنا ء | |
| ٣,٣ | تأجيل | |
| | و کیھئے: اُجِل دیکھئے: اُجِل | |
| ٣,٣ | تأخر | |
| | و يکھئے ۽ تا خير | |
| 71-ma | تاً خير | mr-1 |
| ۳۵ | تعريف | 1 |
| ۳۵ | متعاضه الغاظ متراخي بنوره تاجيل بتجيل | ۵-۲ |
| ۳٩ | اجهالي تحكم | ٩ |
| ٣٧ | نما زكومؤفركرنا | 4 |
| ٣٧ | یانی نہ یانے والے کے لئے نماز کومؤ خرکرنا | Λ |
| m2 | پاعذرنما زکومؤفرکرنا بلاعذرنما زکومؤفرکرنا | 9 |
| r _A | ادائيگى زكوة كومؤخركرنا | 1• |
| | | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-----------------|---|-------|
| μ_{Λ} | روز ه کی قضا کومؤ څر کریا | 11 |
| p۳q | هج کومؤ څرکرنا | Jan 1 |
| p۳q | رمی جمارکوموَ خرکرنا | II. |
| ۱۳ | ایام تشریق سے طواف افاضہ کومؤ خرکرنا | اهُ |
| ١٦ | حلق یا تصر کی تاخیر | 11 |
| 44 | وأن ميت كومؤ شركرنا | 14 |
| 44 | كفارات كومؤخركرنا | ĮΑ |
| 44 | الغب - كفار ، ئيمين كوم وَخر كرنا | IA |
| 44 | ب-كفار ، ظبهاركوم وخركرنا | 19 |
| 44 | صدقة أطرك ناخير | ۲. |
| للولم | روز ه کی نبیت کوموَ شر کرنا | *1 |
| 44 | نما ز کی قضا کومؤ خرکرنا | ** |
| 44 | وتركوم وَشركرنا | *** |
| ۳۵ | سحری کومؤخر کرنا | +~ |
| ۳۵ | ادائے قرض میں تاخیر کرنا | ۴۵ |
| ٣٦ | مپرکومؤٹرکرنا | 44 |
| ٣٦ | بیوی کے نفقہ کومؤ خر کرنا | +4 |
| ٣٦ | سودی ہو ال میںعوضین میں ہے ایک کی حوالگی میں ناخیر کرنا | ** |
| ٣٦ | حدثائم کرنے میں تا خیر کرنا | +9 |
| 47 | وعوی قائم کرنے میں تاخیر کرنا | μ, |
| ۴۸ | اوائے شہاو ت میں تا خیر کرنا | اللو |
| ۴۸ | نما ز کی صفوں میں عور توں اور بچوں کو ہیچھے کرنا | ** |
| 07-ra | تاً دیب | 11-1 |
| ٩٣ | تعريف | 1 |
| ٩٣ | متعاقبه الغاظ فانتعزير | , |
| ۹۳ | تا دبیب کاشر تی حکم | μ |
| | | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-------|--|------|
| ۵٠ | ولايت تا ديب | ۴ |
| ۵۲ | جن چیز وں میں غیر حاکم کے لئے تا دیب جائز ہے | ۵ |
| ۵۶۰ | تا دبیب کے اخر اجات | ۲ |
| ۵۶۰ | تا دیب کے طریقے | 4 |
| ۵۶۰ | بیوی کی تا دیب کے طر <u>یق</u> | Δ |
| ۵۳ | <u>ے ک</u> کا ویب کے طریقے | 9 |
| ۵۳ | تا دبیب میں مقد ارمعروف ہے تجاوز | 1. |
| ۵۵ | تا دیب معروف سے بلا کت | 11 |
| ۲۵ | چو پایدیکی تا دبیب | 11* |
| ۲۵ | بحث کے مقامات | lan. |
| 402 | تأريخ | 9-1 |
| ۵۷ | تعريف | 1 |
| ۵۷ | متعاقبه الغاظة اجلءميقات | , |
| ۵۷ | تاریخ کاشرق حکم | ۴ |
| ۵۸ | تاریخ اسلام سے پہلے | ۵ |
| ۵۸ | تاریخ ہجری متعین کرنے کا سبب | ۲ |
| దిశ | سٹسی سال کی تاریخ جو ہجری تاریخ ہے جدا ہے | 4 |
| ۵۹ | معاملات میں ہجری تا رہے کئے علاوہ دوسری تا رہے استعمال کرنے کا حکم | Λ |
| ٧٠ | بحث کے مقامات | 9 |
| Z1-Y1 | تاً قيت | 10-1 |
| 41 | تعريف | 1 |
| 41 | متعاقبه الغاظة اجلءاضافت، تابيد، تاجيل تعليق | , |
| 400 | تضرفات میں تا نیت کا اثر | 4 |
| 400 | اول: وہ تصرفات جومؤنت عی واقع ہوتے ہیں | Δ |
| 46 | دوم: غيرمؤفت تضرفات | 1. |
| 44 | سوم: وہ نضر فات جن میں مدت مجھی متعین ہوتی ہے اور مجھی غیر متعین | 14 |

| صفحه | عنوان | فقره |
|------------|--|------|
| 24-2 | تاكيد | 0-1 |
| ۱ کے | تعريف | 1 |
| ∠1 | متعاقبه الفاظة تأسيس | * |
| 44 | اجها في تحكم | ٣ |
| 44 | اقو ال کی تا کید | ۴ |
| 4 | افعال کے ذریعیہ تا کید | ۵ |
| 4٣ | تأميم | |
| | و يکيئے: مصاورة | |
| 4٣ | تأبين | |
| | د يکھئے: اُملين اور مستامن | |
| 4٣ | تأمين الدنياء | |
| | و كيصَّة آمين | |
| 29-2m | | 9-1 |
| 294 | تعری <u>ف</u> | 1 |
| 200 | م تعاقبه الفاظ بيني م بيان س | * |
| 44 | اجها في تحكم | ٣ |
| 44 | تاویل کارژ | ۲ |
| 44 | اول: جس تاویل کے نساد اور اس پر مرتب ہونے والے نتائج پر اتفاق ہواں کی مثالیں | 4 |
| 22 | دو م: وہ ناویل جس کے قبول کرنے پر اتفاق ہے | Α |
| 44 | سو م: وہ تا ویلات جن کے قبول کرنے میں اختلاف ہے م | ٩ |
| 4 9 | تابع | |
| | ديكهنئ ومبعيه | |
| 4 9 | تابوت | |
| | و يکھنے: جنائز | |
| ∠9 | تاریخ | |
| | و کیھئے: تا ریخ | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-------|---|----------|
| Λ1-∠9 | تاسونهاء | r_1 |
| 49 | تعریف | 1 |
| 49 | متعاقله الفاظة عاشوراء | + |
| Δ. | اجهافي تظم | * |
| Δi | تبختر | |
| | د تکھئے: اختیال | |
| 10-11 | تبديل | 4-1 |
| Δř | تعريف | 1 |
| Δř | اجها في تحكم | + |
| ۸r | وقف میں تبدیلی | * |
| A# | چ میں تبدیلی خ | ** |
| A# | الف يسرف مين تبديلي | ۳ |
| Apr | ب۔عفد میں متعین ہوجانے کے بعدعوضین میں سے کسی ایک کی تبدیلی | ٣ |
| Apr | دین میں تبدیلی | ۵ |
| ۸۳ | لعان میں شہا دے کی تبدیلی | ۲ |
| ۸۵ | زکاة کی تبدیلی | 4 |
| 19-10 | يبذل | <u> </u> |
| ۸۵ | تعريف | 1 |
| FA | تبذل كااجمالي تتكم | + |
| 9+ | تبذير | |
| | و کیجئے : اسراف | |
| 94-9+ | تنبر | 4-1 |
| 9. | تعري <u>ف</u> | 1 |
| 9. | تغير ہے تعلق احکام | * |
| 9. | تغيريين ربإ | , |
| 16 | سونے اور جاندی کے نہ ڈیھلے ہوئے لکڑے میں زکا ق | gu. |
| 91 | شرکت میں تغیرکور اس المال بنانا | ۳ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|--|------|
| 98 | تغر جوز مین ہے نکالا گیا ہو | ۵ |
| 98 | بحث کے مقامات | ۲ |
| 91 | تترتر و | |
| | و کیجئے: براءت | |
| 94-92 | تبرج | A-1 |
| qu. | تعريف | 1 |
| qu. | متعاقبه الفاظة تزين | , |
| ٩۴ | جن چیز وں کا اظہار نیرج کہلاتا ہے | ۳ |
| 96 | تنبرج كاشرق بحكم | ۴ |
| 96 | عورت كانغرج | ۴ |
| 90 | مر د کانبرج | ۵ |
| 90 | الف یتبرج 'فاتل ستر اعضاءکوظاہر کرنے کے ذریعیہ | ۵ |
| 90 | ب یتیرخ اظهارزینت کے ذرمعیہ | ۲ |
| 90 | ذم _ة كانغرج | 4 |
| 44 | تغیرج ہے رو کئے کامطالبہ کس ہے ہوگا | Δ |
| 94 | تغبرز | |
| | و كيهيئة: قضاءالحاجة | |
| 1++-94 | تنبرع | 9-1 |
| 94 | تعريف | 1 |
| 94 | متعاقله الفاظة تطوع | , |
| 94 | تغمرت كاشر تن تحكم | ٣ |
| 99 | تغیر ع کے ارکان | ۲ |
| 99 | تغرث کی شرطیب | 4 |
| 99 | تغربْ کے بتائج | Λ |
| 1 * * | تغمر ٹ کب ختم ہوتا ہے ر | 9 |
| 1+4-1+1 | تبر ک | 14-1 |
| 1+1 | تعريف | 1 |
| | | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|--------|--|-------|
| 1+1 | متعاقبة الغاظة تؤسل، شفاعه، استغاثه | + |
| 1+1 | شرقی تقکم | ۵ |
| 1+1 | اول ۔ بشم اللہ اورالحمدللہ کے ذر معیۃ تیرک | ۵ |
| 1+1 | دوم۔ آٹارنبی علی ہے برکت حاصل کرنا | 4 |
| 1.50 | الف - آپ علی کے وضو سے ہرکت حاصل کرنا | 4 |
| 1.50 | ب۔ آپ علیضہ کے تھوک اور رینٹ سے ہر کت حاصل کرنا | Λ |
| 1.50 | ج ۔ آپ علی کے خون سے برکت حاصل کرنا | 9 |
| 1+1~ | د ۔آپ علی کے موے مبارک ہے ہر کت حاصل کرنا | 1. |
| ۱۰۴۰ | ھ۔آپ ملکنٹے کے جو ٹھے اورآپ ملکنٹے کے کھانے سے ہر کت حاصل کرنا | 11 |
| ۵۰۱ | و۔آپ ملیفی کے اخن ہے ہر کت حاصل کرنا | 14 |
| ۵۰۱ | ز۔آپ علی کے کہای اورآپ کے برتنوں سے بر کت حاصل کرنا | سوا |
| ا ۲۰۹ | ح - ان چیز وں سے ہر کت حاصل کرنا جنہیں حضور علی نے چیموایا جہاں نما زیر بھ | المر |
| 1+4 | سوم۔آب زمزم سے برکت حاصل کرنا | ۱۵ |
| 1+4 | چہارم ۔نکاح میں بعض زمانوں اور جگیوں ہے ہر کت حاصل کرنا | 11 |
| 1+4 | تبط | |
| | د کیھئے: توسعہ | |
| 1+A | تبع | |
| | د کیجے: تابع | |
| 1+A | سبغض | |
| | د کھئے : معیض | |
| 1+A | تبعة. | |
| | د کیھئے: اتبائ مضمان | |
| 154-1+ | * 2." | r~1-1 |
| 1•4 | تعریف | r |
| I+A | متعاقبه الغاظ: تفري ق | , |
| 1+9 | شرقی تقلم | ۳ |
| 1+9 | رے اہم قو اعد جن رہ معیض کے مسائل واحکام مبنی ہیں | ٣ |
| | | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-------|---|-------|
| 1+9 | الف ۔ قاعدہ: غیر متجزی کے بعض کا ذکر کل کے ذکر کی طرح ہے | ۵ |
| | ب۔ جو چیز بدل ہوکر جائز ہوئی ہووہ بعیض کی وجہ ہے ایک ساتھ | ۲ |
| 1+9 | ىدل اورمبدل مندمين داخل نبيس ہوسكتى | |
| 1+9 | ج ۔ قاعدہ: آ سان چیز سخت چیز کی وجہہ سے سا قطنبیں ہوتی | 4 |
| 11+ | احكام ببعيض | Α |
| 11+ | طبهارت ملين مبعيض | Α |
| 115 | نما زمین مبعیض | 11 |
| 115 | ز کا قامین سمجیض | 15 |
| 1150 | روز دمين مبعيض | سوا |
| سوا ا | حج میں مبعیض | 11~ |
| سوا ا | الف: احرام ميں مجين | 11~ |
| 1150 | ب بطواف میں مبعیض | اهُ |
| ШY | نذ رمین مبعیض | 14 |
| 110 | كفاره مين مبعيض | 14 |
| ۵۱۱ | ينطع مين مبعيض | ĮΑ |
| ۲n | تیمی (قیت والی)چیز وں میں مبعیض | +1 |
| 114 | خيارعيب مين مبعيض | ** |
| 114 | شفعه مين تبعيض | ++- |
| ΠA | سلم میں مبعیض | ** |
| 119 | فترض میں مجیض | ۲۵ |
| 119 | رجهن ملين مبعيض | +4 |
| 14. | صلح میں مبعیض | +9 |
| 14. | مبيه م ين مبعيض | ٠., |
| i ti | ودلعت مين تبعيض | اس |
| 171 | وقف میں سبعیض | ** |
| 171 | غصب مين تبعيض | بوبو |
| 177 | قصاص میں شبعیض | يم سو |
| 1440 | عدقذ ف سےمعاف کرنے میں تبعیض | ۳۵ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|----------------|---|--------|
| 1550 | مهر کی مبعیض | ۳٩ |
| 17 (* | طلاق میں معیض | m2 |
| 11 (* | مطاقعه مين فبعيض | ٣Λ |
| 11 (* | وصيت مين مبعيض | وسو |
| 110 | آ ز اوکرنے میں معیض | ٠٠ |
| 144-142 | تبعية | 11-1 |
| 11-2 | تعريف | 1 |
| 11-2 | تبعید کے اقسام | ۲ |
| 114 | فشم اول: جومتبوٰ کے منصل ہو | , |
| 11-4 | فشم دوم: جواپنے متبوع سے حدا ہو | ٣ |
| IFA | مربعیت کے احکام | ۴ |
| IFA | الف: نابع پر (متبوت ہے) الگ حکم نہیں لگتا | ۵ |
| ہے ہو 149 | ب: جو شخص کسی چیز کاما لک ہوتو وہ اس کا بھی ما لک ہوگا جو اس کی ضروریات میں | 4 |
| 149 | ج: نابع متبوئ کے ساتھ ہونے سے ساتھ ہوجا نا ہے | 4 |
| المعا | د: تو الع میں وہ چیز معاف کردی جاتی ہے جو غیرتو ابع میں معاف نہیں کی جاتی | Α |
| 1000 | ھ: تا بعے متبوع پرمقدم نہیں ہوتا | 9 |
| 1424 | و: تا لِع کا تا لِع نہیں ہوتا | 1. |
| lende | ز:اعتبارمتبوع کی نبیت کا ہے نہ کہ تا بعج کی نبیت کا | 11 |
| [pupu | ح: جوچیز ﷺ میں مبعا داخل ہوتی ہے اس کانتمن میں کوئی حصہ نہیں ہوتا | IF. |
| مها سوا | ط: تعدی کرنے کی وجہ سے تا جع کا ضان ہوگا | lan. |
| براسطا – 4 مرا | تنبخ | ۱ – ۱۳ |
| مها سوا | تعريف | 1 |
| 1920 | تمباكو ہے تعلق احكام | ۴ |
| 1920 | تمباکواستعال کرنے کا تھکم | ۴ |
| 1920 | تمباکو کی حرمت کے ٹاکلین اور ان کے د لائ ل | ۵ |
| IμΩ | تمباکو کے جواز کے قائلین اوران کے دلائل | lan. |
| 16.1 | تمباکو کی کراہت کے قائلین اوران کے د لائ ل | ۲٠ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|---|-------|
| 16.1 | مساحد بتر آن وبلم کی مجالس اور محفلوں میں تمبا کونوشی کا تھکم | *** |
| سوتهما | تمباكوكي تجارت اوركاشت كاتحكم | +4 |
| الدلد | تمباکوک پاک اورنا پاک کاشکم | +9 |
| ۵۳۵ | تمباكونوشى ہےروزہ كا ٹوٹنا | ۳. |
| 1100 | شوہر کا بیوی کوشبا کو نوش ہے منع کرنے کاحق | اس |
| 16.4 | ہیوی کے نفقہ میں تمبا کو | ** |
| 16.4 | تمباكو كے ذر معيد ملاح كأحكم | pupu |
| 16.4 | تمباکونوشی کرنے والے کی امامت | سم سو |
| 149-142 | تبكير | A-1 |
| 184 | تعريف | 1 |
| 184 | متعاقبه الفاظة تعليس وإسفار | , |
| 184 | شرتی تیم | ۴ |
| 16.V | علاش رزق کے لئے سور سے تکامنا | 4 |
| IFA | تعليم ميں جلدی کرنا | Α |
| 10-109 | "بليغ | 4-1 |
| 9 ١١٠ | تعريف | 1 |
| ۱۵۰ | متعاقبه الغاظة كتابت | , |
| ۱۵۰ | شرتی تکم | μ |
| 10 + | پیغام رسانی | μ |
| اھا | اسلامی دعوت کی تبلیغ | ۴ |
| اھا | امام کے پیچیے تبلیغ | ۵ |
| iat | ساام پرینچا نا | ۲ |
| 1000 | حاکم کو پوشیدہ جرموں کے ہا رہے میں اطلاع دینا | 4 |
| 100-104 | تنبني | 4-1 |
| 100 | تعریف | 1 |
| ۳۵۱ | متعاقبه الغاظة أتتلحاق ، بنوت ، اتر ارنسب ،لقيط | , |
| ۱۵۳ | شرقی تحکم | ۲ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|---|------|
| 107-100 | تبوءة | |
| اهما | تعريف اوراجمالي تحكم | 1 |
| 104-107 | تبيع | r-1 |
| 104 | تعريف | 1 |
| 104 | شرق تحكم | * |
| 17+-102 | "مبييت | 4-1 |
| 104 | تعريف | 1 |
| 164 | متعاضه الفياظة إغارة ، بيتونند | , |
| 164 | تبييت كأظكم | ۴ |
| 164 | اول: تبييت العدو(دشمن پرشب خوں مارنا) | ۴ |
| 9 شا | دوم: رمضان کےروز ہ کی نبیت رات میں کرنا | ۲ |
| + 11 | بحث کے مقامات | ∠ |
| 121-14+ | تابع | 11-1 |
| + ٢1 | تعريف | 1 |
| 14+ | اجها في تحتم | , |
| 14+ | کفار و کیمین کے روز ہے میں تابع | p. |
| 171 | کفار ¿ظہار کے روز ہے میں ت آبع ت | ۴ |
| 144 | مضان کے دنوں میں روز دنؤ ژنے پر جو کفارہ واجب ہے اس کے روز وں میں تسلسل | ۵ |
| 1465 | کفار م ^ق ِلَ میں روز ہ ت | ۲ |
| 146 | نڈ ریےروزہ میں شکسل بینی | ∠ |
| 146 | اعتکا ف می ں شکسل بتا ب | Δ |
| 411 | کفارات کےروزوں میں شکسل کوشتم کرنے والی چیزیں | 9 |
| 411 | الف - اکراه پاسهووغیره کی وجهه ہےروز د نوژ دینا | 9 |
| 144 | ب_حيض ونفاس | 1. |
| 144 | ج _رمضان ،عیدین اور ایام تشریق کا درمیان میں آ جانا | IF |
| AFI | و_سفر | 1940 |
| MA | ھ۔حاملہ اور دودھ پلانے والی عورت کا افطار | الد |

| صفحہ | عنوان | فقره |
|---------|---|------|
| PF1 | و يمرض | ۵۱ |
| PFI | ز _بعض را نؤں میں نبیت بھول جانا | FI |
| PFI | ح _وطی | 14 |
| 14. | جس صورت میں تشکسل نہ نتم ہوای کی قضا | ĮΔ |
| 124-121 | تترس | r-1 |
| 141 | تعريف | 1 |
| 141 | متعاقته الغاظ يتحضن | , |
| 141 | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | ٠ |
| 124-124 | تتريب | r-1 |
| 1494 | تعريف | 1 |
| 1294 | اجهافي تشكم | , |
| 1294 | کتے کی نجاست کو پاک کرنے میں مٹی کا استعمال | , |
| 140 | تتن | |
| | و کیجھئے جمبرفع | |
| 127-120 | تثاؤب | r-1 |
| 140 | تعريف | 1 |
| 140 | شرقی حکم | , |
| 144 | نما زمیں جمائی آنا | ۳ |
| 144 | قر اوسے قر آن کے وقت جمائی | ۴ |
| 121-127 | تثبت | 4-1 |
| 144 | تعريف | 1 |
| 144 | متعاضه الغاظ بتخرى | + |
| 144 | اجها في تحتم | بد |
| 144 | الف منمازيين استقبال قبله كانتبت | بد |
| 144 | ب- کواہوں کی کوامی میں حقیقت کا تثبت | ٣ |
| 144 | ج ۔ ماہ رمضان کے جاند کی رؤیت میں حقیقت کا تثبت | ۵ |
| I∠ Λ | د۔ فاسقوں کے نکلام کا تثبت | ۲ |

| صفحہ | عنوان | فقره |
|---------|--|------|
| 115-129 | تثليث | 4-1 |
| 149 | تعريف | 1 |
| 149 | اجها في تحكم | * |
| 149 | الف _ فِسُومِين تثليث | * |
| 14. | ب عنسل میں شایت | ۳ |
| IA+ | ج م ^{ینس} ل میت میں شلیث | ۴ |
| IAI | د۔امتنجا کے لئے پھر استعال کرنے اور صفائی کرنے میں تثلیث | ۵ |
| IAF | ھ۔رکوٹ اور محبدہ کی تنہیجا ت میں شلیث | ۲ |
| IAF | و-اجازت لينے ميں تثليث | ∠ |
| 114-14 | شنيه | r-1 |
| IAM | تعريف | 1 |
| IAM | بحث کے مقامات | * |
| 110-11 | تيثويب | 4-1 |
| IAM | تعریف | 1 |
| IAM | متعاقبه الفاظ ذند اء، دعا، ترجيع | * |
| IAM | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | ۵ |
| IAA | اذ ان فجر میں تھویب | ۲ |
| 19+-114 | شجارت | 14-1 |
| PAI | تعريف | 1 |
| PAL | تجار ت کےمشر و ٹ ہونے کی د لیل | , |
| PAL | متعاقبه الغاظ: على مسمر ه | ۴ |
| IAZ | شرقي تحكم | ٩ |
| IΔΔ | تجارت کی فضیلت | ∠ |
| IΔZ | ممنوعات تنجارت | Α |
| 1/19 | تنجارت کے آ واب | سوا |
| | | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|--|------|
| 194 | مال تجارت میں زکا قاکا وجوب | IA |
| 195-191 | تجديد | 0-1 |
| 191 | تعريف | 1 |
| 191 | شرقی تحکم | , |
| 191 | کان کے کئے نیا پائی | ۳ |
| 191 | مستخاضہ کے لئے پٹی اور گلدی کی تجدید | ٣ |
| 195 | مربدعورت کے نکاح کی تجدید | ۵ |
| 1914 | , - / , - | |
| | د يکھئے:عورة | |
| 197-192 | نج تج | 9-1 |
| 1950 | تعری <u>ف</u> | 1 |
| 1950 | اجها في تحكم | * |
| 1950 | افطار کےمباح ہونے میں مرض کا اثر اگر تجربہ سے اس کے ہڑھنے کا اند میشہ ہو | , |
| 1950 | مدت خيار مين مبيغ كوآ زمانا | ۳ |
| 1917 | الف - کیڑے کا تجر بہ | ۴ |
| 1917 | ب-مكان كاتجربه | ۵ |
| 1917 | ج -جانورکانجر به | ۲ |
| 190 | بچید کی عقل مندی معلوم کرنے کے لئے اس کا تجربہ | 4 |
| 190 | قیافہ شناس کی مہارت کوجائے کے لئے اس کوآ زمانا | Δ |
| 197 | اہل علم کا تجربہ | 9 |
| 197 | تج وَ | |
| | و کمجھئے: تبعیض | |
| r+4-194 | ستجشس | 12-1 |
| 199 | تعريف | 1 |

| صفحه | عنوان | فقره |
|----------|---------------------------------------|------|
| 194 | متعاقبه الغاظة بحسس برّصد | ٠ |
| 194 | شرق تحكم | ۵ |
| 19A | دوران جنگ مسلمانوں کے تعلق تفتیش کرنا | ۲ |
| * • * | كافر وں كے خلاف جاسوى كرنا | •1 |
| p . p. | حاكم كارعايا كےخلاف جاسوی كرنا | 11 |
| * • 6" | محتب كالتجسس | IF. |
| ۲۰۵ | گھروں کی جاسوی کرنے کی سز ا | 1944 |
| r+4 | بخشو | |
| | د کیچئے:طعام | |
| r+4 | تجل | |
| | ی د کیھئے: تزین | |
| <i>.</i> | ریبے. رین تجمیل | |
| 7+4 | ۰ ین د کھئے: تغییر | |
| | • | |
| r+9-r+2 | ننج بيز ر | 4-1 |
| **4 | تعريف | 1 |
| *** | متحافقه الغاظة إعد ادبتز ويد | * |
| r.2 | تجهيز ہے تعلق احکام | ۴ |
| r.2 | ولبهن کے لئے سامان جہیز تیار کرنا | ۴ |
| F • A | مجاہدین کے لئے اسباب تیارکرنا | ۵ |
| r • 9 | ميت کی تجهيز | ۲ |
| r117-r1+ | شجهيل | A-1 |
| *1* | تعريف | 1 |
| *1* | اجمالي تقكم | , |
| rr+-r10 | تجويد | 4-1 |
| ۵۱۲ | تعريف | 1 |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|---|------|
| ۵۱۲ | متعلقه الغاظ: تلاوت، اداء اور قر اوت برتیل | ٠ |
| ٢١٦ | اجمالي حكم | ۴ |
| FIA | وہ امور جو تجوید کے ذیل میں آتے ہیں | ۵ |
| +19 | تنجوید میں نقص پیدا کرنے والے ہور اور ان کا حکم | 4 |
| **1 | شحالف | |
| **1 | د کیھئے: حاف تحبیس د کیھئے: وتف د کیھئے: وتف | |
| rrr-rr1 | تجير | r-1 |
| **1 | تعريف | 1 |
| **1 | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | ٠ |
| rr-rr | تخديد | 0-1 |
| *** | تعريف | 1 |
| *** | متعاقبه الغاظة تعيين ، تقذير | , |
| *** | اجهالي تحكم | ۴ |
| +++ | بحث کے مقامات | ۵ |
| ***-*** | تحرّ ف | r-1 |
| +++ | تعريف | 1 |
| *** | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | , |
| 127-22 | تحری | 14-1 |
| *** | تعريف | 1 |
| *** | متعامقه الغاظة اجتهاد ، توقى مظن ، شك | , |
| 444 | شرعي حثم | ۲ |
| | اول ۔ پاک اورنا پاک اشیاء کے با جمعل جانے کی صورت میں | 4 |
| 444 | یا کشی کومعلوم کرنے کے لئے تحری کرنا | |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|---|------|
| PP4 | الف - برتنون كالماتهم مل جانا | 4 |
| *** | ب- كيثر ون كاما جم مل جانا | Δ |
| *** | ج ۔مذبوح جانور کامر دار کے ساتھال جانا | ٩ |
| rta | د ـ حالت حيض مي <i>ن تحر</i> ي | 1. |
| rta | دوم-استدلال اورتجری کے ذریعیہ قبلہ معلوم کرنا | 11 |
| , w. | سوم ۔نماز میں تحری کرنا | len. |
| rr. | چېارم ــروز د مين تحري کرنا | البر |
| *** | پنجم ۔زکاۃ کے سنتھین کی شاخت میں تحری کرنا | ۱۵ |
| *** | مششم ۔ چندمتعارض قیاسوں کے درمیان تحری کرنا | 14 |
| *** | بحث کے مقامات | 14 |
| rmm-rmr | تحریش | r-1 |
| *** | تعريف | 1 |
| *** | متعاقله الغاظة تحريض | + |
| parar | شرقی حکم | ju. |
| 444-444 | تح يض | 9-1 |
| **** | تعريف | 1 |
| 444 | متعاقبه الفاط: تشبيط، إرجاف تجريش | * |
| 444 | شرق تحتم | ۵ |
| **** | قال کے لئے مجاہد ین کی تحریض | ۲ |
| **** | مقابله كي تحريض | 4 |
| **** | جانورگ <i>ن تخریض</i> | Λ |
| PPY | محرم کی طرف سے شکار کے لئے کتے کی تحریف | 9 |
| 444-444 | تحريف | 9-1 |
| 444 | تعري <u>ف</u> | r |
| r#2 | متعاقبه الفاظ فتصحيف متزور | ٠ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|---------|--|------|
| ۲۳۸ | تخریف وقصحیف کے انسام | ٣ |
| ***A | تخريف وتصحيف كاحكم | ۵ |
| +49 | الف ۔ اللہ تعالی کے کلام میں تحریف | ۵ |
| +~1 | ب -احادیث نبویه می <i>ش گریف وضحی</i> ف | ۲ |
| *** | تصحيف كأشكم | ۲ |
| *** | تضحیف کی اصلاح | 4 |
| *** | قر آن وحدیث کے علاوہ میں تصحیف وتحریف | Δ |
| * (* * | تخریف وضحیف ہے بچنا | 9 |
| *~~ | تحريق | |
| | د کیھئے: اِحراق | |
| tat-t~~ | <u>(£ 5</u> | A-1 |
| * ~ ~ | تعري <u>ف</u> | 1 |
| ۴۳۵ | متعلقه الفاظة كرابت | , |
| F 17 4 | اجمالي تحكم | gu. |
| 464 | اول ۔ بیوی کی تخریم | ۳ |
| ra- | دوم ۔حلال کوحرام کرنا | Α |
| rar | ~£. } | |
| | ويكصئ بتكبيرة الاحرام | |
| rym-rar | عنحسيين م | r9-1 |
| rar | تعریف بر | 1 |
| rar | م بيحالقه النياظ: تجويد ، تحليه ، تقبح | ٠ |
| ۲۵۳ | تخسین و تقبیح کی بنیا د منابع | ۵ |
| tar | تحسينيا ت | ۲ |
| ۲۵۲ | فقه اسلامی میں شخسین کا حکم | 4 |
| tar | شكل وصورت كوآ راستدكرنا | Δ |

| صفحہ | عنوان | فقره |
|---------|--|----------------|
| *00 | لباس کی تزنمین | 11 |
| 101 | آنگن کوخوبصورت بنانا | 17 |
| r 02 | منجد جائے وقت مزین ہونا | lan. |
| r 02 | ملا تات ،سلام اوراس کے جواب میں اچھاطر یقنہ اپنا نا | II~ |
| r 02 | الحيحىآ وازبنانا | ۱۵ |
| ran | اجنبی لوکوں کے سامنے عورت کا اپنی آ واز کومز بن کرنا | rı |
| r 61 | رفتار کومزین کرنا | 1 4 |
| 109 | اخلاق کومز ین کرنا | IA |
| 109 | حسن ظن قائمُ ركھنا | 19 |
| 109 | الف ۔ اللہ تعالی کے ساتھ حسن ظن رکھنا | 19 |
| +4+ | ب مسلمانوں کے ساتھ حسن ظن رکھنا | ۲. |
| +4+ | تخرير کوشين بنانا | +1 |
| +4+ | مُنْكِيتر خانون كي آ رائش | ** |
| 144 | قر آن کریم کوآ راسته کرنا | *** |
| 141 | الحبیحی طرح ذبح کرنا | ** |
| 141 | سامان تجارت کومزین کرنا | ۴۵ |
| 444 | قرض کاالحیحی طرح مطالبه کرنا | 74 |
| 444 | میت ، گفن اور قبر کومزین کرنا | 12 |
| 444-44K | تحسينيات | 4-1 |
| * 46 | تعریف | 1 |
| * 415 | متعاقبه الغاظة ضروريات محاجيات | , |
| 440 | تحسيبيات كى انشام | ۴ |
| 440 | اجمالی احکام | ۵ |
| 440 | الف تحسينيات كي حفاظت | ۵ |
| 440 | ب تحسیدیات کاغیر محسیدیات سے تعارض | 4 |
| *** | ج تیحسینیات ہے استدلال | ∠ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|--------------------------|---|--------|
| ۲ 44- ۲ 42 | "تحصّن | r~ - 1 |
| 442 | تعريف | 1 |
| F42 | اجمالي تحكم اوربحث يرمقامات | , |
| PYA | تحصين | |
| ٨٢٦ | د کیمنے: اِ حصان، جہاد تحقق د کیمئے: تثبت | |
| r2r-r49 | شحتير | 4-1 |
| +49 | تعريف | 1 |
| 444 | اجما في تحتم | + |
| * 41 | الیمی چیز کے ذر وی تعزیر جس میں شختیر ہو | ۵ |
| r2m-r2m | مصحقیق مناط | r-1 |
| 1200 | تعریف | 1 |
| 124 | اجها في تحكم | * |
| 711-72° | "نحکیم | r1_1 |
| 424 | تعريف | 1 |
| 424 | متعاقبه الغاظة قضاء اصلاح | , |
| 420 | شرفي حكم | ٣ |
| 122 | تحکم کے لئے شرطیں | 1. |
| 129 | محل شحكيم | اهُا |
| FAI | شرانط محكيم | ** |
| * 15 | فيصله كاطريقنه | +9 |
| * 100 | شحکیم سے رجو ٹ | ۳, |
| ۴۸۴ | تحکم بنانے کا اثر | ۳۵ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-------------|--|------|
| ۲۸۵ | اول _فيصله كالزوم اوراس كانفا ذ | ٣٩ |
| FAY | دوم _فيصله توژنا | mq |
| *A4 | تحكم كالمعز ول هونا | ۲۱ |
| r9+-r12 | شحتل | 0-1 |
| * A4 | تعريف | 1 |
| * A4 | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | , |
| FA2 | احرام سے حالیل ہونا | , |
| FAA | الف تحلل اصغر، جسي محلل اول بھی کہتے ہیں | ٠ |
| FA9 | ب تحلل اکبر، جسے خلل دوم بھی کباجا تا ہے | ۳ |
| FA9 | عمرہ کے احرام سے حال ہونا | ۴ |
| +9. | تيين (قشم) ہے حاال ہونا | ۵ |
| r9+ | "نحقي | |
| | و کمچنے: حلیہ | |
| 791 | تحليف | |
| | د <u>کی</u> صئے: حانف به | |
| r9m-r91 | شحكيق | m_1 |
| 491 | تعريف | 1 |
| 441 | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات پی | * |
| 441 | للتنحليق فبمعنى تشهد مين حلقه ونانا | * |
| +9+ | تنحليق بمعنى بإل صاف كرنا | μ |
| r99-r9m | فتحليل | 15_1 |
| + 9+- | تعريف | 1 |
| 496 | متعاقبه الفاظ: الإحت | * |
| 496 | حرام كوحال كرنا | ٣ |
| 496 | قرضوں وغیرہ سے معاف کرنا | ~ |
| | | |

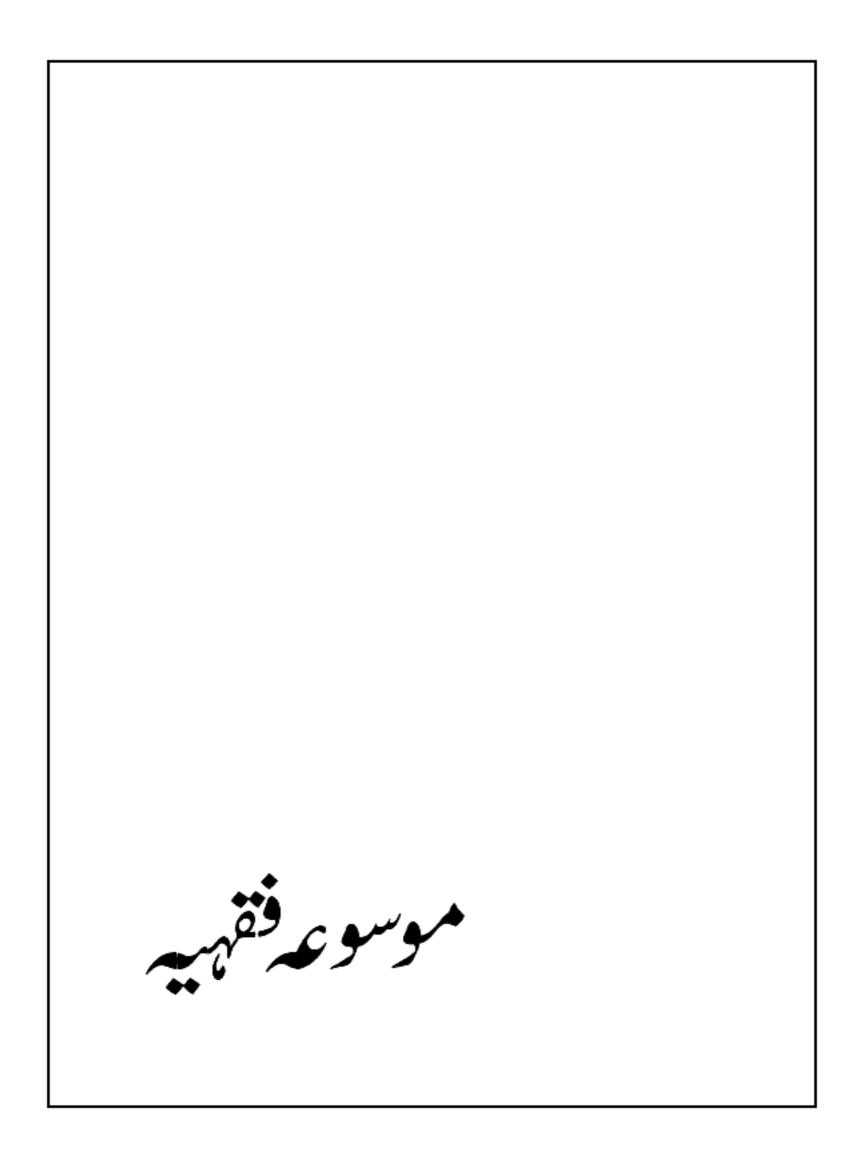
| صفحه | عنوان | فقره |
|----------|---|--------------|
| 490 | زندہ اورمر دہ مخص کے غیر مالی حقوق اور واجبات ہے معاف کرنا | ۵ |
| 490 | نکاح محلل نکاح محلل | ۲ |
| F90 | الف-نكاح | 4 |
| 444 | ب صحت نکاح | Δ |
| 444 | ج یفرج میں وطی | ٩ |
| 492 | حلاله کی شرط کے ساتھ نکاح | 1. |
| 491 | حلالیہ کے اراوہ ہے شا دی کرنا | 11 |
| F9A | دوسرے نکاح سے پہلے شوہر کی طلاقوں کا ختم ہونا | 11* |
| m +r-r99 | تحليه | A-1 |
| +99 | تعريف | 1 |
| +99 | متعاقبه الغاظ زتريين | * |
| 199 | شرقی تحکم | _µ |
| ٠., | آ رائنگی میں اسراف | ۴ |
| ٠., | سوگ والی عورت کی زبیب وزبینت | ۵ |
| ١٠٠١ | احرام میں زبیب وزبینت | 4 |
| m+4-m+m | مخمل | 9-1 |
| pr | تعريف | 1 |
| pr , pr | شرقي تحكم | * |
| pr . pr | اول مختمی شهادت | ۳ |
| pr , pr | کواہ بنتے ہے گریز کرنا | ۴ |
| ما • ما | كواه بنتے پر اجرت ليرا | ۵ |
| ۳-۵ | کوایی پر کوایی دینا | ٧ |
| ۳-۵ | دوم۔جنابیت کرنے والے کی طرف سے عاقلہ کافٹل خطاوشبہ عمد کی دبیت دینا | 4 |
| ۳.4 | سوم۔مقتدی کی طرف ہے امام کالخمی | Λ |
| ۳۰۹ | بحث کے مقامات | 9 |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-------------|--|------|
| m19-m+4 | تخميد | 10-1 |
| ٣.4 | تعريف | 1 |
| ۴.4 | مبتعافته الغاظة شكره مدح | , |
| 4.2 | اجها في تحكم | ۴ |
| w.Z | جمعہ کے دونوں خطبوں میں حمد بیان کرنا | ۵ |
| ₩• Λ | تطبهٔ نکاح میں حمد بیان کرنا | ۲ |
| ** • A | نماز کےشروٹ میں حمد بیان کرنا | 4 |
| ٠١٠٠ | سلام پھیرنے کے بعد نماز سے فارغ ہونے والے کے لئے حمد بیان کرنا | Δ |
| ١١٣٠ | عیدین کی نماز میں تحریمیہ کے بعد حمد بیان کرنا | 9 |
| ١١٣٠ | استشقاءاور جنازه كينما زمين حمدبيان كرنا | 1+ |
| ١١٣٠ | تنكبيرات تشريق مين حمدبيان كرنا | 11 |
| ٠٠ ا٠٠ | خارج نماز چھنکنے والے کاحمہ بیان کرنا | 11* |
| عوا عو | تضاءحاجت کے بعد بیت الخلاء سے نگلنے والے کاحمد بیان کرنا | l** |
| موا مو | کھانے پینے والے کاحمد بیان کرنا | الما |
| | خوش خبری سننے بھی فعمت کے حاصل ہونے یا کسی معصیت | ۵۱ |
| سما سو | وپریشانی کے دورہونے پرحمہ بیان کرنا | |
| ۵۱۳ | مجلس سے کھڑ ہے ہونے والے کاحمہ بیان کرنا | PI |
| ۵۱۳ | اعمال حج میں حمد بیان کرنا | 14 |
| ۳۱۹ | نیا کیٹر ایننے والے کاحمد بیان کرنا | ſΔ |
| ۳۱۹ | سوكرا تخضنے والے كاحمد بيان كرنا | 19 |
| W14 | بستربر لينيتة وفتة حمد بيان كرنا | ۲. |
| W14 | وضو کے شروٹ میں اور وضو سے فر اغت برحمہ بیان کرنا | ۲۱ |
| MIA | حال دریافت کئے جانے پر حمد بیان کرنا | ** |
| 414 | نمازمين جيجيئنے والے كاحمہ بيان كرنا | ۲۵ |

| صفحہ | عنوان | فقره |
|------------|--|------|
| mr1-mr+ | "کسنیک | 9-1 |
| ** • | تعريف | 1 |
| ۳,٠ | نومو لو د بچه کی مخصنیک | ۵ |
| ۳, ۰ | شرق تحكم | ۵ |
| 441 | <i>پگڑ</i> ی میں تخسنیک | 9 |
| mm 9-mrr | شحوت الشحوال | m4-1 |
| *** | تعريف | 1 |
| *** | متعلقه الغاظة استحاله | ۲ |
| *** | تحول کے احکام | ۳ |
| *** | الف يهين كانتحول اورطبهارت وحلت ميس اس كااثر | ۳ |
| pr p pr | ب-کھال کود ہاغت کے ذر میمہ پاک کرنا | ۵ |
| pr p pr | ج _وصف یا حالت کاتھول | ۲ |
| nen | تھیرے ہوئے یا نی کا جاری ہوجانا | ۲ |
| 444 | قبله كي طرف يا قبله سے تحول | 4 |
| 444 | نماز میں قیام ہے تعود کی طرف آنا | Α |
| 412 | مقيم كامسافر اورمسافر كالمقيم بهونا | 9 |
| 412 | الغب يمتغيم كامسافر بهونا | 9 |
| r+2 | ب مسافر کامقیم ہوجانا | 1. |
| rra | واجب كوحيحوز كربدل كواختيا ركرنا | 11 |
| rra | الف ـــ زكاة | 11 |
| 449 | ب-صدقه فطر | 15 |
| 449 | ج بيشر ع بيشر | 194 |
| rr. | و-كفارات | 16 |
| rr. | ه سنڌ ر | اهٔ |
| , , | فرض روزہ کے ہدلہ فعد سید ینا | 14 |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-----------------|---|------|
| النولنو | جس عقد کی شر انظ پوری نه ہوئی ہوں اس کا دوسر مے عقد کی طرف منتقل ہونا | ı∠ |
| اللوللو | عقدموقوف كاما فذبهوجانا | IA |
| *** | دىن مؤجل كالمعجّل بهوجانا | 19 |
| *** | الف موت | 19 |
| *** | ب_مفكن قر ارديا جانا | ۲. |
| pupupu | مستحق وتف کے نتم ہونے ہے وقف کا ختم ہوجانا | *1 |
| pupupu | اباحت کی ملکیت عامه کا ملکیت خاصه کی طرف اور اس کے برعکس منتقل ہونا | ** |
| يم ينوينو | عفدنكاح ميں ولايت كامنتقل بهوجانا | *** |
| يم بيونيو | حق پر ورش کامنتقل ہوجانا | * ^ |
| 440 | معتد د کی عدت طلاق کاعدت و فات کی طر ف منتقل ہوجا نا | ۲۵ |
| 440 | مہینوں کی عدت کا حیض کی عدت کی طرف اور اس کے برعکس منتقل ہوجانا | 44 |
| 440 | الف مبينوں کی عدت کاحیض کی عدت کی طرف منتقل ہوجانا | *4 |
| 444 | ب_حیض کی عدت کامہینوں کی عدت کی طرف منتقل ہو جانا | +4 |
| 444 | عشری زمین کاخر اجی اورخر اجی زمین کاعشر ی ہوجا نا | ۲۸ |
| 442 | مشأمن كاذمي بهوجانا | 49 |
| 447 | مستأمن كاحربي هوجانا | ۳. |
| $\mu\nu\Lambda$ | ذمی کا حربی ہوجانا | اس |
| $\mu\nu\Lambda$ | حربی کامستاً من ہوجانا سے | ** |
| $\mu\nu\Lambda$ | دارالاسلام کا دارالحرب اوران کے برقکس ہوجانا پرین | pupu |
| $\mu\nu\Lambda$ | ایک مٰدبب سے دوسر ہے مٰدبب کی طرف منتقل ہوجانا | ٣٩ |
| ~~a-~~q | شحويل | 9-1 |
| ۽ سوسو | تعريف | 1 |
| وسوسو | متعاضه الفاظ بنقل بتبديل البرال اورتغيير | * |
| ٠ ٢٠ سو | تحویل کے احکام | ٣ |
| ٠ ٢٦ سو | الف _ وضويل تحويل نيت | ۴ |

| صفحه | عنوان | فقره |
|-----------|--|------|
| الماسو | ب-نماز میں تحویل نیټ | ۵ |
| م به سو | ج ـ روز ه میں نبیت کو بدلنا | ۲ |
| مويم بيو | د قریب المرگ کوقبله کی طرف پھیریا | 4 |
| سويم سو | ھے۔استسقاء میں حاور بیٹنا | Λ |
| مهامها سو | ويقرض كومحول كرنا | 9 |
| ۳۳۸-۳۳۵ | "نحتيز | 0-1 |
| ۳۳۵ | تعری <u>ف</u> | 1 |
| ٢٧٦ | متعابقه الفاظ بخرف | + |
| سے ہم سو | اجها في تحكم | ٣ |
| mam-mr9 | تحييه | 14-1 |
| ۴۴۹ | تعريف | 1 |
| همم | اجمالی حکم اور بحث کے مقامات | * |
| همم | الف ۔زندہ لوکوں کے مامین تحیہ | ۳ |
| 444 | ب-مردون کاتنحیه | ۴ |
| ۳۵٠ | ج تحية المسجد | ۵ |
| ۱۵سو | وتخية الكعبر | Δ |
| ۱۵۳ | ھ-تحید حرام | 9 |
| rar | ويتحييه متجدنبوي | 11 |
| rar | مسلمان کے حق میں غیرساام کے ذر میہ تحیہ کا حکم | 11* |
| ** at | غیرمسلم کوساام کے ذر معیرتنجید کا حکم | ۵۱ |
| 202 | تخيات | |
| | د كيسيّة: تشهد | |
| ma+-ma2 | تراجم فقبهاء | |



تأبيد

تعریف:

1 - تأبید: آبد (باء کی تشدید کے ساتھ) کا مصدر ہے، اس کا انفوی
معنی تخلید لیعنی بھیشہ رکھنا کے ہیں (۱) ، اس کی اصل آبد الحیوان
یابد اور یابد آبود آہے، یعنی وہ الگ ہوااور وحشی اور جنگی ہوا (۲)۔
فقرباء کی اصطلاح میں نظرف کودوام کے ساتھ مقید کرنے کا نام
تابید ہے، یعنی وہ زبانہ جودائم رہے خواہ شرعا ہویا عقد کی وجہ ہے۔
اس کے مقالم لیے میں توقیت اور تا جیل ہے، اس لئے کہ ان میں
سے ہرایک ایسے زبانہ تک ہوتی ہے جو تم ہوجائے (۳)۔

متعلقه الفاظ:

تخليد:

۲- تخلید کالغوی معنی (کسی چیز کی) بقاء کودائم رکھنا ہے، صحاح میں ہے: "المخلد دو ام البقاء" (خلد کا مصلب ہے: ہمیشہ باتی رہنا)، تم کہتے ہو: "خلد الموجل یخلد خلوداً" (آدمی ہمیشہ رہے)، اور "آخلدہ الله و خلدہ تخلیداً (الله الله و خلدہ تخلیداً (الله الله و خلدہ تخلیداً (الله الله و خلدہ الله و خلدہ تا الله الله و خلدہ الله و خلاء الله و خلدہ الله و خلدہ الله و خلدہ الله و خلدہ الله و خلاء الله و خلاء الله و خلدہ الله و خلاء و خلاء و خلاء الله و خلاء و خل

(۱) الصحاح ماد**ة** '' أبدُ''۔

تأبد

د کھیجے:'' آبد''۔



⁽٢) المصباح لهمير ، نيز ديجيجة القاسوس أكبيط ورأساس البلاغه من باده" كو" كالمتخل

⁽۳) حاشیة قلیو لې مع شرح کملی علی اصهاج ۳۱۵ است طبع کملهی ، نیز دیکھنے: الکلیات للکھوی (۲۹۷ طبع دشق)میں '' اَبَدِ'' کے معنی میں جو کچھ بیان مواہب

⁽٣) الصحاح، لمصباح ليمير ماده " خلد" _

تأبيد معومتاً بين ، تأجيل ، تأخر

فقہاء نے تخلید کو ای معنی میں ستعال کیا ہے جولفت میں وار دہوا ہے، جیسے سرکشی کرنے والے کو ہمیشہ قید میں رکھنے (۱) یا مکھول کے حاضر ہونے تک کفیل کو ہمیشہ قید میں رکھنے کے معنی میں ستعال کیا ہے (۲)۔

تا بید اور تخلید میں فرق بیہ ہے کہ تا بید کا استعال ایسی چیز وں

کے لئے ہے جس کی انتہائییں ہوتی ، اور تخلید کبھی ایسی چیز کے لئے

ہوتی ہے جس کی انتہائییں ہوتی اور کبھی ایسی چیز کے لئے ہوتی ہے

جس کی انتہا ہوتی ہے ، جیسے گنبگار موسنین کو جبنم میں باقی رکھنا اس بات

کا متقاضی نہیں کہ وہ اس میں ہمیشدر ہیں گے ، بلکہ وہ اس سے نکا لے

ہا کمیں گے ، اور جب تخلید کو اُبد کے ساتھ مقید کر دیا جا کے تو بیاں چیز

عائمیں گے ، اور جب تخلید کو اُبد کے ساتھ مقید کر دیا جا کے تو بیاں چیز

میں گئی ہوجاتی ہے جس کی انتہائییں ہوتی ، جیسے کفار کے بارے میں

میشد تعالی کا پنر مان ہے: "خالیدیئی فیٹھا اُبکاً" (اس میں ہمیشہ ہمیش رہیں گے)۔

تابیدیاعدم تابید کے اعتبار سے تصرفات:

سا-تابیدیاعدم تابید کے اعتبار سے تصرفات تین سم کے ہوتے ہیں۔ اول: وہ جومؤہد ہوں ، توقیت کو قبول نہ کریں، جیسے نکاح ، زچے ،

ببه، رئين اورائ طرح جمهور كيز ديك وقف _

دوم: وه جومؤنت هون، تا بيد کوقبول نه کري، جيسه اجاره، مز ارعت اورمسا قات -

سوم:وہ جوتو تیت اورنا بید دونوں کو آبول کرے، جیسے کفالہ (۳)۔ ''نصیل کے لئے دیکھیے: اصطلاح ''تا قیت''، نیز دیکھیے: ''نجی '''' ببۂ' اور'' اجارہ'' اللے۔

- (۱) جوام ولا تكليل ۲۷۱/۳ طبع دارالمبر ف، الخرشي سر ۵۵ س
 - (٢) حاشير قليو لي٣٨/٣ مثا نُع كرده لحكمل.
 - (۳) سورۇنيا دروايات
- (۳) الفتاوی البندیه سهر ۱۳۲۳، الزیلعی سهر ۳۳۱، الخرشی ۱۳۲۷، الفرطبی ۱۲ سر ۱۹۳، الروضه سهر ۲ سس، سسسه مفنی الحتاج ۲۰۷۰، کشاف الفتاع سهر ۲۲، المفنی مع الشرح الکبیر ۲ سر ۲۳۱

تأبين

د کیھے:"رٹاء''۔

تأجيل

ر کیھئے:" اُجل"۔

تأخر

و کیجے:"ناخیر"۔



تأخير ا-سم

کہیں گے تراخی نہیں کہیں گے (۱)۔

ب-فور:

سا- نورافت میں: کسی شی کا ایسے موجود وقت میں ہوتا ہے جس میں کوئی تا خیر ندہو (۲)۔

کبا جاتا ہے: "فارت القِدر فوراً وفورانا" لیعنی بائڈی نے جوش ماراء ای سے فقنہاء کا قول ہے: "الشفعة علی الفور" (شفعہ نوراً ہوتا ہے) (یعنی معلوم ہوتے ہی شفعہ کا دعوی نہ کرے تو شفعہ باطل ہوجاتا ہے)۔

اصطلاح میں:''نور''نام ہے ممکن اوقات کے آغاز میں اداکا اس طرح مشر وٹ ہونا کہنا خیر کی وجہ ہے وہ قاتل مذمت ہوجائے (^{m)}۔ اس سے ظاہر ہوا کہ'' نور'' اور'' ناخیر'' کے درمیان تباین کی نسبت ہے۔

ج-تأجيل:

العت میں تأجیل یہ ہے کہتم کسی چیز کے لئے کوئی مدت مقرر کرو۔ کہا جاتا ہے: "أجلته تأجیلاً" یعنی میں نے اس کے لئے مدت مقرر کی (۳)۔

فقہاء نے بھی تا جیل کو اس کے معنی لغوی میں ہی استعمال کیا ہے(۵)۔

ای بنار تأخیر، تأجیل سے زیادہ عام ہے، کیونکہ تا خیر کبھی اُجل کی وجہ سے ہوتی ہے اور کبھی بغیراً جل (مدت) کے۔

- (۱) مسلم الثبوت ابر۲ ۳۸، انعر بقات للجرجا في ـ
 - (٢) المصباح بلسان العرب ماده " ' فور".
- (m) ابن مابدين ٢٦ و ١٣٠٠ أنعر بفات لجر جاني ر ١٣٨ طبع الحلي _
 - (٣) المصباح لممير مادة" أجل".
- (۵) الفواكر الدواني ۴ رسم ۱۸ أمغني الحتاج ۴ ر۵ ۱۰ ابن هايدين سهر ۳۰ س

تأخير

تعریف:

۱ - قاحیو ، لغت میں: تقدیم کی ضد ہے ،ہر چیز کا آخر ال کے شروع کے خلاف ہے (۱)۔

اور اصطااح میں: کسی چیز کوشریعت کی طرف سے مقر رکردہ وقت کے آخر میں کرنا ، جیسے بحری کھانے کو اور نماز کو مؤخر کرنا ، یا وقت کے باہر کرنا (خواہ اس کے لئے شریعت کی طرف سے وقت مقرر کیا گیا ہویا اس وقت پر اتفاق کرلیا گیا ہویا اس وقت پر اتفاق کرلیا گیا ہو)، جیسے زکا قاور قرض کو مؤخر کرنا۔

متعلقه الفاظ:

الف-تراخي:

٢- تراخى لفت ميس زمانه كا دراز مونا ب- كبا جاتا ب: "قو الحمى
 الأمو قو الحيا" ال كازمانه دراز موليا ، اوركبا جاتا ب: "في الأمو قو الخريم
 قو الخ" ليعنى معامله ميس تنجائش ب(٢) -

تراخی کامعنی فقہاء کے فزدیک: عبادت کوال کے پورے وقت میں کرنے کی مشر وعیت ہے، وہ'' فور'' یعنی فوراً کرنے کی ضد ہے، جیسے نماز اور حج ۔ اس بناپر اگر عبادت آخر وقت میں کی جائے تو قاحیو، قواحی کے ساتھ مل جاتی ہے، اور اگر عبادت وقت نکل جانے کے بعد کی جائے تو دونوں الگ الگ ہوجاتی ہیں، اسے اخبر

- (۱) لسان العرب، أمصياح لمحير مادة " أَيَدُ".
 - (۲) لمصباح لهمير -

ھ_تعیل:

۵- تجیل: سی چیز میں جلدی کرنا ہے۔ کہا جاتا ہے: "عجلت الله المال" میں نے اس کے پاس جلدی مال حاضر کیا، اپس اس نے اسے جلدی مال حاضر کیا، اپس اس نے اسے جلدی سے الحالیا۔

فقہاء کے زویک: بھیل کی فعل کو اس کے وقت مقررہ سے پہلے کرنا ہے، جیسے زکاۃ کو سال پوراہونے سے پہلے اواکرنا، یا اول وقت بیں اواکرنا ہے، جیسے افطار میں جلدی کرنا (۱)، رسول اللہ علیائیے نے ارشا و فر مایا: "لا قزال آمتی بعضو ما عجلوا الفطو و آخووا السحود" (میری امت اس وقت تک برابر بھاائی پر رہے گی جب تک وہ افطار میں جلدی کرے گی اور تحری میں تا خیر)۔ رہے گی جب تک وہ افطار میں جلدی کرے گی اور تحری میں تا خیر)۔ اس سے ظاہر ہوا کہ تا خیر اور بھیل کے ورمیان تا ین کی است ہے۔

اجمالي حكم:

استربعت میں اسل بیہ کہی فعل کو اس کے آخر وقت تک مؤخر نہ کیا جائے ، ای طرح شربعت نے اس کے لئے جو وقت مقر رکیا ہے اس سے باہر نہ کیا جائے ، جیسے فرض شدہ عبادات مثلاً نماز کومؤخر کرنا۔ ای طرح اس وقت سے بھی مؤخر نہ کیا جائے جس پر متعاقد ین کے درمیان اتفاق ہوگیا ہو، جیسے اس چیز کی ادائیگی جوذمہ میں واجب ہو،

- (۱) المصباح لممير مادهة ''عجل''،ابن عابدين ۳ر په ۳،مغنی کوتاج ار ۳۳۳
- (۲) عدیث "لا نزال أمنی بخیو ما عجلوا الفطو و أخووا السحور"

 کی روایت بخاری (الفتح سهر ۱۹۸۸ طبع المتاثیر) اور سلم (۲/۱۷۷ طبع المتاثیر) اور سلم (۲/۱۷۷ طبع الحلی) نے حضرت کیل بن معدے ان الفاظ شری کی ہے "لا بیزال العامی بخیو ما عجلوا الفطو" ورجوالفاظ (اوپر) بحث ش فکر کے گئے ہیں ان کی روایت احمد (۲/۵ کا طبع المیمزیہ) نے حضرت ابوؤ ڈے کی ہے اس عدیث کویشی نے آئم سی (۳/۵ کا طبع القدی) شریق فکر کیا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے۔ اور کہا ہے کہا ہ

الاید کہ کوئی الیمی نص پائی جائے جوتا خیر کی اجازت دے، یا قو اعد شریعت میں سے کوئی عمومی تاعدہ ہو، یا ایساعذر شرعی ہوجو بندہ کی طاقت سے ہاہر ہو۔

اور مجھی الیی ضرورت پیش آجاتی ہے جس کی وجہ سے اخبر اس اسل سے نکل کرواجب یا مندوب یا مکرو دیا مباح ہوجاتی ہے۔ چنانچ حاملہ (زائیہ) پر حدقائم کرنے میں اس وقت تک تاخیر واجب ہے جب تک وہ بچہ نہ جن دے، اوروہ بچہ اس سے مستغنی نہ ہوجائے (ا)۔

ر ہامریض تو اگر اس کے ایتھے ہونے کی امید ہے تو ایتھے ہونے
تک حدکومؤ شرکیا جائے گا، کیکن اگر ایتھے ہونے کی امید نہ ہوتو حد قائم
کردی جائے گی اور تا خیر نہیں کی جائے گی (۲)، اور ایسا، جان کی
قضاص کے علاوہ میں کیا جائے گا۔

تا فیر مستحب ہے: جیسے بھری کو آخر رات تک مؤخر کرنا ، یا ال شخص کے لئے ور کو وقت بھر تک مؤخر کرنا جسے اپنی نماز کے معاملہ میں جاگ جانے پر اعتماد ہو، یا تنگدی کے عذر کی وجہ سے تنگدست کے لئے ترض کی اوا بیگی کو مؤخر کرنا (۳)، اللہ تعالی نر ما تا ہے: "وَإِنْ کُانَ ذُوْ عُسُووَ فَفَظِوَةٌ إِلَی مَیْسُووَ" (اور اگر تنگدست ہے تو اس کے لئے آسودہ حالی تک مہلت ہے)۔

تاخیر مکروہ ہے: جیسے روزہ دار کے لئے غروب آ فتاب کے بعد افطار کومؤخر کرنا ، اس لئے کہ افطار میں جلدی کرنا سنت ہے۔

تاخیرمباح ہے: جیسے اول وقت سے نماز کومؤ فرکر نا ، اس وقت تک جب تک مکر وہ وفت شرو ک ندہو جائے۔

- (۱) المغنى 2/ ا٣٢ طبع القلم ٥ -
- (٢) المغنى ٨٨ ٧٣ المثا لَع كرده مكتابية الرياض.
 - (٣) احكام القرآن لجساص الر ٥٩٨ ـ
 - (۳) سور کانفره ۱۸۰۰ (۳)

نمازكومؤخركرنا:

2-فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ تجاج کے لئے مزولفہ کی رات میں مغرب کی نمازکومؤ فرکرا، تا کہ عشاء کی نماز کے ساتھ جمع کر کے پراھی جائے مشروٹ ہے۔ اور جہاں تک اس کے علاوہ کا معاملہ ہے تو فقہاء کے ما بین ظہر وعصر کوکسی ایک کے وقت میں، ای طرح نماز مغرب وعشاء کوکسی ایک کے وقت میں، ای طرح نماز مغرب وعشاء کوکسی ایک کے وقت میں جمع کرنے کے سلسلہ میں اختاا ف ہے۔ جمہور اعذ ار معینہ کی صورت میں جواز کی طرف گئے ہیں، اور حضا ای سے منع کیا ہے، اختااف اور اس کی تفصیل اصطلاح حنفیہ نے اس سے منع کیا ہے، اختااف اور اس کی تفصیل اصطلاح حنفیہ نے اس می تحق ریکھی جائے۔

یانی نہ یانے والے کے لئے نماز کومؤخر کرنا:

۸ - فقہاء کا اس بات پر اتفاق ہے کہ وقت مستحب کے آخر تک نماز کومؤ خرکرنا اس شخص کے لئے مسئون ہے جسے آخر وقت میں پانی مل جانے کا یقین ہو، اور حنفیانے اس میں بیقیدلگائی ہے کہ مکروہ وقت داخل نہ ہو۔

لیکن جب وقت کے آخر میں پانی پانے کا گمان ہویا امید ہوتو جہور اس بات پر متفق ہیں کہ نماز کی تا خبر افعال ہے، حنفیہ کی شرط کے مطابق مکر وہ وقت وافل ہونے تک افعال ہے، مالکیہ اس طرف گئے ہیں کہ جس شخص کو پانی ملنے اور نہ ملنے کے سلسلہ میں شک ہوہ اس کے لئے وقت کے درمیان میں تیم کرنا مستحب ہے، شا فعیہ اس طرف گئے ہیں کہ اس حالت میں جلدی کرنا افعال ہے (۱)۔

بلاعذرنما زكومؤخر كرنا:

9 - فقہاء کا اتفاق ہے کہ بلاعذرشری نماز کومؤ خرکرا یہاں تک ک

(۱) ابن عامدین ار ۱۶۲، الدروتی ار ۱۵۵، مغنی اُکتاع ار ۹ ۸، کشاف القتاع ار ۱۷۸

وقت نکل جائے حرام ہے ()۔

جس نے نماز ستی کی وجہ سے چھوڑ دی جب کہ اسے فرضیت کا یقین تھا اور اس کا میر ک بلاعذر ، بلانا ویل ، بلانا واقفیت کے ہموتو حفظ کہتے ہیں کہ اسے اس وقت تک قید کیا جائے گا جب تک کہ نماز نہ پڑا سنے لگے ، مسکمی کہتے ہیں: جب بندہ کے حق کی وجہ سے قید کیا جاتا ہے تو اللہ کے حق کی وجہ سے بدر جہا ولی قید کیا جانا جا ہے ۔ اور کہا گیا ہے: اسے اتنامار اجائے کہ خون بہنے لگے۔

مالکیہ اور بٹا فعیہ کہتے ہیں اور یہی ایک روایت امام احمد بن خنبل سے بھی ہے کہ جب نماز کواس کے وقت سے مؤخر کر نے قونما زیرا سے کی وقت سے مؤخر کر نے قونما زیرا سے کی وقت سے مؤخر کر نے قونما زیرا سے کی وقت کی وقت کی میباں تک کہ اگر اس کے بعد والی نماز کا وقت بھی تنگ ہوجائے اور وہ نماز پڑا سے سے انکار کر بے قوا سے حداً قتل کر دیا جائے گا، اور امام احمد کی دوسری روایت بیہ ہے کہ (انکار نماز کی وجہ جائے گا، اور امام احمد کی دوسری روایت بیہ ہے کہ (انکار نماز کی وجہ سے تنل کیا جائے گا۔

'' لا نساف'' میں کہا ہے کہ یکی مذہب ہے، اور ای پر جمہور اصحاب ہیں۔

نمازکو اس کے آخر وقت تک مؤخر کرنا خلاف اولی ہے، اس کنے کہ رسول اللہ علی ہے، اس کنے کہ رسول اللہ علی ہے، اس النہ علی ہے کا ارشا و ہے: ''اول الوقت رضوان اللہ و وسطه رحمة الله و آخر ہ عفو الله'' (اول وقت اللہ کی خوشنودی کا ہے، ﷺ کا وقت رحمت الہی کا ہے اور آخری وقت اللہ کی معانی کا ہے اور آخری وقت تک مؤخر معانی کا ہے اور آخری وقت تک مؤخر

⁽۱) الدروتي ار۹۸، ۱۸۳ م، الجموع سرسال

⁽۲) حدیث: "أول الوقت رضوان الله ووسطه رحمة الله و احوه عفو الله" کی روایت را تطفی (۱۸ ۳۳ طبع شرکة الطباعة الفویه) نے کی ہے اس کی سند میں یعتوب بن ولید مدنی ہے احمد بن عنبل اور این معین نے اس کی سند میں یعتوب بن ولید مدنی ہے احمد بن عنبل اور این معین نے اس کی شکریس کی ہے (الحیص لا بن مجر ار ۱۸ الطبع دار الحاس)۔

کرنا مکروہ ہے(۱)۔ اس کی تنصیل اصطلاح '' اوقات الصلاق'' کے تحت دیکھی جائے۔

ادا يُلَّى زكاة كومؤخركرنا:

1- جمہور ملاء اس طرف کئے ہیں اور یہی حفیہ کامفتی ہولی ہے کہ اوائیگی زکاۃ کو اس کے استحقاق (اوائیگی زکاۃ واجب ہونے) کے وقت سے مؤخر کرنا جائز نہیں، اسے نوراً نکالنا واجب ہے، اس لئے کہ اللہ تعالی کافر مان ہے:" وَ آتُوا حَقَّهُ يَوُمُ حَصَادِهِ""(۱) (اور اس کاحق شرقی اس کے کافے کے دن اواکر دیا کرو)، بیآ بیت بھیتی کی فرکاۃ کے بارے میں ہے، اس کے علاوہ امولی کی زکاۃ کا تھم بھی اس کے ساتھ کے اس کے علاوہ امولی کی زکاۃ کا تھم بھی اس کے ساتھ کے کہا تھے کے دن اواکر دیا کروگا تہ کا تھم بھی اس

عام مثال خفیہ کے نزدیک جس کوبا تانی اور حصاص نے سیح قر اردیا ہے، یہ ہے کہ زکا ہ علی اتر اخی واجب ہوتی ہے، پس جب بھی اداکر ہے وہ واجب کوبی اداکر نے والا مانا جائے گا، اور جب اپنی آخر عمر تک ادانہ کرے تو وجوب (کی ادائیگی کا وقت) اس پر تگ ہوجائے گا، یہاں تک کہ اگر مرگیا اور اوائیس کیاتو گنبگار ہوگا (س)۔

جمہور علاء اس طرف گئے ہیں کہ سال گز رنے کے بعد زکا ق نکالنے پرفتد رت کے ہا وجود اگر ادائیگی میں تا خیر کرے اور اس کا کل مال یا پچھ مال ضائع ہوجائے تو وہ زکا قہ کا ضامین ہوگا، اور زکا قہ اس سے ساقط نہیں ہوگی۔

مالکیہ کہتے ہیں کہ اگر ایک یا دودن کے لئے مؤفر کیا تھا (جب تک مال ضائع ہوگیا) تو اس پر ضان نہیں ، الا بیا کہ اس نے اس کی

حفاظت میں کونا بی کی ہو۔

حفیہ اس طرف گئے ہیں کہ سال گزرنے کے بعد مال بلاک ہویا ہوجانے سے زکاقہ ساتھ ہوجاتی ہے،خواہ اس کوادا یکی کاموقع ملا ہویا نہا ہودا)۔

"تغصيل اصطلاح" زكاة" كيّحت ديكيئے۔

روزه کی قضا کومؤخر کرنا:

11- اسل بیہ ہے کہ رمضان المبارک کا جور وزہ چھوٹ گیا ہو، اس کی قضا میں جلدی کرے۔ لیکن قضا کومؤ خرکر ما بھی جائز ہے، یہاں تک کہ وقت نگک ہوجائے، تنگی کا مصلب بیہ ہے کہ اس کے اور آنے والے رمضان کے درمیان اتی عی گنجائش رہے کہ جوروزہ واجب ہوچکا ہے اے اواکر سکے، تو اس وقت رمضان کی قضا جمہور کے نزد یک متعین ہوجائے گی۔

اگر اس وقت بھی تضائیں کیا تو شافعیہ اور حنا بلہ نے صراحت
کی ہے کہ اگر بلا عذر وقت تضافوت ہوگیا تو تا خیر کی وجہ سے گنبگار
ہوگا، ان کی دلیل حضرت عائشہ کا یقول ہے: "کان یکون علی
الصوم من دمضان فیما استطیع آن اقضیه الا فی شعبان
لمکان النبی ﷺ (۲) (میرے ذمہ رمضان کا روزہ تھا، یس
السوائے شعبان کے کسی اور مہینہ میں تضافییں کر علی تھی، رسول
السوائے کی خدمت میں مشغول ہونے کی وجہ سے)، جمہور کہتے ہیں
اللہ علی خدمت میں مشغول ہونے کی وجہ سے)، جمہور کہتے ہیں
ک اگر (مزید) تا خیر ممکن ہوتی تو حضرت عائشہ اور تا خیر کرتیں،
دوسری دلیل ہے کہ روزہ بار بارہونے والی عبادت ہے، لہند ایکے

⁽۱) حاشيراين هابدين الر ۲۳۵ س

⁽۲) سورة أنعام ١٣١٦

⁽٣) ابن عابد بن ١٣/١٣/١٣، الدسوقي الر٥٠٥، مغنى الختاج الر١٣٠٣، كشاف القتاع ١٣/ ٥٥٥

⁽۱) ابن عابدین ۲ س/۲۵، الدسوتی اس ۵۰۳، مغنی اکتاع اسر ۱۸ ۳، کشاف الفتاع ۲ س/۵۵_

 ⁽٣) قول ما كثة "كان يكون على الصوم من رمضان" كى روايت بخاري (النتج ٣/٠٥ ١٨ الحبع المنافير) نے كى بهـ

رمضان کے روزہ کو دوہرے رمضان کے روزہ سے مؤٹر کرنا جائز نہیں، جس طرح فرض نمازوں کو ایک دوہرے سے مؤٹر کرنا جائز نہیں (۱)۔

حفیہ ال بات کے قائل ہیں کہ تضا کومؤخر کرنا مطلقا جائز ہے، ان کے نزدیک ال تاخیر سے کوئی گناہ بھی نہ ہوگا، اگر چہ دومرے رمضان کا جائدنظر آ جائے کیکن مستحب ان کے نز دیک بھی واجب کوجلد سا تذکرنے کے لئے نضاء میں ترتیب اور تسلسل کو قائم رکھناہے (۴)۔ ۱۲ – بینو ناخیر نضا کی تنجائش کی بات تھی،کیکن اگر نضا کو اس قد ر مؤخر کردے کہ دوہم ارمضان آجائے توجمہور کے بز دیک: بداگر ال کی کوتاعی کی وجہ سے ہوتو اس پر تضا اور فدید دونوں ہے، اور فدیدید ہے کہ ہر دن کے بدلے ایک مسکین کو کھانا کھلائے، جیسا کہ روایت میں ہے کہ رسول اللہ علی نے اس مریض کے بارے میں فرمایا جس نے رمضان میں بہاری کی وجہ سے روز دنہیں رکھا، پھر تندرست ہوگیا تو بھی نہیں رکھا، یہاں تک کہ دوسر ارمضان آگیا: "یصوم الذي أدركه ثم يصوم الذي أفطر فيه ويطعم عن كل يوم مسكينا"(س) رمضان كے روزے ركھے جے ال نے بايا ہے، اس کے بعد اس رمضان کے روز ہے رکھے جس نے اس میں روزہ نہیں رکھا تھا اور ہر دن کے بدلے ایک مسکین کو کھا انجھی كلائے)، اى طرح ابن عمر ، ابن عباس اور ابو ہر ريا اسمروى ہے، وہ کتے ہیں: "أطعم عن كل يوم مسكيناً" (مرون كے بدله

ایک مسکین کو کھانا کھاؤ)، اس سلسلہ میں کسی صحابی ہے اس قول کی خالفت بھی وارز نبیس ہے۔

پھر شافعیہ کے زوریک اسے قول میہ کہ سال مکررہوگا تو فد میہ بھی مکررہوگا ، اورا سے کے مقابل قول ہیں ہوتا ، اورا سے کے مقابل قول میہ ہوتا ، اورا سے کے مقابل قول میہ ہوتا ، اورا سے کے مقابل قول میہ ہوتا)۔ اختابات کامحل وہ صورت ہے جب اس نے میں تکرار نہیں ہوتا)۔ اختابات کامحل وہ صورت ہے جب اس نے فد میہ نہ نکالا ہو، لیکن اگر فد میہ نکال دیا اور روزہ کی قضا نہیں کی میہاں تک کہ دوسر ارمضان آ گیا تو دوبارہ فند میہ واجب ہوجا کے گا(ا)۔

حنی کا فدیب بیا ہے کہ جس نے رمضان کی قضا میں اس قدر تا خیر کی کہ دوسر ہے رمضان کا چاند نظر آگیا تو ایسے شخص پر قضا ہے فدید نہیں ہے، انہوں نے آیت کر بیمہ "فعیلَّهٌ مِّنُ أَیَّامٍ أُحُو" (۲) (تو اس پر) دوسر ہے دنوں سے شار رکھنا (لازم ہے)) سے استدلال کیا ہے، وہ کہتے ہیں کہ بیآ بیت مطلق ہے مقید نہیں ہے، حنفیہ کہتے ہیں کر آبیت کا مطلق ہونا دلالت کرتا ہے کہتا خیر کی صورت میں (صرف) قضا واجب ہے، لہذا تا خیر سے (مزید) کچھلازم نہ ہوگا، البنة اس نے قضا واجب ہے، لہذا تا خیر سے (مزید) کچھلازم نہ ہوگا، البنة اس نے خلاف اولی کام کیا، اس لئے کہ قضا میں جلدی نہیں کی (س)۔

هج كومؤخر كرنا:

۱۳ - جمہور علماء کے فز دیک جج علی الفورواجب ہوتا ہے، یعنی جب هج کی استطاعت ہوگئ تو اس کو اول وقت (پہلے سال) مج کرنا چلے کی استطاعت ہوگئ تو اس کو اول وقت (پہلے سال) مج کرنا چلے ہے (۳)، اللہ تعالی کا فر مان ہے: ''وَ لِلَٰهِ عَلَی النَّاسِ حِیجُّ

⁽۱) فتح القدير ۳۷ ۳۷، الحطاب ۳۷ ۵۰ تام مثنی الحتاج ارا ۳۳، كشاف القتاع ۳۷ سهسه، لمغنی سر ۱۳سا

⁽٢) فتح القدير ٢٠ ١٣٧٣ ـ

⁽٣) حدیث: "یصوم اللی أدر كه" كی روایت دارطی (۱۲ مه اطبع شركة اطباعد لغزیه) نے كی ہے اور اس كی سند میں دوضعیف راویوں كی وجه سے اے معلول قر اردیا ہے۔

⁽۱) الحطاب ۲ ر ۵۰ سم، الدسوتی ار ۵۳۷ مغنی کمتاج اراسس، کشاف القتاع ۲ مر سهسه، کمغنی سهر ۵ سال

⁽۲) سورۇپقرە، ۱۸۳

⁽۳) ابن هابدین ۲۸ ۱۳۰۰، الدسوتی ۲۸ ۳، لوطاب ۲۸ استاک القتاع ۲۸ مر ۷۷ سام منتی سر ۲۳۳

شافعیہ اور حفیہ میں سے امام محمد بن الحن اس طرف گئے ہیں اور مالکیہ کامشہور قول بھی یک ہے کہ حج علی التر افی واجب ہوتا ہے، کیکن ان کے فز دیک تا خیر دوشرطوں کے ساتھ جائز ہے: مستقبل میں حج کرنے کا پڑتہ ارادہ ہو، اور غالب گمان ہوکہ حج کرنے تک وہ سلامت رہےگا (۲۳)۔

ان کا استدلال ہیہ ہے کہریں ہے جج والی آبیت ہجرت کے چھنے سال نازل ہوئی، اوررسول اللہ علی ہے میں سال نازل ہوئی، اوررسول اللہ علی ہے میں مکہ فتح کیا، اورائی سال شوال میں وہاں سے واپس جلے گئے۔

لوگوں نے کہ چے میں جج کیا، کیکن حضور علی ہے، آپ کی از وات مطہرات اور عام صحابہ مدینہ منورہ میں مقیم رہے، پھر وہ چے میں

(٣) - ابن ها بدين ۴ ر ۴ ساه الخطاب ۴ ر الاسمة ۲ ما سيمغني الحتاج الر الاسم

آپ علی ہے کے حضرت ابو بکڑ کو جج کے لئے بھیجا، اور حضور علی ہے اپنے عام اصحاب کے ساتھ مدینہ منور دمیں بی رہے، جب کہ وہ جج پر تا در تھے، قال وغیر دمیں مشغول نہ تھے۔

پھر راجے میں رسول اللہ علی نے ج کیا، اس معلوم ہوتا ہے کہ تا خیر جائز ہے (۱)۔

رمی جهار کومؤخر کرنا:

سما - فقہاء کا اتفاق ہے کہ جس نے ایام تشریق کے تیسرے دن غروب آ فقاب تک رمی کومؤ شرکیا اس پر دم واجب ہے (۲)۔

کیکن اس صورت میں اختلاف ہے جب ایام تشریق کے تیسر سے دن کے علاوہ میں رمی کوخر وب آفتاب تک مؤخر کیا ہو۔

حفیہ اس طرف کئے ہیں کہ اگر ان دنوں میں جو تیسرے دن کی سے پہلے ہیں (یعن ۱۱ ، ۱۱ ؍ ۱۱ ؍ ۱۵) المجہ) رمی کومؤ خرکیا تو جس دن کی رمی کومؤ خرکیا تو جس دن کی رمی کومؤ خرکیا ہو جس دن سے مل موفی ہو، اور بیا دا ہوگی ، اس لئے کہ وہ رات اس دن کے تا ہے ہے ، لیکن ایسا کرنا مکر وہ ہوگا، کیونکہ اس نے طریقۂ مسنون کو چھوڑ دیا ، اور اگر اگلے دن تک مؤ خرکر نے تو بی تضا ہوگی اور اس کی جز الازم ہوگی۔

کی کی میکام ال صورت میں بھی ہے جب سب کوتیسرے دن کے غروب آ قاب تک مؤ شرکرے (۳)۔

مالکید ال طرف گئے ہیں کہ اگر رمی کورات تک مؤثر کر دیا تو یہ قضا ہوگی الیکن اس پر کوئی جز اوغیر دلازم نہ ہوگی (۳)۔

⁽¹⁾ سورة آل عمر ان مرعه ب

⁽۲) سور کاپفره ۱۹۲۸

⁽۳) عدیدے: "تعجلوا إلى الحج فإن أحد كم لا يدري ما يعوض له" كى روایت احمد (۱/ ۱۳۳۳ طبع أحمدیه) اورحاكم (۱/ ۲۳۸ طبع دائرة فعارف العثمانيه) فقر برباقر برب الفاظ كے ماتھ مشرت ابن عبائل ہے كى ہے حاكم في السيح قر ارديا ہے ورد جي فيان كى موافقت كى ہے۔

⁽۱) الجموع 2/ ۱۳ وا، ۱۳ وا

⁽۲) ابن عابدین ۶۸ ما، الدسوتی ۶۸ ۳۵ مغنی اکتاع از ۵۰ ۵۰ کشاف اقتاع ۶۸ ۵۰۸ وراس کے بعد کے صفحات ب

⁽۳) این طاہر بین ۱۸۵/۳ (۳)

⁽٣) الديوقي ١٨٥٣ ع

شا فعیداور حنابلہ اس طرف گئے ہیں کہ اگر ایام تشریق کے ایک یا دو دن کی رمی مؤثر کر نے توباقی ایام میں اس کو ادا کرے اور اس پر مچھ واجب نہ ہوگا،کیکن اگر رات میں رمی کی تو رمی کافی نہ ہوگی ، اس کا اعادہ کرےگا (۱)۔

ايام تشريق يصطواف افاضه كومؤخر كرنا:

۔ ہمہور فقرہاء اس طرف گئے ہیں کہ طواف افاضیح ہونے کے لئے کوئی آخری وقت مقرر نہیں ہے، اس کے برخلاف مالکید نے صراحت کی ہے کہ طواف افاضد کا آخری وقت ذی الحجہ کی آخری تاریخ ہے۔

تاریخ ہے۔

جوشخص طواف افاضہ کو ایام تشریق سے مؤثر کردے اس کے بارے میں فقہاء کا اختلاف ہے۔

حفیہ کا مذہب سیہ کہ ایا منج کے دن اور رات (جوکہ عید الاضحیٰ اور اس کے بعد کے دو دن ہیں) سے مؤٹر کرنا مکر وہ تحریکی ہے اور ترک واجب کی وجہ سے دم لازم آئے گا، واجب سیقا کہ طواف افاضہ کواس کے وقت میں اداکر ہے (۲)۔

مالکید کا مذہب بیہ ہے کہ جس نے طواف افاضہ کو ایام تشریق سے مؤخر کر دیا، (اور ایام تشریق عید الاضحیٰ اور اس کے بعد تین دن میں) اس پر دم واجب ہوگا (۳)۔

شافعیہ کا مذہب سیے کہ طواف افاضہ کو بیم نح سے مؤثر کرنا مکروہ ہے، اور ایام تشریق سے مؤثر کرنا زیا دہ کر اہیت کا باعث ہے، اور بلاطواف افاضہ کے مکہ سے نکل جانا بہت زیادہ مکروہ ہے (۳)۔

- (۱) مغنی اکتناع ار ۵۰۸،کشاف القتاع ۲/ ۵۰۸ اوراس کے بعد کے صفحات۔
 - (۲) این طایر بین ۱۳۰۸،۱۸۳ س
 - (m) جوامر لو کلیل ار ۱۸۲۸ الباج و لو کلیل بهامش انتظاب سر ۱۳۰۰
 - (٣) مغني المتاج ار ١٩٠٣ ـ (٣)

حنابلدکا فدیب بیہ کہ جس نے طواف افاضدکوایام نی (ایام تنی (ایام تنی (ایام تنی (ایام تنی) سے مؤفر کیا تو جائز ہے اور اس پر پچھ واجب نہیں، کیونکہ اس کا وقت محدود نہیں ہے۔ انہوں نے صراحت کی ہے کہ طواف افاضد کا اول وقت تر بانی کی آ دھی رات کے بعد ہے، البتہ یوم نحر میں کرنا افضل ہے (ا)، ان کی وقیل حضرت این عمر کا بی قول ہے: "قفاض رسول الله خراج تی ہوم النحو" (۱) (رسول الله علی تا کے طواف وقائد علی کیا)۔

حلق ياقصر كى تاخير:

۱۶- حفیہ مالکیہ اور ایک روایت کے مطابق حنابلہ اس طرف گئے ہیں کہ حلق یا تصر کو ایا م تحرکے کے افر تک مؤثر کرنا جائز ہے، اس لئے کہ جب نحرکی نا خیر جائز ہے (جب کہ وہ تر تیب میں حلق پر مقدم ہے) تو حلق کی نا خیر بدر جہ اولی جائز ہوگی ، البتہ اگر حلق کو اتنا مؤثر کیا کہ ایام نخر تم ہوگا۔

خرختم ہو گئے تو نا خیر کی وجہ سے دم لازم ہوگا۔

شا فعیہ اور ایک روایت کے مطابق حنابلہ اس طرف گئے ہیں کر اگر حلق کو اتنا مؤٹر کیا کہ ایام تشریق نکل گئے تو کچھ واجب نہ ہوگا، اس لئے کہ اصل بیہ ہے کہ (حلق کا وقت) مقرر نہیں ہے، کیونکہ اللہ تعالی نے اس کا اول وقت اس آیت میں بیان کر دیا: ''وَلاَ تَحُلِقُوُا رُوْ وَسَكُمْ حَتَّی یَبْلُغُ الْهَدْیُ مَحِلَّهُ'' (۳) (اور جب تک قربانی رُوُ وَسَکُمْ حَتَّی یَبْلُغُ الْهَدْیُ مَحِلَّهُ'' (۳) (اور جب تک قربانی این نہیں این مقام پر پہنے جائے این سرنہ منڈ اوّ) ایکن آخر وقت بیان نہیں این مقام پر پہنے جائے این سرنہ منڈ اوّ) ایکن آخر وقت بیان نہیں کیا، لہند اجب بھی حلق کرے گا کافی ہوجائے گا، جیسا کہ طواف

⁽۱) كثاف القتاع ۲۸۲۰۵ ـ

 ⁽۲) عدیث: "أفاض رسول الله نظی یوم الدحو....." كی روایت مسلم
 (۳) ۱۹۲۸ ۸ طع الحلمی) نے كی ہے۔

⁽۳) سورۇيقره/۱۹۹

زیارت اور سعی ہے، کیکن ثا فعیہ نے تاخیر کو مکر وہر اردیا ہے (۱)۔ ان سب کی تفصیل اصطلاح '' جج'' کے تحت دیکھی جائے۔

. دنن میت کومؤخر کرنا:

21 - حنف مالکیہ اور حنابلہ فن میت کی تا خیر کو کر وہ کہتے ہیں، ال سے وہ محض متشی ہے جوا جا تک یا کسی چیز سے دب کریا ڈوب کرمر گیا ہو، ال کی تا خیر واجب ہے تا کہ وت قطعی طور پر ٹابت ہوجائے۔
بٹا فعیہ کہتے ہیں: فن میں تا خیر حرام ہے، اور کہا گیا کہ کروہ ہے، البتہ شافعیہ نے تاخیر فن میں ال صورت کو متشی کیا ہے جب میت مکہ یا مدینہ یا ہیت المقدی نے ال کی صراحت کی ہے، لبد الن مقامات پر فن کے لئے تا خیر جائز ہے۔
صراحت کی ہے، لبد الن مقامات پر فن کے لئے تا خیر جائز ہے۔
اسٹوی نے کہا ہے کہ تربت میں اتن مسافت معتبر ہے کہ وہاں
کی جینے سے بہلے لاش میں تبدیلی نہ ہونے گئے (۱۲)۔

کفارات کومؤخر کرنا: کفارات کومؤخر کرنے کے مسائل درج ذیل ہیں:

الف- عَارةُ يَمِين كُومُوَخْرَكُرِنا:

 ۱۸ - جمہور علاء اس طرف گئے ہیں کہ کفار ہ کیمین کو مؤثر کرنا جائز نہیں ہے، حانث ہوتے ہی فوراً واجب ہوجا تا ہے، اس لئے کہ امر مطلق میں اصل یمی ہے۔

شا فعیہ کا مدبب بدہے کہ کفار و کمین علی التر اخی واجب ہوتا

- (۱) ابن عابدین ۲۰۸۷، کشرح الکبیر ۲۷۷، المدونه ۱۸ ۳ طبع له حاده، مثنی الحتاج از ۹۰۸، کمنی سر ۳۱ سر ۳۸ س
- (۲) رداکتاریکی الدرافقار اربی۵، جوابر لوکلیل ار۱۰۹، الشرح اکمپیر ار۱۵س، کشاف القتاع ۲۸ منتی الحتاج ار۲۳ س۲۲ س

ہے (۱)، دیکھئے: اصطلاح '' اُئیان''فقر در ۸ سلا۔

ب- كارة ظهاركومؤخركرنا:

19 - جمہور علاء اس طرف کئے ہیں کہ کفار ہ ظہار علی التر افی واجب ہے، لہذا اگر کفارہ کو مکنداو قات کے شروع میں اداکرنے سے مؤخر کردیا تو گنباگارند ہوگا۔

حنفیہ نے بیاضا فہ کیا ہے کہ آخر عمر میں کفارہ کی اوائیگی کا وقت
عک ہوجاتا ہے، لبند ااگر اواکر نے سے پہلے مرگیا تو گنبگار ہوگا، اور
بلاوصیت اس کے ترک کے ثلث سے بھی کفارہ نبیس لیا جائے گا، البند
اگر ورثا پنیر عا ازخود کفارہ اواکر دیں تو اواہوجائے گا۔ اورا یک قول بیہ
ہے کہ تا خیر کی وجہ سے گنبگار ہوگا، اوراس گناہ کی تا افی کفار ہ ظہاراوا
کر کے کی جائے گی (۲)۔ دیکھنے: اصطلاح ''ظہار'۔

کفار ہ قبل کومؤ فرکرنے کے احکام اصطالح "جنایت" کے تخت دیکھے جائیں، اور رمضان المبارک میں بیوی سے جمائ کرنے کی وجہ سے عائد شدہ کفارہ کومؤ فرکرنے کے احکام اصطلاح "صوم" کے تخت دیکھے جائیں۔

صدقهُ فطر کی تاخیر:

• ٢- شا فعیہ اور حنابلہ کا مذہب اور مالکیہ کے دومشہور تو لوں میں سے
ایک بیہ ہے کہ صدقہ طرر مضان کے آخری دن کے سورج کے غروب
ہوتے جی واجب ہوجاتا ہے۔ مالکیہ کا دوسر اتول بیہ ہے کہ عید کے دن
کی صبح صادق طلوع ہونے کے وقت سے واجب ہوتا ہے۔
جمہور کے نزدیک صدقہ نظر عید کے دن غروب آفتاب تک

(۱) ابن عابد بن ۱۲۳۳، الدسوقی ۱۲ سامه مغنی انحتاج ۱۲۹۳، کشاف القتاع ۲۲ سام

(۲) ابن عابدین ۲ ر ۵۷۸ الشرح اکبیر ۲ ر ۳ ۲ س، الجمل علی شرح انتج سهر ۱۳ س

نكالنا جائزے، اور سنون بيے كه نمازعيد سے مؤخر نه ہو۔

بلاعذراتنا مؤخر کرنا کر عیدکادن گزرجائے، سب کے زویک حرام ہے، لیکن اس تاخیر کی وجہ سے صدقہ اطر ساتھ نہ ہوگا، اس کی قضا واجب ہوگی، حفظ میں سے این ہمام نے اس قول کورائے قر اردیا ہے اور این کیم نے بھی ان کی موافقت کی ہے (ا)، ان کی دلیل میہ ہے کر رسول اللہ علی نے فقر اء کے تعلق ارثا فر مایا: "اغنو هم عن طواف هذا الیوم" (۲) (اُہیں اس دن (ما نگنے کے لئے) گھو منے سے بے نیاز کردو)۔

حفیہ کا مذہب ہیہ ہے کہ صدقہ فظر کے وجوب میں توسیع ہے، پوری محر میں جب بھی اداکرے گا ادائی ہوگا، قضا نہ ہوگا، کیکن مستحب بیہ ہے کہ عیدگا ہ جانے سے پہلے اداکر دے، اور اگر مرگیا اور اس کے وارث نے اداکر دیا تو جائز ہے۔

کیکن اصحاب ابو عنیفہ میں سے حسن بن زیاد کہتے ہیں کہ صدقہ خطر اگر عید کے دن ادائییں کیا گیا تو سا تھ ہوجاتا ہے، جیسا کہ تر بانی (اگر ایا مقربانی میں نہ کی جائے تو سا تھ ہوجاتی ہے)۔

ابن عابرین کہتے ہیں کہ ظاہر یہ ہے کہ بیتیسر اقول ہے جو مذہب(حنق) سے فارج ہے (۳)۔

روزه کی نیت کومؤخر کرنا:

۲۱ – حفیه کا مذہب بیہ ہے کہ رمضان منذ رمعین اور نفل کے روزہ کی

نیت میں ضحوء کبری تک تا خیر کرنا جائز ہے۔ ان تین کے علاوہ مثلاً: رمضان کی قضا، نذر مطلق اور نذر معین کی قضا بقل روزہ کی قضا اس کو تو ڑد ہے کے بعد اور کفارات وغیرہ کے روزوں کی نیت میں تا خیر کرنے کو حضیہ نے مقع کیا ہے، وہ کہتے ہیں کہ رات بی میں یا صبح صادق کے تربیب نیت کرلیما واجب ہے۔

مالکید کا مذہب ہیہ کہ روزہ اس وقت تک نہیں ہوسکتا جب
تک نیت اس کے بقید دوسرے اجزاء پر مقدم نہ ہوہ لبذا اگر صح
صادق طلوع ہوگئ اور نیت نہیں کی تو روزہ نہیں ہوگا، خواہ کوئی روزہ
ہوہ البتہ صوم عاشورہ کے بارے میں دوقول ہیں، مالکید کامشہور
مذہب یہی ہے کہ عاشورہ کے روزہ کی نیت کا تھم بھی دوسر سے روزوں
کی طرح ہے۔

شافعیہ اور حنابلہ نے فرض اور نقل میں فرق کیا ہے بفرض کے لئے انہوں نے رات میں بی نیت شرطتر اردی ہے، ان کی دلیل رسول اللہ علیہ کا بیار شاد ہے: "من لم یُجمع الصیام قبل الله علیہ کا بیار شاد ہے: "من لم یُجمع الصیام قبل الله جو فلا صیام له" (ا) (جس نے صحح صادق سے پہلے روزہ کا ارادہ نہیں کیا اس کاروزہ نہیں ہوا) نقلی روز وں کے تعلق ان کا متفقہ قول بیہ کر زوال سے پہلے نیت کر لینے سے چج ہوجائے گا، دلیل حضرت عائشہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ علیہ فیل نے ان سے ایک حضرت عائشہ کی روایت ہے کہ رسول اللہ علیہ فیل فیل یا فیل یا فیل اون فیل ایک عبد کم شیء ؟ قالت: الا، قال: فیلنی اِفن اصوم "(۱) (کیا تمہارے پاس کچھ ہے؟ حضرت عائشہ نے جواب ویا: نبیس، آپ علیہ فیل کے فیل اور نبیس کے میں روزہ رکھ لیتا ہوں)، اور نبیس، آپ علیہ نیس کورہ رکھ لیتا ہوں)،

⁽۱) ابن عابدین ۲/۳ د، عامیة العدوی کل شرح اَلِی کمن ۱/۵۳ ۴، محق اکتاج ۱/۱۰ ۱/۱۰ اوراس کے بعد کے مفوات ، کشاف القتاع ۲/۱۳۵، ۵۳ س

 ⁽۲) حدیث: "أغلوهم عن طواف هذا البوم" كی روایت نیكی (۱۵۸۳) طبع دائرة المعارف العثمانیه) نے كی ہے، ابن جمر كہتے ہیں كہ اس كی سند ضعیف ہے (بلوغ الرام ۲۳ الطبع عبد المبید خلی)۔

⁽۳) این طاعه پین ۲۸ م

⁽۱) عدیث: "من لم یجمع الصبام قبل الفجو فلا صبام له" کی روایت ابوداؤد (۲۳/۳/۸ طبع عزت عبید دهای) نے کی ہے این تجر نے اے میچ قر اردیا ہے جیسا کرفیض القدیم (۲۳۲/۲ طبع الکلابیة اتجا رہیے) میں ہے۔

⁽۲) عدیده: "هل عدد کیم شیء" کی روایت مسلم (۲٫۴ م ۸ طبع الحلمی) نے کی ہے۔

تأخير ۲۲-۲۳

حنابلہ نے مزید کہا اور یکی ثافعیہ کا بھی ایک قول ہے کہ صدیث سابق کی وجہ سے نفل روزہ زوال کے بعد نیت کرنے سے بھی سیحے ہوجاتا ہے، اور اس لئے بھی بیروزہ سیحے ہوجاتا ہے کہ نیت دن کے ایک جزیبس پائی گئی، لہذا بیاس کے مشابہ ہوگیا جب نیت کا وجود زوال سے ایک لیحہ یہلے ہوجائے (ا)۔

نماز کی قضا کومؤخر کرنا:

۲۲-جمہور فقہاء کا ندب ہے کہ جونماز کے وقت سوتا رہایا نماز کو ہول گیا ال پر نماز کی فضافو را واجب ہے اورتا خبر حرام ہے (۲)، ال لئے کہ رسول اللہ علیقی کا ارشا دہے: "من نسبی صلافہ او نام عنها فلیصلها إذا ذکر ہا" (۳)، خضور علیقی نے یاد آتے می نماز توجب یاد آئے اسے پڑھ لے)، حضور علیقی نے یاد آتے می نماز پڑھ نے کا امر (حکم) فر مایا، اور امر وجوب کے لئے آتا ہے۔ جمہور کہتے ہیں کہ جب سونے اور بھول جانے کی صورت میں فرراً نشا واجب ہوگی، البتہ جمہور کرنے کی صورت میں بدرجہ اولی فوراً نشا واجب ہوگی، البتہ جمہور کے زد کے جو فی ہوئی نماز کی تا خیر کی فرراً نشا واجب ہوگی، البتہ جمہور کے زد کے جو فی ہوئی نماز کی تا خیر کی فرراً نشا واجب ہوگی، البتہ جمہور کے زد کے جو فی ہوئی نماز کی تا خیر کی فرراً نشا علی خوراً نشا کے جانز ہے، جسے کھانا، بیا، نیند جس کے بغیر چارہ نہ ہو۔ نشائے حاجت اور اس چیز کو حاصل کرنا جس کی ضرورت اپنے معاش میں پڑتی ہے۔

شا فعیہ نے اس حکم ہے اس مخص کو منتشی قر اردیا ہے جس نے

- (۱) ابن عابدین ۲۲۵۸،۸۸، الشرح آسفیر ار۱۹۹۸،مغنی اُکتاع ار ۲۳۳، ۲۳ ۲۰،کشاف القتاع ۲۲۷س
- (۲) الملباب فی شرح الکتاب ار ۸۸، الشرح السفیر ار ۲۵، مغنی الحتاج
 ار ۱۲۷، المجموع ۳ر ۱۸، کشاف القتاع ار ۲۹۰
- (٣) عديث: "من لمسي صلاة....." كي روايت بخاري (الفق ٢٠/٣ طبع الشاقيه) اورسلم (١/ ٢٥ ٢ طبع لجلن) في حظرت المن سے كي ہے الفاظ مسلم كے بين-

کسی عذر کی وجہ سے نماز چھوڑی ہو، وہ کہتے ہیں کہ اس کے لئے علی الفور تفامتی جائز ہے، اور اگر تفامین تا خیر کر ہے تو بھی جائز ہے، جیسا کہ رسول اللہ علیہ ہے مروی ہے: "فاتنه صلاقہ الصبح فلم یصلها حتی خوج من الوادی" (رسول اللہ علیہ کی فلم یصلها حتی خوج من الوادی" (رسول اللہ علیہ کی صبح کی نماز نوت ہوگئی تو اسے اس وقت تک نہیں پڑھا جب تک اس وادی سے نہ نکل گئے)، شافعیہ کہتے ہیں کہ اگر علی الفور تفنا واجب ہوتی تو حضور علیہ ہے اس مؤثر نہ کرتے ہیں کہ اگر علی الفور تفنا واجب ہوتی تو حضور علیہ ہے اس مؤثر نہ کرتے ہیں کہ اگر علی الفور تفنا واجب ہوتی تو حضور علیہ ہے مؤثر نہ کرتے ہیں کہ اگر علی الفور تفنا واجب ہوتی تو حضور علیہ ہے۔

ورّ كومؤخركرنا:

۳۳۰ - فقرباء کا ال پر اتفاق ہے کہ ورک اخیر وقت تحریک متحب ہے،
اور بیا بخباب ال شخص کے لئے ہے جے اعتاد ہوکہ وہ رات کے آخر میں
مرز پراھ لے گا، اگر اعتاد نہ ہوتو سونے سے پہلے مز پراھ لے (۳)، ال
لئے کہ حضرت جابر گی روایت ہے کہ رسول اللہ علیق نے ارشا فر مایا:
آیکم حاف آلا یقوم من آخر اللیل فلیو تو شم لیر قلہ و من
وثق بقیامه من اللیل فلیو تو من آخرہ، فإن قواء ق آخو
اللیل محضورة، و ذلک آفضل " (تم میں ہے کہ ور اللیل محضورة، و ذلک آفضل " (تم میں ہے کہ ور اللیل محضورة، و ذلک آفضل " کے گاتو اسے چاہئے کہ ور اللیل محضورة، اور جے رات میں اٹھ بائے گاتو اسے چاہئے کہ ور اللیل محضورة میں اور جے رات میں اٹھ جانے کا یقین ہوتو وہ رات کے اخرین ور پرا ہے، کیونکہ رات کے آخر میں ور پرا ہے، کیونکہ رات کے آخر میں وقت پرا ہنا اضل ہے)۔
وقت فر میں ور پرا ہے، کیونکہ رات کے آخری حصد میں قر آن پرا ہے کے کو وقت پرا ہنا اضل ہے)۔

- (۱) عدیث: "فائنه صلاة الصبح فلم يصلها حتى خوج من الوادی" کی روایت سلم (۱/ ۲۲ م طع الحلی) نے کی ہے۔
 - (٢) مغنی اکتاع ار ۱۲۷ ا، الجموع سهر ۱۸ _
- (۳) فتح القدریار۳۷ س، الشرح الصیغر ار ۱۳۳ اور اس کے بعد کے صفحات، القوائین الکلمیدر ۹۳،مغنی الکتاج ۱۲۲۱، کشاف القتاع ار ۱۹۳۸، تبیین الحقائق ار ۱۹۸
- (٣) عديث "أيكم خاف كل روايت مسلم (ار ٥٢٠ طبع لجلمي) ني كل بيد

سحرى كومۇخر كرنا:

۳۴-فقہا ء کا اس رہر اتفاق ہے کہ تحری کو مؤفر کرنا اور افطار میں جلدی کرنامسنون ہے، اس لئے کہ زید بن ٹابت کی حدیث ہے وہ فرماتے ہیں: "تسحونا مع النبي ﷺ ثم قام إلى الصلاة قلت: كم كان بين الأذان والسحور؟ قال: قدر خمسين آیة" (ام نے رسول اللہ علیہ کے ساتھ بحری کھائی، پھر آپ نماز کے لئے کھڑے ہو گئے، میں نے کہا: اذ ان اور حری کے درمیان كتنے وقت كا فاصله تما؟ جواب ديا: پيجاس آيتيں پراھنے كى مقدار) ـ حضرت ابو ذرٌ کی حدیث میں ہے کہ رسول اللہ علیہ نے ارثاً وفريالي:"لا تزال أمتى بخير ما عجلوا الفطر وأخروا السحود" (۲۶) (میری امت برابر بهاائی پر رہے گی جب تک وہ افطار میں جلدی اور تحری کھانے میں تا خیر کرتی رہے گی)۔

افطار میں جلدی کرنا اس وقت مسنون ہے جب کہ سورج کے غروب ہوجانے کا تحقق ہوجائے، اور تحری میں ناخیر اس وقت مسنون ہے جب کہ طلوع صبح صادق کا شک نہ ہو،کیکن اگر اس میں شک ہویا رات کے باقی رہنے میں تر در ہوتو ناخیر مسنون نہ ہوگی، بلکہ اں کار ک افضل ہوگا ^(۳)۔

ا دائے قرض میں تا خیر کرنا:

۲۵-جب ادائیگی قرض کا وقت آجائے اور قرض دار قرض ادا نه كرے جبكه وه ادائيگی بر تا در ہو، كيكن بلاعذر تا خير كر رہا ہوتو تاضى

- (m) ابن عابدين ۱/۱۱/۱۰، مغنی کمتاج ار ۳۳ ۲، مواہب الجليل ۲/۸ ۹ ۳۰، كشاف القناع ١٠ ١٣٣١

ا ہے اس وفت تک سفر کرنے ہے روک دے گا اور قید کرے گاجب تک وہرض ادانہ کردے،رسول اللہ علیہ ارثیا ہر ماتے ہیں:"لی الواجد يحل عرضه وعقوبته" (مني كانال مولكرا الكي ہے آبر وئی اور مز اکوحلال کردیتا ہے)۔

پھر بھی اگر وہ ادانہ کرے، اور اس کے پاس ظاہر امال ہوتو حاکم ا سے فر وخت کر کے قرض ادا کرائے گا، اس اختلاف اور تنصیل کے مطابق جواس سلسلہ میں فتھی مٰداہب میں یائے جاتے ہیں ہلین اگر ادا بُلگ ترض میں نا خیر کسی عذر کی وجہ سے ہو، مثلاً تنگدست ہوجانا ، تو عاکم اسے تنگدی دور ہونے تک مہلت دےگا، اس لئے کہ ار ثاد بِارِي ہِ: ' وَانُ كَانَ ذُو عُسُوةٍ فَنَظِوَةٌ اللَّى مَيْسُوقٍ'' (اور اگر تنگدست ہے تو اس کے لئے آسودہ حالی تک مہلت ہے)۔

اور اگر مقروض کے باس مال ہوکیکن اس سے قرض ادا نہ ہو باے، اور قرض خواہ مقروض پر اس مال میں تضرف کرنے ہے روک لگانے کا مطالبہ کریں تو قاضی ہر ان لوگوں کا مطالبہ بورا کرنا لازم ہے (اللہ) اختلاف وتفصیل کے مطابق جوفتھی مداہب میں یائے جاتے ہیں، جنہیں اصطلاح '' أداء' اور ''حجر' اور ' تفلیس'' کے ابواب میں دیکھا جائے۔

⁽¹⁾ عديث: الاسحوال مع النبي نَائِثُ كل روايت يخاري (الشخ ۱۳۸ / ۱۳۸ طبع کملنی) نے کی ہے۔ (۲) حدیث: 'کلا دنوال اُمنی" کی گخر تئے نقر انجسرر ۵ میں کذر دیگی۔

⁽۱) - حديث: "لكي الواجد يحل عوضه و عقوبته....." كي روايت الوراؤر (١٩٨٨ م طبع عزت عبيد وهاس) اور حاكم (١٩٨٨ ١٠ طبع وارزة المعارف العقمانيه) نے کی ہے حاکم نے الے سی کہا ہے اور دہی نے ان کی مو افقت

⁽۱) سورۇپۇرى ۱۸۰۰ـ

⁽m) ابن عابد بن سهر ۱۸ m اور اس کے بعد کے صفحات ، الدسوتی ۳۲۲/۳، القليع لي كل شرح محلي ٢ مر ٢ ٢ م، أمغني ١٨ م ٥٠ ٣ ، هم ٥٠ هم، نيز د تيجيئة الموسوعة الكليبة كويت ٢٢ ٣٣٣.

مېركومۇخركرنا:

۲۶ - میر محض عفد نکاح سے واجب ہوجاتا ہے، ابستہ پورے یا پچھ مبر کی ادائیگی کو دخول سے مؤخر کرنا جائز ہے (۱)۔

اختلاف اورتفصیل اصطلاح'' نکاح''میں دیکھی جائے۔

بیوی کے نفقہ کومؤخر کرنا:

27- شوہر کے ذمہ بیوی پر اور جن کی وہ پر ورش کر رہا ہے ان پر خری کی وہ پر ورش کر رہا ہے ان پر خری کی واجب ہے، اور شوہر و بیوی کے لئے جائز ہے کہ وہ نفقہ کو جلد یا در سے اوا کرنے کے سلسلہ میں کوئی اتفاق کرلیں ، ہر شوہر کا اعتبار اس کی آمد نی کے لحاظ ہے کیا جائے گا، اگر شوہر نے سنگدی کی وجہ سے بیوی کی طرف بیوی کی طرف بیوی کی طرف سے طالق کا یا نفقہ میں تا خیر کی تو بعض فقہاء کے نزد یک بیوی کی طرف سے طالق کا یا نفقہ کا مطالبہ کرنا جائز ہے۔

پھر اگر ال نے نفقہ کومؤخر کیا اور کی نقطے ال پر عائد ہو گئے تو کیا تقادم (پرانے ہونے) کی وجہ سے نفقہ ساقط ہوجائے گایا ذمہ میں باقی رہے گا؟ اس سلسلے میں اختلاف اور تفصیل ہے (۳) جسے ''باب المفقة''میں دیکھا جائے۔

سودی اموال میں عوضین میں سے ایک کی حوالگی میں تا خیر کرنا:

۲۸ - جب ربوی مال کی تیج ربوی مال سے ہوتو نقد اور (مجلس سے)

- (۱) ابن عابدین ۲۲ هست، الملباب ۱۹۹۳، بدائع الصنائع سهر ۵۱ ساور اس کے بعد کے مفوات، الدسوتی ۲۷ سه ۴، مغنی اکتاع سهر ۲۵، ۲۳۰، کشاف الفتاع ۲۵ سسا
- (۲) این مآبدین ۱۹۰۳، ۱۹۵۰، مجمع وانیر ارسه سه سه منخی الحتاج سر ۲۹ سه ۲۸ سه ۱۹۰۳، ۱۹۵۰، منخی الحتاج سر ۲۹ سه ۲۸ سه ۱۹۰۳، ۱۳۵۰ سه الدسوقی ۲ سر ۱۹۰۳، ۱۹۵۰ ساله ۱۳۹۰ ساله ۱۹۰۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۹۰۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۹۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳۳ ساله ۱۳ ساله ۱۳

علاحدگی سے پہلے قبنہ شرط ہے اور تا خیر جائز نہیں ہے، خواد ایک جنس سے ہوں تو ہراہری کی شرط کا بھی اضافہ ہوگا، اس لئے کہ رسول اللہ علیج کا ارشاد ہے:

"الله ب بالله ب والفضة بالفضة والبر بالبر والشعیر بالشعیر والتمر بالتمر والملح بالملح مثلا بمثل سواء بالشعیر والتمر بالتمر والملح بالملح مثلا بمثل سواء بسواء یلاً بید فیاذا اختلفت الأجناس فبیعوا کیف شئتم بدل بید اور نیچوسونے کوسونے کے بدلے، چاندی کو چاندی کے بدلے، تارک کو بالدی کے بدلے، تارک کو کا براہر ہائی ہوا کہ براہر بائی ہوا کے بدلے، تارک کو بائدی کو تارک کو بائی ہوا کے بدلے، تارک بنس کے باتھ، براہر براہر باتھ ور ہاتھ (نقذ)، پس جب جنسیں مختلف ہوجا کیں تو جیسے براہر، ہاتھ ور ہاتھ (نقذ)، پس جب جنسیں مختلف ہوجا کیں تو جیسے بائی وخت کر وبشرطیکہ ہاتھ ور ہ

حدقائم كرفي مين تاخير كرنا:

79 - عدشر بعت کی طرف سے مقرر کردہ ایک ہز اہے جو ایسے خص پر قائم کی جاتی ہے جس نے موجب حدفعل کا ارتکاب کیا ہو، بیئز اہل کے لئے زجر ونو بھٹے ہوتی ہے اور دوسروں کے لئے تا دیب، اسل بیہ ہے کہ تکم کا ثبوت مل جانے کے بعد مجرم پر بغیر کسی تا خیر کے فوراً عد جاری کی جائے ، لیکن بھی بھی ایسی بات پیش آ جاتی ہے جو تا خیر کو واجب کرتی ہے جو تا خیر کو واجب کرتی ہے ، یا ہی کے ساتھ تا خیر مستحب ہوتی ہے :

- (۱) حدیث: "الملهب بالملهب و الفضة بالفضة" کی روایت بخاری (الفتح سهر ۱۹۷۹ طبع اسّلتیه)اورسلم (۱۲۱۱ طبع الحلمی) نے حضرت عبارہ بن صامت کے ہیں۔
- (۲) ابن عابدین سرسه ۳۳۵، ۳۳۵، الدسوقی سهر ۱۳۹، ۱۳۹۰ مغنی انحماع ج ۲۳، ۲۲ کشاف القتاع سر ۲۲ ۱۹،۳ ۱۳ اوراس کے بعد کے صفحات ۔

الف-لہذ ااگر عد کوڑے کی ہوتو سخت گرمی اور سخت سر دی میں مؤخر کرنا واجب ہے، کیونکہ ایس حالت میں حد قائم کرنے میں بلاکت کا خوف ہے، کیکن حنابلہ اس کے خلاف ہیں، ایسامریض جس کے صحت مند ہونے کی امیر ہوتو صحت مند ہونے سے پہلے اس پر عد تائم نہیں کی جائے گی، اس لئے کہ مرض کی تکلیف اور مار کی تکلیف کے اکٹھاہونے کی صورت میں اس کے بلاک ہوجانے کا اند بیٹہ ہے، ال میں حنابلہ کا اختااف ہے اور نفاس والی عورت رہمی جب تک نفاس بندنہ ہوحد نہیں جاری کی جائے گی، ہی لئے کہ نفاس بھی ایک فتم کامرض ہے، البتہ جا کھیہ ہر حد قائم کی جائے گی، اس لئے کہ حض مرض نہیں ہے۔ حاملہ ہر اس وقت تک حذبیں قائم کی جائے گی جب تک وہ بچہنہ جن دے اور نفاس سے باک نہ ہوجائے ، اس لئے کہ اس میں بید اور ماں دونوں کی بلاکت کا اند میشہ ہے، ای طرح اس وقت تک عد جاری بیس کی جائے گی جب تک وہ بچیدودھ کے معالمے میں کسی دودھ یلانے والی کے ذربعیہ اپنی ماں سے مے نیاز نہ ہوجائے، بچہ کی زندگی کی حفاظ**ت کے پیش** نظر پیکم ہے ⁽¹⁾۔ . تغصیل اصطلاح '' حد'' کے تحت و کمھئے۔

ب ۔ جہاں تک تصاص اور سنگ ارکرنے کا معاملہ ہے تو اس میں اخیر نہیں کی جائے گی، البتہ حاملہ میں تا خیر ہوگی قید سابق کے مطابق ہے مطابق ہیں جہ جب قصاص کے اولیاء موجود ہوں ، لیکن اگر نابا لغ ہوں یا غائب ہوں تو نابا لغ کے بالغ ہونے اور غائب کے موجود ہون تک قصاص کومؤخر کیا جائے گا (۲) ۔ اس میں اختااف موجود ہونے تک قصاص کومؤخر کیا جائے گا (۲) ۔ اس میں اختااف اور تفصیل ہے جے" قصاص کی اصطالاح میں دیکھا جائے۔

ج-ای طرح بعض فقہاء کے نزویک مرتد کی سزاتین دن تک وجو بامؤٹر رہے گی، اور بعض کے نزویک تین دن تک مؤٹر کرنامستحب ہے، ال مدت میں اسے قیدر کھا جائے گا اور چھوڑ آئیں جائے گا، تاک ال سے نو بہ کرالی جائے ، یا جو شبہات اسے فیش آئے ہوں آئییں دور کردیا جائے ، لبندا اگر تو بہ کر لے تو اسے چھوڑ دیا جائے گا، ورنہ اسے مسلمان ہونے کے بعد کفرافتیا رکرنے کی وجہ سے تل کردیا جائے گا

د۔ فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ جو خص نشد میں وہتا ہواس کی سز ا
اس وفت تک مؤخر کی جائے گی، جب تک اس کا نشد زائل نہ
ہوجائے، تا کہ سز اکا مقصد جو کہ زجر و تو بخ ہے حاصل ہو، جو تکلیف
کے احماس ہے بی ہوگی، اور نشد میں وہتا الحض کی عقل زائل ہوجاتی
ہے جیسا کہ مجنون کی ، لہذا اگر نشداتر نے سے پہلے عدجاری کردی گئی
تو جمہور فقہاء کے نزدیک حدکا اعادہ کیا جائے گا،۔ اور ثا فعیہ کے دو سیح
تو جمہور فقہاء کے نزدیک حدکا اعادہ کیا جائے گا،۔ اور ثا فعیہ کے دو سیح
تو بھی یکی ظاہر ہے، مرد اوی نے حواثی القروع میں اسے
این نصر اللہ کی طرف منسوب کیا ہے اور کہا ہے کہ سیح بات میں ہے کہ اگر
این نصر اللہ کی طرف منسوب کیا ہے اور کہا ہے کہ سیح بات میہ ہے کہ اگر
اس اتف تک تکلیف پہنچ جائے جوموجب زجہ ہوتو حد ساقہ ہوجائے گی،
اس اتف تک تکلیف پہنچ جائے جوموجب زجہ ہوتو حد ساقہ ہوجائے گی،

وعوى قائم كرف مين تاخير كرنا:

⁽۱) بدائع لصنائع ۱۹۰۹ من الدسوقي سر ۳۲۳ مغنی الحتاج سر ۳۳، ۳۳، ۳۳، ۲ ما در القتاع ۲/۱۳۸۰ منتی الحتاج سر ۳۲، ۳۳، ۳۳، ۲ ما در القتاع ۲/۱۳۸۰ منتی العتاع ۲/۱۳۸۰ منتی العتاد ۲ منتاع ۲ من

رم) المغنى ماره ساما، كشاف القتاع هر ۵۳۵، مغنى الحتاج سر ۳۳،۳۳، ساء، الشرح المعنير ساره ۵ ساء الدسوقي سهر ۲۵۷، فنح القدير هر ۱۹۲

⁽۱) الملباب سر ۲۷۵، المثرح الصفير ۱۳۷۳، مغنی المحتاج سر ۱۳۰۰، نیل امآ رب۲ ر ۹۰۰

 ⁽۲) الملياب سهر ۱۸ م، اين حايدين سهر ۱۹۳ ، شرح افررقاني ۱۸ سانه الدسوقی سهر ۱۳ م، شرح افررقاني ۱۸ سانه الدسوقی سهر ۱۹۰ م، شرح افزائل ۱۸ سانه ۱۸

تأخير ٣١–٣٣

بعد ووی سننے سے منع کر دیا ہوتب ایسا ہوگا کیکن وقف اور وراثت کے معاملات میں اور کسی عذر شرق کے پائے جانے کے وقت ال مدت کے بعد بھی وعوی مسموع ہوگا جمانعت کی وجہدیہ ہے کہ وعو وں میں جیلے بہانے اور مکر وفر بیب سے بچا جا سکے۔ پھر کہتے ہیں: سلطان کی ممانعت کے بعد وعوی کی عدم ساعت کے سلسلے میں '' الحامد یہ' مانعت کے سلسلے میں '' الحامد یہ' میں مذاہب اربعہ کے فتا و نے فل کئے گئے ہیں۔

اور'' اکنیریئ' میں ہے کہ جب سلطان مرجائے تو دوسرے سلطان کی طرف سے ممانعت کی تجدید ضروری ہے، سلطان کے مرجانے کے مرجانے کے مرجانے کے معداس کی ممانعت برقر ارنہیں رہتی (۱)۔

ا دائے شہادت میں تا خیر کرنا:

اسا – اگر کوئی شخص بیاری یا مسافت کی دوری یا خوف جیسے عذر کے
بغیر شہادت کی ادائیگی میں تاخیر کرنے تو گواہ کے ہم ہوجانے کی وجہ
سے (کر وہ اب تک کبال تھا؟) اس کی شہادت قبول نہیں کی جائے گی،
کیمن حدقذ ف میں نقادم مؤثر نہیں ہوتا، تاخیر ہوجانے کے باوجود
شہادت قبول کی جائے گی کیونکہ بیچن عبد ہے، ای طرح چور چوری
کئے گئے مال کا ضامین ہوگا، اس لئے کہ وہ جن عبد ہے، ابلدا تاخیر کی
وجہ سے ساتھ نہ ہوگا۔

شراب نوشی کے معالمے میں اگر شہادت میں ایک ماہ کی تاخیر ہوگئ تو حفیہ کے اسمح قول کے مطابق عدسا قط ہوجائے گی، قصاص کے معالمے میں تاخیر شہادت، قبول شہادت سے مافع نہیں ہے، جیسا کر قبول شہادت کے ضابطہ کے سلسلہ میں ابن عابدین کہتے ہیں: '' تقادم'' حقوق اللہ میں مافع ہے، حقوق العباد میں مافع نہیں ہے (۲)،

فقہاء کے درمیان اس مسلم میں اختااف وتنصیل ہے، جے ''باب الشہادة''اور اصطلاح'' نقادم'' کے تحت دیکھی جائے۔

نماز کی صفوں میں عورتو ں اور بچوں کو پیچھے کرنا:

۱۳۲ – سنت ہیہ ہے کہ مردامام کے پیچھے کھڑ ہے ہوں، مردوں کے بعد بیچھے کھڑ کے گھڑ کے ہوں، اور مستحب ہے کہ عورتیں سب کے پیچھے کھڑ ک ہوں (۱)، اس لئے کہ ابو ما لک اشعریؓ کی روایت ہے: ''اِن النہ یا اللہ شعریؓ کی روایت ہے: ''اِن النہ خلف مالی و اقام الوجال یلونه و اقام الصبیان خلف ذلک و اقام النہ علی ہے کہ خلف ذلک ''(۲) (رسول اللہ علی ہے کہ نہ کہ اور بچوں کو ان کے نہی کھڑ اکیا، اور بچوں کو ان کے پیچھے کھڑ اکیا)۔



- (۱) ابن عابد بن ارسم سه الدسوقی ارسس مغنی الحتاج ار ۳۳ م، کشاف القتاع ار ۸۸ س
- (۲) حدیث: "ابو مالک شعری" کی روایت ابوداؤد (ار ۳۳۸ طبع عزت عبید دماس) دراجه (۱/۵ / ۳۳۳ طبع کمیردیه) نے کی ہے۔

⁽۱) این طابدین ۳۲۳۸سه

⁽۲) ابن عابد بن سهر ۱۵۸، ۵ سه»، الدسوقی سمر ۱۷۳، المشرح المسفیر سهر ۲۳۷، شرح الزرقانی ۱۲۲۷، مغنی اکتاع سمر ۱۵۱، الانصاف ۱۲۸۸

حفیہ کے فزود یک تعزیر ال سز ایر بھی صادق آتی ہے جوشوہر یا باپ یا ان کے علاوہ سے صادر ہو، جیسا کہ وہ امام کے معل پر صادق آتی ہے۔ ابن عابدین کہتے ہیں: تعزیر وہ سز اہے جسے شوہر دے یا آتا، یاہر وہ محض جوکسی کومعصیت کامر تکب دیکھیے (۱)۔

یہ تو تعزیر کے اطلاق کی بات تھی، اور غیر حدود میں امام سے صادر ہونے والی سز اؤں سے متعلق احکام کی تفصیل اصطلاح '' تعزیر'' کے تحت دیکھی جائے۔

بہر حال تا دیب اپنے دو اطلاقوں میں سے ایک میں تعزیر سے زیادہ عام ہے۔

تا ديب كاشرعى حكم:

سا - ابن قد امد کہتے ہیں: ال بات میں فقہاء کے درمیان اختلاف کا جمیں علم نہیں کر حقوق زوجیت سے متعلق احکام میں شوہر کے لئے میوی کی تا دیب جائز ہے، اور بیک وہ واجب نہیں ہے (۲)۔

لیکن اللہ تعالیٰ کے کسی حق مثلاً نماز کے ترک کردینے کی وجہ سے تا دیب کرنے کے جواز کے سلسلہ میں فقہا وکا اختلاف ہے ، بعض حضرات منع کرتے ہیں ، بعض جائز قر اردیتے ہیں ، جیسا کہ انتا واللہ عنقریب آجائے گا^(m)۔

البنة فقنہاء کا ال پر اتفاق ہے کہ ولی کے ذمہ نماز وطہارت جھوڑنے کی وجہ سے اور فر ائض وغیر ہ کی تعلیم کی خاطر بچہ کی تا دبیب

تاً دىيب

تعریف:

ا سناً دیب لغت میں آذبہ تادیباً کا مصدر ہے، یعنی اس نے اس کو ادب سکھایا، اور اس کے ہرے فعل پر سز ادی، بیریا ضت نفس اور محاسن اخلاق کانام ہے۔

فقہا ء کا استعال اس معنی سے علا حدہ نہیں ہے۔

متعلقه الفاظ: ي

تعزير:

۲- لغت میں تعزیر کا معنی ہے: اوب وینا، رو کنا، مدو کرنا (۱) ای معنی میں اللہ تعالی کا بیدار شاوہ: "فَاللَّذِینَ آمَنُوا بِهِ وَعَوَّرُوهُ وَ" (۳) (سوجولوگ اللہ (نبی) پر ایمان لائے اور اللہ کا ساتھ دیا)۔

تعزیر کاشر قی معنی ہے: ایسی معصیت پر ادب دینا جس میں عد اور کفارہ نہ ہو۔خطیب شربینی کہتے ہیں: ولی، شوہر اور معلم کی مار کا تعزیریا م رکھنا، بیدو اصطلاحوں میں سے سب سے مشہور اصطلاح ہے، جیسا کہ اسے رافعی نے بھی ذکر کیا ہے۔خطیب کہتے ہیں: بعض حضرات لفظ تعزیر کو امام یا اس کے نائب کے ساتھ خاص کرتے ہیں، اور ان کے علاوہ کے مارنے کو تعزیر کے بجائے تا دیب نام رکھتے ہیں،

⁽۱) کموسوط للسرخسی ۱۹۸۹ سم، فتح القدیر ۱۸ ۱۱، منفی اکتیاج ۴ ۱۹۹، ۱۹۹، تیمر ق الحکام ۴ رسم۴ ، کشاف الفتاع سر ۷۲، حاشیداین عابدین سر ۷۷۱

⁽۴) - لمغنی لا بن قند امه ۷۷ ساه لا م للهافتی ۵۷ ساه ا، الربود کی ۱۹۵۸ ایسو ایپ انجلیل سهر ۱۲ ا، این هاید بین سهر ۹۰ ا

⁽۳) - حاشيه ابن هايو بين الر۳۳۵، ۵ ر ۳۳ سيمغني الحتاج الراساء المغني لا بن قد امه الر۵ الا، ۱۲۱۲ _

⁽۱) لسان العرب، أمصباح أمير ماده" أدب" اور" عزر".

 ⁽۲) سورة الراف ١٨٥٨ الـ

کرنا واجب ہے، اور بینا دیب زبان سے ہوگی اگر بچے سات سال کا ہو، اور مار نے سے ہوگی اگر دس سال کا ہواور مار اس کی اصلاح کے لئے ضروری ہو، اس لئے کہ حدیث میں ہے: "علموا الصببی الصلاق لسبع سنین، واضوبوہ علیها ابن عشو سنین"() (بچوں کونماز سکھاؤجب وہ سات سال کے ہوں، اور آئیس نماز نہ پڑھنے پر ماروجب وہ دس سال کے ہوں، اور آئیس نماز نہ

فقہاء کا اس بات میں اختااف ہے کہ امام اور ان کے مانہین کا اس شخص کوجس کا معاملہ ان کے پاس پنچے ، تا دیب کرنے کا کیا عظم ہے؟

توانام او حنیفہ، انام ما لک اور انام احمد کا ندیب ہیے کہ جس معاملہ میں تا دیب مشر و گی ہوال میں تا دیب کرنا ان پر واجب ہے، الایک انام ترک تا دیب میں کوئی مصلحت سمجھے، ان کا کہنا ہے کہ اگر کسی معاملہ میں تا دیب کرنے کی صراحت نص میں موجودہ و، مثلاً اپنی ہووی کی بائدی سے وطی کرنا، تو ایسے معاملہ میں اس علم پر عمل کرنا ، تو ایسے معاملہ میں اس علم پر عمل کرنا واجب ہے، اور اگر اس کی صراحت نص میں موجود نہ ہواور انام تا دیب کرنے میں مصلحت سمجھے، یا اسے یقین ہو کہ مرم بغیر مارے ندر کے گا تو ایسا کرنا واجب ہے، کیونکہ بیگنا ہوں کے مجرم بغیر مارے ندر کے گا تو ایسا کرنا واجب ہے، کیونکہ بیگنا ہوں سے روکنے کے لئے ہے، جس کی مشر وعیت اللہ کی رضا کی فاطر ہے، کے افراح واجب ہوئی (۲)۔

شا فعیہ کی رائے ہے کہ امام پر تا دیب کرنا واجب نہیں، اور اس کے لئے ترک بھی جائز ہے۔

ان کی دلیل میہ کرسول اللہ علیائی نے اس جماعت سے اعراض کیا جوتا دیب کی مستحق ہو چکی تھی ، لیکن تا دیب نہیں کی (۱) ، جیسے مال غذیمت میں خیانت کرنے والا ، اگر تا دیب واجب ہوتی تو آپ ان سے اعراض نہ کرتے ، بلکہ ان کی تا دیب کرتے (۲) ۔ آپ ان سے اعراض نہ کرتے ، بلکہ ان کی تا دیب کرتے (۲) ۔ میاس چیز برتا دیب کی بات تھی جوحق اللہ ہو ، لیکن اگر آ دمی کا کوئی حق ہواور صاحب حق تا دیب کا مطالبہ کرے تو فقہا ء کا اس پر اتفاق ہے کہ امام پرتا دیب کرما واجب ہے ، لیکن اگر صاحب حق معاف کردے تو کیا چربھی امام تا دیب کرسکتا ہے؟

ولايت تاديب:

س - ولايت تا ديب درج ذيل لو كون كوعاصل ب:

الف - امام اور ال کے نائب مثلاً افاضی کو ولایت عامه کی وجہ ہے ، آئیس الشخص کی تا دیب کاحق ہے جوکسی ایسے ممنوع کا ارتکاب کر ہے جس میں حدیثہ ہو (م) ان پر تا دیب کرنا واجب ہے یائیس؟ اس میں فقہاء کے درمیان اختلاف ہے، جیسا کہ اس کی طرف ایٹا رہ

[۔] (۱) حدیث: "علموا الصبی الصلاق....." کی روایت ایوداؤد (۲/۱ ۳۳ طبع عزت عبید دھاس) اور ترین (۲/۹۵ طبع الحلق) نے کی ہے اور تریندی نے اے صن کہا ہے الفاظ ترین کے ہیں۔

ے سے میں ہوئے۔ (۲) ابن عابد بین سر ۱۸۷ء مواہب الجلیل ۲۹ ۳۰ ساء کمنی لابن قدامہ ۱۳۲۸ میں مارک سے ۱۸۷۲ سے ۱۸۷۸ مواہب الجلیل ۲۹ ساء کمنی الابن قدامہ

⁽۱) حديث الإعواض الدبي نظيفًا عن جماعة كل روايت بخاري (الشخ الرماه ۵ طبع المنظر) ورسلم (ار ۱۰ اطبع عن بالما لي المحلم) نے کی ہے۔

 ⁽۲) مغنی الحتاج مهر ۱۹۳۰ الا مام الشافتی ۲ / ۲ ۷ ار

⁽m) مايتمراهي

 ⁽٣) حاشيه ابن عابدين سهره ۱۸ ۵ (٣٩٣ه، مغنی الحتاج سهر ۱۹۵۳، حافية الدروق ١٩٧٩ه ١٣٠٠

گز رچاہے، و کیھئے: اصطلاح" تعزیر"۔

ب - ولی کو ولایت خاصد کی وجہ سے، ولی باپ ہویا وادا، یا وصی ہویا تاضی کی طرف سے نشتظم (۱)، حدیث میں ہے: "مروا أو لاد کم بالصلاقاللخ" (۱) (اپنی اولا دکونماز کا تھم دو)۔

ج ۔ استاذ کوشا گرد پر ولایت حاصل ہے اس کے ولی کی احازت ہے (۳)۔

و۔ شوہر کو بیوی پر ان معاملات میں جن کا تعلق حقوق زوجیت سے ہے، ولا بیت حاصل ہے، اربٹا وہاری ہے: ''وَ اللاَّتِی تَخَافُونَ نَشُورُ وُهُنَّ فِی الْمُضَاجِعِ وَاصْرِبُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِی الْمُضَاجِعِ وَاصْرِبُوهُنَّ فَی الْمُضَاجِعِ وَاصْرِبُوهُنَّ ان کی سرَسْی کاعلم وَ اصْرِبُوهُنَّ ان کی سرَسْی کاعلم رکھتے ہوتو آئیس آئی سر سی کا اور جومور تیں ایس ہوں کہتم ان کی سرَسْی کاعلم رکھتے ہوتو آئیس آئی سر آئیس خوابگاہ میں تنہا چھوڑ دواور آئیس مارو)، اس پر فقتہاء کے مامین اتفاق ہے (۵)۔

کین اس میں اختابات ہے کہ شوہر کے لئے حقوق اللہ مثابا نماز اور اس جیسے دوہر سے فر اُنض کوئڑک کردینے کے سلسلہ میں بیوی کی تا دیب کرنا جائز ہے یا نہیں؟ تو مالکیہ اور حنا بلہ کا ندیب ہے کہ الیم صورت میں اس کی تا دیب کرنا جائز ہے (۱۲) بیکن مالکیہ نے بیقید لگائی ہے کہ تا دیب کا جواز اس وقت تک ہے جب تک معاملہ امام کے سامنے چیش نہ ہوا ہو۔ حقیہ اور ثنا فعیہ کے فرد دیکے حقوق اللہ میں شوہر کو تا دیب کا حق اور ثنا فعیہ کے فرد دیکے حقوق اللہ میں شوہر کو تا دیب کا حق اور ثنا فعیہ کوئر دیکے حقوق اللہ میں شوہر کو تا دیب کا حق ایک کوئل اللہ کا تعلق شوہر سے نہیں ہے اور نہ بیاد بیا کہ کوئی اللہ میں ہے اور نہ

ی اس کی منفعت شوہر کی طرف لوثق ہے (۱) منزید بیک ہم فقہاء کے کسی ایسے قول سے واقف نہیں جس میں شوہر پرتا دیب کرنا واجب ہوہ بلکہ ان کی عبارتوں سے سیجھ میں آتا ہے کہڑک اولی ہے۔ مام شافعی کی کتاب لائم میں (ایک باب) ہوں آیا ہے: ''فعہ

ام شام شافعی کی کتاب لا میں (ایک باب) یوں آیا ہے: "فی نهی النبی النبی النبی الله عن ضربها و نهی النبی کی ممانعت پھر اجازت کا بیان اور حضور کا بیز مان کرتم میں ہے ایچھے لوگ ہر گرنہیں ماریں گے)، ایسا لگتا ہے کہ رسول اللہ النبی النبی نے مار نے ہاں وقت منع کیا ہے جب مورت، شوہر کی منع کی ہوئی چیز وں ہے رک جائے ، اور مار نے کی اجازت وے کر مارنا ان کے لئے مباح کیا جوت پر ماریں گئین ان کے لئے مباح کیا جوت پر ماریں ہین ان کے لئے مباح کیا جوت پر ماریں ہین ان کے لئے بھی پہندیدہ کی تر اردیا ہے کہ نہ ماریں، چانچ فر مایا: " لمن بیضر ب خیار کم" (تم میں ہے ایچھے لوگ ہر گرنہیں ماریں گے)، جمہور خیار کم" (تم میں ہے ایچھے لوگ ہر گرنہیں ماریں گے)، جمہور فقہاء کے فرد ویک مذکورہ بالاحضر ات کے سواکسی کو والایت تا دیب فقہاء کے فرد ویک مذکورہ بالاحضر ات کے سواکسی کو والایت تا دیب حاصل نہیں ہے ۔

البت دخفیہ کہتے ہیں کہ اگر حقوق اللہ کا معاملہ ہوتو ارتکاب معصیت کے وقت ہر مسلمان تا ویب کرسکتا ہے، کیونکہ بی مشکر کے ازالہ کے باب سے ہواور ثارت نے ہر مسلمان کو اس کا ذمہ دار بنایا ہے، اس لئے کہ رسول اللہ علیہ کا ارشا دہے: "من د آی منکم

⁽۱) - المغنى لا بمن قد امد ار ۱۵ امغنى اكتناع ار ۱۳۱۱، اين عايدين ار ۳۳۵ _

⁽۲) حدیث: "مووا أولاد كم بالصلاة....." كى روایت ابوداؤد (۱/ ۳۳۳ طبع عزت عبیدالدهاس) نے كى ہے ٹووك نے ریاض الصافحین (رص الاا طبع الرسالہ) میں اس كوشن كہاہے

⁽٣) مايتدرائي.

⁽۳) سوره کناه ۲۳

⁽۵) سوامِب الجليل ۳ر۱۹،۱۶، حاشيه ابن عابدين سهر ۱۸۸، امغني ۲٫۷ س.

⁽١) المغنى لا بن قد امه ١/٤ ١٠، حامية الدسوقي سهر ١٣٥٣ س

⁽۱) مغنی اکتاع مهر سه اهاشیه این عابدین سهر ۹ ۸۱ ـ

 ⁽۲) حدیث: "لهی اللبی نظافت عن ضوب الدساء....." کی روایت ابوداؤد
 (۲) حدیث: "لهی اللبی نظافت عند الدهاس)، این ماجه (۱۳۸۸ طبع عیسی البالی الحلمی) اورها کم (۱۸۸۸ طبع دار الکتاب العربی) نے کی ہے اور کہا کہ بید حدیث میسی الاستاد ہے۔

⁽m) وا م للعافعي ١٥ م ١٩٠٠

 ⁽٣) حافية الدسوق مر ٥٣ من الحتاج مر٩٩١.

منکوا فلیغیرہ بیدہ، (ا) (تم میں سے جوشخص کسی برائی کو دیجے تو اسے چاہئے کہ وہ اس برائی کو اپنے ہاتھ سے منادے)۔ جب معصیت سے فارغ ہوگیا تو اب ممانعت نہیں رہی، کیونکہ جوچیز گزر چکی اس سے ممانعت کا تصور نہیں کیا جا سکتا، اب می حض تعزیر ہوگی اور تعزیر کاحق امام کو ہے (۲)۔

جن چیز وں میں غیر حاکم کے لئے تا دیب جائز ہے:

۵- الف۔ بیوی کا بائر مان ہونا اور اس (شوہر) سے تعلق جو حقوق ہوں، مثلاً زینت پر تادر ہونے کے با وجود اس کو اختیار نہ کرنا، جنابت کا عنسل نہ کرنا، شوہر کی اجازت کے بغیر گھر سے نگل جانا، ہمستری کے لئے بلائے تو انکار کرنا، اس کے علاوہ وہ معاملات جن کا تعلق حقوق زوجیت سے ہو، یہ سارے مسائل فقہاء کے درمیان متفق علیہ ہیں (۳)۔

الله کاحق مثلاً نماز وغیرہ جھوڑنے کے سلسلہ میں شوہر کو تورت کی تا دیب کرنے کاحق ہے یا نہیں؟ اس میں فقہاء کا اختاا ف ہے، بعض جائز کہتے ہیں، بعض منع کرتے ہیں (۳)، و یکھتے: اصطلاح ''نشوز''۔

ب- بچه پرتا دیب کاحق ولی کوحاصل ہے، ولی خواد باپ ہویا دادایا وصی یا تاضی کی طرف سے مقرر کردہ نتظم، اس لئے کہ حدیث میں ہے: ''مروا اولاد کے بالصلاۃ وہم اُبناء سبع سنین

واضربوهم عليها وهم أبناء عشر سنين (ايمي

اولا دکونماز کا حکم دو جب وہ سات سال کے ہوں اور آہیں نماز نہ

یر صغیر ماروجب وہ دی سال کے ہوجا کمیں)،طہارت،نماز اور ای

حتی پبلغ" (بچہ جب تک ہائغ نہ ہوجائے) کابھی ذکر ہے۔ ن ۔ شاگر د کی تا ویب: استاذ ال شخص کو جو اس سے تلم سیھر ہا ہے ولی کی اجازت سے تا ویب کرے گا، جمہور فقہاء کے نز دیک بغیر ولی کی اجازت کے تا دیب کاحق نہیں ہے (^{m)} بعض شافعیہ سے ان کا بیقول منقول ہے کہ بغیر ولی کی اجازت کے تا دیب کا جواز اجمائ فعلی سے دائے ہے (^{m)}۔

طرح روزہ کے چھوڑنے پرتا دیب کی جائے، شراب نوش سے منع کیا جائے، تا کہ خیر سے ما نوس ہوا ورشر کو چھوڑ دے، مجامعت کے بعد منسل کا تکم دیا جائے ، ای طرح تمام مامورات کا تکم دیا جائے اورتمام منہیات سے روکا جائے ۔ تا دیب مار، دھمکی اورڈانٹ ڈیٹ کے ذریعہ موگی ۔ فقہاء کا اتفاق ہے کہ حدیث گذشتہ کی وجہ سے بیتا دیب ولی پر واجب ہے، یہ بچہ کے حق میں ہے کہ بچہ کو نماز وغیرہ کی شق کرائے ، واجب ہے ، یہ بچہ کے حق میں ہے کہ بچہ کو نماز وغیرہ کی شق کرائے ، تا کہ وہ اس کے عادت بنا لے اور بالغ ہونے پر ترک نہ کر سے لیکن جمہور فقہاء کے نزدیک نماز اس پر نرض نہیں ہے ، اس کی عادت بنا لے اور بالغ ہونے پر شکر نہ کر سے لیکن جمہور فقہاء کے نزدیک نماز اس پر نرض نہیں ہے ، اس کی عادت بنا لے اور بالغ ہونے پر ترک نہ کر سے لیکن جمہور فقہاء کے نزد کیک نماز اس پر نرض نہیں ہے ، اس کی عادت بنا لے کہ حدیث میں ہے : "د فع القلم عن ثلاثہ" (قام اٹھالیا گیا ہے تین افر اد ہے) ، اور آئیس میں سے "الصبی رقام اٹھالیا گیا ہے تین افر اد ہے) ، اور آئیس میں سے "الصبی

⁽۱) عديث: "علموا الصبي" كُرِّخْ تَحْقُرْ هُبُرِر ٣ مِنْ كُذِر حِكَلِ.

⁽۲) حدیث: "رفع القلم عن ثلاثدند..." کی روایت ابوداؤد (سهر ۵۵۸ طبع عزت عبیدالدهاس) اورحاکم (۵۹/۲ طبع وزارة المعارف العثمانیه) نے کی ہے۔ لیکن حاکم کے بہاں "الصبی حنی یحنلم "کے الفاظ بیں،حاکم نے اے سیحتر اردیا ہے اور ذہی نے ان کی موافقیت کی ہے۔

⁽m) - حاشيه ابن هايدين سره ۱۸،۱۸ ساسيم مغنی الحتاج سر سه ال

⁽۳) این هابدین ۵ رسه ۳ منتی اکتاع ۳ ر ۱۹۳۰

⁽۱) حدیث: "ممن رأی معکم معکو أفلیغیو هبیده....." کی روایت مسلم نے اپنی سیح (۱۹۸۱ طبع عیسی البالی الیمی کی ہے۔

⁽۲) عاشیه این هابدین ۱۸۱/۳ س

⁽۳) حاشیه این هابدین سره ۱۸ مغنی انحتاج سرسه ۱، انعنی لاین قدامه ۲/۷ سیموایب انجلیل ۱۸ ۱۹ س

⁽٣) ماية مراجع

تادیب کے اخراجات:

۲- بچہ کے پاس اگر مال ہوتو اجرتِ تعلیم بچہ کے مال میں واجب ہوگی، اگر مال نہ ہوتو الشخص پر واجب ہوگی جس کے ذمہ بچہ کا نفقہ ہے، بچہ کوفر اُنفس سکھانے کے لئے بچہ کے مال سے فرق کر نابالا تفاق واجب ہے، ای طرح فر اُنفس جیسے قر آن، نماز، طہارت کے ماسوا مثلاً ادب اور خوش خطی وغیرہ کی اجمہ تعلیم بچہ کے مال سے دینا جائز ہے، اگر وہ ان چیز وں کے سیسے کی اجمہت رکھے، کیونکہ بیجیز یں اس کے ساتھ ہراہر رہیں گی اور وہ ان سے منتقع ہوتا رہے گا۔ خطیب شربینی نے امام نووی سے "المووضة" میں ان کا یہول نقل کیا ہے: ماں باپ پر لا زم ہے کہ وہ اپنی اولاد کو طہارت بنما زاور سائل کی تعلیم ویں بڑر اُنفن کی اجمہت تعلیم بچے کے مال میں ہوگی، اگر بچہ کے مال میں ہوگی، اگر بچہ کے بال میں ہوگی۔ ایکھ کو ان ہونو اس محتور اس بچہ کا نفقہ لازم

تادیب کے طریقے:

دونوں کے اختااف سے تا دیب کے طریقے بھی مختلف ہوں گے۔
امام کے طریقہ ہائے تا دیب ان لوگوں کے لئے جورعیت میں
سے مستحق تا دیب ہوں بشر عاغیر محد و دوغیر متعین ہیں ، لہذ المام کوہ سے
اجتہا دیر چھوڑ دیا گیا ہے کہ وہ تا دیب کا متصد حاصل کرنے کے
لئے جو زیا دہ بہتر صورت ہوا سے اختیار کرے ، اس لئے کہ جرم اور
جرم کرنے والے دونوں کے اعتبار سے تا دیب کی نوعیت بدلتی ہے ،
اور امام پر لازم ہے کہ وہ آ بہتہ دروی اور تدریج کے سے کام لے جو حال
اور امام پر لازم ہے کہ وہ آ بہتہ دروی اور تدریج کے سے کام لے جو حال

2-تا دیب کرنے والے اور جس برتا دیب کی جاری ہے، ان

کی جاتی ہے۔ لہذاتا ویب میں اس ورجہ تک نہ پین جائے، جس کے بارے میں انداز وہوکہ اس سے کم عی کافی اور مؤثر تھا (۱) تفصیل اصطلاح ''تعزیر''میں ہے۔

بیوی کی تا دیب کے طریقے: ۸- الف یضیحت۔

ب بهتر میں اکیلے چھوڑ وینا۔

ج ۔الیں مار جو سخت تکلیف دینے والی نہ ہو۔

المغنی لا بن قد امدین ہے: آیت میں پھوالفاظ مشمر ہیں، تقدیر عبارت اس طرح ہے: ''وَ اللاَّتِنِی تَحَافُونَ نُشُوزُهُنَ فَعِظُوهُنَّ فَعِظُوهُنَ الْمُصَاجِعِ فَإِنْ أَصُورُونَ فَاهُجُووُهُنَ فِي الْمَصَاجِعِ فَإِنْ أَصُورُونَ فَاهُجُووُهُنَّ فِي الْمَصَاجِعِ فَإِنْ أَصُورُونَ فَاهُجُووُهُنَّ فِي الْمَصَاجِعِ فَإِنْ أَصُورُونَ فَاهُجُووُهُ هُنَّ اللهِ الله على الله

⁽۱) مغنی اکتاع ایر ۱۳۱۱، این هایدین ۲ ساست.

⁽۱) مغنی لمحتاج سهر ۱۹۲ مااین هایدین سهر ۸۷ ماه ۷ مایسوایب الجلیل سهر ۱۹۳۰

⁽۲) سورۇنيا پرېس

⁽m) المغنى لا بن قدامه ٢/٤ مه، موامب الجليل مهر ١٥ س

تأ ديب ٩-١٠

شافعیہ اپ دوقولوں میں سے اظہر قول میں اس طرف گئے ہیں کہ بیوی کی طرف سے نشوز (نافر مانی) ظاہر ہونے کے بعد خواہ قول سے ہویا فعل سے ہثوہر کے لئے مار کے ذر معہ اس کی تا دیب کرنا جائز ہے۔ اس قول کے مطابق نافر مانی ظاہر ہونے کے بعد بستر میں تنہا چھوڑ نے اور مار نے کے درمیان تر تیب نہیں ہے، شا فعیہ کا دوسر قول جمہور کی رائے کے موافق ہے (۱)۔

یہ جھی ضروری ہے کہ مار زیادہ تکلیف پہنچانے والی اور خون

ہمائے والی نہ ہو، چہر داور ما زک مقامات کو بچایا جائے ، اس لئے کہ مار

ہمائے والی نہ ہو، چہر داور ما زک مقامات کو بچایا جائے ، اس لئے کہ صدیث میں

ہمائے قصود تا دیب ہے نہ کہ نقصان پہنچا ما اس لئے کہ صدیث میں

ہمائے : " اِن لکم علیهن آلا یوطئن فُرُ شکم آحلاً تکو هو نہ اِن فعلن فاضو ہو هن ضوبا غیو مبوح" (") (تمہار اان پر یہ فان فعلن فاضو ہو هن ضوبا غیو مبوح" (") (تمہار اان پر یہ حق ہے کہ وہ تمہارے ہمتر پر کسی کو نہ با اِنمین جس کو تم ما ایند کرتے ہو،

ہمائے وہ ایسا کریں تو آئیس ایسی مار مار وجو بخت تکلیف دہ نہ ہو)۔

حنابلہ نے شرط لگائی ہے کہ دی کوڑے سے زیادہ نہ ہوں ، اس کئے کہ صدیث میں ہے: ''لا یجلد آحد فوق عشر ق آسو اط الا فی حد من حدود الله'' (کوئی شخص دی کوڑوں سے زیادہ نہ مارے ، سوائے اس کے کہ اللہ کی صدود میں سے کسی عد کا معاملہ ہو) ، و کیسے: اصطلاح '' نشوز''۔

بچے کی تا دیب کے طریقے:

9 - اوالاً بچہ کو قول کے ذریعی فرائض اداکرنے کا تھم دیا جائے،
مگرات ہے روکا جائے، پھر دھمکایا جائے، اس کے بعد ڈانٹ
ڈپٹ کی جائے، پھر ماراجائے اگر اس سے پہلے کے طریقے مفید
ٹابت نہ ہوئے ہوں۔ پچہ کو نماز کے چھوڑنے پر اس وقت تک نہ مارا
جائے جب تک اس کی عمر دس سال نہ ہوجائے (۱)، عدیث میں
جائے جب تک اس کی عمر دس سال نہ ہوجائے (۱)، عدیث میں
واضو بوھم علیها وھم آبناء عشو سنین و فرقوا بینهم واضو بوھم علیها وھم آبناء عشو سنین و فرقوا بینهم فی المضاجع (۱) (اپنی اولاد کونماز کا تھم دوج بکہ وہ سات سال کے ہوجا کیل اوران کا بہتر الگ کردو)۔

حنفیہ ، مالکیہ اور حنابلہ کے نز دیک تنین بار سے زیا دہ نہیں مارا (۳) جائے گا ۔

یہ بھی ترتیب وار ہوگی، لہندا جب فرض یعنی اصلاح پہلی تا دیب سے پوری ہوجائے تو اس کے آگے کی تا دیب نہیں اختیار کی جائے گی۔

تا دیب میں مقدار معروف ہے تجاوز:

⁽۱) لا ملهافعي٥٠ ١٩٥١مغني المختاع سر ١٥٥ـ

⁽۲) - المغنى لابن قد امه سار ۷ سم مواجب الجليل سهر ۱۵مغنی انجتاع سهر ۹۵ م لا مهلهافعی ۶ رسه ۱

⁽٣) عديث: "لا يجلد أحد فوق" كى روايت بخاري (٢١/١٢ المع المنظير) اورسلم (سر ١٣٣٣ المع عيس المبالي أحلى) نے كى ب الفاظ سلم كر بين-

⁽۱) - المغنى لا بن قدامه الر۵ الا مغنى الحتاج الراساه ابن هايدين الر۵ سال

⁽٢) عديث: "مو وا أولاد كيم" كَيْخُرْ يَجْفَعْرِ هُبِرِر ٣٣ مِن كَذِر حِكَلِيهِ

⁽۳) - الربو فی ۸۸ ۱۹۳۴، موایب الجلیل ۲۸ ۱۹ ۱۳ ام آمنی لابن قدامه ۸ م ۳۷۷، ابن طاید بن ار ۵ ۳۳

یا تعزیر'' عد'' کی مقدار تک پہنچ جائے تو کیا تھم ہوگا (۱)؟ اس کی تفصیل اصطلاح '' تعزیر' میں ہے۔

تاديب معروف سے ہلاكت:

11 - فقرباء کا اس میں بھی اختااف ہے کہ تا دیب معروف ہے
 بلاکت کی صورت میں کیا حکم ہوگا؟

ائر ٹلانڈ ابو حنیفہ مالک اور احمد کا اس پر اتفاق ہے کہ تا دیب مغناد سے بلاک ہوجانے کی صورت میں امام ضامن نہ ہوگا ، اس لئے کہ امام حد اور تعزیر پر مامورہے ، اور مامور کے عمل میں انجام کار کی سلامتی کی قید نہیں ہوتی ہے (۲)۔

اگر شوہر یا ولی کی تا دیب سے بلاکت ہوجائے جبکہ انہوں نے مقد ارمشر وٹ سے تجا وزبھی نہ کیا ہو، تو ضامن ہوں گے یانہیں؟ اس سلسلہ میں فقہا ءکا اختااف ہے۔

امام ما لک اور امام احمد کا مُدہب ریہ ہے کہ اگر تلف منا و بیب معنا و کے بتیجہ میں ہوتو شوہر اور ولی رہنمان نہیں ہے (m)۔

اگر شوہر کی تا دیب مقادموت تک پہنچا دے تو حضیہ کے فرز دیک شوہر ضامن ہوگا ، ال لئے کئورت کونشوز سے رو کئے کے لئے جب ایک مشر وط طریقہ متعین ہوگیا کہ خت تکلیف دہار نہیں ہونی چاہئے ، پس جب اس پرموت مرتب ہوگئ تو ظاہر ہوگیا کہ شوہر کو جنتی اجازت تھی اس نے اس سے تجاوز کیا ہے ، کہذا اس پرضان واجب ہوگا ، اور اس لئے بھی ضان واجب ہوگا کیونکہ بیتا دیب واجب نہیں تھی ، کہذا

امام الوصنيفه اور صاحبين نے باپ، دادا، وصی اور ان جيسے لوگوں كوضامن بنانے كے معالمے بيں اختاب كيا ہے، امام الوصنيفه ال طرف گئے ہيں كرسب ضامن ہوں گے، اگر ان كی تا دیب كے بہتے بيں بلاكت ہو، الل لئے كہ ولی كوتا دیب كی اجازت ہے، اتا ان كی نادیب كی نہتے دیں بلاكت ہو، الل لئے كہ ولی كوتا دیب كی اجازت ہے، اتا ان كی نہتے دیا احب الل كی نادیب نے بلاكت تک پہنچادیا تو ظاہر ہوگیا كہ وہ عد ہے تجاوز كر گیا ہے، اور الل لئے كہتا دیب بھی بغیر مار کے بھی حاصل ہوجاتی ہے، ویسے كہ ؤ انت ڈپٹ اور كان این شركر۔ امام کے بھی حاصل ہوجاتی ہے، ویسے كہ ؤ انت ڈپٹ اجام كار كی سامتی كے ساتھ مقید ہوتا ہے، اور والد بن اور والد بن کا اپنی اولادكوتا دیبا مارا مباح ہے، والد بن كے ساتھ مقید ہوتا ہے، اور والد بن كا اپنی اولادكوتا دیبا مارا مباح ہے، والد بن كے عی مثل وصی بھی ہے، لیکن اگر تعلیم کے لئے مارا تو صفان واجب ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہوگا، لیکن اگر تعلیم کے لئے مارا تو صفان نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور اجب انجام كار كی سامتی مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور اجب انجام كار كی سامتی مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور اجب انجام كار كی سامتی مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور اجب انجام كار كی سامتی کے ساتھ مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور واجب انجام كار كی سامتی کے ساتھ مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب ہے اور اجب انجام كار كی سامتی کے ساتھ مقید نہیں ہوگا، کیونکہ یہ واجب انجام كار كی سامتی کے ساتھ مقید نہیں ہوتا (۲)۔

صاحبین (امام ابو یوسف وامام محمد) کا مذہب ہے کہ ان پر ضمان نہیں ہوگا، اس لئے کہ انہوں نے جوتا دیب کی ہے، بیچ کی اصلاح کے لئے انہیں اس کی اجازت ہے، جیسے استاد کو مارنے کی اجازت ہوتی ہے، کیونکہ استاد کو احتازت ہوتی ہے، کیونکہ استاد کو اجازت ہوتی ہے، اور موت ایک فعل تا دیب کی والایت ولی سے می حاصل ہوتی ہے، اور موت ایک فعل ماذون سے پیدا ہووہ ماذون سے پیدا ہووہ نیاد قان میں پیدا ہوئی ہے اور جو چیز فعل ماذون سے پیدا ہووہ نیاد قان میں اور کی جاتی ، اہند اان پر ضمان ند ہوگا۔

بعض حفیہ سے منقول ہے کہ امام صاحب نے صاحبین کے قول کی طرف رجوع کیا ہے ^(m)۔

اس میں انجام کار کی سلامتی کی شرط ہوگی ⁽¹⁾۔

⁽۱) - حاشيه ابن عابدين ۱۳ م ۹۰ ا

⁽r) حاشيرابن هايو ين ۳۲، ۳۳ س

⁽٣) مايتمرائع۔

⁽۱) مغنی لیمناع سهر ۱۳۵۳، این هایدین سهر ۱۷۸، کمغنی لابن قد امه ۸ ساس». حاهمینه الدسوقی سهر ۳۵۵ مواویب الجلیل ۲ را ۱۳۱۹

⁽۲) - موامِب الجليل ۲۷ ۱۹ ساء لمغنى لا بن قد امه ۸۷ ۲ ساه ابن عابدين سهر ۱۸۹ س

⁽m) منغنی لابن قدامه ۳۷۷۸ سامهوایب الجلیل ۲۸ ه m-

تأويب ١٢ - ١١٣

شا فعيه كامذيب بيرے كه تا ديب ميں صفان واجب بهوگا، اگر ال میں جومقدار مغناد ہواں ہے تجاوز نہ کیا ہو، لہذ ااگر ایسی چیز کے ذریعیہ نا دیب ہوئی ہوجس سے زیادہ ترقل می کیا جاتا ہے تو قصاص واجب بهوگا، البنة اصل يعني باب دادار قصاص واجب نبيس، اوراگر آله قتل ندر با ہوتو عا قلہ پر شبہ محد کی دبیت ہوگی ، اس لئے کہ بیابیافعل ہے جوانجام کار کی ساامتی کے ساتھ مشروط ہے، چونکہ اس سے مقصود تا دیب ہے نہ ک بلاک کرنا، پس جب اس سے بلاکت ہوگئی تو ظاہر ہوگیا کہ اس نے اس میں جومقدار مشروع تھی ال سے تجاوز کیا ہے، ثا فعیہ کے مز دیک امام اورغير مام جينا ديب كاافتيارديا كيابوه مثاأشوم اورولي، يس كوني فرق

نہیں ہے(ان کے فرد کیک سب ضامن ہوں گے)⁽¹⁾۔

چو ياپه کې تاديب:

۱۲ - متناجر اور چو یا بیکوسدهانے والے کے لئے جائز ہے کہ مار کے ذر میر، یالگام بھینچ کر کھڑ اکرنے کے ذر میر اتن مقد ار میں جتنی ک عادت جاری ہے چو یا یہ کی تا دیب کرے، اگر وہ جانور اس تا دیب ے بلاک ہوجائے تو اٹر ٹلانٹہ (امام مالک، امام ٹنافعی اور امام احمد بن حنبل) اور امام ابو حنیفہ کے دونوں شاگر د (امام ابو بیسف ، امام محمر) کے فز دیک تا دیب کرنے والا ضامن نہ ہوگا، اس لئے کہ رسول مالانو صحیح عدیث ہے؟ آنہ نخس بعیر جابو وضوبہ" اللہ علیہ کے عدیث ہے؟ آنہ نخس بعیر جابو وضوبہ" (آب علی نے حضرت جابراً کے اونت کے پہلو میں لکڑی چبھوئی اورا ہے مارا)۔

امام ابوحنیفه کا مذہب ہے کہ وہ ضامین ہوگا، کیونکہ تلف اس کی

- (۱) مغنی الحتاج سر ۱۹۹
- (٢) عديثة "لخس النبي نافع لبعير جابر وضوبه....." كي روايت بخاري (١٨٧ م٢٠ طبع السّلقيه) اورمسلم (١٨ ١٥٨٨ طبع عيسي المبالي أتحلمي)

جنابیت کی وجہ سے ہوا، لہذ ادوم وں کی طرح بیجھی ضامن ہوگا، نیز ال لئے بھی کہ اس میں مقدار معنا دسامتی کی شرط کے ساتھ مقید ہے، اوراس لئے بھی کہ جانورکو ہانکنا بغیر مارے ہوئے بھی ہوسکتا ہے، چنانی جب وہ تیز چلنے کے لئے مارے (اور اس کے نتیج میں ملف ہوجائے) تو وہ ضامن ہوگا⁽¹⁾۔

بحث کے مقامات:

سا - فقہائے کرام تا دیب کا ذکر بہت سے ابواب میں بنیادی حيثيت ہے كرتے ہيں، مثلًا صلاق، نشوز، تعزير، دفع السائل، صان الولاق الحسد -



(۱) البحر المراكق ۱۲/۸ ا، ابن هايدين ۲۵٬۳۳۵، المغنی ۲۵٬۵۳۵ مغنی الحتاج _mamaiaa/m

تأريخ ١-٣

مدت شرع کے ذربعیہ مقرر ہوئی ہویا تاضی کے فیصلہ سے یا التزام کرنے والے کے ارادہ سے، التزام کرنے والا ایک ہویا ایک سے زیادہ (۱)۔

اور دونوں کے درمیان نسبت بیہ ہے کہ تاریخ، اجل سے عام ہے، اس لئے کہ تاریخ ماضی، حال اور مستقبل بتیوں مدنوں کو شامل ہے، اور اجل صرف مستقبل کو شامل ہے۔

ب-ميقات:

"- مینات افت میں جیہا کہ اسحاح میں ہے: وہ وفت ہے جو کسی فعل یا جگہ کے لئے متعین کیا گیا ہو، اور مصباح میں ہے کہ وہ وقت ہے ہو کی وقت ہے، اس کی جمع مواقیت ہے، وقت کو مکان کے معنی کے لئے مستعار لیا گیا ہے، اس کی جگہوں کئے مستعار لیا گیا ہے، اس کے حواقیت الجے ہے احرام کی جگہوں کے لئے (۲)۔

اور اصطلاح میں میقات وہ ہے جس میں کوئی عمل متعین کیا گیا ہو^(m) ,خواہ وہ وقت ہویا جگہ، اور میقات تاریخ سے زیا دہ عام ہے۔

تاریخ کاشرعی حکم:

مہ - کسی تاریخ کا جانا واجب ہوتا ہے جبکہ تاریخ بی کے ذرقعہ محکم شرقی کی معرفت تک پنچنا متعین ہوگیا ہو، جیسے وارث بنا ، قصاص ، روایت کا قبول کرنا ، عہد نافذ کرنا پتر ش کی اور بی اور جواموران سے متعلق ہوں۔

- (۱) المصباح ماده "أجل"، نيز ديكھئة اصطلاح "أجل".
 - (٢) الصحاح، لمصباح مادة "وقت" ب
 - (٣) الكليات سر٢٠١ طبع دشق _

تأريخ تأريخ

تعریف:

ا - تأریخ: أَوَّ خِ كَا مُصدر ہے، لغت میں اِس كا مُصلب: وقت كا تعارف كرانا ہے، كہا جاتا ہے: ''أَو خت الكتاب ليوم كذا'' جب آپ خط كا وقت متعين كريں اور اس برنا رنج وُ الیں (۱)۔

تاریخ کا اصطلاحی معنی: سخاوی کے کلام سے معلوم ہوتا ہے کہ تاریخ تعیمین وتوقیت کے اعتبار سے زمانہ کے واقعات کی تحدید کرنا (۲) ہے۔۔۔

متعلقه الفاظ:

الف-أجل:

النت میں أجل النشيء ہے مراد (جیما كہ المصباح میں ہے) شئ كى مدت اور اس كا وہ وقت ہے جس میں وہ وقو ت بند برہو، بیہ مصدر ہے، اور اس كى جمع آجال ہے، جیسے سبب كى جمع آسباب، آجل فاعل ہے وزن پر عاجل كى ضد ہے۔

اجل فقنهاء کی اصطلاح میں: زمانہ مستقبل کی وہ مدت ہے جس کی طرف کوئی معاملہ منسوب کیا جائے، خواہ یہ فبدت کرنا، التزام کو پوراکرنے کی مدت ہویا التزام کے نتم کرنے کی مدت ہو، اورخواہ یہ

⁽۱) لسان العرب، الصحاح، المصباح المعير مادهة "أرخ" -

الاعلان بالتو الخلم فم الماريخ للسخاوي رص 2 اطبع العلمية ...

تاریخ ،اسلام سے پہلے:

۵-عربوں کے پاس اسلام کی آمد سے پہلے کوئی الیی تقویم نہیں تھی جس کی سب پابندی کرتے ہوں، بلکدان میں کاہر گروہ اپنے یہاں چیش آنے والے واقعات سے تاریخ کی تعیین کیا کرنا تھا۔

ال کی تفصیل ہے ہے کہ حضرت اہرائیم علیہ اصلاۃ والسلام کو الله الله واقعہ اولا دھفرت اہرئیم علیہ السلام کو آگ میں ڈالے جانے والے واقعہ سے تاریخ کا تعین کرتی تھی، ہیسلسلہ بیت اللہ شریف کی تغییر تک رہا جس وقت کہ حضرت اہرائیم اور حضرت اسائیل نیم السلام نے بیت اللہ شریف تغییر کی، پھر بی اسائیل نے تاریخ کا استعال کیا بیباں تک کہ وہ منتشر ہوگئے، چنا نچ جب کوئی قوم تبامہ اور بی اسائیل میں ہے گئی تو وہ اپنے نگلنے کے وقت سے تاریخ کا تعین کرتی اور بی اسائیل میں سے جو تبامہ میں باقی رہ گئے وہ سعد، نہد، جبید، اور بی اسائیل میں سے جو تبامہ میں باقی رہ گئے وہ سعد، نہد، جبید، بین نہر کی تبامہ سے نگلنے کو تاریخ کے طور پر استعال کرنے گئے، پھر جب کعب بن لوئی کا انتقال ہوگیا تو انہوں نے موت سے تاریخ کا بین کہ بیک کا انتقال ہوگیا تو انہوں نے موت سے تاریخ کا تعین کیا بیباں تک کہ ہائی والا واقعہ چیش آیا، تو پھر تاریخ عام افیل سے شروع ہوئی، بیباں تک کے مربی خطاب نے واقعہ ہجرے کو تاریخ کا سے شروع ہوئی، بیباں تک کے مربی خطاب نے واقعہ ہجرے کو تاریخ کا کے لئے متعین کردیا (ا)۔

اور ان کے علاوہ جوعرب تھے وہ مشہور واقعات اور ایام کے ذر معیمتا ری آئے مگا وہ جوعرب تھے وہ مشہور واقعات اور ایام کے ذر معیمتا ری آئے رکھتے تھے، جیسے جنگ بسوی ، جنگ دائس، جنگ غمر اء، اور بیم ذی قار، بیم خار وغیرہ۔

جہاں تک اس سے پہلے کی بات ہے توبالکل آغاز میں جب اولا دآ دم کی زمین میں کثرت ہوئی تو انہوں نے زمین پر آدم کے اتر نے کے واقعہ سے ناریخ کا استعال کیا، سیسلسلہ طوفان نوح تک

ربا، پھر اہرائیم فلیل اللہ کوآگ میں ڈالے جانے والے واقعہ تک،
پھر بوسٹ کے زمانہ تک، پھر بنی اسرائیل کو لے کر حضرت موی
علیہ الساام کے مصر سے نگلنے تک، پھر زمانہ داؤ دعلیہ الساام تک، پھر
زمانہ سلیمان علیہ الساام تک، پھر نیسی علیہ الساام کے زمانہ تک بیہ
سلسلہ رہا۔

اہل جمیر نے تنابعہ کے عہد کو، اہل عنسان نے سدکو، اہل صنعاء نے یمن پر اہل جش کے غلبہ کو، پھر اہل فارس کے غلبہ کونا ریخ ڈ النے کی بنیا د ہنایا ^(۱)۔

اہل فاریں نے اپنے ہا دشا ہوں کے جارطبقات ہے، اور اہل روم نے دارا بن دار اکے لگ کے واقعہ سے تاریخ ڈالی، یہاں تک کہ اہل فاریں ان پر غالب آگئے۔

قبطیوں نے بخت نصر سے تاریخ رکھی ملکہ مصر کلیوبتر اتک۔ یہود نے بیت المقدی کے ویر ان ہوجانے کے واقعہ کو تاریخ ڈالنے کی بنیاد بنائی۔

اور نساری نے حضرت عیسی علیہ السلام کے آسان پر اٹھائے جانے والے واقعہ کونا ریخ کیسے کی بنیا دہنائی (۲)۔

تاریخ ہجری متعین کرنے کا سبب:

الحسروی ہے کہ حضرت ابوموی اشعریؓ نے حضرت عمر بن خطابؓ کے پاس لکھا: آپ کے خطوط ہمارے پاس آتے ہیں، لیکن ان پرکوئی تاریؓ لکھی نہیں ہوتی ہے، چنانچ حضرت عمرؓ نے اس بارے میں لوگوں کو جمع کیا تو بعض نے کہا کہ بعثت نبوی سے تاریؓ ڈالی جائے، اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے، اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے، او حضرت عمر نے اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے، او حضرت عمر نے اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے، او حضرت عمر نے اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے، او حضرت عمر نے اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ ڈالی جائے ، او حضرت عمر نے اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت اور بعض نے کہا: واقعہ ہجرت سے تاریؓ دیا تھا۔

⁽۱) الكافل لابن وأشير ار ۱۰ طبع لم مير پ الاعلان بالتونيخ للسحاوي ۱۲ ۱۳ طبع احلميه، ترزيب ابن عسا كرار ۲۲ طبع دشتن _

⁽۱) الاعلان للسحاوي ١٨ ١١، ٢ ١١ طبع العلميه _

فر مایا: ہجرت نے حق اور باطل کے درمیان اتنیا زیبیدا کردیا، لہذاای سے تاریخ کنھو۔ بیر کار ھی بات ہے، جب اس پر اتفاق ہوگیا تو لوگوں نے کہا کہ سال کا آغاز رمضان المبارک سے کرو، تو حضرت عمر فر فرایا: بلکہ محرم سے، کیونکہ بیلوگوں کے جج سے لوٹے کا وقت ہے، توسب کا اس پر اتفاق ہوگیا (۱)۔

ای کے ساتھ بیجھ مخفی نہیں کہ مسلمانوں کو اپنے دینی ہور کو منف بط کرنے کے لئے تا رہ مج کھنے کی ضرورت پڑی، مثلاً روزہ، حج ، اسعورت کی عدت جس کا شوہر وفات پا گیا ہواوروہ نذریں جن کا تعلق اوقات سے ہو۔

ای طرح اپنے دنیا وی امورکومند بط کرنے کے لئے ،مثلاً قرض کےمعاملات ، اجارات ، وعدے ،مدے حمل ،مدت رضاعت (۲)۔

شمسی سال کی تاریخ جو چری تاریخ سے جدا ہے: 2 شمسی سال بقری سال سے مہینوں کی تعداد میں متفق ہے، لیکن الام کی تعداد میں مختلف ہے، چنا نچ شمسی سال بقری سال سے تقریبا گیارہ دن زیادہ ہوتا ہے (۳)۔

الل روم، اہل سریان، اہل فارس اور قبطیوں نے تا ریج کھنے میں شمسی سال پر اعتماد کیا ہے، چنانچ رومی سند سریانی سند، فاری اور قبطی سندیایا جاتا ہے۔

یہ تمام سنداگر چے مبینوں کی تعداد میں متفق ہیں، مرمبینوں کے ماموں ، دنوں کی تعداد اور دنوں کے ماموں میں مختلف ہیں، ہر سندگ

ابتد اء کا وفت بھی الگ الگ ہے (1)۔

معاملات میں ہجری تاریخ کےعلاوہ دوسری تاریخ استعمال کرنے کا تھم:

۸- حفیہ مالکیہ اور ثافیہ کا مذہب، اور حنابلہ کے زود کیک سیحے قول یہ ہے کہ اگر متعاقد بن معاملات میں ہجری کے علاوہ تاریخ استعال کریں تو جہالت کا اعتبار نہیں ہوگا اور عقد سیحے ہوجائے گا، بشر طیکہ وہ تاریخ مسلمانوں کے زویک معلوم ومعروف ہو، مثلاً روی مہینوں جیسے کا ریخ مسلمانوں کے زویک معلوم ومعروف ہو، مثلاً روی مہینوں جیسے کا نون، شباط میں ہے کسی مہینہ کی تاریخ لکھی جائے، کیونکہ یہ مہینے معلوم اور متعین ہیں یا مثلاً نساری کی عید کی تاریخ لکھی جائے ، کیونکہ یہ مبینے کہ وہ روزہ رکھنا شروئ کر بچے ہوں، کیونکہ یہ بھی معلوم ہے۔

کیمن اگر ایسی تاریخ نکھی جے مسلمان نہیں جانے، جیسے کفار کے میلوں میں ہے کسی مسلمان نہیں جانے، جیسے کفار عرمیلوں میں ہے کسی مسلمہ کی تاریخ جیسے نوروز ، میہود کی عید اور شعانیں ، تو عید کا دن ، حضر ہے جیسی کی پیدائش کا روز ہ ، میہود کی عید اور شعانیں ، تو حفیہ نے ذکر کیا ہے کہ ان (غیر معروف) او قات تک نج اس وقت سیح ہے جب متعاقد ین اسے جانے ہوں ، اوراگر نہ جانے ہوں تو سیح نہیں ہوگا ، اس لئے کہ نا واقفیت ہے نزائ پیدا ہوتا ہے جسی عقد سیح نہیں موگا ، اس لئے کہ نا واقفیت ہے نزائ پیدا ہوتا ہے (۲) ، لیکن مالکیم کے نز دیک اس صورت میں بھی عقد سیح ہوجائے گا ، کیونکہ وہ ایام اگر معلوم ہوں تو صراحت کے درجہ میں ہوجائے گا ، کیونکہ وہ ایام اگر معلوم ہوں تو صراحت کے درجہ میں ہوجائیں گے (۳)

⁽۱) فتح الباري عرم ۳۶۸ طبع الرياض،الكافل لا بن الافير الره طبع لممير پ الاعلان للسحاوي مره ۱۳۱۰ الماطبع العلمية _

⁽۲) تغییر فخرالرازی ۳۵٫۵ اطبع ایهیه ـ

⁽٣) لتعريفات للجرجاني ١٣٣٧ طبع اعلميه _

⁽۱) تفصیل کے لئے دیکھئے مروج الذہب للمسعود کی اربہ ۳۵۳، ۵۴ ساطبع ایہ یہ۔

⁽٣) سوابب الجليل سهر ٥٣٩ تطبع الخباح، الخرشى ٥/ ٢١٠ طبع وارصاور، الزرقاني (٣) سوابب الجليل سهر ٥/ ٣١٠ طبع وارالفكر، جوابر وإكليل ٢٠ ٥/ طبع وارالفكر، جوابر وإكليل ١٩/٣ طبع وارالمعرف.

شافعیہ نے ذکر کیا ہے جیسا کہ" امروضہ" میں ہے کہ" نوروز" اور "مہر جان" کے ساتھ مؤقت کرنا سیجے قول کے مطابق کافی ہے ، اور ایک دوسر اتول مدہے کہ مجھے نہیں ہے ، کیونکدان کے اوقات متعین نہیں ہیں۔ کیکن اگر نساری کی عید ہے تاریخ مقرر کی جائے تو امام ثافعی کی صراحت ہے کہ تیجے نہ ہوگا، بعض اصحاب شافعیہ نے کفار کے اوقات سے بیجتے ہوئے اس قول کے ظاہر سے استدلال کیا ہے، مگر جمہور اصحاب شا فعیہ کا کہنا ہے کہ اگر اسے صرف کفار جائے ہوں تو تصحیح نه ہوگا، کیونکہ ان کےقول پر اعتما ذہیں کیا جاسکتا، اوراگرمسلمان ا ہے جانتے ہوں مثلاً'' نوروز'' تو جائز ہے، پھر دونوں صورتوں میں ایک جماعت نے متعاقدین کے جاننے کا اعتبار کیا ہے، اور اکثر اصحاب شا فعیہ کہتے ہیں کہ لوگوں کا جاننا کافی ہے، خواہ ہم نے ان دونوں کے جاننے کا اعتبار کیا ہویا نہ کیا ہو، کیکن اگر وہ دونوں بھی جائے ہوں توضیح مذہب کے مطابق کانی ہے، اور ایک قول یہ ہے کہ ان دونوں کے ملاوہ دوعادل مسلمانوں کا جاننا بھی شرط ہے، اس لئے ک ان دونوں میں اختااف ہوسکتا ہے، لہذ اکوئی مرج (ترجیح دیے والا) ہونا جائے ،عید کے حکم میں دیگر مذاہب کے سارے تہوار ہیں ، جیسے یہودوغیر د کی عید ⁽¹⁾۔

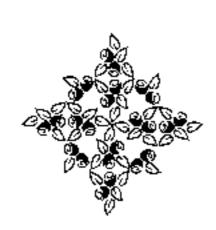
حنابلہ نے چاند کے بینوں کے ملاوہ کے ذرقعیم تاریخ وینے کے درمیان کوئی فرق بیس کیا ہے، مثلاً رومی مہینے، کفار کے تبوار، ان کے فرد کی سینے کفار کے تبوار، ان کے فرد کی سینے فرد کرنا سیخ ہے اگر مسلمان فرد کے سیخ فد بب کے مطابق بیتا ریخیں مقر رکز اسیخ ہے اگر مسلمان انیس جانتے ہوں، ایک جماعت نے جن میں قاضی ہیں ای قول کو افتیار کیا ہے اور ای کوصاحب الکافی ، صاحب الرعایتین ، صاحب

(۱) المروف سهر ۸ طبع أمكنب وإسلام، حاشية لليولي ۲۳ ۷ طبع مجلى ، نهايته أكتاع سهر ۱۸ طبع أمكنب وإسلامي، تحفظ أكتاع ۱۳۷۵ طبع داد صادر، أمهدب المرد ۱۸۵ طبع أمكنية واسلاميد. الروس المرد ۱۲۵ طبع أمكنية واسلاميد.

الحاویین اورصاحب القروع وغیرہ نے مقدم کیا ہے، اورایک قول یہ ہے کہ سیجے خبیں ہے، جیسے شعانین، یہود کا تبوار وغیرہ، جن سے مسلمان عام طور پرنا واقف ہیں، اور یہی خرقی، ابن الی موی اور ابن عبدویں کا اپنے تذکرہ میں ظاہر کلام ہے، ان حضر ات کا کہنا ہے کہ ویائد کی تاریخ متعین کی جائے (۱)۔

بحث کے مقامات:

9 - اصطلاح تاریخ سے متعلق احکام کی بحث اصطلاح '' اجل' اور '' تا تیت' میں ہے، کیونکہ فقہاء اپنی کتابوں میں زیادہ تر لفظ تاریخ استعمال نمیں کرتے بلکہ وہ لفظ '' اجل'' اور لفظ'' تا تیت' کا ذکر کرتے ہیں، کہذا جو تضرفات بھی وقت یا مدت سے متعلق ہوں ان میں اصطلاح '' اُجل'' اور اصطلاح'' تا تیت' کی طرف رجو ٹ کیا جائے گا۔



⁽۱) الانصاف ۵ر ۱۰۰، ۱۰۱ طبع التراث، أمغنى سمر ۳۳ ما، ۳۲۵ طبع رياض، کشاف القتاع سهر ۲۰۱۱ طبع التصر

تاً قیت ۱-۳

"وقت" کومکان (جگه) کے لئے بطور ستعارہ ستعال کیا گیا ہے، ای سے مواقیت حج ہیں احرام کی جگہوں کے لئے (۱)۔

اصطلاح میں ناقیت: فعل کے وقت کی ابتداء اور انتہاء کو مقرر کرنے کا نام ہے، ناقیت بھی شارع کی طرف سے ہوتی ہے، مثلاً عبادات میں اور بھی غیر شارع کی طرف سے (۲)۔

تاً قیت

تعریف:

ا - تأتیت یا تو تیت اَفّت یا و فّت (اَناف کی تشدید کے ساتھ) کا مصدر ہے، مصدر اور فعل میں ہمزہ واؤ سے بدلا ہوا ہے، لغت میں اس کامعنی: او قات کی تعیین کرنا ہے، اور بیاس چیز کو شامل ہوتا ہے جس کے لئے آپ کوئی وفت یا غایت متعین کریں اور آپ کہتے ہیں: و فّته لیوم کذا، جس طرح " اُجَلته" کہتے ہیں (۱)۔

القاموس میں وقت کے معنی کے بیان میں ہے: '' وقت'' کا استعال اوقات کی تعیین کے معنی میں ہوتا ہے جیسا کہ توقیت ہے، اور وقت زمانہ کی مقدار (حصر) کانا م ہے (۲)۔

السحاح میں ہے: "و قته فہو موقوت" (میں نے قلال چیز کے لئے وقت مقرر کیا لیس وہ مقرر ہوگیا)، بدال وقت بولا جاتا ہے جب فعل کے لئے کوئی وقت بیان کیا جائے، جب فعل کے لئے کوئی وقت بیان کیا جائے جس میں اے کیا جائے، اس سے اللہ تعالی کا بدار ثنا دہے: " إِنَّ الصَّلاَةَ كَانَتُ عَلَى الْمُوْمِنِيْنَ کَا سَاتُهُ وَقُوتًا" (ہے شک نماز تو ایمان والوں پر پابندی وقت کے ساتھ فرض ہے)، یعنی نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات میں فرض کی گئی ہے (مین کم نماز او قات کم نماز او قات کی کم نماز او قات کم نماز او قات کم نماز او قات کم نماز او قات کی کم نماز او قات کم نماز او

متعلقه الفاظ:

الف-أجل:

۲- افت میں أجل الشيء مرادجيها كه المصباح میں ہے: شے كى مدت اوران كاوه وقت ہے جس میں وه وقو ئيز ریمو (۳)۔

اصطلاح فقہاء میں اجل بستقبل کی وہ مدت کہلاتی ہے جس کی طرف کسی امر کی فیباء میں اجل بہندت کرنا التز ام کو پوراکرنے کی مدت ہواورخواد بیمدت شرع کی مدت ہواورخواد بیمدت شرع کی طرف سے مقر رہوئی ہویا قضائے تاضی سے یا التز ام کرنے والے کے ارادہ سے، التز ام کرنے والا ایک شخص ہویا ایک سے زیا دہ۔

اجل اورناقیت کے درمیان فرق بالکل واضح ہے، اس کئے کہ ناقیت میں نفر فات زیا دورتر فی الحال ثابت ہوتے ہیں اور ایک وقت متعین میں ختم ہوجائے ہیں (م)۔

ب-اضافت:

سا- اضافت کا استعال لغت میں کئی معانی کے لئے ہے، آہیں میں

⁽۱) - المعباح لمعير.

⁽۳) - الكليات لا لي البقاء الكهوى ٢ / ١٠٣٠ طبع دُشق ، نيز د يجھئے: جامع الفصوليين ٢/ ٧ طبع العامرة _

⁽m) المصباح لمعير مادة" أجل".

⁽٣) ويكفيُّ الموسوعة القانوبية اصطلاح "أجل".

⁽۱) لسان العرب، القاسوس، الصحاح مادهة ' 'وتت' ' ـ

⁽٢) القاسوس الحيط

⁽۳) سور وکنیا و ۱۹۳۷ (

⁽۳) العجاح

سے اساد اور تخصیص بھی ہے ⁽¹⁾۔

فقہاء اضافت کو ان دونوں معنوں میں استعال کرتے ہیں، حبیبا کہ اسے اس معنی میں بھی استعال کرتے ہیں جب تھم کی اضافت زمانہ مستقبل کی طرف ہو، یعنی نضرف کے تھم کے نفاذ کو اس زمانہ مستقبل کی طرف مؤخر کرنا جے متصرف نے بغیر کلمہ شرط کے متعین کیا مستقبل کی طرف مؤخر کرنا جے متصرف نے بغیر کلمہ شرط کے متعین کیا ہو (۲)

اضافت کے دونوں معنوں اور تاقیت کے درمیان فرق بیہ ہے
کہ تاقیت میں نفسر فات فی الحال ٹابت ہوتے ہیں اور ایک متعین
وقت میں ختم ہوجائے ہیں، ہر خلاف اضافت کے کہ اس میں سبب پر
تعم کا ترتب اس وقت تک مؤخر کیا جا تا ہے جس وقت کی جا نب سبب
کی فیدت کی گئی ہے (اس)۔

ج-تأبيد:

سم - لغت میں تا بید کامعنی ہے تخلید یا نوحش، جبیبا کہ انسحاح میں آیا (۳) ہے ۔

اور المصباح میں ہے کہ جبتم کہو:" لا ایکلمه آبدا" (میں اس ہے کہوں کا) تو اُبد سے تنہارے اس بات کے اس بات کے کہنے سے لے کرآ خرعمر تک کا زمان مراد ہوگا (۵)۔

فقہاء کے استعالات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کے فردیک تا بید کا مصلب ہے صیغہ تضرفات کو اُبدیا ان الفاظ کے ساتھ مقید کرنا جو اُبد کے معنی میں ہوں۔

- (۱) الصحاح للجوم کی، القاموس الحبیط ، لمصباح لمعیر یاده " ' ضیف' ۔ (۱) الصحاح للجوم کی، القاموس الحبیط ، لمصباح لمعیر یاده " ' ضیف' ۔
 - (٢) العنا بيني البداريصدر بأش فتح القدير سهر الاطبع دارصا در...
- (٣) " بيسير أتحرير الرفي الطبع لحلمي انيز ديكھئے: اصطلاح '' اضافت''۔
 - (٣) الصحاح مادهة "أبد" ـ
 - (۵) أمصباح لمعير مادة" أبد".

تا بید اورتا قیت میں فرق بالکل واضح ہے، اگر چرتفرف دونوں میں فی الحال ثابت ہوتا ہے، کیکن تاقیت میں تفرفات ایک وقت متعین کے ساتھ مقید ہوتے ہیں اور اس وقت متعین پر اس کا اثر ختم ہوجا تا ہے، جب کرتا بید کا معاملہ اس کے برتکس ہے ہمزید معلومات کے لئے دیکھیے: اصطلاح '' تا بید''۔

د-تأجيل:

۵ - افت میں تا جیل اُجَل (جیم کی تشدید کے ساتھ) کا مصدر ہے،
تا جیل کا مطلب ہے: ''تم کسی شے کے لئے کوئی مدت مقر رکر و''، اور
" اُجل الشيء'' ہے مرادثی کی مدت اور اس کا وہ وقت ہے جس
میں وہ وقو شیذ بر ہو⁽¹⁾۔

اصطلاح میں اس کا مصلب ہے: '' جوچیز فی الحال ٹابت ہے اسے زمانہ ستقبل تک مؤ ٹر کرنا ، مثلاً مثن کے مطالبہ کو ایک ماہ گزرنے تک مؤ ٹر کرنا۔

ناجیل اورناقیت میں فرق ریہے کہ ناقیت میں تضرف کا جُوت فی الحال مرتب ہوتا ہے اورنا جیل میں اس کے برتکس ہوتا ہے (۲)۔

ھ-تعلیق:

۲ - فقہاء کی اصطلاح میں تعلق جیسا کر ابن نجیم کہتے ہیں، یہ ہے:
ایک مضمون جملہ کے ماحصل کا دوسر مصمون جملہ کے ماحصل کے ساتھ مربوط ہونا (۳)۔

حموی نے اس کی تفسیر یوں کی ہے کہ ''اِن'' یا کسی دوسرے حرف شرط کے ذر میدایک امر غیر موجودکوالیسے امر رپر مرتب کرنا جس کا

- (۱) المصباح لمعير مادة "أجل" ـ
- (۲) الكليات لأ لي البقاء الكهوي ١٠٣ / ١٠٣ الطبع دشق.
- (m) وأشباه والنظائر لا بن محيم م ١٤ سطيع دارمكة به الهلال بيروت _

وجود تریب میں (ہونے کی امید) ہوال

تعلیق اورنا قیت میں فرق یہ ہے کہ ناقیت میں تضرفات فی العال نا بت ہوتے ہیں، لہذا تاقیت سبب برحکم کے مرتب ہونے کو نہیں روکتی، برخلاف تعلیق کے کہ وہ معلق کی ہوئی شئ کوئی العال حکم کا سبب بنے سے روک دیتی ہے، دیکھئے: اصطلاح ''تعلیق''۔

تصرفات مين تاقيت كااثر:

کا تقرفات: تا قیت کو قبول کرنے اور نہ کرنے کے اعتبار سے تین
 قسموں پر ہیں جو درج ذیل ہیں:

وہ تفرفات جو مؤقت عی واقع ہوتے ہیں، جیسے اجارہ، مزارعت، میا قات، مکا تبت، اور وہ تفرفات جو مؤقت سیجے نہیں ہوتے، جیسے آجاء مرارعت، میا قات، مکا تبت، اور وہ تفرفات جو مؤقت اور ہوتے، جیسے آج، رہین، جیسے فاریت ، کفالت، غیرمؤقت دونوں طرح سیجے ہوتے ہیں، جیسے عاربیت ، کفالت، مضاربت، وقف وغیرہ، ان کی تفصیل درج ذیل ہے:

اول:وہ تصرفات جومؤفت ہی واقع ہوتے ہیں الف-اجارہ:

۸ - فقنہاء کا اتفاق ہے کہ اجارہ ای وقت سیح ہوتا ہے جب اس کی مدت متعین کردی جائے یا کسی عمل معلوم پر اس کا قو ع متعین ہو۔ مدت متعین کردی جائے یا کسی عمل معلوم پر اس کا قو ع متعین ہو۔ پہلی قشم (یعنی اجارہ کی مدت متعین کرنا): زمین، گھریا جانور کو اجارہ بر دینا اور اجیر خاص ہے۔

۔ دوسری شم: کسی کام کے لئے اجمہت پر رکھنا مثلاً کپڑاسینے کے لئے ،اورا سے اجیر مشترک کہتے ہیں (۲)۔

- (۱) کھو کا کی این کچیم ۲۲۵٫۲ طبع امعامرہ۔
- (۲) الفتاوي البنديه منهرا ۱۱ طبع المكتبة لإسلاميه، حافية الدموتي مع لمشرح الكبير سهر ۱۲ طبع دارالفكر،مواجب الجليل ۵ ر ۱۰ ساطبع مكتبة النجاح، جوام لوكليل

ب-مزارعت اورمسا قات:

9 - امام ابو صنیفه مز ارعت کے جواز کے تاکل نہیں ہیں، کیکن امام ابو بوسف اور امام محمد ان سے اختلاف کرتے ہیں، وہ دونوں جواز کے تاکل ہیں، اور مز ارعت کی صحت کی ایک شرط بیہ ہے کہ مدت بیان کردی جائے، ابند امز ارعت ان دونوں کے فرد کیک ان مقود میں سے ہے جس کی مدت مقر رکر دی جاتی ہے (ا)۔

مساقات میں صاحبین کے نزدیک مدت مقرر کرنا شرط نہیں ہے، اگر مدت متعین ندکر نے بھی استحساناً جانز ہے، اس لئے کر پچلوں کے پکنے کا وقت معلوم ہے (۲)۔

مالکیہ نے مز ارعت میں نوقیت کا کوئی ذکر نہیں کیا ہے، کہذ اان کے مزد دیک بلامدے متعین کئے مز ارعت سیجے ہے ^(m)۔

اور جہاں تک ان کے نزدیک سا قات کا معاملہ ہے تو یہ تو گئے۔ تو گئے کے ساتھ مؤقت ہوگی، چنا نچ بعض مالکیہ کے نزدیک آگر مسا قات کو مطلق رکھے اور مؤقت نہ کر بے قو مسا قات فاسد ہوجائے گئ ، ای طرح اس وقت بھی فاسد ہوجائے گئ جب فاسد ہوجائے گئ جب ایسے وقت کے ساتھ مؤقت کیا جو تو ڑنے کے وقت سے زائد ہو۔ مالکیہ میں سے ابن حاجب کی رائے رہے کہ اگر مطلق کہا تو بھی سیجے مالکیہ میں سے ابن حاجب کی رائے رہے کہ اگر مطلق کہا تو بھی سیجے مورا سے تو ڈرکیا ہے کہ وقت رمجول کیا جائے گا۔ صاحب الشرح مقرر کے دری مقرر

۳۱ مر ۱۸ مطبع دار العرف، حاشيه قليو لي ۱۲ مطبع أتعلى، الروضه ۱۳ م۱۱۵
 ۱۹۶ طبع المكذب لإسلامي، كشاف القتاع سهر ۱۱،۵ طبع النصر، نيز د يكھئة
 ۱۳۵ طبع أمكذب لإسلامي، كشاف القتاع سهر ۱۱،۵ طبع النصر، نيز د يكھئة
 ۱۳۵ اصطلاح "اجادة"۔

⁽I) تعبيين الحقائق 4 / ٢٧٨ طبع دار أمعر ف.

⁽٢) تنبيين الحقائق ٢٨٣٧٥_

⁽m) - حاهية الدسوقي مع المشرح الكبير سهر wulling الطبع دارالفكر، جوام والإكليل railm / ۲ سام ۱۲۵،۱۲۳ طبع داراله مرفد

کنا شرط نہیں ہے، اور اسل میہ ہے کہ اگر مدت مقرر کی جائے تو تو زُنے کے وقت تک کی جائے (۱)۔

شا فعیدگی رائے بیہ کہ اگر عقد مز ارعت کا معاملہ تنہا ہوتو مدت متعین کرنا ضروری ہے، اور جب مساتات کے تابع ہوتو اس میں وی احکام جاری ہوں گے جومساتات میں جاری ہوتے ہیں (۲)۔

اور جہاں تک مسا قات کا معاملہ ہے تو شا فعیہ کے نز دیک اس کی صحت کے لئے ایک شرط یہ بھی ہے کہ اس کی مدت متعین ہو، اس لئے کہ اس میں مدت مثلاً ایک سال کی تعیین کے ساتھ ممل کی معرفت شرط ہے (۳)۔

حنابلہ کے بزوی میز ارعت وسا قات کے سی ہونے کے لئے مدت مقرر کرنا شرط نہیں ہے، بلکہ مدت مقین ہویا نہ ہو ہر طرح سی ہے، لبند ااگر مز ارعت یا سا قات مدت ذکر کئے بغیر کرلی تو بھی جائز ہے، اس لئے کہ رسول اللہ علی ہے نے اہل نیبر کے لئے کوئی مدت مقین نہیں کی تھی (۳) ہی طریقہ حضور علی ہے ہو اور اس کے خانا ء کا بھی تھا، اور عاقد ین میں ہے ہر ایک کو جب چاہے فنخ کا بھی اختیار ہے، لبند ااگر رب المال کی طرف ہے فنخ ہواور اس وقت ہو جب کہ تھاں نہ ذکا ا ہواور عامل نے کام شروئ کردیا ہوتو عامل کو ہوجب کہ تھاں نہ ذکا ا ہواور عامل نے کام شروئ کردیا ہوتو عامل کو اجر مثل ملے گی، اور اگر عامل نے فنخ کیا ہواور کھاں نہ ظاہر ہواہوتو عامل کو بھر نہیں ملے گا (۵)۔

- (۱) حافية الدسوتي سهر ۵۳۲_
- (٢) روهنة الطاكبين ٧٥ ١٤ ـ
- (m) روهة الطالبين ١٨٧٥، حاشية ليو لي ٣٧ هيم لحلمي _
- (٣) عديث: "أن الدي نَائِظُ لَم يَضوب الأهل حبو مدة....." كن روايت بخاري في الحيمي (الفتح ١٨ ١٠ طع استانيه) عن ورسلم (١٨ ١/٣) طع عبل الرابي أن الم الحيمين الرابي أن كن بهد
- (۵) كشاف القتأع سهر ۵۳۷ طبع النصر، نيز ديكھئة اصطلاح "مزارعة" اور "مساقاق".

دوم: غیرمؤفت تضرفات بیوه تفرفات ہیں جن میں مدت متعین کرناسی خبیں ہے، یعنی مدت متعین کردی جائے تو وہ فاسد ہوجائے ہیں (۱⁾، وہ ﷺ، رہن، بہداورنکاح ہیں،اوراس کی تفصیل بیہے:

الف-ئع:

اور وہ فقہاء کے فزد یک نیے: ایک مخصوص طریقہ پر مال کے مقابلے میں مال دینا ہے، اور وہ فقہاء کے فزد کیک تاقیت کو قبول نہیں کرتا، چنا نچ انہوں نے ذکر کیا ہے کہ نیچ کے حصے ہونے کی عام شرائط میں سے بیہے کہ اس کی مدت متعین ندہو (۲)۔ دیکھئے:" نیچ" کی اصطلاح۔

سیوطی نے اپی '' لاکا شباہ''میں ذکر کیا ہے کہ بھے کسی حال میں تاتیت کو قبول نہیں کرتی ، جب اسے مؤقت کر دیا جائے تو باطل ہوجائے گی۔

ب-رہن:

11 - فقہاء کا اتفاق ہے کہ رہن مدت متعین کرنے کو قبول نہیں کرتا،
اگر اس کی مدت متعین کردی جائے تو فاسد ہوجائے گا، کیونکہ رہن کا
حکم جیسا کہ حفیہ نے کہا ہے بیہے: رہن کی انہاء تک ہمیشہ کے لئے
محبوں کردینا ہے، خواہ انہاء ادائیگی کے ذریعہ ہویا ہری کردیئے کے
ذریعہ ہویا ہری کردیئے کے
ذریعہ ہویا ہری کردیئے۔

مالکیہ کہتے ہیں کہ جس نے رئین اس شرط پر رکھا کہ اگر ایک

- (۱) وأشاه والنظارُ للسيوطي ر ۲۸۲ طبع الحلمي _
- (۲) الفتاوي البنديه سرس طبع الكتبة لإسلاميه، مغنى الحتاج ۱۳ س، المغنى مع المشرح الكبير ۲۵۱/۱۱ طبع المنار، نيز ديكھئة حاهية الدسوتی سر۲ 2، 24، جوام لا كليل ۲۷ ۴۵،۲۸ مواہب الجليل سر ۳۸۸، ۵۰ س
- (m) تعبیمین الحقائق ۲/ ۱۲، حاشیه این هایدین ۵/ ۳۳س، حاهیه اطهداوی کل الدر الختار سر ۵ ۳۳ طبع دار المعرف

سال گزرجائے گا توشق مرہون رہن سے نکل جائے گی ،لوکوں کے رہن رکھنے کا بیطریقة معروف نہیں ہے اور نہ بیرہن ہے گا⁽¹⁾۔

رہین ثنا فعیہ کے فزویک اعتاد حاصل کرنے کے لئے ہوتا ہے، کہند ااسے کسی مدت کے ساتھ مؤقت کرنا اعتاد حاصل کرنے کے منافی ہوگا (۲)۔

رئین حنابلہ کے نز دیک بھی تاقیت کو قبول نہیں کرتا، چنانچ

'' کشاف القنائ' میں آیا ہے: اگر متعاقد بین نے رئین کو مؤقت

کرنے کی شرط لگائی، مثلاً دونوں نے کہا: وہ دیں دن کے لئے رئین
ہے، توشرط فاسد ہے، کیونکہ مقتقنائے عقد کے خلاف ہے، البندرئین
سیجے ہوگا (۳)۔ اصطلاح" رئین' کی طرف رجو ٹ کیا جائے۔

ج-هبه:

الا - فقرباء كا اتفاق ہے كہ بہد كے اندر مدت متعين كرنا سيجي نہيں ہے ، اس لئے كہ بہد جيسا كہ حنف كہتے ہيں: بلا موض فوراً كسى كومين كا ما لك ، بانا ہے ، لہذا نہ پر قياس كرتے ہوئے بہد ميں بھى مدت متعين نہيں كى جائتى (٣)۔

اوراس لنے بھی کہ ہبہ میں مدت متعین کرنے سے دھوکہ لا زم آئے گا، جبیبا کہ مالکیہ کہتے ہیں (۵)۔

نو وی نے ذکر کیا ہے کہ تیج فد بب کے مطابق ببہ کو کسی شرط پر معلق کرنا یا مدے متعین کرنا تا تل قبول نہیں ہے ^(۱)۔

حنابلہ کہتے ہیں جیسا کہ اُمغنی میں آیا ہے کہ اگر بہہ میں مدت متعین کردی اور بیکہا: میں نے اپنی بیچیز ایک سال کے لئے تم کو بہہ کی، پھر وہ میری طرف لوٹ آئے گی تو بہہ سیجے نہیں ہوگا، کیونکہ بہہ کسی عین کاما لک بنانے کا عقد ہے، لہذ امدت متعین کرنے پر سیجے نہیں ہوگا جیسا کہ ناچے میں ہے (۱)۔

عمر ي اوررقبي :

ساا - فقہا و کاعمری کی مشروعیت پر اتفاق ہے، کیکن اس سلسلے میں اختاا فعیہ اختاا فعیہ اختاا فعیہ اختاا فعیہ فقا فعیہ قول جدید میں اور امام احمد اس طرف کئے ہیں کہ جس کے لئے عمری کیا گیا ہے اس کی زندگی میں عمری جائز ہے اور اس کے مرنے کے بعد اس کی زندگی میں عمری جائز ہے اور اس کے مرنے کے بعد اس کے ورنا و کا ہوگا۔

عمری کی صورت رہے کہ کوئی شخص رہے جہ بیں نے اپنا گھر فلاں کودے دیا جب تک وہ زندہ رہے، جب وہ مرجائے تو گھر جھے واپس ہوجائے گا، لہذا جسے گھر دیا ہے وہ اس کا ما لک ہوجائے گا اور اس کے انتقال کے بعد اس کے ورثاء ما لک ہوں گے، اور عمر کی شرط جوتا قیت کا فائدہ ویتی ہے، بإطل ہوجائے گی، یہی جمہور فقہاء کی رائے ہے۔

امام ما لک کا مذہب اور امام شافعی کا قول قدیم ہے ہے کہ عمری میں منافع کاما لک ہنلا جاتا ہے نہ کہ عین کا، لبند اجس کے لئے عمری کیا گیا ہے اس کور ہے کاحق ہوگا، جب وہ مرجائے گا تو گھر عمری کرنے والے کو واپس ہوجائے گا، لبند اان کے فز دیک عمری ان تضرفات میں سے جن میں مدے متعین کرنا درست ہے (۲)۔

⁽۱) المدونه ۳۲۹/۳ طبع دارصاد با جوام روا کلیل ۲۸ • ۸ پموایب الجلیل ۸ / ۸ ۸

⁽٢) حاشيرقليو لي٢١/٢٧_

⁽m) كثا ف القتاع m/٠٥٠_

 ⁽٣) بدائع العنائع ١/ ١١٨ طبع الجماليد.

⁽۵) - حافية الدسوقي مهر ١١١٠

⁽١) روهية الطاكبين ١٩٧٥ س

⁽۱) المغنى مع لشرح الكبير ۲۸ ۲۵۲ طبع المنان نيز ديكھئة اصطلاح "بهه"۔

⁽۲) البنايه ۱۰/۷ ۸، البطاب ۱۱/۱۲، لا قتاع للشريخي ۱۳۸۳ س

رتبی کی صورت میہ ہے کہ آدمی کس سے کے بمیر اگھر تمہارے لئے رتبی ہے ، امام ابو صنیفہ اور امام محمد کے بز دیک میہ باطل ہے ، مید ملک رقبہ کا فائد ہ نہیں دے گا ، البتہ عاربیت بن جائے گا۔ عمری کرنے والے کے لئے جائز ہے کہ اپنی بات سے رجو ش کر لمے اور جب جائے ہے گئے دے ، کیونکہ اس کا جملہ مطلق انتخاب کو ثنا مل تھا۔

پس قبھی طرفین کے نز دیک ان تضرفات میں سے ہے جن میں مدت متعین کرنا درست ہے، کیونکہ وہ عاربیت ہے۔

امام ثافعی، امام احمد اور امام ابو بیسف رقی کے جواز کے قائل ہیں، اس لئے کہ کہنے والے کا بیہ کہنا: "ہدادی لک" (میر اگھر تمہارے لئے ہے) ما لک بناما ہے، اور" رتبی" کہنا شرط فاسد ہے، اور" رتبی "کہنا شرط فاسد ہے، ابد ایشرط فعو ہوجائے گی، تو کویا اس نے بیہ کہنا: "د قبہة ہادی لک" (میرے گھر کا رقبہ تمہارے لئے ہے)، کہذا ان حضرات کے فزد یک "رتبی "مری" کی طرح جائز ہوگا، اوران کے فزد یک رتبی ان تعرفات میں سے ہوگا جوتا تیت کو بول نہیں کرتے۔ رتبی ان تعرفات میں سے ہوگا جوتا تیت کو بول نہیں کرتے۔ امام مالک نے "رتبی" کی اجازت نہیں دی ہے (ا)۔ اللہ مالک نے "رتبی" کی اجازت نہیں دی ہے (ا)۔ اللہ مالک نے "رتبی" کی اجازت نہیں دی ہے (ا)۔ اللہ مالک نے دیکھئے: اصطلاح "عمری" اور" رتبی "۔

ر-ن*کاح:*

سما - نکاح کے اندرمدت متعین کرنا بالا تفاق سیح نبیں ہے، لہذا نکاح موقت جائز نبیں ہے، لہذا نکاح موقت جائز نبیں ہے، خواہ متعد کے لفظ ہے، حیال کر مالکید نے صراحت کی ہے کہ نکاح میں مدت کا ذکر ممنوع ہے، خواہ کتنی عی لمجی مدت کیوں ندہو (۲)۔

نکاح مؤفت شافعید اور حنابلد کے فزد یک باطل ہے، خواد مدت کی تعیین مجبول ہو یا معلوم، اس لئے کہ بینکاح متعد ہے اور نکاح متعد ای طرح حرام ہے جس طرح مردار، خون اور خنزیر کا کوشت حرام ہے (۱)، دیکھئے: '' نکاح'' کی اصطلاح۔

نكاح مؤقت اورنكاح متعه مين فرق:

10 - دونوں میں تفظی اعتبار سے فرق ہے، نکاح متعہ وہ نکاح ہے جس میں لفظ تمتع استعال کیا جائے، مثلاً عورت سے کے: " میں تم کو فلاں چیز دیتا ہوں اس شرط پر کہ میں تم سے ایک دن یا ایک مادیا ایک سال یا ای طرح کسی مدت تک فائدہ اشاؤں گا، بیاعام علاء کے فرد یک سیجے نہیں ہے (۲)۔

نکاح مؤقت وہ نکاح ہے جور ویکا اور نکاح کے لفظ سے ہویا ایسے الفاظ سے ہوجوان کے قائم مقام ہوں اور اس میں مدت کی قید ہو، مثلاً عورت سے کہا "میں تم سے دی دن کے لئے شادی کرتا ہوں" بیعام علماء کے فرد دیک سیحے نہیں ہے، اور امام زفر نے کہا ک عقد سیحے ہوجائے گا اور مدت کی تعین باطل ہوگی۔

مزید برآل بیک نکاح کومؤفت کرنے کی چندصورتیں ہیں، مثلاً عورت سے مدت معلومہ تک کے لئے یا مدت مجبولہ تک کے لئے نکاح کرے جس وقت تک فکاح کرے جس وقت تک دونوں میں سے کسی کی عمر نہ پنچے، یا ان میں سے کسی ایک کی عمر نہ پنچے۔ اس کی پوری تفصیل اصطلاح '' نکاح'' کے تھے۔ آئے گی (۳)۔

⁽۱) العنابيد سار ۱۳ ۵، البنابيه سار ۱۲ ۸، الاقتاع للشريبني ۱۲ ۱۳۳۰، الخطاب مع المواق ۲۷ ۱۲

⁽۲) بدائع الصنائع ۲۷ ۳۷۳،۳۷۳، ابن عابدین ۲۷ ۳۳ ، مواجب الجلیل سر۲ ۳۸ ۲، طاهینة الدسوقی ۲۸ ۳۳۸، جوایم الوکلیل از ۲۸۳

⁽۱) الروضه ۲/۷ ۴، كثا ف القتاع ۲/۹۸، ۵۵ و

⁽٣) بوائع الصنائع ٢٧٣ ـ ٣ ـ

⁽۳) بدائع لصنائع ۲۷ س۲۷، مواجب الجليل ۳۷ ۳۷ س، حاهية العدوى على الرساله ۲۷ سر ۲۳ ا، كشاف القتاع ۵۲ ۸ ه، ينز در کيفية الموسوعة الفقرية اصطلاح "أجل"۲ سر ۱۳ س.

نكاح مين تاقيت كويوشيده ركهنا:

۱۲- حفیه کا مذہب سے بے کہ نکاح میں مدت کی تعیین کو پوشیدہ رکھنے سے نکاح کی صحت پر کوئی ار منہیں پڑے گا اور نہ وہ اسے مؤقت بنائے گا، لبند ااگر عورت سے ثنا دی کرے اور نیت بیہوکہ اتن مدت تک جتنی اس نے نیت کی ہے اسے نکاح میں باقی رکھے گا تو نکاح سیجے ہے، اس لئے کہ مدت کی تعیین لفظ کے ذرابعہ ہوتی ہے (۱)۔

مالکیدکاند بہب یہ بے کہ اگر مدت کی تعیین عقد میں نہ پائی جائے اور شوہر نے عورت کو بتایا بھی نہ ہو بصرف اپنے ول میں تصد کیا ہو ، اور عورت یا اس کے ولی نے جان لیا ہو کہ شوہر فلاں مدت کے بعد عورت کو جد اگر چہ بہر ام خورت کو جد اگر چہ بہر ام نے اپنی ''شرح'' اور ''شامل'' میں فاسد ہونے کی صراحت کی ہے ، اگر شوہر کا ارادہ عورت ہجھ گئی ہو۔ کیکن اگر شوہر نے عورت یا اس کے ولی ہے اس کی صراحت نہیں کی اور عورت نے بھی شوہر کے ارادہ کو فلی سے اس کی صراحت نہیں کی اور عورت نے بھی شوہر کے ارادہ کو نہیں سمجھاتو بینکاح متعنہ میں ہے ۔

شا فعیہ اس نکاح کو مکروہ کہتے ہیں جس میں مدت کی تعیین کو پوشیدہ رکھا گیا ہو، اس لئے کہ ہر وہ چیز جس کی صراحت نکاح کو باطل کردے، اس کو پوشیدہ رکھناان کے فرز دیک مکروہ ہے ^(۳)۔

حنابلہ کے یہاں سیجے منصوص علیہ تول اور جس پر اصحاب حنابلہ کا عمل ہے یہ ہے کہ نکاح میں مدت کی تعیین کو پوشیدہ رکھنا، اس کی شرط لگانے کی طرح ہے، لبند العدم صحت میں نکاح متعہ کے مشابہ وگیا ^(س)۔ صاحب الفروٹ نے شیخ ابن قد امد سے نہیت کے باوجود ایسے

- (۱) البحر الرائق سر۱۱۹، ابن هايدين ۶ رسمه ۴، تبيين الحقائق ۴ ر۱۱۹،۱۱۵ ـ
 - (r) الدسوقى ۱۳۹۳ ma_
 - (m) العامة الطاكبين مهر ٢٥ س
- (۳) الانصاف ۱۲۳۸، شرح منتمی لا دادات سر ۳۳، کشاف القتاع ۲۵،۷۵ طبع النصر

نکاح کے قطعی سیحے ہونے کا قول نقل کیا ہے ^(۱)۔

'' المغنی'' میں بی بھی آیا ہے کہ اگر عورت سے بلاشرط نکاح کیا، سراس کی نیت بیہے کہ ایک مہین نہ کے بعد طلاق دے دے گا، یا جب اس شہر میں اس کی ضرورت پوری ہوجائے گی تو طلاق دے دے گا، تو عام اہل علم کے نز دیک نکاح سیح ہے، سوائے امام اوز ای کے، وہ کہتے ہیں کہ بینکاح متعہ ہے۔

سیح بات رہے کہ اس میں کوئی حرج نہیں ہے، اور نہ اس کی نیت سے نکاح کوکوئی نقصان کنچے گا، آ دمی پر لازم نہیں ہے کہ وہ اپنی بیوی کو مجبوس رکھنے کی نیت کرے، اس لئے اتنا کافی ہے کہ اگر اس کے موافق ہوتور کھے، ورنہ طلاق دے دے (۲)۔

سوم: وہ تصرفات جن میں مدت تبھی متعین ہوتی ہے اور تبھی غیر متعین

ال سے مراد وہ تضرفات ہیں جنہیں مدت کی تعیین فاسد نہیں کرتی ، جیسے ایلاء، ظہار، عاربیت وغیرہ۔اس کی تفصیل درج ذیل ہے:

الف-ايلاء:

⁽۱) الفروع ۱۵/۵۱۵ طبع عالم الكتب

 ⁽٣) المغنى مع الشرح ٢٧ عام ٥٤، نيز دي يحصّه الموسوعة الكلمية الصطلاح "أجل"
 جلد ٢، فقر ٥ د ١٤ ـ

⁽۳) الفتاوی البندیه ار۷۷ مه حافیه الدسوقی ۲۸۸۳ مه جوایر لوکلیل ار۱۲۷ مه واشیاه و الفائز للسیوهی ر ۲۸۳ ماشیه قلیو کی سهر ۱۲، کشاف الفتاع ۵ ر ۵ س۵ مه نیز دیکھئے تغییر الفرطبی سهر ۵ واطبع دارالکتب کمصریب

ب-ظهار:

11- ظباریس اصل یہ ہے کہ اگر اے مطلق رکھے گاتو وہ مؤہد ہوجائے گا، اور اگرمؤفت کرلے مثالًا اپنی ہوی ہے ایک دن یا ایک مادیا ایک سال کے لئے ظبار کریے وال کے حکم میں فقہاء کا اختایا ف ہے، حفیہ ، حنا بلہ اور ثافعیہ قول اظہر کے مطابق اس طرف گئے ہیں کہ وہ مؤفت ہوجائے گا، اور ظبار کرنے والا اس وقت تک اپنی بات ہے رجو ٹاکر نے والا اس وقت تک اپنی بات ہے رجو ٹاکر نے والا نہ مانا جائے گا جب تک کہ مدت میں وطی نہ کرے، اور اگر مدت گر رگئی اور یوی سے وطی نہیں کی تو کفارہ ساتھ ہوجائے گا اور ظبار باطل ہوجائے گا تا تیت پڑھمل کرتے ہوئے، اس اس کے علاوہ سے، لبند اس کے علاوہ سے، لبند اس میں طبر اس کا عکم مرتب ہوگا کے کہ ظبار خیم ہونے سے ظبار خیم ہوجائے، اور اس طبر وری ہے کہ مدت کے ختم ہونے سے ظبار خیم ہوجائے، اور اس طبر وری ہے کہ مدت کے ختم ہونے سے ظبار خیم ہوجائے، اور اس طبح کہ طبر ہوجائے کہ اور اس کا حکم مرتب ہوگا جیسا کہ ظبار مجلو کا اور مشکر قول ہے، لبند اس پر اس کا حکم مرتب ہوگا جیسا کہ ظبار مجلو کا اور مشکر قول ہے، لبند اس پر اس کا حکم مرتب ہوگا جیسا کہ ظبار معلق کا ہے (ا)۔

مالکیہ اور شافعیہ غیر اظہر قول کے مطابق اس طرف گئے ہیں کہ ظہار تا قیت کو قبول نہیں کرتا، لہذا اگر اسے کسی وقت کے ساتھ مقید کردے تو وہ مؤہد ہوجائے گا، جیسے طااق مؤہد ہوجاتی ہے، لہذا مقید کرنا لغو ہوگا، اور سبب کفارہ کے پائے جانے کی وجہ سے ہمیشہ مظاہر رہے گا۔

شافعیہ نے اپنے تمیر ہے ول میں ذکر کیا ہے کہ ظہار مؤقت الغو ہے، اس لئے کہ وہ تحریم کومؤہر نہیں کرتا، لہند ایدا یسے بی ہوا جیسے کوئی شخص اپنی بیوی کو ایسی عورت کے ساتھ تشبید دے جو ہمیشد کے لئے حرام نہیں ہوتی (۲)۔

ج- ناريت:

19- عاریت، باہوش منافع کاما لک بنانے کانام ہے، عاریت یا تو متعین مدت تک مؤفت ہوتی ہے، اس وقت اسے عاریت مقیدہ کہا جاتا ہے، یا کسی متعین مدت تک مؤفت نیس ہوتی، اس وقت اسے عاریت مطاقہ کہا جاتا ہے، یا کسی متعین مدت تک مؤفت نیس ہوتی، اسے عاریت مطاقہ کہا جاتا ہے، حنفی، ثا فعیہ اور حنا بلہ کے نز دیک بیدان عقود میں سے جولا زم نہیں ہوتے، لبد اعاریت پر لینے والا اور عاریت مطلق ہویا والا دونوں جب چاہیں رجوئ کر کتے ہیں، خواہ عاریت مطلق ہویا مقید، البتہ بعض صورتوں میں جب چاہیں رجوئ کاحق نہیں ہے، جیسے دونوں باب ہوتا گئیر یا پودالگانے کے لئے عاریت پر لینا (۱) تفصیل کے لئے دن یا تغییر یا پودالگانے کے لئے عاریت پر لینا (۱) تفصیل کے لئے دن یا تغییر یا پودالگانے کے لئے عاریت پر لینا (۱) تفصیل کے لئے دن یا تغییر یا پودالگانے کے لئے عاریت پر لینا (۱) تفصیل کے لئے دن یا تغییر یا پودالگانے۔

مالکیہ کا کبنا ہے کہ جب عاربت کسی عمل کے ساتھ مقید ہوہ جیسے کسی زمین میں ایک فصل یعنی ایک بارزراعت، یا کسی وقت کے ساتھ مقید ہوہ میں ایک ماہ کی سکونت، نو وہ اس عمل یا وقت کے ختم ہونے تک لا زم رہے گی ،لیکن اگر عمل یا وقت کے ساتھ مقید نہ ہوتو ایسی مدت میں اس جیسی چیز ہوتو ایسی مدت میں اس جیسی چیز سے عام طور پر نفع اٹھا یا جا سکتا ہو، اس لئے کہ عادت شرط کی طرح ہوتی ہے۔

پس اگر عادت والی چیز نه ہواور کمل یا وقت کی قید بھی نه رہی ہوتو تخمی نے ذکر کیا ہے کہ عاربیت پر دینے والے کو وہ چیز حوالہ کرنے یا روک لینے کا اختیار ہوگا، اور اگر حوالہ کر چکا ہوتو واپس لے سکتا ہے (۲)۔

⁽۱) الفتاوي البنديه ار ۷۰۵ مثني أكتاج سر ۷۵ س، کشاف الفتاع ۲۵ سر ۷۷ س

⁽۲) - جوام لا کلیل ایر ۱۷ میمغنی المثاع سر ۵۷ مینیز دیکھنے اصطلاح ''ظهار"۔

⁽۱) الفتاوي البنديه سهر ۱۳ ۳، تبيين الحقائق ۸۸۸، الروضه ۱۳۲۳، ۳۷ م، حاشير قليو لي ۱۲، ۳۲، كشا ف الفتاع سهر ۱۲

و تکھئے:اصطلاح" کفالت"۔

د-كفاليه:

 ٢ - كفاله ميس مدت كي تعيين جائز ہے يائيس؟ اس سلسله ميس فقنها ءكا اختلاف ہے۔حضیہ مالکیہ ،حنابلہ اور ثا فعیہ اپنے غیر اصح قول کے مطابق ال طرف گئے ہیں کہ کفالہ میں مدیت معلومہ مثلًا ایک ماہ یا ایک سال کی مدت کی تعیین جائز ہے، اور اپنے اصح قول میں ثا فعیہ اں ہے نع کرتے ہیں۔

پھر جو لوگ جواز کے ٹائل ہیں ان میں اس صورت میں اختلاف ہے جب کہ مدت مجہول کے ساتھ تعیین ہو۔

حنفیہ کہتے ہیں کہ وقت مجہول کے ساتھ مدت کی تعیین جائز ہے جب کہ بہت زیا وہ جہالت نہ ہو، لوکوں میں اس طرح کے وقت کے ساتھ مدت کی تعیین کاعرف رائج ہے، مثلاً کھیت کے کا نے اور گاہنے کے وقت تک کی تعیین، کیکن اگر وقت مجبول لوکوں کے درمیان متعارف نہ ہو، جیسے ہارش کا آنا ، ہوا کا چلنا، تو ایسے وقت مجبول کے ساتھ کفالت کومؤنت کرنا تھیجے نہ ہوگا۔

مالکیہ نے کفالت میں مدت مجبول کے ساتھ مدت متعین کرنے کی اجازت دی ہے،جیسا کہ ابن یونس سے کتاب اٹھالہ یعنی (كتاب الكفاله) مين منقول ہے كہ كفاله مال مجہول كے ساتھ جائز ہے، ای طرح کفالہ بالمال مدت مجہول کے ساتھ بھی جائز ہے۔ حنابله کفاله میں مدت کی تعیین کو جائز قر ار دیتے ہیں اگر چہ مدت مجہول کے ساتھ ہو، بشر طیکہ وہ مدت مجہول کفالہ کے مقصود کے حاصل کرنے میں ما فع ندہو، جیسے کھیت کے کاٹنے اور تو زُنے کا وقت ، ال لئے كه وہ بلاعوض تعرب ہے، كہذا نذر كى طرح جائز ہوگا(۱)،

ھ-مضاربت:

۲۱ - حفیه اور حنابله کے نز دیک مضاربت میں مدت متعین کرنا جائز ہے۔ حنفیہ کہتے ہیں کہ مالک نے کسی شہریا سامان یا وقت یا شخص کو متعین کردیا ہوتو اس ہے تجاوز کرنے کا اختیار عامل (مضارب) کو

حنابلہ نے بھی مضاربت میں مدت کی تعیین کو سیح قر ار دیا ہے، وہ کتے ہیں کہ جب رب المال ہوں کے: "میں نے تمہیں اتنے درہم یا اتنے دینار پر ایک سال کے لئے مضارب بنایا، اور جب سال گذر جائے تونة ثريد واورنافر وخت كرو"، ال لئے كه بيقعرف سامان كى ايك تتم ہے تعلق ہے، لہذا زمانہ کے ساتھ اس کی توقیت جائز ہے جیسا کہ وکالت میں جائز ہے (۴)۔

ا مالکیہ اور ثنا فعیہ کا مُدہب بیہ ہے کہ مضاربت میں مدت متعین کرنامجیج نہیں ہے، ہی لئے کرجیبا کہ مالکیہ کہتے ہیں کہ پیعقد لازم نہیں ہے، لہذ امضاربت کا حکم یہ ہے کہ وہ غیر مؤجل رہے گی، اور رب المال اورمضارب میں سے ہر ایک کو جب جاہے چھوڑنے کا افتیارہوگا ^(m)۔

: ذکرکیا ہے کہ مضاربت میں بیان مدت کا اعتبار نہیں ، **ل**ہٰذ ااگر مؤقت (۱) حاشیه ابن عابدین ۳۸۶/۳ طبع بولاق، حاهید اطهداوی علی الدر الخمار

ہے کام کرنے میں عامل کو تنگی ہوگی، امام نو وی نے '' الروضہ'' میں

اورجیسا کشا فعیہ کہتے ہیں کہ ضاربت میں مدے متعین کرنے

⁽۲) كثاف القتاع سر١١٥٠

⁽m) مواہب الجليل ۳۲۰ مطبع انواح۔

⁽۱) - بدِ ابْع الصنائع ٢ رس، كشف الحقائق ٣ ر٥ ٥، البحر الرائق ٢ ر ٥ ٣٣، ٣٣٠، مواہب الجلیل ۵را ۱ ا،مغنی اکتاج ۲ ر ۷ و ۲، کشاف القتاع سر ۲ ۷ س، غشي وا رادات الرسماس

تأقيت ٢٢-٢٣

کیا اور یوں کہا: ''میں نے تم کو ایک سال کے لئے مضارب بنایا''،
پھر اس کے بعد مطلقا تعرف کرنے ہے یا بھ کرنے ہے رو کے تو
مضاربت فاسد ہوجائے گی، کیونکہ یہ مقصود کے لئے تحل ہے، نو وی
نے یہ بھی ذکر کیا ہے کہ اگر یوں کہے: '' اس شرط پر مضارب بنایا کہ تم
ایک سال کے بعد خرید نہیں کتے البتہ فر وخت کر کتے ہو' تو اسح قول
کے مطابق مضاربت سیح ہے، اس لئے کہ مالک خرید نے ہے جب
چاہے روک سکتا ہے، البتہ فر وخت کرنے ہے نہیں روک سکتا۔ اور اگر
مالک نے صرف اتنا کہا: '' میں نے تم کو ایک سال کے لئے مضارب
بنایا'' تو اسح قول کے مطابق مضاربت فاسد ہوجائے گی اور دوسر ب
تول کے مطابق جائز رہے گی، اور مدت کی تعیین کو خرید نے ہے
تول کے مطابق جائز رہے گی، اور مدت کی تعیین کو خرید نے ہے
دوک پر محمول کیا جائے گا تا کہ عقد باقی رہ سکے۔ اور اگر یوں کہا
دوکنے پر محمول کیا جائے گا تا کہ عقد باقی رہ سکے۔ اور اگر یوں کہا
مدے ختم ہونے سے پہلے فتح کا ما لک نہیں رہوں گا'' تو بھی مضار بت
ماسہ ہوجائے گی (ا)۔

و-نزر:

۲۲-فقہا عکا اتفاق ہے کہ نذر میں مدت متعین کرنا سیجے ہے، جیسے اگر
کوئی ماہ تحرم الحرام کے ایک دن کے روزہ کی نذر مانے تو وہ روزہ لا زم
ہوجائے گا، اور اگر مدت متعین نہ کرے بلکہ یوں کے: للّٰہ علی آن
اصوم یو ما (اللّٰہ کے لئے میر نے دمہ میں کسی ایک دن کاروزہ ہے)
تو وہ روزہ بھی لا زم ہوجائے گا، اور اس حالت میں ادائیگی کے وقت
کی تعیین نذر مائے والے کے اختیار میں ہے (۲)۔

- (۱) روصة الطاكبين ۵/ ۱۲۲،۱۲۱، حاشية القليع لي ۱۳ م ۵۳ ـ
- (۲) الفتاوي البندية الرق ۴۰، مواجب الجليل سهر ۳۳۷، جوم لو کليل اله ۱۵۵، حافية الدسوقی ۱۹۲۷، الاشاه والنظائر للسيوطي رص ۴۸۴، کشاف الفتاع ۲۸ و ۴۷، نيل لميا رب ۱۸۳۳

ز-وقف:

سر ۲۶ - وقف کے اندر مدت کی تعیین میں فقہا وکا اختاا ف ہے، حنفیہ، شافعیہ اپنے اسح قول میں اور حنابلہ دو وجہوں میں سے ایک کے مطابق اس طرف گئے ہیں کہ وقف میں مدت متعین کرنا سیجے نہیں ہے اور وقف مؤہدی رہتا ہے (۱)۔

مالکیہ نیز شافعیہ اپنے سیجے قول کے بالقائل اور حنابلہ دوسری وجہ کے مطابق اس طرف گئے ہیں کہ وتف میں مدت متعین کرنا جائز ہے، اور وقف کے سیجے ہونے کے لئے تابید شرطنہیں ہے، یعنی وقف کا اس طرح مؤہر ہونا شرطنہیں ہے کہ جب تک تی کموقو ف بعنی وقف کا اس طرح مؤہر ہونا شرطنہیں ہے کہ جب تک تی کموقو ف باقی رہے ، لہذ استعین مدت تک کے لئے بھی وقف سیجے ہے، پھر اس کی وقفت شم ہوجائے گی اور اس میں ہر شم کا تصرف جائز ہوگا جوغیر موقو ف میں ہوتا ہے گئا اور اس میں ہر شم کا تصرف جائز ہوگا جوغیر موقو ف میں ہوتا ہے (۱۳)۔

اس کی تفصیل اور اختایاف اصطلاح '' وقف'' کے تحت دیکھا ئے۔

ح-وكالت:

- (۱) الفتاوي البنديه ۱۲۳هم تبيين الحقائق ۱۳۲۳ ماشيه ابن عابدين سره ۲۱،۳۲۱ الروضه ۲۵،۵۲۳
- (٢) جوام الإنكليل ٢/ ٢٠٨، الشرح الكبير مع حاهية الدسوقي سهر ٨٤، الأشباه
 والنظائر للسيوفي ٢٨، المعتى مع الشرح الكبير ٢/ ٢١١٠
 - (m) جامع الفصولين مهر س

تأقيت ٢٥، تأكيد ١-٢

صاحب البدائع نے ذکر کیا ہے کہ اگر وکیل بنایا ک'' اس گھر کو کل فر وخت کر و''نووہ کل آنے سے پہلے وکیل نہ بنے گا^(۱)۔ مالکید نے ذکر کیا ہے کہ وکیل نے جب مؤکل کے حکم کی مخالفت کی اور مؤکل کے متعین کردہ وقت سے پہلے یا بعد میں نتج و شراء کیا نو مؤکل کو اختیار ہے کہ وہ اسے قبول کرے یا نہ کر ہے (۲)۔

شا فعیہ اور حنابلہ نے صراحت کی ہے کہ وکالت کا وقت متم ہوجانے کے بعد وکیل کے لئے تضرف ممنوع ہوجاتا ہے (^{m)}، ریکھئے: ''وکالۃ''۔

ط-يميين:

10-فقربا وکا اتفاق ہے کہ تیمین میں مدت کی تعیین سیحے ہے، تیمین میں مدت کی تعیین کی مدت کی تعیین کی مدت کی تعیین کی مدت کی تعیمین کی جاتی ہے، جیسے "مادام، مالم، حتی، آنی" وغیر د، اور کبھی وقت کے ساتھ مقید کرنے ہے ہوتی ہے، جیسے ماداوردن ۔

اہذ اجس نے تشم کھائی کہ فلاں کام نہیں کرے گا اور اس کے لئے کوئی وقت متعین کر دیا تو وہ ٹیمین ای متعینہ وقت کے ساتھ مخصوص ہوگی (۳)۔

تنصیل کے لئے اصطلاح '' لاا نیان'' کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

- (۱) بدائع الصنائع ۲۹ / ۳۰_
- (٢) جوام لو کليل ٢/ ١٣٤٤، حاهية الدسوتی سر ٣٨٣۔
- (m) مغنی الحتاج ۲۲ ۳۳ ، کشاف القتاع سر ۲۲ س
- (۳) جامع القصولين ۲۸۵، جوام لإنكليل ار ۳۳۱،۳۳۰، لأشاه و الظائر للسيوطي (۲۸۳، كشاف القتاع ۲۸۵۳)

تأكيد

تعریف:

ا - افت میں تاکید کا مصلب: مضبوط کرنا ، محکم کرنا ، قوت پہنچانا ہے ،
کباجا تا ہے: ''ا کد العہد'' جب وہ اسے مضبوط و محکم کرے۔
اصطلاح میں تاکید کا مصلب: کسی شئ کو مخاطب کے ذہن میں
متعین و تابت کرنا ہے (۱)۔

متعلقه الفاظ:

الف-تأسيس:

۲-تاسیس: کسی ایسے نے معنی کافائدہ دینے کا نام ہے جو پہلے سے حاصل نہیں تھا، ای بنیا در فقہاء کے عرف میں تاسیس نا کید ہے بہتر ہے، اس لئے کہ کلام کونے معنی پرمحمول کرنا پہلے معنی کے اعادہ پرمحمول کرنے ہے۔

اورجب كوئى لفظ دونوں معنى كا اختال ركھتا ہوتو تاسيس برمحمول كرنامتعين ہوجائے گا، يكى وجہ ہے كہ اگر كوئى شخص اپنى ديوى سے كہ: " تخجے طلاق ہے، تخجے طلاق ہے" اوركوئى نبيت نه كرے تو اسح بيہ ہے كہ الركوئى نبيت نه كرے تو اسح بيہ ہے كہ السم كا اللہ ہے كہ اللہ ہے كہ اللہ اللہ اللہ محمول بيہ ہے كہ اللہ اللہ اللہ محمول ميا جائے گا، تا كيد برمحمول نبيس كيا جائے گا، تا كيد برمحمول نبيس كيا جائے گا، تا كيد برمحمول نبيس كيا جائے گا، اور اگر كے كہ ميں نے اس قول سے تا كيد كا ارادہ

⁽۱) انتها نوی ۱۵۳۷/۱۵۳۱، انعر بغات (کیرتشرف کے ساتھ)، المصباح کیمیر، ناج العروس مادید" آگذ"۔

تأكيد ٣-٥

کیاتھاتوں کی تصدیق کی جائے گی۔

کیکن حفیہ کے نز دیک جیسا کہ این نجیم نے زیلعی سے نقل کیا ہے، یہ ہے کہ دیائة تصدیق کی جائے گی، قضاء تصدیق نہیں کی جائے گی (۱)۔

اجمالى تحكم:

" - روسر برقوت دینے اور ترجیج دینے کے لئے احکام بیں تاکید جائز ہے، چنانچ حکم مؤکد کو حکم فیر مؤکد پرترجیج دی جائے گی۔ کیونکہ فیر مؤکد بیر ترجیج دی جائے گی۔ کیونکہ فیر مؤکد بین تا ویل کا اختال نہیں ہوتا ، ای طرح مؤکد کو تو رُ انجی نہیں جا سکتا، الا یہ کہ تو رُ نے کی شرط ہو⁽¹⁾، اللہ تعالی کا فر مان ہے: "وُلا تَنْفَصُوا اللَّا بُمَانَ بَعُدُ تَوْرُو)۔ تَوْرِ کی کید مت تو رُولاً مَنْفَصُوا اللَّا بُمَانَ بَعُدُ تَوْرُورُ اللَّا مِدَانَةَ وَرُورُ اللَّا مِدَانَةَ وَرُورُ اللَّا مُعَدَّدُ مَنْ اللَّا بِدَانَ اللَّانِ اللَّالْنِ اللَّانِ اللَّالِيْنِ اللَّالِيَّانِ اللَّالِيَّةِ مَانِ اللَّانِ اللَّالِيَّانِ اللَّانِ اللَّانِ الْمُلْمُولُ اللَّانِ اللَّالِيَّ الْمُلْمِلِيِّ الْمُعْلِيِ الْمُ

اقوال کی تا کید:

سم- اقوال کی جب تاکید لائی جاتی ہے تو وہ اپنے غیر پر رائے ہوجائے ہیں، ای سے شہا دات کی تاکید ہے، اللہ تعالی کا ارشا دہے: "فَشَهَادَةُ أَحَلِهِمْ أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِيْنَ" (") (ان کی شہادت ہیہ کہ وہ (مرد) چا ربار اللہ کی شم کھا کر کے کہ میں سچا ہوں) کہمی بھی تاکید کے متعین احکام ہوتے ہیں جیسے تاکید طلاق، چنا نچ متفرق طلاقوں کو اس طرح الا دیا جاتا ہے کہ آئیس ایک کا محکم دے دیا جاتا ہے۔ اس کی تفصیل اصطلاح "طلاق" اور اصطلاح کے متعین اور اصلاح کے متعین

- (۱) وأشبا هو النظائر للسووهي ره ۱۳۳ طبع البالي الحلمي ، وأشبا هو النظائر لا بن محيم ره ۱۳۳ طبع دارومكة بدء الهلال.
 - (r) مسلم الثبوت ٢٠٥٦ ؛ إب الترجيح_
 - (۳) سورهٔ فحل راه به
 - (٣) سورة فوريراي

'' اکیان''میں سیسی جائے۔

انعال کے ذریعہ تا کید:

۵ ای میں سے عقد نے میں ہی ہو تعند کر کے تمن کومؤ کد کرتا ہے، اس لئے کہ بھی بھی ہی جو آگی ہے پہلے بائع کے قبضہ میں بالاک ہوجاتی ہے، اور میر کودخول کے ذر معید مؤکد کرتا ہے، اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے، اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے ذر معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے در معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے در معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے در معید مؤکد کرتا ہے اور احکام کونفا ذکے در معید مؤل میں دیکھی جائے۔



⁽۱) مسلم الثبوت عرده ۲۰، جمع الجوامع الرسم، القليو بي سرر ۲۰س، فتح القدير ۲۸ ۳۲ س، كشاف القتاع ۲۹ ۲۹ ، وأشبا هو النظائر لا بن مجيم ره سال

تأميم، تأمين، تأمين الدنياء، تأويل ١-٢

تاً ويل

تعریف:

تا ویل کامطب: اس چیز کی تفییر کرنا ہے جس کی طرف شن اوقتی ہے، اور جو اس کا انجام ہے (۱)۔

اصوبین کی اصطلاح میں تاویل: لفظ کومعنی ظاہر سے معنی مرجوح کی طرف پھیرہا ہے، کیونکہ ایک ایسی دلیل کے ذر معیہ ال معنی کا کومضبوطی حاصل ہوجاتی ہے جس سے معنی ظاہر کی بذمبت اس معنی کا شفن غالب ہوجاتا ہے (۲)۔

متعلقه الفاظ: الف<u>ت</u>فسير:

العنوى معنى نبیان كرنا اور مشكل لفظ كى مراد كوظاہر كرنا ہے۔ شرئ میں تفییہ كا مصلب: آیت كا معنى ، ال كى حقیقت ، ال کے واقعہ اور سبب نزول كواليے لفظ كے ذريعيہ واضح كرنا ہے جو اس معنى بر ظاہراً ولالت كرے ، ال ہے تربيب بيات ہے كہ لفظ كے چند

(۲) کمتصفی ار ۸۷ م، روحیة الناظر ۱۹۰ و اکتام الآمدی ۱۳۵ م التو بغات للجر جانی۔

تأميم

و کیھئے:''مصادرۃ''۔

تأمين

د کھیئے: '' اکین'' اور ''مساً من''۔

تأمين الدعاء

د کیھئے:'' آمین''۔

⁽۱) لسان العرب، لمصباح لم مير ، مختار الصحاح بادهة " أول "، ادمثا داهول، ۱۷۱ ـ (۲) لمستصمی از ۸۷ سی وه ته الزاظر بر ۹۶ ، ۱۱ دکا ملال کی ۲ / ۳ سال آنه ریفاله ت

اختالات میں ہے کسی ایک کو بیان کرنے کانا منا ویل، اور متکلم کی مراد کو بیان کرنے کانا مخفیر ہے (۱)۔

ابن الاعرابي، اوعبيد داورايك جماعت كا كبنابيه به كنفسه إور نا ويل جم معنى بين-

راغب كيتے ہيں كرتفيہ بنا ويل سے زيادہ عام ہے، اورتفيہ كا اكثر استعال الفاظ اور الفاظ كے مفردات سے تعلق ہے، اور تا ويل كا اكثر استعال معانى اور جملوں سے متعلق ہے، اور تا ويل كا زيا دو تر استعال كتب البيد ميں ہوتا ہے، اورتفيہ كا لفظ كتب البيد اور غير كتب البيد دونوں ميں استعال كياجا تا ہے۔

ان کے علاوہ دومر سے علماء نے کہا ہے کہ تفسیر : ایسے لفظ کا بیان ہے جو ایک علی وجد کا اختمال رکھتا ہے ، اور تا ویل : مختلف معانی کا اختمال رکھتے ہو ایک علی کو بیان کرنا ہے جو معنی ولائل سے ظاہر ہو۔

ابوطالب نظبی کہتے ہیں ہفتیہ : لفظ کے وضعکا بیان ہے، خواہ حقیقة ہویا مجازاً، جیسے (صواط) کی نفیہ راستہ سے، اور (صیب) کی تفییر بارش ہے۔

اورتا ویل: لفظ کے بالمن کی تفیہ ہے، اُوْلُ سے ماخوذ ہے، جس کامعنی انجام کار کی طرف رجو ت کرنا ہے۔ پس تا ویل: حقیقت مراد کی خبر دینا ہوا، اور تفیہ ہے: دلیل مراد کی خبر دینا ہوا، اس لئے کہ لفظ ،مراد کوظاہر کر کے بتاتا ہے، اور بتانے والی چیز دلیل کہلاتی ہے (۴)۔

ب-بيان:

سو- بيان لغت مين: اظهار، الصاح، انكشاف اوراس ولالت وغيره

- (۱) دستورالعلمها والروسس
- (۴) کشاف اصطلاحات الفنون ۱۱۱۲/۱۱۱۱مان العرب، لمفر دات للراغب ماده ""لمر" نور" أول "

کانام ہے جس کے ذربعیشیٰ ظاہر ہوتی ہے (۱)۔

اصطلاح میں بیان: خاطب کے لئے معنی کوظاہر کرنا اور اس کی وضاحت کرنا ہے (۲)۔

نا ویل اور بیان میں فرق بیہے کہنا ویل وہ چیز ہے جو کلام میں ذکر کی جائے ،کیکن اس کا حاصل معنی اول جلہ میں سمجھ میں نہ آئے کہ معنی مراد سمجھا جا سکے۔

اور بیان وہ چیز ہے کہ جو اس سے سمجھا گیا ہے اس میں ذکر کر دی جائے ، البتہ بعض کے اعتبار سے اس میں ایک تشم کا خفاء ہو (۳)۔

اجمالي حكم:

تا ویل جن چیز وں پر داخل ہوتی ہے ان کے اختاا ف سے
تا ویل کا اجمالی تھم بھی مختلف ہوتا ہے، اس کا بیان ورج ذیل آتا ہے:
سم - اول: وہ تا ویل جو عقائد، اصول دین اور صفات باری تعالی
ہے تعلق نصوص میں ہو، علماء کے اس سلسلے میں تین مذاہب ہیں:

پہلا مذہب رہے کہ نا ویل کی ان میں کوئی گفجائش نہیں، وہ اپنے ظاہر رہی رہیں گے، ان میں سے کسی کی کوئی نا ویل نہیں ک جائے گی۔ پیر قد مشہد کاقول ہے۔

دوسر المدبب ميه ب ك ان كى بھى نا ويلات بيس، ليكن تشبيه وتعطيل سے اپنے اعتقا دكو بچاتے ہوئے ہم ال سے ركيس گے، ارشا و بارى ب: "وَمَا يَعْلَمُ تَأْدِيلَهُ إِلاَّ اللَّهُ" (حالا تكه ان كا (سيح)

⁽۱) لسان العرب، المصباح المعير ، مختار الصحاح ماده " بين "، ارسًا داهمو ل ١٦٤، ١٢٤، ١٨٨ _

 ⁽۲) ارثا داکول قلاعی شمل الائر السرهی ۱۹۸۷، انعریفات کلجر جالی.

⁽m) دستورالعلماءار ۲۵۷، نقلاعن العربضات ليجر جا في ارس

⁽۳) سورة آل عمران ۱۷ م

مصلب بجرحق تعالی کے کوئی اور نہیں جانتا)، این ہر ہان کہتے ہیں کہ بیسلف کاقول ہے۔

شوکانی نے کہاہے کہ یکی واضح راستہ ہے اور یکی وہ طریقہ ہے جوتا ویل کے گڑھے بیں گرنے سے بچانے والا ہے، جوشخص اقتد اء کا ارادہ رکھے اس کے لئے سلف صالح پیشوائی کے لئے کافی ہیں اور جو ان کا اسوہ بین کرے ان کے لئے ساف صالح پیشوائی کے لئے کافی ہیں اور جو ان کا اسوہ بین کرے ان کے لئے بہتر ین اسوہ ہیں کیکن ساتھ می بیا بات بھی تشلیم شدہ ہے کہ کوئی ایسی فیصلہ کن دلیل وارد نہیں ہوئی جو نا ویل وارد نہیں ہوئی جو نا ویل سے مانع ہو، بیا ہے ہوسکتا ہے جب کہ وہ کتاب وسنت میں خود ہے۔

تيسر امذبب پيهے كه وه تا ويل شده ہيں۔

ابن بربان کہتے ہیں کہ پہلا فدہب باطل ہے، اور آخر والے وونوں فدہب سحابہ کرامؓ سے منقول ہیں، اور یہ تیسر افدہب حضرت ملیؓ ، حضرت ابن عباسؓ اور حضرت ام سلمؓ سے منقول ہے۔ ابن وقیق العید نے" الغاظ مشکلہ" کی شرح میں کہا ہے منقول ہے۔ ابن وقیق العید نے" الغاظ مشکلہ" کی شرح میں کہا ہے کہ وہ حق ہیں، اور ای مفہوم میں ہیں جس کا اللہ تبارک وقعالی نے اراوہ کیا ہے، اور جس نے بھی ان میں ہے کسی کی تا ویل کی، اگر اس کی تا ویل کی، اگر ہے وہ اپنی گفتگوؤں میں جمیعی ہیں تو ہم ال پر انکا رئیس کریں گے بھے وہ اپنی گفتگوؤں میں جمیعی ہیں تو ہم ال پر انکا رئیس کریں گے اور اس کی تا ویل بعید اور اس کو بعید اور اس کو بعید اور اس کو اور اس کو بعید بعوثی تو ہم اس میں تو تف اختیار کریں گے اور اس کو بعید سمجھیں گے اور ہم اس تاعدہ کی طرف رجوع کریں گے جو اس لفظ کے معتی پر ائیان رکھنے کے سلسلہ میں ہے، اس اعتقاد کے ساتھ ک

ا علام الموقعين ميں ہے كہ جو بن نے كہا: المرسلف كا مذہب يہ ہے كہ اورظو الركوان كے مواقع پر جارى كيا جائے اورظو الركوان كے مواقع پر جارى كيا جائے اوران كے معانى كواللہ تبارك وتعالى كے پر دكر ديا جائے ، جس رائے ہے ہم راضى ہيں اور جس كے مطابق ہم اللہ تعالى كى فرمانبر دارى كرتے ہيں، وہ اسلاف امت كى اتبائ كا عہد ہے ، پس ہر ديندار پر لازم ہے كہ وہ بياء تقاور كھے كہ اللہ تعالى محد ثاب كى صفات سے پاك ہے ، مشكلات كى تا ويل ميں نہ پڑے ، اس كے معنى صفات سے پاك ہے ، مشكلات كى تا ويل ميں نہ پڑے ، اس كے معنى كوبارى تعالى كے دوالہ كرے (ا)۔

۵-دوم: وہ نصوص جونر و تا ہے تعلق ہیں، اس میں کوئی اختایاف نہیں کہنا ویل کاان میں فیل ہے۔

نر وٹ ہے تعلق نصوص میں تا ویل استنباط وانتخر اج کے بابوں میں سے ایک باب ہے، بیتا ویل بھی تعجیج ہوتی ہے، اور بھی فاسد۔ تا ویل اس وقت تعجیج ہوگی جب استنباط کی ساری شرطیس یعنی لفت میں یا عرف میں اس لفظ کے استعمال کا جوطر یقنہ ہے اس کے موافق ہوہ اور اس پر دلیل قائم ہوکہ اس لفظ سے مراد وی معنی ہے جس پر اسے محمول کیا گیا ہے، اور تا ویل کرنے والاتا ویل کا اہل ہو۔

تا ویل سیخ کے ذر معیہ جو کمل کیا جائے اس کے بول کرنے پر علاء کا اتفاق ہے، البتہ اس کے طریقے اور اس کے مقامات میں اختلاف ہے، ای طرح اس میں بھی اختلاف ہے کہ س نا ویل کونا ویل فریب قر اردیا جائے اور کس کونا ویل بعید۔

آمدی کہتے ہیں: تا ویل مقبول ہے اور اس پڑھل بھی ہے جب اپنی شرطوں کے ساتھ پائی جائے، عہد صحابہؓ سے ہمارے زمانہ تک کے ہرشہر اور ہر زمانہ کے علماء پغیر تکبیر کے اس پڑھل کرتے رہے ہیں (۲)۔

⁽۱) - أعلام الموقعيبي ١٨٣ ٣٨ ـ

⁽۲) امثا داکول ۱۷۷ وافظ مهوا مدی ۱۳۲۳ س

⁽¹⁾ ارتاراگول ۲۷۷۱،۷۷۱

تأويل ٢-٧

البربان میں ہے: فی الجمله ظاہر کی تا ویل جائز ہے بشرطیکہ جواز کی ساری شرطیں پائی جائیں ، اور کسی مذہب والے نے اصل تا ویل کا انکار نہیں کیا ہے ، اختلاف صرف تفاصیل میں ہے (۱)۔

جوصورت بھی ہوتا ویل کا معاملہ ہر مسلہ میں مجتہد کی نظر پر مخصر ہے، اس پر لازم ہے کہ اس کے ظن نے جس چیز کو واجب کیا ہے اس کی اتباع کر ہے، جیسا کہ آمدی کہتے ہیں (۲)۔

غزالی کہتے ہیں: "جب اختال قریب ہواورد قیل بھی قریب ہو تو مجتہد پر ترجیح لازم ہے اور جو اس کاظن غالب ہوای کو اختیار کرے، پس ہر دقیل کے وسلے سے ہر تا ویل مقبول بھی نہیں، بلکہ معاملہ مختلف ہوتا رہتا ہے اور یکسی ضابطہ کے تحت داخل نہیں ہے (۳)۔

ابن قد امہ کہتے ہیں: ہر مسکہ کے لئے ایک ذوق ہوتا ہے، لازم ہےکہ وہ کسی نظر خاص کے ساتھ منفر درہے (^{m)}۔

یباں جو تفصیل مناسب تھی بیان کردی گئی، مزید یہ کہ کتب اصول میں ان فر وق مسائل کی مثالیں ذکر کردی گئی ہیں جن کے احکام نا ویل نصوص کے طریقہ سے متعبط ہیں، ساتھ بی ان لوگوں کا تقطہ نظر بھی بیان کردیا گیا ہے جنہوں نے نا ویل کا طریقہ افتیار کیا اور جنہوں نے ان سے معارضہ کیا۔

تاویل کاارژ:

۲ - نصوص ہے مستنبط فروق مسائل میں تا ویل کا اثر بالکل ظاہر ہے ،
 اس لئے کہ ان مسائل کے احکام میں فقہاء کے اختاا ف کا سبب یمی
 ہے۔

- (1) البريان للجويني ار ۵ ا۵ ـ
- (r) وا كام الاوري الاراسات
 - (۳) المتصمی ار ۳۸۹_
 - (۳) روصة الناظر / ۱۳۳۰

فقہاء کے نزدیک معروف یہ ہے کہ مختلف فیہ برعمل کرنے والے بر تکیر نہیں کی جائے گی الاید کہ وہ اختلاف بٹا ذہو، انصل یہ ہے کہ اختلاف بٹا ذہو، انصل یہ ہے کہ اختلاف کی رعابیت کی جائے ، اس کی صورت یہ ہے کہ وہ چیز ترک کردی جائے جو بعض کے فردیک جائز ہو اور بعض دوسرے کے فردیک حرام ہو، اور وہ کام کیا جائے جو بعض کے فردیک مباح ہواور بعض دوسرے کے خود کے کہ حرام ہو، اور وہ کام کیا جائے جو بعض کے فردیک مباح ہواور بعض دوسرے کے فردیک واجب ہو۔

اس کی تنصیل اصطلاح" اختلاف" کے تخت گذر پھی ہے۔ ہم یہاں تا ویل کے بعض عملی آٹار بعض مسائل سے ذکر کرتے ہیں:

2- اول: جس تاویل کے فساد اور اس پر مرتب ہونے والے نتائے پراتفاق ہواس کی مثالیں:

الف مید بات تابت شدہ ہے کہ جس کی عامت (خلافت) تابت ہواں کی اطاعت واجب ہے، اور اس کی اطاعت ہے نکل جانا حرم ہے، اس کئے کہ کتاب وسنت کے نصوص اس پردلالت کرتے ہیں۔ فقنہاء کا اتفاق ہے کہ کسی جماعت کا امام کے خلاف خروج کسی الیم تا ویل ہے جس نے اس کا م کو ان کی نظر میں مباح کردیا ہو، بغاوت کہلائے گا، اس کئے کہ ان کی تا ویل فاسد ہے۔

أبين طاعت اختيار كرنے اور جماعت ميں داخل ہونے كى دعوت دينا اور ان كے شبہات دور كرنا واجب ہے، اگر وہ طاعت قبول نه كريں تو ان سے جنگ واجب ہے، جيسا كر حضرت على بن ابي طالب نے خوارج كے ساتھ كيا۔ اس كى تفصيل اصطلاح " بغاق" كے تحت گذر چكى ہے۔

ب۔ زکاق کا وجوب کتاب وسنت اور اجماع سے ٹابت ہے، اس کی ادائیگی ہے رکنے کی تا ویل کرنا تا ویل فاسد ہے، زکا قاند ہے

والوں کو زکاۃ کی اوائیگی پرطافت کے ذریعی مجبور کرنا واجب ہے، جیسا کہ حضرت ابو بکرصد ایل نے ان مانعیں زکاۃ کے ساتھ کیا تھا جنہوں نے اس آبیت کر بہہ میں تاویل کی تھی: ''خُد ڈین اُمُو الِهِیمُ صَدَفَۃً تُطُهِّرُهُمُ وَتُو کُیهِیمُ بِهَا وَصَلَّ عَلَیْهِمْ اِنَّ صَلَا تَکَ سَکُنَّ تُطُهُرُهُمْ وَتُو کُیهِیمُ بِهَا وَصَلَّ عَلیْهِمْ اِنَّ صَلا تَکَ سَکُنَّ تَطُهُرُهُمْ وَتُو کُیهِیمُ بِهَا وَصَلَّ عَلیْهِمْ اِنَّ صَدِدَ لے لِیجِءُ اس کے لَمُهُمْ ' (ا) (آپ ان کے مالوں میں سے صدقہ لے لیجے، اس کے ذریعہ قربی آپ آبیاں پاک وصاف کرویں گے اور آپ ان کے لئے دعا کی جو خریجہ براشہ آپ کی دعا ان کے حق میں (باعث) تسکین ہے)۔ وہ کہتے جے کہ بیاشہ آپ کی دعا ان کے حق میں (باعث) تسکین ہے)۔ وہ کہتے جے کہ بیغیر نبی کے لئے نبیں ہے ، اور اس معاملہ میں غیر نبی ، نبی کے نائم مقام ہوجائے اس کی کوئی دلیل نبیں ہے ، اور اس معاملہ میں غیر نبی انفصیل کے نائم مقام ہوجائے اس کی کوئی دلیل نبیں ہے (۲)۔ اس کی تفصیل اصطالے ح '' زکا ق' 'میں دیکھی جائے۔

جَ بشراب نوشی کی حرمت کتاب وسنت اور اجماع سے تابت ہے، اس کے پینے کو طال کرنے کی تا ویل کرنا تا ویل قاسد ہے، جو شخص تا ویل کر کے شراب پینے اس پر بھی حد قائم کرنا واجب ہے۔

بیان کیا گیا ہے کہ قد امد بن مظعون نے شراب پی (۳)، حضرت عمر نے ان سے نر مایا: تمہیں اس پر س بات نے آبادہ کیا؟ جواب دیا: اللہ تعالی فرما تا ہے: "لَیْسَ عَلَی اللّٰهِینَ آمنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُناحٌ فِیمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقُوا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ، (۳) (جولوگ ایمان رکھتے ہیں اور نیک کام وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ، (۳) (جولوگ ایمان رکھتے ہیں اور نیک کام کرتے رہے ہیں ان یہ اس چیز ہیں کوئی گناہ ہیں جس کو وہ کھا تے کہ کرتے رہے ہیں ان یہ اس چیز ہیں کوئی گناہ ہیں جس کو وہ کھا تے

ہوں جبکہ وہ لوگ تفو کی رکھتے ہوں اور ایمان رکھتے ہوں اور نیک کام

۸ - دوم: وہ تاویل جس کے قبول کرنے پراتفاق ہے:

جیسے شم میں تا ویل جب کرشم کھانے والامظلوم ہو، این قد امہ کہتے ہیں جس نے شم کھائی، پھر اپنی شم میں تا ویل کی تو اس کی تا ویل مانی جائے گئی جب کہ وہ مظلوم ہو، اور اگر ظالم ہوتو اسے اس کی تا ویل کوئی فائد دہنیں پہنچائے گئی، شم کھانے والا جس نے اپنی شم میں تا ویل کی ہووہ تین حال سے فالی نہ ہوگا:

اول: یه که مظلوم ہو، مثالًا اسے کوئی ظالم کسی بات پر قشم کھالے ، اگر وہ اس کی تضد میں کر دینو اس پر ظلم کر ہے، یا اس کے علاوہ کسی اور پر ظلم کر ہے، یا کسی بھی مسلمان کو اس سے ضرر لاحق ہو، تو اس کے لئے تا ویل جائز ہے۔

دوم بشم کھانے والا ظالم ہو، جیسے وہ خص جسے حاکم کسی ایسے حق

⁽۱) سورهٔ توپیر ۱۹۳۳

⁽۳) المتبعرة لابن فرحون بهامش فتح أحلي المالک ۱۲ م ۴۸۰، الافتيار ار ۱۰۴، أسنى المطالب ۱۲/۱۱۱، شرح فتنمي الإرادات ار ۱۷س

⁽۳) اَرُّهُ ''قَد المه بن منطعون'' کی روایت عبدالرزاق نے اپنے مستف (۹/ ۲/۲۴ طبع مجلس اجلمی البند) میں کی ہے۔

⁽۳) سورۇپاكدەر ۱۹۳

⁽۱) سورة اكدي ٩٠٠

⁽۲) - المغنى ۸/ ۴۰ ۱۳، مامش الفروق ار ۱۸ ۸، مغنی المتاع ۴ ر ۱۹۳۰

رہے کہ ان کا ہم کو اس کے پاس ہے، اس صورت میں اس کی تتم لفظ کے اس ظاہر پر پہیری جائے گی جے تتم کھانے نے والے نے مرادلیا ہے اور فتم کھانے والے کی تا ویل نفع نہ دے گی اور جمیں اس مسئلہ میں کسی کتم کھانے والے کی تا ویل نفع نہ دے گی اور جمیں اس مسئلہ میں کسی کے اختاا ف کا علم نہیں ہے، اس لئے کہ حضرت ابو ہر بر ہ اور ایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ علی نے ارشا دفر مایا: "بسمینک علی ما بصلافک به صاحبک" (۱) (تمہاری تتم وہ ہے جس کے بارے بین تمہار اساتھی تصد ایق کرے)، اور اس لئے بھی کہ اگر تا ویل بارے بین کامعنی مقصود باطل ہوجائے گا۔

سوم: نہ ظالم ہونہ مظلوم ، اس صورت میں امام احمد کا ظاہر کلام کا ظاہر بیہے کہ اس کے لئے تا ویل جائز ہے۔

بیقصیلات ابن قد امدنے ذکر کی ہیں۔

تمام مُداہب ال بات رہ متفق ہیں کہ جب مظلوم اپنی تشم میں نا ویل کرے تو اسے تا ویل کا حق ہے (۲)، دیکھیے: " اُکیان" کی اصطلاح۔

9 - سوم: یبان کچھ ایسی تا ویلات بھی ہیں جنہیں بعض فقہاء نے تا ویل قربیب بعض فقہاء نے تا ویل قربیب جنہیں بعض اردیا ہے، لہذا وہ تکم کے استنباط کے لئے دلیل بن سنگئیں، لیکن بعض دوسر سے فقہاء نے آئیس تا ویل بعید قر ار دیا ہے، لہذا وہ دلیل بغیر کھتیں۔ لہذا وہ دلیل بغیر کی صلاحیت نہیں رکھتیں۔

ان کی مثالوں میں سے بیہ کہ اگر کوئی شخص رمضان المبارک کے دن میں جان ہو جھر کھالے یا بیوی سے جماع کر لے تو حضیہ اور مالکید کے نزدیک کفارہ واجب ہوجائے گا، اور شا فعیہ وحنابلد کے نزدیک صرف جماع سے کفارہ واجب ہوگا۔

ای بناپر بیہ کا اگر کسی نے رمضان المبارک کا چالاتنہا ویکھا اوراس کی شہادت روکروگی تو اس پر روزہ رکھنا واجب ہے، لیکن اگر اس نے شہادت روہونے کی وجہ ہے روزہ ندر کھنامباح سمجھا اور الی چیز کے ذریعیدروزہ تو راجس ہوتا ہے تو شانعیہ اور حنابلہ کے نزویک اور مالکیہ کے مشہور قول کے مطابق اس پر کفارہ واجب ہوگا ، کیونکہ اس نے ماہ مبارک کی حرمت کو پامال کیا، اور رہا شہادت کے روہونے کی وجہ ہے مباح سمجھنا تو بینا ویل بعید ہے، شہادت کے ردہونے کی وجہ سے مباح سمجھنا تو بینا ویل بعید ہے، کیونکہ اس نے ملٹہ تھا کی وجہ سے مباح سمجھنا تو بینا ویل بعید ہے، کیونکہ اس نے ملٹہ تھا کی وجہ سے مباح سمجھنا تو بینا ویل بعید ہے، کیونکہ اس فیل کے اس ارشا دی مخالفت کی: "فَمَنْ شَهِدَ کُلُونِکُ اللّٰ مِینَ کُلُونِکُ اللّٰ مِینَ کُلُونُ اللّٰ مِینَ کُلُونِکُ کُلُونِکُ اللّٰ مِینَ کُلُونِکُ کُلُونُ کُلُونِکُ کُلُونِکُ کُلُونِکُ کُلُونِکُ کُلُونِکُ کُلُونُ کُلُونِکُ کُلُونُ کُلُونِک

فروق مسائل میں مختلف ندابب کے درمیان ال ستم کے اختاا فات، بلکہ ایک علی فدیب کے فقہاء کے درمیان بہت پائے جاتے ہیں، مثلاً حضیہ بی فدیب کے فقہاء کے درمیان بہت پائے جاتے ہیں، مثلاً حضیہ بی اور پاگل کے مال میں زکاۃ واجب نہیں کرتے ، ای طرح نماز میں فہقہدلگانے ہے ان کے فرد کیک وضو ٹوٹ جاتا ہے، کیکن ان دونوں مسکوں میں بقید فداہب کا اختلاف ہے۔ معروف بیر ہے کہ مختلف فید کا انکار نہیں کیا جائے گا، جیسا کہ عمروف بیر ہے کہ مختلف فید کا انکار نہیں کیا جائے گا، جیسا ک

⁽۱) عدیث ''یمبدک علی مایصدالک به صاحبک'' کی روایت مسلم (سهر ۱۳۷۳ طبع کمانی) نے کی ہے۔

⁽۲) البدائع سر۲۰، عامية الصاوي على الشرح السفير ۱۸ ر ۷۷ سامنتی الحتاج سر ۷۵ ساء المغنی ۸ ر ۷۷ ک

⁽۱) سورۇپقرەر ۵ ۱۸

⁽۲) حدیث: الصوموا لوفیشه کی روایت بخاری (اللّ ۱۱۹/۳ طبع استانیه)اور سلم (۱۲/۹ ۲۵ طبع کجلس) نے کی ہے۔

⁽۳) - البدائع ۲۲ مرم، الاختيار الر۱۲۹، اشرح اله فير الر ۲۵۰، الدسوقي الر ۵۳۳، الجموع ۲۷ ه ۲۳۳، كثارف القتاع ۲۷۳۳

تابع ،تابوت ،تاریخ ،تاسونیا ء ۱ – ۲

یباں جوبا نیں مجملا بیان کی گئیں ان کی تفصیل کی جگہ '' اصولی ضمیمہ'' ہے۔

تاسوعاء

تعریف:

ا - ناسوعاء: ما وتحرم کی نویں تا رہے ہے (۱) ، اس کی دلیل حدیث سیجے
ہے کہ رسول اللہ علیہ اللہ علیہ ہے کہا گیا کہ یہود ونساری اس دن کی تعظیم کرتے
رکھا، آپ علیہ ہے کہا گیا کہ یہود ونساری اس دن کی تعظیم کرتے
ہیں، نو آپ علیہ نے نر مایا "فیافلا کان العام المقبل اِن شاء
الله صمنا المیوم التاسع" (۲) (جب اگلاسال آے گا تو انتاء اللہ
تم نویں تا رہ کے کو (بھی) روز در تھیں گے)۔

متعلقه الفاظ:

(۱) الممسياح الممير ، لسان العرب مادة "منتع"، روصة الطالبين ۲۲ ۳۸۷، كشاف القتاع عن ستن الاقتاع ۳۳۸ ۱۳ طبع النصر الحديثه، المشرح الكبير ار۱۹۱۸، جومبر لوكليل ار۴ ۱۳

تابع

ر کھنے:''تبعیۃ''۔

تابوت

و یکھئے:''جنائز''۔

تاريخ

و کھنے:''تاکریُ'''۔

 ⁽۲) عدیث: "فإذا كان العام المقبل إن شاء الله صمنا اليوم الناسع....."
 کی روایت مسلم (۹۸/۳ کے طبع عیسی المبا لی الحلی) نے کی ہے۔

⁽۳) حدیث "أمو رسول الله نظی بصوم یوم عاشوراء" کی روایت ترندی (سر ۱۲۸ اطبع مصفی الم الی کملنی)نے کی ہے ورکبا ہے کہ صن سیجے ہے۔

عاشوراء كاروزه متحب إمسنون ب (الحضرت اوقادة عمروى ب كرسول الله عليه على عاشوراء كروزه كرارك مي يوجها كرسول الله عليه على عاشوراء كروزه كرارك مي يوجها كرانو آپ عليه في في المان الكي السنة الماضية والباقية "(المان الكي سال الكي كنابون كونم كرديتا ب)-

اجمالي حكم:

(۱) أمصباح لمعير ، لسان العرب مادة "عشر"، الدرالخنار ۲ م ۸۳، مزيدة المتفيري شرح رياض الصالحين ۲ م ۸۸،۸۸، كشاف القتاع ۲ م ۳۳۸، الجموع شرح لم يرب ۲ م ۳۸، ۱۳ ما شيرقليو لې ۲ م ۳۷، جوم ولاکليل ار ۲ ۱۳، أمغني لا بن قد امه ۳ م ۱۷ هم الحيج الرياض الحد ه

(۳) حدیث: "یکفو السدة الماضیة والباقیة " کی روایت مسلم (۳) مدیث المالی المحلی) نے کی ہے۔

(٣) حديث: "إله في العام المقبل يصوم الناسع....." كَاتْخُرْ يَجُ تَقْرُهُ مُبررًا ا ش كذر چكى ہے۔

(٣) حديث: "صبام يوم عوفة أحسب على الله أن يكفو السعة"
 كي روايت مسلم (٣/ ١٩،٨١٨ طبع عيس البالي أكلس) نے كي ہے۔

ے امید ہے کہ بیم عرفہ کا روزہ اس سے پہلے والے سال اور اس کے بعد والے سال اور اس کے بعد والے سال کے گنا ہوں کومناد سے امید ہے کہ عاشوراء کا روزہ اس سے پہلے سال کے گنا ہوں کومناد سے گا)۔

مسلم کی روایت میں ہے کہ رسول اللہ علی نے ارتا افر مایا:
"فإذا کان العام المقبل إن شاء الله صمنا الیوم التاسع"
(پس جب اگلاسال آئے گاتوہم ان شاء الله صمنا الیوم التاسع"
رفیس گے)۔ حضرت عبد اللہ بن عباس کہتے ہیں کہ اگلاسال آئے کے تعین کے وقات ہوگئ (اکے ایک سال آئے کے تاہوں کومٹانے کے مراد: ایک سال کے گناہوں کومٹانے ہے، اگر صغیرہ نہہوں تو ایک سال کے کیا ہوت فاقت کی جائے گئ وار تیخفیف کی جائے گئ اور تیخفیف اللہ تعالی کے کبائر بھی دیہوں تو ایک سال کے کبائر بھی اور تیخفیف کی جائے گئ اور تیخفیف اللہ تعالی کے نظام موق ف ہے، اور اگر اس کے کبائر بھی نہوں تو اس کے کبائر بھی اور تیخفیف کی جائے گئ اور تیخفیف کی جائے گئ سال کے کبائر بھی اور تیخفیف کی جائے گئ

عطاء سے مروی ہے کہ انہوں نے عبداللہ بن عباس کوعا شوراء کے بارے میں کہتے ہوئے سنا: ''خالفوا الیھود و صوموا التاسع و العاشو'' () ریبود کی مخالفت کرو اور محرم کی نویں اور دسویں دونوں دن کوروز در کھو)۔

سم - علاء نے یوم نا سوعاء کے روزہ کے استحباب کی حکمت میں چند وجہیں ذکر کی ہیں:

اول: ان میں سے ایک بیہ ہے کہ اس سے مرادیہو دکی مخالفت ہے، اس لنے کہ وہ صرف دسویں تاریخ کو روزہ رکھتے تھے، یمی عبداللہ بن عبائ سے مروی ہے، اور امام حمد بن حنبل کی حدیث میں

⁽۱) حديث: "الإذا كان العام المقبل....." كَيْ حُرِّ مَنْ فَعْر هُبرر الله كذر فَكَل بِ

⁽۲) اثر ابن عباس: "خالفوا البهود وصوموا الناسع والعاشو....." كى روايت عبد الرزاق اورئيكي في في موتوفا كى برامستف عبد الرزاق مهر ۲۸۵، المنن الكبري ليميتني مهر ۲۸۵).

تاسوعاء تهم تبختر

جس كاسلسلة سندابن عباس تك جانا هي الله يمن أنبول في ما يا الله على الله عل

دوم: ال کامتصد صوم عاشوراء کو ایک اورروزه کے ساتھ ملانا ہے۔

سوم: دموی تاریخ کے روزہ میں اختیاط مقصود ہے، ال لئے کہ بیاند میشہ ہے کہ خلطی کی وجہ سے چاند کی تاریخ گھٹ جائے اور تعداد کے اعتبار سے نویں تاریخ ہو، کیکن حقیقت میں دسویں تاریخ ہو⁽⁸⁾۔ اسلام میں مزید تفصیل کے لئے "صوم التطوع" کی اصطلاح دیکھی جائے۔



د کیھئے:"افتیال''۔



⁽۱) عدیث: "صوموا یوم عاشو راء و خالفوا البهود و صوموا....." کی روابت احمد(مشد احمد بن عنبل ار ۲۳۱) اور بزارنے کی ہے پیش فی کہتے ہیں ہا۔
اس میں محمد بن اُلی لیکی ہیں جن کے بارے میں کلام ہے (مجمع الروائد سے ۸۸،۵۸۸)۔

مطلب میہونا ہے کہ شی موقوف، خواہ جائد ادم نقولہ ہویا غیر منقولہ، اسے چھ دیا جائے اور بدل کے مال سے سی عین کوٹر میدا جائے تا کہ وہ نر وخت کردہ شی کی جگہ وقف ہوجائے ،یا شی کموقوف کو دوسری شی سے بدل لیا جائے۔

اور حفیہ کے کلام سے معلوم ہوتا ہے کہ بیان تغییر اور بیان تبدیل میں فرق ہے، بیان تغییر مطلق کومقید کرنے اور عام کی شخصیص کرنے کی طرح ہے، یعنی جو تکم کرنے کی طرح ہے، یعنی جو تکم پہلے ٹاہت تفاا سے بعد کے نص سے ختم کردینا ہے (۱)۔

اجمالي حكم:

تبدیل کے چند احکام ہیں، جومقامات کے اختااف سے مختلف ہوتے رہتے ہیں:

۲-وقف میں تبدیلی:

حفیہ نے وقف کرنے والے کو اجازت دی ہے کہ وہ اپنے وقف میں داخل کرنے اور نکا لئے کی شرط لگا سکتا ہے، جیسا کہ متاخرین حفیہ نے اجازت دی ہے، اور بیات ان کی دس شرطوں سے معلوم ہوتی ہے جو بیابی:

اِ عطاء، حرمان، إِ وخال، اخراج ، زیادتی، کمی ، تغییر، ابدال، استبدال، اوربدل یا تباول (۲) بیشا فعید، حنابله اور مالکیه نے اس معاملے میں حنفیہ سے اختااف کیا ہے۔

شا فعیہ نے واقف کی اس شرط کو کہ جب جا ہے رجو ت کرلے یا محروم کردے، یا جب جا ہے حق کو غیر موقو ف علیہ کی طرف پھیر دے،

تبريل

تعریف:

ا - افت میں "تبدیل الشیء" کا مطب: شن کوبرل دیاہے،
اگر چہ اس کابرل نہ لائے، کباجاتا ہے: بدلت الشی تبدیلا، جو
غیرته تغییراً کے معنی میں ہے (یعنی میں نے اس کو متغیر کردیا)۔
تبدیل میں اسل بیہ ہے کہ شن کو اس کی حالت ہے بدل دیا جائے،
اللہ تعالی کا ارشادہے: "یکوم تبکیل الأرض غیر الأرض فیر الأرض والمشملوث" ((اور بیاس روز ہوگا) جس روز کہ زمین بدل کر
ووسری زمین کردی جائے گی اور آسان بھی)۔ زجاج کہتے ہیں کہ
تبدیل کے معنی اور اللہ می زیا وہ جائتا ہے: زمین کے پیاڑوں کو چاہا،
اس کے دریا وَں کو پھاڑا، اور زمین کواس طرح برابر کردیتا ہے کہ اس
میں نہ کوئی کئی وکھائی دے اور نہ ابھار۔ اور تبدیل ساء کا مصلب:
میں نہ کوئی کئی وکھائی دے اور نہ ابھار۔ اور تبدیل ساء کا مصلب:
ستاروں کو بھیریا، آئیس تو ڈپھوڑ و ینا، سورج کو لیپ و ینا، اور چاہدکو

تبدیل کا اصطلاحی معنی اس کے بغوی معنی می کی طرح ہے، ای سے نئے بھی ہے، اور نئے کا مصلب ہے ایک تھم شرق کو بعد کی دلیل شرق سے نئم کر دیا جائے (۳)۔

تبدیل کا لفظ استبدال وقف کے لئے بھی بولا جاتا ہے، اور

⁽۱) - أمغني لا بن قدامه ۱۰۲/۵ طبع الرياض المعده، الشرح الكبيرللد ردير سهر ۸ مر.

 ⁽٢) التلويج على التوضيح ٣/ ١٩،١٨ الطبع مبيح، العريفات للجرجا في ...

⁽۱) سوه کیرانتم ۱۸ س

⁽٢) عنَّا دانسحاحُ، أمصباح لمثير بلسان العرب مادة "أبول".

⁽٣) اتعريفات للجرجاني _

شرط فاسد کہا ہے، البتہ مصلحت کے بقد رتغییر کی اجازت دی ہے⁽¹⁾ کیکن حنابلہ اور مالکیہ نے اس کی اجازت نہیں دی ہے، اس لئے کہ بیہ شرط مقتضائے وقف کے خلاف ہے⁽⁷⁾۔

ال کی تفصیل اصطلاح '' وقف'' کے تحت'' شرط واقف'' میں دیکھی جائے۔

ئىغ مىن تىدىلى:

تبدیلی کی قسموں میں سے نظامی ہے، کیونکہ نظامات مال متقوم کا مال متقوم سے ہدلنا ہے، کیکن اس میں شر انظاشر عید کی رعابیت ضروری ہے، انہیں میں سے میر ہیں:

الف- صرف مين تبديلي:

س- سرف بین جن کی نیج جن شن سے ہوتی ہے، اس بیل الکی و قالیمی و قالیمی کو چاندی کی اللہ و قالیمی کو چاندی کو چاندی کے اس بیل اللہ و قالیمی کو چاندی کی جاند اللہ و قالیمی کو چاندی کی ہے۔ اس سلسلے بیل اصل وہ صدیت ہے جو مشرت عبادہ بن صامت ہے مروی ہے کہ آپ علیج نے فر مایا:
''الله سب بالله ب و الفضة بالفضة والتمر بالتمر والبر بالبر والشعیر بالشعیر والملح بالملح مثلا بمثل یدا بید، فاذا اختلفت هذه الأصناف فبیعوا کیف شئتم إذا

کان بیلا بیلا" (() (ییپوسونے کوسونے کے بدلے، چاندی کو چاندی کے کے بدلے، کان دیک کوئیک کے بدلے، گھرور کو کھبور، گندم کو گندم، جو کوجو، اور نمک کوئیک کے بدلے، برابر برابر، اور نفذ، پس جب جنسین مختلف ہوجا کیں تو جیسے چاہو(کی بیشی کے ساتھ) ییپوجب ک نفذ ہوں)۔

اس کنے کہ وہ دونوں دوجنسیں ہیں، کہند اان میں تفاضل جائز ہوگا جبیہا کہ اگر دونوں کانفع الگ الگ ہوتا۔

ب-عقد میں بتعین ہوجائے کے بعد عوضین میں ہے کسی ایک کی تبدیلی:

ہم - جب عقد کے اندر عوضین میں سے کوئی ایک متعین ہو چکا ہوتو اس کی تبدیلی جائز نہیں ہے، ای میں سے بیچ ہے، اس لئے کہ وہ عقد نچ کے ذر معیمت ہوجاتی ہے (کہذ اس کی تبدیلی جائز نہیں)، لیکن شمن متعین کرنے سے متعین نہیں ہوتا سوائے چند جگہوں کے، جن میں سے صرف اور سلم ہیں، ای طرح ود بعت میں اثمان متعین ہوتے ہیں، کہذ اان کی تبدیلی جائز نہیں۔

اس کی تنصیل اصطلاح ''تعیین'' اور اصطلاح ''صرف'' اور''سلم'' کے تحت دلیکھی جائے۔

دىن مىن تېدىكى:

۵ - اگردین اسال سے غیر اسال کی طرف تبدیلی ہو، جے ارتد او کہاجاتا ہے۔
ہوتوا سے بالا تفاق برقر ارئیس رکھا جائے گا، اور ال پر بہت سے ادکام مرتب ہوتے ہیں، ان کی تفصیل اصطلاح ''ردّت' بین موجود ہے۔
اور اگر دین کی تبدیلی اسلام کے علاوہ کسی ایک دین کو چھوڑ کر اسلام کے علاوہ کسی ایک دین کو چھوڑ کر اسلام کے علاوہ کسی ایک دین کو جھوڑ کر اسلام کے علاوہ کسی دوسرے دین کی طرف ہومثاً انصر انی، یہودی

⁽۱) این طایر پن سهر ۱۳۸۸ س

⁽٢) روصة الطاكبين ٣٩٩/٥_

⁽۳) الانتيارشرح الخيّار ار۳۱۱،۳۱۱ طبع مصطفیٰ لجلنی، المردب فی فقہ الامام التنافعی ار ۲۷۵،۳۷۹، المغنی لا بن قد امد سهر ۱۱،۱۱، ۱۲، جو امر الإنكلیل ۲۷۷اوراس کے بعد کے صفحات ۔

⁽۱) عدید چھرت عبادہ بن صامت کی روایت مسلم (سهر ۱۳۱۱ طبع کملی)نے کی ہے۔

ہوجائے، یا یہودی، نصر انی ہوجائے تو اس کو اس تبدیلی پر برقر ارر کھا جائے گلیانہیں؟ اس میں فقہا وکا اختلاف ہے۔

حفیہ اور مالکیہ کا مذہب، شافعیہ کاغیر ظیر قول اور امام احمد کی ایک روایت میہ ہے کہ وہ حدهر منتقل ہواہے اسے ادھری برقر اررکھا جائے گا، کیونکہ تفرسب کاسب ایک ملت ہے۔

شافعیہ کا اظہر قول اور حنابلہ کا مذہب ہیہ ہے کہ اسے اس پر برقر ارئیس رکھا جائے گا، کیونکہ اس نے اس دین کو باطل قر اردینے کے بعد پھر وہی باطل دین افقیار کرلیا، لبندا اسے اس نئے باطل دین پر برقر ارئیس رکھا جائے گا، جیسے کہ اگر مسلمان مرتد ہوجائے (تو اس برقر ارئیس رکھا جائے گا، جیسے کہ اگر مسلمان مرتد ہوجائے (تو اس برقر ارئیس رکھا جاتا)۔ لبندا اگر ایسا کرنے والی عورت ہوتو وہ کسی مسلمان کے لئے طال نہیں ہوگی، اس بات پر تفریع کرتے ہوئے کہ اس اے (اس نئے دین پر) برقر ارئیس رکھا جائے گا۔

البند ااگر کسی مسلمان کی بیوی بیبودی ہوگئ جب کہ وہ پہلے ہے نصر انی تھی تو وہ مرتدہ کی طرح ہوگی، تو اگر بیبودی یا نصر انی ہونا دخول سے پہلے ہوتو نورائز قت ہوجائے گی، اور دخول کے بعد ہوتو فز قت عدت کے ماہ اور اس عورت ہے سوائے مدت کے ختم ہونے پر موقوف رہے گی، اور اس عورت ہے سوائے اسلام کے کوئی دین قبول نہیں کیا جائے گا، اس لئے کہ اس نے جس دین کو اختیار دین کو چھوڑا ہے اس کے باطل ہونے کا افر ارکیا اور جس دین کو اختیار کیا ہے اس کے باطل ہونے کا افر ارکیا اور جس دین کو اختیار کیا ہے۔

اگرکوئی یہودی یانصر انی، غیر کتابی دین کی طرف منتقل ہوتو اسے
ہرتر ارنہیں رکھا جائے گا، اور تو بہ کے وقت کس دین کی طرف پلننے کا
مطالبہ ہوگا؟ اس سلسلے میں دو اتو ل ہیں: ایک بیا کہ صرف اسلام کی
طرف پلننے کا مطالبہ ہوگا، دومر اقول بیہ ہے کہ دین اسلام کی طرف یا
اس کے دین اول کی طرف۔ اور ایک تیسرے قول میں بیہ ہے کہ
دونوں میں سے کسی ایک کی طرف یا اس کے سابق دین کے مساوی

دین کی طرف، لبذ ااگر کوئی عورت کسی مسلمان کے نکاح بیں رہی ہوتو قبل الدخول نور اجد نئی ہوگی، اور بعد الدخول عدت ختم ہوجائے پر۔ اگر کوئی بت پرست یہودی یا نصر انی ہوجائے تو اسے اس پر برتر ارئیس رکھا جائے گا، اس لئے کہ وہ ایسے دین سے متعل ہوا ہے وہ جس پر برقر ارئیس رکھا جاتا، اور جس دین کی طرف منتقل ہوا ہے وہ باطل ہے، اور باطل افر ارکی اضیات کا فائدہ نہیں دیتا، لبذ ااسلام متعین ہوگیا، جیسے کوئی مسلمان مربد ہوتو اسے اربد اوپر باقی نہیں رکھا جاتا، لبذ ااگروہ انکار کردے تو اسے قل کردیا جائے گا(ا)۔

لعان میں شہادت کی تبدیلی:

۲-اگر دونوں لعان کرنے والوں میں ہے کوئی ایک لفظ "افسهد"کو اقسم یا احلف یا او لی ہے بدل دے تواس کا اعتبار نہیں کیا جائے گا،
اس لئے کہ لعان میں تعلیظ (شدت) کا تصدیموتا ہے اور لفظ شہادت اس میں زیا دہ بلیغ ہے، اور اگر لعنت کے لفظ کوا بعاد ہے بدل دے، یا لفظ لعنت کو غضب ہے بدل دے تو بھی اعتبار نہیں کیا جائے گا، یا عورت لفظ غضب کو "خط" ہے بدل دے یا لفظ غضب کو یا نچویں بار ہے بدل دے یا لفظ غضب کو یا نچویں بار کے عورت لفظ خضب "کولعت ہے بدل دے، یا مر دلفظ" لعنت" کو عورت لفظ" نعضب" کولعت ہے بدل دے، یا مر دلفظ" لعنت" کو یہ بار ہے پہلے میں استعال کرے تو اعتبار نہیں کیا جائے گا، اور اگر یونکہ اس نے منصوص کی مخالفت کی ہے (۱۳)۔

ال سِلْسِلَى مِينَ اللهِ اللهِ تَعَالَى كَا بِيْرِمَانَ ہِے: "وَالَّمْلِيْنَ يَوْمُونَ أَزْوَاجَهُمُ وَلَمُ يَكُنُ لَهُمُ شُهَدَاءُ إِلاَّ أَنْفُسُهُمُ

⁽۱) منهاج فطالبین مع حاشیه قلیو کی سهر ۳۵۳، حاشیه این عابدین سر ۳۸۵، ۵ر ۱۹۰۰ الدسوتی سهر ۸۰ س، امغنی ۲ ر ۵۹۳، ۱۹۳۰

 ⁽۲) كثاف القتاع عن ستن الاقتاع ۵ را ۳۹۳ طبع الصر الحديد، أمغنى
 لا بن قد المد ۲۸۷ س، ۳۳۷ طبع الرياض الحديد.

تبدیل ۷، تبذل ۱

زكاة كى تېدىلى:

2- جمہور کا مذہب بیہ کر زکا ق کی تبدیلی اس طرح پر کہ میں شی

کے بدلے اس کی قیمت دے دی جائے ، جائز نہیں ہے، حنفہ کا
مذہب جواز کا ہے ، اس لئے کہ ان کے نز دیک میں شی دینے ہے اس
کی قیمت دینا افعنل ہے ، اس کی سلت بیہ کہ قیمت سامان کے
مقابلے میں فقیر کی حاجت دور کرنے میں زیادہ مددگارہے ، اس لئے
کہ ہوسکتا ہے کہ وہ مثلاً گندم کا مختاج نہ ہو، کپڑے وفیرہ کا مختاج ہو،
یگنجائش اور فر اوائی کے وقت ہے ، البنة قحط اور شدت کے وقت میں
سامان کا دینائی افعنل ہے (۲)۔

اں کی تفصیل کے لئے اصطلاح" زکاۃ افطر'' کی طرف رجوٹ کیاجائے۔

تبذّل

تعریف:

ا - تبذل کے افت میں کی معانی ہیں: مثالاترک زینت، اور تواضع کی بناپر آچی خوبصورت بایک افتیار نہ کرنا، ای سے حضرت سلمان کی صدیث ہے:"فو آی آم الدرداء متبذلة" (انہوں نے ام الدرداء کو دیکھا بوسیدہ کپڑے بہتے ہوئے)، ایک روایت میں: "مبتذلة" ہے (اک

مبذل اور مبذلة: پرانے کیڑے کو کہتے ہیں، اور متبذل کا معنی ہے: پرانے کیڑے والا، استنقاء والی حدیث میں ہے: سفحوج متبذلا متخصعا "(۲) (رسول الله علی پرانے کیڑے کی ہے متبذلا متخصعا "(۲) (رسول الله علی پرانے کیڑے پہلے ہوئے عاجزی کے ساتھ خطے)، مختار السحاح میں ہے: "المبذلة و المصبذلة " (دونوں میں اول کے سرہ کے ساتھ) جو کیڑے ہوسیدہ کرد یئے جا کمیں۔ابتذال النوب وغیرہ کا مطلب ہوتا ہے: کیڑے کو ہوسیدہ کرا۔ تبذل کا ایک معنی حفاظت کا ترک کردینا بھی ہے۔ ہر (۳)۔

اصطلاح میں تبذل کامعنی ہے: بوسیدہ کیڑے پہننا۔

⁽۱) سورگافوندلاسه

⁽۲) - ابن عابدین ۲/۱ ۷۸ ۵٬۵۸۰ روصه الطالبین ۲/۱ ۳۰۳، ۳۰۳ الشرح الکهیر لاین قدامه سر ۵٬۵۰۵ ۱۳، ۲۵، المغنی لاین قدامه سر ۵٬۵۰۵ ۲۳، ۲۵، ۲۵

⁽۱) عدیث "فو أی أم اللوداء مسللة....." اور ایک روایت ش ہے: "مسللة" کی روایت بخاری نے اپنی سیح (۲۰۹/۸۰ طبع استخب) ش کی ہے۔

⁽۲) عدیث استفاء "فخوج مبللا منخضعا....." کی روایت ترندی (۲/ ۲/ ۵/۳ طبع لجلمی) نے کی ہے اورکبا ہےکہ برصن سی ہے۔

⁽٣) لسان العرب، يختا والصحاح، لمصباح ماده "كبزل" _

بذلة كا مطب ہے: بوسيده، ثياب البذلة: وه كيڑے كہلاتے ہیں جو كام كرتے وقت، اور خدمت (ڈیوٹی) کے وقت پہنے جائیں، اور انسان اسے اپنے گھر میں استعال كرے (۱)۔

اس اعتبار ہے اس کا اصطلاحی معنی اوپر مذکور اس کے لغوی معانی سے الگ نہیں ہے۔

تبذل كااجمالي حكم:

۲-تبذل ترک زینت کے معنی میں ہے، جو بھی واجب ہوتا ہے اور بھی مسنون بھی کر وہ ہوتا ہے اور بھی مسنون بھی کر وہ ہوتا ہے اور بھی مہاح ، اور مہاح بی اصل ہے۔
سا- بیواجب ہوتا ہے سوگ کی حالت میں ، اس کا مصلب بیہ کے وہ عورت جو شوہر کی موت یا طلاق بائن کی وجہہ سے عدت گذار ری ہو وہ ذریت وغیرہ نہ کرے (۲)۔

ال پرعام فقہا عکا اتفاق ہے کہ جس عورت کا شوہر وفات پاچکا موال پرزینت ترک کرنا واجب ہے، اور ال میں اسل اللہ تعالی کا بیہ فر مان ہے: "وَاللَّذِینَ یُتَوَقَّوْنَ مِنْکُمُ وَیَلْدُوْنَ أَزْوَاجًا یُتَوبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَهُ أَشُهُو وَعَشُواً" (اور تم میں ہے جولوگ وفات پاجاتے ہیں اور بیویاں چیورُ جاتے ہیں وہ بیویاں اینے آپ کوچارم بینہ اور دی وان تک روکے رکھیں)۔

اور حضور علی کا بیار شاد ہے ؟ لا یحل لا مرآة تؤمن بالله و المیوم الآخر آن تحد علی میت فوق ثلاث إلا علی زوج أربعة أشهر و عشرا " (سمي عورت كے لئے جو الله اور يوم آخرت برائيان ركھتی ہو، طال نہيں كہ وہ سى مرنے والے برتین دن آخرت برائيان ركھتی ہو، طال نہيں كہ وہ سى مرنے والے برتین دن

ے زیادہ سوگ منائے ، سوائے شوہر کے کہ اس کے لئے جار ماہ دیں دن سوگ منانا ہے)۔

سوگ منانا یہ ہے کہ زینت، خوشہو، زیور پہنے، نگین اور تش اور تش کے لئے استعال کرنے سے اجتناب کرے، ای طرح سرمہ، تیل اور ہر اس چیز کے استعال سے پہیز کرے استعال سے پہیز کرے استعال سے پہیز کرے جس کی وجہ سے زینت افتیار کرنے والی مجھی جائے، الا بیک ضرورت اس کی وائی ہو، تو اس وقت ضرورت کے بقدر استعال کر کئی ہے، مثالاً آشوب چشم کی وجہ سے سرمہ کا استعال کہ رات میں لگانے کی اجازت ہے، دن میں ہو نچھودے، اس لئے کہ ابود او و نے روایت کی ہوئے تھیں اور اپنی آئے، وہ اوسلم ٹاک ہوئے تھیں اور اپنی آئے میں صبر (ایلوا) لگائے ہوئے تھیں، تو رسول اللہ علی تھیں اور اپنی آئے میں صبر (ایلوا) لگائے ہوئے تھیں، تو رسول اللہ علی تی چھان اے ام سلمہ اید کیا ہے؟ جواب دیا: اے اس سلمہ اید کیا ہے؟ جواب دیا: اے اس سلمہ اید کیا ہے؟ جواب دیا: اے مسلم اید کیا ہوئے تھیں۔ فرایا: "اِنہ یشب الوجہ ، فلا تجعلیہ الا باللیل و تنزعینہ فرایا: "اِنہ یشب الوجہ ، فلا تجعلیہ الا باللیل و تنزعینہ بالنہار "(اکر یہ چرہ کو تھا دیتا ہے، اہذا اے صرف رات میں سائلہار کرواوردن میں صاف کردو)۔

حضرت ام عطيمٌ نبى عليه عليه عليه عليه المسلم عطيمٌ نبى عليه الله على الله على الله على أو ج "كنا ننهى أن نحد على ميت فوق ثلاث، إلا على زوج أربعة أشهر وعشرا، ولا نكتحل ولا نتطيب ولا نلبس

⁽۱) مشهاع الطالبين الر ۱۵س

⁽۲) رواکتاری الدرالخار ۱۱۲/۳ س

⁽۳) سور کایفره از ۱۳۳۳

⁽٣) عديك: "لا يحل لامرأة تؤمن بالله والبوم الآخر أن تحد على

مبت فوق ثلاث....." کی روایت بخاری (فنح الباری سر۱۳۱ طبع السخیه) ورسلم (۱۲ س۱۱ طبع عیمی البالی لجلمی) نے کی ہے۔

⁽۱) عدیث: "إله یشب الوجه، فلا تجعله إلا باللبل وتنوعیه بالسهار" کی روایت ابوداؤد (۲۸ ۵۲۵ ۲۳۸ طبع عزت عبیر دماس) ورنمائی (۲۰ ۳۰۳ طبع المطبعة التجاریه) نے کی ہے حافظ ابن مجر نے نتخیص آئیر (۳۸ ۳۳۳ طبع المطبعة العربیه) میں کہا ہے کہ عبدالحق ور منذری نے مغیرہ وران کے ویر کے روی کے مجول ہونے کی وجہ سے اس عدیث کو مطلق ادوا ہے۔

ٹوبا مصبوغا إلا ٹوب عصب، وقد رخص لنا عند الطهر افا اغتسلت إحدانا من محيضها في نبذة من كست اظفار" () (تم لوكوں كومنع كياجا تا تھا ككى مرده پر تين دن سے اظفار " () (تم لوكوں كومنع كياجا تا تھا ككى مرده پر تين دن سے زياده سوگ كري، سوائے شوہر كرك ال پر چارماه دى دن سوگ كرتا ہوا كير اپنيل مرعصب كا ہے، نہرمہ لگا ئيل اور نہ خوشبو، اور نہ رنگا ہوا كير اپنيل مرعصت دى گئ كير ال ايك شم كى يمنى چادر)، اور طبر كے وقت جميں رخصت دى گئ كر جب تم يل سے كوئى عورت اپنے حيض سے شمل كر بے تو كر جب تم يل سے كوئى عورت اپنے حيض سے شمل كر بے تو اكلفار (ايك شم كى خوشبو) اور كست (ايك شم كى خوشبو) كا كچھ استعال كر ہے۔

حنفیہ کے نزدیک مطلقۂ بائنہ متونی عنہا زوجہا کی طرح ہے، البند الل پر ان تمام چیزوں سے بچنا لازم ہے جن سے سوگ والی عورت بچتی ہے، بیاس لئے تا کرفعت نکاح کے نوت ہونے پر اظہار فسوس ہوسکے (۲)۔

"نفصیل کے لئے دیکھئے:اصطلاح" اِعداد"۔

استنقاء میں تبذل مسنون ہے، استنقاء: ضرورت کے وقت بندوں کا دللہ سے پانی مانگنا ہے، اس کے لئے صحرا کی طرف نگلتے ہیں، معمولی تشم کا کیڑا ہے ہوئے، خشوع وخضوع کی حالت میں، گرید وزاری کرتے ہوئے، ڈرتے ہوئے، اپنے سروں کو جھکا ئے ہوئے،

زینت افتیار کرنا بالاتفاق مسنون ہے، لبند آسل کرے اور اپناسب
سے اچھا کیٹر اپنے، نیا ہوتو زیا وہ بہتر ہے، اور ان میں بھی سفید ہوتو اور
اچھا ہے، اور خوشبولگائے، اس سلسلے میں بہت کی احادیث وارد ہیں،
جن میں سے ایک حدیث یہ ہے: "من اغتسل یوم الجمعة
ولیس من أحسن ثیابه و مس من طیب اِن کان عنده، ثم
آتی الجمعة، فلم یتخط أعناق الناس، ثم صلی ماکتب
له، ثم أنصت إذا خوج إمامه حتى یفوغ من صلاقه،

کیونکہ یہ حالت قبولیت دعا کے زیادہ قریب ہے، پھر دورکعت نماز

حضرت ابن عباسٌ كہتے ہيں: "خوج رسول الله ﷺ

للاستسقاء متبذلا متواضعا متخشعا متضوعا حتى أتى

المصلی"(۲) (رسول الله علیه استنقاء کے لئے نکلے بوسیدہ

کپڑے پہنے ہوئے ،تواضع کے ساتھ ، ڈرتے ہوئے ، عاجزی ظاہر

"تفصیل کے لئے دیکھئے:اصطلاح ''استیقاء''^(۳)۔

۵ - جمعه اورعیدین میں تبذل مکروہ ہے، ہی لئے کہ ان دنوں میں

یرا ہے ہیں اور کثرت سے دعا واستغفار کرتے ہیں ⁽¹⁾۔

کرتے ہوئے، یہاں تک کرعیدگاہ آئے)۔

كانت كفارة لما بينها و بين جمعته التي قبلها" (جم

نے جمعہ کے دن عسل کیا اورا پناسب سے احیا کیڑا بہنا، اگر اس کے

⁽۱) حاشیه قلبولی علی منهاج فطالبین ار۱۳۱۳،۵۱۳، حاشیه این عابدین ار۱۷۲،۵۲۹

 ⁽۲) حدیث مشرت ابن عبائ "خوج رسول الله نظی للاستسقاء منبللا....." کی تخ نقره نجر/ اش کذره کی ہے۔

⁽۳) - ابن عابدين الر ۵۶۱، ۵۷۷، لم يُدب في فقه الإمام الثنافعي الراسا، ۱۳۳، لشرح الكبيرالر ۴۰ م، أمغني لابن قد امه ۲۴ ۳۳۰ طبع الرياض الحديث .

 ⁽٣) عديث: "من اغتسل يوم الجمعة ولبس من أحسن ثيابه ومس من طبب كل روايت الإداؤد (١/ ٢٣٣ طبع عرث عبيدها س) ني كل حيث طبعة العربي) شما كل حيث طافة ابن حجر في تتخيص أخير (١٩/٣ طبع المطبعة العربير) ش كبا

⁽۱) عدیرے عشرت اُ معطیرہ "کلا اللہی اُن الحد....." کی روایت بخاری (۱/۹۱ ساطیع استانیہ) نے کی ہے۔

⁽۲) الانتيار شرح الختار ۱۳۳۲ فيع مصطفی المحلنی الاسهياء اين عابدين عابدين الانتيار شرح الختار ۱۳۳۲ المريرب فی فقه الا مام الثافعی ۱۳ د ۱۵، عاممية المجلل علی شرح المبيع ۱۳ د ۱۹۸۵ المريرب المبيع ۱۳ د ۱۹۸۵ المشرح الكبير ۱۳۸۵ ۱۸ مرد ۱۳۸۵ المشرح الكبير ۱۳۸۵ ۱۸ مرد المبيل المرح دليل الطالب ۱۲ د ۱۸ مطبع الفلاح، مناد السبيل فی شرح الدليل بشرح دليل الطالب ۱۲ د ۱۸ مطبع الفلاح، مناد السبيل فی شرح الدليل ۱۳۸۵ مرد ۱۸ مرد از ۱۸ مرد ۱۸ مرد از ۱۸ مرد ۱۸ مرد ۱۸ مرد ۱۸ مرد ۱۸ مرد ۱۸ مرد از ۱۸ مرد از ۱۸ مرد از ۱۸ مرد ۱۸ مرد از ۱

پاس خوشہو ہے تو خوشہو لگائی، پھر جمعہ میں آیا اور لوگوں کی گر دنیں نہیں کھا۔ کھا۔ کھا۔ کھا تہر نماز پڑھی جو اس کے لئے لکھی تھی، پھر جب امام خطبہ کے لئے اکا اتو خاموش رہا یہاں تک کہ اپنی نماز سے فارغ ہوگیا، تو یہ نماز اس جمعہ اور اس سے پہلے والے جمعہ کے درمیان جو گناہ ہوئے ان کے لئے کفارہ ہوگئی)۔ دومری صدیث حضرت عبداللہ بن ساائم ان کے لئے کفارہ ہوگئی)۔ دومری صدیث حضرت عبداللہ بن ساائم سے مروی ہے کہ انہوں نے رسول اللہ علی تحدید کے دن فریا ہو جمعت ہوئے سا: "ما علی آحد کم لو اشتری ٹوبین لیوم جمعته ہوئے سا: "ما علی آحد کم لو اشتری ٹوبین لیوم جمعته سوی ٹوبی مھنته" (ا) (اگرتم میں سے کوئی دو کیڑے سان ہوئی اس کے ملاوہ ہوں تو اس پرکوئی سے حرج نہیں ہے ۔

سیمردوں کے انتہار سے ہے، کیکن اگر عورتیں جمعہ اور عیدین میں آنا چاہیں تو پائی سے صفائی حاصل کریں، خوشیو نہ لگا کمیں، اور ایسا کیٹر انہ پہنیں جس سے ان کا چر چاہو، اس لئے کہ رسول اللہ علیہ فریاتے ہیں: ''لا قسمعنوا اِماء الله مساجد الله، ولیہ خوجن تفالات " (اللہ کی بندیوں) کو مجد میں آنے سے نہ روکو اور چاہیے کہ وہ بغیر خوشیو کے لگیں)، اس لئے کہ جب وہ خوشیو لگا کمیں گی تو یہ چیز فتنہ ونساد کا خوشیو لگا کمیں گی اور شہرت کا لباس پہنیں گی تو یہ چیز فتنہ ونساد کا باعث ہوگی ۔ بہر حال ان احادیث سے پید چا کہ جمعہ اور عیدین

میں مردوں کے لئے تبذل مکروہ ہے ، ہی کے برعکس عورتوں کے لئے متحب ہے ⁽¹⁾۔

د کیجئے:''جمعہ'' اور''عیدین'' کی اصطلاحات۔ لوگوں کی محفلوں اور ونو دکی ملا قات میں بھی گھٹیا کپڑا پہننا مکروہ ہے۔

ا کی تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح '' تزین''۔

عورت کا شوہر کے لئے اور شوہر کا بیوی کے لئے تبذل اختیار کرنا کروہ ہے، اس لئے کہ عام فقہاء کے نزویک ان میں سے ہر ایک کے لئے مستحب ہے کہ ایک دوسر ہے کے لئے زینت اختیار کریں، اس لئے کہ ارثا وہاری ہے: "و کا شو و و اُلَّا مَا مُو وُ اُلَّانَّ مُو وُ وُ اِلْمُعُو وُ وُ اِلْمَا مُو وَ اِللَّهُ مُو وُ وَ اِللَّهِ مُو اِللَّهُ مُو وُ وَ اِللَّهُ مُو وَ اِللَّهُ مُو وَ وَ اِللَّهُ مُو وَ اِللَّهُ مُو وَ اِللَّهُ مُو وَ وَ اِللَّهُ مُو وَ وَ اِللَّهُ مُو وَ وَ اِللَّهُ مُو وَ اِللَّهُ مُو وَ وَ اِللَّهُ مُو وَ اللَّهُ مُو وَ وَ اللَّهُ مُو وَ وَ اللَّهُ مُو وَ وَ اللَّهُ مُو وَ اللَّهُ مُنَا اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُلِي اللَّهُ مُو وَ اِللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنَا اللَّهُ مُو وَ اللَّهُ مُنْ مُو مُنْ اللَّهُ مُو وَ اللَّهُ مُو وَ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّ

⁼ ہے کہ اس کامدار ابن امواق پر ہے۔ ابن حبان اور حاکم کی روایت میں لفظ ''حدُث' کے ذرایعہ حدیث بیان کی گئی ہے۔

⁽۱) حدیث حضرت عبدالله بن ملام "ما علی أحد کم لو اشنوی توبین....." کی دوایت این ماجه (۱۸ ۳۸۸ طبع عیمی البالی الحلمی) نے کی ہے بوجر کی نے اثروالکہ ش کہاہے کہ اس کی مندیج ہے وراس کے دجال آفتہ ہیں۔

⁽۲) عدیث "لا نمنعوا إماء الله مساجد الله کی روایت ابوداؤد (۱۱ مرام طبع عزت عبید دهاس) نے کی ہے، ٹووی نے الجموع (۱۲ مرام مرام الطبع ادارة الطباطة المعربی) میں کہا ہے کہ اس کی سند بخاری اور سلم کی شرط کے مطابق صبح ہے۔

⁽۲) سور کانیا ۱۹۸۶

⁽٣) سورۇپقرە/ ١٩٧٨_

کرے۔ ابوزید کہتے ہیں: عورتوں کے معالمے میں اللہ سے ڈرو، جیسا کہ ان پر لازم ہے کہ وہ تمہارے معالمے میں اللہ سے ڈریں، حضرت ابن عبائ فریا۔ تے ہیں: "انی لأحب أن أتنزین للموأة كما أحب أن تتنزین للی، لأن الله تعالمی یقول: "ولهن مثل الله ي عليهن بالمعروف" (میں اس بات کولیند کرتا ہوں کہ دیوی کے لئے زینت افتیار کروں، جیسے میں بیاند کرتا ہوں کہ دیوی میرے لئے زینت افتیار کرے، اس لئے کہ اللہ تعالی را ماتا ہوں کہ جوی میرے کے اللہ تعالی دستور میں اس کے کہ اللہ تعالی را ماتا ہوں کہ شری میں کے اللہ تعالی فر ماتا ہوں کہ عبورتوں کا بھی حق ہے جیسا کے ورتوں پرحق ہے موافق دستور ہے: اور کو رتوں کا بھی حق ہے جیسا کے ورتوں پرحق ہے موافق دستور شری کے)۔

امام محد بن الحن بہتر ین لباس پہنتے تھے اور کہتے تھے: "میری بویاں اور بائدیاں ہیں، میں اپنے آپ کو ان کے لئے مزین کرتا ہوں تا کہ وہ میر ہے علا وہ کسی اور کی طرف ندد یکھیں "۔ امام او یوسف نے فر مایا کر" بھے یہ بات اچھی لگتی ہے کہ میری بیوی میرے لئے زینت افتیار کرے ، ای طرح اسے اچھا لگتا ہے کہ میں اس کے لئے زینت افتیا رکر وں "(ا)۔

تنصيل کے لئے و کھئے:اصطلاح" زینت''۔

ائی طرح سوائے نماز استنقاء کے جس کا بیان گزرا، نماز میں تبذل مکروہ ہے، خواہ نماز پڑھنے والا تنہا ہو، یا جماعت کے ساتھ پڑھ رہا ہو، امام ہویا مقتذی، مثلاً وہ ایسالباس پہنے جس سے اسے عیب لگایا

جائے (یعنی تقیروذ **لیل سمج**ھاجائے)⁽¹⁾۔

کیونکہ نماز کا ارادہ کرنے والا اپنے آپ کو اپنے رب سے سرکونی کے لئے تیار کرتا ہے، لہذ استحب بیہ ہے کہ وہ اپنے کا اللہ تعالی فر ماتا ہے: "یا بینی بہتر لباس میں ملبوس ہو، اس لئے کہ اللہ تعالی فر ماتا ہے: "یا بینی آدم خُدُو ا ذِیْنَتکُم عِنْدُ کُلِّ مَسْجِدِ" (۲) (اے اولا د آ دم ہر نماز کے وقت اپنالباس پہن لیا کرو)، اس آیت کا فر ول اگر چہ ان لوگوں کے لئے ہوا تھا جو فانہ کوبہ کا نظے طواف کرتے تھے مگر انتہار عموم لفظ کا ہوتا ہے نہ کہ خصوص سبب کا (اس لئے بیآ بیت ہر انتہار عموم لفظ کا ہوتا ہے نہ کہ خصوص سبب کا (اس لئے بیآ بیت ہر مناز پر صنے والے پر صاوت آئے گی)، اس سے مراد ایسالباس ہے مفاز پر صنے والے پر صاوت آئے گی)، اس سے مراد ایسالباس ہے جو نماز کے وقت ستر کو چھپائے، جس سے اندر کی کھال دکھائی نہ جو نماز میں ظلل نہ ڈالے، مرد وعورت اس میں ہراہر وے، اور جو نماز میں ظلل نہ ڈالے، مرد وعورت اس میں ہراہر وے، اور جو نماز میں طلل نہ ڈالے، مرد وعورت اس میں ہراہر وہی۔

۔ ندگورہ مقامات کے علاوہ میں تبدل مباح ہے، جیسے کوئی شخص اینے کام کے دوران یا ہے خصوصی احول میں گھٹیا کیڑا ہے۔

ک - رہا وہ تبذل جوعیب کی چیز وں سے نہ بیخ کے معنی میں ہے تو وہ شرعا مذموم ہے، اس لئے کہ وہ مروت میں خلل ڈاتیا ہے، اور اس لئے کہ اور اس لئے کہ اور اس لئے کہ اور اس لئے کہ اور اس میں خلل ڈاتیا ہے، اور اس لئے کہ اس کا نتیجہ بیہوتا ہے کہ شہادت قبول نہیں کی جاتی ہے، اور اگر تبذل گنا ہوں سے نہ بیخ کے لئے ہوتو حرام ہے۔ اس کی تفصیل تبذل گنا ہوں سے نہ بی ہے۔

⁽۱) فتح القدير سهر ۲۰۰ دار صادر، ابن عابد بن ۱۸ س۱ ۱۸۳۰، ۱۵۳۵ الطالبين سهر ۱۸۸، ۱۸۸۵، ۱۳۵۹، ۱۲۵۱، ۱۳۵۸، ۱۸۸۵، روحة الطالبين ۲۸ سام ۱۸۸، ۱۸۸۰، ۱۸۸۰، روحة الطالبين ۲۸ سام ۱۳۵۱، ۱۸۸، ۱۸۸، حاصية الجسل على شرح المر ۱۸۸، ۱۸۸، حاصية الجسل على شرح المر ۲۸ سام ۱۸۸، ۱۸ سام ۱۳۵۱، ۱۸ سام ۱۳۵۲، ۱۸ سام ۱۳۵۲، ۱۸ سام ۱۳۸۸، ۱۸۸ طبع التسر ۱۸ سام ۱۸ سام

⁽۱) الجامع لاحطام القرآن للقرطبي 2 ر ۹۵ ا، عدد انكشاف القتاع عن تتن الاقتاع الرام على المقرآن الاقتاع المرابعة المعراليدينة -

⁽۲) سورهٔ همرافسه اس

⁽٣) المبرد ب في فقه الإمام الثنافعي الرائه، نهايية المحتماع ٢٨ ٥، قليو في وممير هار ٢ كا، كشاف القناع عن تتن الاقتاع الرسلام، ٢٢ ٢٨ طبع النصر الحديث .

تنبر

تعریف:

ا - تبرلغت میں کمل سونے کو کہتے ہیں۔

این الاعرابی کہتے ہیں: تغر: ڈھالے جانے سے پہلے سونا اور چاندی کے نکرے کو کہتے ہیں، اور جب ڈھال دیا جائے تو وہ ڈھب (سونا) اور فضنہ (چاندی) کہلائیں گے۔

جوہری کہتے ہیں: تنمر: وہ سونا ہے جے ڈھالانہ گیا ہو، اور اگر ڈھال کر دینار بنالیا جائے تو یہ مین کہلائے گا، اور تغرصر ف سونے کے لئے بولا جاتا ہے بعض حضرات چاندی کے لئے بھی تغربو لتے ہیں (۱)۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ تغرسونا اور چاندی کے علاوہ کے لئے بھی بولا جاتا ہے، جیسے تا نبا، لو با، رانگا۔

تنر اصطلاح میں: ڈھالے جانے سے پہلے ہونے اور جاندی کا نام ہے، یاصرف سونے کا (۲) کہلین یہاں مر ادعام ہے۔

> تبریه متعلق احکام: تبرمین ربا:

٢ - علاء كا اتفاق ب كرسون كى في سون سے اور جاندى كى في

تبذبر

ديكھيئے:''إسراف''۔



⁽¹⁾ لسان العرب الحيط، المصباح لممير ماده "تمر"

⁽۲) حاشيه ابن هايدين سهر ۱۰سه، جو آمر الإكليل سهر ۱۷۱ حاشيه قليو لي على شرح الممهاع ۱۵۲س

چاندی ہے برابر برابر نقدا جاز ہے، اس لئے کہ امام ما لک حضرت ما فع ہے اور وہ حضرت اوسعیر خدری ہے دوایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ علیہ اللہ علیہ باللہ علیہ اللہ علیہ اللہ علیہ باللہ علیہ بعض، و لا تبیعوا الفضہ باللہ علیہ بعض، و لا تبیعوا الفضہ باللہ علیہ بعض، و لا تبیعوا الفضہ ولا تبیعوا منها شیئا غائبا بناجز ''(۱) (مت فر وخت کروسونے ولا تبیعوا منها شیئا غائبا بناجز ''(۱) (مت فر وخت کروسونے کوسونے ہے مگر برابر سرابر اور بعض کو بعض ہے بڑھاؤ نہیں، اور مت فر وخت کرو و پائدی کو چائدی ہے اور بعض کو بعض ہے بڑھاؤ نہیں، وومث لا بید، والفضہ باللہ عب اللہ بید، والفضہ باللہ عب اللہ بید، والفضہ باللہ عن وزنا بوزن، مثلا بیمثل، یہا بید، والفضہ بالفضہ وزنا بوزن، مثلا بیمثل، فیمن زاد آو استواد فہو رہا''(۲) (نیچوسوٹا سونے کے بدلے فیمن زاد آو استواد فہو رہا''(۲) (نیچوسوٹا سونے کے بدلے کے ماتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی چائدی کے بدلے بدلے کیاں وزن کے ساتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی چائدی کے بدلے بدلے کیاں وزن کے ساتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی چائدی کے بدلے بدلے کیاں وزن کے ساتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی چائدی کے باتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی وزیادہ کرے یا زیادہ بید لیک کیاں وزن کے ساتھ، برابر برابر اور نقد، اور چائدی کے باتھ وربا ہے)۔

ائ طرح علاء كاس پر اجماع به و يقط بو عن وصالح بو على المحارج على المحارج المحارج بالمحارج المحارج الم

(۱) عديث: "لا بيعوا اللهب باللهب إلا مثلا بمثل..... "كل روايت بخارى (فتح الباري ١٣٨٠ هيع الشقير) اورمسلم (١٣٠٨ هيع للحلق) نے كى ہے۔

فمن ذاد أو اذداد فقد أربی" (۱) (ییوسوا سونے ہے، اس کاتمر ہویا اس کا عین، اور جاندی جاندی ہے اس کا تمرہویا اس کا عین، اور گندم، گندم سے ایک پیاند ایک پیاند کے ہراہر، اور جو، جو ہے پیاند پیاند کے ہراہر، اور کھجور، کھجور ہے، پیاند پیاند کے ہراہر، پس جوزیا دہ دےیا زیادہ مائے تواں نے سودلیا)۔

سونے کی نیچ جاندی ہے جبکہ جاندی زیادہ ہواگر نفتہ ہوتو کوئی حرج نہیں، کیکن اگر ادمعار ہوتو جائز نہیں، ای طرح گیہوں کی نیچ جو سے جب کہ جوزیا وہ ہواگر نفتہ ہوتو کوئی حرج نہیں اور اگر ادمعار ہوتو حائز نہیں۔

ال لنظ كراس سلسل كى وارداحا ديث ميس عموم ب (٢)_

سونے اور جیا ندی کے نہ ڈیھلے ہوئے نکڑے میں زکا ق: سا - سونا اور جاندی اگر چہ نقود (ڈیھلے ہوئے درہم ودینار) کی شکل میں ہوں یا تیم (ڈلا) کی شکل میں ہوں ان میں زکا ق ہے، جبکہ وہ نساب کو پہنچ جا کیں اور ان پرسال گزرجائے (^{m)}۔ دیکھئے: اصطلاح " زکا ق: زکا ق الذہب و الفصة"۔

شركت مين " تنبر" كوراس المال بنانا:

مهم - اگرلوگ" تیر" ہے معاملہ کرتے ہوں یعنی اسے بطور ثمن استعال کرتے ہوں نوشر کت مفاوضہ میں "تیر" کوراس المال بنایا جائز ہوگا،

⁽٣) عديث: "اللهب باللهب وزناً بوزن، ومثلاً بمثل، يداً بيد، والفضة....." كي روايت ملم (١٣١٣/٣ الحيالي) في يهد

⁽۱) حدیث: "الملعب باللهب دیوها و عبیها....." کی روایت ایوداؤد (۱۳ ۲، ۲۳۳ ۴ هیم عزت عبید دهاس) نے کی ہے اس کی اس سیح مسلم (۱۳۱۰ اطبع کجلس) میں ہے۔

⁽۲) الاختيار ۳۹/۳ طبع دار أمر فَ، بدلية الجهجد ۱۳۸/۳، ۱۳۹، شرح روض الطالب ۲۲ ۱۳۳، طبع الرياض، أمغني لا بن قدامه مهر ۱۰، ۱۱ طبع الرياض.

⁽۳) فتح الباری سهر ۲۱۰، نیز دیکھئے تقییر القرطبی، اعلم کی، احکام القرآن للجساص، ساری تغییر بی سور و توبه کی آیات ۳۳ اور ۳۵ کے تحت۔

تبر۵-۲،۶۶ وَ

توالسے تیر ہے معاملہ کرنے کوؤیفلے ہوئے کے درجیمیں مانا جائے گا اور تغیر شمن شار ہوگا اور راس المال بنے کے لائق ہوجائے گا، یہ بعض فقہائے حفہ کے فزویک ہے ⁽¹⁾۔

> "الجامع السغير" بين ب: سوما يا حائدي كم مثقال ع شركت مفاوضہ بیں ہونکتی، اور مثقال ہے مراد تیر ہے، اس روایت کی بنیا دیر "تر" كى هييت ايسے سامان كى ہے جومتعين كرنے سے متعين ہوجا تا ہے، کہذ امضار بت اورشر کت میں راس المال نہیں بن سکتا، اور ای کے مثل ثا فعیہ کے فز دیک بھی ہے ^(۴)۔

مالكيه كتب بين: تنمر (بغير ويفلي بوئ)اورمسكوك (ويفلي ہوئے)اگر چہدونوں مقدار میں ہراہر ہوں ان سے شرکت جائز نہیں اگر ڈیفلے ہوئے کی اہمیت زیا دہ ہو،کیکن اگر'' تیم'' کی عمدگی مسکوک (ڈیفلے ہوئے) کے ہراہر ہوتو اس سلسلہ میں مالکیہ کے دواقو ال ہیں جیباک" الثامل"میں ہے^(m)۔

تبرجوز مین ہے نگالا گیاہو:

۵- زمین سے نکالے ہوئے'' تیر'' میں بعض ملاء کے نز دیکے ٹمس ہے، اس کئے کہ رسول اللہ علیہ کا ارشاد ہے:''فعی المو کا ز المخمس" (س) (رکاز مین شمس ہے)۔ دوسر سے علماء کہتے ہیں کہ اس میں جالیہواں حصہ ہے (^{۵)}۔ (دیکھئے: ''رکاز'' کی اصطلاح)۔

- (۱) البدار سهر ۲۰۱۳ بنا کع کرده امکنت لاسلامیپ
- (۲) تشمله فتح القدير ۲/۹ ۳۷ طبع دارصادر، حاشيه ابن عابدين سهر ۱۰ساء شرح المنهاج ١٨٣٣ هـ
 - (m) شرح الزرقا في ۲۸ ۲ ۲ طبع دارالفكر.
- (٣) عديث "في الوكاز الخمس...." كي روايت يخاري (فتح الباري) سر ۱۲۳ طبع المنظيه) اورسلم (سر ۱۳۳۵ طبع الحلق) نے کی ہے۔
- (۵) حاشيه ابن عابدين ۲۲، ۳۲، جوابر لاكليل ار ۱۳۷، شرح الردقاني ٣/ ١٦٩ ، ١ كما طبع دار الفكر، تثرح أمهاج مع حاشية قليولي ٣ ١، ٣ ٥ ، تيل

بحث کے مقامات:

٢ - فقهاء نے تیر کے احکام کو''رہا، صرف بشر کت، زکاۃ، ﷺ، مضاربت، رکاز اور کنز" کے تحت تفصیل سے بیان کیا ہے۔

د کھنے:"براءت"۔



لأوطار سهر ۲۷۱، ۸ ۱۲۰، مغنی لا بن قدامه سهر ۱۸، ۳۳۰

اور وہ اللہ تعالی کے قول: ''وَلاَ تَبَوَّجُنَ تَبَوَّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الأَوْلَى'' ^(۲) (اور قد يم زمانهُ جابليت کے دستور کے موافق مت

الأولى" (٢) (اورقد يم زمانه كالميت كه دستور كموافق مت اللأولى" (١) كانفيه بين لرمانه كالمين كالمرح كالمقتلة الله جيز كوظاهر كرما

بعیدہے، تغرب کی اصل: آنکھوں کے لئے ظاہر ہونا ہے⁽¹⁾۔

ہے جس کا چھپانا بہتر ہو۔

کبا جاتا ہے کہ حضرت نوح اور حضرت ابر اہیم میہا السلام کے در میانی عہد میں عورت موتیوں کی قمیص پہنتی تھی جس کے دونوں اطراف بغیر کلے ہوتے تھے، اوروہ باریک کپڑے پہنتی تھی جو اس کے ہدن کوئیس چھیاتا تھا (۳)۔

متعلقه الفاظ:

رزین:

۲-تزین کامعنی ہے: زینت افتیار کرنا، اورزینت یہ ہے کہ خوبصورت وکھائی وینے کی فاطر زیورات وغیر دکا استعال کیا جائے۔
ای سے اللہ تعالی کا بیقول ہے: "حَتَّی إِذَا أَحَدَّتِ الْأَرْضُ رُخُوفَهَا وَازْیَّنَتُ" (م) (یباں تک کہ جب زمین (پوری طرح) اپنی رونق پر پینی اور اس کی زیبائش ہوگئی) یعنی اچھی ہوگئی اور بیداوار کے ذر معید ہارونق ہوگئی۔

اورتغرج بیہ ہے کہ زینت کا اظہار ال شخص کے لئے ہوجس کے

تبرج

تعریف:

ا - تیرج لفت میں تبوَّج کا مصدر ہے، کہا جاتا ہے: تبوجت المعواقة: جبعورت مردوں کے لئے اپنے محاس ظام کرے۔

صدیث میں ہے: "کان بکرہ عشو خلال، منها:
التبوج بالزینة لغیو محله" (۱) (آپ علی تالیق دل عادتیں بالپند

کرتے تھے، ان میں ہے ایک فیم کل میں زینت کوظاہر کرتا ہے)۔
تغری : اجنبی مردوں کے لئے زینت کوظاہر کرتا ہے اور بیندموم ہے،
کین شوہر کے لئے ہوتو ندموم نہیں ہے، رسول اللہ علی ہے تول
النعیو محلها" کا بہی مطلب ہے (۲)۔

تنرخ کامعنی شرق کھی اس مفہوم سے خارج نہیں ہے۔ فرطبی اللہ تعالی کے قول: ''غَیْرَ مُتبکر جَاتِ بِزِیْنَةِ ''('') (یشرطیکہ زینت کو دکھا!نے والیاں نہ ہوں) کی تفییر میں لکھتے ہیں کہ زینت کا اظہار کرنے والی اور نمایاں کرنے والی نہ ہوں کہ ان کی طرف نظر کی جائے، کیونکہ بیسب سے فتیج چیز ہے اور حق سے بہت

⁽۱) الجامع لأحقام القرآن للغرطبي ۱۲ مر ۳۰ من نيز ديكھئة ابن عابدين ۵ مر ۳۳ مارد تحمله فتح القديم ۸ مر ۲۰ من ۲۵ من ۷۰ من قليو لي سهر ۲۰۸ ، ۲۰۱۰، کشاف القتاع عن ستن الاقتاع الر ۲۵ م ۵ مراه اسالاً نع كرده مكاتبة النصر الحديد، الأداب المشرعيد والمئح المرعيد سهر ۹۰ من المغنى لا بن قد امد ۲ مر ۵۵۸، ۵۵۸، ۵۲۵ طبع المراض.

⁽۲) سورة الزاب / ۳۳س

⁽m) الجامع لأحظام القرآن للقرطبي ١١/٩٥١، ١٨٠ـ

⁽۴) سورۇپۇلىي ۴۳ـ

⁽۱) حدیث: "کان یکوہ عشو خلال ملھا النبوج....." کی روایت ابوداؤد(۱۳۷۲ طبع عزت عبیدهاس) نے کی ہے ابن مدیل نے ایک راوی کی جہالت کی وجہ ہے اے مطلق قر اردیا ہے (مختصر استن للمندری ۱۲ سمالٹا تع کردہ دار آمعرفہ)۔

 ⁽۲) لسان العرب، لمصباح لممير ماده "برع".

⁽۳) سورۇنورى ۱۰س

لئے اس کی طرف نظر کرنا حاول نہ ہو۔

جن چیز وں کا اظہار تبرج کہا تا ہے:

سا - ترق کامعتی: زینت و کاس کوظاہر کرتا ہے، خواہ وہ بدن کے ان حصول میں ہوجوستر میں داخل ہیں جیسے کورت کا گلاء اس کا سینداور اس کے بال ، اور ای طرح وہ زینت جو ان پر ہوتی ہے ، یابدن کے ان حصول میں ہوجوستر میں واخل نہیں جیسے چرہ ، وونوں بتھیلیاں ، سوائے ان کے جن کی شریعت نے اجازت دی ہو، جیسے سرمہ ، انگوشی سوائے ان کے جن کی شریعت نے اجازت دی ہو، جیسے سرمہ ، انگوشی اور کنگن ۔ اس کی دلیل وہ قول ہے جو آبیت کر ہمہ "ولا گیٹیلیئن زیئتھیں پالا ما ظھر منہ ان اور اپنا سنگا رظاہر ندہونے دیں سر بال جو اس میں سے کھلا می رہتا ہے) کی تقسیر میں حضرت این عباس بال جو اس میں سے کھلا می رہتا ہے) کی تقسیر میں حضرت این عباس شرق کی اور کنگن ہیں (۲)۔ اور اس لئے بھی کہ عورت کو معاملات کے اور اس لئے بھی کہ عورت کو معاملات کے وقت ان اعتماء کو کھو لئے کی ضرورت پراتی ہے، کہذا اس میں ضرورت شرق کا تحقق ہوا، علاوہ ازیں چرہ اور ہمتھیلیوں کے ستر میں واخل شرق کا تحقق ہوا، علاوہ ازیں چرہ اور ہمتھیلیوں کے ستر میں واخل ہونے میں اختاان ہے ، جے اصطلاح ''عور ق''میں دیکھی جائے۔ ہونے میں اختاان ہے ، جے اصطلاح ''عور ق''میں دیکھی جائے۔ ہونے میں اختاان ہے ، جے اصطلاح ''عور ق''میں دیکھی جائے۔

تبرج کاشر عی حکم: عورت کانبرج:

ہم -عورت کا تیری اپنی مختلف شکلوں میں شوہر کے علاوہ کے لئے ہموتو بالا جماع حرام ہے، خواہ تیری کا مقصد ایسے لوگوں کے لئے زینت ومحاس کو ظاہر کرنا ہموجنہیں اس کا دیکھنا جائز نہیں ، یا اس کا مقصد حیال میں اکر ، غرور اور نازواند از پیدا کرنا اور ایسا باریک کیٹر ایہننا ہموجس

ہے کھال دکھائی دے اورجسم کے جوڑ ظاہر ہوں، اور اس کے علاوہ ایسی چیزیں جوطبائع کو ہرا میختہ کریں اور شہوت کو بھڑ کا نمیں ، اس لئے كَ اللَّهُ تَعَالَى لَمْ مَا تَا ہِي: "وَقُورُنَ فِي بُيُورِيْكُنَّ وَلَا تَبَرُّجُنَ تَبَرُّجَ الُجَاهِلِيَّةِ الأُولِيُّ (أ) (اورائينَ أَهرون مِيلِّر ارےر مواور قديم زمانہ جاہلیت کے دستور کےموافق مت پھرو)، دوسری جگہ ار ثاد ب: ''وَلَا يَضُوبُنَ بأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخُفِيْنَ مِنُ زیُنیَتِهِنَّ "(٢) (اورعورتیس این یاوک زور سے ندرتھیں کہ ان کی مخفی زینت معلوم ہوجائے) اور یہ اس کئے کہ قدیم زمانۂ جاہلیت کی عورتیں بہترین زینت اختیار کر کے نکلی تخییں اور ماز وانداز کے ساتھ منک کرچلتی تحییں ، پیچیزیں ان کی طرف دیکھنے والوں کے لئے فتنہ کا با عث ہوتی تحییں ^(۳) یہاں تک کہ بوڑھیعورتیں، ^جن کی طرف مر دوں کا ذرابھی میلان نہیں ہونا تھاوہ بھی ای طرح نکلی تھیں، جن کے بارے میں بیآیت نازل ہوئی: "وَالْقُوَاعِدُ مِنَ النَّسَاءِ اللاَّتِيُى لَا يَرجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعُنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْوَ مُتَبَوِّجَاتِ بِزِيْنَةٍ" (اور برُ ى بورُ حيال جنهيں نکاح کی امیدنه رسی ہوان کو کوئی گناه نہیں (اس بات میں) کہ وہ اینے زائد کیڑے اٹار رکھیں (بشرطیکہ) زینت کودکھا! نے والیاں نہ ہو) تو اللہ تعالیٰ نے ایسی عورتوں کے لئے بغیر دوی نہ کے رہنے، اورسر کھلا رکھنے وغیر دکومباح کیا ہے، کیکن اس کے باوجود ان کوتیرج سے منع کیا ہے۔

⁽۱) سور کافور در است

⁽۲) تغییر القرطبی ۱۲ م ۴۳۸، فتح القدیرللفو کا فی سر ۴۳۰.

⁽۱) سورة الازاب ۱۳۳۷

⁽۲) سورة توديراس

⁽۳) رد الحتاري الدر الخآر ۴۳۳۱، محمله فتح القدير ۸ ر ۲۹، ۳۱۵، قليولي سهر ۲۰۸، ۲۱۰، ۲۱۳، الشرح الكبير ار ۲۱۳، ۲۱ (۲۱۳، ۲۱۵، کشاف القتاع ۵ ر ۵ ا، ۷ اطبع التصرالحد، في لا بن قد المدار ۵ ۵ طبع الرياض الحد، الأداب الشرعيدوالمئح الرعيد ۳ ر ۲۹۰، ۵۲۳ طبع الرياض الحد، در

⁽۳) سورة نور ۱۹۰_س

مر د کاتبرج:

مرد کا تیمرٹ یا تو تامل ستر اعضاء کو ظاہر کر کے ہوگا یا زینت افتیا رکر کے، اور بیزینت افتیا رکر نایا توشر بعت کے موافق ہوگایا اس کے نالف ۔

الف-تبرج قابل ستر اعصنا ء کو ظاہر کرنے کے ذریعہ: ۵-مرد پرحرام ہے کہ وہ اپنی بیوی کے سواد وسر مے مردوں اور عورتوں کے سامنے ستر کھولے، البتہ دوااور خاتنہ کی ضرورت کے لئے کھول سکتا ہے، سترکی تحدید کے سلسلہ میں فقہاء کا اختلاف ہے جسے اصطلاح ''عورة'' کے تحت دیکھا جائے۔

عورت مرد کے وہ اعضاء دیکھیتی ہے جوا یک مردد وہر سے مرد کا دیکھا ہے جبکہ شہوت کا خطرہ نہ ہو، کیونکہ مرد وعورت ان حصول کودیکھنے میں ہراہر ہیں جوسترنہیں ہیں، بعض فقتہاءا سے حرام کہتے ہیں۔ ای طرح مرد کا اپنی شرمگاہ کو بلاضرورت دیکھنا مکروہ ہے (۱)۔

ب-تبرج اظہارزینت کے ذریعہ:

اور بھی اس کے خالف۔ شریعت کا اظہار بھی شریعت کے موافق ہوتا ہے اور بھی اس کے خالف۔ شریعت کے خالف زینت، جیسے مرد کا عورتوں کی مشابہت اختیار کرتے ہوئے اہر و کے کناروں کو اکھا ڈیا۔ اور جیسے عورتوں کی مشابہت اختیا رکرنے کے لئے چہر ہ پر پاؤڈرلگانا، اور جیسے ورتوں کی مشابہت اختیا رکرنے کے لئے چہر ہ پر پاؤڈرلگانا، اور جیسے ریشم، سونا یا سونے کی اگوشی وغیر ہ پہن کرکے زینت اختیا ر

(۱) تحمله فتح القدير ۲۸ ۳۱۵،۳۶۳ ۴، ابن عابدين ار۵ ۳۵،۳۷۸ الشرح الهنير ار ۲۸۵، الدسوتی ار ۳۱۱،۳۱۱، فتی الحتاج ار۵ ۸، قلیو بی سهر ۳۱۱، روصة الطالبین ار ۲۸۳، المغنی ار ۵۵۸، کشاف القتاع ار ۴۰ ۳، الأداب الشرعید سر ۳۷۳

کرنا۔ زینت اختیا رکرنے کی کچھ اور صورتیں بھی ہیں جن کے حکم میں اختااف ہے، جنہیں "اختصاب"، "لحید" اور" تزین" کی اصطلاعات میں دیکھاجائے۔

شریعت کے مباح کردور ین میں سے وہ تزین بھی ہے جس کی شریعت نے تر غیب دی ہے جیسے شوہر کا اپنی بیوی کے لئے تزین افتیار کرنا جیسا کہ بیوی کا شوہر کے لئے تزین افتیار کرنا ہے، بالوں میں کنگھا کرنا یا ان کو منڈ وانا ، کیکن قرن کا (یعنی متفرق جگہوں سے منڈ وانا) مکروہ ہے، بڑھا ہے کے بالوں کوسرخی یا زردی سے بدلنا مسنون ہے۔

چاندی کی انگوشی کے ذر معیرتزین افتیار کرنا جائز ہے، اس کئے کرسول اللہ علیائی کے جائز ہے، اس کئے کہ رسول اللہ علیائی نے چاندی کی انگوشی کا استعمال کیا،لیکن انگوشی کا وزن کیا ہو، اس میں فقہا ء کا اختااف ہے (۱)، اس سلسلہ میں اصطلاح (دیجشم''دیکھی جائے۔

ذميه كاتبرج:

2- آزاد ذمیکا قاتل سترحد مروی ہے جو آزاد مسلمان عورت کا ہے،
اس سلسلے میں فقہاء نے آزاد عورت کے مسلمان یا غیر مسلم ہونے کے
درمیان کوئی فرق نہیں کیا ہے، جیسا کہ انہوں نے مسلمان مرد اور کافر
مرد کے قاتل سترحد کے درمیان کوئی فرق نہیں کیا ہے، اور اس کا
قتاضا یہ ہے کہ ذمی مرد ہویا عورت، اس کے قاتل سترحد کی طرف
د کھنا حرام ہو۔ ای بنار ذمیر برجی این ستر کو چھیلا واجب ہے اور

⁽۱) ابن عابدین ۵۸ م ۱۵۵ م ۳۵۵ مارتنگی علی الموطأ که ۳۵۳ مالیجیر کاملی الخطیب ۲ م ۳۳۷ م ۳۳۷ م آمنی از ۵۸۸ م ۱۹۵ مشرح مسلم للتو وی سرمه ۱۳۱ میل لا وظار از ۱۱۲ م الاداب الشرعید لا بن مقلح سهر ۳۳۵ اور اس کے بعد کے صفحات ، سهر ۵۱ اوراس کے بعد کے صفحات ۔

تبرج۸ ټېرز

جوتیرج فتنه کا سبب ہوال سے بیناضر وری ہے، تا که فتنه ونساد وقع ہو اورعمومي آ داب كالحاظ ہو⁽¹⁾۔

تېرج ہےرو کنے کا مطالبہ کس ہے ہو گا؟:

٨ - باب ير لازم ب كرجب ال كى نا بالغ بيني شهوت والى بهوجائ بایں طور کہ اس کا حجوما اور اس کی طرف دیکھنا مباح ندرہے تو اسے

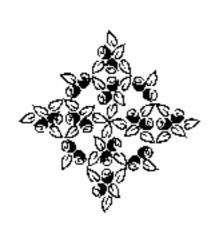
کہ بیمعصیت ہے، کہذا اسے حق ہے کہ اس کی تا دیب کرے اور ا ہے ہر ایسی معصیت میں جس میں کوئی حدمقر ر نہ ہو، ایسی مار مارے جو شخت تکلیف دہ نہ ہواگر وہ اس کی خیرخو ای اور نفیحت کو قبول نہ کرے، یدحق ای وقت تک رہے گا جب تک شوہر شرعی طریقہ پر قائم رہے۔ ولی امر پر لازم ہے کہ وہ تیرج حرام ہے منع کرے اور ال برسز اوے، ال کی سز افعزیر ہے، اور تعزیر ہے مراوتا دیب ہے، اور وہ ماریا قیدیا سخت کلامی کے ذریعہ ہوتی ہے، اور اس میں کوئی ایک صورت متعین نہیں ہے، بلکہ یقور رکے حالات ومقتضیات کے مطابق تعزیر کرنے والے کی صوابر بدیرے (۲) منیز دیکھئے: اصطلاح ''تعزیر''۔

تغرج سے رو کے، بیکم فتنہ کے خوف کی وجہ سے ہے، اور یبی عکم ال کی ال لڑکی کے بارے میں بھی ہے جس کی شاوی نہ ہوئی ہواوروہ اس کی ولایت میں ہو، کیونکہ ال کے لئے یہی مناسب ہے کہ اے تمام مامورات کا حکم دے اور تمام منہیات سے اسے رو کے، باپ کے نہ ہونے کی صورت میں لڑکی کا ولی اس معاملہ میں باپ کی طرح ہے۔ شوہر پر لازم ہے کہ وہ اپنی بیوی کوتیرج سے رو کے، اس لئے

(۱) ابن عابدين ار ۷۵ سام ۹۷ سام تبيين الحقائق ار ۹۵ ، ۵۷ الشرح السغير اره ٢٨، القوانين الكلهية رص ٥٣، الدسوتي الر٢١١، ١١٤، مغني الحتاج ار٥٨٢،٥٧٤ كثاف القتاع الهر٥٠٠ ١٥١٠ احكام الل الذمه ۲۷۵/۲ اوراس کے بعد کے صفحات، ۲۵۵،۲۲۵

(۲) محمله فتح القدير ۱۳۸۸، اين جايدين ارد ۳۳۵، ۵۳۷، ۹۲۵، ۹۲۵،

و كميئ: " قضاء العاجة " _



سريريا، ١٨١، ٨٨١، ١٨٨، ٥٠ سر٢٥ ، قليولي سر٥ • ١٠٢ • ٢، ١١٢، كشاف القتاع عن متن الاختاع ۵ روه ۲۰، ۲۱۰، ۱۳۵،۱۳۱/۱۳۵ طبع التصر الحديد، الأداب الشرعيد و المُحُ الرعيد الر٢ ٥٠، ٣/٥٥، ٥٥٨، طبع الرياض الحديد، الجامع لأحكام القرآن للقرطبي ٥٨ ١٩٨، ١٢٨ -

کیا گیا ہے (۱) اور بیر علی کی ایک شم ہے، لہذ اتر ع کبھی واجب ہونا ہے، اور بھی واجب نہیں ہوتا ہے، اور عبادات میں بھی تطوع ہوتا ہے، اوربيوه تمام نوانل ہيں جونر ائض و واجبات سے زائد ہيں۔

تبرع كاشرى حكم:

سا- اسلام نے خیر و بھلائی کا کام کرنے پر ابھاراہے، بیتر آن وسنت اور اجماع سے نابت ہے۔ تغرع کی مختلف انواع خیر میں شامل ہیں، اس درج ذیل دلائل ہے اس کی مشر وعیت تا بت ہوتی ہے:

قرآن ہے دلیل ملاتعالیٰ کا بیار ثادے: "وَتَعَاوَلُوْا عَلَی البرِّ وَالتَّقُوٰى وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الإثم وَالْعُدُ وَانَ"(٢)(اور نیکی اور تقوی میں ایک دوسرے کی اعانت کرتے رہو اور گناہ اور زیا دتی میں ایک دوسرے کی اعانت مت کرو)، الله تعالی نے برّ (نیکی) پر تعاون کا حکم دیا ہے، اور برّ ہر اس بھلائی کو کہتے ہیں جوغیر کے لئے کی جائے ،خواہ بیمال کے ذریعیہ ہویا منفعت کے ذریعیہ۔

نيز الله تعالى كا بيرار ثاوي: "كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَوَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنَّ تَرَكَ خَيْرًا ۗ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالأَقْرَبِيْنَ بِالْمَعُرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ" (٣) (تم رِفِرْض كيا ا گیاہے کہ جبتم میں ہے کسی کوموت آتی معلوم ہو، بشرطیکہ پچھال بھی چھوڑر ہاہو، تو وہ وللہ ین اور مزیزوں کے حق میں معقول طریقہ ے وصیت کر جائے ، بیلازم ہے پر ہیز گاروں پر)۔

جہاں تک سنت کا تعلق ہے تو انمال خبر پر دلالت کرنے والی احادیث بہت ہیں،ان بی میں سے حضرت این عمرٌ کی بیروایت ہے،وہ

تنبرع

تعریف:

١ - تغر الفت مين: بوع الوجل نيز بوع (ضمه كے ساتھ)بواعة ے ماخوذ ہے، یعنی فلال مخض علم وغیرہ میں اپنے ساتھیوں پر نوتیت کے گیا، اور ایسے مخص کو''بارٹ'' کہا جاتا ہے، اور "فعلت کذا متبوعا "كامعنى ب: فلان كام مين في رضا كارانه كياء اور تبوع جالاً مو کامفہوم ہے: فلاں آ دمی نے فلاں کام بلامطالبۂوض کیا ⁽¹⁾۔ جہاں تک اصطلاحی تعریف کی بات ہے تو فقہاء نے تعرع کی کوئی اصطلاحی تعریف نہیں کی ہے، البتہ انہوں نے اس کی قسموں جیسے وصیت، وقف اور ببہ وغیرہ کی تعریف کی ہے، اور ان انواع میں سے ہر نوئ کی تعریف صرف اس کی ماہیت کو متعین کرتی ہے، اس کے باوجود فقہاء کے نز دیک تیم ٹ کامفہوم جیسا کہ ان انسام کے لئے ان کی طرف سے کی جانے والی تعریفات سے سمجھ میں آتا ہے، تغیر کے اس دائز ہ سے خارج نہیں کہ وہ بیشتر حالات میں نیکی اور بھاائی کے ارادہ ہے، مکلف کا حال یا مستقبل میں کوئی مال یا منفعت اپنے علاوہ کے لئے بلائوض خرج کرنا ہے۔

متعلقه الفاظ:

۲- تطوع اس عمل کانام ہے جوزش وواجب پر اضافہ کے طور پرمشر و ع (۱) انھحاج للجوہری، المصباح مادہ پیرع"۔

العريفات للجرجاني.

⁽¹⁾ Yeldhorn.

⁽٣) سورة يقره ١٨٠ (٣)

فرماتے ہیں: "أصاب عمر أرضا بخيبو، فأتى النبي ﷺ يستأمره فيها، فقال: يارسول الله إني أصبت أرضًا بخيبر، لم أصب ما لا قط هو أنفس عندي منه، فما تأمرني به؟ قال: "إن شئت حبست أصلها و تصدقت بها"، قال: فتصدق بها عمر: أنه لا يباع أصلها، ولا يبتاع، ولا يورث، ولايوهب، قال: فتصدق عمر في الفقراء، وفي القربي، وفي الوقاب، وفي سبيل الله، وابن السبيل، والضيف، لا جناح على من وليها أن يأكل منها بالمعروف، أو يطعم صليقا، غير متمول فید"()(حضرت عمر نے نیبر میں ایک زمین یائی، وہ نبی علی کے بایں آئے کہ اس کے بارے میں حضور علیہ کا تھم معلوم کریں ،عرض كيا: اے الله كے رسول! ميں نے خيبر ميں ايك زمين يائى ہے، ميں نے آج تک کوئی ایسامال نہیں بایا جومیرے نزدیک اس سے زیادہ عمدہ ہو، تو آپ جھے کیا تھم دیتے ہیں؟ آپ میکا لیے نے ملا: اگر جا ہوتو ز مین کواپنی ملکیت میں رکھواور اس کے چیل یا آمدنی کوصد ق کردوہ ابن عمر کہتے ہیں: توحضرت عمر نے ال شرط کے ساتھ ال کوصد قہ کردیا کہ اں کی اصل کو نہ بیچا جائے گا اور نہ ٹر بدا جائے گا، اس کا نہ کوئی وارث بے گا اور نہوہ زمین کسی کو بہد کی جائے گی ، ابن عمر کہتے ہیں کر حضرت عمرٌ نے اس کی آمدنی کوفقر او بقر ابت داروں، غلاموں کو آزاد کرنے، مسافروں، اللہ کے رائے میں اور مہمانوں کے لئے صدقہ کیا، اور اس کے متولی رہ اس میں کوئی گناہ نہیں کہ وہ اس میں سے معروف طریقہ ہے کھائے یاکسی دوست کو کھاائے جبکہ مال کوجمع کر کے رکھنے والا نہ ہو)۔ راوی کہتے ہیں کہ جب میں نے بیاعدیث امام محمد بن سیرین کے سامنے بیان کی اور غیرمتمول فیہ تک پہنچا تو انہوں نے کہا:

(۱) عدیث: "إن شنت حبدت أصلها و نصدافت بها" كي روايت بخاري (فقح المباري ۱۳۵۵ مهم استان اورسلم (سر ۱۳۵۵ طع المباري کي ب الفاظ سلم کے بیں۔

غیبو متأثل مالا (لیعنی وہ ذخیرہ اندوزی کرنے والا نہ ہو)۔

رین عون کہتے ہیں: جس نے وہ کتاب براہمی اس نے جھے بتایا کہ اس میں غیبر متأثل مالاً ہے۔

ای قبیل ہے رسول اللہ علیہ کا یہ ارتا و ہے: "تھادوا تحابوا" (۱) (ایک دوسر کے کوہدیدوہ ایک دوسر سے سے حبت کرنے لگو گے)، نیز حضور علیہ کا یہ کی ارتا و ہے: "اِن اللہ تبارک و تعالی تصدی علیہ کم بثلث آموالکہ عند و فاتکم زیادہ فی حیاتکم، لیجعلها لکم زیادہ فی اعتمالکم "(اللہ تبارک و قات کے وقت تمہاراتہائی مال تم پرصد ترکر دیا ہے، تمہاری (روحانی) زندگی میں اضافہ کے لئے، تاکہ اسے تمہارے اتفال میں زیادتی کا سبب بنائے)۔

جہاں تک اجمال کی بات ہے تو امت تعرب کی مشر وعیت پر متفق ہے، کسی نے اس کا انکار نہیں کیا ہے (m)۔

مہم تنمرعات کی متعدد وقتمیں ہیں: ان بی میں سے مین کاتمر ت ہے،
اور ان بی میں سے منفعت کاتمر ت ہے، تیرعات نی الفورجھی ہوتے ہیں
اور با تنا خیر بھی، اور بھی ان کی نسبت موت کے بعد کی طرف بھی ہوتی
ہے، تیمر ت کی تمام انوائ رفتاف سم کے شرقی ادکام جاری ہوتے ہیں۔
۵ - فقہا وکا اتفاق ہے کہ تیمر ت کا کوئی ایک بی تھم شرقی نہیں ہے، بلکہ
اس پریا پی ستم کے ادکام جاری ہوتے ہیں، چنا نیے تیمر ت بھی واجب

⁽۱) عدیدہ: "کیھادوا تحابوا" کی روایت بخاری نے لا دب کمفر د (عدیدہ: سمہ ۵ رص ۵۵ اطبع استانیہ) میں کی ہے، خاوی نے "المقاصد" میں اس کوعمہ م قر اردیا ہے (رص ۱۲۱ طبع الخائمی)۔

⁽۲) حدیث " إن الله نصدق علی کم بفک أمو الکم "کی روایت طبر الی نے کی ہے جیسا کر مجمع الزوائد (سهر ۲۱۳ طبع القدی) میں ہے۔ ابن جمر نے یلوغ الرام (رص ۲۳۱ طبع عبدالحمید خلی) میں کہا ہے کہ اس کے سادے طرق ضعیف ہیں دلیکن بعض طرق بعض کو تقویت رہنچا تے ہیں۔

⁽٣) مغنی اکتاع ۲۷۱/۳ ـ ۲۵

ہوتا ہے، بھی متحب، بھی حرام، اور بھی مکروہ، بیساری تشمیل تغر بُ کرنے والے، جس کے لئے تغر بُ کیا جائے اور جس چیز کا تغر بُ ہو ان کی حالت کے تابع ہوتی ہیں۔

اگر تیم رخ وصیت ہوتو نوت شدہ کسی نیک عمل کے تد ارک کے وصیت واجب ہوگی، جیسے زکا قد اور حج اور مستحب ہوگی اگر ورٹاء مال دار ہوں اور وصیت تیائی مال کے حدود میں ہوہ اور حرام ہوگی اگر کسی معصیت یا حرام کام کی وصیت کرے، اور مکر وہ ہوگی اگر کسی غیر رشتہ وار فقیر موجود ہو، اور مباح ہوگی اگر کسی خیر برشتہ وار فقیر موجود ہو، اور مباح ہوگی اگر کسی خیر رشتہ وار فقیر موجود ہو، اور مباح ہوگی اگر کسی خیر رشتہ وار مال وار کے لئے تیائی سے کم کی وصیت کرے جبکہ اس کے ورثا ومال وار ہوں۔

باقی تغرعات مثلاً وقف اور ببه کابھی یمی حکم ہے (۱)۔

تبرع کے ارکان:

۲ - تیر ع کی بنیا دعقد یعنی معاملہ ہے، لہذا عقد کے ارکان کا پایا جانا ضروری ہے، فقہاء نے ان ارکان کی تعداد میں اختلاف کیا ہے۔

جمہور کے مزد دیک تغری کے جار ارکان ہیں: متبری (تغری کرنے والا) متبری لہ (جس کے لئے تغری کیا جائے) متبری بہ (جس کے لئے تغری کیا جائے) متبری بہ (جس چیز کا تغری ہو) بھیغہ (تغری کے الفاظ)۔

متبرئ یا تو وصیت کرنے والا ہوگا یا جبہ کرنے والا، یا وقف
کرنے والا، یا عاربیت پر دینے والا، متبرئ لدیا تو وہ ہوگا جس کے
لئے وصیت کی جائے یا جس کو جبہ کیا جائے یا جس پر وقف کیا جائے یا
جو عاربیت پر کوئی چیز حاصل کرے، اور متبرئ جہیا تو وہ چیز ہوگی جس
کی وصیت کی جائے یا جس کو جبہ کیا جائے یا جس کو وقف کیا جائے یا

(۱) بدائع لصنائع ۷۷ سه ۱۳۳۱ طبع بولاق، انتظاب ۱۳۳۵، البجه شرح التصد ۱۲۳۳، الدسوقی سهر ۷۷ سه مثنی الحتاج ۳ر ۱۳۳۰، ۹۹ سه المثنی ۵ر ۵۳ سه ۲رساس، ۱۸سـ

جس کو عاربیت پر دیجائے وغیرہ ، اور صیغہ وہ ہے جس سے تیمر ک وجود میں آتا ہے اور جس سے تیمر کے ارادہ کا اظہار ہوتا ہے۔

حفیہ کے زور کے تیم س کا صرف ایک رکن ہے اور وہ صیغة تیم س ہے، اور ان کے درمیان ال بارے میں اختلاف ہے کہ بیمیغه کس وقت تحقق ہوتا ہے؟ اور بیصیغه تیم س کی مختلف قسموں کے اعتبار سے مختلف ہوتا رہتا ہے (۱)۔

تېرغ کې شرطين:

کے ۔ تیم ت کی ہر شم کے لئے الگ الگ شرطیں ہیں، جب ان کا تحقق ہوگا تو تیم ت سیحے ہوگا، اور جب ان کا تحقق ندہوگا تو تیم ت سیحے ہوگا، اور جب ان کا تحقق ندہوگا تو تیم ت سیحے ہوگا، اور جب ان کا تحقق ندہوگا تو تیم تیم تیم کرنے والے شرطیں بہت ہیں اور نو ت بہنو تا ہیں، بعض کا تعلق ای شخص سے ہے جس کے لئے تیم تا کیا جائے، اور بعض جائے، بعض کا تعلق اس چیز سے ہے جس کا تیم تا کیا جائے، اور بعض کا تعلق صیفہ تیم تیم سے ہے۔ تیم عات کی ہر نو ت کی شرائط سے تعلق کا تعلق صیفہ تیم تیم سے ہے۔ تیم عات کی ہر نو ت کی شرائط سے تعلق کا تعلق ان کی اصطلاح کے تحت مذکور ہے (۱۲)۔

تبرع کے نتائج:

۸ - تبرئ جب اپن شرق شرائط کے ساتھ کمل ہوجائے تو اس پرشری نتیج مرتب ہوگا، یعنی ہے کہ جس چیز کا تبرئ کیا جائے گاوہ متبرئ لد کی طرف منتقل ہوجائے گی، اور یہ نتیج متبرئ بد کے اختلاف سے مختلف

- (۱) بدائع الصنائع ۷ر ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، الدسوتی مع الشرح الکبیر سره ۸۳، ۱۹۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۱، ۱۳۳۰، ۱۳۰۰، ۱۳۳۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰، ۱۳۰۰،
- (۲) بدائع المستائع سراسه، ۳۳۳، ۳۳۵، ۲۳۳، ۳۳۸، الدسوتی مع المثرح اکمبیر سر ۱۸۰۰، ۹۳۰، المثنی اکمتاع ۲۸ ۳۲، ۲۹۱، ۲۷۳، ۲۷۳، ۵۳۰ مع مع المشرع ۱۸ ۳۰، ۲۷۳، ۲۷۳، ۲۷۳، ۵۳۰ معر

شر انظ کے ساتھ کمل ہوا ہو۔

مونار برنا ہے۔

چنانچ وصیت میں مثال کے طور پر موصی (وصیت کرنے والے) کی وفات کے بعد ملکیت موصی لہ (جس کے لئے وصیت کی جائے) کی طرف منتقل ہو جاتی ہے ، بشر طیکہ موصی لہنے اس وصیت کو قبول کیاہو،خواہ وصیت کی ہوئی چیز اعیان ہویا منافع ،اور ہبدیس ہبد کی ہوئی چیز کی ملکیت واہب (ببه کرنے والے) سے موہوب له انتقال وقتی ہوتا ہے، اور وقف میں ملکیت کے منتقل ہونے یا نہ ہونے

(جس کے لئے ہبدک گئی ہے) کی جانب منتقل ہوجاتی ہے، بشرطیکہ موہوب لدنے ال پر قبضه کرلیا ہو۔ بیہ جمہور فقہاء کے مزد دیک ہے اور حنفیہ کے مزد کیک ملکیت کامنتقل ہونا قبضہ ریموقوف ہوتا ہے۔ عاریت میں انتفاع کاحق عاریت پر لینے والے کی جانب منتقل ہوتا ہے اور پیر

میں فقہاء کا اختلاف ہے، چنانچ حنفیہ اور شافعیہ کے مزد یک اور امام احمد کے مشہور مذہب کے مطابق ^(۱)وقف واقف کی ملکیت ہے نگل

جاتا ہے اور اللہ کی ملکیت پر ہاتی رہتا ہے، اور مالکیہ کے مزو کے اور

يبي امام احمد كى بھى ايك روايت ہے وہ واقف (وقف كرنے والے) کی ملکیت رہا تی رہتا ہے (۲)، ان حضرات کا استدلال حضرت عمراً کی

اں روایت سے ہے کہ جب انہوں نے اپنا نیبر کا حصہ وقف کیا تو

رسول الله عليه في في ان سفر ماليا: "حبّس أصلها" (اس كي

ا ال کورو کے رکھو)، ان حضر ات نے اس نص سے بداشنباط کیا ہے

کہ وقف کی ہوئی چیز واقف کی ملکیت پر ہاتی رہتی ہے،خلا صدید کہ

تغرب ہے ایک شرقی نتیجہ مرتب ہوتا ہے، یعنی پیاک مین یا منفعت کی مَلَكِيتِ مِتْبِرِ تَ ہے مُتْبِرِ عَالِمه كَي طرف مُتَقَلِّ ہوجاتی ہے ، بشر طبيكہ عقد اپنی

(۱) بد الع الصنا لَع ۲/۵ ۸ ۱۳ اور اس کے بعد کے صفحات طبع بولا ق، ۸/۸۹ ۸۳، ٣٩١٣ طبع الإمام

(۲) مغنی ایجناع ۱۲ مر۸۴ می این قدامه ۲۱ روون اشرح امکبیر سهر۲۷ طبع مجلمی به

(٣) عديث: "معبس أصلها" كَيِّرْ يَجْ نَقْر هُمِرْ سَيْس كَذر يَكِل (٣)

اس مسلم میں تفصیلات اور اختلافات ہیں، جن کے لئے اصطلاح ''عاربیت''،'' بیه'،'' وقف'' اور'' وصیت'' وغیره کی طرف رجوٹ کیاجائے۔

تبرع كب فتم ہوتا ہے:

9 - تنمر ع بھی باطل ہوجانے کی وجہ سے ختم ہوجا تا ہے، اور بھی کسی کی طرف ہے کوئی عمل نہ یائے جانے کی وجہ ہے، اور کبھی متبر ٹیا ہی کے ملاوہ کے مل سے نتم ہوجاتا ہے۔ تغیر تامیں اسل بیہے کہ وہ نتم نہ ہو، کیونکہ اس میں نیکی اور بھاائی ہے، کیکن اس سے عاربیت مستثنی ہے، کیونکہ عاریت عارضی ہوتی ہے۔

تغررتً كے نتم ہونے كے سلسلے ميں فقہاء كے آو ال كاجائزہ لينے سے ظاہر ہونا ہے کہ تعرب کی بعض قسموں کے فتم ہونے کے معالمے میں وسعت ہے اور بعض دوسری قسموں کے معالمے میں تنگی ہے، دوسری طرف بعض تبرعات کوئم کرنا ناممکن ہے جیسے جمہور فقہاء کے نزدیک وقف، اور بھی تیمر کا کوختم کرنا لازمی ہوتا ہے جیسے

تعرعات کی ہرنوع سے تعلق تنصیل ان کی اصطلاح میں دیکھی جائے۔

⁽۱) بدائع الصنائع بمرسمه ۳ طبع بولاق، لهموط ۴راس، فتح القدير ۲۹ر۸ طبع الحلمی، طاهبین الدسوتی سهر ۱۹۳۳، ۱۸ ۸، ۹۹ اور اس کے بعد کے صفحات ۹ ۲۳، ۸ ۴ ۳۸ مغنی اکتاج ۱۸۲ و ۴۳ سو ۳۰ سر ۵۳، ۲۵، ۲۵، المغني ٢٨ بـ ٢٨ م. ٢٨ م ٣٣٨، ٣٣٨، • ٨٧، منار أسيل الر ٣٣٠.

ترزک ۱-۳

اہند اتبرک کا اصطلاحی معنی: هن میں خیر البی کے ثبوت کوطلب کرنا ہے۔

تبرّ ک

تعریف:

ا - تنم ک لفت بین: برکت طلب کرا ہے، برکت: بر صوری اور زیادتی کام ہے، تنم یک کام ہے، تنم یک کامطب ہے: کسی انسان کے لئے برکت کی دعا کرا ، بارک الله الشیء ، بارک فیمه ، بارک علیه کا مطلب ہے: الله الشیء ، بارک فیمه ، بارک علیه کا مطلب ہے: الله الشیء ، بارک فیمه ، بارک علیه کا اور قلا کا کیتاب آئز لُناهٔ مُبَارک "() (اور بیالی کتاب ہے جس کوہم نے ازل کیا ہے جو بڑی برکت وال ہے) ، اور قبورکت به کا مطلب ہے: قیمنت به (بیس نے اس ہے برکت عاصل کی) ۔ مطلب ہے: قیمنت به (بیس نے اس ہے برکت عاصل کی) ۔ مطلب ہے: قیمنت به (بیس نے اس ہے برکت عاصل کی) ۔ راغب اصفہانی کہتے ہیں: برکت کی شی بیس فیر البی کا ثبوت ہے۔ راغب اصفہانی کہتے ہیں: برکت کی شی بیس فیر البی کا ثبوت ہے۔ الله تعالی فیرات البی کے فیضان پر متنب کر ہے ہوئے ارشا فر ماتا ہے: السّماء وَاللّا رُضِ "(*) (اور اگر ان بستیوں کے رہنے والے ایمان السّماء وَاللّا رُضِ "(*) (اور اگر ان بستیوں کے رہنے والے ایمان اور زیمن السّماء وَاللّا رُضِ "(*) (اور اگر ان بستیوں کے رہنے والے ایمان کی برکتیں کھول و ہے) ، اور "وَهلنا فِر کُوّ مُبارک آئز کُناہ "(*) کی برکتیں کھول و ہے) ، اور "وَهلنا فِر کُوّ مُبارک آئز کُناہ "(*) کی برکتیں کھول و ہے) ، اور "وَهلنا فِر کُوّ مُبارک آئز کُناہ "(*) (اور یہ ایک مبارک آئیومت ہے جس کوہم نے نازل کیا) (*)۔

- (۱) سورة انعام ۱۹۳۸
- (۲) سورگاهراف ۱۲۸_۰
- (٣) سورهٔ انسیا یر ۵۰ (۳)
- (٣) لسان العرب، المصباح لمحير مادة "برك"، المفردات في غربيب القرآن للراخب الاستهاني _

متعلقه الفاظ:

الف-نوسل:

الم العبد إلى ربه بوسيلة (بنده نے اپن کراہے، کبا جاتا ہے: توسل العبد إلى ربه بوسيلة (بنده نے اپنے رب کی طرف وسیلہ تااش کیا) جب اس نے سی ممل کے ذریعیہ اللہ کا تقرب حاصل کیا ہو (ا)۔ تااش کیا) جب اس نے سی ممل کے ذریعیہ اللہ کا تقرب حاصل کیا ہو (اور اس قر آن مجید میں ہے: "وَ ابْتَعُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ "(۱) (اور اس کا ترب تااش کرو)۔

ب-شفاعت:

سا- شفاعت الغوى طور پر ' دشفع'' كے مادہ ہے ہے، كہا جاتا ہے:
استشفعت به: ميں نے اس ہے شفاعت طلب كی۔ راغب استشفعت به: ميں نے اس ہے دوسرے كا مددگار ہوكر اس كے ساتھ ملنے اور اس كی طرف ہے سوال كرنے كا۔

شفع وتشفع ال نے شفاعت طلب کی ، اور شفاعت ال کو کہتے ہیں کہ شفیع با دیثاہ سے کسی ایسی ضرورت کے سلسلہ میں کلام کرے ہیں کہ وہ شاہ ہیں کلام کر ہے جس کا وہ اپنے غیر کے لئے سوال کر رہا ہو، شافع : اپنے علاوہ کے لئے طلب کرنے والا، شفع المیه کا معنی ہے: اس نے قلال سے مشور کا لہ (جس کی شفاعت کی جاری ہو) کی حاجت پوری کرنے کا مطالبہ کیا (۳)۔

اور شفاعت اصطلاح میں مشفوع کہ کے گنا ہوں سے درگز ر

- (۱) لسان العرب،المصباح لمعير ، فتا راتصحاح مادية" وسل" _
 - (۲) سررة اكروره س
 - (m) لسان العرب بخريب القرآن للاصغبا في مادهة "معقع" ..

کرنے یا اس کی حاجت بوری کرنے کے سلسلہ میں سوال کرنا اور عاجزی کا اظہار کرنا ہے۔

ج-استغاثه:

الله المعند من استفافه كامطلب بن الدوطلب كرنا بتر آن مجيد من بي الله تُستَغِينُهُونَ وَبَدُكُمُ "(اوراس وقت كويا وكروجب تم البين رب سي لريا وكررب بقص) - أغاثه إغاثة كامطلب بن أعانه و نصوه (الله ن الله بوحمته (الله تعالى نه ابن كامغيث (مدوكار بوا)، أغاثهم الله بوحمته (الله تعالى نه ابن كاممت سي الن كامدوك) المن المدوك كام المن الله بوحمته (الله تعالى في ابن كامدوك) المن المدوك المن الله بوحمته الله بوحمته (الله تعالى في ابن كامدوك كام المن المدوك كام الله الموحمته الله الله الموحمته الله المدوك كامدوك كامدو

شرعی حکم:

نی الجملہ تیرک (بر کت حاصل کرنا) مشروع ہے، تفصیلات درج ذیل ہیں:

اول-بسم الله اورالحمدلله کے ذریعی تبرک:

2- بعض اہل علم کا فد بب بیہ ہے کہ ہر وہ معاملہ جوشر عامیتم بالشان ہو، اس کی ابتداء بیں بسم اللہ اور الحمد للد پڑھنامسنون ہے، بشر طبیکہ وہ کام نہ فی نفسہ حرام ہو، نہ فی نفسہ حروہ، اور نہ وہ ذلت وحقارت کے کام نہ فی نفسہ حرام اور الحمد للد بیں سے ہو، اور بسم اللہ اور الحمد للد بیں سے ہر ایک کو اس کی جگہ بیں تیمرک کے طور بر براحاجائے گا۔

علاء کے یہاں بیمروٹ ہے کہ وہ اپنے کلمات، خطبات، اپنی تالیفات اور اپنے ہر اہم کام کو بھم لللہ سے شروٹ کرتے ہیں، اس حدیث رحمل کرتے ہوئے جو نبی کریم علیات سے مروی ہے: "کیل

دوم-آثار نبی علی ہے برکت حاصل کرنا:

اقتارتی علی الله سے برکت حاصل کرنے کی مشر وعیت پر علاء کا افغات ہے، علاء کا افغات ہے، علاء کا افغات ہے، علائے میرت و شائل اور محد ثین نے بہت می حدیثیں بیان کی ہیں جو بتاتی ہیں کہ صحابہ کرام رضی ملا عنیم رسول مللہ علی ہیں کہ صحابہ کرام رضی ملا عنیم رسول مللہ علی ہیں کے متعدد آثار ہے ہر کت حاصل کیا کرتے تھے، ہم اجمالاً ان میں ہے کچھ بیان کرتے ہیں:

- (۱) حدیث: "کل أمو ذي بال لا يبدأ فيه بيسم الله فهو أبنو أو العطع أو أجدم" کی روایت عبدالقادرالر باوی نے" لا ربیمن "ش کی ہے اوران ہے کی نے" لطبقات" ش کی ہے اس کی سند بہت ضعیف ہے (قیش القدیرِللمناوی ۱۳/۵ طبع المکتبة التجاریہ)۔
- (۲) حدیث: "كل أموذي بال لا يبدأ فيه بالحدمد لله فهو أبنو أو العطع
 أو أجدم" كى روايت ابن ماجه (۱۱ ملع الحلم) نفى به اس كى سند
 ضعيف بهر فيض القدير للمناوي ۲۵ ساطيع الكتبة التجاريب).
- (۳) حاشیه این عابد بن ارس، جوام الا کلیل ار ۱۰ ، ۲۱۳، تحفظ اکتاج ارس، حاهید الباجوری ارس، سیل السلام اراء کشف الحجد رات رس ۱۳ ، البدائع ار ۴۰ ، دلیل الفالحین شرح ریاض الصالحین سهر ۵۵،۲۳ هما ۵۵ س، احیاء علوم الدین ۳۲ ۳ منتی الحتاج ار ۳ س، ۵۱ ، ۵۵ ، فتح الباری شرح سیح البخاری ارس، ۱۸۳۵، ۱۹۴ ، ۱۳۳ ، الاذ کارلزایام النووی رس ۳۳، ۳۳، ۳۳، سس،

⁽۱) سورة انفال مره

⁽r) المصباح لمعير بخريب القرآن الاصنها في-

الف-آپ علی کے وضو سے برکت حاصل کرنا:

2- رسول اللہ علی جسور کے بھوٹر نے بھے تو ایسا لگنا تھا کہ سحابہ کرام آپ علی کے وضو کے پانی پر جمگزرہ ہیں (۱)، کیونکہ وہ شدت سے ال بات کے فواہاں ہوتے تھے کہ رسول اللہ علی کے جسم اطبر سے جس پانی نے مس کیا ہے اس سے برکت حاصل کریں، اور جے حضور علی کے فووکا پانی نہیں ملتا تھا وہ اپنے ساتھی کے ہاتھ کی تری کے ایتا تھا (۱)۔

ب-آپ علی کے تھوک اوررینٹ سے برکت حاصل کرنا:

۸- رسول الله علی جب بھی تھو کتے یا ناک صاف کرتے تو صحابہ کرام اس کو لینے کی کوشش کرتے اور فضا سے لیے ، اور جب وہ کسی کی بیٹھیلی میں آجا تا تو وہ اسے تیمرک کے طور پر اپنے چہرے اور بدن پر ممل لیتا اور اسے اپنی کھال اور اعضاء پر لگالیتا (۳)۔

حضور پاک علی بھی بھی اپنالعاب ڈالتے ہے اور کھانا چہا کر سے اور لوکوں کے ہاتھوں میں بھی اپنالعاب ڈالتے تھے اور کھانا چہا کر سے مشخص کے مند میں ڈال دیتے تھے، صحابہ کرامؓ برکت کے لئے اپنے بچوں کو حضور علی ہے کی خدمت میں لاتے تھے ، تا کہ آپ میں ہیں گھی چہا کرڈال دیں (۳)۔

- (۱) عديث: "ما دبخم رسول الله نَائِثُ بخامة إلا وقعت في كف رجل منهم فدلك بها وجهه وجلده، وإذا أموهم ابتدووا أموه، وإذا أموهم ابتدووا أموه، وإذا نوضاً كادوا يقتطون على وضوئه" كي روايت يخاري (نح الباريه ١٥٠٨ مع التقير) في يحد
- (۲) کیم الریاض فی شرح القاضی عیاض، شرح الشفاسهر ۳۹۳، فتح الباری شرح سیح ایخاری ۱۸ مهس، زادالمعاد فی میزی خیر العباد ۲۲ س۱۳۳۰
 - (۳) کمل عدیث کی تخ تا فقرہ سابقہ میں گذرہ کی ہے۔
- (٣) لمبيع الرياض سهر سه سه الخصائص الكبري للسيوطي أمر ٣٥ ا، زاد المعاد ٢٢ سه ١٢٠٠

ج-آب علي كخون عدركت حاصل كرنا: 9 - احادیث سے نابت ہے کہ بعض صحابہ کر ام نے برکت حاصل كرنے كے لئے رسول اللہ عليہ كے تطابعوے خون كو بى ليا، چنانچ حضرت عبداللہ بن زبیر ﷺ ہے مروی ہے کہ وہ رسول اللہ علیہ کی خدمت میں آئے، آپ علیہ اس وقت پچھنا لگوار ہے تھے، جب فَارَغُ بُوحَ تَوْفَرُ مِايا: "يَا عَبِدُ اللَّهِ اذْهِبِ بِهِذَا اللَّمَ فَأَهُوقَهُ حيث لا يراك أحد، فشربه، فلما رجع قال: يا عبد الله ما صنعت؟ قال جعلته في أخفى مكان علمت أنه مخفي عن الناس، قال: لعلك شربته؟ قلت: نعم، قال: ويل للناس منك و ويل لك من الناس" (اع عبد الله اليخون لع جا وَاور الیی جگہ ڈال دوجہاں کوئی نہ دیکھے، انہوں نے اس کو بی لیا، جب واپس آئے تو آپ علی نے پوچھا: اے عبد اللہ! تم نے کیا کیا؟ انہوں نے جواب دیا: میں نے اسے ایسی پوشیدہ جگہ میں رکھاہے کہ میر اخیال ہے کہ وہ لوکوں ہے ایک دم مخفی رہے گا، حضور علی نے نظر مایا: شاہدتم اے بی گئے ہو، میں نے عرض کیا: جی ہاں، آپ علی نے فر مایا: ''لوكوں كوتم سے اورتم كولوكوں كى تباه كن حركتوں سے الله على بيائے)، لوكوں كاخيال بيتھا كەحضرت عبدالله بن زبير ميں جوطافت تھى وہ اى خون کی وجہ سے تھی ()۔ دوسری روایت میں ہے کہ رسول اللہ علیہ

نے فرمایا: "من خالط دمہ دمی لم تمسه النار"^(۲)(جسکا

[:] مغنی الحتاج سمر ۱۹۹۱، جوہر واکلیل امر ۱۳۳۰، جی مسلم مع النووی ۱۳۳۳، اور حدیث "کان الصحابة....." ان الفاظ کے ساتھ وارد ہوئی ہے "کان رسول الله منابع یؤنی بالصیان فیبوک علیهم ویحد کھم"س کی روایت مسلم (امر ۱۳۳۷ طبع محلی) نے کی ہے۔

⁽۱) الخصائص الكهري ابرا كه، حاهية أيؤو ري ابر ۴ وا، دليل الفالحين ٣٣٢/٣ _

⁽۲) نبی علیه کا خون بینے ہے متعلق حضرت عبداللہ بن زبیر عدیدے: کی روایت حاکم (۳) ملک خون بینے ہے متعلق حضرت عبداللہ بن زبیر عدیدے: کی روایت حاکم (۳/ ۸۵ طبع دائر قالمعارف العثمانیہ) اورطیر الی نے کی ہے جیسا کہ مجمع الروائد (۸/ ۲۵۱ طبع القدی) میں ہے، پیٹمی نے کہا ہے کہ اس کی

خون میرے خون سے ل جائے اسے جہنم کی آگ نبیں چھو کتی)۔

د-آپ علیہ کے موئے مبارک سے برکت حاصل کرنا:

1-رسول الله علی جیابی جب ایناسر مبارک موند وائے تو این بالوں کو صحابہ کرام میں تنہ کی کہ کھی صحابہ کرام میں تنہ کا کہ کھی تھے، صحابہ کرام حضور علی کی کھی تھی بال حاصل کر لینے کے شدید خواہش مندر ہے تھے، اور جس کے ہاتھ لگ جائے وہ بطور تیرک اے محفوظ رکھتا تھا۔ چنا نچ حضرت انس کے محرہ روایت ہے کہ رسول الله علی تی تشریف لائے، وہاں ہے جمرہ آئے، رمی کی، پھر تیام ہے آئے، رمی کی، پھر تیام ہے فرایا: '' ادھر سے بال کا ٹو''، پہلے وائیں جانب اثارہ فرایا، پھر بائیں جانب بی جانب اثارہ فرایا، پھر بائیں جانب، پھر کے ہوئے بال لوگوں کود سے لگے۔

ایک روایت میں ہے کہ جب آپ علیا ہے رقی جمار کی اور انہیں جانب کو تجام کے فربانی کر لی تو آپ نے بال منڈ وائے ، اور دائمیں جانب کو تجام کے سامنے کیا تو اس نے وہ بال کا ئے ، پھر حضور علیا تہ اس نے حضرت اوطلحہ انسار کی کو بلایا اور انہیں وہ بال دے دیئے ، پھر بائمیں جانب کو جام کے سامنے کیا ، اور فر بایا: اے موعڈ و، تو اس نے وہ بال موعڈ ے ، پھر حضرت ابوطلحہ کو وہ بال بھی دے دیئے اور فر بایا: "اقسمہ بین پھر حضرت ابوطلحہ کو وہ بال بھی دے دیئے اور فر بایا: "اقسمہ بین الناس" (انہیں لوکوں میں تشیم کردو)۔

ایک اور روایت میں ہے بال کو انے کا آغاز دائیں جانب سے کیا، پس ان میں سے ایک ایک دو دو بال لوکوں میں تنہم کرادیئے، پھر بائیں جانب کے بال کے کاٹے کا تھم فر مایا، پھر اس

- = روایت طبر الی اور یز ارنے اختصار کے ساتھ کی ہے اور یز ارکے رجال سی کے ۔ کے رجال ہیں سوائے ہید بن قاسم کے ، وہ کی گفتہ ہیں۔
- (۱) عدیث: "أقسمه بین الماس...." كی روایت مسلم (۲/۲ ۹۳ طبع المل) نے كی ہے۔

بال کے ساتھ بھی ایسائی کیا^(۱)۔

مروی ہے کہ ریموک کے دن حضرت خالد بن ولیڈ کی ٹو پی گم ہوگئی، انہوں نے اس کوؤ صوفر صاتو ڈھوٹر نے سے مل گئی، پھر فر مایا:
رسول اللہ علیائی نے عمرہ کیا اور اپنا سر منڈ وایا، تو لوگوں نے آپ علیائی کے کنارے کنارے کے بال لینے کے لئے سبقت کی، میں نے سبقت کرکے چیٹا نی کے بال لیے لئے اور ای ٹو پی میں رکھ لیا، اس کے بعد سے میں جس جنگ میں بھی شریک ہوا اور بیڈو پی میں مرکھ میر سے ساتھ ری ، جھے فتح فصرت عطائی گئی (۲)۔

حضرت أن سے مروی ہے کہ میں نے رسول اللہ علیانی کو دیکھا کہ تھا کہ تاہم آپ کا سرمونڈ رہاہے اور آپ علیانی کے صحابہ نے آپ علیانی کو مرطرف سے گھیرے میں لے رکھا ہے، اور سب کی یجی خوائش تھی کہ بال کسی کے ہاتھ عی میں گرے (۳)۔

ھ-آپ علی کے جو شکے اور آپ علی کے کھانے سے برکت حاصل کرنا:

11- یہ تا بت ہے کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنیم حضور علی ہے کا جوشا کھانا حاصل کرنے کے لئے ایک دوسرے سے مقابلہ کرتے تھے، تا کہ ان میں سے ہر ایک کو وہ ہر کت نصیب ہوجائے جو حضور علی ہے کی وجہ سے کھانے یا پہنے میں آگئی ہے (۳)۔

حضرت مہل بن سعد ہے مروی ہے کہ رسول مللہ عظیمہ کے

- (۱) زادالمعادلا بن القيم ار ۲ سام جيم الرياض سهر ساساب
- (۲) حضرت خالد بن الوليد كى حديث كى روايت حاكم (۳۸۹۹ طبع دائر قالمعا رف
 العثمانية) نے كى ہے وہي نے اپني تلخيص ش كہاہے كہ يدروايت منقطع ہے۔
- (۳) حدیث حشرت الس "لقد د آبیت دسول الله نگانی" کی روایت مسلم (۱۸۱۳/۳) طیم مجلمی) نے کی ہے۔
 - (٣) دليل الفالحين ٢٦ ٥٦٨ مجيح مسلم بشرح الإمام النووي ١٥ ١٥ ٠٠ س

پاس پینے کی چیز لائی گئی، آپ عَلَیْ نَے اس بیل سے پیا، اور آپ علی ہے کی چیز لائی گئی، آپ عَلِیْ نے اس بیل جانب ہڑے ہوڑھے موسی جانب ہڑے ہوڑھے لوگ جے، رسول اللہ عَلیْ نے لڑکے سے فر مایا: "اتنافن لی ان اعطی هؤلاء؟ فقال الغلام: (وهو ابن عباسٌ) والله لا اوٹو بنصیبی منک احدا، فتله رسول الله عَلَیْ فی یله" (اکیا تم جھے اس کی اجازت ویتے ہوکہ میں ان لوگوں کو وے دوں؟ تو نوجوان نے (اور وہ ابن عباسٌ تھے) کہا کہ خدا کی شم اے اللہ کے معاملہ رسول میں آپ عَلیْ کی ذات سے ملئے والے اپنے حصد کے معاملہ رسول میں آپ عَلیْ کی ذات سے ملئے والے اپنے حصد کے معاملہ میں کسی اور کور جے نہیں دوں گا، چنا نی آپ عَلیْ نِیْ نے ان کے ہاتھ میں رکھ دیا)۔

حضرت عميره بنت مسعود رضى الله عنها سے مروى ہے كه وہ اور ان كى بہنيں بيعت كے لئے حضور علياني كى خدمت ميں حاضر ہوئيں، بيسب كى سب با في تحييں، نہوں نے ديكھا كه حضور علياني كوشت كا لكرا كھارہے ہيں، نو آپ علياني نے ان كے لئے بھى ايك نكرا كھارہے ہيں، نو آپ علياني نے ان كے لئے بھى ايك نكرا چبايا، پھر وہ نكرا آپ علياني نے بھے ديا، پھر ميں نے اسے چبا كرنكرا لكرا كر كے سب كو ديا، ال كى بركت بيابوئى كه موت تك ان كے منه ميں بديونيں بيدا يوئى (۱)۔

حضرت خس بن عقیل کی حدیث میں ہے کہ رسول اللہ علیہ اور نے جھے۔ تنو کا شربت پلایا، آپ علیہ فی نے سب سے پہلے پیا اور میں نے سب سے پہلے پیا اور میں نے سب سے آخر میں پیا، اس کے بعد سے جب بھی جھے بھوک لگتی ہے اس کی میری محسوں کرتا ہوں، جب پیاس لگتی ہے اس کی

(۱) عدیدے حظرت کل بن معد کی روایت بخاری (فتح الباری ۱۹/۱۸ طبع استخبر)اورسلم (سهر ۱۲۷ طبع المعی)نے کی ہے۔

(۲) عدیدے عمیرہ بنت مسعود کی روابیت طبر الی (۳۳۱/۳۳ طبع وز ارق الاوقاف العراقیہ)نے کی ہے اور ڈیٹمی نے انجمع (۲۸۳/۸ طبع القدی) میں کہاہے کراس میں امواق بن ادرلیس واسواری ہیں جوضعیف ہیں۔

سیر انی محسول کرنا ہوں ، اور جب گرمی سے کلد خشک ہونا ہے تو اس کی شدندک محسول کرنا ہوں (1)۔

و-آپ علی کے ناخن سے برکت حاصل کرنا:

11 - بینابت ہے کہ رسول اللہ علی فیٹے نے اپنائن کا نے اور تیرک کے لئے لوکوں میں آفتیم کردیئے، امام احمہ نے حضرت محمہ بن زید کی صدیث روایت کی ہے کہ ان کے والد نے بیان کیا کہ وہ قربانی کے مقام پر رسول اللہ علی فیٹے کے پاس حاضر ہوئے، اور قربیش کے بھی ایک صاحب تھے، رسول اللہ علی فیٹے قربانی کا کوشت آفتیم کر رہے تھے، رسول اللہ علی فیٹے قربانی کا کوشت آفتیم کر رہے رسول اللہ علی فیٹے نے اپنے ان کوا ور ان کے ساتھی کو پچھ بھی نہ ملا، البتہ رسول اللہ علی فیٹے نے اپنے سر کے بال اپنے کیڑے میں منڈ وائے تو رسول اللہ علی فیٹے نے اپنے سر کے بال اپنے کیڑے میں منڈ وائے تو اپنے ان کو لوکوں میں آفتیم کردیا، اور آپ علی فیٹے نے اپنے انہوں نے اس کو لوکوں میں آفتیم کردیا، اور آپ علی فیٹے نے اپنے انہوں کے ساتھی کو دے دیا۔

ایک روایت میں ہے کہ'' پھر آپ نے اپنے ناخن کا نے اور انہیں لوگوں میں تنسیم کردیا''(۲)۔

ز-آپ علی کالیاں اورآپ کے برتنوں سے برکت حاصل کرنا:

سا - ای طرح نابت ہے کہ صحابہ کر ام رضی اللہ عنیم اس بات کے حریص عصر کے لئے آپ کے حریص عصر کرنے کے لئے آپ کے مابوسات اور بر تنوں کو محفوظ رکھیں۔

حضرت اساء بنت ابی بکررضی الله عنها ہے مروی ہے کہ انہوں

- (۱) عدیرے خس بن عقبل کو ابن حجر نے لا صابہ میں قاسم بن تا بت کی دلائل کی طرف منسوب کیا ہے(ابر ۵۸ سطیع مطبعۃ اسعادہ)۔
- (۲) ماخن کے کامنے ہے متعلق حضرت محر بن زید کی حدیث کی روایت احمد (۳۸ مر ۳۳ مل طبع کمیمریہ) نے کی ہے اس کے رجال تقدیق نیز دیکھتے از اوالمعاد ار ۳۳۳ س

نے ایک گاڑھے اور دینے تشم کا جبانکالا اور فر مایا: رسول اللہ علی اس کو پہنا کرتے تھے، ہم اپنے مریفوں کے لئے اسے دھوکر پلاتے ہیں جس سے شفا حاصل ہوتی ہے (۱)۔

دوسری روامیت میں ہے: ہم اسے دھوتے ہیں اور اس کے ذر معید شفاحاصل کرتے ہیں ^(۲)۔

اومحد باجی سے مروی ہے، وہ کہتے ہیں جضور علی ہے کے بیالوں میں سے ایک بیالہ ہمارے پاس تھا، ہم مریعنوں کے لئے ہی میں پانی ڈالتے بچھے(اور وی پانی مریعنوں کو پلاتے بچھے) کہ وہ اس سے شفا عاصل کرلیں، چنانچے وہ اس سے حت یاب ہوجائے بچھے(^{m)}۔

ح-ان چیزوں سے برکت حاصل کرنا جنہیں حضور میں ہیں حضور علیقہ نے جھوا یا جہاں نماز ریٹھی:

۱۹۷ - صحابہ کرام رضی الله عنیم ان چیز وں سے بھی برکت حاصل کرتے تھے جن سے دست مبارک کالمس ہونا تھا (۱۳)۔

حضور علی کے دست مبارک کے کس اور آپ علی کے دست مبارک کے کس اور آپ علی کے دست مبارک کے کس اور آپ علی کے جب پودالگانے کے ساتھ پیش آیا، جب ان کے موالی نے آئیس تین سوایسی چھوٹی کھجوروں کے پودے لگانے پر مکا تب بنایا جولگ جا کیں اور پھل دینے لگیں، اور چالیس اوقیہ سونے پر، چنانچ رسول اللہ علی ہے نے خود کھڑے ہوکر اپنے ہاتھ سے تمام پودے لگائے، صرف ایک پوداکسی اور نے لگادیا، تیجہ بیہواک حضور علی ہے کہ وی ایک جونے سارے پودے لگ گئے، وی ایک

نہیں لگا جو کسی اور نے لگایا تھا، تو رسول اللہ علی ہے اسے اکھاڑ کر پھر ای جگہ لگا دیا، تو وہ بھی لگ گیا۔ اور ایک روایت میں ہے کہ ان ورختوں نے ای سال پھل ویئے ، سوائے ایک کے، تو رسول اللہ علیہ نے اسے اکھاڑ کر پھر لگا دیا، چنا نچ اس ورخت میں بھی ای علیہ نے اسے اکھاڑ کر پھر لگا دیا، چنا نچ اس ورخت میں بھی ای سال پھل آیا، اور حضور علیہ نے حضرت سلمان کومرغی کے ایڈ کے بر اور سونا دیا، کیکن و بینے سے پہلے اسے اپنی زبان پر رکھ کر پھر لیا، حضرت سلمان نے اس میں سے اپنے آ ٹاؤں کو چالیس اوقیہ وزن کرکے دیا، اور ان کے پاس اتنا باقی نے گیا جنتنا انہوں نے موالی کو دیا

ایک مرتبہ رسول اللہ علی نے حضرت حظلہ بن حذیم کے سر پر دست مبارک پھیر ااور ہر کت کی دعافر مائی ، تو حضرت حظلہ کے پاس کوئی آ دمی لا یا جاتا جس کے چہرہ پر ورم ہوتا یا بکری لائی جاتی جس کے خضن میں ورم ہوتا ، اور اسے اس جگہ پر لگادیا جاتا جہاں رسول اللہ علیہ ہے ہاتھ پھیر اتھا تو ورم دور ہوجا تا کا

آپ علی کی خدمت میں بیاروں ، اپا جموں اور پا گلوں کو لایا جاتا تھا، اور آپ علی اپنادست مبارک ال پر پھیر دیتے ،جس کے نتیج میں بیاری ، پاگل بن اور جسمانی معذوری میں جو بھی مصیبت ان کولاحق ہوتی وہ دور ہوجایا کرتی تھی (۳)۔

ایسے بی وہ لوگ اس بات کے بھی حریص بنھے کہ رسول اللہ میلانیہ ان کے گھر میں کسی جگہ نمازیر کے لیس نا کہ وہ لوگ چر ای جگہ

⁽۱) عدیت سلمانکی روایت بز ار (سهر ۲۹۸، کشف وا ستان طبع الرساله) نے کی ہے پیٹمی نے انجمع میں کہا ہے کہ اس کے رجال سیج کے رجال ہیں (۹؍ ۳۳۷ طبع القدی)۔

⁽۲) حدیث مختلار بن حذیم کی روایت احد (۸۵ ۲۸۰۱ طبع کیرریه) نے کی ہے۔ تیقمی نے انجمع (۸۷ ۱۸ طبع القدی) ش کہاہے کہ اس کے رجال کنتہ ہیں۔

⁽m) كيم الرياض سرك ١٠١٧

⁽۱) عدیث اساء بت اَ لِی کرکی روایت مسلم (سهر ۱۶۴۱ طبع کولی) نے کی ہے۔

⁽٢) ليم الرياض في شرح شفاء القاضي حياض سهر ١٣٣٠ ـ

⁽m) مسيح مسلم مع شرح الامام النووي ١٢٣ سـ ١٣٣ ـ

⁽۴) صحیح مسلم بشرح الا ما م النووي ۱۸۳۸، اشغاء لقتاضی عیاض از ۴۷۸۔

تبزک ۱۵ –۱۶، تبسط

نماز پر محا کریں اور حضور علی ہے کی بر کت انہیں ماتی رہے، حضرت متنبا ن بن ما لک سے جو کہ ہدری صحابی ہیں ،مروی ہے، وہ فر ماتے ہیں: میں اپنی قوم بنی سالم کونماز پڑھا تا تھا،میرے اور ان کے درمیان ایک وادی تھی، جب بارش آئی تومیرے لئے اسے بارکر کے ان کی محد تک جانا دشوار ہوجاتا، میں رسول مللہ علیہ کے پاس آیا اور عرض کیا جمیری نگاہ کمزور ہے، اور بدوادی جومیرے اورمیری قوم کے درمیان بہتی ہے،جب بارش آتی ہے تو اس کو یار کرنا میرے لئے دھو ار یہ وجاتا ہے، میں جاہتا ہوں کہ آپ میرے یہاں تشریف لائمیں اور میرے گھر میں تسی جگه نماز پڑھ لیس ،نو میں بھی اس جگه کونماز کی جگه ،نالوں ،رسول اللہ ملائق في مايا: "سافعل إن شاء الله "(ايما كردون كا اكر الله في علیا)، چنانبی دوسرے دن جب دن چڑھ گیا تورسول مللہ علیہ اور حضرت ابو بكر تشريف لائے، رسول اللہ عليہ في ندر آنے كى اجازت ما تکی، میں نے اجازت دے دی، حضور علی میلی میشے نہیں، کھڑے ی کھڑ نے مایا:تم کس جگہ جا ہتے ہو کہ میں تمہارے گھر میں نماز پڑھوں؟ میں نے ال جگہ کو اثارہ سے بتایا جہاں میں چاہتا تھا کہ حضور علی نماز راهیں، چنانچ رسول الله علی نے اللہ اکبر کہ کر نیت باندهی، ہم نے آپ کے پیچھے صف لگائی، آپ علی نے دورکعت نماز پر بھی پھر ساام پھیر ہ جب آپ نے ساام پھیر اتو ہم نے سلام پھیردیا⁽¹⁾۔

سوم-آب زمزم سے برکت حاصل کرنا:

10 - علاء ال طرف كئے ہيں كه آب زمزم كابيا دنيا وآخرت كے مقصد كے حصول كے لئے سنت ہے، اس لئے كه وہ با بركت ہے، رسول الله

(۱) عدیث غنبان بن مالک کی روایت بخاری (فتح المباری ۳۳۳ سطیع استانیه) ورسلم (ار ۵۵ سطیع الحلی) نے کی ہے۔

میلینج نے ارثا فر مایا: "ماء زمزم لما شوب له" (۱)(آب زمزم ہر الم مقصد کے لئے ہے جس کے لئے اسے پیاجائے)۔

چہارم- نکاح میں بعض زمانوں اور جگہوں سے برکت حاصل کرنا:

11-جمبور ملاء کا فدہب ہے کہ عقد نکاح مجدیں اور جمعہ کے دن کریا مستحب ہے، تا کہ مجد اور جمعہ کے دن کی برکت حاصل ہو، رسول اللہ میں نے ارشاد فر مایا: " اَعلنوا هذا النكاح، واجعلوه فی المساجد، واضوبوا علیه باللفوف" (۱۳) (ال نكاح كا اعلان كرو، اورا ہے مجدیل كرواور (اعلان کے لئے) ال بردف بجاؤ)۔

تنبسط

ر کھئے:" توسعة"۔

- (۱) عدیث: امماء زمزم لها شوب له" کی روایت احمد (۳۵۷/۳ طبع لمیریه)نے کی ہے، منذری نے اسے حج قر اردیا ہے جیسا کہ النقاصد الحمصہ للنواوی (رص ۳۵۷ طبع الخانجی) میں ہے۔
- مورے: "أعلموا هذا الدكاح واجعلوه في المساجد......" كي روايت
 رُندي (سهر ۴۹٠ طبع الحلي) نے كي ہے اور كہا ہے كہ اس بإب ميں يہ
 عديث غربيب حسن ہے اور عبي بن ميمون الصاري جو اس كے راوي بين، وه
 عديث كرميا ملہ ميں ضعيف مانے جائے ہيں۔

تع بتغض ، تبعته ، تبعيض ١-٢

تبعيض

تعریف:

ا - جعیض لفت بین تجزید (یعنی ابر او بنانا) کے معنی بین ہے، اور وہ "بعض المشیء تبعیضا" کا مصدر ہے، یعنی ایل نے اس کونگر ب ککر ہے یعنی الگ الگ جز بنایا ،بعض المشیء: شی کے جز کو کہتے ہیں، اور وہ شی کا ایک حصہ ہوتا ہے، خواہ کم ہویا زیادہ، ای سے ہے: الحدوا مالله فبعضوہ (انہوں نے اس کا مال لیا اور اس کی تبعیض کردی یعنی اسے اجز او بیں الگ الگ کیا) (ا)۔ کلامہ تبعیض فقہا و کے استعال میں بھی ای معنی میں ہے۔

متعلقه الفاظ:

تفريق:

1- تفویق: "فرق الشی تفویقا" کا مصدر ہے، یعنی فصله أبعاضا (اس نے اس کوبعض بعض کر کے الگ کیا)، لبد ایہ بعیش اور قرق کرنے کی ضد ہے۔ کباجاتا اور قرق کرنے کی ضد ہے۔ کباجاتا ہے: "فرقت بین الوجلین فتفوق" (یس نے دوآ دمیوں کے انگل میں تفریق کی، ایس وہ جدا جدا ہوگئے)۔ این الاعرابی نے کبا: "فرقت بین الکلامین فافتوقا" بغیر تشدید کے ہے، اور "فرقت بین الکلامین فافتوقا" بغیر تشدید کے ہے، اور "فرقت بین الکلامین فتفوقا" تشدید کے ساتھ ہے، مخفف کا

(۱) مختار الصحاح، المصباح لمبير، تاج لعروس مادة " بعض" _

تبع

د کیجے:''نالع''۔

تنبغض

د کھیئے:''تبعیض''۔

تنبعته

و یکھئے: ''اتبات''اور'' ضان''۔

ستعال معانی میں کیا گیا اور مثقل (مشدد) کا استعال اعیان میں کیا گیا ہے، ان کے علاوہ لوگوں نے بیان کیا ہے کہ دونوں ایک عی معنی میں ہیں، اور مثقل (مشدد) مبالغہ کے لئے ہے (۱)، اور تفریق دوجیز وں کے درمیان تمییز کے معنی میں بھی آتی ہے۔

شرعی تکم:

سا - بعیض کاکوئی عام اور جامع تکم نبیں ہے، اور اسے سی ایک تکم پر جع کرنا بھی ممکن نبیں ، اس کا تحکم ان چیز وں کے مختلف ہونے سے مختلف ہونے سے مختلف ہونا رہتا ہے جوال سے تعلق ہوں، جیسے عبا دات ، معاملات ، دعاوی، جنایات وغیر دجیسا کو تقریب آئے گا۔

اہم قواعد جن برجعیض کے مسائل واحکام بنی ہیں:
سم قواعد جن برجعیض کے مسائل واحکام بنی ہیں:
سم جواز اور عدم جواز کے اعتبار سے مجعیض کے احکام مختلف
ندا بب کے بہت سے قواعد تھ بہہ پر سمنی ہیں، ان میں سے اہم قواعد کو
ہم اجمالی طور پر ذیل میں بیان کرتے ہیں:

الف-قاعدہ''غیرمتجری کے بعض کا ذکر کل کے ذکر کی طرح ہے'':

۵- لہذ اجب کوئی شخص اپنی ہوی کونصف طااق دیے تو ایک طااق واقع ہوگی، یا نصف عورت کو طااق دیے تو (پوری عورت) مطاقلہ ہوجائے گی (۳)۔

حفیہ کے بیباں اس قاعدہ کے اور بھی فروٹ ہیں، جن میں سے بعض کا ذکر ان کی جگہ پر آئے گا، اس کی نظیر شا فعیہ کا بیاقاعدہ ہے:''جو چیز مجھیض کو قبول نہ کرے، اس کے بعض کا اختیار کرنا کل کے اختیار (۱) مختارالصحاح، محیط الحیط ملسان العرب الحیط۔

(r) وأشاره الطائر لا بن تجمره ١٨٥_

کرنے کی طرح ہے، اور بعض کا ساتھ کرناکل کے ساتھ کرنے کی طرح ہے'(۱)۔

ب- جوچیز برل ہوکر جائز ہوئی ہو وہ بعیض کی وجہ سے
ایک ساتھ بدل اور مبدل منہ میں داخل نہیں ہو کئی:

۲ - کہذار افعی عدد کے باب میں کہتے ہیں: ایک می واجب بعض
اسل اور بعض بدل کے ساتھ او آئیں ہوسکتا، جیسے کفارہ کی صورتیں اور
جیسے تیم وضو کے ساتھ، لبنہ ان میں سے ایک کے ساتھ ہوسکتا ہے،
جیسے کوئی شخص پانی اتنا پاتا ہے جو اس کے وضو کے لئے کافی نہیں تو وہ
جیسے کوئی شخص پانی اتنا پاتا ہے جو اس کے وضو کے لئے کافی نہیں تو وہ
اس پانی کو استعال کرے اور باقی کی طرف سے تیم کر لے (۲) سیا
شافعیہ اور حنا بلہ کے بزدیک جائز ہے، حفیہ اور مالکیہ کے بزدیک
جائز نہیں، جیسا کہ اس کا بیان آئےگا۔

ج-قاعده'' آسان چیز سخت چیز کی وجه ہے ساقط نہیں ہوتی'':

2- این سکی کتبے ہیں: یہ رسول اللہ علی کے اس فر مان الله الله علی کے اس فر مان الله الموت کم بامو فاتوا منه ما استطعتم ((س) (جب میں شہبیں کی چیز کا حکم دوں تو اتنا کرو جینے کی استطاعت رکھتے ہو) ہے متدبط قو امد میں ہے سب ہے شہور قاعدہ ہے، اس کی مثالوں میں ہے یہ ہے کہ اگر نماز پرا سنے والاسور و فاتنی کے بعض حصہ پرا سنے پر قادر ہوتو ہے کہ اگر نماز پرا سنے والاسور و فاتنی کے بعض حصہ پرا سنے پر قادر ہوتو اتنا پرا هنا اس پر لازم ہوگا۔

اور جیسے اگر صدقۂ فطر کے کچھ صال کی ادائیگی کرسکتا ہوتو اصح

⁽۱) المنكور في القواعد للركثي سهره ۱۳ –

⁽٢) المنعور في القواعد للركثي الر ٩،٢٥٨ ـ ٢٥٥.

⁽۳) حدیث: ''إذا أمونكم بشيء فانوا مده ما استطعتم'' كي روايت بخاري(الفتح ۱۸۱۳ طبع استفيه)اورسلم (۱۸۵۵ هطبع الحلمي) نے كي ہے۔

قول میں اتنا نکالنا اس پر لا زم ہوگا۔ اس قاعدہ سے چندامور مشقی بیں: ان میں سے ایک بیہ ہے کہ پانی نہ پانے والا وہ خض جے حدث لاحق ہواگر برف بااولہ پائے اور اسے پھالنا در وار ہوتو (سیح) مذہب کے مطابق اس سے سرکام کی کرنا واجب نہیں، اور جیسے اگر کوئی شدہب کے مطابق اس سے سرکام کی کرنا واجب نہیں، اور جیسے اگر کوئی شخص تر تبیب وار واجب ہونے والے کفارہ میں غلام کے بعض حصد کا مالک ہوتو اس پر اتنا غلام آز او کرنا قطعاً واجب نہیں ہے، اس لئے ک شریعت نے قطعی طور بر کھمل غلام آزاد کرنے کا تھم ویا ہے (ا)، ان ادکام کی تفصیل آگے آئے گی۔

احکام معیض طہارت میں تبعیض : ۸ - فقار میں ت

۸ - فقرہاء کا اتفاق ہے کہ جمیض طبیارت میں پائی جاتی ہے:

اگر کسی شخص کا ہاتھ کہنی ہے کٹا ہوتو فرض کئے گئے حصہ میں ہے جو ہا تی ہووا ہے دھوئے گا، ای طرح ہر وہ عضوجس کا بعض حصہ ساتھ ہوجائے تو ہا تی حصہ کے ساتھ دھونے یا مسلح کرنے کا تھم ہاتی رہے گا، چونکہ قاعدہ ہے:"المیسور لا یسقط بالمعسور"(۲) (آسان چیز سختی یا تنگی کی وجہ ہے ساتھ فیس ہوتی)۔

اگرجنی شخص صرف اتنا پائی پائے جوبعض اعضاء کے دھونے کے لئے کافی ہوتو حفیہ ، مالکید ، این منذر کا مذہب اور امام ثانعی کے دیتو وقو حفیہ ، مالکید ، این منذر کا مذہب اور امام ثانعی کے دیتو لوں میں سے ایک تول ہیہ ہے کہ وہ تیم کر لے اور پائی کو چھوڑ وے ، کیونکہ بیپائی اسے پاک نہیں کرے گا، لہذا اس کے لئے اس کا استعمال ہے ، اور اس لئے کہ اس میں بدل اور مبدل منہ کو جمع کرنا ہے ، اور اس لئے کہ اس میں بدل اور مبدل منہ کو جمع کرنا ہے ، اور اس لئے بھی کہ جو چیز بدل کے

طور پر جائز ہوتی ہے اس میں معیض داخل نہیں ہوتی ، یکی حسن ، زہری اور حماد کا بھی قول ہے۔

حنا بلدکا مُدہب اور امام ثنافعی کا دوسر اقول بیہے کہ است یا ٹی کا استعمال کرنا اس پرلا زم ہے، اور باقی کے لئے تیم کرے، عبد دہن ابی لبا بہ اور معمر اس کے قائل ہیں، اور اس طرح کی بات عطاء بھی کہتے ہیں (۱)۔

اگر ایسا شخص جسے حدث اصغر لائل ہو، ال پائی کا پچھ حصہ
پائے جو وضو کے لئے کانی ہوتو اس کا تھم بھی ان لوگوں کے فزد یک
مختلف نہیں ہوگا جو بدل اور مبدل منہ کے جمع کرنے کو جائز نہیں
کتے (لیعن تیم کرے گا اور پائی کا استعال نہیں کرے گا) بٹا فعیہ کے
فزد یک اصح قول کے مطابق اس کا استعال واجب ہوگا، بہی حنابلہ کی
بھی ایک رائے ہے، اس لئے کہ وہ پائی کے ذریعہ بعض طہارت پر
قادر ہے، لہذ اجنبی کی طرح است پائی کا استعال لا زم ہوگا، جیسے کہ
قادر ہے، لہذ اجنبی کی طرح است پائی کا استعال لا زم ہوگا، جیسے کہ
قر جنبی کے بدن کا بعض حصہ تندرست ہوتا اور بعض ذمی (تو
تندرست والے حصہ کے مطابق یائی کا استعال لا زم تھا)۔
تندرست والے حصہ کے مطابق یائی کا استعال لا زم تھا)۔

حنابلہ میں سے ان لوگوں کا ماخذ جو اس صورت کو جائز نہیں کہتے ، یہ ہے کہ صدت اصغر کا ختم کرنا اس طرح ممکن نہیں کہ پچھ نتم ہو اور پچھ نتم نہ ہو، لبذ اات بائی کے استعال سے مقصود حاصل نہ ہوگا ، یا اس لئے کہ بعض اعضاء سے صدت اصغر کو نتم کرنا ممکن تو ہے کیکن چونکہ یہاں لیے در ہے دھونے میں خلل پڑے گا، اس لئے دھونا باطل یہاں سے در ہے دھونے میں خلل پڑے گا، اس لئے دھونا باطل ہوجائے گا، لہذ اکوئی فائدہ نہیں رہے گا، یا اس لئے کہ حدث لاحق ہوجائے گا، لہذ اکوئی فائدہ نہیں رہے گا، یا اس لئے کہ حدث لاحق ہوجائے والے شخص کے بعض اعضاء کا دھونا مشر وئ نہیں ہے ، بخاناف

⁽۱) لأشبا ه النظائر للسيوطي ر ۲ ۱۲، له يحو ر في القواعد للورثي الر ۲۳۷، ۳۳۱_

⁽٣) - ابن عابدين الر٦٩، حاهمية الدسوقي الر٨٨، روصة الطالبين الر٥٣، لأشباه والنظائرللسيوفي ١٣٣، أمنني الر١٣٣-

⁽۱) ابن عامد بن الر۲۷، حاصیة الدسوتی الر۴ ۱۱، روحیة الطالبین الر۴۹، المغنی الر ۲۳۷، ۲۳۸، لأشباه والنظائرللسیوطی ۱۳۲۸، قواعد ابن رجب ۱۱، الموعور فی القواعد للورکشی الر۲۲۸، ۳۵۹،۴۲۹

جنبی کے بعض اعضاء کے دھونے کے (ک ان کادھوا مشر وٹ ہے) (1)۔
ای اختااف پر زخمی اور مریض کا معاملہ ہے جبکہ اس کے بعض بدن کا دھونا ممکن ہوا ور بعض ممکن نہ ہو، تو امام ابو حنیفہ اور امام مالک کہتے ہیں: اگر اس کا اکثر بدن سیجے ہوتو دھوئے ، ور نہ تیم کر ہے، اور اگر معاملہ برقکس ہوتو تیم کر ہے، اور اس لئے ک معاملہ برقکس ہوتو تیم کر ہے، اور اس لئے ک بدل اور مبدل منہ کے در میان جمع کرنا واجب نہیں، جیسے (کفارہ بدل اور مبدل منہ کے در میان جمع کرنا واجب نہیں، جیسے (کفارہ بیل) روزہ رکھنا اور کھانا کھالیا ، حنابلہ کے فرد کیک اس پر اتنا حصہ دھونا لازم ہوگا جنتنا کر ممکن ہو، اور باقی کے لئے تیم ہوگا، اور اس کے قائل مام شافعی بھی ہیں (۲)۔

9 - اور اگر وہ وضوکرے اور اپنے دونوں موزے پر مسح کرے، پھر مدت ختم ہونے سے پہلے دونوں کو اٹار دے نو حضیہ اور مالکیہ کا مذہب، امام شافعی کا ایک قول اور امام احمد کی ایک روایت سے ک اس کے لئے دونوں قدموں کودھولیما کانی ہوجائے گا۔

حنابلہ کا فدہب اور امام شافعی کا دومر اقول ہے کہ جب ال نے مدت ختم ہونے سے پہلے اپنے دونوں موزے اتا ردیئے قو اس کا وضو باطل ہوگیا، ای کے قائل نخعی، زہری، مکحول، اوز ائی اور اسحاق ہیں، یہا ختا اف اس اختا اف پر منی ہے جووضو میں ہے در ہے دھونے ہیں، یہا ختا اف اس اختا اف پر منی ہے جووضو میں ہے در ہے دھونے کے وجوب کے سلسلہ میں ہے، اپس جس نے تفریق کی اجازت دی ہے اس نے دونوں قدموں کے دھونے کو جائز کہا ہے، اس لئے ک ہے اس کے بقید اعتماء دھوئے ہوئے ہیں، اور جس نے تفریق ہے منع کیا ہے اس نے ہور ہے دھونا نہ پائے جانے کی وجہ سے اس کے وضو کیا ہے اس کے وضو کے ایس کے جو اس کے کیا ہے اس نے ہے در ہے دھونا نہ پائے جانے کی وجہ سے اس کے وضو کیا طل قر اردیا ہے۔

ایک موزہ اتار دینااکثر اہل علم کے نزدیک دونوں کے

اتا ردینے کی طرح ہے، ان اہل کلم میں ما لک، توری ، اوز ائی ، عبداللہ بن مبارک، امام ثانعی ، اسحاب رائے اور حنابلہ بیں ، لہذ الل پر دوسر ا
اتا رہا بھی لا زم ہوگا۔ زہری نے کہا ہے کہ بس وی قدم دھوئے جس
سے موزہ اتا راہے ، اور دوسر نے بہت کریں ، الل لئے کہ وہ دونوں دوعضو ہیں ، لہذ اوہ دونوں سر اور قدم کے مشابہ ہوگئے (۱)۔

جیںا کہ یہ جائز نہیں کہ ایک پیرکو دھوئے اور دومرے پرمس کرے، اس لئے کہ شاری نے وضو کرنے والے کو اس بات کے درمیان اختیار دیا ہے کہ وہ دونوں پیر دھوئے یا موزوں پرمس کرلے، اس لئے کہ بدل اور مبدل مند کے درمیان جمع نہیں کیا جاسکتا (۲)۔ ۱۰ جہاں تک سر کے مسح میں مجھیض کا معاملہ ہے تو فقہا ء کرام نے سر کے مسح کی فرضیت پر اتفاق کیا ہے، البتہ مقد ارفرض میں اختاا ف ہے۔

حفیہ اور شافعیہ کا مذہب اور یکی امام احمد کی ایک روایت ہے،
یہ ہے کہ وضوکر نے والے کے لئے سر کے بعض حصہ کامسے کرلیما کافی
ہے، ای کی طرف حسن، توری اور اوز ائی بھی گئے ہیں، سلمہ بن الاکوئ سے منقول ہے کہ وہ اپنے سر کے اگلے حصہ کامسے کرتے ہتے، اور عبداللہ بن عمر تا لور سے کیا کرتے ہتے۔

مالکیہ کاند بب اور یکی امام احمد کی ایک روایت ہے، بیہ کہ ہر ایک کے حق میں پورے سر کامسے کرنا واجب ہے، مگر امام احمد کی روایت ہے، مگر امام احمد کی روایت سے ظاہر بیہ ہے کہ مرد پورے سر کامسے کرے اور عورت کے لئے اتنا کافی ہے کہ وہ اپنے سر کے اسکے حصد کامسے کرے (۳)۔

⁽۱) مايتمرائع۔

⁽٣) - ابن هايد بن ارائه اه جاهية الدسوقي ار ١٩٢١ ، المغنى ار ٥٨ م.

⁽۱) - ابن هاید بین از ۱۸۳ م۱۸۳ ماهید الدسوقی از ۵ ۱۳ موهید فطالسین از ۱۳۳ ما اُنغنی از ۲۸۹ م

⁽٣) - المنعور في القواعد للرركثي الر ٣٥٩، روصة الطاكبين الر ٣٣٣ .

⁽۳) ابن هایدین ار ۱۷، قلیولی وغمیره اروس، شرح الزرقانی اروه، انتخی ار ۱۲۹٬۱۲۵

مستح کی جگہ اور سستح کی جومقدار کافی ہوجاتی ہے، اس کے بیان میں تفصیل ہے جس کا ذکر اس کے مقام پر کیا گیا ہے۔ دیکھیے: اصطلاح'' وضو''۔

نماز میں تبعیض :

۱۱ – ائد اربعد کا ندیب بیدے کہ نماز کے بعض افعال میں تبعیض جائز
 ہیں:
 ہیں سے چندورج ذیل ہیں:

جب نماز پڑھنے والاسورۃ فاتح کا کچھ حصہ پڑھنے پر تا در ہوتو مالکیہ مثا فعیہ اور حنابلہ اس طرف گئے ہیں کہ اتنا حصہ پڑھنا اس پر العزم ہے۔ اس باب ہیں شا فعیہ کے نزدیک اسل یہ تاعدہ ہے: "المعیسور لا یسقط بالمعسور" یعنی اگرکل پرقد رت نہ ہوتو بعض جس پرقد رت ہووہ ساتھ نیس ہوتا۔ اور حنابلہ کے نزدیک یہ تاعدہ ہے: من قدر علی بعض العبادۃ فیما ھو جزء من العبادۃ –وھو عبادۃ مشروعۃ فی نفسہ – فیجب فعلہ عند تعلم فعل الجمیع بغیر خلاف (۱) (بوشخص بعض عبادت پر تادر ہو، تو جوحہ برز عبادت ہو (اور یہ وہ ہے جوئی نفسہ عبادت پر تادر ہو، تو جوحہ برز عبادت ہو (اور یہ وہ ہے جوئی نفسہ عبادت براکس اختاب کے دشوارہ و نے کے وقت اتنا می کراپیا باکس اختاب کے واجب ہے)۔

کیکن حفیہ کے بہاں بیاصول نہیں ہے، اس کئے کہ ان کے نزدیک نماز میں سور وَ فاتح کارِ منامتعین نہیں، بلکر آن کی کوئی آبیت کسی جگہ سے رامددینا کافی ہے (فرضیت ادا ہوجائے گی)(۲)۔ اگر نماز رامضے والاستر چھیانے کے لئے کیڑے کی کچھ مقد ار

پائے تو ائمہ اربعہ کا ندیب بیہ کہ اس پر اتن مقد ارکا استعال قطعی طور پر لازم ہے۔ ایسے عی اگر کوئی شخص رکوئ وجود سے عاجز ہو، مرقیام سے عاجز نہ ہوتو دخنیہ کے علاوہ دیگر مذاہب بیس قیام اس پر لازم ہوگا، اور جب نما زبیس رفع بیرین بلائمی یا زیا دتی کے مکن نہ ہوتو تو اعد مذکورہ کی بنیا دیر جتناممکن ہوا تنا کرے (۱)، اور اس وجہ سے کہ رسول اللہ علیہ کی بنیا دیر جتناممکن ہوا تنا کرے (۱)، اور اس وجہ سے کہ رسول اللہ علیہ کا اربیاد ہے: "اِفا آموت کی جامو فاتو اسمنه ما استطاعت میں (۹) (جب بیس تم کوئی چیز کا تھم دوں تو اتنا کرو جتنے کی استطاعت رکھتے ہو)۔

زكاة مين تبعيض:

۱۲ - جس نے نساب کاکوئی جز تصدا ضائع کردیا تا کہ م ہوجائے اور زکا ق اس سے ساتھ ہوجائے تو امام مالک اور حنا بلد کے فزویک زکا ق اس سے ساتھ ہوجائے تو امام مالک اور حنا بلد کے فزویک زکا ق ساتھ نہ ہوگی، اور سال کے آخر میں اس سے زکا ق لی جائے گ اگر اس کا بدل دینایا ضائع کرنا وقت وجوب کے قریب ہوا ہو، اور اگر شروع سال میں بی ایسا کیا تو زکا ق واجب نہیں ہوگی، اس لئے کہ اس میں سیکان نہیں کہ اس نے زکا ق سے فر ار افتیا رکیا ہے، ای کے قائل میں بی ایسا کے اق اور ابوعید ہیں۔

امام شافعی اور امام ابوطنیفہ فرماتے ہیں کہ زکا قال سے ساتھ ہوجائے گی، اس لئے کہ سال پورا ہونے سے پہلے نساب سے کم ہوگیا، لہذا زکاقہ واجب نہیں ہوئی، جیسا کہ وہ اگر اسے اپنی کسی ضرورت میں نتم کردے (۳)۔

⁽۱) الدسوقی ۱۲۳۲۱، روصهٔ الطالبین ۱۲۳۲۱، امنی ۱۲۸۸ م، المواجب السویه علی باش واشیاه و انظائر للسیوهی ۱۳۲۸، واشیاه و انظائر للسیوهی ۱۳۲۸، ۱۳۳۳، المنعور فی القواعد للورخی از ۲۲۷، ۲۲۸، قواعد این رجب راب

⁽۲) این هایدین ار ۴۰۰، انتنی ار ۲۵س.

⁽۱) ابن هاید بین از ۷۷۳،۹۰۵، ۵۰ هاینه الدسوقی از ۳۵۸، ۵۸۸، روهنه اطالبین از ۳۸۱، ۳۳۳، ۲۳۸، ۲۸۹، اکمنی از ۷۱ مه ۵۰ مه۵۹،۵۹۵

⁽٢) عديك: "إذا أمو لكم" كُلِّرْ يَحْ نَقْره مُبرر الش كذر يكل ـ

⁽٣) ابن عابدين سهر ٢١، الدسوقي الرساعات، روهنة الطالبين ١٩٠٥، أغنى ١٣/٩١٩ -

روزه میں تبعیض :

ساا - ایک دن کے پچھ حصہ کا روز ہیجے نہیں ، کہند اجو شخص دن کے پچھ حصہ میں روزہ رکھنے کی قدرت رکھتا ہوائی پر روزہ رکھنالا زم نہیں ہے ، اس لئے کہ بیشر می روزہ نہیں ⁽¹⁾۔

لیکن جو خص رمضان المبارک کے پچھ دنوں کے روزہ رکھنے کی قد رت رکھے اور پورے رمضان کے روزوں کی قد رت نہ ہوتو ال پر استے روزے لازم ہیں جینے کی استقد رت ہے، اس لئے کہ اللہ تعالی کا اربٹا و ہے: "فَمَنُ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهُوَ فَلْيَصْمُهُ، وَمَنُ كَانَ مَربِيضًا أَوْ عَلَى سَفَوٍ فَعِدَّةٌ مِنْ أَيَّامٍ أَخُو" (٢) (سوتم میں ہے جو کوئی میں ہے جو کوئی اسمبید نکویا ہے ، الازم ہے کہ وہ (مبید نیم) روزہ رکھے اور جو کوئی بیار ہو یا سفر میں ہوتو (اس پر) دومر دونوں کا شارر کھنا (الازم) ہے)۔

حج میں شبعیض : الف-احرام میں شبعیض :

۱۹۲۱ – فقہاء کا آس پر اتفاق ہے کہ جمیش ، احرام کے منعقد ہونے میں مؤٹر نہیں ، لہذا جب اس نے یوں کہا: ''میں نے نصف نسک کا احرام باندھا''تو پور نسک (جج) کا احرام ہوگیا۔ اس لئے کہ قاعدہ ہے: ''المصاف للجزء کالمصاف للکل" (جز کی طرف فبعت کل کی طرف فبعت کل کی طرف فبعت کل کی طرف فبعت کل کی طرف فبعت کرنے کی طرح ہے) ، اورایک قاعدہ ہے: ''ذکو بعض ما لا یتجز آ کذکو کله" (اس چیز کے بعض کا ذکر جو تشیم نہ ہو سکے ،کل کے ذکر کی طرح ہے) ، اورا یسے جی بے قاعدہ فرکر جو تشیم نہ ہو سکے ،کل کے ذکر کی طرح ہے) ، اورا یسے جی بے قاعدہ فرکر جو تشیم نہ ہو سکے ،کل کے ذکر کی طرح ہے) ، اورا یسے جی بے قاعدہ واسقاط بعضه کا ختیار کله ، واسقاط بعضه کا ختیار کله ، واسقاط بعضه کا حقیار کله ، واسقاط بعضه کا مقاط کلہ (۳) (جو چیز شبعیض کو قبول نہ واسقاط بعضه کا اسقاط کلہ (۳)

کرے اس کے بعض کا افتیار کرنا کل کے افتیار کرنے کی طرح ہے، اور اس کے بعض کا ساتھ کرنا کل کے ساتھ کرنے کی طرح ہے)۔

میسا کہ اہل ہلم کا اس پر اجمائ ہے کہ پورے ہر کے ڈھا گئے

اور بعض ہر کے ڈھا گئے، ای طرح عورت کے لئے پورے چرہ کے

ڈھا گئے (یا بعض چرہ کے ڈھا گئے)، پورے اختوں کو کائے، یا

بعض یا ختوں کو کائے، اور پورے ہر کو منڈ وانے یا بعض ہر ڈھا گئے

منڈ وانے کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے، لہذا تحرم کوبعض ہر ڈھا گئے

منڈ وانے کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے، لہذا تحرم کوبعض ہر ڈھا گئے

ہے جی منع کیا گیا ہے، جیسا کہ پورے ہر کے ڈھا گئے اور کائے منع کیا گیا

ہے۔ ای طرح دوہرے اعتماء کے ڈھا گئے اور کائے میں ہے، اس

ہے۔ ای طرح دوہرے اعتماء کے ڈھا گئے اور کائے میں ہے، اس

لئے کہ رسول اللہ علی ہے ارشا فر بایا: "لا تُحَمّوو اور اسکہ" ()

(مت ڈھا کو اس کے ہر کو)۔ جس چیز سے روکا گیا ہواں کے بعض کا

کرنا بھی حرام ہے، ایسے می جب اللہ تعالی نے فر بایا: "و لا تعلقوا ا

رؤ وسکھ میں، "() (اوراہے ہر وں کوند منڈ اؤسس)، تو اس نے لئے ابحض ہر کے منڈ وانے کو حرام کردیا ()، اور بعض اور کل کے اعتبار

یہ جو فرق مرتب ہوتا ہے وہ دم اور فد سے کائے، اس کے لئے

"حرام" اور "حج" کی اصطال ح دیکھی جائے۔

" احرام" اور "حج" کی اصطال ح دیکھی جائے۔

ب-طواف میں سبعیض:

10 - فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ طواف پورے ہیت اللہ شریف کا بی مشروع ہے، اگر ہیت اللہ کا پچھ حصہ بھی طواف میں چھوڑ دے گا تو طواف باطل ہوجائے گا^(س)، حفیہ کہتے ہیں کہ اگر حطیم کے اندر

⁽۱) المواہب المنزية على بأش لأشباه والنظائر للسيوفي رقع من سوقو اعدا بن رجب روا۔

⁽۲) سورۇيقرە، ۱۸۵

⁽m) المحكور في القواعد للركتي سرسه ان هاه الأشباه والنظائر لابن مجيم ره ١٥ س

⁽۱) عدید: " لا نخمو و ا رأسه..... "كي روايت بخاري (الفتح ۱۳۹/۳۱ طبع استاني) ورسلم (۱۵/۲ ۸ طبع مجلس) نے كي ہے۔

⁽۲) سورۇيقرەر ۱۹۹ـ

⁽۳) - ابن عابد بن ۳ ر ۱۹۳ ، ۲۰۱ ، ۲۰۱ ، ایمطاب سهر ۱۳۰ ، ۱۹۳ ، روهند الطاکیین سهر ۱۳۵۵ ، ۱۳۷ ، ۲ سار ۱۳۵۵ ، ۲ سار ۱۳۸۹ س

⁽٣) البطاب سر ا۲،۷ ۲، روه يه الطالبين سر ۸۰، ۸۱، المغنى سر ۸۳، ۳۸۳ س

طواف کیا ہے تو اس پر لا زم ہے کہ چھوڑ ہے ہوئے حصہ کے طواف کی قضا کرے، اگر قضائییں کرے گا تو دم لا زم ہوگا(ا)، اور رہا مسئلہ طواف کے چکروں کی تعداد کا تو اس میں پورے سات چکروں ہے کم کرنا جائز نہیں، البنتہ حفیہ کا اس میں اختلاف ہے، وہ کہتے ہیں: چار چکررکن (فرض) ہیں، اور جو اس پر زیا دہ ہیں وہ واجب ہیں۔

شا فعیہ نے سراحت کی ہے کہ طواف میں ضروری ہے کہ ابتداء میں پورے بدن کے ساتھ پورے چمر اسود سے گزرے، لہذا اگر اس کا بعض بدن چمر اسود کے مقاتل رہا اور بعض بدن بیت اللہ کے درواز ہ کی جانب چمر اسود سے آگے ہڑھ جائے تو اس میں ثنا فعیہ کے دوتول ہیں:

جدید قول ہے ہے کہ اس چکر کو ثار نہیں کیا جائے گا،قدیم قول ہے ہے کہ ثار کیا جائے گا۔

حنابلہ کے فزو کے دونوں احمال ہیں، بہر حال اگر پورے بدن کے ساتھ بعض حجر اسود کے مقاتل میں آگیا اور بعض کے بیں آیا تو اس کے لئے کافی ہوجائے گا، جیسا کہ اس کے لئے بیات کافی ہوجاتی ہے کہ نماز میں پورے بدن کے ساتھ کعبہ کے بعض حصد کا استقبال کرے (۲)۔

نذرمین تبعیض :

17- جس نے نصف رکعت نمازیادن کے بعض حصہ میں روزہ رکھنے کی نذر مانی تو حفیہ اور مالکیہ کہتے ہیں کہ اس پر پھیل واجب ہوگی، روزہ کی تخیل واجب ہوگی، روزہ کی تھیل یہ ہے کہ پورے دن کا روزہ رکھنا ہوگا، یہی شافعیہ کے بزو کے بھی ایک قول ہے، کیکن حفیہ میں امام محمد اور زفر اور مالکیہ میں این الماجھون اس کے قائل نہیں ہیں۔

ال مسئلہ میں ثافعیہ کا ایک ضعیف قول ہیہ کو دن کے بعض حصہ میں مفسد صوم مور سے رک جانا ال کے لئے کائی ہوگا، ال ہناپر کہ جس چیز کی نذر سیجے ہوتی ہے اس کی جنس سے کم از کم مقدار پر نذر محمول ہوتی ہے، اور دن کے بعض حصے میں مفسد صوم امور سے رک جانا بھی روز دبی ہے، فقہاء کا نماز کے بارے میں بھی اختااف ہے، امام بو میسف کا ند بب، حنابلہ کی اختااف ہے، امام بو میسف کا ند بب، حنابلہ کی ایک روایت اور شام بو میسف کا ند بب، حنابلہ کی ایک روایت اور شام نویے کہ دورکعت سے کم کانی ند ہوگی۔

جرہزی نے "شرح القرائد البہیة" بین نقل کیا ہے کہ یکی معتلد ہے اوراس تاعدہ کے موافق ہے کہ" جوچیز جعیض کو قبول نہ کرے اس کے بعض کا افتیا رکرنا کل کے افتیار کرنے کی طرح ہے، اور بعض کا سا قوکرنا کل کے سا قوکرنے کی طرح ہے"۔ اوراس لئے کہم سے کم نماز جوشر ت سے نابت ہے وہ دورکعت ہے، لہذ انڈ رکوائی برمحمول کرنا واجب ہے۔

مالکیہ کا مذہب اور حنابلہ کا ایک قول میہ ہے کہ ایک رکعت بھی کافی ہوجائے گی، کیونکہ کم سے کم نماز ایک رکعت ہے۔

شافعیہ اسے قول میں، مالکیہ میں سے ابن الماجشون اور حفیہ میں سے ابن الماجشون اور حفیہ میں سے ابن الماجشون اور حفیہ میں سے امام محمدو امام زفر ال طرف گئے ہیں کہ اس حالت میں جب کہ اس نے نصف رکعت یا دن کے بعض جصے کے روزہ کی نذر مانی ہے، اس کی نذر منعقد نہیں ہوگی، کہذا اس پر پچھالازم نہ ہوگا اور نذر کو یوراکرنا واجب نہ ہوگا (1)۔

ان سب کی تفصیل کے لئے ''نذر'' اور'' اُئیان'' کی اصطلاح کی طرف رجوع کیاجائے۔

⁽۱) این عابرین ۱۲۷/۱ (

⁽۴) روهنة الطاكبين سهر ۸۰، أمغني سهر ۱۷سـ

⁽۱) الحطاب ۱۲ را ۵ س، روهند الطالبين سهر ۵ وس، ۱۳۳۳، المغنی ۱۹ را ۱، وأشباه المعبوطي رسه ۱۰ ا

^س غاره میں تبعیض :

1- کفارہ بیں جینے کا مذہب اور حنابلہ کا ایک قول بیہ کہ کفارہ بیں اختابات ہے، مالکیہ اور ثا نعیہ کا مذہب اور حنابلہ کا ایک قول بیہ کہ کفارہ بیں جعیض جائز جیں، لہذا ایہ جائز جین کہ نصف فلام آز اوکر ہے اور ایک ماہ کے روز ہے رکھے اور تیس مسکینوں کو کھانا کھلائے، یا کفارہ کیمین اس طرح اواکر ہے کہ پانچ مسکینوں کو کھانا کھلائے اور پانچ مسکینوں کو کٹر اوے، اس لئے کہ جس چیز بیں کھانا کھلائے اور پانچ مسکینوں کو کٹر اوے، اس لئے کہ جس چیز بیں تخییر جائز ہوتی ہے اس بیں جعیض جائز جین ، اللہ تعالی کا ہے شخص کا حق ہواور وہ جعیض پر راضی ہو، یباں پرحق ، اللہ تعالی کا ہے شخص کا حق ہواور وہ جعیض پر راضی ہو، یباں پرحق ، اللہ تعالی کا ہے (اور جعیض پر اللہ کی رضامعلوم ہیں) (۱)۔

حفیہ کا مُدہب اور حنا بلہ کامشہور قول سیہ ہے کہ کفارہ میں تبعیض جائز ہے۔

حنابلہ کہتے ہیں کہ اگر مطاقا پانچ مسکینوں کو کھانا کھا! یا اور پانچ کو کھڑا دیا تو جائز ہے، اس لئے کہ اس نے اس کے بعد نص بیس ذکر کردہ واجب عددکو پوراکر دیا ہے، لہذ اکانی ہوجائے گا، جیسا کہ اگر اس کو ایک جنس سے نکا تا۔ حفیہ کے بزدیک کھانا کھا! نے کی طرف سے کانی ہوجائے گا بشر طیکہ یہ کھانا کھا! نے کی طرف سے کانی ہوجائے گا بشر طیکہ یہ کھانا کھا! نا، کپڑ ایپنا نے کے مقابلے بیں سستا ہواور اگر بر تکس ہوتو جائز نہ ہوگا۔ جوازیا عدم جواز کی یہ صورت اطعام اباحت بیں ہوتی (کھانے پر قدرت دی ہولے جانے کی اجازت نہ دی ہو)، لیکن اگر کھانے کا مالک بنادیا ہوتو ہر صورت کی اجازت نہ دی ہو)، لیکن اگر کھانے کا مالک بنادیا ہوتو ہر صورت بیں جائز ہے، (جائے کھانا، کپڑے سے سستا ہویا کپڑ اکھانے سے ستا ہویا کپڑ اکھانے کا مقام مانا جائے گا(۱۲)۔

بيع مين سبعيض:

14 - نظ میں بعیض جائز ہے جب کہ قبضہ کرنے اور حوالہ کرنے میں باکع اور مشتری میں سے کسی کو ضرر الاحق نہ ہو، یا وہ ضرر جہالت اور جگڑ ہے کا سبب نہ ہے، اللہ معاملہ میں کوئی اختاا ف نہیں ہے، البتہ فقہاء کا اُن آ ٹاروشائ میں اختاا ف ہے جو بعیض کے قو رئ پر مرتب ہو۔ تے ہیں، ذیل میں اس کا بیان آرہا ہے:

جوعقد کسی مثلی چیز جیسے مگیلی یا موزونی یا ذرائی (لیعنی ہاتھ یا گر اے بو ان چاہے کے باتھ یا گر اسے باتھ ہا گر جو ذوات القیم میں ہے بو واقع ہوا ہونو اس کے مختلف ہوئے ہے بعیض کا تھم بھی مختلف ہوگا۔

19 – اگر عقد کسی مثلی (نا پی یا تولی جانے والی) چیز پر ہوا ہوا وار اس کی مجینے شرر نہ ہو، جیسے کسی نے غلہ کا ڈھیر اس شرط پر چچا کہ وہ سو تغییر ہے سودرہم میں، اور وہ اس سے کم یا زیا دہ اکا ا، تو حفیہ کا مذہب یہ ہے کہ خرید نے والے کو اختیار ہوگا کہ آئی کو اس کے حصہ شمن سے کہ خرید نے والے کو اختیار ہوگا کہ آئی کو اس کے حصہ شمن سے اور حنابلہ کی دو رایوں میں سے ایک رائے کہی ہے، کیونکہ صفقہ اور حنابلہ کی دو رایوں میں سے ایک رائے کہی ہے، کیونکہ صفقہ اسے فیخ کا اختیار ہوگا جی طور ت میں ہوتا ہے۔ اسے فیخ کا اختیار ہوگا جی طورت میں ہوتا ہے۔ اسے فیخ کا اختیار ہوگا جی طورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔ اور جیسے صفت کے نقصان کی صورت میں ہوتا ہے۔

حنابلہ کی دوسری رائے رہے کہ اسے اختیار نہیں ملے گا، اس لئے کہ مقد ارکا نقصان باقی ماندہ کیلی چیز میں عیب نہیں، برخلاف غیر کیلی کے (کہ اس میں عیب ہے)۔

اور حنفیہ کے زوریک مثلی چیز میں نقصان کے وقت اختیار دینا اس صورت کے ساتھ مقید ہے جبکہ پوری بیٹی یا پھھ بیٹی پر قبضہ نہ ہوا ہوا کیکن اگر نقص کا علم ہونے کے باوجود قبضہ کر لیا تو اختیار نہیں رہے گا، بلکہ نقصان کو لوٹا لے گا۔ علاوہ ازیں بیاختیار اس بات کے ساتھ بھی مقید

⁽¹⁾ الجيطاب سهر ٢٤٣، روصة الطالبين ٨٨ واسم أمومو رقى القو اعدللوركشي ار٢٥٥ س

⁽۲) ابن طایدین سهر ۲۱، آمننی ۸۸ و ۵۵، تو اعداین رجب بر ۴۳۹

ہے کہ بین کا مشاہدہ نہ کیا ہوکہ اگر مشاہدہ کرلیا ہوتو دھوکہ کا امکان ختم ہوجائے گا(اور اختیار ہاتی رہے گا)۔

اورالیل وزن کی جانے والی چیز جس کی تبعیض میں ضرر ہو، جیسے کہ اگر کسی نے موتی اس شرط پر فر وخت کیا کہ اس کا وزن ایک مثقال ہے، جب وزن کیا گیا تو زیادہ پایا، تو وہ مشتری کے حوالہ کر دیا جائےگا، اس کئے کہ جن چیز وں کو جعیض نقصان پہنچاتی ہے اس میں وزن کی حیثیت وصف کی ہوتی ہے، جیسے کپڑے میں تا پ (۱)۔

حیثیت وصف کی ہوتی ہے، جیسے کپڑے میں تا پ (۱)۔

منتصیل کے لئے دیکھئے '' خیار'' کی اصطالاح۔

• ۲ - اگر عقد کسی ایسی چیز پر واقع ہوا ہوجس کو ذرائ (ہاتھ یا گز وغیرہ) سے ناپ کرفر وخت کرتے ہیں، جیسے کسی شخص نے کیڑا فر وخت کیا اس شرط پر کہ وہ مثلاً سو ذرائ ہے، ناپا گیا تو کم اکلا، تو حفظہ کے ذریک اور مالکیہ کے ایک قول میں اور یکی اصحاب ثانعی کا بھی قول ہے کہ مشتری اُقل کو پورے شمن کے ساتھ لے لے گا پھی قول ہے کہ مشتری اُقل کو پورے شمن کے ساتھ لے لے گا پھیوڑ دے گا، اور اگر زیادہ اُکلاتو آئی علی قیمت پر تضاء سب کو لے لے گا اور بائع کو کوئی افتیار نہ ہوگا، اس لئے کہ ذرائ (ناپ) تیمی چیز وں میں وصف ہے، جعیض کی وجہ سے اس میں عیب پیدا ہوجا تا جہ ۔ ہر خلاف مقد ار کے جو مثلی یعنی مکیلی اور موزوئی چیز وں میں ہو (کر جعیض ان میں عیب نہیں پیدا کرتی)، وصف کی کوئی قیمت نہیں ہوتی اِ لا یہ کہ ہی اُس کو اُس کے کہ ورہم میں ہے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ہوتی کی وجہ سے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ورائی چیز کی تا میں ہیں ہوتی کی وجہ سے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ورائی چیز کی تا میں ہیں ہوتی کی وجہ سے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ورائی چیز کی تا میں ہیں ہوتی کی وجہ سے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ورائی چیز کی تا میں ہیں ہیں ہیں ہوتی کی وجہ سے وہ مقصود ہوجا نے، مثلاً ورائی چیز کی تا میں ہیں ہیں ہیں ہیں ہیں کے جم ذرائی ایک درہم میں ہے (۱۲)۔

مالکیہ کا دوسر اقول میہ ہے کہ اگر کمی معمولی ہوتوبا تی کالیما لا زم ہے استے شمن کے ساتھ جو اس مقد ار کے مطابق ہو، اور اگر کمی زیادہ ہوتو اختیار دیا جائے گاک ہاتی کو ای کی قیمت کے مطابق لے لیے یا

واپس کردے۔

حنابلہ کے فرد کے زیادتی کی صورت میں دوروایتیں ہیں:

ایک بیہ کہ نے باطل ہے، دوسری بیہ کہ نے سیح ہے، اور جو

زیادہ ہے وہ بائع کا ہوگا، اور اسے اختیار دیا جائے گا کہ زائد مبنے کو

مشتری کے حوالہ کر ہے یا صرف سوذرائ حوالہ کر ہے۔ اگر بائع پوری

(زائد کے ساتھ) حوالہ کرنے پرراضی ہوتو مشتری کوکوئی اختیا رئیس

ہوگا، کیکن اگر زائد کو حوالہ کرنے ہے انکار کرے تو مشتری کو اختیا رہوگا

کہ نے کوشنے کردے یا پورے متعینہ شمن اور زائد والے حصہ کی رقم کے

ساتھ لے لے۔

ائی طرح کمی کی صورت میں بھی حنابلہ کے یہاں دوروایتیں ہیں: ایک میہ ہے کہ بچ باطل ہے، دومری میہ ہے کہ بچ صحیح ہے، اور مشتری کو افتیار ہے کہ بچ کو شنح کردے یا شمن کی اتن عی مقدار ادا کر کے بچ برقر ارر کھے۔

اصحاب شافعی کہتے ہیں: اگر وہ نظے کو باقی رکھنا چاہتا ہے تو پورے شن کے ساتھ بی باقی رکھ سکتا ہے ، یا اگر اس پرراضی نہیں تو نس کردے ۔ اس کی بنیا دائییں کے اس قول پر ہے: " اِن المعیب لیس لمشتو یہ اِلا الفسیخ، اَو اِمساکہ بکل الشمن" (۱) (عیب دار چیز خرید نے والے کے لئے دوی صورتیں ہیں یا تو فنخ کردے یا پھر یورئے من کے ساتھ اس کو باقی رکھے)۔

قیمی (قیمت والی)چیز وں میں تبعیض:

۲۱ - دومری چیزوں میں تبعیض کے سلسلے میں صاحب روضتہ الطالبین نے ذکر کیا ہے: اگر تلوار یا برتن یا ان جیسی چیزوں کا جزء

⁽۱) ابن هابد بن سهره ۱۰، روضه الطالبين سهر ۱۵۵ م، المغنى سهر ۱۳۳۰، استا، ۱۳۳۱، ۱۳۵۱، منح الجليل ۱۴ سهه، ۵۰۵

⁽۱) ابن عابدين سهر ۲۰ يجلة الاحكام العدليه ۲۰ ۴۲۵،۳۲۵، منح الجليل ۴ر ۱۹۵۳.

⁽٣) - ابن عابدين سهر ٢٠٠٠، الدسوقي سهر ١٣٥٥، منح الجليل ٢ م ٥٠٥ ـ 💶

مشترک فروخت کرے نو بچا تھیجے ہے اور وہ مشترک ہوجا کیں گی، اور اگر اس سے پچھ حصہ کو متعین کر دیا اور پیچا تو نیچ سیچے نہ ہوگی ، اس لئے کہ اں کی حوالگی بغیر کا لئے نہیں ہو عمتی، اور اس میں نقص ہے اور مال کو ضائع کرنا ہے۔

ای طرح اگر دیواریا تھیے کامتعین جز وفر وخت کیا اور اس دیواریا تھے پر کوئی چیز (کھڑی) ہے تو بچھ خے نہ ہوگی، اس لئے کہ ال کی حوالگی بغیر اوپری ھے کے منہدم کئے ممکن نہیں ، اور اگر اس کے اور کوئی چیز نہیں ہے تو پھر تفصیل ہے ہے کہ اگر ایک عی نکرا ہے اور مبعیض سے پوراضائع ہوجائے گاتو نکرے بیجنا جا رہبیں ، اور اگرضائع نه ہوتو جارز ہے⁽¹⁾۔

دیگر مذاہب کے قو اعد کا مقتنعی بھی وہی ہے جس کی طرف شافعیہ گئے ہیں۔

خيارعيب ميں تبعيض:

۲۲ - جب دو چیز وں کو ایک معاملہ کے تحت فرید ااور ان میں سے ایک میں عیب یایا، اور دونوں ایسی چیزی بین بین کر تفریق سے ان میں تفض ببیدا ہوجائے گانو اس صورت میں حنابلہ کی دوروایتیں ہیں:

ا یک بیہے کہ یا تو ان دونوں کو واپس کر دے، یا دونوں کور کھے اور عیب کے عوض تا وان لے لے ، اور یبی امام ثا فعی کا ظاہر قول ہے ، اور امام او حذیفہ کا بھی یہی قول ہے اگر مبیع سر قبضہ نہ ہوا ہو، اس کئے کہ ایک لینے اور ایک واپس کرنے میں بائغ کے حق میں حصہ تنہ مرنا لازم آئے گااور مشتری کو بین نہیں ہے۔

دومر اقول بدہے کہ عیب دار کو واپس کردے اور سیجے کوروک

حمن والے سامان کی قیت ہے اتنالونا لے گاجوعیب دارسامان کے ہراہر ہوجائے ، اس لئے کہ شرکت میں ضرر ہے، پیداس صورت میں ہے جب عیب دار سامان وجہ اصفقہ (۲) نہ ہو، کیکن اگر وجہ صفقہ ہوتو مشتری کو اس کے علاوہ دوسرا کوئی اختیار نہیں ہے کہ یا تو پورے کو

واپس کردے ایورے کے ساتھ راضی ہوجائے ^(m)۔

شفعه میں تبعیض :

۳**۷۰** - ابن المئذر كتب بين كه وه نمام الل علم جن كا مُديب جمين يا د ہے اس بات رمتفق ہیں کہ اگر دوشفیع میں سے ایک اینے شفعہ کور ک کردے تو دوسرے کے لئے اس کے علاوہ کوئی اختیار نہیں کہ یا تو سب لے لے میاسب چھوڑ دے، بعض کو لینے کا سے حق نہیں ، بیامام ما لک، امام ثافعی اور اصحاب رائے کاقول ہے، اس لئے کہ بعض کے لینے میں مشتری کو نقصان پہنچانا ہے، کیونکہ اس پر معاملہ کو نگڑے کر دیناہے، اورضر رکوضر رہے دوزنبیں کیا جا سکتا۔

ای طرح اگرشفیع ایک ہوتو ای بنیا دریا ہے بعض مبیع لیما جائز نہ ہوگا، اگر ایسا کرے گاتو اس کا شفعہ سا تظ ہوجائے گا، اس لئے کہ شفعہ میں تبعیض نہیں ہوتی، جب بعض سا تھ ہوگیا تو یورا سا تھ ہوجائے گا جیرہ تصاص ^(۳)۔

کے، قبضہ ہوجانے کے بعد امام ابو حنیفہ کا بھی یہی قول ہے⁽¹⁾۔ مالكيد كاندبب بيد يك كرعيب داركولونانا اوراس كع حدركاتمن واپس لیما جائز ہے جب کرخمن عین ہویامثلی ہو، اگرخمن سامان ہوتو

⁽¹⁾ ابن عابد بن عهر سعه، روصة الطاكبين سرم ٨ من أمغني عهر ١١٥٥ عار

⁽٢) ''وجه الصفاقه" مالكيه كيز: ديك وه چيز كبلاتي ب جس كے مقائل ميں نصف ے زائد حمن آئے۔

⁽m) الحطاب ١٨٥٩ س

⁽٣) بدائع الصنائع ٢٥/٥، لفروق للكراشي ١٩/١١، الجطاب ٢٤٧٥،

⁽۱) روهية الطاكبين مهر وسه الدسوقي سرساه مها، ۵ ۱۳۵ مرخ الجليل مهر ۱۹۹۳

اں باب میں ثا فعیہ کے زویک اصل بیا قاعدہ ہے کہ''جو چیز معیض کو قبول نہیں کرتی اس کے بعض کا اختیار کرنا کل کے اختیار کرنے کی طرح ہے، اور بعض کو ساتھ کرنا کل کے ساتھ کرنے کی طرح ہے''(ا)۔

اور بیا قاعدہ کر" جس میں تخیر جائز ہے اس میں تبعیض جائز نہاں'۔ ناصی حسین اپنے فاوی میں کہتے ہیں: شفیع کو شفعہ لینے اور چھوڑ نے کا اختیار دیا گیا ہے، کہذا اگر شفعہ کے بعض حصہ کولیما چاہے تو اس کواس کاحق نہیں ہوگا(۲)۔

ایسے عی اگر شفیع کے پاس اس کی قیمت کا کیچھ حصہ یونو وہ اس قیمت کے بقد رہیع کا حصہ نہیں لے سکتا، اس لئے کہ قاعدہ ہے کہ کسی چیز کے بعض پر قدرت سے وہ چیز قطعی واجب نہیں ہوتی (۳)۔

پھر بیسب ہاتیں اس صورت میں ہیں جب بہنی کا بعض حصہ بعض ہے متاز نہ ہو، کیکن اگر ممتاز ہو، مثلاً دوگھر ایک عی معالمے افزیج) میں خرید لیے، اور شفیع ان میں سے سرف ایک عی کے لینے کا ارادہ رکھتا ہوجب کہ وہ دونوں کا یا ان میں سے ایک کا شفیع ہود وہر کے کا شفیع نہ ہود آو ال مختلف ہیں (⁽⁷⁾ جن کی جگہ کہ کہ آراء واقو ال مختلف ہیں (⁽⁷⁾ جن کی جگہ کہ کہ اس مسئلہ میں انکہ کی آراء واقو ال مختلف ہیں (⁽⁷⁾ جن کی جگہ کہ کہ اس مسئلہ میں انکہ کی آراء واقو ال مختلف ہیں (⁽⁷⁾ جن

سلم میں تبعیض :

سم ٢- فقنهاء كا ال پر اجهائ ہے كہ مجلس عقد (سلم) ميں راس المال سپر دكر دينا واجب ہے، اگر قبضہ سے پہلے دونوں الگ ہوجا نمیں توان

کے فرد کی عقد باطل ہوجائے گا، اور اگر بعض پر قبضہ سے پہلے الگ ہوجائیں تو حفیہ، شا فعیہ اور حنابلہ کے فرد کیک راس المال کی جس مقد ار پر قبضہ بیس ہوا است میں عقد کام باطل ہوجائے گا۔ یہی بات ابن شہر مہ اور ثوری سے بھی بیان کی گئی ہے۔

مالکیہ نے مجلس عقد میں عن راس المال کے تیر وکر دینے کی شرط لگائی ہے، اگر بعض راس المال کی ادائیگی مؤثر ہوجائے تو ساری تھے سلم فنخ ہوجائے گی (۱)۔

اگر مسلم فید کے بعض میں اقالہ ہوا ہوا ور اس طرح اس میں معین ہوگئی ہوتو حضیہ اور ثافعیہ کا ند بب اور امام احمد کی ایک روایت یہ ہے کہ اس میں کوئی حرج نہیں ہے، اس لئے کہ اقالہ مندوب الیہ ہے (یعنی اقالہ کوشلیم کرلیما اور واپس کی ہوئی چیز کو واپس لے لیما ثو اب کا کام ہے) اور ہر وہ نیک کام جو پورے میں جائز ہوتھوڑ ہے میں جائز ہوتا ہے، جیسے کسی کورض وغیرہ سے ہری کرنا۔ یمی بات میں بھی جائز ہوتا ہے، جیسے کسی کورض وغیرہ سے ہری کرنا۔ یمی بات ایس عبار تھی وہن دینا رہ تھم اور ایس عبد الرحمٰن ،عمر وہن دینا رہ تھم اور شری کے اور کے میں مولور کے ہیں میں جی مروبی دینا رہ تھم اور ایس عبد الرحمٰن ،عمر وہن دینا رہ تھم اور ایس عبد الرحمٰن ،عمر وہن دینا رہ تھم اور میں میں ہے۔

مام احدایک دومری روایت میں ال طرف گئے ہیں کہ بیجائز نہیں۔ ابن عمر معید بن المسیب ،حسن ، ابن سیر بن بخعی ،سعید بن جبیر،

⁼ ۲۸ ۳۸ روهية الطاكبين ۷/۲۰ ا، المغنى ۵/۲۲ س

⁽¹⁾ لمحكور في القواعد للوركثي سر ۵۳ ا_

⁽٣) بوائع العنائع ٥/٩ م، الحطاب ٥/ ٣٨٠٣٣٠.

⁽۱) ابن عابدین مهر ۴۰۹،۲۰۸، ایملاب مهر ۱۵،۲۰۸، روهند فطالبین مهر ۱۳۷۸، ۴۲ مه، مهرسه، المغنی مهر ۴۸ مه، ثیل امما رب ۱۸۵س

ربید، این ابی کیلی اور اسحاق سے آل کی کراہت مروی ہے (۱)۔ اگر بعض مسلم فیدا پی جگد سے نتم ہوجائے اور باقی پر قبضہ ہو چکا ہو یا قبضہ نہ ہوا ہوتو اس میں اختلاف اور تفصیل ہے، جسے باب ''اسلم''میں دیکھاجائے (۲)۔

قرض میں تبعیض :

۲۵ سترض میں تبعیض کے جواز رفقہا عکا اتفاق ہے۔

ابن عابدین نے صاحب' جامع الفصولین' سے بیول نقل کیا ہے کہ اس میں بیجھی احمال ہے کفرض دینا علاصدہ کرنے کے بعد ہو یا اس سے پہلے، کیونکہ مشترک چیز کافرض بالاجماع جائز ہے۔

ری بات ادائیگی قرض میں تبعیض کی ،جس کی صورت بیہ ہے کہ جتناقرض دیا تھا اس ہے کم اداکر نے کی شرط لگائی ہو، تو حنابلہ کا مذہب بیہ کہ بید جائز نہیں ہے، خواہ بیان چیز وں میں سے ہوجس میں ربا جاری ہوتا ہے یا ان چیز وں میں سے نہ ہو۔ ثنا فعیہ کے دو قولوں میں سے ایک قول کبی ہے، اس لئے کہ قرض کی ادائیگی میں ہراہری ضروری ہے اور کمی کی شرط اس کے مقتنی کے خلاف ہے، البند المیاز نہیں ،جس طرح کے زیادتی کی شرط اس کے مقتنی کے خلاف ہے، البند المیاز نہیں ،جس طرح کے زیادتی کی شرط اس کے مقتنی کے خلاف ہے، البند المیاز نہیں ،جس طرح کے زیادتی کی شرط۔

شا فعیہ کے دوہر فےول کے مطابق کی کی شرط جائز ہے، کیونکہ قرض کی مشر وعیت ای لئے ہے تا کہ قرض لینے والوں کے ساتھ زمی ہو، اور کمی کی شرط اس کے اصل موضوع (یعنی قرض لینے والوں کے ساتھ زمی) سے اس کونیس نکالتی ہے (^{m)}۔

٢٦ - اگرفرض لينے والابعض دين مؤجل كواس لينے جلدى او اكر ب

کر ض خواہ بعض دین کومعاف کردے تو یہ جمہور فقہاء کے نزدیک جائز نہیں ہے، لیکن اگر وہ بغیر زبان سے شرط لگائے یا معاملہ میں شرط کو بغیر ملحوظ رکھے مقروض سے حق کے بعض حصہ کومعاف کردے تو یہ جائز ہے۔ دیکھئے: اصطلاح '' اُجل''(ف: ۸۹)۔

رئىن مىن تېغىض:

27- مالکید، شافعید اور حنابلد کا مُدبب بیہ ہے کہ رئین میں جعیف جانز ہے، لبند اان کے مزد دیک بعض مشترک ومشائ چیز کا رئین بھی جانز ہے، خواہ اے اپنے شریک کے پاس رکھے یا اس کے علاوہ کسی اور کے پاس، وہ مشائ شیم کوقبول کرے یا نہ کرے، اور خواہ جومشائ سے باقی بچا ہووہ درائین کا ہویا غیر رائین کا (۱)۔

حفیہ کا مذہب ہیہ ہے کہ مشاع کا رئین مطلقا تھی خیریں، خواہ مقارن ہو، جیسے مقارن ہو، جیسے مقارن ہو، جیسے مقارن ہو، جیسے کی مشاع کی رئین میں رکھا)، یا طاری ہو، جیسے پہلے پورے کا رئین رکھا گھر دونوں نے مل کر بعض حصہ میں رئین کو فتح کر دیا۔ امام ابو بوسف کی ایک روایت ہیہ کہ رئین طاری نقصان خبیں پہنچا تا (یعنی ہیرئین جائز ہے)، لیکن پہلی بات سیجے ہے (ک مقارن وطاری دونوں مشاع کا رئین جائز نہیں ہے)، اور خواہ اپ شریک کے پائی ، اور خواہ وہ ان شریک کے پائی ، اور خواہ وہ ان چیز وں میں سے ہوجو قامل جیزوں میں سے ہوجو قامل

حفیہ کے نز دیک اصل میہ ہے کہ مشاع کا رئین جائز نہیں ، لہذا اس میں تبعیض بھی جائز نہیں ، اس اصل سے درج ذیل صورتیں متشنی میں :

الف ۔جب کوئی عین دونوں کے درمیان مشترک ہو، دونوں

⁽۱) گفتی سر۲ سسه

⁽٣) - روصة الطاكبين مهر ١٢، ٣٠ من المغنى مهر ١٣ سن البن عابد بي مهر ١٠٠٥-

⁽m) این مایدین سر ۵۳ سه المغنی سر ۵۷ س

⁽۱) الحطاب ۱۵ مر ۱۲ مروضة الطالبين مهر ۱۸ مراه المغنى مهر ۱۲ س

نے مل کر اے ایسے خص کے یہاں ایک بی رہن رکھا جس کافر ض ان دونوں رہے (تو یہاں مشاع کارئن جائز ودرست ہے)۔

ب ۔ جب ال میں اشتر اک ضرورة ثابت ہوگیا ہو، جیسے جب دوکیٹر سے لاکر یہ کہے کہ ان میں سے ایک بطور رہین رکھ لواور ایک بطور پونجی اور ہر ما یہ کے کہ ان میں سے ایک بطور رہین رکھ لواور ایک بطور پونجی اور ہر ما یہ کے رکھ لوتو اس صورت میں دونوں کیٹروں کا نصف دین کے بدلے رہین ہوجائے گا، اس لئے کہ ان میں سے ایک دوسر سے بہتر نہیں ہے، کہذار ہی دونوں میں ضرورة کیٹیل جائے گا اور یہ شیوع مضرنہ ہوگا (۱)۔

۲۸ - رہن میں جن وثیقہ یعنی اعتاد کے لئے محبول کرنا تو اس میں بعض وین کے اواکر نے سے بعیض نہ ہوگی، اس لئے کہ وَ بن پورے رہن سے متعلق ہے، لبذ ابورے جن کے ساتھ محبول ہوگا اور اس کے ہر جز کے ساتھ محبول ہوگا اور اس کے ہر جز کے ساتھ بھی ، جب تک پور افر ض اوانہ کردیا جائے اس سے کوئی چیز حبر انہ ہوگی، خواہ وہ ان چیز وں میں سے ہو، جس کی تنسیم ممکن ہو،یا ان چیز وں میں سے ہو، جس کی تنسیم ممکن ہو،یا ان چیز وں میں سے ہو، جس کی تنسیم ممکن ہو،یا ان چیز وں میں سے ہو، جس کی تنسیم ممکن ہو،یا ان

ابن المندر نے کہا ہے: وہ تمام اہل علم جن کا مُدہب جھے معلوم ہے، اس بات سے اتفاق کرتے ہیں کہ جس نے مال کے بدلے کسی چیز کورہین رکھا، پھر بعض مال اوا کردیا، اور بعض رہین کو نکا لئے کا ارادہ کیا تو اسے بید شہیں، اور کوئی چیز نہیں نکل سکتی بیباں تک کہ وہ اس کا آخر حق نہ دے دے، یا وہ خود علی اسے بری کردے، ایسے علی امام ما لک، ثوری، امام شافعی، اسحاق، ابوثور اور اصحاب الرای نے کہا ہے، مالک، ثوری، امام شافعی، اسحاق، ابوثور اور اصحاب الرای نے کہا ہے، اس لئے کہ رہین ایک حق کا وثیقہ ہے، کہذ اپور احق ختم ہوئے بغیر وہ اس کے کہ رہین ایک حق کا وثیقہ ہے، کہذ اپور احق ختم ہوئے بغیر وہ زاکن نہیں ہوسکتا، جیسے ضمان اور شہادت (۲)۔

ایسے عی اگر بعض رہن تلف ہوجائے اور بعض باقی رہے تو وہ باقی حصہ پورے حق کے ساتھ رہن رہے گا^(۲)۔ ...

اس موضوع کے سلسلہ میں تفصیل ہے جے باب '' الر بہن' میں دیکھی جائے۔

صلح میں تبعیض:

9 - سلح میں تبعیض کے جواز پر فقہاء کا اتفاق ہے، پس سلح کا مدار تبعیض پر ہوگا اگر وہ مدیل کے جواز پر فقہاء کا اتفاق ہے، پس سلح کا مدار معیض پر ہوگا اگر وہ مدیل کے جہنس پر واقع ہواور اس سے کم ہو۔ اور مدیل کے میں یا و کہا انسان کے میں یا کہ انسان کے ایک میں کہا تا انسان کے اسلام میں کہا جائے۔ اور تفصیل ہے جے اصطلاح ''میں دیکھا جائے۔

ىهبەمىن تىبغىض:

• سا – ما لکیہ ، شا فعیہ اور حنابلہ کا اتفاق ہے کہ ببہ یمی مطلقاً ببعیش جائز ہے ۔ یمی حفیہ کا بھی فدیب ہے ان چیز وں میں جو ما تا تا تل تشیم ہوں ، لبذ امشاع کا ببہ کرنا اثر ثلاثہ کے بز دیک مطلقاً جائز ہے ، اور حفیہ کے بز دیک مشاع کا ببہ کرنا و ہاں سیجے ہوگا جہاں تفیم کرنا دیک مشاع کا ببہ کرنا و ہاں سیجے ہوگا جہاں تفیم کرنے کے کرنا بغیر کسی نقصان کے ممکن نہ ہو ، اس طور پر کہ تفیم کرنے کے بعد بینا بل انتقاع نہ درہے ، جیسے چھونا گھر اور چھونا شسل خانہ ، کیکن جن چیز وں کی تفیم بغیر کسی نقصان کے ممکن ہو ، بطور مشاع ان کا جبہ بہ کرنا سیجے نہیں ہوگا ، اگر چہ اپ شریک کو جبہ کرے ، اس کی و جبہ یہ ببہ کرنا سیجے نہیں ہوگا ، اگر چہ اپ شریک کو جبہ کرے ، اس کی و جبہ یہ بین کہ اپنے شریک کو جبہ کرنا ہا ناز ہے ، اور بعض حضر ات کہتے ہیں کہ اپنے شریک کو جبہ کرنا جائز ہے ، یکی حفیہ کے یہاں مختار ہا تو ل ہے (۲)۔

⁽۱) این طایر پن ۱۵/۵ اس، ۱۳۱۷

⁽۲) ابن مايدين ۱۸ ۳۱ سه روهند اطاليين سر ۱۰۹ ه آنتي سر ۹۹ سه ۸ ۲۷ سه. سر سره ۱۸ ۸ ۲

⁽۱) نیل اماری سر ۳۷۳

⁽٢) ابن مابدين سهر ١٥، الحطاب ٥/ ٢٠، روهية الطاكبين ١٤/٥ ٣٥، ٣١٥.

تبعيض اس-سس

اگر کسی شخص نے دوآ دمیوں کو ایسی چیز ببد کیا جو قاتل آنسیم ہے تو حنا بلہ اور حفیہ میں ہے تو حنا بلہ اور حفیہ میں سے امام ابو بوسف وامام محمد کے مزد کیک جائز ہے، یک شافعیہ کا تعیہ کا تعیہ کا کا تعیہ کا تعیہ کا تعیہ کا حواز کا ہے اور امام ابو حفیفہ کا تدبب اور شافعیہ کا دوسر قول عدم جو از کا ہے (۱)۔

ال موضوع کے فر وعات بہت ہیں جن کی تفصیل کتب فقہ کے ''باب الہہ''میں موجود ہے۔

و د بعت میں تبعیض :

ا سا- فقہاء کا اتفاق ہے کہ ودیعت میں تبعیض بایں طور کہ اس میں سے پچھڑج کردے یا ضائع کردے ہموجب ضمان ہے۔

ال بارے میں فقہاء کا اختلاف ہے کہ ودیعت میں ہے کچھ لے لیا، پھرا سے یاس کے شل لونا دیا۔

چنانچ شافعیہ اور حنابلہ کا فد بہ بیہ کہ جس کے پاس کوئی چیز ور بعت رکھی گئی اور اس نے اس میں سے پچھے لے لیا توجولیا ہے اس کا صان لا زم ہے، پھر اگر اس چیز کویا اس کے شل لونا دیا تو بھی صان اس سے زائل ند ہوگا۔

امام ما لک فر ماتے ہیں کہ جب ای چیز کو یا اس کے مثل لونا دیا تو اس بر صفال نہیں ہے۔

حفیہ کا مذہب میہ ہے کہ جولیا ہے اسے خرج نہیں کیا اور **لونا** دیا تو عان نہیں ہے، اور اگر خرج کر دیا پھر اسے یا اس کے مثل **لونا** دیا تو ضامن ہوگا ^(۲)۔

وقف میں تبعیض :

المساحث فعید، حنابلد، مالکید ظاہر مُدبب میں، امام ابو صنیفد اور امام ابو بوسف و تف میں تبعیض کے جواز کی طرف گئے ہیں، خواہ شی موقوف تامل تشیم ہویا تامل تشیم ندہو، چنا نچ مشاع کا و تف جائز ہے جیسے فصف مکان کا و تف کرنا (ا)۔

حنفیہ میں محمد بن حسن قامل تضیم اشیاء میں وقف مشاع کے عدم جواز کی طرف گئے ہیں، اس کی بنیا دان کے اس اصل پر ہے کہ وقف میں قبضہ شرط ہے اور مشاع میں قبضہ سی خیابیں ہوتا۔ بال جو چیزی ساتا تامل تفضہ نے ہوں، جیسے جمام اور چکی، تو ان کا وقف مشاع امام محمد کے نزدیک بھی جائز ہے، سوائے متجد ومقبرہ کے، اس لئے کہ شرکت کی بقا اللہ کے لئے فالص ہونے سے مافع ہوگی (۲)۔

اللہ کے لئے فالص ہونے سے مافع ہوگی (۲)۔

اس کی تفصیل باب "الوقف" میں دیکھی جائے۔

غصب میں تبعیض:

ساسا-فقہاء مال مغصوب کی تبعیض پر مختلف احکام مرتب کرتے ہیں، تبعیض خواہ بعض کے عیب دار ہیں، نیب عیض کے ضائع ہونے سے ہویا بعض کے عیب دار ہوجانے کی وجہ سے ہو۔

شا فعیہ اور حنابلہ کا مُدہب یہ ہے کہ جزء عائب کا صان ہوگا، غصب کے دن سے ضائع ہونے کے دن تک سب سے زیادہ جو قیمت ہوائی حساب سے صان دینا ہوگا، اور باقی لوٹائے ہوئے حصہ میں جو کمی بھاؤ کے فرق کی وجہ سے ہوگی شا فعیہ کے فرد کیک اس کا صان نہیں ہے، یمی حنابلہ کا بھی مُدہب ان چیز وں میں ہے جن میں

⁽١) المغنى ١٥٥٧٥، روهية الطالبين ٣٧٣٧٥.

⁽۲) ابن عابدين سر ۹۸ سم، الحطاب ۳۵۳۵، روضة الطالبين ۲۸ ۳۳۳، المغنى ۲۷ و ۲۰ ۰ س

⁽۱) ابن عابدين سر ۳۷۳، لوطاب ۲۱ ۱۸، روهية الطالبين ۲۵ ۱۳ اس، أمغني ۱۳ مسر ۱۳ س

⁽۲) ابن مایدین سر سه سامنی ۵ رسه ۸ م ۱۱،۳۶۰ س

مبعیض نقصان پیدائیس کرتی ،ر ہاان چیز وں کامعاملہ جن میں تبعیض نقص پیدا کرتی ہے، جیسے کیڑ اجو کا ننے سے نقص والا ہوجاتا ہے، ان میں نقص کا تا وان لازم ہوگا۔

حنف كا مُدبب بيا بي كراً مال معصوب، بعض كے بلاک كرنے سے عيب وار بہوجائے جيسے بكرى كا دست كاك ديا جائے ، تو مالك كواختيا ر بہوگا كروہ مال معصوب غاصب كے لئے چھوڑ دے اور الل كواختيا ر بہوگا كروہ مال معصوب لے كرنقصان كا صان لے الل كى قيمت لے ليے ، يا شئ معصوب لے كرنقصان كا صان لے ليے ۔ ليكن اگر غير ماكول اللحم جانوركا كوئى عضوكانا بہواور مالك نے الى جانوركو لے ليا بہوتو كوئى صان عائد نہ بہوگا ، اور اگر الى نے الى جانوركو نہ ليا بہوتو يورى قيمت كا نا وان لے سكتا ہے ، الى لئے كہ جانوركو نہ ليا بہوتو يورى قيمت كا نا وان لے سكتا ہے ، الى لئے كہ جانوركو نہ ليا بہوتو يورى قيمت كا نا وان لے سكتا ہے ، الى لئے كہ خاصب نے الى جانور كے پورے منافع كوئتم كرديا ، لبند ابيال كے قاصب نے الى جانور كے پورے منافع كوئتم كرديا ، لبند ابيالى كے قال كی طرح بہوگيا (۱)۔

مالکیہ نے بعض سامان معصوب پر جنایت کے باب بیل وجوب صان کے سلسلے بیل تفصیلی کام کیا ہے ، چنانی بعض سامان معصوب کونوت کرد نے قاصب پورے کا صفامین ہوگا، جیسے بیب والے جانور کی دم کاٹ دینایا اس کے کان کاٹ دینا، ای طرح ہر ایسے خص کے سواری کا جانور جس کے بارے میں معلوم ہوک اس جیسا شخص ایسے جانور پر سواری کے لاکق نہیں رہا میں معلوم ہوک اس جیسا شخص ایسے جانور پر سواری کے لاکق نہیں رہا فرق اس بیل پورے کا صفان ہوگا)، سواری اور کپڑے کے درمیان کوئی فرق اس بیل پورے کا ضاف ہوگا، سواری اور کپڑے کے درمیان کوئی مور کہنا ہے ، جیسے قاضی کی ٹوئی اور اس کا جبہ اگر چہال کونوت نہ کیا ہو ایکن اگر تعدی معمولی ہواور اس سے جونوش ہووہ باطل نہ ہوئی ہوئو خرض میں بیا طل نہ ہوئی ہوئو ہوں جب تعدی زیادہ ہواور اس سے مقصود خرض خطال نہ ہوئی ہوئو ہوں اس کا تعمم عمولی تعدی کائی ہے (۳)۔

ال موضوع رتفسيلي كلام باب" الغصب "مين ويكها جائه

قصاص میں تبعیض:

ہم سا۔ فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ قصاص ان چیز وں میں سے ہے جن میں جمینے بین بہت ہوتی الیکن اس کی تفصیلات میں اختااف ہے:
حفیہ بیٹا فعیہ اور حنابلہ کا ند بہ یہ کہ مستحق قصاص اگر بعض
قاتل سے معاف کرد ہے تو سارے قصاص سے معافی ہوجائے گی ، ای
طرح اگر بعض اولیاء معاف کردیں تو بھی معاف کرنا سیجے ہوگا اور سارا
قصاص ساقط ہوجائے گا ،کسی کے لئے بھی اس کے راستے میں آئے
قصاص ساقط ہوجائے گا ،کسی کے لئے بھی اس کے راستے میں آئے
کی گنجائش نہ ہوگی ، ای طرف عطاء ، تخفی ،حمل داور توری گئے ہیں ،
اور یہی مفہوم حضرت عمر معافی اور شعبی سے بھی مروی ہے۔

ولیل بیہ کے کرزید بن وہب سے روایت ہے کہ حضرت عمراً کے پاس ایک خض سے کر مقتول کے پاس ایک خض سے کا ایک آدمی گول کردیا تھا، پھر مقتول کے ورثاء آئے تا کہ اسے قبل کردیں، تو مقتول کی بیوی نے جو کہ قاتل کی بہن تھی کہا: میں نے اپناحق معاف کردیا ، اس پر حضرت عمراً نے فر مایا:
''الله آکیو! عتق الفتیل" (اللہ اکبر! تاکل آزاد ہوگیا)۔

زیدی کی دوسری روایت میں ہے کہ ایک آدمی اپنی بیوی کے پاس داخل ہوا، وہاں ایک شخص کو پایا، پس بیوی کو آل کردیا، بیوی کے بھائیوں نے بھائیوں نے حضرت محر نے ان جھوں کے لئے کہا: میں نے معاف کردیا تو حضرت محر نے ان جھوں کے لئے دیت کا فیصل فر مایا (۱)۔

مالكيه كالمدبب بيب كبعض ورثاءكا معاف كردينا قصاص كو

 ⁽۱) ابن هایدین ۵/ ۱۲۳، افروق للکرانسی ۴/ ۸_

⁽r) أوطاب ١٣٩٥ (r)

⁽۱) بدائع المنائع کار ۲۳۷، روصة الطالبين قار ۱۳۳۹، المغنی کار ۲۳۳ ما اور اس کے بعد کے صفحات، المعلو رفی القواعد للورکشی سهر ۱۵۳، لا شباه والنظائر لا بن کیم رق ۱۸۔

تبعیض ۳۵–۳۹

سا تفاہیں کرتا ، إلا بیاک معاف کرنے والا درجہ میں ال محض کے مساوی ہویا اس سے اللی ہوجو باقی ہے، کیکن اگر معاف کرنے والا درجہ میں کم ہوتو اس کے معاف کرنے سے تصاص سا تفافہ ہوگا۔ اگر درجہ میں کم ہوتو اس کے معاف کرنے سے تصاص سا تفافہ ہوگا۔ اگر درجہ میں مثلاً بیٹیاں ، باپ یا دادا کے ساتھ شامل ہوں تو جب تک سب متفق نہ ہوں معانی نہیں ہوگئی ، اور اگر باپ ، دادا کی رائے الگ ہوتو ماں کو معاف کرنے یا قتل کرنے کا حق نہیں ہے (ا)۔ بعض المل مدینہ کا فدیب اور کہا گیا ہے کہ بیام مالک سے بھی ایک روایت ہے، بیہ ہوئی نفس کا مؤاخذ ہ بعض نفس کی وجہ سے بھی ہوتا ہے، نہیں ہوتا ، اس لئے کونس کا مؤاخذ ہ بعض نفس کی وجہ سے بھی ہوتا ہے، نہیں ہوتا ، اس لئے کونس کا مؤاخذ ہ بعض نفس کی وجہ سے بھی ہوتا ہے، بیسے ایک گفتاس کی وجہ سے بھی ہوتا ہے، بیسے ایک گفتاس کی وجہ سے بھی ہوتا ہے، بیسے ایک شخص کے تصاص میں پوری جماعت قبل کردی جاتی ہے (۲)۔

حدقذف سے معاف کرنے میں تبعیض: ۳۵-فتہاء کاس کے جواز میں اختلاف ہے:

شافعیہ کا اسے قول اور یکی حنابلہ کا ندب ہے، اور مالکیہ کے اقوال سے جو بچھ بین آتا ہے (جبکہ معاملہ حاکم تک نہ پہنچایا گیا ہو) یہ ہے کہ حدقذ ف بین بعیض جائز نہیں، پس اگر بعض ورناء یا بعض مستقین حدقذ ف معاف کردیں توجولوگ باقی رہ جاتے ہیں انہیں پوری حدقذ ف معاف کردیں توجولوگ باتی رہ جاتے ہیں انہیں پوری حدقذ ف بینے کا حق ہے، کیونکہ ان کے ساتھی کے معاف کردیے والا کردیے مالا بہتیں کرسکتا، اس لئے کہ اس نے اپنا حق ساتھ کردیے۔ والا قذ ف کا مطالبہ بین کرسکتا، اس لئے کہ اس نے اپنا حق ساتھ کردیا۔

قذف ساتظنیں ہوتا۔ اصح کے بالقابل شافعیہ کا دوسر اقول تبعیض کے جواز کا ہے،

ال کی وجہ یہ ہے کہ عدفذ ف معروف تعداد کے مطابق کوڑے لگانا ہے، اور اس میں کوئی شک نہیں کہ اگر کوئی شخص کچھ کوڑے مارنے کے بعد معاف کردے تو بقیہ کوڑے ما تظاہوجاتے ہیں، ای طرح اگر ابتدا علی میں کچھ کوڑے ساتھ کردے جن کی مقد اربھی معلوم ہوتو وہ بھی ساتھ ہوجا کیں میں کچھ کوڑے ساتھ کردے جن کی مقد اربھی معلوم ہوتو وہ بھی ساتھ ہوجا کیں گے۔ اس بنیا دیر اگر بعض مستحقین حدقذ ف اپناحق معاف کردیں تو معاف کرنے والے کا حصہ ماتھ ہوجا کے گا، اور باتی حصہ کو یور اکیا جائے گا، اور باتی حصہ کو یور اکیا جائے گا، کوئکہ یہ قاتل تنظیم ہے۔

یباں پر شافعیہ کا ایک تیسر اقول بھی ہے کہ بعض مستحقین حدقذ ف کے معاف کردیئے سے پورا عدسا تط ہوجائے گا تصاص کی طرح (۱)۔

حفیہ کے بہاں ایمانیس ہے، کیونکہ ان کے فراد یک صدفقہ ف میں حق اللہ غالب ہے، کہونکہ ان کے فراد یک صدفقہ ف میں حق اللہ غالب ہے، کہند افتر ف ٹا بہت ہوجائے کے بعد معاف کرنے سے نہ کل صدفقہ ف سما تھ ہوگانہ بعض ، ایسے می اس وقت بھی ہے جب قاضی کے پاس معاملہ لے جانے سے پہلے معاف کردیا ہو(۲)۔

مهر کی تبعیض :

السافقها عالماتفاق ہے کہ بعض میر کا معجل اور بعض میر کا مؤجل ہونا جا نز ہے، اس کنے کہ وہ عقد معا وضہ میں عوض ہے، ابند اٹمن کی طرح اس میں بیچیز جائز ہوگی (۳)، دیکھئے: اصطلاح '' اُجل' اور 'میر''۔ جہاں تک دخول اور خلوت سے پہلے نصف میر واجب ہونے اور اس کی کیفیت کا مسئلہ ہے، تو اس میں کئی آراء اور تفصیل ہے جو

⁽۱) الحطاب Maru

⁽r) المغنى عرسه معيد

⁽۱) الحطاب الرهوس، روصة الطالبين ۲۹/۸ س، المغنى ۱۳۳۸، وأشباه والنظائر للسيوفي رسمال

⁽۲) ابن هابرین ۱۷۳ ساله

⁽۳) ابن عابدین ۳ر ۵۸ سه ۵۹ سه آمنی ۲ ر ۱۹۹۳، ۱۹۹۳، الحطاب سر ۵۰۹، ۱۹۱۳، ۱۹۱۳، روصعه الطالبین سر ۲۰۹۳، اُسنی المطالب سر ۲۰۹۰

اینے مقام پر مذکورہے، دیکھئے: اصطلاح ''مہر''۔

طلاق میں تبعیض:

کسا-فقہا عکا اتفاق ہے کہ طابق میں جعیض ہیں ہوتی، یہی ند بب شعبی ، حارث العکلی ، زہری ، قادہ ، ابو عبید ، اہل تجاز ، ثوری اور اہل عراق کا ہے ، بیال لئے کہ جس چیز کے اجزا اوند ہوتے ہوں اس کے بعض کا ذکر کل کے ذکر کی طرح ہے ، لہذ ابعض طابق کا ذکر کل طابق کے ذکر کی طرح ہے ، لہذ ابعض طابق کا ذکر کل طابق کے ذکر کی طرح ہے ، لہذ ابعض طابق کا ذکر کل طابق کے ذکر کی طرح ہے ، اور طابا ق کا جز اگر چیم اراجزا اویس سے ہو ، پوری ایک طابق ہوگی ۔ بیتھم اس وقت بھی نا بت ہوگا جب مبہم رکھا ہو ، مثلاً کہے : تم کو طابق ہے ، بعض طابق ، یا واضح کرد ہے ، مثلاً کہے : تم کو طابق ، یا چو تھائی طابق ، اور ای طرح ، اس کے : تم کو طابق ، یا چو تھائی طابق ، اور ای طرح ، اس کے کہ جس چیز کے اجزاء نہ ہوں اس کا ذکر پورے کے ذکر کرنے کی طرح ہے ۔

مطلقه میں تبعیض :

۸ سا- جب طااق کو بیوی کے کسی جزء کی طرف منسوب کرے، خواہ بیان افت جزء بڑا کع کی طرف ہواہ مبہم ہو، مثلاً کے: تمہار بیعض اور تمہارے جن کی طرف ہواہ مبہم ہو، مثلاً کے: تمہارے بعض اور تمہارے جز کو طلاق، یا کسی متعین جز کی صراحت کرے، مثلاً نصف یا رابع کو طلاق، یا کسی عضو کی طرف اضافت کی ہو، خواہ عضو بالمن ہو، جیسے جگر اور دل، یا عضو ظاہر ہو، جیسے ہاتھ اور پیر، (ان تمام صورتوں مطاقہ میں) ائمہ ٹلا ٹد اور حفید میں سے امام زفر کے فرد یک عورت مطاقہ ہوجائے گی۔

کیکن امام زفر کے علاوہ دیگر حنفیہ نے رفر ق کیا ہے کہ اگر پوری عورت کی طرف طلاق کی اضافت ہویا اس جز کی طرف ہو جسے بول کر پوری عورت مرادلی جاتی ہو، جیسے گردن، گلا، روح، بدن، جسم، یا

جزء شائع کی طرف ہو، جیسے نصف عورت یا شکث عورت، تو اس صورت میں طلاق واقع ہوجائے گی، اور اگر اس جز کی طرف طلاق کی اضافت ہو جسے بول کر پوری عورت مراد نہ کی جاتی ہو، جیسے ہاتھ اور پیر، تو اس صورت میں طلاق نہیں پڑے گی (۱)۔

طلاق میں بعیض کا مسلم اس قاعدہ کی فروٹ میں سے ہے کہ ''جو چیز تبعیض کو قبول نہ کرے اس کے بعض کا اختیار کرنا ،کل کے اختیار کرنا ،کل کے اختیار کرنے کی طرح ہے، اور بعض کا ساقط کرنا کل کے ساتھ کرنے کی طرح ہے، اور بعض کا ساقط کرنا کل کے ساتھ کرنے کی طرح ہے''۔

وصيت مين تبعيض:

۳۹- وصبت میں تبعین کے جواز پر فقہا وکا اتفاق ہے، اگر وصبت بڑ و بٹا کع کے ساتھ ہو، جیسے کوئی شخص اپنے مال کے ایک حصہ یا جز کی وصبت کرے، اس وقت اس حصہ یا جز کے بیان کی ذمہ داری ورنا و پر ہوگی، ورنا و سے کہا جائے گا: اُہیں پچھ دے دو، اس لئے کہ وہ مجبول ہوگی، ورنا و سے کہا جائے گا: اُہیں پچھ دے دو، اس لئے کہ وہ مجبول ہے، اور وصبت جہالت کی وجہ سے ممنوئ ہیں ہے، جزیا ہم کے شل حظ شقص ، نصیب اور بعض بھی ہے (اس لئے کہ وصبت کی حقیقت: مالک کا اپنے حقوق کے کسی جزیمی تفرف کرنا کے دوسیت کی حقیقت: مالک کا اپنے حقوق کے کسی جزیمی تفرف کرنا ہے)۔

ایسے بی اگر وصیت کسی متعین جزکی ہو، جیسے کسی شخص نے ایک آوی کے لئے اس کے آئی میں میں اگر وصیت کی، اور دوسر سے کے لئے اس کے داندگی میا ایک شخص کے لئے کسی متعین بکری کے گوشت کی وصیت کی

⁽۱) ابن عابد بین ۳ ر ۳۳۵، ۳۳۷، ۳۳۷، ایمطاب سمر ۹۲، ۹۵، روضه الطاکیین ۱۸ ساله، ۱۲، ۵۸، ۲۸، المغنی ۱۲ سسم، ۱۳۳۱، ۱ شباه وانطائز لابن کجیم رسماب

⁽٢) ابن مايدين ٥/٩٣ م، لحطاب ١٧ ٣٨٣، روهنة الطالبين ١١٣/١، أغنى ١٧ ٨ ٢٣٠ ، ١٣٠

اور دوسرے کے لئے اس کی کھال کی وصیت کی، یا بالی میں گیہوں کی وصیت کی، یا بالی میں گیہوں کی وصیت کی، تو دونوں کے لئے وصیت کی، تو دونوں کے لئے وصیت کی، تو دونوں کے لئے وصیت کرنا جائز ہوگا، اور ان دونوں پر جن کے لئے وصیت کرنا جائز ہوگا، اور ان دونوں پر جن کے لئے وصیت کی گئی ہے لازم ہوگا کہ دونوں اس کر داندگا ہیں، یا کھال نکالیس یا دھن کر داندگا لیس، اگر بکری زند ہ ہوتو ذرج کی اجمہ خاص طور پر کوشت والے کے ذمہ ہوگی، اس لئے کہ ذرج کرنا کوشت کے لئے بی ہوتا ہے، کھال کے لئے ہیں ہوتا ہے، کھال کے لئے ہیں (۱)۔

ا المغنی میں ہے کہ جب ایک آدمی کے لئے انگوشی کی وصیت کی اور دونوں میں ہے کئی اور دونوں میں ہے کئی اور دونوں میں ہے کئی اور دومر کے لئے بھی بغیر اپنے ساتھی کی اجازت کے اس سے فائد واشانا جائز نہیں، اور جو بھی انگوشی ہے تگ الگ کرنے کا مطالبہ کرنے قبول کیا جائے گا ، اور دومر کے واس پرمجبور کیا جائے گا (۲)۔

آزادکرنے میں تبعیض:

ہم - جس نے اپنے بعض مملوک غلام کوآ زاد کیا تو باقی غلام بھی یا تو ای کا ہوگا یا اس کے علاوہ کسی اور کا ہوگا:

پہلی حالت میں مالکیہ بٹا فعیہ حنابلہ اور حفیہ میں سے عام محمد اور امام ابو بیسف کا فدیب ہیں ہوتی ، امام ابو بیسف کا فدیب ہیں ہے کہ غلام آز ادکرنے میں تجزی نہیں ہوتی ، اس کے لکڑے اور اجز او نہیں ہوتے ، اس لئے کہ حتی کی ایک خصوصیت سر ایت کر جاتا ہے، لہذا جس نے اپنے بعض مملوک کو آز ادک اس کے باقی کی طرف بھی سر ایت کر جائے گی۔

ایسے بی جس نے کسی متعین جز مثلاً سر، پیچے یا پیٹ کو آزاد کیا، یا جز وثا نع مثلا اس کے نصف، یاہز اراجز اومیں سے ایک جز کو آزاد کیا

توبوراغلام آزادہوجائے گا^(ا)۔

امام او حنیفه کا مذہب ہے ہے کہ آزاد کرنے میں تجزی ہوتی ہے، خواہ باقی ای آزاد کرنے والے کا ہو، یا اس کے اور غیر کے درمیان مشترک ہو، اور خواہ آزاد کرنے والا تنگدست ہویا بال دار (۲)۔

اہم - دوسری حالت میں جب کہ غلام مشترک ہواور دونوں شریکوں میں ہے ایک نے اپنا حصہ آزاد کیا ہویا اپنے حصہ کا بعض آزاد کیا ہوتو گئر ایک اور کیا ہوتو ایک اور کیا ہوتا ہوگا ہوگا ہے کہ مال داریا تنگدست ہونے کی بنیا در فقتہا ہوکا اختا ہوئے اور کے بال داریا تنگدست ہونے کی بنیا در فقتہا ہوکا اختا ہوئے ہے۔

ابن مسعود، حضرت علی، ابن عباس رضی الله عنیم سے مروی بے کہ جوآزاد کیا گیا وہ آزاد ہوگیا اور جو باقی رہاوہ غایم بی رہے گا(اس)۔
اس بات کو تقی نے بھی کہا ہے، انہوں نے اس حدیث سے استدلال کیا ہے جو ابن التلب نے اپنے والد سے روایت کی ہے: "أن رجلا اعتق نصیبا له فی معلوک فلم یضعنه النبی خاصی الله علی معلوک فلم یضعنه النبی خاصی الله علی اینا حصر آزاد کر دیا تو رسول الله علی اینا کی در اینا حصر آزاد کر دیا تو رسول الله علی کی دیا کہ دیا کہ دیا کر دیا تو رسول الله علی کی دیا کہ دیا کو دیا کہ دی

مالکیہ اور ثافعیہ کا فد بب اور حنابلہ کے فزویک ظاہر فد بب یہ کے آز اد ہوجائے گا، اور ہے کہ آز اد ہوجائے گا، اور ہے کہ آز اد ہوجائے گا، اور آز اد کرنے واللہ اگر مال دار ہوتو پورا غلام آزاد ہوجائے گا، اور آزاد کرنے والے پر اپنے شریک کے لئے باقی کی قیمت لازم ہوگی، اور آگر شکد ست ہوتو صرف ای کا حصہ آزاد ہوگا اور آزادی باقی کی

⁽۱) اين ها برين ۱۵ م ۲۹ س

⁽٣) اين ملدين ٢٥/٥ سم لوطاب٢ ١٣٧٣، أمغني ١٦ ١٣٠، روعية الطاكبين ١٩ - ١٥٠

⁽۱) بدائع الصنائع سهر ۸۹، فتح القدير سهر ۲۵۵، ابن عابدين سهر ۱۵، الحطاب ۱۲۸۳ م، روحية الطالبين ۱۲ر ۱۱،۱۱۱، کشاف القتاع سهر ۱۵، ۵۱۵، المغنی ۱۸ ۳۳۸، ۳۳۸

⁽٣) فقح القدير سهر ۵۵ سه، يوائع الصنائع سهر ۲ ۸، ابن جايو بن سهر ۵ ال

⁽m) بدائع الصنائع ۱۸۲۸، المغنی ۱۳۳۹ س

⁽۳) حدیث: "أن رجلاً أعنق لصبباً له....." کی روایت ایوداؤد (۳۹،۹۳۳) طبع عزت عبید دهاس) نے کی ہے ابن تجر نے (انتتج ۱۹۵۳ طبع استقیر) میں اس کوشن قمر اردیا ہے۔

طرف سرایت نیم کرے گی، اگرچه اس کے بعد وہ مال دار ہوجائے (۱) اس لئے کہ ابن مرائی ہے مروی ہے کہ رسول اللہ علی ہے اس کے ارشا دفر مایا: "من اعتق شقصا له من عبد أو شركا، أو قال: نصيباً، و كان له مايبلغ شمنه بقيمة العدل فهو عتيق و إلا فقد عتق منه ماعتق"(۳) (جس نے اپنے فاام کے کسی حصر کوآز او کر دیا، یا شرکت والے فاام کے اپنے حصر کوآز او کیا، اور اس کے باس آئی رقم ہے جواس کے شن کو پینے جائے عدل کی قیمت اور اس کے پاس آئی رقم ہے جواس کے شن کو پینے جائے عدل کی قیمت سے ، تو وہ آز او ہوگا، ورنہ جنتا آز او کیا ہے اتنائی آز اور ہے گا)۔

یکی اسحاق، ابوعبید، این المند راور این جریرکاقول ہے۔
امام ابو بیسف اور امام محمد کا ندیب اور امام احمد ہے ایک
روایت بیہ کہ شریک کے لئے دوی راستے ہیں، اگر آزاد کرنے
والا مال دار یہ وتو اس سے منان لے گا، اور تنگدست یہ وتو نما ام سے اس
کے حصد کے مطابق مال کما کردومر کے ودے گا، یکی این شہرمہ، این
ابی لیلی اور اوز ائی کا قول ہے (۳)، ولیل حضرت ابوہر برہ گی یہ
روایت ہے کہ رسول اللہ علیات نے ارشا فر مایا: "من اعتق شقیصاً
له فی عبد مسلوک فعلیہ آن یعتقہ کلہ اِن کان لہ مال
و اللہ استسعی العبد غیر مشقوق علیہ" (۳) (جس نے

عبر مملوک کے اپنے کسی حصر کو آزاد کر دیا، پس اس پر لازم ہے کہ پورے غلام کو آزاد کرے اگر اس کے پاس مال ہو، اور اگر مال نہ ہونو وہ غلام کومشقت میں ڈالے بغیر اس سے کوشش کرائے)۔

امام ابو حنیفہ نے فر مایا: "اگر آزاد کرنے والا مال دار ہوتو اس
کے شریک کو اختیار ہوگا، اگر چاہے تو آزاد کردے اور اگر چاہے تو
اپنے حصد کی قیمت کے ہراہر آزاد کرنے والے سے ضان لے جب
کہ اس کی اجازت سے آزاد نہ کیا ہو، اور اگر شریک کی اجازت سے
آزاد کیا ہوتو اس پر کوئی حان شریک کی طرف سے نہ ہوگا، اور اگر
چاہے تو غلام سے اپنے حصد کے مطاباتی مال کما کر لانے کو کیے (ا)
جاہے تو غلام اتنامال لاکردے دے گا تو وہ آزاد ہوجائے گا)۔

بعض فقہاء نے کہاہے کہ پورا غلام آزاد ہوجائے گااورشریک کو صرف عنمان ملے گا،اور یکی زفر اور بشر مر لیمی سے منقول ہے (۲⁾۔



⁽۱) المحطاب ۲۸ ۱۳ ۳۳ م روصة الطالبين ۱۲ را ۱۱ مكثاف القتاع مهر ۵۱۵ ، ۱۹ ۵۵ م المغني مرام سر ۲ سرس

 ⁽۲) عدیث: "من أعنق شقصا له من عبد أو شو كا لصباً....." كی
روایت بخاري (انفتح ۱۳۲۵ طبع استخبه) اور سلم (۱۲۸۲ طبع الحلنی)
فرح کی ہے۔
فرحشرت این عرف کی ہے۔

⁽m) فقح القدير سهر ۲۹۰، يو الع الصنائع سهر ۸۹، المغني ۱۸۹ سر

⁽۳) حدیث: "من أعنق شقیصاً له فی عبد مملوک فعلیه أن یعنقه کله إن كان له مال....."كی روایت ابوداؤد(۲۵۳/۳۵۳ طبع عزت عبیر دماس) نے كی ہے وراس كی اسل سج بخارى (اللّج ۵۱/۵ اطبع استقیر) ش ہے۔

⁽۱) فع القدير سر ۱۵۹۔

 ⁽٣) بدائع الصنائع ٣/٢ ٨، فتح القدير ٣/٣٣٠ .

فبعبة

تعریف:

ا - تبیعت بشی کاکسی دوسری چیز ہے اس طرح تعلق رکھنا کہ وہ اس سے جدانہ ہو۔

تا لیع: وہ بعد میں آنے والی چیز جواپنے غیر کے تا ہع ہو، جیسے جز کمل سے، اور شر وط بشر ط کے لئے۔

اوراصطلاحی استعال بغوی استعال ہے الگنہیں (۱)۔

تبعیة کےاقسام: مبعیت کی دوشمیں ہیں:

۲-قشم اول: جومتبوئ ہے متصل ہواور اس کے ساتھ اس طرح
 لاحق ہوکہ اس سے جد اکرنا دشوار ہو۔

ال تسم کی مثالوں میں ہے حمل بھی ہے، کیونکہ حمل تنہانر وخت
منیں کیا جاسکتا، بلکہ بلائسی اختلاف کے، ماں کے تابع ہوتا ہے (۱)۔
سامت م دوم: جواپ متبوع سے جداہوا وراس کے ساتھ لاحق ہو۔
اس تشم کی مثال میں سے بیہے کہ جب بچہ قید کیا گیا ہوا وراس
کے ساتھ ماں باپ میں سے کوئی ہوتو اس کی تین حالتیں ہوں گی:

پہلی حالت: بچہ اپنے ماں باپ سے الگ قید کیا گیا ہوتو اس صورت میں وہ بالا جماع مسلمان مانا جائے گا، اس لئے کہ بچہ کا دین (ماں باپ کے) تابع ہوکر تابت ہوتا ہے، اور چونکہ وہ ولدین سے الگ قید کیا گیا ہے اس لئے اس کی تبعیت منقطع ہوگی۔

دوسری حالت: اپناں باپ کے ساتھ قید کیا گیا ہو، لہذا ہما وہ آئیس کے دین پر مانا جائے گا، اس کے قائل امام ابو حذیفہ، امام مالک، امام ثافعی اور امام احمد ہیں۔

تیسری حالت: والدین میں ہے کسی ایک کے ساتھ قید کیا گیا ہو، اس صورت میں وہ امام ابو حنیفہ اور امام شافعی کے فرد دیک ای کے تابع ہوگا۔

امام مالک فرماتے ہیں کہ اگر اپنے باپ کے ساتھ قید کیا گیا ہے تو دین میں باپ کے تابع ہوگا، اور مال کے ساتھ قید کیا گیا ہے تو مسلمان مانا جائے گا، اس لئے کہ وہ نسب میں مال کے تابع نہیں ہوتا، ایسے عی دین میں بھی تابع نہ ہوگا۔

حنابلہ کہتے ہیں کہ کفار کی اولا دہیں سے جو بھی اپنے والدین میں سے کسی ایک کے ساتھ قید کیا جائے تو اس کے مسلمان ہونے کا

⁽۱) و يُحِصَّة لسان العرب مادهة "تنجى"، الصحاح، تاج العروس، أمصباح المهير، الصحاح، تاج العروس، أمصباح المهير، الكليات ٣/ ١٠٥٣، ٥٠ والطبع دار الكتب الشافيه وشل، أنهو ي على ابن مجيم الرسمة الطبع العامره-

⁽٣) - ابن عابدين سهر ١٩،٥ رسه ا، جوام الأكليل ار٣١٦ طبع واراكم في الدسوقي

⁼ مع المشرح الكبير ٢ م ١١٢ طبع الفكر، حاهية البيخر مى على الخطيب سهر ٢٥٥ طبع دار أمعر في، كشاف الفتاح ٢ مره ٢٠، ٢٠١٠

⁽۱) لجموع كي اين مجيم ار ۱۵۳ طبع العامره، الخرشي ۱۵ اله طبع دارصادن الدسوتي سهر ۵۷ طبع الفكر، لأشباه والنظائر للسيوطي ر ۱۱ طبع العلمية، المنعور ار ۲۳۳۳ طبع العلمية، المنعور ار ۲۳۳۳ طبع التصر

تھم لگایا جائے گا⁽¹⁾۔

اور ان کی مثالوں میں سے ریجی ہے کہ سلمان کا بچہ ساام میں ای کے تا ابع ہوگا اگر چہ اس کی ماں کافر دہو، یہ سکمہ اتفاقی ہے (۴)۔

تبعیت کے احکام:

الله المحالة المحالة

الجمو عللووي هر ٣٢٣ طبع التلقيه، أمغني عهر ٨٨ طبع الرياض_

مزید بیک فقہائے حفیہ وشا فعیہ نے اس قاعدہ: "أن المتابع قابع" پر بہت سے قواعد متفرع کئے ہیں، جنہیں زرکش نے ''المحفور'' میں، سیوطی اور ابن نجیم نے اپنی اپنی کتاب'' لا شاہ والنظائر'' میں فرکر کیا ہے۔ اس کی طرف تر انی نے الفروق میں "الفوق التاسع والتسعون بعد الممائة میں اشارہ کیا ہے، اس میں آنہوں نے اس تاعدہ جو مرفاعقد کے تابع ہواور جوتا بع نہ ہو، کے درمیان فرق بیان کیا ہے۔ جو قواعد اس سے متفرع ہوئے ہیں ان میں سے چند یہ بیان کیا ہے۔ جو قواعد اس سے متفرع ہوئے ہیں ان میں سے چند یہ بیان کیا ہے۔ جو قواعد اس سے متفرع ہوئے ہیں ان میں سے چند یہ بیان کیا ہے۔ جو قواعد اس سے متفرع ہوئے ہیں ان میں سے چند یہ بیان کیا ہے۔ جو قواعد اس سے متفرع ہوئے ہیں ان میں سے چند ہیا ہیں:

الف-تابع بر(متبوع ہے)الگ حکم ہیں لگتا:

۵-اس تابع ہے مرادجس پر متبوئ ہے الگ تھم نیں لگایا جاتا، وہ تابع ہے جس کا وجود استفق بالذات ندہو، بلکداں کا وجود استفق بالذات ندہو، بلکداں کا وجود استفق بالذات ندہو، بلکداں کا وجود استفقی بالدان کے وجود کے تابع ہو، بایں طور کہ وہ اس کا جزیہویا جز کی طرح ہو، اس صورت میں وہ عقد نظے میں مستفل کو بنے کی صلاحیت نہیں رکھتا کہ تھم اس ہے تعلق ہو سکے، جیسے حیوان کے بطن میں جنین، اس لئے اس کی نام ہے انگر کر کے سرف اس کی نظے سیجے نہیں، اور جیسے حق شرب کی مال سے الگ کر کے سرف اس کی نظے سیجے نہیں، اور جیسے حق شرب کی مال سے الگ کر کے سرف اس کی نظے جا زبنہیں (ا)۔

اور جیسے کسی شخص نے کسی مکان کی نیچ کو اس کے حقوق کے ساتھ کی تو نیچ اس کی زمین ، اس کی ممارت اور مصالح ممارت میں سے جو بھی اس سے متصل ہوں جیسے گئے ہوئے دروازے ،سب کو شامل ہوگی ، البتہ وہ چیزیں داخل نہ ہوں گی جو مکان کے مصالح میں سے نہ ہوں، جیسے خز اند، وُن کئے ہوئے کچر ، اس لئے کہ وہ اس میں بطور مانت رکھے گئے ہیں وہاں سے نتقل کرنے کے لئے ، لہذ اوہ بستر اور امانت رکھے گئے ہیں وہاں سے نتقل کرنے کے لئے ، لہذ اوہ بستر اور

⁽۱) گفتی ۸/۲۲ سمالد سوقی ۱۸ سر۱۸۰۰ مر۵۰ س

 ⁽۲) ابن عابدین ۲۵۲۸ طبع المصری حافیته الدسوتی مع المشرح الکبیر سهر ۱۳۵۸ طبع المحری حافیته الدسوتی مع المشرح الکبیر سهر ۱۳۰۸ طبع الحامره، شرح مجلته الاحکام العدلیه لزانای الحموی علی ابن مجیم ار ۱۵۳ طبع العامره، شرح مجلته الاحکام العدلیه لزانای ار ۱۰۷ طبع محمص، الفروق مع تهذیب الفروق والقواعد السدیه سهر ۲۸۳، الفرق ۹۵ مطبع دارالهمرف واشاه والنظائر للسیوهی ر ۱۱ اطبع العلمیه،

⁽۱) المحموي على ابن مجيم ار ۱۵۳، شرح مجلع الاحكام العدليه لزانا کا کاار ۱۰۵۰ تهذيب اخروق والقواعد اسديه سهر ۲۸۸، لا شباه النظائر للسوه في ر ۱۱۷

یر دوں کے مثابہ ہو گئے (ا)۔

فقہاء نے ال سے چندصورتیں منتقی کی ہیں، بن میں تابع
اپنے متبوئ سے الگ مستقل علم رکھتا ہے۔ ان صورتوں میں سے ایک
یہ ہے کہ ماں کو چھوڑ کر صرف حمل کے تعلق وصیت کی جائے ، بشرطیکہ
وہ بچے زندہ پیدا ہواور چھاہ سے کم میں پیدا ہو، آئی بات تو اتفاقی ہے،
اور اگر چھ ماہ سے زائد میں بچہ پیدا ہو(۲) تو اس میں تفصیل اور
اختا نے ہے، اس کے تعلق اصطلاح "وصیت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت" بیشوت کی طرف رجو کی کیا جائے۔

ب- جوُّخص کسی چیز کا مالک ہونو و ہاس کا بھی مالک ہوگا جو اس کی ضروریات میں ہے ہو:

۲ - یہ قاعدہ ان اصولوں کو شامل ہے جو شیج وشر اء میں بغیر ذکر کے داخل ہو ہے ہیں اوروہ اصول دوضا بطوں کے تحت آ تے ہیں:

اول: ہر وہ نمارت یا دوسری چیز جومکان میں ثامل ہواں کو نچ کا اسم عرفا ثامل ہے، مثلاً مکان کے ملحقات جیسے مطبخ اور وہ پھر جو زمین اورمکان میں لگے ہوں، وہ پھر نہیں جو دنن ہوں۔

دوم: جو چیز دومری چیز سے جڑی ہوئی ہو، جیسے درخت، یہ حفیہ اور مالکیہ کے نزدیک زمین کی تھے میں بلاؤکر داخل ہوجا کمیں گے، حنابلہ کا بھی دوقو لوں میں سے ایک قول یک ہے، تھے کے معالمے میں یک صراحت امام شافعی کی بھی ہے، لیکن امام شافعی کے بھی ہے، لیکن امام شافعی نے رہین کے معالمے میں داخل نہ ہونے کی صراحت کی ہے، مشلاً نے رہین رہین ہوگی، ورمطاق رکھا (کوئی قید نہیں لگائی تو زمین رہین ہوگی،

(۱) گفتی سهر ۸۸ مر

درخت رئین ندہوں گے) اور جہاں تک اصحاب کا تعلق ہے تو تھے اور
رئین وغیرہ کے مسائل میں امام ثافعی نے جو صراحت کی ہے اس کے
بارے میں ان کے مختلف رہ تحانات ہیں: اصحافی لم جمہور اصحاب ثافعی
کے فز دیک دونوں تقسر بجات کو برقر ارر کھنا ہے (یعنی مطلق ہونے کی
صورت میں نتے میں تمارت اور درخت کا داخل ہوجانا اور رئین میں
داخل ندہونا) ، دوسر اقول ہے ہے کہ ان دونوں کے معالمے میں دونوں
قول ہیں ، تیسر ایہ ہے کہ نتے ورئین دونوں صورتوں میں قطعی طور پر داخل
نہ ہوں گے ، اس کے قائل این ہر تکی ہیں، ای کو امام (رازی) اور امام
غز الی دونوں نے اختیار کیا ہے (ا)۔

ج - تا المع ، متبوع كے ساقط ہونے سے ساقط ہوجا تا ہے: ك - ال تاعده كاذكر زركشى نے المئوريس اور سيوطى وابن تجيم نے اپنى اپنى كتابوں ميں كياہے (٢)۔

یباں ان کی مراد اس تابع ہے جواب متبوئ کے ساتھ ہونے
سے ساتھ ہوجائے، وہ تابع ہے جو وجود میں غیر کے تابع ہوہ اس
کے نروئ میں سے جو کتب تو اعد میں مذکور ہیں، بیاناعدہ ہے کہ جس کی
نماز جنون کے دنوں میں نوت ہوگئ ہواور اس پر نضا کے واجب نہ
ہونے کا قول اختیار کیا گیا ہوتو اس کے لئے سنن رات کی نضامتحب
نہیں ہوگی، اس لئے کہ فرض ساتھ ہوگیا تو اس کا تابع (سنن رات)

اورعدم وقوف عرفہ کی وجہ ہے جس کا حج نوت ہوگیا اور وہ افعال عمر ہ کے ذر مید حلال ہوگیا تو وہ رمی نہیں کرے گا اور نہ رات

⁽٢) حاشيه ابن هايدين ٥/ ١٨ م، الدسوقي سهر ١٥/ ١٥ هم الفكر، جوامر الأطبيل ٢/ ١٥/ شعع دار المعرف، حاشيه قليو في سهر ١٥٨ الطبع أحلي، كشاف القباع سهر ٣٥٦ طبع النصر

⁽۱) شرح مجلة الاحكام العدليه الرااا،۱۱۲، لفروق سهر ۲۸۳، روضعه الطاكبين سهر ۵۳۷،۵۳۷، المغنی سهر ۸۸،۸۸

⁽۲) المنعور الر۳۵ مع مول، وأشباه والنظائر للسوطى مرام المحمو ي على ابن كجيم الر۱۵۵ ل

مز داغہ میں گز ارے گا ، اس لئے کہ بید ونوں وقو فعر فہ کے تا بع میں اور وہ سا قط ہوگیا ہے۔

وہ مسائل جو ان قو اعد سے خارج ہیں، یہ ہیں کہ وہ کونگا جو تکمیر کے تلفظ سے عاجز ہواں کو حفیہ اور ثا فعیہ کے زویک اپنی زبان کوحرکت دینا لازم ہے، یہی بات حنابلہ میں سے قاضی کے زویک بھی ہے، کیکن مالکیہ اور حنابلہ کے سیجے قول کے مطابق اس پر بیلا زم نہیں، بلکہ نیت کافی ہے، اور اپنے ول میں تکبیر کے، اس لئے کہ جو شخص کو یائی سے عاجز ہوا سے زبان کا حرکت دینا ہے کار ہے، جیسا کہ حنابلہ کہتے ہیں، بلکہ ابن تیمیہ یباں تک کہتے ہیں کہ اگر یہ کہا جائے کہ زبان حرکت دینا ہے کار ہے، جیسا کہ حنابلہ کہتے ہیں کہ اگر میہ کیا جائے گو تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو جہ سے اس کی نما زباطل ہوجائے گی تو

اورائیں مسائل میں سے جوائ قاعدہ سے فارج ہیں، یہ بھی ہے کہ جس شخص کے سر پر بال نہ ہوں (گفجا ہو) وہ حاول ہونے کے لئے سر موعد وانے کی جگہ استرا پھیروائے، حفیہ کے مختارقول کے مطابق بیاں پر واجب ہے، اور بیر چیز مالکیہ کے نزد کیک بھی واجب ہے، اور بیر چیز مالکیہ کے نزد کیک بھی واجب ہے، اس لئے کہ سرموعد وانا عبادت ہے جو بالوں سے تعلق رکھتی ہے، البد اوہ بال نہ ہونے کی صورت ہیں کھال کی طرف نتقل ہوگئی، ثا فعیہ کے نزد دیک مندوب ہے، اور حنابلہ کے یہاں مستحب ہے (۲)۔

ان مسائل میں سے جوعبا دات کے علاوہ میں اس قاعدہ سے فارج ہیں، میمسلد ہے کہ اگر کسی وارث نے کسی تیسر سے وارث کا آر ارکیا جومیراث میں ان دونوں کا شریک ہے تو بالا جماع نسب

ظاہت نہ ہوگا، اس لئے کہ نب میں تبعیض نہیں ہوتی (لیعنی اس میں اجز انہیں ہوتے)، لہذا اس کا اثبات انکار کرنے والے کوچھوڑ کر صرف اتر ارکرنے والے کے حق میں ممکن نہیں، اور دونوں کے حق میں جمکن نہیں، اور دونوں کے حق میں جھی ممکن نہیں، اس لئے کہ ان میں سے ایک منگر ہے اور ایسی کوئی شہا دت نہیں پائی جاتی جس سے نب نا بت ہو، لیکن اکثر اہل نلم کے مطابق وہ اتر ارکرنے والے کے ساتھ میں اشر یک ہوگا، اس لئے کہ اس نے ایسے مال کے سب کا اتر ارکہا ہے جس کے بطابان کا حکم نہیں لگایا گیا، لہذ اس پر مال لازم ہوگا (۱)۔

سیوطی اور این جیم نے ایک دوسر اتاعدہ بھی ذکر کیا ہے جو اس تاعدہ کے تربیب ہے، اور وہ ان کا بیول ہے: "الفوع یسقط افا سقط الأصل" (جب اصل ساتھ ہوجائے تو فر ع بھی ساتھ ہوجائے تو فر ع بھی ساتھ ہوجائی ہے)۔ مجلّہ کی شرح میں ہے کہ بیتاعدہ محسوسات و معقولات میں رائے ہے۔ لہذا جس چیز کا وجود کسی دوسری شے کے وجود کے لئے میں رائے ہے۔ لہذا جس چیز کا وجود کسی دوسری شے کے وجود کے لئے اصل ہووہ دوسری شی وجود میں اس کے تابع ہوگی، اور وہ دوسری فرع کے وجود کے لئے ہوگی جو اس اصل شی پر منی ہوگی، چیسے کہ درخت جب سوکھ جائے تو اس کا بھیل بھی سوکھ جائے گا، اور چیسے اللہ تعالی پر ایمان جو کہ اصل ہے اور شمام انتمال اس کی فر و ش ہیں، جب ایمان ساتھ ہوجائے رائع ہوجائے (العیاد باللہ) تو انتمال ہے کار ہوجا کیس، جب ایمان ساتھ ہوجائے کہ ان کا اعتبار (العیاد باللہ) تو انتمال ہے کار ہوجا کیس گے، اس لئے کہ ان کا اعتبار میں تھا ایمان باللہ ہے۔

اس قاعدہ کے فروٹ میں سے فقہاء کا یہ قول ہے: ''جب اسل بری ہوجائے تو ضامن یعنی فیل بھی بری ہوجائے گا''اس لئے کے کفیل اسل کی فر ش ہے، کیکن اس کے برعکس نہ ہوگا (۲)۔

⁽۱) المحموي على ابن مجيم ار ۱۵۵، الزرقاني ار ۱۹۵ طبع الفكر، الدسوتي ار ۳۳۳، جوام الأطبيل ار ۲ سم، روضيه الطالبين ار ۲۳۹ طبع أمكنب الاسلامي، الانصاف ۲ رسس طبع التراث، كشاف القتاع ار ۳۳ طبع اتصر، أمغني ار ۲۳ س

⁽٣) المحموي على ابن مجيم ار ۵ ۱۵، الدسوقي ١٨٨ س، لأشباه والنظائر للسروطي ر ١١٨، الانصاف مهر ٩ س

⁽۱) الموسومة المطهيد لا، اصطلاح "قبر از"؛ فقره ۱۲، نيز ديکھئے المغنی ۵ / ۱۹۰۰ ۱۹۹۱، ابن عابدين سهر ۲۷ س، الدسوقی سهر ۱۵ س، لمړيز ب ۲ ر ۵۳ س، ۵۳ س

⁽۲) الأشاه والظائر كلسيوفى بر ۱۱۹، لهمو ي على اين كيم ابر ۱۵۵، شرح مجلة الاحكام العدلية لا كالح ابر ۱۱۵

سمجھی بھی فرئ ٹابت ہوجاتی ہے ، اگر چہ اسل ٹابت نہیں ، جسے اگر چہ اسل ٹابت نہیں ، جسے اگر شوہر نے خلع کا دعوی کیا اور بیوی نے انکار کیا تو بغیر کسی اختلاف کے بینونت ٹابت ہوجائے گی ، اس لئے کہ شوہر نے الی چیز کا افر ارکیا ہے جو بینونت (حدائی) کو واجب کرتی ہے ، اگر چہ وہ مال ٹابت نہ ہوگا جو کہ اسل ہے (ا)۔

د- توابع میں وہ چیز معاف کر دی جاتی ہے جوغیر توابع میں معاف نہیں کی جاتی:

۸ – ال قاعده کا ذکر سیوطی اور ابن نجیم نے کیا ہے، اور ال قاعده کے تربیب فقہاء کا یقول ہے: ''فنی میں وہ چیز ضمنا معاف کردی جاتی ہے جوال میں تصدا معاف نہیں کی جاتی ''، اور ان کا یقول بھی: '' دوسر بے درجہ میں وہ چیز معاف ہوجایا کرتی ہے جو پہلے درجہ میں نہیں ہوتی ''، اور ان کا یقول بھی: '' دوسر بے ہوتی ''، اور ان کا یقول ہے: '' بعض چیز یں عقود کے شروع میں موکد ہوجاتی ہیں جوعقود کے اوافر میں موکد کرنیں ہوتیں '' یقو ایع میں میدمعانی ہوجاتی ہیں جوعقود کے اوافر میں موکد کرنیں ہوتیں '' یقو ایع میں میدمعانی اور وی فی ہیں جو میں کہا ہی کی کہا ہی کہا ہی

ال قاعدہ کے فروٹ میں سے بیہ ہے کہ ابتداءً نسب عور نوں کی شہادت سے ٹابت نہیں ہوتا، کیکن اگر وہ ولا دے علی القراش (اس بات کی شہادت کہ فلاں کی زوجیت میں رہتے ہوئے ولا دت ہوئی ہے) کی شہادت دیدیں تو مبعانسب ٹابت ہوجائے گا، یباں تک ک

اس وفت بھی نسب ٹابت ہوجائے گاجب ولادت کی شہادت و پنے والی تنبادائی ہو^(۱)۔

وہ مسلہ جو اس قاعدہ سے خارج اور اس قاعدہ کے برعکس ہے،

یہ ہے کہ فاسق کو قاضی بنایا جاسکتا ہے جب اس کے صدق کا گمان ہو،

لیکن جب کسی عادل کو قاضی بنایا گیا اور اس نے اپنے قاضی ہونے

کے دوران فسق کا ارتکاب کیا تو وہ معز ولی کا مستحق ہوگیا، یجی حفیہ کا طاہر مذہب ہے، اور بعض حضر ات کہتے ہیں کہ وہ اپنے فسق کی وجہ سے معز ول ہوجائے گا، اس لئے کہ اس کی عدالت شرط کے درجہ میں تھی، اس کو قاضی بنانا ابتداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا جنداء جائز تھا، لیکن انتہاء اس کو قاضی بنانا ہوگئی تو والایت بھی زائل ہوگئی تو والایت بھی زائل

مالکیہ نے اس مسلمین ذکر کیا ہے کہ غیر عادل کا قاضی بنا سیح نہیں اور نہ اس کا تھم ما فند ہوگا، لیکن امام ما لک فر ماتے ہیں کہ ہیں نہیں دیکھتا کہ قاضیوں کی خصائل محمودہ آج کسی میں بھی جمع ہوں، اگر ان میں ہے کسی کے اندرد وصلتیں بھی جمع ہوں، نلم اور تقوی، تو وہ قاضی ، نادیا جائے گا۔

ِ حَرَ افِی نے کہاہے کہ اگر عادل نہ پایا جائے تو موجود لوکوں میں جو بہتر ہووی قاضی بنلا جائے گا۔

شا فعیہ اور حنابلہ کے نزدیک فاسق کو قاضی بناما تعجیج نہیں (m)۔

شا فعیہ کے نزویک بیہ ہے کہ اگر تمام شرطیں کسی آدمی میں جمع

⁽۱) لحمو ي على ابن مجيم ار ۵۵ ا، جو اير الأطبيل ار ۳۳۲، لأشباه و انظارُ للسيوفي ر ۱۹ ۱۱، كشاف القياع ۵ ر ۳۳۰

⁽۲) - لأشباه و النظائر للسيوفي مر ۱۲۰،۱۳۰ طبع العلميه، لحمو ي على ابن كجيم ار۱۵۱، شرح مجلنة الاحكام الراسات

⁽۱) ابن عابدین ۱۲۲/۳، الدسوقی ۱۸۸۸، لأشباه و النظائر کلسیوهی ۱۳۰، کشاف القتاع ۲/۳۳۸

⁽٢) الهدامية وفتح القدير ٢٥ / ٥٥ ما طبع بولا ق1 اسلامة شرح مجلة الاحكام الرسمة ال

⁽m) الدسوقي سهر ١٣٩، جوام الأكليل ١٧١٣ طبع دار أمعر فيه.

ہونا دشو ارہواور ایسا سلطان جے شوکت حاصل ہو، کسی فاس کو قاضی بناد نے قوضر ورق اس کی قضا نافذ ہوگی، ناک لوگوں کی مسلحتیں معطل ہوکر ندرہ جائیں (۱)۔

عزبن عبدالساام كتب بين كرجب تاضيون كالفرف وصيت كرف والون (جن بين عدالت شرط ب) كے نفرف سے زيادہ عام ہے، اورائر (امراء) (جن كے لئے عدالت كی شرط لگائے بین اختاا ف ہے) كے نفرف ہے رہاتھ اختاا ف ہے) كے نفرف ہے زيادہ فاص ہے تو أبين ائر كے ساتھ لائل كرنے بين اختاا ف كيا گيا ہے، بعض وہ فقهاء بين جنہوں نے ان كو ائر كے ساتھ لائل كيا ہے، اس لئے كہ ان كا نفرف، وصيت كرنے والوں كے نفرف ہے رہادہ عام ہے، اور بعض فقهاء نے أبين وصيت كرنے والوں كے نفرف ہے رہاتھ لائل كيا ہے، اس لئے كہ ان كا نفرف، وسيت كرنے والوں كے ساتھ لائل كيا ہے، اس لئے كہ ان كا تفرف فقهاء نے أبين وصيت كرنے والوں كے ساتھ لائل كيا ہے، اس لئے كہ ان كا نفرف ائر كے ان كا نفرف ائر كے دان كا نفرف ائر كے نفرف ہے دنيا وہ فاص ہے (۱۲)۔

تا بع متبوع برمقدم نبیس ہوتا:

9- ال قاعده كفر وئ مين سي بيه كمقتدى كا الني الم برتكبير افتتاح مين آگے بر هناسچے نبين، اور نه دوسر سے اركان مين ، ال لئے كر عديث ہے: "إنما جعل الإمام ليؤتم به، فإذا كبر فكبروا" (الم الل لئے ہوتا ہے، تاكر اللى كى اقتداء كى

اور حديث "إلما جعل الإمام ليؤنم به، فإذا كبو فكبووا"كي روايت بخاري (الفتح ٨٨ ٨٨ طع التغير) نے كي بــــ

جائے، پس جب وہ اللہ اکبر کہنوتم بھی اللہ اکبرکہو)۔

و- تابع كا تابع نبيس موتا:

اس قاعدہ کے فروٹ میں سے یہ ہے کہ اگر کسی شخص نے جنابیت میں سرف انگلیاں کائی ہیں تو دبیت واجب ہوگی، اور اگر ہاتھ کو گئے سے کاٹ دینو اس کو دبیت سے زیا دہ لا زم نہ ہوگا اور ہیں کو انگلیوں کے تابع ہنادیا جائے گا، اور اگر اس سے زیا دہ کاٹ دیے تو استا بع شہیں ہنایا جائے گا، اور اگر اس سے زیا دہ کاٹ دیے تو استا بع شہیں ہنایا جائے گا، بلکہ زیا دتی کے لئے عادل شخص جس مقدار کا فیصل کر دے گا وہ مقدار اس پر لا زم ہوگی، اس لئے کہ تا بع کا تا بع نہیں ہوتا (۱)۔

ال قاعدہ سے جومسکہ خارج ہے، وہ وکیل کا اپنے مؤکل سے رجو ٹا کئے بغیر غیر کو وکیل بنانا ہے، حنفیہ نے ذکر کیا ہے کہ وکیل کوئل سے کہ عقد کے وہ حقوق جو ای کی طرف لوٹنے ہیں ان میں دوسر سے کو وکیل بنائے ، اس لئے کہ وہ اس میں اصیل ہے، لبند ابغیر اپنے مؤکل کی اجازت کے وکیل بناسکتا ہے۔

مالکیہ نے وکیل مفوض اور وکیل غیر مفوض کے درمیان فرق کیا ہے، انہوں نے ذکر کیا ہے کہ اظہر قول کے مطابق وکیل مفوض کوحق حاصل ہے کہ وکیل بنائے، اور غیر مفوض کو ان چیز وں میں جن کا اس کو وکیل بنایا گیا ہے، بلا اجازت وکیل بنانے کا حق نہیں، البتہ دو حالتوں میں اجازت ہے:

> ایک بیدکه وه فعل اس کے لائق نه ہو۔ دوم بیدکہ وہ اتنازیا دہ ہوکہ اس کا تنبا انجام دیناد شوار ہو۔

⁽⁾ د تیجئے: شرح کملی علی لهمهاج وحاشیة للیو لی وحمیره مهر ۵۵ س

⁽۳) أنحو ي على ابن مجيم ار ۵۵ اطبع العامره، ابن هايدين ار ۲ ۳۰ ۳۰ ۳۰، جوابر والكيل ار ۲ ۸، روضيد الطالبين ار ۳۱۹، ۳۷۳، أمتحور ار ۳۳۲، وأشباه والنظائر للسروطي ر ۱۹، ۱۲۰، الانصاف ۲ر ۳۳۳ طبع انتر اث، كشاف القتاع ار ۲۲ ۳، ۲۵ س

⁽۱) المنعورار ۲۳۷ طبع بول، ابن عابدین ۱۸ ۳۵۱ طبع المصری، جوامر وانگلیل ۱۲ ۴۷۰ طبع دار المعرف، روضعه الطاکبین ۱۸ ۳۸۳ طبع اسکنب الاسلای، کشاف القتاع ۲۷ ۲ ۴ طبع النصر

بٹا فعیہ نے ذکر کیا ہے کہ وکیل کو بن کاموں کا وکیل بنایا گیا ہے اگر اس میں وکیل بناتا ہے اور اس کا مؤکل سکوت اختیا رکرتا ہے تو و یکھا جائے گا کہ وہ معاملہ اس سے ہوسکتا ہے یا نہیں، اگر اس سے ہوسکتا ہے یا نہیں، اگر اس سے ہوسکتا ہے تو و کیل بناتا جائز نہ ہوگا، اور اگر نہیں ہوسکتا ہے، اس لئے کہ وہ اس کے مقام ومنصب کے لوگتی نہیں، تو اس کے لئے سیح فدیب کے مطابق وکیل بناتا درست ہے، اس لئے کہ مقصود اس طرح کے مدیب کے مطابق وکیل بناتا درست ہے، اس لئے کہ مقصود اس طرح کے کاموں میں تا تب بناتا ہے۔

اور حنابلہ کے نزویک جس مُدہب پر اصحاب امام احمد ہیں، یہ ہے کہ وکیل کے لئے وکیل ہنانا ان چیز وں میں جائز نہیں جن کووہ خود کرسکتا ہے، اور امام احمد سے جواز منقول ہے (۱)۔

ال مسلم میں نفصیل ہے جسے اصطلاح '' وکالۃ '' کے تحت دیکھی جائے۔

ز-اعتبار منبوع کی نبیت کا ہے نہ کہ تا ابع کی نبیت کا:

11 - جو کسی غیر کا تا ابع ہوجیہ یوی اپ شوہر کی تا ابع ہوتی ہے، نوجی اپ تا ند کا تا ابع ہوتا ہے، تو بیسٹر جوان دونوں کے لئے نماز میں تصر اور روز دمیں افطار کو مباح کرتا ہے، اس میں متبوع کی نبیت کا اعتبار ہے نہ کہ تا ابع کی نبیت کا امتبار ہے نہ کہ تا ابع کی نبیت کا ای بند ہوتا ہے، ابلا متبوع کی نبیت کا پابند ہوتا ہے، ابلا متبوع کی نبیت کا پابند ہوتا ہے، ابلا متبار کے تا بع میں متبوع کی نبیت کا پابند ہوتا ہے، ابلا ابن کا تکم دیا جائے گا، پس عورت اپ شوہر کے تا بع ہوگا، پیر خفیہ اور حنا بلد کے زویک کی ہوگا ، پیر خفیہ اور حنا بلد کے زویک کی ہوگا ، میا معاملہ میں کہ بیوی کی ہے۔ جہاں تک شافعیہ کا معاملہ ہے تو وہ اس معاملہ میں کہ بیوی کی نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے نبیت شوہر کی نبیت کے تا بع ہوتی ہے ، حفیہ اور حنا بلہ کی طرح رائے

ر کھتے ہیں، کیکن فوجی کی نیت کے معالمے میں ان سے اختاا ف رکھتے

ہیں، انہوں نے نوجی کی نیت کو امیر کی نیت کے تابع نہیں ،نلا، اس لئے کہ نوجی امیر کے قبضہ وغلبہ کے تحت نہیں ہوتا ہے (۱)۔

اور مالکید نے جہاں تک مراجع کا علم ہوسکا ان میں اس مسلد سے کوئی تعرض نہیں کیا ہے (۲)۔

ح - جوچیز بیج میں بیعاً داخل ہوتی ہے اس کاشمن میں کوئی حصہ بیس ہوتا:

11 - اس کی مثال اوصاف ہیں جو بلاؤکر نیج میں واقل ہوجائے
ہیں، جیسے تمارت اور درخت زمین کی نیج میں، اور اعصاء حیوان کی نیج
میں، اور عمدگی، کیلی اور وزنی چیز وں میں، اس لئے کہ قبضہ سے پہلے
ہیں، اور عمدگی، حیلی اور وزنی چیز وں میں، اس لئے کہ قبضہ سے پہلے
پہلے ان اوصاف کی کوئی قیمت نہیں لگائی جاتی، جیسا کہ جامع
الفصولین میں ہے، مرجب کہ ان پر قبضہ ہوجائے، جیسا کہ شرح
الاسیجانی میں ہے۔ امام محمد رحمہ اللہ نے اس کی ایک اصل وضع کی
ہے، وہ بیاکہ ہر وہ چیز جسے تم نبالز وخت کروتو اس کی نیج جائز نہ ہواور
ہے، وہ بیاکہ ہر وہ چیز جسے تم نبالز وخت کروتو اس کی نیج جائز نہ ہواور
ہے۔ کسی اور کے ساتھ ملاکر پیچو تو نیج جائز ہو، ایسی چیز اگر قبضے سے قبل
ہے۔ کسی اور کے ساتھ ملاکر پیچو تو نیج جائز ہو، ایسی چیز اگر قبضے سے قبل
سی اور کی نگل آئی تو مشتر می کو اختیا رہوگا ، اگر چا ہے تو با تی کو پورے
میں اور کی نگل آئی تو مشتر می کو اختیا رہوگا ، اگر چا ہے تو باتی کو پورے

اور ہر وہ چیز کہ جب تم اے تنہا پیُو تو نیچ جائز ہو، اگر اے دوسرے کے ساتھ ملا کر بیچا ہواور وہ کسی اور کی نگل آئی تو جس کا حصہ فکل آیا ہے اس کے لئے تمن سے حصہ ہوگا۔

عاصل مدکہ جوچیز نے میں مبعاً وافل ہوتی ہے، جب قضم کے

⁽۱) ابن عابدین سهر ۱۰ ساه جوام لوکلیل ۱۲۸ ۱۳۹۱، روضیه الطاکبین سهر ساسه ساسه الانصاف ۱۳۷۵ س

⁽۱) ابن عابدین اس ۵۳۳، ۵۳۳، روضعه الطاکبین اس۸ ۲۸، کشاف القتاع ار ۵۰۵

⁽۲) سوابب الجليل ۲۲ ۱۵۸ الميع الخباح، المدونه ار ۱۱۸ ان ۱۲۳ طبع دارصادن الدسوقی ار ۳۵۸ سه ۳۷ سطيع الفکر، جوابر الإکليل ار ۸۸، ۳۳ طبع دار العرف، العدوم کلی امر راله ایر ۳۲۱ طبع دار المعرف.

تبعية سلاتئغ ١-٢

بعد کسی اور کی آئی آئی تو اس کے لئے تمن سے حصہ ہوگا، اور مشتری بائع
سے اس کے حصہ کے مطابق لونا لے گا، اور اگر قبضہ سے پہلے کسی اور
کی آئی اور اس کی تنبا آئے جائز نہیں تھی جیسے رہالہ، تو اس کے لئے
مثمن سے کوئی حصہ نہ ہوگا، لہذا مشتری کچھیں لونا نے گا، بلکہ اسے
افتیا ردیا جائے گا کہ پوری قیمت و کر لے لے، یا نہ لیما چاہے تو
چھوڑ دے، اور اگر اس کی تئے تنبا جائز ہو جیسے درخت، تو اس کے لئے
مثمن سے حصہ ہوگا، اس کی تئے تنبا جائز ہو جیسے درخت، تو اس کے لئے

پھر بیک تابع نظیمیں وافل ہے یانہیں اس کامحل اس وقت ہے جب کہ اس کا ذکر کردیا جائے تو وہ تصدا جب کہ اس کا ذکر کردیا جائے تو وہ تصدا مبنی بن جائے گا، لہذا اگر قبضہ سے پہلے کسی آفت ما ویہ سے وہ ضائع موجائے قرشمن سے اس کے حصد کی مقد ارسا قد ہوجائے گی (ا)۔ معصد کی مقد ارسا قد ہوجائے گی (ا)۔ معصد کی مقد ارسا قد ہوجائے گی (ا)۔ معصد کی مقد ارسا قد ہوجائے گی (ا)۔

ط-تعدی کرنے کی وجہ سے تا بع کا ضمان ہوگا:

ساا - اس قاعدہ کے فروٹ میں سے بیہے کہ جس نے کسی حاملہ عورت پر جنابیت کی اور اس کا حمل ساقط کر دیا تو ایک غلام دینا ہوگا (۲)۔

ای قاعدہ کے فروع میں سے بیاتھی ہے کہ غاصب پرشی مغصوب کے مفاور اس کی آمدنی کا بھی ضان ہوگا مفصوب کے عاصب منظرہ ہوگا مفصوب کے تابع ہوکر، بیمسلدمالکید، شا فعیداور حنابلہ کے بیباں ہے، حنظہ کا اس میں اختاا ف ہے (۳)۔

تعریف:

1-" تبع" (تا پرزبر کے ساتھ) غیر عربی لفظ ہے جو کسی تبدیلی کے بغیر عربی زبان میں داخل ہے، اور مجمع الملعة العربی نے اسے تعلیم کرلیا ہے، یہ بیٹن کی نوٹ کا ایک پودا ہے جسے تمبا کو نوش ، تاک میں چراصا نے اور چبا کر کھانے میں استعمال کیا جاتا ہے، ای پودے کی ایک شم خوبصورتی وزینت کے لئے لگائی جاتی ہے، یہ پودا امر کی نسل کا ہے، قدیم اہل عرب اس سے واقف نہیں بیھے۔

ال کے اور بھی نام ہیں، جیسے: دیان (دھواں) تنہی (تمباکو) تنباک (تمباکو)، آخر الذکر لفظ کا زیادہ تر استعال ایک مخصوص نوع کے تمباکو پر ہوتا ہے جو کثیف ہوتا ہے اور حقد کے ذریعیہ جس کا کش لیاجا تا ہے، رول کئے ہوئے کا غذ کے ذریعیہ بیل ۔

۲-تمبا کونوشی اورجاا کر استعال کرنے میں تبغ ہے ماتی جلتی ایک چیز "طباق" ہے، جونکی جیسے پھولوں کے پچھوں سے بھر اہوا ایک گھاس نما پودا ہے، تبغ کے مقابلہ میں طباق اہل عرب کے فرد کیک معروف ہے، "طباق" معرب لفظ ہے۔

معجم الوسيط ميں ہے: ''طباق''کش لياجانے والا تمباكو ہے جس كے پتوں كا چھو ئے چھو ئے نكرے كر كے يا لپيٹ كر كے كش

⁽۱) المعجم الوريط "منى عبق"، لسان العرب الحيطة فتم المصطلحات، تهذيب الفروق الر٢١٦_

⁽۱) شرح مجلة لأحكام العدلية لأناك ١٥٣،١٥١، ١٥٣ـ

 ⁽۲) ابن عابد بن ۳۷۵/۵ طبع المصريب

⁽۳) ابن عابدین ۱۲۰/۵ طبع المصری جوایم واکلیل ۱۲۰/۵ طبع المصری جوایم واکلیل ۱۵،۱۵۰ طبع دار آمر ۱۵،۱۵۰ طبع دار آمر قد، روضعه الطالبین ۱۵/۱۱،۵۱ طبع المستری سرا ۱۱۱ طبع النصری

"- دخان (دھواں نوشی) کے بارے میں فقہا وفر ماتے ہیں: یہ
دسویں صدی ہجری کے اواخر اور گیا رہویں صدی ہجری کے اوائل
میں ظاہر ہوا، سب سے پہلے اسے روم (لیعنی عثانی ترکوں) کی
سرزمین میں انگریز لائے اور مغرب کی سرزمین میں ایک یہودی لایا
جوخودکو کیم بتاتا تھا، پھر اسے مصر، تجاز، بندوستان اور بیشتر اسلامی
ممالک میں لایا گیا()۔

تمبا کوسے متعلق احکام: تمبا کواستعال کرنے کا حکم:

الله جب سے دخان (سگریٹ نوشی) جو تنج (تمبا) کوکا معروف ام ہے، کا رواج ہوا ہے، اس کے استعال کے تکم میں فقہاء کا اختاا ف چا آرہا ہے، جس کا سبب بیہ ہے کہ اس کے استعال سے اختاا ف چا آرہا ہے، جس کا سبب بیہ ہے کہ اس کے استعال سے نقصان چنچ کے کے سلسلہ میں، نیز اس پر منطبق ہونے والے ان دلائل کے سلسلہ میں اختاا ف ہے جو قیای ہیں، کیونکہ تمبا کو کے سلسلہ میں کوئی نص نہیں ہے۔

بعض فقہاء نے کہا ہے کہ تمباکونوشی حرام ہے، پچھ دوسر سے فقہاء نے کہا ہے کہ وہ مباح ہے، پچھ فقہاء نے اسے مکر وہ بتایا ہے۔ ہر فقہی مسلک کی ایک جماعت نے مذکورہ احکام میں سے ہر تھم کے مطابق فتوی دیا ہے، ذیل میں اس کی تفصیل ہے:

تمباکوکی حرمت کے قائلین اوران کے دلائل: ۵-تمباکونوشی کی حرمت کے قائلین حفیہ میں سے شیخ شرمبلا کی جمیری اور صاحب الدرامنتی ہیں، ابن عاہدین نے شیخ عبد الرحمٰن ممادی کے

نزدیک ال کی کر اہت تحریمی کوظاہر سمجھا ہے۔

مالکیہ میں سے اس کی حرمت کے قائل سالم مہوری، ایر ائیم لقانی جمر بن عبد الکریم فکون، خالد بن احمد اور این حمدون وغیرہ ہیں۔ شافعیہ میں سے جم الدین غزی قلیونی، این علان وغیرہ اس کو حرام قر اردیتے ہیں۔

حنا بلد میں سے شیخ احمد بہوتی اور بعض علاء نجد اس کی حرمت کے "قائل ہیں۔

ان میں سے بعض فقہاء جیسے لقانی قلیونی، محمد بن عبد الکریم فکون اور ابن علان وغیرہ نے اس کی حرمت پرتحر بریھی کاھی ہے (۱)۔ تمبا کونوش کی حرمت کے قائلین نے مندر جبدؤیل ولائل سے استدلال کیا ہے:

۲-الف تمباکونوش سے شروئ شروئ میں پوری مدہوش کے ساتھ تیز نشد آتا ہے، پھر ہر بار اس میں تھوڑی تھوڑی کی آتی رہتی ہے، یہاں تک کہ جب عرصد دراز ہوجاتا ہے تو اسے نشد کا احساس بھی نہیں ہوتا، کیکن اسے ایک لذت اور ایک ایساسر ورحاصل ہوتا ہے جو اس کو نشد آوری نشد سے زیادہ پہند ہوتا ہے۔ یا حرمت کی دلیل سے ہے کہ نشد آوری (اسکار) سے مراد مطلقاً عقل پر چھاجانے والی کیفیت ہے، اگر چھ اس کے ساتھ سر ورولذت کی شدت نہ ہوہ اور اس میں کوئی شبہ نہیں کہ کہا بارتمباکونوش سے میک ہوئی شربہ بیل کی روسے تہا کہ ایسا کونوش سے میں دولئی گر وسے تہا کہ ایسا کونوش سے میں کہ والے کی اور تمباکوکی تمباکونوش سے میں کی جائے گی اور تمباکوکی تمباکونوش سے میں کوئی شربہ باکونوش سے دیا دولی کی جائے گی اور تمباکوکی تمباکولی کی دولی کے اور تمباکوکی کے دولی کی دولی کی دولی کے دولی کی دولی کے دولی کی دولیا کی دولی کی کی دولی کی دولی کی دولی کی دولی کی دولی کی دولی کی کی دولی کی کی دولی کی کی

(۱) الدرافقار مع حاشيه ابن عابدين ۵ / ۳۹۱،۲۹۵، تبذيب الفروق بهاش المفروق الر ۲۱۱،۲۹۱، تخ المطلق الما لک الر ۲۱۱،۹۸، ۱۹۰، طبع اخير تجلمی، وار ۲۱۷،۲۱۱، ۲۱۵، حاصية الجسل الر ۱۷۰، حاصية الجسل الر ۱۷۰، حاصية المستر شدين له ۲۲۰، حاشيه قليو لي الر ۲۱۹، حاصية الجسل الر ۱۷۰، حاصية المشروانی سر ۲۳۷، مطالب اولی الهی ۲۱ ر ۲۱۷ – ۲۱۹، الفواکه العديد ق فی المسائل المفيد ۲۳ / ۲۳۸، درالة إحتاد السائل إلی دلائل المسائل ر ۵۰، ۵۱ من مجموعه الرسائل المشاهر فی إحیاء سنة خیر البریه للفوكانی، طبع دار الکتب المحلمه به المحلمه به المحلمه به المحلمه به المحلمه به المحلمه به المحلمة به المحلمة المحلمة به المحلمة ب

⁽۱) فتح العلى للما لك الر ۱۱۸، ۱۹۰ طبع اخير لتحلمي، تهذيب الفروق الر ۲۱۲، الدر الحق روحاشيه ابن هابدين هار ۹۵۰

تلیل اورکثیر ہر مقدار حرام ہوگی۔

کین اس کی بنیا در تمباکونہ تو نجس ہے اور نہ اس کے استعال کرنے والے پر حد جاری کی جائے گی، البتہ اس کی تلیل مقدار بھی کثیر مقدار کی طرح حرام ہوگی، تاک اس کے اثر ات نہ مرتب ہوجا کمیں، اس لئے کہ عموماً معمولی تمباکونوشی ہے بھی تاثیر واقع ہوجاتی ہے، اور عقل کی حفاظت ان پانچ کلیات میں سے ہے جن پر مقام اہل ملل کا اتفاق ہے (۲)

ہے۔ تمباکونوش سے بدن ، عقل اور مال تینوں کونقصان ہوتا ہے ، تمباکو سے قلب میں نساد پیدا ہوتا ہے ، قوی میں کمزوری آتی ہے ، رنگ زرد پراجا تا ہے ، اور پیٹ میں اس کے دھویں کی کثافت سے گئ امراض اور فر ابیاں پیدا ہوتی ہیں ، جیسے کھانسی جوآ گے چل کرمرض سل پیدا کرتی ہے ، اور بار ہارتم ہاکو نوشی سے اردگر دیے تھے سیاہ پراجا ہے

ہیں، اس سے حرارت بھی ہیدا ہوتی ہے جو ایک تباہ کن مہلک مرض کی شكل اختياركرليتي ب، اور ال طرح بيكيفيت تحكم قرآني "وَ لَا تَفْتُلُوا ا أَنْفُسَكُمْ" (١) (اوراپي جانوں کوقتل مت کرو) کے ذیل میں داخل ہوجاتی ہے۔ تمباکونوش سےرکوں کی راہیں بند ہوجاتی ہیں،جس کے · تیجه میں رکوں سے گز ر کرجسم کی ممبر انیوں تک غذ ا کا پینچنا مو**تو ن** ہوجاتا ہے اور نیجہ تمبا کونوش کی احل تک موت واقع ہوجاتی ہے (۲)۔ فقهاءمزيد كتب بين كرتمبا كونوشى كى مضرت ير اطباء كا اتفاق ہے، شیخ علیش فر ماتے ہیں: انگریزوں کے ساتھ رہنے والے بعض افر ادنے بتایا کہ انگریزوں نے مسلم ممالک میں تمباکو کومتعارف اس وقت كرايا جب الكريز اطباءال بات يرايك رائے ہوگئے كه الكريز قوم کوتمباکونوشی کا عادی ہونے سے روکا جائے اور انہیں اس کا حکم دیا جائے کہ وہ تھوڑی مقدار استعال کریں جوصحت کے لئے ضرر رسال ندہوہ اس کنے کہ ان اطباء نے ایک مخص کا پوسٹ مارٹم کیا جس ک موت تمباکونوش کے نتیجہ میں جگر کے جلنے سے ہوئی تھی، اطباء نے دیکھا کہمباکو کے اثر ات اس کی رکوں اور پھوں میں وافل ہو چکے ہیں، اس کی مڈریوں کے کودے سیاہ پڑھیے ہیں، اور اس کا دل خشک الليخ كى ما نند ہوگيا ہے، لهذا اطباء نے انگريز ون كوتمبا كونوش كا عادى ہونے سے روکا اور مسلمانوں کو نقصان پہچانے کی غرض سے تمباکو مسلمانوں کے ہاتھوں فروخت کرنے کی ترغیب دی فی علیش فر ماتے ہیں: اگرتمبا کو کے مضرات میں سے سرف یہی بات معلوم ہوتی تو بھی بیقل کواس سے گریز برآما دہ کرنے کے لئے کانی تھی (m)، جب کہ رسول اللہ ﷺ نے بیٹھی فر مایا ہے: '' المحلال بین

⁽۱) حدیث: "لیهی د سول الله خلاف کل مسکو و مفتو" کی روایت ابوداؤد (سهر ۹۰ طبع عزت عبید دهاس) نے کی ہے اس کی سند ضعیف ہے(عون المعبود سهر ۲۰۳۳ کا کع کرده دارا اکتاب العربی)۔

⁽۲) - ابن طابرين ۲۱۸۵، تبذيب لفروق ار ۲۱۸، ۲۱۸، الفواكه العديدة في المسائل لمفيد ۲۰، ۸۱،۸۰ م

⁽۱) سرونا ۱۸۹۶

⁽٣) فتح العلى المالك الر١١٨، ١٢٣، حاشيه قليو في الر١٩، الجيري على الخطيب ١٨٧٢-١، المواكه العديدة في المهائل المقيدة ١٨٨.

⁽m) فتح العلى المالك الر١٣٢، الفواكر الصريع ٢٥/١٨_

والحوام بین، وبینهما مشتبهات لا یعلمهن کثیر من الناس، فمن اتقی الشبهات استبراً لدینه وعرضه، ومن وقع فی الشبهات وقع فی الحوام، کالراعی یوعی حول الحمی یوشک آن یوتع فیه"(۱) (عالل واضح ہے، اور حرام واضح ہے، ان دونوں کے درمیان کچھ مشتبرامور ہیں جنہیں پیشتر لوگ نہیں جائے، تو جس شخص نے ان مشتبر مور سے دائن بچالیا، اس نے اپنے دین اور اپنی آبر وکومخوظ کرلیا، اور جوان مشتبرامور میں داخل مواوہ حرام میں داخل ہوگیا، جیسک چروا اور جوان مشتبرامور میں داخل ہوا وہ حرام میں داخل ہوگیا، جیسک چروا اور جوان مشتبرامور میں داخل ہوا یہ جو جراگاہ کے اردگر د چراتا ہوا ہو جراگاہ کے اردگر د چراتا ہوا ہو جراگاہ کے اردگر د چراتا ہے، ہوسکتا ہے کہ (اس کا جانور) اس میں چرنے گے)۔

ان سب کے علاوہ حدید مراجع کی تفصیلات سے بھی تمبا کونوشی کی ضرررسانی ٹابت ہوتی ہے (۲)۔

9 - و۔ تمباکونوشی میں مال کا اسراف، فضول خرچی اور ضیاع بھی ہے، شیخ علیش فرماتے ہیں: جن فقہاء نے بیز مایا ہے کہ ایسی کم عقلی جومو جب پابندی ہے وہ لذتوں اور خواہشوں میں مال کو بے جاخر چی کرنا ہے، اگر ان فقہاء سے تمبا کو استعمال کرنے والے کے بارے میں دریا فت کیا جائے تو وہ بغیر کسی تو تف کے فرما کیں گے کہ ایسا شخص میں دریا فت کیا جائے تو وہ بغیر کسی تو تف کے فرما کیں گے کہ ایسا شخص سفیہ ہے اور اس پر پابندی عائد کرنا واجب ہے، نیز بیا بھی دیکھئے کہ تمباکونوشی کے مدیس مال کو ضائع کرنے سے دومری جانب ہیا تر ات

(۱) عدیث: "الحلال بین و الحوام بین" کی روایت بخاری (النج سهر ۲۹۰ طبع استانیه) ورسلم (سهر ۱۳۱۹ طبع الحلی) نے کی ہے الفاظ سلم کے بیں۔

سیسی سیسی استان بین کرتمها کونوشی سیستان رپورٹوں سے تابت ہو چکا ہے کر پر نتصان دہ ہے محت کے لئے نظریا ک ہے در اس کے نتیجہ میں کینر کا مرض بھی لاحق ہوجاتا ہے ور مرنے والوں میں تمہا کونوش کرنے والوں کی شرح دوسروں کی پہنست ذیا دہ ہے دیکھتے اس سلسلہ میں انسا میکلوپیڈیا آف برنا نیکا مطبوعہ (۱۹۹۸ء مادہ (TOBACCO)) نیز کاب انتہ فیمین و سرطان امریکہ لایم کو زمیل الطویل ہوس

مرتب ہوتے ہیں کفقراء ومساکین کی مشکلات میں اضافہ ہوتا ہے، انہیں ان موال کے صدقات نہیں ملتے جو ان خوشحال عیاشوں کی تمباکونوشی کی نذر ہوجائے ہیں، ایسے لوگ دین کے دشمنوں اور ہرسر پیکار کافر وں کو تو ہڑی خوش دلی سے اپنے موال چیش کردیتے ہیں، لیکن مسلمانوں کے مصالح اور مختاجوں کی حاجت روائی میں تعاون سے گریزاں ہوتے ہیں (۱)۔

• ا - ص - عثانی فلیفد کی جانب سے اس دور کے علاء کے قاوی کی بنیاد پر سرکاری فر مان جاری ہوا تھا کہ تمبا کو نوشی ممنوع ہے، تمبا کو استعال کرنے والے کوسز ادی جائے گی اور پکڑے گئے تمبا کو کوجا! دیا جائے گا، لہذا تمبا کو نوشی کی حرمت کی ایک وجہ فلیفہ کی نافر مانی بھی جوگی، اس لئے کہ فلیفہ کے تھم کی تعمیل واجب ہے، البتہ ان امور میں جائز نہیں ہے جن کی حرمت پر اجماع ہے، اور اس کی خلاف ورزی حرام ہے (۱)۔

11-و _ تمبا کوئی مہک بر بودار اور تکلیف دہ ہوتی ہے اور ہر تکلیف دہ بوتی ہے اور ہر تکلیف دہ بوتی ہوتی ہے، تمبا کوئی بوتو پیاز اور نہیں ہے بھی زیا دہ تیز ہوتی ہے، جب کہ پیاز اور نہیں کھانے والے کو مجد میں داخل ہونے ہے روکا گیا ہے، بالبند بدہ مہک اور بد بودار مہک میں بھی فرق کیا گیا ہے، پیاز اور نہیں کی بونا لیند بدہ مہوتی ہے بد بودار نہیں ، کیکن تمبا کوئی مہک بد بودار ہوتی ہے در بودار ہوتی ہے در ہوتی ہے۔ بد بودار ہوتی ہے۔ بد بودار ہوتی ہے۔ بد بودار ہوتی ہے۔ بد بودار ہوتی ہے۔

17 - ز۔ بن لوکوں نے بطور دواتم ہا کونوشی شروع کی انہوں نے بھی دوا کی حد تک اس کے استعمال پر اکتفانہیں کیا، بلکہ اس سے آ گے بڑھ کر لذت ولطف کے لئے بھی استعمال کرنے لگے، علاج کا وعوی محض

⁽۱) فتح أنعلى المالك الر١٣٢، ٩٨١، تبدِّيب الفروق الر١٢٥، ١٨٨_

⁽٣) ابن عابدين ١٩٩٧ه، الدرامتين بها ش مجمع الانهر ١٩٧٣ه، فتح العلى الما لك الر١٣٠ ـ

⁽m) فتح العلى المرالك الر ١٣٠٠ الاساب

وُصوتُ قا، ال کے بردہ میں عبث، ابدولاب اورنشہ آوری کے خفیہ مقاصد تک رسائی حاصل کی گئ، حفیہ نے اس کوجرام قرار دیا ہے، انہوں نے ''عیت'' کی تعریف کے کہ وہ ایسائل ہے جو فرض تھے کے علاوہ کے لئے ہو، اور ''سفہ' ایسافعل ہے جس میں الذت ہو۔ نماز کے غلاوہ کی نہ ہو، اور ''لوب'' وہ فعل ہے جس میں الذت ہو۔ نماز کے علاوہ میں عبث کی حرمت کی صراحت کرنے والوں میں صاحب کتاب الاحساب (ا) بھی ہیں، جنہوں نے اس آیت کریمہ سے استدلال کیا ہے: ''افک سینٹیم اُلّما حُلفُنا کُم عُبنًا'' (۱) (بال تو کیا تمہارا خیال کیا تھا کہ تم نے تمہیں یوں می بالمتصد بیدا کردیا ہے)، اور ان میں صاحب الکانی بھی ہیں، جنہوں نے اس حدیث رسول اللہ علیف صاحب الکانی بھی ہیں، جنہوں نے اس حدیث رسول اللہ علیف صاحب الکانی بھی ہیں، جنہوں نے اس حدیث رسول اللہ علیف میں ساحب الکانی بھی ہیں، جنہوں نے اس حدیث رسول اللہ علیف اللہ جاتے اللہ کیا ہے: ''کل شیء یلھو به الرجل باطل الا دھیہ الرجل بقوسه، و تافییہ فرسه، و مالاعبته امر آته، فإنهن من اللہ حق شرائدانی، اپنے گھوڑے کی تربیت اور اپنی یوی کے ساتھ للف اللہ وزی کے ساتھ للف الدوزی کی کر بیت اور اپنی یوی کے ساتھ للف اللہ وزی کے کہ کہ تیتے اور اپنی یوی کے ساتھ للف

تمباکوکے جوازکے قائلین اوران کے دلائل:

ساا - تمباكونوشى كے جوازكى رائے اختياركرنے والوں يلى حفيہ يلى الله على الله على الله على حفيہ يلى الله عبد الختى عابلى على المحت كے موضوع بر انہوں نے ایك رسالہ بھى لكھا ہے جس كا نام ہے "المصلع بين الإحوان في إباحة شوب الله خان"، ان عى يلى صاحب الإحوان في إباحة شوب الله خان"، ان عى يلى صاحب

- (۱) فخ الحلى المالك الراقال
 - (۲) سور کسومنون ۱۱۵ ال
- (٣) عدیث: "كل شيء یلهو به الوجل باطل إلا رمیة الوجل بقوسه....." كی روایت احد (۳/ ۱۳۳ طبع لیمریه) اورحاكم (۹۵/۲ طبع دائرة المعارف العشائيه) نے كی ہے حاكم نے اس كوسيح كہا ہے اور ذہي نے ان كی موافقت كی ہے۔

الدرالختاره ابن عابدین، صاحب فتا وی مهدییش محد عبای مهدی اور الاشباه والنظائر کے ثنارح حموی ہیں۔

تائلین جوازین مالکیہ بین سے علی اجموری ہیں، انہوں نے اس کے مباح بہونے کے موضوع پر رسالہ لکھا ہے جس کانام ہے "غایة البیان لحل شوب مالا یغیب العقل من الدخان"، اس رسالہ بین انہوں نے اس کی اباحت پر ائمہ مذاہب اربعہ بین سے معتدعلاء کے قاونے قال کئے ہیں، اور ان کی متابعت کرتے ہوئے اکثر متافرین مالکیہ نے طلت کی رائے افتیار کی ہے، جن میں وسوقی، اکثر متافرین مالکیہ نے طلت کی رائے افتیار کی ہے، جن میں وسوقی، صاوی، امیر اور صاحب تبذیب القروق ہیں۔

شافعید بین سے جواز کی رائے اپنانے والوں بین حفی ، حلی ، رشیدی ، شہر الملسی ، بابلی اور عبدالقا در بن محمد بن تخیی حمینی طبری مکی بین ، نہوں نے ''دفع الاشتباک عن تناول التنباک'' کے بام سے رسالہ بھی لکھا ہے۔

حنابلہ بیں سے تمباکو کے جوازگ رائے کرمی صاحب دلیل الطالب کی ہے، اس موضوع پر ان کا ایک رسالہ بھی بنام ''البوھان فی شأن شوب اللحان"ہے۔

ای طرح شوکانی بھی اس کی اباحث کے قائل ہیں (۱)۔ تمباکو کی اباحث کے قائلین نے مندرجہ ذیل دلائل سے استدلال کیا ہے:

۱۹۷ - الف بتمباکو کے استعال سے نشہ پیدا ہونے ، یا مدہوثی پیدا ہونے یاضرر پہنچنے کا ثبوت (اس رائے کے قائلین کے فزویک) نہیں

⁽۱) ابن هاندین ۵ر ۲۹۱،۳۹۵، الفتاوی البندیه ۵ر ۲۹۸، اتحوی کی لا شباه ار ۹۸، فتح المحلی لمها لک ار ۱۹۸،۰۹۵، تبذیب لفروق ار ۲۱۹،۳۱۷، الدسوتی ار ۵۰، المشرح اله فیر ار ۱۹،۳۳۳، المشروانی علی تحفته الحتاج ۸ر ۹۰ می حاصیه الجمل ار ۷۰،۸۵ مطالب اولی اثبی ۲۱ / ۲۱۵، الفواکه العدیدة فی المسائل لهمفید ۲۵ مر ۱۸،۸۰،۸۰ درالیه ارشا داسائل للفوکا لی از ۵۰،۱۵

ہے، تمباکو کے پھیاا و اور اس سے لوگوں کی واقفیت کے بعد یہ بات معر وف ہوئی ہے، لبذا ریووی غلط ہے کہ اس سے نشہ پیدا ہوتا ہے یا مدہوثی طاری ہوتی ہے، اس لئے کہ نشہ آوری اعضاء کی حرکمت کے ساتھ عقل غائب ہوجانے کا نام ہے، اور مدہوثی میں عقل جاتی رہتی ساتھ عقل غائب ہوجانے کا نام ہے، اور مدہوثی میں عقل جاتی رہتی ہے اور اعضاء بھی ڈھیلے پڑا جاتے ہیں، اور تمباکو نوشی کرنے والے کے اندر یہ و ونوں کیفیت پیدائیس ہوتی، ہاں جوشی اس کے استعال کو اور گی کی کیفیت کا عادی نہیں ہوتا اس کے اندر اس کے استعال سے فنو دگی کی کیفیت پیدائیو جاتے ہیں ہوتی، ہاں جوشی صن شطی وغیرہ نے بیدا ہوجاتی ہے، اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے بیدا ہوجاتی ہی ہے، اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے بیک بات کبی ہے، اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے بیک بات کبی ہے۔ اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے کبی ہے۔ اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے کبی ہو ہے۔ اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی وغیرہ نے کبی بات کبی ہے، اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی و خیرہ ہے کبی بات کبی ہے، اور یہ و جب تحریم نہیں ہے، شیخ حسن شطی و غیرہ نے کبی بات کبی ہے۔ اور ایک بی ہے دارا ک

10 -ب - اشیاء کے اندر اصل اباحت ہے، جب تک کر کسی نص میں اس کی حرمت وارد نہ ہو، کہذ اشر بعت کے قو عد اور عمومی اصولوں کے مطابق تمبا کونی نفسہ مباح ہوگا، کیونکہ تمبا کو بعد کی بیداوار ہے،

شارت کے زبانہ میں اس کا وجود نہ تھا اور اس کے بارے میں کوئی نص وار ذبیں ہے اور نہ بی تر آن یا حدیث میں اس کا کوئی تھم موجود ہے ، لبند ایدان امور میں ہے ہے جن ہے اللہ تعالیٰ نے درگذر فر مایا ہے ، اور احتیاط کا تقاضا بینیں ہے کہ اللہ کی جانب غلط انتساب کرتے ہوئے اس کو حرام یا مکر وہ بتایا جائے ، جس کے لئے دلیل کی موجودگی ضروری ہے ، بلکداحتیاط ہے ہے کہ اس کو مباح بتایا جائے جو اسل ہے ، نبی کریم علی تقیاط ہے کہ اس کو مباح بتایا جائے جو اسل ہے ، شراب کی تحریم میں تو تف اختیار فر مایا تا آنکہ نص قطعی نا زل ہوئی ، شراب کی تحریم میں تو تف اختیار فر مایا تا آنکہ نص قطعی نا زل ہوئی ، لبند اجب کسی انسان ہے اس کے بارے میں پوچھا جائے تو اے کہنا چاہد اور طبع خوال ہے کہنا اس کی مہک و بوطبی حقوں کو ما پہند ہوتی ہے ، لبند اور طبع فال پند ہیرہ ہے ، لیکن اس کی مہک و بوطبی حقوں کو ما پند ہوتی

17 - ق - اگر یفرض کرلیا جائے کہ تمباکو سے پچھلوکوں کونقصان پنچا ہے۔ تو یدایک عارضی شئ ہوئی ، وہ اپنی فرات بیس ضرررساں نہیں ہے ، جس کونقصان پنچے اس کے لئے حرام ہوگا دوسر ہے کے لئے نہیں ، اور نہیر ایک کے لئے اس کی حرمت لا زم آئے گی ، شہد بھی پچھلوکوں کو نقصان پیچا تا ہے ، بلکہ پچھلوگ تو اس کے استعال کرنے سے بیار ہوجاتے ہیں ، حالانکہ شہد بیل نصقطعی کے مطابق شفاہ (۲)۔ ہوجاتے ہیں ، حالانکہ شہد بیل نصقطعی کے مطابق شفاہ (۲)۔ کا ا - د۔ مباح ہور میں اس طرح مال فریق کرنا امر اف نہیں ہے ، اس لئے کہ امر اف فضول فریچی (تبذیر) کانام ہے جھٹر سے ابن مسعود نے تبذیر کی تفید یہ یک ہال کو اس کے حق کے علاوہ میں فریق کرنا مراف میں فریق کرنا مراف ہیں فریق کرنا مراف ہیں فریق کرنا مر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہے تو یہ مباح امر ہوتو وہ امر اف نہیں ہے ، اور یہ دوی کہ وہ امر اف ہو یہ ہو تو یہ ہو

⁽۱) حاشيه مطالب لولی اُتی ۲۱۷/۱۱، ابن هايد بن ۲۹۹۸، تهذيب اُقروق اروام

⁽۲) تهذیب افروق ار ۱۲۱۷

⁽۱) - ابن عابدین ۲۵ ۳۹۱، ترزیب افروق از ۱۲ ۳۸۰ مطالب یولی آتی ۲۱ ۲۱۷۰، ۲۱۸، الفواکر العدید ۲۶ ر ۸۳، حاصة الجمل سهر ۲۳

⁽۲) ابن هایدین ۲۹۱۸، تبذیب افروق ار ۳۱۸، رسالته اِ رستا دانسائل کلفو کا فی ر ۵۱،۵۰۷، الفواکر العدید ۲۵ م ۸۳

تمباکو کے ساتھ فاص نہیں ہے (۱)۔

۱۸ - ص محققین کا اس بات پر اتفاق ہے کہ بغیر کسی دلیل شرق کے عقل اور رائے کو فیصل بنانا باطل ہے، کیونکہ تمبا کو کو حرام تر ار دینا صلاح نہیں ہے، بلکہ صلاح اور دیند اری بیہ ہے کہ (شریعت میں) وارد احکام کی اتبائ بغیر کسی تبدیلی وتغیر کے کی جائے، اور کیا اہل ایمان واہل دین میں ہے اکثر لوگوں پر طعن اور ان کے بارے میں انسان واہل دین میں ہے اکثر لوگوں پر طعن اور ان کے بارے میں صورت اس امت کے عوام کی ہے، خواص کی بات تو دیگر ہے (میرائی کی است کے عوام کی ہے، خواص کی بات تو دیگر ہے (۱۸)، آیا میں سے المان کے بارے اللہ میں اور اس امت کے عوام کی ہے، خواص کی بات تو دیگر ہے (۱۸)، آیا میں سے المان کے بارے اللہ میں اللہ اللہ کے بارہ اللہ کی بات تو دیگر ہے (۱۸)، آیا میں سے اللہ کی اللہ کے بارہ اللہ کی بات تو دیگر ہے با نسان کی بات کی بات تو دیگر ہے با نسان کی بات کی بات

19 - و۔ ابن عابدین نے لکھا ہے کہ تمباکونوشی کی حرمت کا نتوی و ہے والوں کی اتباع واجب نہیں ہے، اس لئے کہ ان کا فتوی اگر اجتہا و پر منی ہے، اس لئے کہ ان کا فتوی اگر اجتہا و کی شرائط نہیں ہے، کیونکہ اجتہا و کی شرائط نہیں ہے، کیونکہ اجتہا و کی شرائط نہیں ہائی جاتی ہیں، اور اگر یفتوی کسی و وسر ہے جہتد کی تقلید پر منی ہے نو بھی ورست نہیں ہے، کیونکہ انہوں نے اس کے والو کل نقل نہیں کے بیں، چر ان کے لئے فتوی و ینا کیونکہ ورست ہوگا اور کیونکر ان کی تقلید واجب ہوگا؟

ودمزیدنر ماتے ہیں: اس زمانہ میں حاول یا حرام قر اردینے کا نتوی دیتے وقت حق بات میہ ہے کہ ان دواصولوں کو پیش نظر رکھا جائے جو بینا وی نے'' لا صول'' میں ذکر فر مایا ہے، اور کہا ہے کہ مید دونوں اصول شریعت میں نفع پہنچانے والے ہیں۔

اول: منافع کے سلسلہ میں اسل اباحت ہے، اس پر دلالت کرنے والی آیات ہے تاریبیں۔

دوم: مضار(نقصان) کے سلسلہ میں اسل حرمت اور ممانعت ہے، اس لنے کہ نبی کریم سیکھیٹے فرماتے ہیں:"لا صور ولا

ضواد" () (ندابتداء تقصان پہنچانا ہے اور ند بدلد میں نقصان پہچانا ہے)۔

ابن عابدین پھر لکھتے ہیں: فلا صدیہ ہے کہ اگرتمبا کو کے بارے ہیں نابت ہوجائے کہ اس ہیں ایس ضرررسانی ہے جس سے منافع ختم ہوجائے ہیں تو اس کی حرمت کا فتوی وینا جائز ہوگا، اور اگر اس کی ضرر رسانی نابت نہ ہوتو اصلاً وہ طابل رہے گا، مزید یہ کہ تمبا کو کی صلت کا فتوی وینے ہیں مسلمانوں سے حرج کا از اللہ ہوتا ہے، کیونکہ اکثر مسلمان تمبا کو کے استعال ہیں بہتا ہیں، لہند اس کو طابل قر اردینا اس کو حرام قر اردینا اس کی جس کی نائیدہ شکل سے ہو سکے گی، ہاں اگر میا کو سے جس کی نائیدہ شکل سے ہو سکے گی، ہاں اگر تمبا کو سے کہ تو تمبا کو حرام شریا کو سے کہ تو تمبا کو راس کے بیش نظر علاج مقصود ہوتو اس کے جس کی تائیدہ پہنچتا ہوتو اس کے بیش نظر علاج مقصود ہوتو اس کے جس میں تمبا کونوش مرغوب ہے۔ نظر علاج مقصود ہوتو اس کے جس میں تمبا کونوش مرغوب ہے۔

ابن عابدین کہتے ہیں: یبی جواب شیخ محی الدین احمد بن محی الدین بن حیدرکردی جزاری نے دیاہے (۲)۔

تہذیب القروق میں ہے: جس شخص کو اللہ تعالی نے تمبا کونوشی اوراس کے استعال سے کسی بھی طور پر محفوظ رکھا ہوا سے نہیں چا ہے کہ لوکوں کواس کے استعال پر آمادہ کر سے اور اس کے بتیجہ میں ان کی ذات میں مے اطمینانی اور ان کے دین میں مےرسوفی پیدا کرد ہے، کیونکہ کسی امر کی تبدیلی کے لئے شرط ہے کہ اس کا منکر ہونا متفقہ ہو (۳)۔

⁽۱) ترزيب لفروق ار ۲۱۸،مطالب ولي البي ۲۱۷/۱۳۱

⁽۲) مطالب اولی اُس ۲۱۸ ۸۱۳ ـ

⁽۱) حدیث: "لا ضور ولا ضوار" کی روایت ابن ماجه (۲۸ م ۲۸۸ طبع الجلی) نے کی ہے ابن رجب سنبلی نے جامع العلوم والحکم (ص ۲۸۱ طبع الحلی) میں کہاہے کہ اس کے اور بھی طرق ہیں جن میں ہے بعض ہے بعض کو تقویرت مالتی ہے۔

 ⁽۲) تهذیب اغروق ار ۲۲۰ تنقیح افتتاوی الحامدیه ۳۱۲،۳۱۵ س.

⁽۳) تهذیب افروق ۱۲۳۱ س

تمیا کوکی کراہت کے قائلین اوران کے دلال:

۲ - تمبا کونوشی کی کراہت کے قائلین میں حضیہ میں سے ابن علیہ ین،
 او السعو د اور علامہ کھنوی ہیں۔

مالکیہ میں سے شیخ بیسف صفتی ہیں۔ شافعیہ میں سے شروانی ہیں۔

حنابله میں سے بہوتی ،رحیبانی اور احمد بن محمر منقور تھی ہیں (۱)۔ ان حضر ات نے مندر جہذیل متدلات ذکر کئے ہیں:

۲۱ - الف۔ اس کی بونالپندیدہ ہوتی ہے، لہذا کی پیاز ہمن اور کرتے ہوئے کر ایک قتم کی بد بودار تر کاری) وغیرہ پر قیاس کرتے ہوئے تمبا کو بھی مکروہ ہوگا۔

۲۲-ب- تمباکوئی حرمت کے دلائل ٹا بت نہیں ہیں ، البتہ ان سے شک پیدا ہوجا تا ہے ، اور محض شک کی بنا پر کسی شن کو حرام قر ارنہیں دیا جا سکتا، لبند احرمت کے قائلین کے ذکر کردہ دلائل کو دیکھتے ہوئے صرف مکروہ کہا جا سکتا ہے (۲)۔

(۱) ابن عابدین ۲۹۹۸۵، تهذیب افروق ار ۲۱۹، الشروانی علی تحفة الحتاج سهر ۲۳۷۵، مطالب ولی النمی ۲۸ ۲۱۵، ۱مواکه العدید ۲۵ ۸ ۸۰

- جہم میں سرایت کرجاتا ہے کیمیاوی تحقیق ہے تا بت ہو چکا ہے کہ اس میں نیکویٹین ہوتا ہے اورآ کے جل کراس ہے پہیموٹ سکا کینر جیسا ہو وی وجملک مرض ہیدا ہوتا ہے جس کے علاق ہے طب کی دنیا آئی تک جران ویر بیٹان ہے ان سب کے علاوہ تکومت کی جانب ہے اس پر لگائے جانے والے زیر دست بیکسوں کی وجہ ہے اس کی قیمت بسا وقات کی گنا ہوجاتی ہے تکومت نے اولا قبیس اس لئے لگا تھا کہ لوگ اس کے استعال ہے إز رہیں، لیکن اس کے استعال ہے إز رہیت پھیلاؤ کود کھتے ہوئے تکومتوں نے اس کو قوب آمد کی حاصل کرنے وار بی طرح تمبا کونوشی اور اس کے مصائب لوگوں میں جام ہوگئے کہ اب حادی انسان کے لئے اس کا جیموثا ہوں تو ایک میں جام ہوگئے کہ اب حادی انسان کے لئے اس کا جیموثا ہوں جس کے مصائب لوگوں میں جام ہوگئے کہ اب حادی انسان کے لئے اس کا جیموثا ہوں جس کے مقام ہوگئے کہ اب حادی انسان کے لئے اس کا جیموثا ہوں جس میں جس کے مقام ہوگئے کہ اب حادی انسان کے لئے اس کا جیموثا ہوں جس کے مقام خوبی کے اس کا تیموٹ ہے۔
- (۱) حدیث: "من أكل البصل والغوم والكوات..... "كی روایت مسلم (۱/ ۹۵ شاهیم طبی) نے كی ہے۔

ے لوکوں کو تکلیف پینجی ہے)۔

ابن عابد بن فرماتے ہیں: متجد کے اندرہمن ، پیاز اور اس جیسی بد ہو والی اشیاء کا کھانا ممنوع ہے ، اس لئے کسیح حدیث میں ہمن اور پیاز کھانے والے کومتجد کے قریب آنے ہے منع کیا گیا ہے ، بخاری شریف کی شرح میں علامہ مینی فرماتے ہیں: اس ممانعت کی ملت فرشتوں اور مسلمانوں کو تکلیف پہنچانا ہے۔

ابن عابدین فرماتے ہیں: حدیث میں جس چیز کا ذکر آیا ہے ای کے علم میں ہروہ چیز داخل ہوگی جس کی بو مالیندیدہ ہو،خواہ وہ کھائی جانے والی چیز ہو، یا کچھاور۔

ابن عابدین نے طحطاوی سے نقل کیا ہے کہتمباکو، پیاز اور نہین کے حکم میں داخل ہے۔

شیخ علیش مالکی فر ماتے ہیں: مساجد اور محافل میں تمبا کونوشی بلاشبہ حرام ہے، اس لئے کہ اس کی بونا پہند میدہ ہوتی ہے اور'' مجموع کا ایشبہ حرام ہے، اس الجمعہ میں منقول ہے کہ ہر نا پہند میدہ بو والی شی کا مسجد اور محفلوں میں استعال حرام ہے۔

الشروانی علی تحظ الحماج میں ہے: پیاز اور نہیں کھانے والے شخص کی طرح ناپند میرہ ہو والے خص کو بھی متجد میں داخل ہونے سے موکا جائے گا، ای تکم میں اس وقت مشہورتم باکوئی ہو بھی ہے (۱)۔
ما ۲- ای طرح تم باکونوشی کرنے والے کے لئے متجد میں داخل ہونا جائز نہیں جب تک اس کے منص سے ہوز اکل نہ ہوجائے ، اس مسئلہ کو بیاز اور نہیں کھانے والے کے لئے ہوجائے ، اس مسئلہ کو بیاز اور نہیں کھانے والے کے لئے ہو کے باقی رہنے تک متجد میں

واظری ممانعت پر قیاس کیا گیا ہے، فقہاء نے ناپند بدوہو کی موجودگی کو جمعہ اور جماعت سے گریز کے لئے عذر مانا ہے، بشر طیکہ اس نے جماعت کے ترک کی نیت سے بالقصد ایسانہ کیا ہو۔

ایسے مخص کے لئے داخلہ کی ممانعت صرف مساجد کے ساتھ خاص نہیں ہے، بلکہ مساجد کے علاوہ نماز کے مقامات جیسے عیدگاہ اور جنازہ گاہ وغیرہ مقامات عبادت، ای طرح علم وذکر کی محفلوں اور تااوت قر آن کی مجلسوں وغیرہ میں بھی داخلہ ممنوع ہوگا۔

۲۵ - مند سے تمباکو کی ہوآنے والے خص کے لئے متجدیا عبادات کے مقامات اور تر آن کی مجالس میں داخلہ کی ممانعت کی تفصیل میں فقہاء کا اختلاف مجھی ہے، حفیہ اور مالکید نے اسے حرام تر ار دیا ہے، جبکہ ثنا فعید اور حنا بلدنے اسے کروہ بتایا ہے۔

ای طرح نماز، ذکر اور تااوت قرآن کی مجلسوں کے علاوہ دیگر اجما کی مقامات جیسے ولیم یہ کی محفل اور قضاء کی مجالس میں ایسے خض کے واضلہ کے بارے میں بھی فقہاء کا اختلاف ہے۔

شیخ الا زہر اور دیار مصر کے مفتی شیخ محد مہدی عبائی حنی نے قضاء کی مجالس میں ایسے خص کے داخلہ کے جواز کا فتوی دیا ہے۔ شیخ علیش ماکلی فرماتے ہیں: محفلوں میں تمبا کو کا استعمال حرام ہے۔

شا فعیداور حنابلہ نے اسے مکروہ بتایا ہے۔

۲۶ - جبال تک با زار وغیره کاتعلق ہے تو امام نووی فر ماتے ہیں:
لہن ، پیاز اور کراٹ کے حکم میں ہر وہ چیز داخل ہوگی جس میں
بالبندید دبو ہوتی ہے، خواہ وہ غذ انی نوعیت کی ہویا پچھ اور، علاء نے
مساحد بر بی عبادات کے مقامات اور علم وذکر وولیم ہوغیرہ کی محفلوں
کوقیاس کیا ہے۔

⁽۱) این عابدین ار ۳۹۷،۳۹۲،۳۹۲، نتج النتی نمایک ار۱۹۸،۱۹۱، حاهیه الشروانی علی تحفة الحتاج ۲۸۵۷،۲۷۱، کشاف الفتاع ار ۹۷،۳۷۵،۲۷۲، ۲۸۵۲س

پھر فرماتے ہیں: اس تھم میں بازار وغیرہ شامل نہیں ہوں گے(۱)۔

تمباكوكى تجارت اوركاشت كاحكم:

27- تمباکو کے تعلق سے فقہا و کا اختلاف ال کے استعال کے حکم کی بابت تھا کہ آیا اس کا استعال حرام ہے یا طلال یا مکروہ ، تمباکو کی تجارت اور اس کی کاشت کے موضوع پر فقہا و نے بہت کم کلام کیا ہے۔

البنة فی الجملہ یہ کہا جاسکتا ہے کہ بن فقہاء نے تمبا کوکورام تر ار
دیا ہے ان کے نزدیک اس کی تجارت اور کاشت بھی ای طرح حرام
ہوگی، اور جمن دوسرے فقہاء نے اسے مباح بتایا ہے تمبا کو کی تجارت
اور کاشت بھی ان کے نزدیک مباح ہوگی۔ شخ علیش مالکی نز ماتے
ہیں: حاصل یہ ہے کہ تمبا کو نوشی کی بابت حلت یا حرمت کا اختاا ف
ہے، احتیاط یہ ہے کہ تمبا کو نوشی نہ کی جائے، اور تمبا کو کی تجارت اس
کے استعال کا وسیلہ ہے، اس لئے تجارت کا تکم بھی وہی ہوگا (۱۷)۔

تمباکو کی تجارت وکاشت ہے تعلق فقہاء کے جواتو ال مل سکے ہیں ذیل میں ہم آئیں درج کرتے ہیں:

۲۸ - حضیہ میں سے ابن عابدین نے شرمبلالی سے قتل کیا ہے کہ تمبا کو کی تجارت ممنوع ہے (۳)۔

مالکیہ میں ہے شیخ علیش نے جو کچھ ذکر کیا ہے کہ اس ہے تمبا کو

- (۱) ابن عابدین از ۳۹۷،۳۴۳، ۱۹۹۵،۳۴۹، الطحطاوی کی الدر از ۳۷۸، فتح انعلی الدر از ۳۷۸، فتح انعلی الدر از ۳۷۸، فتح انعلی المدر از ۱۸۳۸، فتح انعلی المدر از ۱۸۳۸، فتح انتخاج ۱۸۳۸، فتر از ۱۸۳۸، فتح انتخاج ۱۸۳۳، فتح مسلم بشرح النووی ۱۸۳۸، فتح سم طبع سوم مثا فع کرده دار احیاء امتر ات ، کشاف الفتاع الر ۹۸،۳۸۸، ۳۵ می ۱۸۳۸، ۱۸۵۹، الفتاوی ۱۸۹۸، ۹۵۸.
 - (۲) فتح أيني الما لك الرووار
 - (۳) این ما برین ۲۹۵/۵ (۳)

کی کاشت اور اس کی تجارت کا جواز معلوم ہوتا ہے، کیونکہ ان سے
پوچھا گیا کرتمباکو جسے بانس میں ڈال کر استعال کیا جاتا ہے اور اس کی
کش کی جاتی ہے، کیا وہ مالیت رکھتا ہے؟ کہ اگر کوئی شخص ان دونوں
میں سے پچھ ضائع کر دے جو دوسرے کی ملکیت ہوتو کیا اس پر ضمان
آئے گا ، یا کیا تھم ہوگا؟

تو انہوں نے جواب دیا کہ وہ دونوں مالیت رکھتے ہیں، ال لئے کہ وہ فئ طاہر ہے، اس میں ایسے لوگوں کے لئے شرق منفعت ہے جن کی طبیعت میں اس کے استعمال کی وجہ سے خلل پیدا ہو چکا ہو اور تمبا کو اس کے لئے دوا کی حیثیت اختیار کرچکا ہو، ایس بیدونوں دیگر ان دواؤں کی طرح ہیں جن سے بیار یوں کا علاج کیا جاتا ہے، اور کوئی بھی دیند ار عاقب اس بات میں شک نہیں کرسکتا کہ بیدوائی مالیت والے ہوں گے، مالیت والے ہوں گے، اور مالیت والے ہوں گے، اور اور کیوں نہ ایسا ہوکہ فذکورہ طریقہ پر تمباکو سے انفاع اور اس کے لئے مادر جبد مشاہدہ کی چیز ہے۔

ای طرح شیخ علیش سے ایسے فخص کے بارے میں دریافت کیا گیا جس نے کسی دومر مے فخص کی پیازیا گاجر یاخس یا تمباکویا مطلق کاشت جو قاتل استفادہ نہ ہوئے ہوں ،کونقصان پہنچا دیا ہو، اس پر کیا لازم ہوگا؟ کیا تھیتی کٹنے کے وقت کا اعتبار ہوگایا اس کے ماہرین جو طے

⁽۱) فع العلى الممالك ١٨ ١٨ ١ـ

کریں گے؟ اور اگر قاتل استفادہ ہونے کے بعد ضائع کیا جائے تو کیا تھم ہوگا؟

تو انہوں نے جو اب دیا: اگر تھیتی کو اس کے قابل استعال ہونے سے پہلے نقصان پہنچایا جائے تو نقصان والے دن جو اس کی قیمت ہوگی وہ تا وان میں واجب ہوگی (امید و تیم کے ساتھ)، اگر تا وان کا فیصلہ کرنے میں تا خیر کی گئی بیباں تک کہ تھیتی اپنی سابقہ حالت پر لوٹ آئی تو قیمت ساقط ہوجائے گی اور نقصان پہنچانے والے کی تا دیب کی جائے گی، اور اگر لائق استعال ہونے کے بعد والے کی تا دیب کی جائے گی، اور اگر لائق استعال ہونے کے بعد زیادتی کی قیمت اس پر واجب نہوگی (ا)۔

شافعیہ کے بہاں اس مسلد کا تذکرہ'' حاشیۃ الشہر الملسی علی نہایۃ الحتاج'' میں آیا ہے: ہمارے زمانہ میں معروف تمبا کوکوٹر وخت کرنا درست ہے، اس لئے کہ وہ بعض لوکوں کے نز دیک پاک اور تائل انتفاع ہے (۲)۔

" حاشیة اشروانی علی تخت المحتاج" بین اس سے تعلق آئی ہوئی الفصیل کا خلا صدیہ ہے کہ تم ہاکفر وخت کرنا جائز ہے، اس لئے کہ اس کی حرمت بین اختاب ہے اور بعض لوگ اس سے انتفاع بھی کرتے ہیں، جیسے کہ جب اس کے ترک سے ضرر پہنچنا معلوم ہو، تو اس وقت اس کی فر وختگی درست ہوگی (۳)۔

حنابلہ کے یہاں اس سلسلہ میں کوئی صراحت جمیں نہیں مل، کیئی میں ''کین'' کشاف القنائ'' میں جو پچھآیا ہے اس سے قیاسا اس کی نیچ کا جواز مستفاد ہوناممکن ہے، کہتے ہیں کہ زہر گھاس اور پودے کی تم سے

ہے، اگر اس سے انتفاع کیا جاتا ہواور اس کے معمولی حصہ سے علاج ممکن ہوتو اس کوفر وخت کرنا جائز ہوگا، اس لئے کہ اس میں جائز نفع ہے (۱)۔

تمباكوكى يا كى اورنا يا كى كالحكم:

79- مالکیہ اور ثافعیہ نے تمہاکو کے پاک ہونے کی صراحت کی ہے،
در در پر فرماتے ہیں: جمادات پاک چیز وں ہیں سے ہیں، پودے ک
تمام انسام بھی طاہر ہیں، صاوی فرماتے ہیں: ای میں سے تمہاکو بھی
ہے (۲)، نہایۃ الحتاج کے حاشیہ ہیں شہر الملسی فرماتے ہیں: ہمارے
زمانہ ہیں معروف تمہاکو کو فروخت کرنا درست ہے، اس لئے کہ وہ
پاک ہے، اس سے انتفاع کیا جاتا ہے، ای کے شل" حاشیۃ الجمل،
عاشیہ شروانی اور حاشیہ قلیونی "میں آیا ہے" ای کے شل" حاشیۃ الجمل،
حاشیہ شروانی اور حاشیہ قلیونی "میں آیا ہے"۔

ال کے علاوہ قر افی نے چالیہ ویں فرق میں ذکر کیا ہے: نشہ، عنودگی اور نساد پیدا کرنے والی اشیاء کا قاعدہ (میمیه) غنودگی پیدا کرنے اور نساد پیدا کرنے والی اشیاء کی بنسبت نشه پیدا کرنے والی اشیاء کے بین خصوصی احکام ہیں: حد، نجس کردینا، اور معمولی مقدار کی حرمت، پہلی دو اشیاء (غنودگی پیدا کرنے اور نساد پیدا کرنے والی اشیاء) میں نہ حد جاری ہوتی ہے اور نہان میں نجاست ہے، لہذا جس شخص نے اپنے ساتھ بھنگ یا افیون رکھ کرنماز پراھی تو اس کی نماز بلا تفاق باطل نہیں ہوگی (ایک کہ اللہ تفاق باطل نہیں ہوگی (ایک کہ اللہ تفاق باطل نہیں ہوگی (ایک کہ اللہ تفاق باطل نہیں ہوگی (اللہ تفاق وری الردی ان میں سے بعض حرام بتایا اور اس کی حرمت کی ملے نشہ آوری قر اردی ان میں سے بعض حرام بتایا اور اس کی حرمت کی ملے نشہ آوری قر اردی ان میں سے بعض

⁽¹⁾ فتح أعلى الما لك ١٧ مه ١٤ـــ

 ⁽۲) نهایته انحمناع وحافمیة الشبر املسی ۲ / ۳۱۸.

⁽m) حافية الشروالي على تحنة الحناع مهر ٢٣٧، حافية الجمل سهر ٢٣٠_

⁽۱) كثاف القتاع سر ۵۵ ا

 ⁽۲) الشرح المعثيراره الطبع المحلما ...

⁽۳) نهاینه اکتاع سر ۱۸ م، حاهینه الجسل ار ۱۷۰، حاهینه الشروانی ار ۲۸۸، ۲۸۹، سر ۲۳۷، حاشیر قلیولی ار ۲۹

⁽٣) الفروق لقرافي الر MIA_

لوکوں کے زدیک شراب پر قیاس کرتے ہوئے تمباکو بھی بھس ہے (۱)۔
حضیہ کے مسلک بیس جمیں اس سلسلہ بیس کوئی صراحت نہیں ہا،
لیکن ان کے قو اعد سے معلوم ہوتا ہے کہ تمباکو پاک ہے، چنا نچ
ابن عابدین فر ماتے ہیں: جامد مشروب جیسے بھنگ اور افیون کے
سلسلہ بیس ہم نے کسی کوئیس دیکھا جس نے اس کو ناپاک بتایا ہو، اور
حرام ہونے سے اس کا ناپاک ہونا لازم نہیں آتا، جیسے زہر قائل، جو
حرام ہونے کے با وجود پاک ہے (۲)۔

ای طرح حنابلہ کے مسلک میں بھی جمیں اس سلسلہ میں کوئی صراحت نہیں ملی، البتہ ''نیل الما رب'' میں آیا ہے: غیر سیال نشہ آ ورشیٰ پاک ہے (۳)۔

تميا كونوشى سےروز ہ كا لُو ثنا:

* سا-فقہاء کا اتفاق ہے کہ روزہ کے درمیان معروف تمہاکو کے استعال سے روزہ ٹوٹ جاتا ہے، اس لئے کہ تمہاکوروزہ ٹوڑنے والی اشیاء میں ہے، ای طرح اگر تمہاکو ہے بغیر صرف دھواں حلق میں داخل ہوجائے تو بھی روزہ ٹوٹ جائے گا، بلکہ تصدا اس کوناک میں داخل ہوجائے تو بھی روزہ ٹوٹ جائے گا، بلکہ تصدا اس کوناک میں کھینچنے ہے بھی روزہ ٹوٹ جائے گا، لیکن اگر بغیر ارادہ کے دھواں حلق تک پہنچ جائے، جیسے کسی تمہاکونوش کے پاس بیٹھنے سے بغیر ارادہ کے مطلق میں دھواں داخل ہوجائے جب کہ اس سے احتر ازممکن نہ ہونو مل سے روزہ نہیں ٹو لے گا۔

حنفیہ اور مالکیہ کے فز دیک اگر وہ بالقصد ایسا کرنے قواس پر قضا اور کفار ہ دونوں **لا** زم ہوں گے ، ثا فعیہ اور حنابلہ کے فز دیک صرف

(٣) فيل الما رب بشرح دليل الطالب الروواي

تضالا زم ہوگی، کیونکہ ان کے نزدیک رمضان میں دن کے وقت صرف جمان کرنے سے کفار دلازم ہوتا ہے (۱)۔

ائ طرح تمبا کو چبانے یا ناک میں تھینچنے ہے بھی روزہ ٹوٹ جائے گا، اس لنے کہ اس ہے بھی ایک نوٹ کی کیفیت طاری ہوتی ہے، اور اس کامزہ طاق تک پہنچتا ہے اور دمائ کو اس کامزہ ماتا ہے جس طرح لکڑی سے تمبا کوچو سنے سے مزہ ماتا ہے۔

مالکیہ نے اس کی صراحت کی ہے، دیگیر مسالک کے قو اعد بھی اس کے خلاف نہیں ہیں (۲)۔

شوہر کابیوی کوتمبا کونوشی سے منع کرنے کاحق:

اسا - جمہور فقہاء (حفیہ مالکیہ، نیز شافعیہ و حنابلہ کے نزدیک دورایوں میں سے ایک)رائے بیہ کہ شوہر کوئل ہے کہ بیوی کوہر ایسی چیز سے منع کرے جس کی ہو مالیند بیرہ ہوتی ہے، جیسے بیاز اور لہمن ،ای میں معروف تمبا کو کا استعال بھی آتا ہے، اس لئے کہ اس کی ہو پورے طور پرلذت اند وزی میں ما فع منی ہے، بالحضوص جبکہ شوہر خود تما کونوش ندہو۔

شا فعیہ اور حنابلہ کی دوسری رائے بیہ ہے کہ توہر کے لئے بیوی کو اس سے روکنے کاحق نہیں ہے، اس لئے کہ بیوطی سے مافع نہیں بنآ ہے (۳)۔

⁽۱) بامش الفروق ار ۱۵_

⁽۲) اين ما برين ۱۳۹۳ م

⁽۱) ابن مابدین ۱۸ م. ۹۸ مه، الشرح السفیر ۱۸ ۳۳ طبع الحلی ، فتح العلی المالک ۱۸ ۱ مار ۱۹ مار المشروانی علی تحققه الحتاج ۳۸ ۰۰ س، البحیر می علی الا تخاع ۳۸ ۸۸ ۳۳، کشاف القیاع ۲۸ ۳۳۰

⁽۲) فتح العلى الممالك الر9 كمال

⁽۳) ابن عابدین ۱۳ م ۱۳ م ۱۳ م ۱۳ م ۱۳ اشرح اصغیر از ۵۳۰ طبع محلمی، مح الجلیل ۱۳ م ۱۳ م، الجیری علی الخطیب سهر ۷۰ م، ام بیرب ۱۳ م ۱۲، الجموع ۱۳ م ۱۳۸۳، ۲۸۳ طبع المطبعی، الانصاف ۸۸ ۱۳ م، نیل امارب ۲۱۷۳، المغنی ۷۷ ۲۰، کشاف الفتاع ۷۵ مر ۱۹۰، مطالب یولی اثنی ۵ م ۲۲۳۔

بیوی کے نفقہ میں تمہا کو:

۳۳- بعض شا فعیہ اور حنابلہ کی رائے ہے کہ بیوی اگر بطور لذت تمبا کونوشی کی عادت رکھتی ہونو شوہر کی ذمہ داری ہے کہ نفقہ کے ضمن میں تمبا کوبھی اس کے لئے فر اہم کرے۔

حفظ کی رائے ہے کہ تمبالو کی فر اہمی شوہر پر لا زم نہیں ہے، اگر چہ تمبالو کے ترک سے بیوی کونقصان پنچاہو، این عابد بین فر ماتے ہیں: اس لئے کہ تمباکو یا تو دوا کے قبیل سے ہوگا یا لذت کے طور پر ہوگا، اور دوااورلذت میں سے ہر دوشوہر پر لا زم نہیں ہیں۔

مالکیہ نے اس کی صراحت نہیں کی ہے، ابت ان کے قواعد اس بارے میں حضیہ کی طرح ہیں کہ دواءاور لذت شوہر پر لازم نہیں ہیں (اک

تمباكوك ذربعه ملاح كاحكم:

ساسا- فقہاء کے متفقہ عمومی قو اعد میں سے ایک بیہے کہ وہ اشیاء جن کی حرمت و نجاست منصوص ہے جیسے شراب، ان سے علاج جائز نہیں

کیکن وہ اشیاء جمن کے بارے میں نص وار ڈبیس ہے ان کا تھکم فقہاء کے اجتہا دات کے مختلف ہونے کی وجہ سے مختلف ہے۔ جمن فقہاء نے رائے دی کہ تمبا کو ناپاک ہے اور اس سے شراب کی طرح نشہ پیدا ہوتا ہے، ان کے نزدیک تمبا کو سے علاج حانز نہیں ہے۔

کیکن جمہور فقہاء کے نزدیک تمباکو پاک ہے اور اس سے علاج کرنا جائز ہے، جبیبا کہ ان کی عبارات سے ظاہر ہوتا ہے، بیٹکم اس صورت میں ہے جب اس سے علاج ممکن ہو۔

(۱) ابن عابدین ۱/۹ ۱/۳ الشرح الصغیر ار ۱۵ ۵ ، حواثق تحفیۃ اکتاج للشروانی ۸/۹ ۳۰۰ الجسل علی شرح المنج سهر ۹۰ س، حاشیه مطالب اولی انسی ۱۹۸۱ –

شیخ علیش ما کلی فر ماتے ہیں : تمبا کو مالیت والی شی ہے ، اس لئے
کہ وہ پاک ہے اور اس میں ایسے خص کے لئے شرقی منفعت ہے جس
کی طبیعت میں اس کے استعال کی وجہ سے خلل پیدا ہو چکا ہواور تمبا کو
اس کے لئے دوابن گیا ہو، پس تمبا کو دیگر ان تمام دواؤں کی طرح ہے
جن سے بیاریوں کا علاج کیا جاتا ہے (۱)۔

تمیا کونوشی کرنے والے کی امامت:

ہم ۳۰- ابن عابدین نے شیخ عمادی سے نقل کیا ہے کہ ایسے محض کے پیچھے نماز پڑھنا مکروہ ہے جوسود خوری یا کسی حرام خوری میں معروف ہو، یا وہ کسی مکروہ جیز کا استعال پا بندی سے کرتا ہو، جیسے کہ آج کے زمانہ میں تیار کئے جانے والے تم ہاکوکا استعال کرے (۲)۔



- (۱) ابن عابدین ۵ سامه ۳۹۳، منح العلی المالک ۱۲ ۱۸۱۰ منی الحتاج ۱۲۲ سام ۲۱ سام طعیع الشروانی هر ۸۵ سام ۱۸۸ البجیر ک علی الا تناع ۲۸ سام ۱۳۸۰ میلی کشاف القتاع سر ۵۵ مار ۲۸ سام ۱۸۹ سام ۱۸۹۸
 - (۱) این طایر پن ۱۳۹۸ س

الصبح" صبح روش اور واضح ہوگئ، فقہاء کے عرف میں صبح کی نماز میں اسفار کامطلب ہے فجر کی روشنی پھیلنے کے وقت نماز پڑا ھنا⁽¹⁾۔

تنبكير

تعریف:

ا - تبكير : لفظ ' بكر" (كاف كى تشديد كے ساتھ) كامصدر ہے ، ال كا اصل معنى دن كے بتد الى وقت بيں سور كا اللہ عنى دن كے بتد الى وقت بيں سور كا اللہ عنى دن كے بتد الى وقت بيں سور كا عنى بيں بھى استعال ہوتا ہے ، كہا جا تا ہے : " بكو بالصلاة" يعنى الل نے نماز الل كے اول وقت بيل برهى ، اور كہا جا تا ہے : "بكو وا بصلاة المعوب" يعنى انہوں نے مغرب كى نماز سورج چھپنے كے وقت پراھى ، كسى بھى شن كى المرف جلدى كرنے كے لئے "بكو إليه" بولتے ہيں۔

فقہاء نے بھی ان بی دومعنوں میں بیافظ استعال کیا ہے (۱)۔

متعلقه الفاظ:

الف-<mark>تغليس:</mark>

۲- فجر کی نماز میں تعلیس کا مطلب ہے فجر کی نماز کوطاوئ فجر کے بعد روشن پھیلنے ہے پہلے پڑھنا۔

ب-إسفار:

سو- إسفاركامعنى بواضح بهوما اورظام بهوما ،كباجا تا ب: "أسفو

شرعی تحکم:

اوقات میں اوا کرنامتحب ہے، اس کے حصول کے لئے ان کے اول اوقات میں اوا کرنامتحب ہے، اس کئے کہ نبی کریم علیائی ہے جب دریافت کیا گیا کہ کون ساعمل انصل ہے، تو آپ علیائی نے بر مایا: "الصلوة فی اول وقت میں راحمال نقال کے اول وقت میں راحمال فقہا و کے فزد یک بالجملہ یمی تھم ہے۔

۵- ال علم سے وہ نمازی متنتی ہیں جن کوکسی سبب سے مؤخر کرنے کا تھم دیا گیاہے، جیسے گرمی کے وقت ہیں ظہر کی نماز ہیں ایراد (شنڈ اکرنا) ہے، اس لئے کہ نبی کریم علی ہے فر مایا: "إذا اشتد الحر فاہو دوا بالصلاف" (س) (جب گرمی سخت ہوتو نماز کو شنڈ اکر کے پرامو)۔

ای طرح حنابله اور حفیہ نے عشاء کی نماز کا استثناء کیا ہے، اس کئے کہ نبی کریم علی ہے سے مروی ہے کہ آپ علی ہے نفر مایا: "لو لا أن أشق على المؤمنين لأمو تھم بتأ حيو العشاء" (٣) (اگر جھے مومنین برگر ال نہیں محسول ہوتا تو میں انہیں عشاء کی نماز کو

- (1) اللمان، لمصباح لم مير -
- (۲) حدیث: "أفضل الأعمال الصلاة في أول و لفها" کی روایت بخاری (الفتح ۳/۲ طبع استانیه) و رسلم (۱/۹ ۸ طبع الحلمی) نے کی ہے۔
- (۳) حدیث: "إذا اشند الحو فالبودوا بالصلاة" کی روایت بخاری (انفتح ۲۰ ۲۰ طبع استقیه) نے کی ہے۔
- (٣) حديث: "لولا أن أشق على الموامين لأمونهم بناخير العشاء"كي روايت ابوداؤد (١٧٠ طبع عزت عبيد دهاس) في معرت ابوم ريرة كي حديث يخاري (الفتح ١٧٠٥ طبع المتقير) بل حديث يخاري (الفتح ١٨٠٥ طبع المتقير) بل معرت ابن عباس كي حديث سرب

⁽۱) لسان العرب، لمصباح ليمير ، النهاييلا بن لأ فير، لتظم لمسوعة ب بهاش لمرير ب ارسما الطبع لجلمي ، لمغني ۴ رووه ۴ طبع الرياض.

نا خیر کر کے پڑھنے کا حکم دیتا)، یکی مالکیہ اور ثنا فعیہ کا ایک قول ہے، حضر نے مصر کی نماز کا اس میں اضافہ کیا ہے (۱)۔

۲- "تبکیر" دن کے اول حصہ میں نگلنے کے معنی میں ہے، اور بیجعہ
اور عیدین کی نماز کے سلسلہ میں وارد ہے، ان دونوں نمازوں کے لئے

تبکیر لیعنی دن کے شروع حصہ کو حضہ بٹا فعیہ اور حنا بلہ نے مستحب بتایا
ہے، اس لئے کہ نبی کریم علی ہے کا قول ہے: "من غسل یوم
الجمعة واغتسل و بگر وابت کو کان له بکل خطوة
یخطوها آجو سنہ، صیامها و قیامها" (م) (جس نے جمعہ کے
دون نہایا دھویا اور پہلے پہلے روانہ ہوا، اس کے لئے ہم قدم پر ایک سال
کے روزوں اور نمازوں کا ثواب ہے)۔

امام ما لک فرماتے ہیں: ریا کاری کے اند میشد کی وجہ ہے تبکیر متحب نہیں ہے ^(m)۔

تلاش رزق کے لئے سورے نکلنا:

ک-تلاش رزق اور تجارت کے لئے سویرے نکلنا مستحب ہے، چنانچ حضرت عائشۂ ہے مروی ہے کہ رسول اللہ علی نے فرمایا: "با کو وا للغدو فی طلب الرزق فإن الغدو ہو کہ و نجاح "(۳) (رزق کی

- (۱) ابن هابدین ار۳۵۷، ۳۵۷ طبع سوم بولاق، الانتمار دار ۳۰ طبع دار المعرف، الانتمار دار ۳۰ طبع دار المعرف، الدسوتی ار۴۵۷، مثنی الحتاج ار۴۵۱، ۱۳۵۸ طبع مصطفی الحتاج ار۴۵۱، ۱۳۸
- (۳) عدید: "من غسّل یوم الجمعة" کی روایت تر ندی (۲۸/۳ سطع الحلمی) نے کی ہے وراس کوشن کہا ہے۔
- (٣) مغنی انتخاع ار ٩٩ م، الدسوقی ار ٨١ س، ٩٩ س، المهدوب ار ١١٣ طبع الحلمی ، المغنی ١/ ٩٩ م، ٣٤ س، حافية الطحطاوی علی الدر ار ٣/ ٣٣ طبع دار المعرف بيروت، الفتاوي البنديه ار ٩ سما طبع المكذبة الاسلامية كی۔
- (۳) حدیث "با کو واطلب الوزق، فإن الغدو بو که و اجاح کویز اراور طبر الی نے "الا وسط" میں کی ہے ہی نے کہا اس کی سند میں اسامیل بن قیس بن معد بن زید بن تابت ہے جوضعیف ہے مجمع الروائد (۱۱/۳ طبع القدی)۔

تایش کے لئے سور سے سور سے نکلو، صبح سور سے میں بر کمت اور کامیابی ہے)۔

این العربی رائے ہیں: حضرت ابن عباس رضی الله عنما وغیرہ سے مروی ہے کہ فجر کی نماز کے بعد ایک وقت ہوتا ہے جس میں اللہ تعالی بندوں کے درمیان رزق تنیم کرتا ہے، اور بیق تابت ہے کہ اللہ تعالی بندوں کے درمیان رزق تنیم کرتا ہے، اور بیق تابت ہے کہ اس وقت میں ایک فرشتہ پکارتا ہے: "اللهم أعط منفقا حلفا، وأعط ممسكا تلفا" () (اے اللہ! فرق کرنے والے کو بدلہ وے اور کمل کرنے والے کو بدلہ موت اور کمل کرنے والے کو بدلہ موت ورس ، روح میں انتا طاجهم کی راحت اور دل کی صفائی کے آغاز کا وقت ہوتا ہے، بیداور دیگر ان جیسے اسباب کی وجہ سے اس وقت رزق تنیم ہوتا ہے، بیداور دیگر ان جیسے اسباب کی وجہ سے اس وقت رزق تنیم ہوتا ہے، بیداور دیگر ان جیسے اسباب کی وجہ سے اس وقت رزق تنیم ہوتا ہے، بیداور دیگر ان جیسے اسباب کی وجہ سے اس وقت

تعلیم میں جلدی کرنا:

۸-شروئ سے بی بچوں کو ولی وعملی فر ائض کی تعلیم دینی چاہئے، تا کہ بلوٹ کے وقت تک میچین پی ان کے دلوں میں رائخ ہو چکی ہوں، ان کی طبیعت ان سے مانوس ہو چکی ہوں، اور ان کے اعصاء وجوارح ان ائٹال کے عادی ہو چکے ہوں۔

امام نووی فرماتے ہیں جی جے کہ ماں اور باپ کی ذمہ داری ہے کہ کہ ماں اور باپ کی ذمہ داری ہے کہ کہ تا ہے ہوئے کے بعد ان ہے کہ چوں کو ان چیز وں کی تعلیم دیں جو بلوٹ کے بعد ان ہے تعلق ہوتی ہیں، یعنی طہارت ، نماز ، روز ہ، حرمت زما ، لواطت و چوری اور حرمت شراب نوشی وجھوٹ وغیر ہ۔

انہوں نے اس پر استدلال اس آمیت کریمہ سے کیا ہے: "یا

⁽۱) عدید: "اللهم أعط ملفقا....." کی روایت بخاری (الفتح سر ۳۳۱ طبع استانیه) ورسلم (۲۴ - ۷۰ طبع لجلیل) نے کی ہے۔

 ⁽۲) تحفة لا حود ی شهر ۱۳۰۳ طبع استانید. می التر ندی بشرح این العربی ۱۳۵۸،
 ۲۱۲ طبع المطبعة لا زمیریه ۱۳۵۰ هـ

تبكير ٨، تبليغ ١

آبھااللدین آمنوا قوا آنفسکم و آھلیکم ناراً''() (اے ایکان والو! ایخ آپ کواور گھر والوں کوآگ سے بچاؤ)۔ حضرت علی بن ابی طالب رضی اللہ عندہ مجاہد اور قنادہ فر ماتے ہیں: اس آبیت کا مصلب ہے کہ بچوں کوان چیز وں کی تعلیم دوجن کے ذر میہ وہ جہنم کی آگ ہے تے سکیل۔

اور بچوں کی تعلیم کی وجہ سے اللہ کے ارادہ سے آنے والاعذاب ان کے والدین سے میا ان کی تعلیم کا ذر میں بننے والوں سے میا ان کے اساتذہ سے میا مستقبل میں خود ان بچوں سے میا تمام لوگوں سے میا عمومی طور رپر دورکر دیا جاتا ہے (۲)۔



تبليغ

تعريف:

ا _ بلغ : "بلغ " كامصدر ب ، جس كامعنى ب : برنجا ا ، كبا جا تا ب : "بلغه السلام" جب كونى كساام يرنجا ، اور "بلغ الكتاب بلوغاً " يعنى خط يرنج كيا () _ . بلوغاً " يعنى خط يرنج كيا () _ .

اصطلاح میں'' تبکیغ'' ال سے زیادہ خاص ہے، کیونکہ ال سے مراد خبر دینا اور اطلاع دینا ہے، ال لئے کہ اس میں خبر پہنچانا ہوتا ہے (۲)۔

تبلیخ زبانی بھی ہوتی ہے، اور پیغام رسانی اور ترریکے ذر میہ بھی ، انبیا عرام کی زیا دہ تربیلیغ زبانی ہوتی تھی ،' تبلیغ بالرسالہ' ہیہ کہ کوئی شخص کسی قاصد کو کسی آدی کے پاس بھیج اور قاصد سے مثال کے طور پر یہ کہہ بیس نے اپنے اس فلام کو فلاں غائب شخص کے باتھاتی قیمت میں فروخت کیا، توتم اس کے پاس جا و اور کہو: فلاں نے بھی نہار کے پاس بھیجا ہے اور مجھ سے کہا ہے کہ اس سے کہو: میں نے اپنا یہ فلاں کے پاتھاتی قیمت میں فروخت کیا ہے، پھر اگر نے اپنا یہ فلاں کے پاتھاتی قیمت میں فروخت کیا ہے، پھر اگر کے اپنا یہ فلاں کے پاتھاتی قیمت میں فروخت کیا ہے، پھر اگر کے اپنا یہ فلاں کے پاتھاتی قیمت میں فروخت کیا ہے، پھر اگر کے اپنا یہ فلاں کے پاتھاتی قیمت میں فروخت کیا ہے، پھر اگر کے ایک تواب دے کہ میں نے قبول کیا تو بھی منعقد ہوجائے گی، اس لئے کہ قاصد کی کہ میں نے قبول کیا تو بھی منعقد ہوجائے گی، اس لئے کہ قاصد کی ہے، دیشیت بھیجنے والے شخص کے شغیر اور اس کے کلام کے ترجمان کی ہے،

^{-1/6} Past (1)

⁽۲) کتابیته الطالب الربانی ار ۲۰۳۰ ۱۳۳۳ تک کرده دار المعرف، الجموع للمووی ار ۲۹ طبع کمیریب

⁽I) المعياح<u>.</u>

⁽۲) ابن طایر بین ار ۱۹س

وہ اس کے کلام کومرسل الیہ تک پہنچانے والا ہے، کویا بھیجنے والا بذات خود حاضر ہوا اور اس نے بچ کا ایجاب کیا، اور دوسرے نے مجلس میں قبول کیا، کہذا پیغام رسانی تبلیغ کا ایک وسیلہ ہے (۱)۔

متعلقه الفاظ:

كتابت:

۲- کتابت: بہے کہ ایک شخص کسی دوسر نے خص کو لکھے کہ میں نے اپنا گھوڑا جس کے اوصاف بہ بہ ہیں، اتنی قیمت کے عوض تنہارے ہاتھ فر وخت کیا، اور جب بہتر مرسل الیہ کے پاس پنچے تو وہ ای مجلس میں کہے: میں نے خرید لیا، اس طرح نے مکمل ہوجائے گ، اس لئے کہ فیرمو جو دھنے میں کے کائم مقام اس کی تحریر ہوتی ہے، کویا وہ خود حاضر ہے اور زبانی ایجاب و پیشکش کرر ہا ہے اور دوسر اشخص مجلس خود حاضر ہے اور زبانی ایجاب و پیشکش کرر ہا ہے اور دوسر اشخص مجلس میں قبول کرر ہا ہے، اس طرح تحریر تبلیغ کی بہ نبیت زیادہ خاص میں قبول کرر ہا ہے، اس طرح تحریر تبلیغ کی بہ نبیت زیادہ خاص ہے۔ اس طرح تحریر تبلیغ کی بہ نبیت زیادہ خاص ہے۔ اس طرح تحریر تبلیغ کی بہ نبیت زیادہ خاص ہے۔ (۲)۔

شرعی حکم: پیغام رسانی:

سا- الله تعالی نے اپنے رسولوں کو مامور کیا تھا کہ وہ اللہ کے پیغا مات
ان اقوام تک پہنچا کیں جن میں آبیں مبعوث کیا گیا ہے، تا کہ ان
اقوام کے لئے اللہ کے مقابلہ میں کوئی جمت باقی ندر ہے۔ اللہ تعالی فرما تا ہے: "وُسُلاً مُبُشَرِینُ وَ مُنْدِدِینَ لِنَلاً یَکُونُ لِلنَّاسِ عَلی اللّٰهِ حُجَّةً بَعْدَ الوُسُلِ" (اور پیمبروں کو (ہم نے بھیجا) خوشخری منانے والے اور ڈرانے والے (بناکر)، تاکہ لوگوں کو پیمبروں کے سنانے والے اور ڈرانے والے (بناکر)، تاکہ لوگوں کو پیمبروں کے سنانے والے اور ڈرانے والے (بناکر)، تاکہ لوگوں کو پیمبروں کے

(آنے کے) بعد اللہ کے سامنے عذر ندبا فی رہ جائے)۔ نیز اربٹا و

ہاری ہے: "یَا اَیُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغُ مَا أُنْوِلَ إِلَیْکَ مِن رَّبُکَ،
وَ إِن لَّمْ تَفْعَلُ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ، وَاللَّهُ يَعْصِمُکَ مِنَ النَّاسِ" (ا) (اے (ہمارے) پینمبر جو پچھآپ پر آپ کے پر وردگار
کی طرف ہے اتر اسے بی(سب) آپ (لوکوں تک) پہنچا و بچے اور
اگرآپ نے بینہ کیا تو آپ نے اللہ کا پیغام پہنچایا عی نیس، اللہ آپ کو لوکوں ہے۔ یوائے رکھے گا)۔

حضرت ابن عباس فرما تے ہیں: اس آبیت کا مطلب بیہ ک اےرسول! آپ کے رب کی طرف سے جو پچھ بھی آپ پر نازل کیا گیا ہے وہ سب آپ پہنچاد بیجے ، اگر اس میں سے پچھ بھی آپ نے پوشیدہ رکھا تو آپ نے اس کے پیغام کوئییں پہنچایا، بیہ اللہ کی طرف سے نبی علیق کو اور آپ علیق کی امت کے حاملین نلم کو تا دیب ہے کہ وہ شریعت البی کا ایک ذرہ بھی پوشیدہ نہ رکھیں۔

سیحی مسلم میں حضرت مسروق حضرت عائشہ رضی الله عنها سے روایت کرتے ہیں کہ وہ فرماتی ہیں: جس نے بھی تم سے بیات کی کہ مسلم میں اللہ تعالی ہیں: جس نے بھی تم سے بیات کی کہ مسلم علی کہ محمد جھیالیا وہ جھوٹا ہے، اللہ تعالی فرماتا ہے: "یکا اَنْیُک مِن رَّبُّک وَانْ کُم تَفْعَلُ فَمَا اَلْوَسُولُ اِللَّهُ مَا أَنْوِلَ اِللَّهُ کَ مِن رَّبُّک وَانْ لَمُ تَفْعَلُ فَمَا اللَّهُ مَا اَنْوِلَ اِللَّهُ کَ مِن رَّبُّک وَانْ لَمُ تَفْعَلُ فَمَا اللَّهُ مَا اَنْوِلَ اِللَّهُ کَ مِن رَّبُّک وَانْ لَمُ تَفْعَلُ فَمَا اللَّهُ مَا اَنْوِلَ اِللَّهُ کَ مِن رَّبُّک وَانْ لَمُ تَفْعَلُ فَمَا اللَّهُ مَا اَنْوَلَ اِللَّهُ اللَّهُ الل

حضرت ابو جیفہ فر ماتے ہیں کہ میں نے حضرت علی ہے ہو چھا کہ کیا آپ کے پاس وی کا کچھ ایسا حصہ بھی ہے جوفر آن میں نہیں

⁽۱) البدائع ۵ / ۱۳۸۰

⁽۴) حوالہ مالق۔

⁽۳) سورۇنيا پر ۱۲۵

⁽۱) سورۇپاكدە/ ۱۷_

⁽۱) عدیث: "من حداثک أن محمدا الله تصم شیئاً" كل روایت بخاري (الله ۸۷ ۲۷۵ طبع استان) اور سلم (۱۱ اطبع میسی البالی) نے كی

ہے؟ تو انہوں نے جواب دیا: ''نہیں ہتم ال ذات کی جس نے دانہ کو پھاڑ ا اور جاند ارکی تخلیق کی ،صرف وہ فہم و سمجھ ہے جو اللہ تعالی قرآن کے سلسلہ میں کسی کو عطافر ما دیتا ہے، اور جو پچھ ال صحیفہ میں ہے، میں نے پوچھا: اس صحیفہ میں کیا ہے؟ فر مایا: دیت اور قیدی کو چھڑ انے کے احکام اور بیدک سی مسلمان کو کسی کافر کے بدا قتل نہیں کیا جائے گا''(ا)۔

اسلامی دعوت کی تبلیغ:

ہم - غیر مسلموں تک اسلامی دعوت پہنچانا فرض کفایہ ہے، رسول الله میں الله علیہ فیر مسلم بار شاہوں کو اسلام کی دعوت دینے کے لئے قاصد بھیج، چنا نچ آپ نے شا دمقانس وغیر دکوخطوط لکھے اور صحابہ کرام نے بہی طریقہ اپنایا (۲)۔

امام کے پیچھے تبلیغ:

۵- نماز کی سنتوں میں سے ہے کہ امام "الله آکبو"، "سمع الله لمن حمله" اور ساام بقدر ضرورت بلند آواز سے کے، تاکہ مقتدی حضرات من سکیں بضرورت سے بہت زیادہ بلند آواز میں کہنا مکروہ ہے۔ امام کی طرف سے تکبیر نماز شروئ کرنے، نیز ال میں مختلف ارکان کی طرف بتقلی کی اطلاع کے لئے ہے، اگر اس کی آواز بیجھے تک ارکان کی طرف بتقلی کی اطلاع کے لئے ہے، اگر اس کی آواز بیجھے تک نہیر ہوتو اس کی جانب سے کوئی مقتدی اس کی آواز پہنچا کے گا، تکبیر نہیر ہوتو اس کی جانب سے کوئی مقتدی اس کی آواز پہنچا کے گا، تکبیر

(۱) تغییر القرطبی ار ۲۳۳،۳۳۰. حدیث اُلی قیمه: "قلت لعلی» کی روایت بخاری (الفتح ۲۱۰،۲۱۰ طبع استفیه) نے کی ہے۔

(۲) تغییر وا نوی ۱۸۸۳۔
 صدیث: "أوسل الوسول نظیظ المی المهقوانس....." این کثیر کی
 البدایہ والنہایہ (۱۲۸ الا ۲۷۴،۴۷۱ طبع دار الکتب العلمیہ) میں ہے جے
 انہوں نے پہلی کی جانب منسوب کہا ہے۔

ے مرادوہ ہے جو تجبیر تح یمہ وغیرہ کو شامل ہو، این قد امر فرماتے ہیں:
امام کے لئے مستحب ہے کہ بلند آ واز ہے تبہیر کے، تاکہ مقتدی حضرات من کر تبہیر کہ یہ تیں، اس لئے کہ مقتدیوں کے لئے امام کی تعبیر کے بعدی تبہیر کہنا جائز ہے، اگر امام مقتدیوں تک اپنی آ واز نہ پہنچا سکے تو کوئی مقتدی زور سے تبہیر کے، تاکہ اس کی آ واز نہ پہنچا سکے تو کوئی مقتدی زور سے تبہیر کے، تاکہ اس کی آ واز نہ پہنچا سکے تو کوئی مقتدی نور سے تبہیر کے، تاکہ اس کی آ واز نہ پہنچا سکے تو کوئی مقتدی نور سے تبہیر کے، تاکہ امام کی آ واز نہ پہنچ رہی ہو، اس لئے کہ حضرت جائر کی روایت ہے، وفر ماتے کہو رسول الله علیہ تھے۔ کہو آبو بکو خلفہ، فیاف ایس کہو رسول الله علیہ کہو آبو بکو کی سمعنا"(ا) کہو رسول الله علیہ نے جمیں نماز پراحائی، اور حضرت ابو بکر آپ علی نہ اور حضرت ابو بکر تھے۔ تھے، جب رسول الله علیہ تاکہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں ابو بکر تبھی تبہیر کہتے تو حضرت ابو بکر تبھی تا کہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں ابو بکر تبھی تبہیر کہتے ، تاکہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں ابو بکر تبھی تا کہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں ابو بکر تبھی تا کہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں ابو بکر تبھی تا کہ م تک آواز پہنچ جائے)۔ اس سلسلہ میں تبھیل ہے:

چنانچ حفیہ اور شافعیہ کے بزدیک اگر امام کیمیر افتتاح کے تو نماز کی صحت کے لئے ضروری ہے کہ کیمیر ہے اس کا تصدیح یہ ماز کی صحت کے لئے ضروری ہے کہ کیمیر ہوگی، اگر اس کی نمیت ہو، اگر صرف خبر دینا مقصود ہوتو اس کی نماز نہیں ہوگی، اگر اس کی نمیت دونوں ہاتوں کی ہو، یعنی تح یہ نماز بھی مقصود ہواورلوکوں کو بتانا بھی تو یہی شرعا مطلوب ہے، ای طرح پیچے ہے تیمیر کہنے والے نے اگر تحریمہ نماز کے تصد سے فالی ہوکر صرف آ واز پہنچانے کی نمیت کی ہوتو نمی اس کی خود اس کی نماز ہوگی اور نہ ان لوکوں کی جو اس صورت میں اس کی شخود اس کی نماز اواکریں، اس لئے کہ ان لوکوں نے ایسے خض کی اقتداء کی ہے جو نماز میں داخل ہی نہیں ہوا ہے، اور اگر پیچھے سے تیمیر کہنے کی ہے جو نماز میں داخل ہی نہیں ہوا ہے، اور اگر پیچھے سے تیمیر کہنے

(۱) المغنی ار ۱۳ ساطیع الریاض۔

عدیث جابر: "صلی بدا رسول الله نظی و أبو بکو خلفه" کی روایت بخاری (انتنج ۲۰۳۱ طبع استفیه) اور سلم (۱۳۱۱ س، ۱۳۳ طبع عیمی المبالی کالی کے کی ہے۔

والے کا قصد تحریمہ نماز کے ساتھ ساتھ مقتدیوں تک آواز پہنچانا بھی ہوتو یہی شرعامطلوب ہے۔

ال علم كى وجديد ب كرتكبير تحريم يميشر طياركن ب، لبذ ال كے تحقق كے لئے ضرورى ہے كہ احرام يعنی نماز ميں داخل ہونے كا قصد بايا جار باہو۔

جباں تک امام کی جانب سے سمیع (سمع الله لمن حمده کبنا) اور مکبر کی جانب سے تحمید (دبنا لک الحصد کبنا) اور امام وفوں کی جانب سے تحمید (دبنا لک العلق ہے، تو اگر ان سب سے سمبر اس انتقال کا تعلق ہے، تو اگر ان سب سے صرف المعلام (بتانا) مقصود ہوتو نماز فاسد نہیں ہوگی، جکم بیں فرق کی وجہ بیہ ہے کہ اعلام کا قصد مفسد نماز نہیں ہے، جیسے کہ کوئی شخص دوسر سے کو ایپ نماز بیں ہونے کی اطلاع ویے ہے لئے سبحان اللہ کہ ، ورجو نکہ مطلوب بیہ ہے کہ تکبیر بیں ذکر اور المعلام دونوں مقصود ہوں، تو اگر کسی نے محض المعلام کا قصد کیا تو کو یا اس نے ذکر نہیں کیا اور تجو نکہ مطلوب بیہ ہوتی ہے (اک اور تا بیام کا قصد کیا تو کو یا اس نے ذکر نہیں کیا اور تکبیر نمی مرزد کے علاوہ بیں عدم ذکر سے نماز فاسد نہیں ہوتی ہے (اک اور تکبیر کیا ہوئی ہے اور اس کی نماز درست ہوگی، خواد اس نے تکبیر کا تصد کیا ہو۔

اور تحمید سے محض مقتد ہوں تک آواز پہنچا نے کا قصد کیا ہو۔

ان کے فردیک ریکھی درست ہے کہ آواز پہنچانے والا (مکبر) بچھ ہو یاعورت ہویا ہے وضو ہو اس کی بنیا دیدہے کہ آواز پہنچانے والا امام کی نماز کے لئے علامت ہے، میعازری اورلقانی کا افتیار کرد قول ہے۔

ایک رائے میہ ہے کہ آواز پہنچانے والا امام کانا نب اور وکیل ہے، لہذا اس کے لئے آواز پہنچانا اس وقت جائز ہوگاجب اس کے اندرامام کی تمام شرائط پائی جاتی ہوں (۲)۔

حنابلہ کے فزد یک امام کے لئے آواز بلند کرنامستحب ہے، تاک وہ مقتد یوں کونماز کے ارکان میں منتقل ہونے کی خبر دے سکے، جیسے ک تکبیر تحریمیہ کو بلند آواز سے کہ، اگر امام کی آواز آئی بلند نہ ہوکہ تمام لوگ من سکیل تو کسی مقتدی کے لئے بھی مستحب ہے کہ اپنی آواز بلند کر کے لوگوں کو سنادے (۱)۔

سلام پہنچانا:

۲ - علاء کا ال بات پر اجماع ہے کہ سلام میں پہل کرنا ایک ایس سنت ہے جس کی تر غیب دی گئی ہے اور سلام کا جواب دینا ال آبیت کر بید کی رو سے فرض ہے: "و افدا حقیقتم بتحییة فحیّوا با تحسین منها اور دوھا" (۲) (اورجب جہیں سلام کیاجا نے تو تم اللہ تعالی نے سلام بہتر طور پر سلام کرویا ای کولونا دو)۔ اس آبیت میں اللہ تعالی نے سلام کا جواب اس سے بہتر طور پر یا ای طرح دینے کا حکم دیا ہے، اور امر وجوب کے لئے ہوتا ہے جب تک کہ کوئی دومر افرید اس معنی سے وجوب کے لئے ہوتا ہے جب تک کہ خط و کتابت میں نیز کسی تاصد سے سام پہنچانے کے لئے کہنے میں بہن حکم وجوب ہوگا، ای طرح سلام سلام پہنچانے کے لئے کہنے میں بہن حکم وجوب ہوگا، ای طرح سلام کے جانے والے ویا ہے کہنے میں بہن حکم وجوب ہوگا، ای طرح سلام کے جانے والے ویا ہے کہنا میں ایک حکم وجوب ہوگا، ای طرح سلام کے جانے والے ویا ہے کہنا میں اور اسلام کے جانے والے ویا ہے کہنا میں اور اسلام کی جانے والے ویا ہے کہنا میں ایک حکم وجوب ہوگا، ای طرح سلام کے جانے والے ویا ہے کہ سلام پر چھائے۔

حضرت عائشہ کو جب نبی کریم علی نے خبر دی کہ جبر کیل علیہ السلام البیں ساام کو جب نبی کریم علی نہیں نے: ''و علیه السلام و حصدہ الله'' (اوران پرساامتی اور اللہ کی رحمت ہو) فر مایا (۳)۔ فرطبی فر مایے جبی : حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ جب کوئی شخص کی شخص کے یاس ساام بھیج تو وہ اس

⁽۱) این هایدین ار ۱۹ اس سعیه ذوی لاگها م کی اُحکام التبلیغ فظف لا مام (مجموعه رسائل این هایدین از ۱۳۸۸)، انجموع سر ۸۵ س

⁽٢) عاهمية الدسوتي الرسس

⁽۱) المغنی ار۹۹ ۴ طبع الریاض_

⁽۲) سورونیا ۱۸۲۸ میر

⁽٣) عديث "إخبار عائشة بسلام جبويل" كي روايت بخاري (النتخ ١٩٧٤ اطبع المناقب) اورسلم (١٩٨٨ اطبع عيمي البالي الحلي) ني يب

تبليغ ٧ تمتني ١

کوائی طرح جواب دے جس طرح ال کے مخاطب ہونے کی صورت میں دیتا ہے، ایک مخص نبی کریم علی ایک میں دیتا ہے، ایک مخص نبی کریم علی ہے باس آیا اور عرض کیا:
میرے والد آپ کو ساام کہتے ہیں، تو حضور علی نے فر مایا:
"و علیک السلام و علی آبیک السلام"() (اورتم برساام اورتم بارساام)۔

وں کے بارے میں اطلاع دینا: میں کے بارے میں اطلاع دینا:

حاکم کو پوشیدہ مجرموں کے بارے میں اطااع دینا:

2- فتی نداہب میں بیسر احت موجود ہے کہ جومعاصی فنی ہوں ان میں کسی شخص کو، خواہ وہ مختب ہویا کوئی اور، تجسس نیس کرنا چاہئے اور نہ پروہ فاش کرنا چاہئے۔ رسول اللہ علی ہے فرمایا: من اصاب من هذه القاذورات شیئا فلیستتر بستر اللہ تعالی، فإنه من بید لنا صفحته نقم علیه کتاب الله تعالی، فإنه من بید لنا صفحته نقم علیه کتاب الله تعالی، فإنه من بید لنا صفحته نقم علیه کتاب الله موجائے تو وہ اللہ کی پروہ پوشی کے ذر میہ پردہ می رکھے لیکن جو شخص ہوجائے تو وہ اللہ کی پروہ پوشی کے ذر میہ پردہ می رکھے لیکن جو شخص ہوری کریں گے ۔ اور اگر جرم ظاہر ہوجائے تو اس سلسلہ میں تنصیل ہے کریں گے ۔ اور اگر جرم ظاہر ہوجائے تو اس سلسلہ میں تنصیل ہے کہ اصطااح ۔ تجسس اور "شہادت" میں دیکھا جائے۔

(۱) - القرطبي ۱/۵ س

عدیث: "وعلیک السلام وعلی أبیک السلام" کی ابوداؤد (۱۵۸ مه ۳ طبع عزت عبید دهاس) نے کی ہے منذری نے کہا: اس کی مندش غیر معروف داوی ہیں۔

(۲) الاحكام السلطانية لا في يعلى المحكام السلطانية للماوردي المسلطانية للماوردي المسلطانية للماوردي المسلطانية المسلطانية للماوردي المسلطانية المسلطانية

تنبني

تعريف:

ا - '' مبئی'' کامعنی ہے: دوسر ہے کی اولا دکو اپنا میٹا بنابیا (۱)۔ دور جاہلیت میں بدرواج تھا کہ ایک شخص کسی شخص کو اپنا معنینی بنابیتا تو وہ اس کی اولا دکی طرح ہوجاتا، لوگ اسے ای کی طرف نسبت کر کے پکار تے اوروہ اولا دکی طرح میراث یا تا (۲)۔

عرب کے استعال میں تبنی (متبئی بنانے) کے معنی میں لفظ ''ادعاء''(''')زیادہ مستعمل ہے، چنانچ کہا جاتا ہے: ''ادعی فلان فلان '' لالال نے فلان کو بیٹا بنلا)، ای سے لفظ'' وی '' یعنی متبئی ہے، اللہ تعالی فرماتا ہے: ''وَ مَا جَعَلَ أَدْعِیاءً كُمُ أَبْنَائكُمُ '' ('') (اور نتہارے منہ ہولے بیٹوں کو تبہار ابیٹا بنادیا)۔

- فالده من يبدلدا صفحته لقم كتاب الله عليه" (ان گند گيوں ہے بچ جن ہے الله نے منع فر ملا ہے جوكن گندگی كامر تكب ہو وہ الله كی بردہ پؤتی كے ذريعه بردہ ركھ ، اور الله ہے توب كر ہے ليكن جو تخص اپنے جرم كو بيان كرے گا تو ہم اس بر الله كی تراب كا تھم جارى كر بن گے) اور حاكم (سهر ٣٣٣ طبع دار اكتاب العربی) نے بھی اس كی روایت كی ہے اور كہاہے بير عديدے سے اور شخين كی شرط كے مطابق ہے ذہي نے ان كی موافقت كی ہے۔
 - (۱) القاسوس الده "يَنَّ " ـ
 - (۲) الخازن ۳/۱۵۳۰
 - (٣) المصباح لممير بادهة ''وها''ر
 - (۳) سور کافتراپ س

فقرہا و بھی لفظ'' تبنی'' کا استعال اس کے لغوی معنی میں ی کرتے ہیں۔

متعلقه الفاظ:

الف-التلحاق:

٢-" ألحق القائف الولد بأبيه" (قيافه شاس فالركانب اس کے باپ سے جوڑویا) کامعنی ہے: اس نے بتایا کہ بیڑکا اس کا بیٹا ہے، ال لئے کہ اسے ان دونوں کے درمیان مشابہت نظر آئی، "استلحقت الشيء" كامعنى ب: ميس في الحاق عالم، القاموس میں ہے: "استلحق فلانا" یعنی اس نے قلال کا الحاق جایا^(۱)، انتلحاق صرف باب کے ساتھ خصوص ہونا ہے، حنفیہ کے فردیک سیاتر ار نب کو کہتے ہیں، انتلحاق کا قوئ صرف مجہول النب رہوتا ہے۔ لہذ اانتلحاق صرف ایسے محض کے تعلق ہوگا جو مجہول النسب ہو، مبنی مجبول النسب اور معلوم النسب دونوں کے لئے ہو عتی ہے، اس کی تفصیل اصطلاح'' استلحاق''میں دلیمی جائے(۲)۔

سا- این: نریند اولا دکو کہتے ہیں، ای سے آم "بنوة" ہے(")_ فقہاء کی اصطلاح میں لفظ ابن حقیقی نسب سے سلبی لڑ کے کے لئے بولتے ہیں، پس ہنوت اصلی نسب سے بی ہوگی، لفظ " ابن " بول کر مجاز اُنوبنا اوراس سے نیچے کی اولا دہھی مراد کیتے ہیں۔ ہنوت اور تمنی کے درمیان فرق بدہے کہ ہنوت اصلی نسب سے

(1) مختار الصحاح، القاسوس اكبيط مارهة" كنّ "_

(r) الخروع ١٨/٥٥ـ

(m) القاسوس الحبيط ...

ج-اقر ارنىب:

سم - ماں یاباپ کا بغیر کسی سبب کے ذکر کے ہنوت کا اگر ارکرنا اور لڑ کے کوضرر یا عار لاحق نہ کرنا بلاواسطہ نسب کا اثر ارکبلانا ہے، لہذا لتر ار نامعلوم نب کوسیح قر اردینا ہے۔

متعلق ہے، جہاں تک بنی کاتعلق ہے تو وہ یہ ہے کہ مردیا عورت کسی

ا یسے خص کے بارے میں دعوی کریں جوان دونوں کی اولا زہمو، اس

کی تفصیل اصطلاح''بنوت''میں مذکورہے۔

منتي معلوم النب اورمجبول النهب دونوں کے لئے ہوتی ہے، مبني كواسايم نے ختم كرديا، اتر ارنىب ايھى باقى ہے، نىب كا اتر ار کرنے کے بعد اس سے رجو ٹ درست نہیں ہے اور نہ اثر ار کا صدور یونے کے بعد اس کی نفی جائز ہے ⁽¹⁾۔ دیکھئے: اصطلاح'' اتر ار''۔

ر-لقيط:

۵- لقط کاوعوی اتر ارنسب کی شکلوں میں سے ایک شکل ہے، لقط وہ چیونا بچہ ہے جوالی جگہ پایا جائے جہاں اس کی ماں اور باپ کانکم ہونا د شوار ہو، (۲) جہاں تک مبني کا تعلق ہے تو وہ معلوم انسب اور مجہول النسب دونوں کے لئے ہوتی ہے، اور لقیط کا دعوی در اصل ظاہر میں حقیقی نب کی طرف اونا نا ہے ، بہنی کے اندر بیعنی نہیں ہوتا ہے۔

٢ - اسلام نے تبنی (منه بولا بیٹا ہنانے) کوحرام قر اردیا ہے، اور اس

⁽۱) - الرسوط ۱۵/۹۵، البحرالرائق سهر ۱۳۰۰هاهینه البحیر می سهر ۳۸۳، المعتق 114/4

⁽٢) أحكام الدنحاري بأش جامع الفصول الر ٢٣٣، ثمّ الجليل سر ٣٣٠ ـ

تتبتني لاءتئبو ءة ا

كَنْمَامُ الرَّ التَ كُوعُلُوا فَهُمْ الْمَا هِ اللهُ تَعَالَى كَا ارْبَا وَ ہِ: "وَمَا جَعَلَ أَذُعِياءَ كُمْ أَبُنَاءَ كُمْ ذَلِكُمْ فَوْلَكُمْ بِأَفُواهِكُمْ، وَاللَّهُ يَقُولُ أَذُعِياءَ كُمْ أَبُنَاءَ كُمْ ذَلِكُمْ فَوْلَكُمْ بِأَفُواهِكُمْ، وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقُّ وَهُو يَهُدِي السَّبِيلُ "() (اور نة تمبارے مند بولے بیٹوں اللّحقُ وَهُو يَهُدِي السَّبِيلُ "() (اور نة تمبارے مند بولے بیٹوں کوتمبارا بیٹا بنادیا بیصرف تمبارے مند سے کہنے کی بات ہے اور الله تعالی حق بات کہنا ہے اور الله تعالی کو بات کہنا ہے اور وی (سیدها) رائت وکھا تا ہے)۔ اور الله تعالی کا اربُثا و ہے: اُذْ عُولُهُمْ لِآبًا بَهِمْ "(۲) (انہیں ان کے آباء کی طرف منسوب کرو)۔

تبهی عربوں میں جاہیت کے دور میں بھی اور اسلام کی آمد کے بعد بھی معروف بھی، دور جاہیت میں پیطریقہ تھا کہ کی شخص کو اگر کسی آدی کی جہامت اور حیثیت اچھی لگتی تو اے اپنے ساتھ شامل کر لینا اور اپنی اولا دمیں ہے ایک بینے کے ہر اہر میر اٹ میں اے حصہ دینا، اور اس آدی کو ای شخص کی جانب منسوب کیا جاتا، چنانی کہا جاتا؛ فلاں اور اس آدی کو ای شخص کی جانب منسوب کیا جاتا، چنانی کہا جاتا؛ فلاں فلاں کا میٹا ہے۔ رسول اللہ علی ہے تہ بوت سے قبل حضرت زید بن حار شکو اپنا متبقی بنلا تھا، چنانی آئیں زید بن محمد کہا جاتا تھا، یہ حالت اس وقت تک رعی جب قر آن کی ہے آبت تا زل ہوئی: ''وَ مَا جَعَلَ اللهُ عَقُورُ الرَّحِیْمُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ عَقُورُ الرَّحِیْمُ اللهُ عَقُورُ الرَّحِیْمُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ اللهُ عَلَیْ رَالہُ اللهُ ا

(٣) ليوغ وارب في معرجة أحوال العرب وسهر ٣٣، وإينا في ١٥/١١، مقدمه

شبوءة

تعریف:

۱-تبور، قائد میں لفظ "بو آ" کا مصدر ہے، جس کا معنی ہے:
 کہر انا ، کبا جاتا ہے: "بو آته دار ۱" یعنی میں نے فلاں کو گھر میں
 کہر ایا۔

"مرة أ" وه گھر ہے جہاں پابندی سے رہائش اختیاری جائے،
ای سے ہے: "بو آہ الله منزلا" یعنی اللہ نے فلاں کوفلاں مقام پر
فائز کیا اور شہر ایا (۱)، ای معنی میں قرآن کی آبیت ہے: "و لَقَدْ بَوَّ اَنَا
بَنِي إِسْرَائِيلُ مُبَوَّا صِدْقِ" (۲) (اور ہم نے بنی امر ایک کو بہت
اچھا تھکانا دیا)۔ اور ای معنی میں بیصدیث بھی ہے: "من کذب
علی متعملاً فلیتبوّا مقعدہ من الناد" (۳) (جس شخص

⁽۱) سورهٔ افز اب س

⁽r) سورة التزالب / ۵ س

⁽۳) سورهٔ افزاب ۱،۲۵ س

ابن خلدون ۱۱،۱۱۱، الكافى لا بن لأشير ۲،۱۵،۲ رخ الطبري ۲،۱۲۱، الكافى لا بن لأشير ۱۶،۱۵،۲ رخ الطبري ۱۳۲۱، الكافى بأش تغيير الخاذن ۵٫۰۹۱، ۱۹، ۱۹، الرازي ۳۸ ۱٬۹۳۱، ۱۹۳۱، کتام الدخارگلی بأش جامع الفصول ۱۳۸۱، ۳۸۲، خاطبیته النج ۲۸، ۱۳۸۰، خاطبیته الدموتی ۱۲٬۵۳۱، المدونه سر ۳۸ ۱۳، ۱۳۸۸، نهاییته اکتاع ۸۸ ۱۹۳۳، حواثی الدرادات حواثی الدرادات سر ۱۲٬۵۱۵، المنتی الارادات سر ۱۲٬۵۱۵، المنتی الارادات سر ۱۲٬۵۱۵، المنتی ۱۲٬۵۱۱، المنتی ۱۲٬۵۱۱، المنتی الارادات سر ۱۲٬۵۱۵، المنتی الارادات سر ۱۱٬۲۱۵، المنتی الارادات سر ۱۱٬۲۱۵، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی الارادات سر ۱۱٬۲۱۵، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۳۸۰، ۱۳۸۰، المنتی ۱۳۸۰، ۱۳۸۰، المنتی ۱۲٬۵۱۸، المنتی ۱۳۸۰، ۱۳۸۰، المنتی ۱۲٬۵۱۸، ۱۳۸۰،

⁽۱) المصباح لممير ،محيط الحبيط، لسان العرب الحبيط مادة "با ءُ"، ابن عابدين ٣٤١/٢ سبّغير القرطبي ٨/ ٣٤٠

⁽۲) سورۇپولىرىر ۱۹۳س

 ⁽۳) حدیث: "من کلاب علی منعمداً فلینبوا مقعدہ من الدار" کی روایت بخاری (الفتح امر ۲۰۱۹ مفیع استانیہ) ورسلم (سهر ۲۳۹۹ مفیع التحالی) نے کی ہے الفاظ سلم کے بیر۔

نے میری جانب تصداً حجوث منسوب کیا وہ اپنا تھکانا جہنم میں بنالے)۔

اصطلاح میں اس لفظ کامعنی ہیہے کہ آتا اپنی باندی اور اس کے شوہر کے درمیان رکا وٹ ختم کردے اور باندی کوشوہر کے حوالہ کردے اور اس سے خود کام نہ لے۔

اگر باندی آتا کے باس آتی جاتی ہواور اس کی خدمت کرتی ہوتو الىي صورت يىل "تىبو مەة" بنبيس بهوگاپ

اس کے احکام معلوم کرنے کے لئے فقد کی کتابوں میں '' نکاح'' کے مباحث (۱) منیز اصطلاح'' رق' 'دیکھی جائے۔



(۱) ابن عابد بن ۱/۲ ۲۷ من فتح القدير سهر ۲۸۸، لشرح انسفير ۲ م ۲۸۸ ۱۸ من الخرشى سر ١٠ روضعه الطاكبين ١/ ٢١٨، نهاية الحتاج ٢/ ٣٣٠،٣٣٠، الوجيع ٢٨/٥١، أمغني ١٨/ ٥١٥، ١٥٥ هـ

تعریف:

ا - تہیع: افت میں گائے کے ایک سالہ بحد کو کہتے ہیں، اس کو تہیع اں لئے کہتے ہیں کہ وہ اپنی ماں کے تابع ہوتا ہے، ایسے مادہ بچہ کو تبیعہ کتے ہیں، مذکر لفظ کی جمع اُمبعۃ ہے اور مؤنث کی جمع تا عُ ے⁽¹⁾ہے

اصطلاح میں تبیع اور تبیعه کامعنی لغوی معنی سے خارج نہیں ہے، پید خفیہ اور حنا بلیکا مسلک اور ثنا فعیہ کے نز دیک معتمدے ^(۲)۔ مالکیہ کے بز دیک اس سے مراد ایسا بچہ ہے جو دوسال پورے کر کے تیسر ہیال میں داخل ہوگیا ہو (۳)۔

شرع حکم:

۲- فقہاء کا اتفاق ہے کہ گائے کا نساب اگر تیس کی تعداد تک پہنچے جائے تو اس میں بطور ز کا قرایک تہیج واجب ہوگا، اس لئے کر حضرت معاؤً کی صدیث ہے، وہ فر ماتے ہیں:''بعثنی رسول اللہ ﷺ أصلق أهل اليمن، فأمرني أن آخذ من البقر من كل

- (۱) القاموس، لمغرب في ترتيب لمعرب مادة "تجع"ب
- (٢) حاهية ابن مايدين ٢٨٠/٢ طبع مصطفى حلبي صر دوسر اللهُ يشن ، كشاف القتاع ٣/ ١٩١، أمغني لا بن قد امه ٣/ ٩٣ ٥، تثرح أميها ج ٣/ ٨، ٩ طبع مصطفح على مصر-(۳) - حافیع الدسوتی ار ۳۳۵۔

تبييت ا

ٹلاٹین تبیعا، () (رسول اللہ علیہ نے جھے اہل یمن کی زکا ق وصول کرنے کے لئے بھیجا تو جھے تھم دیا کہ ہرتمیں گاہوں پر ایک تبیع وصول کروں)۔

تمیں سے زائد گائے کی تعداد ہونے پرتبیج کے وجوب کے مسلمیں تفصیل ہے جو اصطلاح '' زکا ق^{ین}میں مذکورہے۔

متبليريت

تعریف:

ا - "بييت لغت ميس" بيت الأمو" كامصدر هي، جس كامعنى هي: رات ميس كوئى منصوبه بنانا ، اور "بيت النية على الأمو" كامعنى هي: رات ميس كسى كام كامز م كرنا ، مفعول كاصيغه "مُبيَّتَة "(ا) (تاء پر زير كيساته) هي "بيت العلمو" كامعنى هي: وثمن في رات كے وقت وصاوابولا۔

قرآن كريم مين هي: " إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لاَ يَوْضَلَى مِنَ الْقَوْلِ" (٢) (جب وه رات مين الله بات كالمشوره كرتے بين جو الله ورسيرت مين هي: "هذا أمو بُيِّتَ بليل" (بيه وه معامله هي جن كورات مين هي كيا گيا ہے)-

سیریت اصطارح میں اغوی معنی میں استعال ہوتا ہے، بیات اسم مصدر ہے، ای سے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ''اُ فَأَمِنَ أَهُلُ اللهُ مصدر ہے، ای سے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ''اُ فَأَمِنَ أَهُلُ اللهُ وه سور ہے ہوں کہ ان پر ہماراعذ اب شب کے وقت آ پڑے درانحالیکہ وہ سور ہے ہوں کہ



دیا ہےاور ذہبی نے اتفاق کیا ہے۔

-100/2 (r)

(1) المصباح لممير مادة "بيت" ـ

···

 ⁽۱) حشرت سعاة كى عديث "أمولي أن آخله من البقو من كل ثلاثين ببعا....." كى روايت أمائي (۲۹/۵ طبع الكتبة التجارية) اور عاكم (۱۸/۵ طبع دائرة فعارف العثمانية) فى بيدعاكم في الركوشي قراد

⁽۳) سورهٔ افراف بر سام

متعلقه الفاظ:

الف- إغاره:

۲-عرب'' بیات'' اور'' میبیت'' کے الفاظ دشمن پرشب خوں مارنے کے لئے استعمال کرتے ہیں ^(۱)۔

تر آن کریم میں ہے: ''فَالُوْا تَفَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنَبَیْتَنَهُ وَاللَّهِ لَنَبَیْتَنَهُ وَاللَّهِ لَنَبَیْتَنَهُ وَاللَّهِ لَلَیْهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهِ فَوْنَ ''(۲)(و دیولے آپ میں خدائی شم کھاؤکہ ہم شب کے وقت صالح اور ان کے متعلقین کو جاماریں گے پھر ان کے وارث ہے کہدویں گے کہ ہم ان کے متعلقین کے مارے جانے کے وقت موجود بھی نہ تھے اور ہم بالکل ہے ہیں)۔ وقمن کے لئے تبییت اور اغارہ کے درمیان فرق ہے کہ لفظ اغارہ طلق ہے، خواہ رات میں حملہ کیا جائے یا دن میں ، جبکہ سیبت صرف رات میں حملہ کرنے کو کہتے ہیں۔

ب بيتونه:

سو - بیتو ند: لفظ "بات" کا مصدر ہے، اس کا معنی ہے: رات میں کا م کرنا ، بیلفظ اس معنی میں لفظ" بیات" سے زیادہ عام ہے، رات کو سونے کے معنی میں اس لفظ کا استعمال کم ہوتا ہے۔

فقہاء اسے بھی ہو یوں کے درمیان راتوں کی تشیم کے اثر ات کے معنی میں استعال کرتے ہیں، اس معنی میں بیافظ ، بیات سے علاصدہ ہوجا تا ہے (۳)۔

تبييت كاحكم: ريار وتندر ريار

اول: تبييت العدو (زشمن پرشب خوں مارنا):

ہم - ان دشمنوں پر شب خوں مارنا جائز ہے جن سے قبال کرنا جائز ہے، لیعنی وہ کفار جن تک وجوت اسلام پیچی اور انہوں نے وجوت کو محکر ادیا اور جز بیادا کرنے پر تیان بیس ہوئے ، اور ہمارے اور ان کے درمیان کسی شم کامعابد دیا سلون بیس ہوئی ہے۔

امام احمد فرماتے ہیں: شب خوں مارنے میں کوئی حرج نہیں ہے، غز وہ روم شب خوں عی تو تھا بغر ماتے ہیں: ہم نہیں جائے کہ کسی نے دشمن پر شب خوں مارنے کونا پہند کیا ہو۔

حضرت الصحب بن بشام فر ماتے ہیں: "میں نے رسول اللہ علیائی سے سنا، آپ سے دریا فت کیا گیا کہ شرکییں کی آبا دیوں پر ہم رات میں جمله آور ہوتے ہیں، تو ان کی خوا تین اور بچے بھی نشانہ بنتے ہیں؟ آپ علیائی نے فر مایا: "هم منهم" (۱) (وہ بھی ان میں علی شامل ہیں) اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ رسول اللہ علیائی نے عور توں اور بچوں کو قبل کرنے سے منع فر مایا ہے (۲) تو ہم کہیں گے کہ یہ مائعت ان کو عمراقی کرنے سے منع فر مایا ہے (۲) تو ہم کہیں گے کہ یہ مائعت ان کو عمراقی کرنے سے منع فر مایا ہے (۲) تو ہم کہیں گے کہ یہ مائعت ان کو عمراقی کرنے سے منعلق ہے، ان دونوں ادکام کے درمیان تطبیق اس طرح ممکن ہے کہ ممانعت کا تعلق عمراقی کرنے سے ہوں دونوں کرنے سے ہوں کا تعلق عمراقی کرنے سے ہوں دونوں کرنے سے ہوں درمیان تطبیق اس طرح ممکن ہے کہ ممانعت کا تعلق عمراقی کرنے سے ہے اور اباحت دیگر صور توں میں ہے (۳)۔

اس مسکلہ میں اس صورت میں مزید جزوی تفصیلات ہیں جب کفار کے ساتھ کوئی مسلمان بھی ہواور وہ قبل کر دیا جائے ، یہ تفصیلات

 ⁽۱) المصباح لممير بلسان العرب مادة "بيت"، القليو لي ۲۵۲/۲۳

⁽۴) سورهٔ کل روس

⁽٣) لمصباح لمعير ،القليو لي سر ٢٩٩_

⁽۱) عدیدے اصحب بن بختا مہ: "هم معهم" کی روایت بخاری (انفخ ۲/۱ ۳۱ طبع استقبہ) ورسلم (سهر ۱۲۳ اطبع علمی) نے کی ہے۔

 ⁽٣) حديث: "لهى عن قبل الداء واللوية" كى روايت بخاري (الشخ
 ٢/ ١٣٨ طبع التلقير) ورسلم (سهر ١٣٣٣ طبع على) نے كى ہے۔

⁽m) المغنى ٨/٩ ٣٣ طبع الرياض الحديد _

اصطلاح''جہا دُ' اور'' دیاہے''میں دسیھی جاسکتی ہیں (۱)۔

اگر امام یا سپد سالار انشکر نے وجوت دینے سے قبل رات میں حملہ کر دیا تو وہ گنہ گار ہوگا، کیونکہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے: '' فَالْهِلْہ اِلْیَهِیمُ عَلٰی سَوَاءِ ''(۲) (تو آپ (وہ عہد) ان کی طرف اس طرح واپس کردیں)۔

الیی صورت میں شب خون کے نتیجہ میں مارے جانے والوں کے صان کے سلسلہ میں فقہاء کا اختلاف ہے:

حفیہ اور حنا بلہ کے فرد کیک مقتول کا صان نہیں ہوگا، اس کئے کہ خدال کے پاس ائیان ہے اور خدا سے امان حاصل ہے، لہذا اس کا صان نہیں ہوگا۔

بعض شافعیہ کہتے ہیں کہ اس کے ضمان میں دبیت اور کفارہ لا زم ہوگا، امام شافعی ہے بھی بیمنقول ہے (۳)۔

بعض فقہاء کی رائے ہے کہ اہل کتاب اور مجوں کو قال سے قبل وجوت وینا واجب نہیں ہے، اس لئے کہ وجوت ان تک پہنچ چکی ہے، اور اس لئے کہ ان کی کتابوں میں رسالت محمدی کی بیثارتیں وارد ہو چکی ہیں، بت رستوں کو جنگ سے پہلے وجوت اسلام دی جائے گی (۳)۔

۵- جن لوکوں کو دعوت پہنچ چکی ہے، ان پر شب خوں مارنے سے قبل ان کو دعوت اسلام دینامزید آگائی کی خاطر مستحب ہے اور اس لئے بھی کہ وہ جان لیس کہ ہم ان سے دین و مذہب کے لئے جنگ

- (۱) شرح روض الطالب سر ۱۹۱، طبع لميمديه بها لع كرده لمكتبة الإسلامية الساساء
 - (٣) سورة انفال « ٨٥ ـ
- (٣) البحر الراكن ٥/ ٥٠، ابن هايدين سهر ٢٣٣، مطالب أولى أننى شرح غاية
 أنتهى ٢/٧ -٥، ٥٠٥، روصة الطالبين ١/ر ٣٣٩، مغنى الحتاج سهر ٢٣٣،
 أمغنى لا بن قد امه ١/٧ ٣٨٠.
 - (٣) المغنى لا بن قدامه ١٠ / ٣٨٩ س

کررہے ہیں، مال لوٹے اور بچوں کو قیدی بنانے کے لئے نہیں، صدیث سے ثابت ہے کہ نبی کریم علی نے نیبر کے دن جب حضرت علی رضی اللہ عندکو جھنڈ اعطا کیا اور جنگ کے لئے بھیجا تو آئیس عظم دیا کہ پہلے آئیس وقوت دیں، حالانکہ یہ وہ لوگ تھے جن تک وَوت پینچ چکی تھی (ا)۔

بغیر وَوت کے شب خوں مارما بھی جائز ہے، اس لئے کہ سیجے صدیث ہے: "آنه آغاد علی بنی المصطلق لیلاً وہم غافلوں" (۲) صدیث ہے: "آنه آغاد علی بنی المصطلق لیلاً وہم غافلوں" (۲) (نبی کریم علی ہے ہو المصطلق پر رات میں حملہ کیا جب وہ غائل سے کے) اور حضرت اسامہ کو تکم دیا کہ ان برغلی الصباح حملہ کریں (۳)۔
وریا فت کیا گیا کہ شرکیین پر شب خون ما راجا تا ہے تو ان کی عورتیں اور بچ بھی زدمیں آئے ہیں توفر مایا: "ہم منہم" (۳) وہ بھی ان میں بی شامل ہیں) میسارے وہ لوگ تھے جن تک وقوت پہنے چی تھی ، ورنہ سابقہ دلائل کی وجہ سے شب خون مارنا جانا ہی جائز نہ ہوتا (۵)۔

دوم: رمضان کے روزہ کی نبیت رات میں کرنا: ۲ - جمہور فقہاء کی رائے ہے کہ رمضان کے روزے کی نبیت رات

[۔] (۱) عدیہے: "اَمُو علیا یوم خیبو" کی روایت بخاری (انتی ۱۸۲۷ م طبع استقیر)نے کی ہے۔

 ⁽۲) حدیث: "أغار علی بنی المصطلق وهم غافلون" کی روایت بخاری (نفتخ ۲۵ م ۱۵ اطبع استاندیر) نے کی ہے۔

 ⁽۳) عدیث: "عهد (لی أسامة أن یغیو علی ابدی صباحا" كی روایت ابن معد نے اطبیحات (۱۹۲۳ طبع دارصا در) ش كی ہے اور اس كی سند صبح ہے۔

⁽٣) عديد: "هم منهم" كي روايت (فقر أبر ٣) ش كذر كي-

⁽۵) البحر الرائق ۵/ ۸۱، روهه الطالبين ۱/ ۳۳۹، المغنى لا بن قد امه ۱۲۸ ۳۸، مغنی الحتاج مهر ۳۳سه

تبييت ٧ ، تتابع ١-٣

میں غروب میں سے لے کرطاو ی فجر تک کے درمیان کرنا واجب ہے، امام ابو حذیفہ کی رائے میں رات میں نیت کرنا مستحب ہے، کیکن دن میں زوال تک بھی نیت کر لیما کانی ہے، اس میں تفصیل ہے جسے اصطلاح ''نیت'' اور''صوم''میں دیکھا جائے (۱)۔

تنابع

بحث کے مقامات:

2- سیب ہے تعلق بحث فقہاء کتاب'' اکسیر ہ''اور'' الجہاد'' میں کرتے ہیں۔

تعريف:

ا - تنابع كا ايك معني "موالات" يعني كسى كام كو في ورفي كرنا ب، چناني كباجاتا ب: "تنابع فلان بين الصلاة و بين القواءة" يعنى فلال في نماز اورتر أت كوفي ورفي ادا كيا، كويا ايك كودوس ك كيعد بالأصل كيا-

اور "تتابعت الأشياء" كامعنى ہے: بعض شي بعض كے بعد حاصل ہوئى اور "تابع بين الأمور متابعة وتباعا" كامعنى ہے: اس نے كاموں كو يكے بعد دير كا تارانجام ديا (ا) - اور اس كا اصطلاح معنى لغوى معنى ہے الگ نبیں ہے -

اجمالی حکم:

کنارہ کیمین کے روزہ میں تألیع: سا- اپنی سم میں حانث ہونے والے شخص کی اگر اتنی استطاعت نہ ہوکہ وہ دیں مسکینوں کو کھانا کھلائے یا ان کو کپڑا پہنائے یا غلام آزاد

⁽۱) البحير مى على الخطيب ۳۲۲/۳، لأشباه و النظائر لا بن مجيم ص ۱۵، الاختيار ۱۲۵/۳، جومبر لو کليل ار ۱۳۸۸، فتح المباري ار ۹، نيل لا وطار سهر ۲۷۰، لمباري ار ۹، نيل لا وطار سهر ۲۷۰، لمبوره في أصول المؤدم ۹۰۰۰

⁽۱) لسان العرب،المصباح لمعير مادة "تج" -

کرے یا اس سے عاجز ہوتو اس کے لئے ضروری ہے کہ روزہ کی طرف منتقل ہوجائے، لہذا تین دن وہ روزہ رکھ لے۔ اور اس سلط میں اصل اللہ تعالی کا بیار شاوہ ہے: ''لا یُوّا خِدُکُمُ اللّٰهُ بِاللّٰهُ فِي للّٰهُ فِي اللّٰهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰهُ اللللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللّٰهُ الللللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ الللللّٰهُ اللل

اس تابع کے تعلق فقہاء کے درمیان اختلاف ہے، چنانی حفیہ کی رائے جو حنابلہ کا اسح قول اور بٹا فعیہ کا ایک قول ہے، یہ سے کہ تابع واجب ہے، حضرت این مسعودگی اس بٹا دفتر اءت کی بنا پر: "فصیام ثلاثمة آیام منتابعات"(۲) (لگا تارتین روزے رکھنا)۔

اور مالکیہ کا خیال یہ ہے کہ مسلسل روزے رکھنایا الگ الگ روزے رکھنا دونوں جائز ہیں۔ ثا فعیہ کا دوسر اقول بھی یبی ہے (۳)۔ دیکھئے: " کفار ۂیمین"۔

كفارة ظهاركروزي مين تأبع:

سم - کفار ہ ظہار میں پہلے غلام آ زاد کرنا ہے، اس کے بعد دوسرا درجہ روزه ركمتا ب، جبيها كه ارثا وبارى ب: "وَالَّلِيْنَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نَّسَائِهِمْ ثُمَّ يَغُوُدُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحُويُو رَقَبَةٍ مِّنُ قَبُل أَنَّ يُّتَمَاسًا ذٰلِكُمْ تُوْعَظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيُرٌ، فَمَنْ لَّمُ يَجِدُ فَصِيَامُ شَهْرَيُن مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبُلِ أَنْ يَّتَمَاسًا فَمَنْ لَمُ يَسْتَطِعُ فَإِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ذٰلِكَ لِتُوْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَلِلْكَافِرِيْنَ عَذَابٌ أَلِيْمٌ *(١) (جولوَّك انی بیویوں سے ظہار کرتے ہیں، پھر اپنی کبی ہوئی بات کی تاانی کرنا عاہتے ہیں، تو اس کے ذمہ قبل اس کے کہ دونوں باہم اختاا طاکریں ایک غلام کوآز ادکرنا ہے، اس سے تہمیں نفیحت کی جاتی ہے اور اللہ کو یوری خبر ہے اس کی جوتم کرتے رہتے ہو، پھرجس کو بییسر نہ ہوتو قبل اس کے کہ دونوں باہم اختاا طاکریں اس کے ذمہ دومتو الرمبینوں کے روزے ہیں، پھر جس سے بیابھی نہ ہوسکے تو اس کے ذمہ ساٹھ مسكينوں كو كھانا كھايا ہے، بير احكام) ال لئے ہيں تا كرتم اللہ اور ال کے رسول میر ایمان رکھو اور بیداللہ کی حدیں ہیں اور کافروں کے لئے وروما ک عذاب ہے)۔

البند اظبار کرنے والا تحص اگر فلام آزاد کرنے برکسی وجہ سے قادر نہ ہوجیسا کہ پہلی آیت میں ہے تو وہ لگا تاردو مینے روزے رکھے، اس کے درمیان ندرمضان آئے نہ عید بن اور نہ ایام تشریق، جیسا کہ دوسری آیت کے درمیان ندرمضان آئے نہ عید بن اور نہ ایام تشریق، جیسا کہ دوسری آیت کے شروئ میں ذکر کیا گیا ہے اور بیجائ سے قبل ہے، لبند ااگر روزہ کے درمیان دن میں یا رات میں جان کر یا بھول کر عذر کی وجہ سے یا بلاعذر عورت سے جمائ کر لے تو پھر از سر نو روزہ رکھنا ہوگا، کے وکلہ ارش نو روزہ رکھنا ہوگا، کیونکہ ارشا و باری ہے: "من قبل آن بتماسا"۔

⁽۱) سورۇپاكدى، ٨٩ـ

⁽۲) ابن هایدین سهر ۱۳٬۹۴۰، آمریرب فی فقه لا بام اشافعی ۱۳۳۶، آمفی لابن قد امه ۸۸ سه۲۵۰۵۸

⁽٣) - لشرح الكبير ١٣٣٠/١٣٣٥، المدونة الكبري للإمام ما لك ١٢٢٧.

⁽۱) سورهٔ مجادله رسمه س

مسلسل روزے رکھنے کے وجوب میں دفنے (۱)، مالکیہ (۲)
ثا فعیہ اور حنابلہ (۳) نے ای سے استدلال کیا ہے، مرثا فعیہ کا کہنا یہ
ہے کہ روزہ رکھنے کے درمیان بوقت شب تھیل کفارہ سے پہلے اپنی
یوی سے مجامعت کرلے تو گنہ گار ہوگا، مرتا بع ختم نہ ہوگا (۳)۔
دو کیھئے: '' کفار ہ ظہار''۔

رمضان کے دنوں میں روز ہنو ڑنے پر جو کفارہ واجب ہے اس کے روزوں میں تسلسل:

۵-رمضان کے دن پی جمان کرنے سے بالاتفاق کفارہ واجب ہوتا ہے، اور جان ہو جھ کر کھانے پینے سے صرف حفیہ اور مالکیہ کے نزویک کفارہ واجب ہوتا ہے، اور کفارہ کی ادائیگی غلام آزاد کرنے یا روزہ رکھنے یا کھانا کھلانے کے ذر مید ہوتی ہے۔ اور حفیہ، ثافعیہ اور جمہور حنابلہ کے نزویک پہلے غلام آزاد کرتا ہے، اس کے بعدروزہ کا درجہ ہے۔ اور امام احمد کی ایک روایت یہ ہے کہ غلام آزاد کرنے ہے کہ اور امام احمد کی ایک روایت یہ ہے کہ غلام آزاد کرنے ہی کھانا کھلانے اور روزہ رکھنے کے درمیان اختیار حاصل کو درجہ سے کو فرا میں کفارہ اداکردے کافی ہوگا اور بیال بنا پر کہ لفظ آن رجلاً افسطو فی رمضان فامرہ رسول اللہ آن یکفو ہیتی رقبہ آو صیام شہرین متتابعین آو اِطعام ستین بعتق رقبہ آو صیام شہرین متتابعین آو اِطعام ستین مسکیناً " (۵) (ایک شخص نے رمضان میں روزہ توڑ دیا تو آپ مسکیناً " (۵) (ایک شخص نے رمضان میں روزہ توڑ دیا تو آپ

میلانی نے حکم دیا کہ کفارہ اداکرے یا دوغلام آزاد کرے، یا دومہینے لگا تارروزے رکھے، یا ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلائے)۔

اور مالکیہ کے بزو یک بھی اس کے کفارہ میں تخیر ہے، کیکن انہوں نے کھانا کھا! نے کو نمایام آزاد کرنے پرتر جے دی ہے؟ اس طرح انہوں نے اس کو پہلے نمبر پر رکھا ہے، کیونکہ اس کا نفع زیادہ ہے، اس لئے کہ اس سے بہت سے انر ادفائدہ اٹھاتے ہیں اور انہوں نے روزہ رکھنے پر نمایام آزاد کرنے کور جے دی ہے، اس لئے کہ نمایام آزاد کرنے میں دوسر سے کو فائدہ پنچاہے اور روزہ رکھنے میں بیاب نہیں ہے، المبداروزہ ان کے فائدہ پنچاہے اور روزہ رکھنے میں بیاب نہیں ہے، المبداروزہ ان کے فائدہ پنچاہے اور روزہ رکھنے میں بیاب نہیں ہے، المبداروزہ ان کے فرد کے کیسیس ہے، المبداروزہ ان کے فرد کے کہ میس سے کہداروزہ ان کے فرد کے کہ میس سے اور روزہ رکھنے میں بیاب نہیں ہے، المبداروزہ ان کے فرد کے کہ میس سے کہداروزہ ان کے فرد کرنے کے میس سے کہداروزہ ان کے فرد کے کہداروزہ کے کہدا

خواه اوا يُلِّلُ كفاره على اختيار به ويا روزه كانم وومر بيا تيم ورج على به وبهر صورت رمضان على روزه تو رو يخ كا كفاره إنفاق المرابع و وماه لگا تا روزه ركمنا به الل صديث كا بنا پر جو حضرت الو به بره في دوايت كل به وه فرمات بين البينما نحن جلوس عند النبي عَلَيْكُ إذ جاء ه رجل فقال يا رسول الله: هلكت، قال: مالك؟ قال: وقعت على امراتي و آنا صائم، فقال رسول الله عَلَيْكُ : هل تجد رقبة تعتقها؟ قال: لا، قال: فهل تستطيع أن تصوم شهرين مسكينًا؟ قال: لا، قال: فهل تستطيع أن تصوم شهرين قال: لا، قال: فهل تحد إطعام ستين مسكينًا؟ قال: لا، قال: فهل تحد إطعام ستين مسكينًا؟ أنى النبي عَلَيْكُ بعوق فيها تمر والعوق: المكتل قال: فال الرجل: على أفقال أن الله؟ فوالله ما بين لابتيها أبن السائل؟ فقال: أنا. قال: خذ هذا فتصلق به، فقال الرجل: على أفقر مني يا رسول الله؟ فوالله ما بين لابتيها الرجل: على أفقر مني يا رسول الله؟ فوالله ما بين لابتيها النبي حتى بدت أنيابه، ثم قال: أطعمه أهلك "()(تم

⁽۱) الاختيارشرح المختار ۲۲ م۳۳۵،۳۳۳، طبع مصطفی کجلس ۲ سه ۱۹۔

⁽۲) لشرح الكبير ۲۸ / ۵۰ ۵۰ ۵۰ ۵۰ ۳۵ س

⁽m) - المغنى لا بن قد امه ۷۷ مه ۱۵ سه ۳۱۷ طبع الرياض الحديث .

⁽٣) لمريرب في فقه الإمام الثنافعي ١١٨ /١١١ ، ١١٨ ـ

⁽۵) عدیہ: "أن رجلا أفطر في رمضان....." كى روایت مسلم (۲۸۳/۲ طع لجلمی)نے كى ہے۔

⁽۱) ابن عابدين ۴ر ۱۰۹، أم يرب في فقه الإمام الثنافعي، ابر ۱۹۱، أمغني لا بن قد امه

لوگ نبی علی کے باس بیٹے ہوئے تھے،ای درمیان ایک مخص آبا اور اس نے عرض کیا: اے اللہ کے رسول میں تو بلاک ہوگیا، آپ علی خور ملا: کیا ہوا؟ اس نے کہا: میں نے روزہ کی حالت میں اپنی بیوی سے جماع کر لیا، آپ علی نے فر مایا: کیاتم غلام آزادکرنے پر قادر ہو؟ اس نے کہا: نبیس، پھرآپ علی نے نر مایا: کیاتم دوماه مسلسل روزے رکھ کتے ہو؟ اس نے کہا بنہیں، پھر آپ عَلَيْنَ فِي الله عَمْ سَائُهُ مُسكِينُون كُوكُمانا كَالاَسكَة بو؟ ال في كبا: نہیں، راوی کہتے ہیں کہ نبی علیہ میں میں میں میں اسلامی اسلامی میں اسلامی اسلامی میں اسلامی اسلامی میں اسلامی اسلامی میں اسلامی میں اسلامی میں اسلامی میں اسلامی میں اسلامی اسلامی اسلامی میں اسلامی میں اسلامی میں اسلامی میں اسلامی ا ی تھے کہ نبی علی کے باس ایک تعیلالایا گیاجس میں تھے رہے تھیں آپ نے فرمایا: سائل کبال ہے؟ اس نے کبا: میں ہوں۔آپ عظیمی نے ملانی بیلواوراس کوصد تر کر دوبتو اس شخص نے کہا: اے اللہ کے رسول مجھ سےزیا دہ محتاج کون ہے؟ خدا کی شم مدینہ کے دونوں کناروں (لیعنی آبادی سے باہر بائی جانے والی سیاد پھروں والی زمینوں) کے درمیان کوئی گھر والے میرے گھر والوں سے زیادہ مختاج نہیں ہیں۔ آپ علیہ اتنا ہنے کہ آپ کے سامنے کے دندان مبارک بھی کھل كئے، پھرآپ علي نے مايا كراس كوائي گھروالوں كو كھاا دو)۔

ئارۇقىل مىںروزە:

٣- غايم آزادكرنے عاجز ہوجانے كے بعد دوسرے ورجيش روزہ ہے، جيساك اللہ تعالى كافر مان ہے: "وَمَنْ قَتَلَ مُوْمِنًا خَطَأَ فَتَحُويْرُ رَقَيَةٍ مُّوْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ إِلاَّ أَنْ يَصَدَّقُواً"
تا "فَمَنْ لَمْ يَجِدُ فَصِيَامُ شَهْرَيْن مُتَتَابِعَيْن تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ

عدیث ابو مربر ہُنا البعد المعن جلوص کی روایت بخاری (الشخ سهر ۱۹۳ طبع الشافیہ) اور مسلم (۱/۱۸۵، ۸۸۲ طبع الحلمی) نے کی ہے۔ الفاظ بخاری کے بیں۔

وَكَانَ اللَّهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا" (١) (اورجوكونَى كسى مومن كوفلطى ك قلل كرؤ الحراق ايك مسلمان غلام كا آزادكرنا (الله يرواجب ہے) اور خون بها بھى جوال كے مزيز ول كے حوالہ كياجائے گا بسواالل كے كہ وہ لوگ (خودى) اسے معاف كردي پھر جس كو بينة ميسر ہوالل ير دوميني كرائا تارروز بركھنا (واجب ہے)، بينو بدالله كی طرف سے ہواور الله بڑ اتلم والا ہے بڑ احكمت والا ہے)، بينو بدالله كی طرف مينيول كے روزول ميں تنابع با تفاق فقها وواجب ہے)، لهذ اان دونول مهمينول كے روزول ميں تنابع با تفاق فقها وواجب ہے (٢)۔

نذ رکےروزہ میں تتلسل:

اگر غیر متعین طور پر چندون یا ایک ماه یا ایک سال روزه رکھنے کی نذر مانے اور تسلسل کی شرط لگائے تو سیا تفاق فقنها وال پر لا زم ہوگا ، ای طرح اگر متعین مہید: کی نذر مانی ، مثلاً رجب یا متعین سال کی نذر مانی تو ای طرح ان روزوں کولگا تا ررکھنا ضروری ہے۔

اوراگر غیر معین مهیدند یا سال کی نذر مانے اور سلسل رکھنے کی شرط نہ لگائے تو حنفیہ مالکید اور ثافعیہ کا فدہب سیسے کہ اسے سلسل رکھنا واجب نہیں، اور حنا بلد کی ایک رائے بیہ ہے کہ اس پر سلسل روز در کھنا لازم ہوگا، ای طرح جس نے بیا کہ ایک طرح جس نے بیاک اللہ کے این میر ہے اور حنا واجب ہے، اس کے تعلق اللہ کے لئے میر ہے اور وی دن کا روز در کھنا واجب ہے، اس کے تعلق اللہ سے ایک روامیت بیہ ہے کہ ان روز وں کو سلسل رکھے (۳)۔

⁼ سهر ۱۲۷، ۱۲۸، الشرح الكبيرار ۵۳۰

⁽۱) سورۇنيا در ۱۹

⁽۲) - ابن عابدین ۵/ ۳۱۸، المرزب فی فقه الا مام انتفاقتی ۲/ ۳۱۸، جو امر الأکلیل ۲/ ۲۷۳، المغنی لا بن قد امه ۸/ ۵۰

⁽۳) ابن عابدین سراے، المریرب فی فقہ الا مام الشافعی اسم ۳۵۳، جوہم الأطیل اسم ۱۳۸۸، الیّاج و الأطیل بہامش الحطاب ۱۸۳۴ مطالب اولی اُتی ۱۲ سم، اُمغنی لا بن قد امہ ۱۸ معرع الریاض۔

" تفصیل کے لئے دیکھئے:'' نذر'' کی اصطلاح۔

اءتكاف مينشلسل:

۸ - حفیہ کا مذہب یہ ہے کہ جس شخص نے اپنے اوپر چند دنوں کا اعتکاف ان کی اعتکاف ان کی اعتکاف ان کی راتوں کا اعتکاف ان کی راتوں کے ساتھ مسلسل کرنا واجب ہوگا اگر چہ اس نے شرط ندلگائی ہو، کیونکہ اعتکاف کی بنیا دسلسل پر قائم ہے۔

ائی طرح اگر کہا: "ایک ماہ "اور کسی متعین ماہ کی نیت نہیں کی تب بھی اس پر رات اور دن مسلسل اعتکاف کرنالا زم ہوگا، اور جب چاہے گئتی کے صاب سے شروع کردے، چاند کے اعتبار سے نہیں اگر چہ اس نے ایسے مہید: کو متعین کیا ہوجو چاند کے اعتبار سے ثار کیا جاتا ہو۔ اور اگر اس نے متفرق طور پر اعتکاف کیا تو پھر از سر نومسلسل کرے، امام زفر فر ماتے ہیں کہ اگر اس نے ایک ماہ کے اعتکاف کی نذر مانی تو اسے افتیار ہوگا، چاہے تو متفرق طور پر اعتکاف کی مسلسل کرے اور اگر صرف دن کی نیت کی، رات کی نہیں ، تو بھی اس کی نیت تھے ہوگی، کیونکہ "یوم" کی حقیقت دن کی سفیدی ہے (ا)۔

اگر مطلق اعتکاف کی دین ہوں ہی متابع اے متابع اے متابع کی قدن ف

اگر مطلق اعتکاف کی نذرہو، اس میں تابع یاعدم تابع کی قیدنہ ہوتو مالکیہ کے فزو کیک مسلسل اعتکاف کرنا لازم ہے، اور جوشخص ایک مادیا تمیں دن کے اعتکاف کی نذر مانے تو وہ اس کومتفرق طور پر ادانہ کرے، اس کے برخلاف بیمسلہ ہے کہ اگر کوئی شخص ایک مادیا چند دن روزہ رکھنے کی نذر مانے تو ایسے شخص برمسلسل روزہ رکھنا لا زم نہیں۔

دونوں میں فرق بیہ ہے کہ روزہ صرف دن کا ہوتا ہے ، رات کا نہیں ، کہذ اجس طرح وہ روزہ رکھے ،خواہ سلسل رکھے یا عبد اعبد استج

ہے، بخااف اعتکاف کے کہ وہ تورات اور دن پورے زمانے کو محیط ہوتا ہے، کوا اس کا حکم تسلسل کا نقاضا کرتا ہے۔

اور مطلق سے مراد بیہ ہے کہ لفظ تابع کی شرط نہ ہواور تابع یا عدم تابع کی نہیت بھی نہ ہو، اگر اس میں ان دونوں میں سے کسی ایک کی نہیت ہوتو نہیت کے مطابق عمل کیا جائے گا اور معتلف اعتکاف کے شروع کرنے یعنی اس میں داخل ہونے کے وقت جیسی نہیت کرے گا وہ لازم ہوگا، یعنی اگر مسلسل اعتکاف کی نہیت کرے گا تو مسلسل انگاف کی نہیت کرے گا تو مسلسل انگاف کی نہیت کرے گا تو مسلسل انگاف کی نہیت کرے ہوگا اور اگر الگ الگ الگ الگ الگ کی نہیت کرے گا تو مسلسل الگ لا زم ہوگا، صرف نہیت کرنے سے اس پر پچھ لا زم نہ ہوگا، اس لئے کہ محض نہیت سے پچھ واجب نہیں ہوتا (۱)۔

اور ثنا فعیہ نے فر مایا کہ جس شخص نے ایک ماہ اعتکاف کرنے کی نذر مانی اور مبدیۃ کو تعلین کرلیا تو اس پررات ودن کا مسلسل اعتکاف کرنا لازم ہوگا، خواہ مبدیۃ کمل ہویا ناتص ، اس لئے کہ مبدیۃ دو چاندوں کے درمیانی وقت کانا م ہے، خواہ پوراہویا ناتص۔

اوراگرمبینہ کے دنوں کے اعتکاف کی نذر مانی ہے تو صرف دن میں اعتکاف لازم ہوگا، رات میں نہیں، کیونکہ اس نے دن کو خاص کرلیا ہے، اس لئے رات کا اعتکاف لازم نہیں، اگر مبینہ گزرجائے اور وہ اعتکاف نہ کرے تو اس کی قضا لازم ہوگی، اور جائز ہوگا کہ مسلسل قضا کرے یا الگ الگ، اس لئے کہ مسلسل ادائیگی کی شرط وقت کے اندر تھی، لہذا جب وقت نتم ہوگیا تو تھم بھی نوت ہوگیا، جیسا کہ رمضان کا روزہ قضا ہوجائے تو تابع کا تھم نہیں رہتا ہے) اور اگر مسلسل اعتکاف کرنے کی نذر مانی تو تابع کا تھم نہیں رہتا ہے) اور اگر مسلسل اعتکاف کرنے کی نذر مانی تو اس کی قضا بھی مسلسل لازم ہوگی، اس لئے کہ اس جگہ تسلسل کا تھم نذر اس کی قضا بھی مسلسل لازم ہوگی، اس لئے کہ اس جگہ تسلسل کا تھم نذر اس کی قضا بھی مسلسل لازم ہوگی، اس لئے کہ اس جگہ تسلسل کا تھم نذر اس کی وجہ سے ہے، لہذا وقت کے فوت ہونے سے وہ ساتھ نہ ہوگا۔

⁽۱) فقح القدير ۴ر ۱۱۳، ۱۱۵ طبع صادر

⁽۱) الخرشي على مختصر فليل ۱۲/۲۵۲،۳۷۳

اوراگر غیر معین مبدند کا عنکاف کی نذر مانی اور چاند کا اختبار سے ایک مبدند کا اعتکاف کیا تو بیا عنکاف کا فی موجائے گا، خواد ماہ کمل ہو یا باتھ ، ال لئے کہ ال پر بھی مبدنہ کا اطلاق ہوتا ہے اور اگر گفتی کے اعتبار ہے ایک ماہ کا اعتکاف کیا تو تعیں دن کا اعتکاف لازم ہوگا، ال لئے کہ مبدنہ گفتی کے اعتبار ہے تعیں دن کا اعتکاف لازم ہوگا، اس لئے کہ مبدنہ گفتی کے اعتبار ہے تعیں دن کا ہوتا ہے ، لبد ااگر تسلس کی شرط لگائی ہے تو لگا تا رکر نا ضروری ہوگا، اس لئے کہ رسول اللہ عبد اللہ عبد اللہ فی ہو جو اس نے متعین کیا عبد کا ایک ایک کے اس کے کہ رسول اللہ استمی "(ا) (جس نے متعین طور پر نذر مانی تو جو اس نے متعین کیا ہے اس کو پورا کرنا اس پر لا زم ہے)۔ اور اگر الگ الگ اعتکاف کی شرط لگائی ہے تو جائز ہے کہ الگ الگ کرے یا مسلسل کرنے والو الگ الگ کرنے والے سے انعمل ہے ، اور اگر مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد او ووں طرح جائز ہے ، جیسے کہ مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد او ووں طرح جائز ہے ، جیسے کہ مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد او ووں طرح جائز ہے ، جیسے کہ مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد او ووں طرح جائز ہے ، جیسے کہ مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد او ووں طرح جائز ہے ، جیسے کہ مطلق نذر مانی ہے تو مسلسل اور جد اجد اور اگرے کی نذر مانی ہے تو مسلسل کرنے والوں کے دور کے کے نظر درائی ہے تو مسلسل کرنے والوں کا در وز در کھنے کی نذر مانے درائر ایک ماہ روز در کھنے کی نذر مانے درائر

اور حنابلہ کا مذہب ہیہ ہے کہ جس شخص نے چند دن مسلسل اعتکاف کرنے کی نذر مانی تو وہ اس کاروزہ بھی رکھے، اگر کسی دن روزہ ندر کھے تو اس کا تشاسل ختم ہوجائے گا اور ازسر نوشروٹ کرنا ضروری ہوگا، کیونکہ اس نے جس طرح نذر مانی تھی اس طرح ادا نہیں کیا (۳)۔

اور اگر ایک ماہ اعتکاف کرنے کی نذر مانی تو جاند کے اعتبار سے ایک مبدنہ یا تعیں دن کا اعتکاف لازم ہوگا۔ اور اس میں تسلسل کے سلسلہ میں دواقو ال ہیں ، ایک سیسے کہ تسلسل اس پرلازم نہیں ہوگا

(٣) كشاف القتاع من مثن الاقتاع مر ٣ سم طبع انصر الحديث.

اوردوسراییک تسلسل ال پر لازم ہوگا اور قاضی کہتے ہیں کہ تسلسل لازم ہوگا اور یکی ایک قول ہے، کیونکہ بدایک ایساعمل ہے جو رات و دن دونوں میں کیا جاتا ہے، کہذا جب ال نے مطلق ذکر کیا تو تسلسل لازم ہوگا (اکرد کیھئے: '' اعتکاف''۔

عنارات کے روزوں میں تسلسل کونتم کرنے والی چیزیں: کفارہ کے روزہ میں تسلسل مندرجہ ذیل چیزوں کی وجہ ہے ختم ہوجاتا ہے جن کوفقہاء نے ذکر کیا ہے:

الف - إكراه ياسهووغيره كى وجه سے روز د تو رُد ينا:

9 - حنفي كى رائے بيہ ك عذريا بلاعذ رافطار كر لينے كى وجه سے اسلسل نتم ہوجاتا ہے، مگر حالت حيض ميں عورت كاعذرال ہے مشتیٰ ہے كہ اس كى وجه سے تشلسل نتم نہيں ہوتا - اور انہوں نے مرض اور غير مرض كے درميان كوئى فرق نہيں كيا ہے اور اس ميں إكراه بھى غير مرض كے درميان كوئى فرق نہيں كيا ہے اور اس ميں إكراه بھى شامل ہے - اور كفار أو ظبار ميں اگر كوئى شخص بھول كر كھا في لے تو صاحب '' الفتاوى البندين' كى صراحت كے مطابق بينقصان دہ نہ ہوگا (۲)۔

اور جاند کا اعتبار نہ کرنے کی صورت میں انسٹھ دن کا روزہ رکھنا کافی نہیں ، اور اگر جاند کے اعتبار سے دوماہ کے روزے رکھے تو اس کا روزہ کافی ہوگا، حتی کہ اگر اٹھاون دن عی پورے ہوئے تو بھی تھیجے ہے (۳)۔

مالکید کی رائے بیہ ہے کہ تکلیف دوا کراہ مثلاً مار، یافتل کی دصمکی

⁽۱) عدیث: "من المار و سمّی فعلیه الوفاء بها سمّی"کو زیلتی نے نصب الرابی (۱۳۸۳ طبع دارالمامون مصر) یمی نقل کیا ہے اور کہا کہ بیہ غریب ہے۔

 ⁽٣) أمريرب في فقه الإمام الثنافعي الر ١٩٨٨.

⁽۱) المغنى لا بن قدامه سهر ۲۱۳_

 ⁽٢) فتح القدير مع العناب سهر ٢٣٠ طبع الامير ب القناوي البندية الر١١٥ طبع
 المكاوية الاسلامية -

⁽m) العناريمانيخ القديم سرو ٢٣٩ طبع الاميريي

و بینے کی وجہ سے اگر کوئی شخص روزہ تو ژو ہے تو ال سے تسلسل ختم نہیں ہوگا۔ ای طرح مجھ صادق کے بعد رات سجھ کر کچھ کھالیما یا غر وب شمس سجھ کر افظار کر لیما تسلسل کو ختم کرنے والا نہیں ہے۔ بال اگر غروب میں شک تھا اس کے با وجود افظار کر لیا تو تسلسل ختم ہوجائے گا، اور ای طرح اگر کسی شخص نے انسٹھ دن روزے دکھے اور یہ بچھ کرکہ روزے کمل ہو گئے افظار کر لیا تو بھی ان کے ذرو کیک تسلسل ختم نہ ہوگا (۱)۔

اور بھول کر کھائی لیما مالکیہ کے مشہور تول کے مطابق تسلسل کوختم کرنے والانہیں ہے۔ اور ظہار کرنے والے کے علاوہ اگر کوئی محف دن میں بھول کریا رات میں جان ہو جھ کر جمائ کرلے تو اس سے تسلسل ختم نہیں ہوگا(۲)۔

شافعیہ نے ذکر کیا ہے کہ کھانا کھانے کے لئے اکراہ اسلسل کو تم کر بتا کرنے والا ہے، اس لئے کہ کھانے کے لئے اکراہ روزہ کو تم کر دیتا ہے، جب بجیما کہ شافعیہ کا بجی قول ہے، اس لئے کہ بیاسب ہے جو کم بیش آتا ہے، دونوں صورتوں میں شافعیہ کا بجی مذہب ہے، جبیبا کہ '' لمروضہ'' میں بیان کیا گیا ہے اور جمہور نے ای کو افتیار کیا ہے، اور این کچ نے ان دونوں کو مرض کے مثل قر اردیا ہے۔ اور ای طرح جب این کچ نے ان دونوں کو مرض کے مثل قر اردیا ہے۔ اور ای طرح جب کسی نے ناک میں پانی ڈ الا پھر پانی دمائ تک پہنے گیا تو اس صورت میں انسان کے تعلق اختیان ہے، اس کی بناس قول پر ہے کہ بیروزہ کو تو ڑ نے والا ہے، اور نووی نے فر مایا کہ اگر زیردئی کی کے منہ میں کھانا ڈال دیا گیا تو نہ اس کا روزہ ختم ہوا اور نہ اس کا اسلسل، شافعیہ نے تمام صورتوں میں ای کو طعی قر اردیا ہے (۳)۔

اور حنابلہ نے ذکر کیا ہے کہ تی خدیب کے مطابق اکر اویا خلطی یا نسیان کی وجہ سے روزہ توڑنے سے تسلسل خم نہیں ہوتا ہے۔ اس حدیث کی بناپر جس میں فر مایا گیا: ''اِن اللہ وضع عن آمتی المحطأ و النہ سیان و ما استکر ھوا علیہ''(ا) (اللہ تعالی نے میری امت سے خطا ونسیان اور اکراہ کوسا توکر دیا ہے بیعذر تامل قبول نہ میری امت سے خطا ونسیان اور اکراہ کوسا توکر دیا ہے بیعذر تامل قبول نہ موگا۔ اور جس نے خطی کی وجہ سے افطار کرلیا مثالاً کسی نے رات بجھ کر کھانا کھالیا یا فروب کا خیال کر کے روزہ افطار کرلیا اور اس کے خلاف فی طاہر ہوا تو ایسے خص کے روزہ کا تسلسل خم نہ ہوگا۔ اور جس شخص نے دو فی خطابہ ہوا تو فلام میوا تو کا ممان کر کے روزہ کو ڈویا اور اس کے خلاف فلام ہوا تو اسلسل خم ہوجا نے گایا اگر اس نے ہیں جھ کر افطار کرلیا وار کرلیا کہ کہ کہ کہ کہ کا دورہ واجب ہے یا ہیہ جھ کر کے تسلسل خم ہوجا نے گایا اگر اس نے ہیں جھ کر افطار کرلیا تو اس کے روزہ کو اورہ کی ماہ کا روزہ واجب ہے یا ہیہ جھ کر کے تسلسل خم ہوجا نے گایا اگر اس نے ہیں جھ کر افطار کرلیا تو اس کے روزہ کا تسلسل خم ہوجا نے گایا اگر اس نے ہیں جھ کر افطار کرلیا تو اس کے روزہ کا تسلسل خم ہوجا نے گا، اس لئے کہ اس نے از خود اس کو اورہ کو جہ سے اس لئے کہ اس نے از خود اس کو اورہ کیا ہوا ہو افشیت کی وجہ سے اس لئے کہ اس نے از خود اس کو خم کرویا ہے اورہا واقشیت کی وجہ سے وہ معذ وریز تم جھا جائے گا (۲)۔

ب-حيض ونفاس:

ا - فقہاء اس پر متفق ہیں کہ جس کفارہ میں عورت پر دو ماہ کے روزے فرض ہوتے ہیں جیسے کفار ہ قبل نواس کی ادائیگی کے دوران حیض یا نفاس کا آجا ہا اس کے تسلسل کو ختم نہیں کرے گا، اس لئے کہ یہ دونوں چیز یں عورت کے لئے لازم ہیں ، اور اس وجہ سے بھی کہ ان

⁽۱) حدیث: "إن الله وضع عن أمني الخطأ والدسیان وما استكوهوا علیه" كی روایت حاكم (۱۲ م۱۹۸ طبع دائرة المعارف العثمانیه) نے كی ہے ور ٹووك نے اے صن قر اد دیا ہے جیسا كر مخاوك كی" المقاصد الحسد" (ص ۱۳۳۴ كع كرده دارالكتب العلمية) على ہے۔

⁽r) كشاف القتاع م ٣٨٣ طبع الصر، الانصاف م ٣٨٢ طبع التراث.

⁽۱) - جوام الأكليل ار ۷۷ طبع دار أمعر في، أخرشي سهر ۱۱۸ طبع دارها در...

⁽٢) جوم الأكليل ار 42 سطيع دار أمعر في، الدسوقي عمر الأس

⁽m) روهة الطاكبين ٣٠٣/٨ طبع أمكنب الاسلامي

دونوں میں عورت کے ممل کوکوئی وظل نہیں ہے، اور اس وجہ ہے بھی کہ ریصوم کے منافی ہے اور کفارہ کوئن اپاس تک مؤ شرکرنے میں خطرہ ہے، ہاں بٹا فعیہ میں ہے متولی نے کہا کہ اگر طبر کے سلسلہ میں کسی عورت کی ایس عادت ہو کہ جس میں صوم کفارہ کی گفجائش ہو کتی ہے اور بیان ایا م کے علاوہ میں روزہ رکھے اور نی بی آ جائے تو اس کا تسلسل ختم ہوجائے گالا)۔

اور کفار ہیمین کے روزوں کے تسلسل کو چیش ختم کر دےگا، ال قول کی بنار جس کے مطابق کفار ہیمین میں تسلسل واجب ہے، جیسا کہ حضیہ نے ذکر کیا ہے اور ثافعیہ کے دواقو ال میں سے ایک قول سے ہے کہ تسلسل واجب ہے اس کے ایام کے کم ہونے کی وجہ ہے، بخلاف دوماہ کے (۲) (کہ بیلمی مدت ہے)۔

ال کے علاوہ علامہ نووی نے ''الروضہ' میں کہا ہے کہ جب ہم نے کفار ہ میین میں شلسل کو واجب قر ار دے دیا ہے تو اگر وہ ال کی ادائیگی کے درمیان حائصہ ہوگئی تو اس کے انقطاع شلسل میں وہی دواقو ال ہیں جو دوماہ کے دوران ہو جیمرض افتطار کر لینے کے بارے میں ہیں اور بہتے ممکن ہے کہ اس میں انقطاع شلسل کا تھم بینی ہو (۳)۔

ہیں اور بہتے ممکن ہے کہ اس میں انقطاع شلسل کا تھم بینی ہو (۳)۔

اا - حفیہ کے بزد دیک صوم کفارہ کا شلسل نفاس کی وجہ سے ختم ہوجا تا ہے اور ثنا فعیہ کا ایک قول جس کو ابو القربی سرخسی نے قتل کیا ہے جو ان کے قول جس کو ابو القربی سرخسی نے قتل کیا ہے جو ان کے قول سے جو ان کے کہ نفاس کا تحقیق کم ہوتا ہے اور اس لئے کہ نفاس کا تحقیق کم ہوتا ہے اور اس کے کہ نفاس کا تحقیق کم ہوتا ہے اور اس کئے کہ بیامکان ہے کہ دوا ایسے مبینوں کو اختیار کر لے ہوتا ہے اور اس کئے کہ بیامکان ہے کہ دوا ایسے مبینوں کو اختیار کر لے

(۱) تعبين الحقائق سهر ۱۰ طبع دار أمعر في، جوابر الأكليل الرسسط وار المعرف، روهنة الطالبين ۲۸۸ ۳۰ طبع أمكنب الاسلامي، حاهية القليو في سهر ۲۶ طبع التحلمي ، كشاف القتاع ۲۵ سهم طبع التصر

جو نفاس سے خالی ہوں، اور مالکیہ ویثا فعیہ کا مُدبب سیح اور حنابلہ کی رائے میہ ہے کہ نفاس کی وجہ سے تسلسل ختم نہ ہوگا، چینس پر قیاس کر تے ہوئے اور اس وجہ سے بھی کہ اس میں اس کا کوئی وظل نہیں ہے (۱)۔

ج -رمضان ، عیدین اورایام تشریق کا درمیان میں آجانا:

11 - حفید کا فد جب بیہ کہ ماہ رمضان ، عیدافطر ، عیدانا صفح اور ایام تشریق کا درمیان میں آجانا صوم کفارہ کوشم کردیتا ہے، صوم رمضان کے واجب ہونے اور باقی روزوں کے حرام ہونے کی وجہ سے، اور ال وجہ سے ہوں کہ وہ ایسے دومینوں کے پالینے پر تا درہے جس میں مذکورہ وجہ سے بھی کہ وہ ایسے دومینوں کے پالینے پر تا درہے جس میں مذکورہ ایام نہ ہوں ۔ اور قیدی کے علاوہ کے روزوں کے تعلق بھی شافعیہ کا یک مذہب ہے اور قیدی جب ایٹ اجتباد سے روزہ رکھ لے پھر اس کے کہ مذہب ہونے سے قبل رمضان یا عید وغیرہ آجائے تو اس کے تسلسل کے ختم ہونے کے بارے میں وی اختلاف ہے جو ہو جہ مرض افطارکر لینے سے افتطاع سالسلسل کے ختم ہونے کے بارے میں وی اختلاف ہے جو ہو جہ مرض

اور مالکیہ نے ذکر کیا ہے کہ عید کے دن جان کرروزہ تو ڑنا صوم کفارہ کے تسلسل کو تم کردے گا، جیسے کوئی شخص اپنے کفار ہ ظبار کے لئے جان کر ذی تعدہ اور ذی المجہ میں روزہ شروع کرے اور اسے معلوم ہوکہ اس کے درمیان عید آ جائے گی، بخان ک اس کے جو اس سے نا واقف ہوتو اس کا تنابع شم نہ ہوگا۔ جیسے اگر کسی نے ذی المجہ کے مہید نہ کو حرم کا مہید نہ گوم کا کر کے اس میں روزہ شروع کر دیا چر اس کے بعد والے مہید نہ کو صفر کا مہید نہ بچھ کر اس میں بوزہ شروع کر دیا چر اس کے بعد والے مہید نہ کو صفر کا مہید نہ بچھ کر اس میں بھی جس روزہ رکھ لیا اور بعد میں اس کے خلاف ظاہر ہوا۔

⁽۲) سمبین الحقائق سر ۱۰ اطبع دار المعرف، المهدب ۱۳۳،۱۳۳، طبع دارالمعرف

⁽٣) - روضعه الطاكبين ٣٠٣٨ مع المكتب الاسلاي -

⁽۱) تعبیبین الحقائق ۳ر ۱۰ طبع دار المعرف، افررقانی ۱۸ر۸ طبع دار الفکر، روهه الطالبین ۳۰۲۸ طبع اسکتب لا سلامی، کشاف القتاع ۲۵ س/۳۸۳ طبع النسر (۲) تعبیبین الحقائق سهر ۱۰ طبع دار المعرف، فنح القدیم سهر ۳۳۹ طبع لا میرب

فقہاء کے زدیک دخول رمضان سے اواتف ہونا این ہوئی کے رائے قول کے مطابق عید سے اواتف ہونے کی طرح ہے، اورخرشی کی صراحت کے مطابق عید سے اواتف ہونے کا مصلب سیہ کہ وہ اللہ اللہ سے اواتف ہونے کا مصلب سیہ کہ وہ اللہ اللہ اللہ سے اواتف ہوک درمیان کفارہ وہ آ جائے گی، نہ بیاکہ وہ ہوم عید کے حکم سے اواتف ہو، اس میں اوالیمن کا اختابات ہے، کیونکہ انہوں نے ذکر کیا ہے کہا واقفیت سے مراد تھم سے اواتف ہونا ہے اور فقہاء کے زددیک عید کے دودن بعد والے اور یکی قول اظہر ہے اور فقہاء کے زددیک عید کے دودن بعد والے دن عیدی کے حکم میں داخل ہیں۔ اور ایام تشریق کے تیمرے دن کا روزہ کفایت کرے گا اور اس کا افضار بالاتفاق تسلسل کو ختم کرنے والا ہے، جیسا کہ خرقی میں آیا ہے (۱)۔

اور حنابلہ کا مذہب ہیہ کہ ان سب چیز وں سے صوم کفارہ کا اسل ختم نیس ہوتا ۔ شرقی طور پر رمضان کے روزہ کے فرض ہونے کی وجہ سے، اور اس وجہ سے کہ عیدین میں افطار کرنا اور ایام تشریق میں روزہ نہ رکھنا بھی شرقی طور پر واجب ہے۔ یعنی بیسب ایسے او قات ہیں کہ شریعت نے ان او قات میں رات کی طرح روزہ رکھنے سے منع فر مایا ہے (۲)۔

ر-سفر:

ساا - حفیہ اور مالکیہ کے نز دیک اگر کوئی شخص حالت سفر میں افطار کرے تو تنابع ختم ہوجائے گا اور ثنا فعیہ کا بھی ایک قول یہی ہے ، اس لئے کہ ان حضر ات کے نز دیک عذریا بلاعذر افطار کرنا تسلسل کوختم کرنے والا ہے (۳)۔

- (۱) الخرشي ۱۱۸ م الطبع دار صاور، جوام الإكليل اس ۳۷۸،۳۷۷ طبع دار أمر ف
 - (٢) كشاف القتاع ١٥٨ ٣ هيم الصر، الإنساف ٥٨ ٣ هيم التراث.
- (m) فتح القدريمع العناب سهر ٢٠٠٠ طبع الأميري القتاوي البنديه ار١٥١٥ طبع

اور ثا فعیہ کا دوسر اقول بیہے کہ وہمرض کی طرح ہے (۱)۔اور حنابلیہ کے نز دیک وہ سفر جس میں افطار مباح ہے تسلسل کو نتم کرنے والانہیں ہے (۲)۔

ھ-جاملہاور دورہ پلانے والی عورت کا فطار:

۱۹۷ - جیسا کر الروضہ میں آیا ہے کہ اگر بچہ کے بارے میں خوف
کی وجہ سے حاملہ اور دودھ پلانے والی عورت افطار کرے تو بٹا فعیہ کا
ایک قول میہ ہے کہ مرض کی طرح اس سے تسلسل نتم نہیں ہوگا اور دوسر ا
قول میہ ہے کہ یقینا تسلسل نتم ہوجائے گا، اس لئے کہ میاس کا فعل
افتیاری ہے۔

اور حنابلہ کا خیال ہے ہے کہ حاملہ اور دودھ پلانے والی عورت کا اپنی ذات پر یا بچہ پر خوف کرنائشلسل کو ختم کرنے والانہیں ہے، کیونکہ بدایک ایسا افطار ہے جوعذر مباح کی وجہ سے ہے جوان دونوں کی طرف سے نہیں ہے، لہذ اریم ض کے مشابہ ہوگا (۳)۔

اور حفیہ کا بیر مذہب کہ افطار خواہ بالعدر ہویا بااعدر سلسل کوشم کرنے والا ہے، اور مالکیہ کابیہ کہنا کہ ہر فعل افتیاری سے سلسل ختم ہوجائے گا، مثلاً سفر ، ان دونوں کا مقتنی بیہ ہے کہ وہ دونوں عورتیں خواہ اپنی جان پر خوف کرری ہوں یا بچہ پر بہر دوصورت ان دونوں کے افظار کی وجہ سے سلسل ختم ہوجائے گا (۴)۔

- (۱) روهة الطالبين٢٠٣/٨ طبع أمكنب لإسلامي.
 - (۲) كثاف القاع ٣٨٢/٥ طبع الصر.
- (۳) روهه الطالبين ۳۰۲۸ طبع أمكرب لإسلاك، مغنی اکتاع سر ۳۱۵ طبع الحلمی، کشاف الفتاع ۱۵ ۳۸۳ طبع انتصر
- (٣) فتح القدير مع العناب ٢/ ٣٣ طبع الاميري الخرشي ٣/ ١١٨ طبع وارصاون جوام واكليل الر ٣/٤ طبع وارالمعرف.

⁼ الكلابة الإسلامية الخرشي سهر ١١٨ طبع دارصادن جوام الأكليل الر ٣٧٧ طبع دار المعرفيات

و-مرض:

10 - حفیہ کے مزدیک مرض کی وجہ سے افطار کرنا صوم کفارہ کے سلسل کو ختم کر دیتا ہے اور شافعیہ کا قول جدید جو اظہر ہے یہی ہے،
کیونکہ حفیہ نے انقطاع سلسل کے سلسلہ میں عذر یا بلاعذر افطار
کرنے میں کوئی تفریق نہیں کی ہے، سوائے عورت کی حالت چش کے، اور اس وجہ سے بھی کہ مرض مافع صوم نہیں، جبیبا کہ شافعیہ نے ذکر کیا ہے، کیونکہ مریض تو باختیار خودروز داتو اُڑتا ہے (۱)۔

اور شافعیہ کا قول قدیم ہے کہ مرض صوم کفارہ کے تسلسل کو ختم کرنے والا نہیں ہے، کیونکہ بیصوم رمضان کے اسل وجوب سے بڑھا ہوائییں ہے اور صوم رمضان کا وجوب مرض کی وجہ سے ساتھ ہوجاتا ہے اور حنابلہ کی بھی یمی رائے ہے، اگر چیمرض خطرناک نہ ہو، کیونکہ حیض کی طرح اس میں بھی اس کوکوئی اختیار نہیں اور ای کے مثل جنون اور بیہوثی ہے (۲)۔

ز-بعض رانو ں میں نبیت بھول جانا:

19- شافعیہ کا فدہب ہیہ ہے کہ رات کے بعض حصوں میں نبیت کا جھول جانا ، ای طرح تسلسل کونتم کر دیتا ہے جس طرح عمداً نبیت کوچھوڑ دینا اور مامور بہ کے ترک میں نسیان کو عذر نہیں تر اردیا جائے گا۔ یہ اس صورت میں ہے جبکہ پوری رات میں نبیت کرنے کوئٹر طاقر اردیا جائے ، جیسا کہ اضح کے بالمقائل شافعیہ کاقول ہے۔ اور اگر دوم بینوں کے دنوں میں روزہ رکھ لیا پھر فارغ ہونے کے بعد کسی ایک دن کے بارے میں اس کوشہ ہوا کہ اس دن نبیت کی تھی یا نہیں توسیح قول کے بارے میں اس کوشہ ہوا کہ اس دن نبیت کی تھی یا نہیں توسیح قول کے بارے میں اس کوشہ ہوا کہ اس دن نبیت کی تھی یا نہیں توسیح قول کے بارے میں اس کوشہ ہوا کہ اس دن نبیت کی تھی یا نہیں توسیح قول کے

مطابق ال پر ازمر نوروزہ رکھنالا زم نہیں، جیسا کہ نووی نے کہا ہے۔ اور ان دنوں سے فارغ ہونے کے بعد کسی ایک دن میں شک واقع ہونے کا کوئی اثر نہ ہوگا()۔رویانی نے کتاب انجیس میں تنجیرہ (وہ عورت جوابینے ایام چیش بھول جائے) کے مسائل کے شمن میں اس کو ذکر کیا ہے۔

ح -وطی:

ا - اور اگر ظہار کرنے والا محض ایسی عورت ہے دن میں جان ہو جھ کروطی کر لے جس ہے اس نے ظہار کیا ہے تو اس کا میعل با تفاق فقہاء سلسل کو ختم کرنے والا ہوگا، اور اگر اس ہے رات میں جان ہو جھ کریا ہول کروطی کی تو اس میں اختاا ف ہے۔

امام ابوطنیفہ اورامام محد کی رائے بیہ کے کظبار کرنے والے نے اگر اس عورت سے رات میں جان کریا دن میں بحول کرولی کرلی جس سے اس نے ظبار کیا تھا تو اس کی وجہ سے اس کا تسلسل ختم ہوجائے گا، اس لئے کہ روزہ میں شرط بیہ ہے کہ جمائ سے فالی ہو، اور امام ابو بیسف کی رائے بیہ کے کسلسل ختم نہ ہوگا، کیونکہ اس کی وجہ سے روزہ می فاسر نہیں ہوتا، اگر چہروزہ کو جمائ پر مقدم کرنا شرط وجہ سے روزہ می فاسر نہیں ہوتا، اگر چہروزہ کو جمائ پر مقدم کرنا شرط ہے، کیونکہ ہم نے جو بیان کیا ہے اس میں بعض کومقدم کرنا ہے اور جو آپ نے نز مایا ہے اس میں بعض کومقدم کرنا ہے اور جو آپ نے نز مایا ہے اس میں کالی کومؤ شرکرنا لازم آتا ہے (۲)۔

مالکیہ اور حنابلہ کا خیال ہیہ ہے کہ مظاہر کا اپنی مذکورہ بیوی ہے مجامعت کرنا مطلقانسلسل کوختم کردیتا ہے، خواہ رات میں ہویا دن میں، بھول کر ہویا جان کر، ناواقفیت کی بنار ہویا خلطی کی بناریا عذر کی

⁽۱) فتح القدير مع العنائية ۱۲ م ۳۳۰ طبع لأميري روعة الطاكبين ۲۸ م ۳۰۳، طبع المكنب لإسلائ

مسب موسل و المستاع عدده هم الكتبة الإسلامي كثاف القتاع ١٥٦٥ هم الكتبة الإسلامي كثاف القتاع ١٥٦٥ هم الكتبة الإسلامي كثاف القتاع ١٥٦٥ هم

⁽۱) روضة الطاكبين ۸ر ۳۰۳،۳۰۳ طبع أسكنب الإسلامي، مغنى الحتاج ۳۶۵،۳۳۳ طبع لجلبي -

⁽٢) تعميين الحقائق سهر ١٠ طبع دار المعرف، فتح القدير سره ٢٣٠،٢٣٩ طبع لأمير ب حاشيه ابن عابد بن ٢ م ٥٨٢ طبع المصر ب

بنا پر ہوجو افطار کومباح قر اردیتا ہے، مثلاً سفر (۱)، کیونکہ اللہ تعالی کا ارتباد ہے: ''مِنُ قَبُلِ أَنْ يَّتَهَاسًا''(۲) قبل اس کے کہ دونوں باہم اختلاط کریں)۔

اور شا فعیہ کا مُدہب ہیہ ہے کہ اس کا رات میں مجامعت کرنا سلسل کو نتم بیس کرنا ، ہاں گندگار ہوگا (۳)۔

اور غیر مظاہر کا اس سے دن میں جان ہو جوکر وطی کرنا تسلسل کو نتم کردےگا، جیسا کہ حنفہ میں سےصاحب'' العنائی' نے صراحت فر مائی ہے، ہاں اگر رات میں جان کریا بھول کروطی کی یا دن میں بھول کروطی کی نوتشلسل ختم نہ ہوگا، جیسا کہ حنفیہ مالکیہ اور حنابلہ نے صراحت فر مائی ہے، کیونکہ بیاں کے لئے حرام نہیں ہے۔

اورای کے مثل وہ صورت بھی ہے جب کوئی ایسے عذر کی وجہ سے وطی کرے جو اس کے لئے افطار کومباح کرنے والا ہو، جیسا ک حنا بلدنے صراحت کی ہے ^(۳)۔

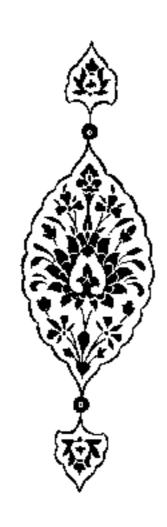
ط- جس صورت میں تسلسل نه نتم ہواس کی قضا:

14 - مالکیہ نے فر مایا کہ اپنے روزے کے درمیان جمن ایام کاروزہ تو روزے کے درمیان جمن ایام کاروزہ تو روزے ہے، ای طرح ان روزوں کی قضا میں تاخیر ہے، ای طرح ان روزوں کی قضا میں تاخیر ہے جمن کی قضا روزہ کے ساتھ متصلا واجب تھی، کفارہ کے روزے کالتلسل ختم ہوجا تا ہے۔

اگر اس کی تضا کومؤ خرکردیا تو روز د کالتلسل ختم ہوجائے گا اور نہوں نے اس کو، اس مخص سے تشبید دی ہے جو وضویا عسل کے فر اُنض

- (۱) الخرثي سمر ۱۱۸،۱۱۸ طبع دارها در، كشاف القتاع ۵ م ۳۸۳ طبع اتصر
 - (۴) سورهمجادله/ س
- (۳) روضعه الطالبين ۳۰۲۸ طبع اكتب الإسلامي، مغنى الحتاج سر۳۱۱ طبع الحلق ___
- (٣) العمّائية سهر ٢٣٩ طبع الاميرية، أخرش سهر ١١٥ الطبع وار صاون كشّاف القياع ٣٣٨ م ٢٥ القياع ٣٣٨ علي التسرية

میں سے کسی چیز کو بھول گیا، پھر اسی درمیان اس کویا د آیا مگر اس کو دھویا نہیں، یعنی جس وقت یاد آیا اسی وقت نہ کیا تو اس کے لئے ضروری ہے کہ ازسر نوطہارت حاصل کر ہے، خواہ بھول کر ایسا کیا ہویا جان کر۔ بال اگر نماز سے قبل کسی نجاست کے یا د آنے کے باوجود اسے بھول گیا تو چونکہ وہ خفیف ہے اس وجہ سے وہ اثر انداز نہ ہوگی (۱) اور جمیں اس مسلم میں مالکینہ کے علاوہ کسی کی کوئی صراحت نہیں مل ۔



(1) الخرثى ١١٦ه ١١ طبع دارصادر، جوابر الإكليل ١١٨٣ طبع دار المعرف.

متعلقه الفاظ:

تخصن:

المستخصن كا ايك معنى تاعد كے ذريعة حفاظت چابنا ہے، چنانچ كبا جاتا ہے: "تحصن المعدو" جب دشمن تاعد بند ہوجائے اور ال كے ذريعة محفوظ ہوجائے (1) تو كويا تحصن دوران جنگ چھپنے اور حفاظت چاہئے كى ايك شم ہے۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

سا-دوران جنگ المسلمانوں کی جانب سے ان کا محاصرہ کئے جانے کے وقت اگر کفار مسلمانوں اوران کے قید یوں کو ڈھال بنالیں تو بھی باتفاق فقہاء ان کو تیر مارہا جائز ہے، بشر طیکہ اس کی ضرورت ہوہ بایں طورک تیراند ازی ہے گریز کرنے میں مسلمانوں کوشکست ہو سکتی ہویا شعائز اساام کے شم کرد ئے جانے کا خطرہ ہو، اور ہوفت تیراند ازی کفار کی نیت کی جائے گی، اور جب لڑائی نہ ہونے کی وجہ سے ان کو تیر مارنے کی ضرورت نہ ہویا اس کے بغیر ان پر غالب آنے کی کوئی صورت ہوتو فی اور حنابلہ کے فرد کے ان کو تیر مارہ جائز نہیں اور حفید میں ن زیاد کے حفید میں نا ور کے بیارہ کے فرد کے ان کو تیر مارہ جائز نہیں اور حفید میں نا ورک کے بیارہ کے فرد کے ان کو تیر مارہ جائز نہیں اور حفید میں نا ورک کے بیارہ نے گی ہوئی گیا ہوئی کرد نے کے کرد کے میں نے کرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی کے فرد کے کہ کے فرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی کے فرد کے کہ کے فرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی کے فرد کے کہ کے فرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی کے فرد کے کہ کے فرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی کے فرد و کے بیارہ نے گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی گیا ہوئی کے فرد و کے بیارہ کے گیا ہوئی کے گیا ہوئی گیا ہوئی

اور مالکیہ کی رائے یہ ہے کہ وہ قبال کریں گے اور جن کو ڈھال بنایا گیا ہے ان کا ارادہ نہیں کریں گے، ہاں جنہیں ڈھال بنایا گیا ہے اگر ان پر تیرنہ چاانے کی وجہ سے کفار سے لڑنے والے

تنرس

تعریف:

ا - تتوس کا انفوی معنی: و حال کے در میہ چھپنا، اس کے در میہ بچنا اور اس نے اور محفوظ ہوتا ہے (۱) اور تتویس کا بھی کبی معنی ہے، چنا نچ کہا جاتا ہے: "تتوس بالتوس" وہ و حال کے در میہ چھپا اور اس نے حفاظت چابی (۲) جیبا کہ مالک بن انس کی حدیث میں ہے، انہوں نے فر مایا: "کان آبو طلحہ یتتوس مع النبی ﷺ کے ساتھ ایک بی بتوس و احد (۳) (حضرت ابوطلحہ نبی علیﷺ کے ساتھ ایک بی بتوس و احد (۳) (حضرت ابوطلحہ نبی علیﷺ کے ساتھ ایک بی وصال میں چھپنے کی کوشش کررہے تھے)، اور اس طرح بھی استعال بوتا ہے: "تتوس بالشيء "لیعنی اس کوؤصال کی طرح بنالیا اور اس کے در میہ چھپا، اور کہا جاتا ہے: "تتوس الکفار بانساری المسلمین و صبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و صبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و صبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و صبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و صبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و سبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و سبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین و سبیانہ م آئناء الحوب" (۳) (دوران جنگ المسلمین المی سنعال الخوی معنی سے الگریں ہے۔

 ⁽۱) لسان العرب، ناع العروس، جم متن الماغه مادة "حصن" _

⁽٣) فتح القدير ١٩٨ مه الطبح احياء التراث العربي، ابن عابدين سهر ٣٣٣ طبع احياء التراث العربي، ابن عابدين سهر ٣٣٣ طبع احياء التراث العربية الدسوقي ٣٨ م ١٩٨ طبع دار الفكر، منهاية الحتاج ١٩٨٨، لأم سهر ٢٨٧ طبع دار المعرف، المغنى ٨٨ وسم، ٥٠ م طبع مكتبة الرياض الحديث.

⁽۱) دو من کول کشادہ لوہا جو تکوارو نجرہ ہے بیچنے کے لئے ہاتھ میں کیا جاتا ہے۔ لسان العرب، تاج العروس، لمصباح لعمیر مادہ ''ترس''۔

⁽٢) لسان العرب، ثاج العروس

⁽۴) لممياح لمير-

اکثر مجاہد ین کوخطرہ ہوسکتا ہوتو پھر ڈھال بنائے گئے لوگوں کی
حرمت نتم ہوجائے گی،خواہ ان لوگوں کی تعداد جنہیں ڈھال بنایا
گیا ہے مجاہد ین سے زیادہ ہویا کم ہو، یکی حکم اس صورت میں بھی
ہے جب وہ لوگ مسلمانوں کی سی صف کوڈھال بنالیں اور ان سے
قال نہ کرنے کی صورت میں مسلمانوں کی شکست ہونے کا گمان
ہو(۱)۔

لہذ ااگر تیر اندازی کے نتیج میں کسی مسلمان کو تیرلگ جائے اور
وہ شہید ہوجائے اور تیر اند از کو اس کا علم بھی ہوجائے تب بھی اس پر
دیت واجب نہ ہوگی اور حفیہ کے قول کے مطابق اس پر کوئی کفار دہ بھی
نہ ہوگا، کیونکہ جہا دِرْض ہے، اور نرض کی ادائیگی ہے کسی تا وان کو جوڑ ا
نہیں جا سکتا ہے تن بن زیاد کا اس میں اختلاف ہے، کیونکہ وہ وجوب
دیت و کفارہ کے قائل ہیں۔

شا فعیہ اور حنابلہ کا ایک عی قول ہے کہ اس صورت میں کفارہ واجب ہوگا اور دبیت کے تعلق ان کے دواقو ال ہیں۔ شا فعیہ کا ایک قول سیے کہ تیراند ازکوائل کے بارے میں اگر بیمعلوم ہوجائے کہ وہ مسلمان ہے اور ائل سے نے کر دوسری جانب تیرند ازی ممکن تھی تو ائل پر دبیت واجب ہوگی۔ اور اگر ایل مسلمان پر تیرچا اے بغیر کفارکو مارنا ممکن نہاتو دبیت واجب نہ ہوگی۔

ائی طرح حنابلدگی ایک روابیت میں ہے کہ دبیت واجب ہوگی، کیونکہ اس نے ایک موس کو خلطی سے آل کر دیا ہے اور دوسری روابیت میہ ہے کہ دبیت واجب نہ ہوگی، کیونکہ اس نے مباح تیر اندازی کے ذر معید

وارالحرب میں قبل کیا ہے (ا)۔

سم - اور اگر کافر ول نے اپنے بچوں اور اپنی عور توں کو ڈھال بنالیا تو حفظ کے فرد دیک ان کونٹا نہ بنانا مطلقاً جائز ہے اور حنابلہ کا فد بب بھی بہی ہے اور تیر اندازی سے لڑنے والے دشمنوں کونٹا نہ بنانے کا ارادہ کیا جائے گا، کیونکہ رسول اللہ علیا ہے ان پر مجنیق سے حملہ کیا، حالا نکہ ان کفار کے ساتھ ان کی عور تیں اور بچ بھی بتھے (۲) اور لڑائی کے شدید ہونے نہ ہونے کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے ۔۔۔۔۔کونکہ نبی علیا ہے تیے اندازی کے لئے لڑائی کے شدید ہونے کے وقت کا انتظار نہیں فریالا کرتے تھے (۳)۔

اور مالکیہ و ثافعیہ کا مذہب ہیہ ہے کہ ان پر تیر اندازی کرنا جائز نہیں ، مرجب ضرورت در پیش ہو، لہذ ابلاضر ورت تیر اندازی نہیں کی جائے گی اور ثا فعیہ کے ظاہر روایت کے مطابق بلاضر ورت ان سے ترک قال واجب ہوگا، کیکن معتمدر وایت جود الروضہ 'میں ہے ہیہ ہے کر اہت کے ساتھ ان پر تیر اندازی کرنا جائز ہوگا (۳)۔

فقہاءنے ڈھال بنانے کے احکام''جہاد' کے باب میں تفصیل سے ذکر کئے ہیں، جہاں نہوں نے کیفیت قال پر گفتگو کی ہے اور جہا دمیں مکر وہات مجر مات اور مندوبات کاذکر کیا ہے۔

⁽۱) الحيطاب سهر ۳۵۱ طبع دار الفكر، حاممية الدسوقي ۲۸/۸ اطبع دار الفكر.

⁽۲) فتح القدير ۱۹۸۵، کموسوط ۱۰ر ۳۱، ۲۵، شرح الروش ۱۹۱۸، روصة الطاكبين ۱۷۲۲، صاحب نهاية الحتاج نے ان دوتيدوں كو جوديت كے متعلق آئى بين، كفارہ كے لئے بھی ضرور کیتر اردیا ہے، نهاية الحتاج ۸ سسم، المغنی ۸ روسس، ۵۰سے

⁽۱) المغنى ۸ر۵۰۰ س

 ⁽۲) عدیث "رمی الدی نظینگ بالمدجویق...." کی روایت ایوداؤد نے ای
معتی کے ساتھ مرائیل میں کی ہے اور اس کی سند ضعیف ہے دیکھئے تنخیص
اُٹیر لا بن جحر(سهر ۱۰۳)۔

⁽٣) فتح القدير ٥/ ١٩٨، أبيسوط ١٥/ ١٥، بدائع الصنائع ١/ ١٩٩، ٩٩، أمغنى ٨/ ١٩٨ مر ١٩٨ مع مكتبة الرياض الحديثة _

 ⁽٣) الحطاب ٣/١٥ ٣، حاشية الدسوق ٣/ ١٨٨، فهماية الحتاج ٨/ ١٩٥٠.

تتزيب

تعریف:

ا - تتربیب، ترب کا مصدر ہے ، کیا جاتا ہے: "تربت الشيء تتربیبافتتوب" یعنی میں نے اس کو خاک آلود کیا تو وہ خاک آلود کو گیا اور کیا تو وہ خاک آلود کو گیا اور کیا جاتا ہے: "آتربت الشيء" میں نے اس پرمٹی ڈال دی، نیز کیا جاتا ہے: "تربت الکتاب تتربیبا" اور "تربت القوطاس فائا آتو به" یعنی میں نے اس پرمٹی ڈال دی تاکہ جوزائد روشنائی اس پر پڑائی ہے وہ سو کھ جائے (ا)۔

لهذ السطرح "تتویب الشيء" كالغوى واصطلاحي معنی تسى چيز برمنى والناہے۔

اجمالی حکم:

آحد کم فلیغسله سبعا" (جب کتاکس کے برتن بیس مندؤال دے تو اے سات دفعہ دھوئے) (بخاری وسلم) اور سلم نے یہ اضافہ کیا ہے: "آو لاھن بالتو اب" (ا) (پہلی مرتبہ منی ہے دھوئے)، نیز اس لئے کہ حضرت عبد اللہ بن مخفل نے ذکر کیا ہے کہ نبی علی نیز اس لئے کہ حضرت عبد اللہ بن مخفل نے ذکر کیا ہے کہ نبی علی نیز اس لئے کہ حضرت عبد اللہ بن مخفل نے ذکر کیا ہے کہ نبی علی الم اللہ فی الإناء فاغسلوہ سبع موات فی موات وعقروہ الفامنة بالتو اب" (۲) (جب کتابرتن میں مندؤ ال و نے سات مرتبہ دھوؤ اور آ شو بر مرتبہ میں منی لگاؤ)۔

اور مستحب بیہ ہے کہ پہلی بی مرتبہ ملی کا استعمال کرے۔ تاک الناظ صدیث کی موافقت ہو سکے، اس کے بعد پانی کا استعمال کرے تاک وہ صاف ستھر ا ہوجائے، اور جس دفعہ بھی ملی سے دھوئے کافی ہے، اس لئے کہ ایک روایت بیس: "إحلاهن بالتو اب" (ان بیس سے ایک دفعہ ملی سے دھوئے) اور ایک روایت بیس: "أو لاهن بالتو اب" (ان بیس سے پہلی دفعہ ملی سے دھوؤ ہے) ہے اور ایک صدیث بیس: "فی الشامنة" (آ تھویں دفعہ) کا لفظ ہے، ان سب کا عاصل بیہ سے دھونے بیس ملی کے استعمال کا کوئی متعین کی شبیر ہے۔

اگرمنی کے بجائے اشنان یا صابون وغیرہ استعال کرے یا آٹھ مرتبہ دھوئے تو اسح بیہ کہ وہ کانی نہیں، کیونکہ اس طہارت میں مٹی کا استعال امر تعبدی ہے، لبند اکوئی دوسری چیز اس کے قائم مقام نہیں ہو کتی ۔

اوربعض حنابله کی رائے بیہ کہ اگر مٹی موجود نہ ہویا مٹی سے

⁽۱) الصحاح، لسان العرب، المصماح المميم ، مختار الصحاح مادهة ''ترّب''

⁽۱) حدیث: "إذا ولغ الكلب في إلاء أحدكم فليغسله سبعا "عظرت ابويربرة كے واسطے بي شقل عليہ ہے، بخاري (الفتح الر ۲۷۳ طبع السخير) نے اس كى روایت كى ہے اور سلم (۱/ ۲۳۳ طبع الحلیں) نے "أولاهن بالنواب" كا اضاف كيا ہے۔

 ⁽۲) حديث: "إذا ولغ الكلب في الإلاء فاغسلوه سبع موات وعفوه ه....." كاروايت مسلم (۱۳۵۸ طع الحليل) نے كى ہے۔

تتريب ٢، ټتن

دھونے کی صورت میں دھوئے گئے کل کے خراب ہونے کا اند میشہ ہو تو مٹی کے علاوہ کسی دوسری چیز کا استعال جائز ہے۔ ہاں اگر مٹی موجود ہواور اس کا استعال مضر نہ ہوتو مٹی کے علاوہ کا استعال جائز نہیں، بیابن حامد کا قول ہے (۱)۔

اور ما لکیہ کے فزو کے سات مرتبہ دھونا مستحب ہے جب کہ کتا اپنا منہ پانی میں ڈال کر اپنی زبان اس میں بلائے ، اور دھونے کے ساتھ مٹی کا استعال پہلی مرتبہ یا آخری مرتبہ یا کسی ایک وفعہ مستحب نہیں ہے، کیونکہ تمام روایتوں میں مٹی کا استعال ٹا بت نہیں، ہاں بعض روایات میں آیا ہے اور بعض ایسی روایتوں میں اضطراب ہے جن میں مٹی کے استعال کا ذکر ہے (۲)۔

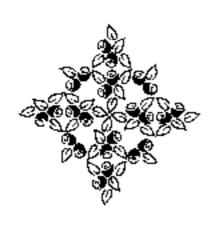
اور دخنیکا ایک قول تین مرتبه دھونے کا ہے، اس کے کہ صدیث ہے: "یغسل الإناء من ولوغ الکلب ٹلاٹا "(") (کتے کے برتن میں مندؤ ال وینے کی وجہ ہے برتن کوئین مرتبه دھویا جائے گا)۔
اور ایک قول تین یا پائی یا سات دفعہ دھونے کا ہے۔ اس صدیث کی بنا پرجس کو دارتطی نے اعرق سے اور انہوں نے حضرت ابو ہریرہ سے اور انہوں نے حضرت ابو ہریرہ سے اور انہوں نے دعشرت ابو ہریرہ نے اور انہوں نے دیشرت ابو ہریرہ نے بی علیات ہے کہ: "یلغ فی الإناء انه بغسله ٹلاٹا او خصسا او سبعا "(") کا اگریرتن میں مندؤ ال

- (۱) المغنى لابن قدامه الراه، ۵۳ طبع الرياض الحديثه ، روهية الطالبين الاسته ۳۳،۳۲۳ طبع أمكنب لإسلام، شرح روض الطالب من أمنى المطالب الراسمينا بُع كرده أمكنية لإسلامية
- (۲) کشرح اکلیبرلار دور امر ۱۸ می ۱۸ جوابر لاکلیل امراها، ۱۳ اسٹائع کرده دار المعرف فتح المباری شرح صحیح البخاری امر ۲ سام
- (٣) حديث: "يغسل الإلاء من ولوغ الكلب ثلاثا" كي روايت دار قطني في حديث: "يغسل الإلاء من ولوغ الكلب ثلاثا" كي روايت دار قطني في في خصرت الوجريره من موقوفا ان الفاظ ش كي هيد "إذا ولغ الكلب في الإلاء فأهو قد ثم اغسله ثلاث موات" اور شخ تقى الدين في "لوامام" شي ذكر كما هيكراس كي منذم هج إنصب الرابي الراساء اعلاء المنن الراجاء مثل فع كرده ادارة القرآن و أعلوم لواسلاميه بإكتان) مثل فع كرده ادارة القرآن و أعلوم لواسلاميه بإكتان) م
- (٣) كتے كے إرك مل حضرت الويريرة كي عديث "يلع في الإلاء أله

دے توہرتن کوئین یا پاپٹی یا سات دفعہ دھوئے)، اور" حاشیۃ الطحطا وی علی مراقی الفلاح" میں ہے کہ سات دفعہ دھونا اور ایک دفعہ مٹی کا استعمال کرنامستحب ہے (ا)۔

تنتر

د يکھئے:'''ترفع'''۔



- یعسله..... کی روایت دار قطنی (۱۵ الطبع شرکته الطباطة الفویه) نے کی
 یعسله..... کی روایت دار قطنی (۱۵ الطبع شرکته الطباطة الفویه) نے کی
 یعسله... کی روایت مفرد بین اوروه متروک الحدیث بین الحدیث بین المدیث بین -
- (۱) فع القدير ارسمه، ۹۵ داراحياء التراث العربي، الاختيار شرح المختار ار ۱۹ استا كع كرده دار أمعرف، مراتي الفلاح وحاهية الطحطاوي رص ۱۸

تثاؤب

تعریف:

ا - 'نتفاؤ ب'' (مد کے ساتھ): وہ سنتی ہے جو انسان کولائق ہواور اس کی وجہ ہے وہ اپنے منہ کو کھو لے (۱)۔

اس کااصطلاحی معنی اس کے بغوی معنی سے الگ نہیں ہے۔

شرى خكم:

۲- علاء نے اس کی صراحت کی ہے کہ جمائی مکروہ ہے، لبذا جس شخص کو جمائی آئے اسے منہ بند کرلیما چاہئے اور بقدرطاقت اس کو روکنا چاہئے، اس لئے کہ نبی عظیمی نے ارتبا فر ملا: "فلیودہ ما استطاع" (۳) (جہاں تک ممکن ہوا سے وفع کرو)، اس کی صورت یہ ہے کہ وہ اپنے دونوں ہوئوں کو بند کر سے یا اس طرح کا کوئی ممل کرے، اس کی طاقت ندہ وتو اپنے ہاتھ کو اپنے منہ پر رکھ لے، اس لئے اور جب اس کی طاقت ندہ وتو اپنے ہاتھ کو اپنے منہ پر رکھ لے، اس لئے کہ نبی علیمی نے ارتبا فر مایا:" اِذَا تَناء بِ أَحد کم فلیمسک کی نبیدہ علی فحمہ، فإن الشیطان ید خل" (۳) (جبتم میں ہے کس بیدہ علی فحمہ، فإن الشیطان ید خل" (۳) (جبتم میں ہے کس کو جمائی آئے تو اے اپنامنہ اپنے ہاتھ سے بند کرلیما چاہئے، کیونکہ

(۱) المصباح لهمير ماده "نوب" ـ

(۲) حدیث: "فلیوده ما استطاع" کی روایت بخاری (انتخ ۱۱۱/۱۰ طبع استخبی) نے کی ہے۔

(٣) حديث: "إذا نفاء ب أحدكم" كي روايت مسلم (١٣٩٣ طبع المعالم طبع المحدكم" كي روايت مسلم (١٣٩٣ طبع المحدد كم المحد

شیطان داخل ہوجاتا ہے) اور ہاتھ کے قائم مقام ہر وہ ڈی ہوسکتی ہے جس سے مقصد حاصل ہوجائے ، مثلاً کپڑ ایا کوئی ککر اوغیرہ۔

نماز میں جمائی آنا:

سو- نماز کی حالت میں جمائی لیما کروہ ہے، کیونکہ امام مسلم کی روایت ہے: ''اِذا تناء ب أحد کم في الصلاة فليكظمه ما استطاع، فإن الشيطان يدخل منه'' (س) (جبتم میں ہے كى كونماز كی حالت میں جمائی آئے تو وہ اپنے منہ كو بندكرے، كيونكہ

- (۱) عدیدے: "إذا نفاء ب أحد تكم "كی روایت ابن ماجه (۱۱ ساطیع الحلمی) نے كی ہاورالروائد ش ہے كہ اس كی سندش عبد اللہ بن سعيد ہيں جن كے ضعیف ہونے ہرسب كا اتفاق ہے۔
 - (٢) ابن عابدين ار ٣٣٣، نهاية الحناج ١٨/٣٥، الأداب الشرعية ٣٨٥ ٣٣٠.
- (٣) عدیث: "کان لا یشهطی لأله من الشیطان" کو این حجر نے اللخ
 (٣) عدیث: "کان لا یشهطی لأله من الشیال بن عجم کی طرف مشوب کیا ہے۔
- (٣) عديث: "إذا نفاء ب أحدكم في الصلاة" كي روايت سلم (٣ سه ٣٢ هـ) طع لحلي)نے كي ہے۔

تَثَا وَبِ مِهِ، تَشْبِت ١ - ٣

شیطان داخل ہوجاتا ہے) بیال وقت ہے جب کہ ال کا دفع کرنا ممکن ہو، کہذا اگر دفع کرناممکن نہ ہوتو مگر وہ نہیں ہے اور وہ اپنے اکمی ممکن ہو، کہذا اگر دفع کرناممکن نہ ہوتو مگر وہ نہیں ہے اور وہ اپنے اکمی ہاتھ سے منہ ڈھا نگ لیے اور مالکید اور حنا بلد کے فزویک لیے ، بہی رائے حفیہ اور شافعیہ کی ہے اور مالکید اور حنا بلد کے فزویک اس میں پچھ حرج نہیں ۔ اور حالت نماز میں جہاں تک ممکن ہومنہ کو بند کرناممکن نہ ہوتو اپنے ہاتھ کو اپنے منہ پر کرناممکن نہ ہوتو اپنے ہاتھ کو اپنے منہ پر کرکھ لے عدیث فذکور کی وجہ سے (۱)۔

قراءة قرآن كے وقت جمائي:

سم فقہاء نے ذکر کیا ہے کہ آن کا ادب یہ ہے کہ ول کے مشغول ہونے، پیا ساہو نے اور نیندآ نے کے وقت تر اوت نہ کرے اور اپنے او تات نشاط وفر حت کو فنیمت سمجھے، اور جب دور ان تر اوت جمائی آئے تو جمائی کے نتم ہونے تک تر اوت سے رکا رہے پھر قر اوت کرے تاکہ انفاظ تر آن نہ بدل جا کیں۔ مجابد فر ماتے ہیں کہ یہ بہتر ہے ۔ ان انفاظ تر آن نہ بدل جا کیں۔ مجابد فر ماتے ہیں کہ یہ بہتر ہے ۔ اور اس کی دلیل وہ صدیت ہے جو حضرت ابوسعید خدری ہے مروی ہے کہ رسول اللہ علیات نے فر مایا: "افدا تشاء ب احد کم مروی ہے کہ رسول اللہ علی فحمہ فإن الشیطان ید حل "(۳) (جب فلیمسک بیدہ علی فحمہ فإن الشیطان ید حل" (۳) (جب تم میں ہے کسی کو جمائی آئے تو وہ اپنے ہاتھ سے اپنے منہ کو بند کر لئے، کیونکہ شیطان داخل ہوجاتا ہے)۔

...... مکترین

تعريف:

ا - لغت میں تشبت کامعنی: رائے اور معاملہ میں انچی طرح غور وفکر کرنا ہے (۱)۔

اور اصطلاح میں مراد کی حقیقت حال کو دریا فت کرنے میں یوری طاقت اورکوشش صرف کر دیناہے۔

متعلقه الفاظ:

تحری:

۲ - لفت میں ترکی کامعنی ارادہ کرنا اور جیٹو کرنا ہے۔ اور اصطلاح میں ریکسی تنگ کی حقیقت سے واقفیت دشوار ہونے کے وقت غالب گمان کے ذر معید اس کو حاصل کرنا ہے (۲)۔

اجمالی حکم:

تشبت کے احکام بہت ہیں، ان میں سے چند یہ ہیں:

الف-نماز مين استقبال قبله كاتثبت:

سا- اس میں کوئی اختلاف نہیں ہے کہ استقبال قبلہ صحت نماز کی شرط

⁽۱) لسان العرب،المصباح مادية "عبت" .

⁽۲) تواعد القافه للمجددي ص ۲۲۰، لميسوط ۱۸۵، شرح الطحطاوي على مراتى الفلاح ص ۲۰

⁽۱) ابن هابدین ار ۳۳۳، نهاییه الحتاج ۱۲۸، المغنی ۱۳۸۳ طبع الریاض، کشاف الفتاع ار ۳۷۳،موایب الجلیل ۸۲٫۲، الدسوتی ار ۲۸۱

⁽٣) - التربيان في آداب حملة القرآن للتو وي ١٨، ١٤، ١٨، فتح المباري ١١٣/١٠.

⁽۳) عدیے: "إذا نفاء ب أحد كم" كي روایت (فَقره نُمبر ۲)ش كذرچگي

ہے، الل کنے کہ اللہ تعالی کا اربٹا و ہے: ''فَوَلٌ وَجُهَکَ شَطُو اللّٰمَ سُجِدِ الْحُوامِ وَحَيْتُهُمَا كُنْتُهُمُ فَولُوا وَجُوهُ هَكُمُ اللّٰمَ سُجِدِ الْحُوامِ وَحَيْتُهُمَا كُنْتُهُمُ فَولُوا وَجُوهُ هَكُمُ شَطُوهُ ''(1) (اچھا اب کر لیجئے اپنا چروم مجد الحرام کی طرف اور تم لوگ جہاں کہیں بھی ہوا ہے چہرے کرلیا کروای کی طرف) اور ال سے چند احوال مستثنی ہیں جن میں استقبال قبلہ شرطنیں ہے، مثلاً خوف کی نماز، ہولی پر چڑھائے ہوئے خص کی نماز، ڈو ہے والے کی نماز اور مباح سفر کی نفل نماز وغیرہ (۲)، ویکھئے: '' استقبال قبلہ''۔ نماز اور مباح سفر کی نفل نماز وغیرہ (۲)، ویکھئے: '' استقبال قبلہ''۔

ب- گواهون کی گواہی میں حقیقت کا تثبت:

سا - کواہوں کی کوائی میں حقیقت امرکی جبتی کرنا قاضی کے لئے مناسب ہے، اور بیان کے بارے میں اعلانہ اور پوشیدہ طور پرسوال کرنے اور حقیق کرنے ہے ہوگا۔ بیاں صورت میں ہے جب ان کی عدالت معلوم نہ ہو، کیونکہ قاضی کو عدالت کی تفتیش کا حکم دیا گیا ہے (۳)، دیکھے: " تر کیہ '۔

ج- ماہ رمضان کے جاندگی رویت میں حقیقت کا تثبت: ۵-تمیں شعبان کی شب میں ماہ رمضان کے جاندگی رویت کی شخفیق کرنا مستحب ہے، تاکہ اس کا آغاز ہونا لیقنی ہوجائے اور یہ دو طریقوں میں ہے کسی ایک کے ذر معید ہوگا:

ایک: بیک ال کے جائد کو دیکھ لیا جائے ، اور بیال وقت ممکن ہوگا جب آسان الیم چیز وں سے خالی ہوجو روبیت سے ما نع ہو مکتی

- (۱) سورۇيقرەر ۱۳۳۰
- (۲) البحرالراكق ار ۴۹۹، الاختيار، ار ۲ ۲، مواجب الجليل ار ۷۰۵، نثرح الروض ار ۱۳۳۳، المغنی ار ۳۳۲، ۳۳۲ طبع الرياض_
- (۳) معین ادکام سهر ۱۰۴، ۱۰۵ بالیو لیونمیره ۱۸۲۳ تا طاقیة الدسوتی کل شرح اکلیر سهر ۱۲۹، اوراس کے بعد کے صفحات طبع عملی کملسی مصر

ېپى،جىسە بادل اورغبار وغير د-

وصراة بدك شعبان كتيس دن مكمل كرلخ جاكين بشرطيكه آسان مذكوره بالاجيزول سے فالی نديوه كيونكدرسول الله عليه عليه ارشا دفر مايا: "صوموا لرؤيته و افطروا لرؤيته، فإن غبي عليكم فاكملوا علمة شعبان ثلاثين" (الإياده كيوكرروزه كوواور جانده كيوكرروزه كوواور جانده كيوكرروزه كووا اگروه تم لوكول سے پوشيده بهوجائة شعبان كي تيل كردوزه كولو، اگروه تم لوكول سے پوشيده بهوجائة شعبان كي تيل كردوزه كولو، اگروه تم لوكول سے پوشيده بهوجائة شعبان كي تيل كردوزه كولو، اگروه تم لوكول سے پوشيده بهوجائة شعبان كي تيل كي كردوزه كولو، اگروه تم لوكول سے پوشيده بهوجائے تو

حفیہ، مالکیہ اور شافعیہ نے ای کو اختیار کیا ہے اور امام احمد کی ایک روامیت بھی یہی ہے (۴)۔

- (۱) حدیث: "صوموا لو فیشه و أفطو و الو فیشه" کی روایت بخاری (الفتح سهره ۱۱ طبع استقیر) نے کی ہے۔
- (۲) بدائع الصنائع ۲۲ ۸۲ وراس کے بعد کے صفحات طبع شرکۃ المطبوعات العلمیہ مسم، الخرشی کلی مختصر طلیل، ۲۲ ۲۳۵،۲۳۳ طبع دارصا در بیروت، حاهیۃ الدسو تی علی الشرح الکبیرارہ ۵۰ اوراس کے بعد کے صفحات، شرح الروض ار ۲۰۹ طبع المکۃ بنہ الإسلامیہ۔
- (۳) حدیث: "لا نصوموا حتی نووا الهلال....." کی روایت بخاری (انتخ سهره ۱۱ طبع انتقبه) اورسلم (۲ ره ۵۵ طبع کهلی) نے کی ہے۔

د-فاسقول کے کلام کا تثبت:

٧ - فاسق جوخبر پیش كرے اس كى تحقیق ضروري ہے ، اس لئے ك الله تعالى في ارشا وفر ما يا ج: "يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا إِنَّ جَاءَ كُمْ فَاسِقٌ بِنَباً فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيْبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَى مَا فَعَلْتُهُمْ نَادِمِينَ "(١) (اے ایمان والو اگر کوئی فاسق آدمی تمہارے یاس کوئی خبر لائے تو تم تحقیق کرایا کرو، ایبا نہ ہوکہ کبیں تم نا دانی ہے کسی قوم کوضرر پیٹھا دو (اور) پھر اینے کئے پر پچھتاؤ)، اس میں ''تبينوا'' كَ جُله'' فتثبتوا'' كَلِّر اءت بَهِي آئي ہے۔اور تبين سے تثبت عی مراد ہے ۔ بعض حضرات کتے ہیں کہ بیآ بیت ولید بن ابی مقبہ کے بارے میں مازل ہوئی ہے۔ ثان نزول اس طرح ہے کہ سعید نے قادہ سے نقل کیا ہے کہ نبی علی ہے والید بن عقبہ کو تبیلہ بی مصطلق کے باس مصدق (زکاۃ وصول کرنے والا) بناکر بھیجا، جب ان لوگوں نے ان کو دیکھا تو وہ لوگ ان کی طرف استبال کے لئے آئے تو بیڈر گئے اور نبی علی کے باس واپس آ کرخروی که وه لوگ مربد ہو گئے، اس یر نبی عظیم نے حضرت خالد بن وليد كو بهيجا اور حكم ديا كه واقعه كي تتحقيق كرليما اور جلدبازی سے کام نہ لیما ۔حضرت فالد یلے اور رات میں ان کے یاس آئے ، پھر انہوں نے اینے جاسوسوں کو بھیجا تو انہوں نے آ کرید خبر دی کہ وہ لوگ اساام پر جے ہوئے ہیں اور انہوں نے ان کی اذان اور نمازسنی ، جب صبح ہوئی تو حصرت خالدان کے باس آئے اور جو پچھ جاسوسوں نے کہاتھا اس کو سیح پایا تو وہ نبی عظیمہ کے باس واپس آئے اور آپ علی کو بتایا، اس بر آیت کریمه نازل ہوئی (۲) اور نبی

میلینی نے فر مایا: "التأنی من الله، و العجلة من الشیطان" (۱)

(سوچ سمجے کرکام کرنا اللہ کی طرف سے ہے اور جلد بازی شیطان کی طرف ہے)۔
طرف ہے)۔



عدیہ: "النالي من الله و العجلة من الشبطان" كى روایت ابو يعلى نے كى سے اور يقل نے كى سے اور يقل القدير كى سے اور يقمى نقدير القديم القديم القديم القديم القديم الكابية التجارير)۔

⁽۱) سودهٔ ججرات ۱۲ ـ

⁽۲) آبیت: "آبیا اَلَّیْهَا الَّلِیْنَ آمَنُو اَ إِنْ جَاءَ تُحُمُ فَاسِقْ....." کے سبب نزول کے متعلق عدیدے کی روایت ابن جربر (۲۲۱ ۱۳۳ طبع اُلحلی) نے کی ہے اور اس کے مرسل ہونے کی وجہ ہے اس کی سند ضعیف ہے۔

⁽۱) تفسير القرطبي ۱۱ / ۱۱۱۳ هم ۳۱۳ طبع دارالكتب أمصريب

تثليث

تعریف:

ا - سئلیت: ثلث کا مصدر ہے، اس کا نغوی معنی مواقع استعال کے اختلاف ہوتا ہے، چنانچ کہا جاتا ہے: ' ثلث الشیء" (اس نے اس کو کھر نے کھر نے کر کے تین حصوں میں تقسم کردیا)، ' ثلث الذرع" اس تھیتی کو تیسری دفعہ سیراب کیا، و ثلث المشراب فی جانے والی چیز کو اتنا پکایا کہ اس کا شکٹ یا دوشک ختم ہوگیا، ' ثلث الا ثنین" اس نے خود کو مال کردوکو تین کردیا)۔

اور فقنہاء کی اصطلاح میں اس کا اطلاق کسی کام کو تنین مرتبہ کرنے پر ہوتا ہے اور اس شیرہ پر بھی جس کو پکانے کی وجہ سے اس کا ایک یا دوتہائی حصہ شمتم ہوگیا ہو (۱)۔

اجمالي حكم:

مندرجہ ذیل صورتوں میں تثلیث کا تھم ال کے مواقع کے اختلاف ہوجاتا ہے:

الف-وضومين تثليث:

٢- ائم ثلاث كے فز ديك وضوييں تثليث سنت ہے، مالكيدكى ايك

روایت بھی یکی ہے اور یہ چہرہ، ہاتھوں اور پیروں کو تین تین مرتبہ وصونے ہے تحقق ہوگا، اس طرح کہ اعضاء کمل طور پر دھل جا کمیں، مالکید کے مذہب مشہور کے مطابق بیستحب ہے، ایک قول بیہ ہے کہ دوسری دفعہ دھونا مستحب ہے اور ایک قول ای تا ہے اور ایک قول ای کے برنکس بھی ہے، اور وضو میں پیروں کو تین مرتبہ دھونے کے تاکہ مالکید کے برنکس بھی ہے، اور وضو میں پیروں کو تین مرتبہ دھونے کے تاکہ کے دومشہور اقوال ہیں:

پہااتول: یہ ہے کہ دونوں پاؤں، چہرے اور دونوں ہاتھوں کی طرح ہیں، کہذاان میں سے ہر ایک کوئین تین دفعہ دھویا جائے گا، اور یہی قول معتدہے۔

دوسر اقول: بدہے کہ وضوییں دونوں پیروں کو صاف کرنا فرض ہے، اس کی کوئی تحدید نہیں ہے۔

اور دخنیہ کے نزویک سر کے سے میں تثلیث سنت نہیں، حنابلہ کا مذہب سیجے بھی یہی ہے اور مالکیہ کی رائے مید بیان کی گئی ہے کہ سرکے سے میں تمیسری مرتبہ دونوں ہاتھوں کو گھمانے میں کوئی فضیلت نہیں، اور اکثر علماء مالکیہ کا خیال میہ ہے کہ سے میں ہاتھ کو تنین مرتبہ پھیر با فضیلت طماء مالکیہ کا خیال میہ ہے کہ سے میں ہاتھ کو تنین مرتبہ پھیر با فضیلت (یعنی مستحب) ہے، بشر طیکہ اس کے ہاتھ میں تری باقی رہے، اور دوسری اور تمیسری مرتبہ سے کرنے کے لئے نیایا نی نہ لے (اک

شا فعید کا مذہب اور حنابلدگی ایک رائے بیہ کہ تین دفعہ سے کرنا سنت ہے، بلکہ شافعیہ کے فزدیک ٹونی اور عمامہ رمسے کرنے ، مسواک کرنے ہشمیہ کہنے اور آق طرح باقی سنن میں شایٹ سنت ہے۔

سُّر مُوزہ پر سے کرنے میں شلیث سنت نہیں اور بعض شا فعیہ کا قول میہ ہے کہ نین دفعہ نیت کرنا بھی سنت ہے (۴) اور ابن سیر بن کی

- (۱) فتح القدير الر ۲۵،۱۲۷ ابن عابد بن الر ۸۰، الحطاب الره ۳۹،۳۵۹،۳۳ ماهيد الدرسوتی الراه ۱، ۱۳ وا، المجموع الر ۳۳۳، الجمل الر۱۳۷، ۱۳۷، المغنی الر ۱۲۷، ۹۳، شیل لهم رب الر ۲۵
 - (۴) الجحل الر۲۹ ا، ۲۷ ا، الجموع الراسه ۳۲،۳۳ م، المغنی الر ۱۳۷

⁽۱) لسان العرب، تا ع العروس، الصحاح في الملعة العربية مثن الملعه، الرائد مادهة "شكت"، ابن عابدين الر ۸۸۸، عمدة القاري الر ۸۸۸، ۱۲۹، ۱۲۹۰، فهايية المحارسة ال

رائے بیہ ہے کہ دود فعم^{سے} کرے (۱)۔

پھر اگر کوئی شخص تین مرتبہ پوری طرح دھونے کے بعد اس اعتقاد کے ساتھ اس پر اضافہ کرے کہ سنت تو تنین عی دفعہ ہے تو حنفیہ کی ایک روایت کے مطابق اس میں کوئی حرج نہیں اور حنفیہ کی دوسری روایت اور ائمہ ثلاث تکا مذہب سیہے کہ وہ مکروہ ہے (۳)۔

ب عنسل میں نثلیث:

سو- ائد ثلاثه کے زویک وضو کی طرح منسل میں بھی تثلیث سنت ہے، ابد اود این سرکونین دفعہ، پھر دائیں پہلوکو، پھر بائیں پہلوکونین تین دفعہ دھوئے ، اور مالکیہ کا مذہب بیہ ہے کشسل میں تثلیث مستحب ہے اور اگر تین دفعہ کافی نہ ہوتو کافی ہونے کی صد تک اضافہ کرسکتا ہے (۵)۔

- (ا) الجموع الرسس
- (٣) حديث: "توضأ البي نَاتِّ موة موة" كى روايت بخاري (الشخ الرمه)
 ١/ ٢٥٨ طبع التنقير) نے كى ہے۔
- (۳) حدیث عثمان: "أن البنی نُلْاَئِنْ دوضاً ثلاثاً ثلاثاً" كی روایت
 بخاري (النِّخ ار ۱۵۹ طبع السُلفر) نے كی ہے۔
- (٣) فتح القدير الر ٢٤، ابن عابد بن الر ٨١، أخطاب الر ٣٦، ٣٦٣، عاهية الدسوقي الر ١٠١، ١٠ وا، الجموع الر ٥ ٣٣، الجمل على شرح المنج الر ١٣٧، المغنى الروسان المبدع في شرح لمقع الر ١١١
- (۵) فتح القديم ابرا۵، ابن عابدين ابر ۱۰۷، الحطاب ابر۱۳۱۷، نمايية الحتاج ابر ۲۳۷، الجمل ابر ۱۹۳، المغنی ابر ۲۱۵، ثیل لهمارپ ابر ۲۸۰

اور ال سلسلے میں اسل وہ روایت ہے جوحظرت عائشہ عسل مروی ہے: "کان النبی اسلے وضوء ہو الصلاق، شم یخلل شعرہ بیدہ، پدیہ ثلاثاً، و توضاً وضوء ہو الصلاق، شم یخلل شعرہ بیدہ، حتی إذا طن آنه قد روی بشوته آفاض الماء علیه ثلاث موات، شم غسل سائو جسدہ" (ا) (نبی علیہ شائل جنابت فر مایا کرتے متصقو دونوں باتھوں کوئین مرتبہ دھوتے اور نماز کے لئے وضو کرنے کی طرح وضوفر ماتے پھر بالوں میں بذر مید آگل خلال فر ماتے، یہاں تک کہ جب بیگان ہوجا تا کہ کھالیں تر ہوگئیں تو مقال فر ماتے، یہاں تک کہ جب بیگان ہوجا تا کہ کھالیں تر ہوگئیں تو ہوگئیں تو اس پر تین دفعہ یا فی بہاتے پھر پورے بدن کودھوتے)۔

ج محسل ميت مين تثليث:

الم - ائد الله تدرز ویک شل میت میں تلیث مستحب ہے اور حفظ کے فرز دیک سنت ہے، اس سے زیادہ دفعہ دھونے کے جواز پر جھی اماموں کا اتفاق ہے، کیونکہ میت کوشل دینے کامتصد صاف سخر اکرنا ہے، کیونکہ میت کوشل دینے کامتصد صاف سخر اکرنا ہے، کہند ااگر تین مرتبہ دھونے سے صفائی حاصل نہ ہوتو حصول نظافت تک زیادہ کرنا سیح ہے، مرشسل کے طاق عدد ہونے کا خیال رکھنا جا ہے (۲)۔

به منگوره احکام کی دلیل شیخیان کی روایت کرده وه عدیث ہے جس شیل رسول اللہ علیہ نے اپنی لخت جگر حضرت زینب گوشس ویے والیوں سے فر مایا: "ابدان بمیامنها و مواضع الوضوء و اغسلنها ثلاثا أو حمسا أو سبعا أو أكثر من ذلك إن رأيتن ذلك

⁽۱) حدیث: "کان اللهبی نظایشهٔ إذا اغتسل" کی روایت بخاری (الشخ ار ۳۸۴ طبع استانیه) تورمسلم (ار ۳۵۸ طبع الجلمی) نے ای معتی میں مختصراً کی ہے۔

⁽۲) فتح القديم ۳رسم، ۳۷، ابن علدين ار۵۷۵، لخطاب ۲۰۸، ۲۰۰۹، ۲۰۳۰. نهاية الختاج ۲۰۸۳ ۲۰۰۰ مار ۲۰۲۰، المغنی ۶۸ ۸۵ ۲،۹۵ ۲، ۲۰ ۲، ۱۲ س

ہماء وسلو، واجعلن فی الآخوۃ کافورًا أو شيئاً من کافور" (ال کے دائمیں سے اور اعضاء وضو سے شروع کرو، اور پیری کے پائی سے نین دفعہ یا سات دفعہ شسل دویا اس سے زائد مرتبہ اگر مناسب سمجھوا وربعد میں کا نور یا کا نور جیسی کوئی چیز لگا دو)۔

ائی طرح میت کو دھونی دیے میں تثلیث مستحب ہے اور جمہور فقہاء کے فزویک تین سے زیادہ مرتبہ بھی دھونی دینا جائز ہے اور میت کے فن کو دھونی دینے میں اور ہوفت مرگ میت کو اور اس تخت کو جس پر میت کور کھا جائے دھونی دینے میں تثلیث مستحب ہے۔

اور مذکورہ ادکام کی ولیل وہ عدیث ہے جس میں آپ علی ایس آپ علیات فاجمروہ ثلاثا"(۲) علیات فاجمروہ ثلاثا"(۲) علیات فاجمروہ ثلاثا"(۲) (جبتم اپنے مردہ کورحوئی دوتو تین دفعہ دو)۔ اور ایک روایت میں مین فاو تووا" (طاق مرتبہ دو) مجھی ہے اور بیمق کے افغا ظ اس طرح میں: "جمدوہ کفن الممیت ثلاثا" (۳) (میت کے کفن کو تین دفعہ دھوئی دو)۔

د-امتنجاکے لئے پھر استعال کرنے اور صفائی کرنے میں تثلیث:

۵- حضیہ اور مالکیہ کا مذہب رہے کہ استخبا کے لئے پھر استعال

(۳) - أمرموط ۱۲ م ۵۹ ، فتح القديم ۲۸ م ۱۲ ماين عابدين ارسم ۵۵ ، الخطاب ۲ م ۲۲۳ ، الجمل ۲ م ۲۵ ما، ۷ سار آمنی ۲ م ۵۷ س

کرنے میں واجب صفائی ہے، نہ کہ تعداد اور صفائی کا مطلب مین نجاست اور اس کی تری کو اس طرح ختم کرنا ہے کہ پھر صاف سخر ا باہر آنے گے اور اس بر پچھ بھی نجاست کا اثر ندر ہے۔

ان حضرات کے خزد کیا۔ تثلیث مستحب ہے اگر چہدو پھری سے صفائی حاصل ہوجائے، جبکہ ثا فعیہ اور حنابلہ نے ہرائے استخبا پھر استعال کرنے کی دوشرطیں ذکر کی ہیں: صفائی کا حاصل ہونا اور تنین کا عدد کمل کرنا، ان دونوں میں سے اگر کسی ایک کا تحقق ہواور دوسرے کا نہ ہوتو کانی نہ ہوگا، اور وہ ہڑ اپھر جس کے تین کوشے ہوں تنین پھروں کے قائم مقام ہے (۱)۔

ای طرح جمہور فقہاء نے فرمایا کہ چیٹا ب کرنے کے بعد ذکر کو تین مرتبہ بختی کے ساتھ تھینچا مستحب ہے (۲)، کیونکہ نبی علیائی سے مروی ہے کہ آپ علیائی نے فرمایا: "اِذا بال اُحد کم فلینتو ذکوہ ٹلاٹاً" (۳) (جبتم میں کا کوئی چیٹا ب کرے تو اپنے ذکر کو تین دفعہ بختی کے ساتھ کھینچے)۔

اور اہتجمار و استبراء کے احکام کی تفصیل استنجا اور استبراء کی اصطلاحات میں مذکورہے۔

جمہور حفیہ کے نزویک نجاست غیر مرئید کو دھونے میں بھی تثلیث مستحب ہے، ای طرح نجاست مرئید کے از الدمیں بعض حفیہ

⁽۱) حدیث: "ابدأن بدبامیها" کی روایت بخاری (انتخ سهر ۱۳۳۰، ۱۳۳۰ طبع استفیه) ورسلم (۱۲ ۲ ۲ ۲ ۸ ۲ طبع کولس) نے کی ہے۔

 ⁽۲) عدیث: "إذا أجموله المهت فأجمو و ۵ ثلاثا" كی روایت احمد
 (۳) عدیث: "إذا أجموله المهت فأجمو و ۵ ثلاثا" كی روایت احمد
 (۳) ۳ اسم طبع أیمینه) اور حاکم (۱/۵ ۵ ۳ طبع دائر قالمعارف العشمانی) فقت كی ہے۔
 اور نیکی نے "جمو و ا كفن المهت ثلاثا" كے الفاظ كوم حلل قر اردیا
 ہے جیہا كرشن تیمی (سر۵۰ ۳ طبع دائر قالمعارف احتمانیه) میں ہے۔
 امرسوط ۲ ر ۵ ۵ ، وقع القدر ۲ / ۲ ۷ ، این جائد تن ار ۳ ۵ ۵ ، الحطاب

⁽۱) فقح القدير الريدا، المده ۱۸ الطحطاوي الر۱۹۵ الطلب الر۲۰ ۲۷ ماهمية الدسوقی الر۲ ۱۰ زنهايية الختاج الر۱۳۳ المفنی الر۱۵۲ المدار نشل لما رب الربوس

⁽۲) - ابن عامدین ار ۲۳۰، لحطاب ار ۲۸۳، حافیته الدسوتی ار ۱۱۰،نهایته اکتاع اراسا، ۳۳، اُنفنی ار ۵۳،۵۳۱

 ⁽۳) حدیث: "إذا بال أحد كم" كی روایت احد (سهر ۲۳۷ طبع أحمیزیه)
 فریز داد بن فساءه به كی ب اوراس حدیث كے مرسل جو نے اوراس كے
 ایک روى كے مجول جونے كی وجہ ب اس كی سند ضعیف ب (فیض القدیم)
 ایک السام طبع آمکیتیة التجاریہ)۔

کے مزد کیک تثلیث مستحب ہے، حنابلہ کی ایک روایت بھی یہی ہے اور مالکیہ وٹا فعیہ کا مسلک اور حنابلہ کی دوسری روایت رہے کہ کتے کے برتن میں منہ ڈالنے کی نجاست کے علاوہ کسی بھی چیز میں عددشر ط نہیں ہے، اور خزیر کی نجاست کے تعلق ٹا فعیہ اور حنابلہ کا خیال بیہ ہے کہ وہ کتے کی نجاست کی طرح ہے⁽¹⁾۔

ھ-ركوغ اور تجدہ كى تسبيحات ميں تثليث:

٧ - ائم ثلاثه كيز ويك ركوح كالبيج "سبحان ربي العظيم" اور تحدول كي شبيج "سبحان ربى الأعلى"كوتين تين مرتب كبنا سنت ہے اور ان حضرات کے مز دیک تین سے زیادہ دفعہ کہنا بشرطیکہ طاق عددیا کچی سات یا نویرختم کرے،متحب ہے، حفیہ اور حنابلہ کے نز دیک اور ثافعیہ کے نز دیک گیارہ مرتبہ کہنامتحب ہے، بیتو ال صورت میں ہے جب وہ تنہا ہو۔ اور امام کو جائے کہ اتن کمبی شبیح نہ كرے كر مقتدى اكتا جائيں، اور ثافعيہ كے فرديك امام كے لئے

اں کی اصل حضرت عبد اللہ بن مسعودٌ کی آپ علی ہے روایت کردہ بیصدیث ہے کہ آپ علی نے فرمایا: "إذا ركع أحدكم فقال في ركوعه: سبحان ربي العظيم ثلاثا فقد تمّ ركوعه، وذلك أدناه، ومن قال في سجوده: سبحان ربي الأعلى ثلاثا فقد تمّ سجوده، وذلك أدناه^{،(٣)}

ہے اور ملا ہے کہ اس کی سند متصل جیس ہے کیو مکھون بن عبد اللہ کی منظرت ابن مسعودے ملا قات تا ہے جیس ۔

ہوجائے ^(۲)۔

(جب تم يس كاكوئي ركوئ بين "سبحان دبي العظيم" تين مرتب

کید لے تو اس کا رکوٹ یو راہوگیا اور بیاں کی کم مقدار ہے، اور جس

تمخص نے این تجدہ میں نین مرتبہ "سبحان رہی الأعلی"كبا تو

خواہ وہ کسی بھی لفظ میں ہو، انہوں نے اس میں نہ کوئی حدمقرر کی ہے

2- جب کوئی شخص کسی کے باس جانے کے لئے اجاز**ت لے** اور

ا ہے بیخیال ہوکہ اس نے نہیں ساتو فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ تنین

مرتبه اجازت طلب کرما جائز ہے اور انکہ ٹلانڈ کے فر دیک مسنون پیہ

کرنا جائز ہے، یہاں تک کہ اس کا سننا یقینی ہوجائے، اور جب

اجازت طلب كرنے كے بعد يقين سے بيمعلوم ہوجائے كراس نے

نہیں ساتو اس سر سب کا اتفاق ہے کہ نتین سے زیادہ اور بار بار

اجازت طلب کرنا جائز ہے، یہاں تک کہ اس کا سننا لیقانی

اورامام مالک نے فریایا کہ تین مرتبہ سے زائد اجازت طلب

ے کہ تین سے زیا دہمر تبہ اجازت طلب نہ کرے۔

اور مالکید کے زویک رکوئ اور مجدہ میں سبیج پرا ھنامستحب ہے،

ال کا مجدہ پورا ہوگیا اور بیال کی کم مقدارہے)۔

اورندنسی دعاء کی تعیین کی ہے⁽¹⁾۔

و-اجازت لينع مين تثليث:

تین سے زیا دہ مرتبہ برا ھنا مکروہ ہے ^(۲)۔

⁽۱) - عاصية الدسوقي الر ۴۳۸، الحطاب الر ۵۳۸

⁽۲) عمدة القاري ۲۲ / ۲۲ ، آفسير القرطبي ۱۲ / ۲۱۴ ، أحكام الجصاص ۲۸۳ ، ۳۸ س بوالع العناكع ۵ / ۱۳۳، ۱۳۵ ـ

⁽۱) كيسوط ارسه، فتح القدير ارد ۱۸ ۱۸ الحطاب ارد ۱۵، نهايته الحتاج ابرا که ا، آغنی ابر ۵۵،۵۳ ـ

⁽۲) لموسوط ابر ۲۱، الطحطاوي ابر ۲۱۳، فتح القدير ابره ۲۱۵، ۲۱۷، نمهايية الحتاج اروه ۱۵۰۵، مُعْتَى ابر ۵۳۱،۵۰۱ شِيل لِمَا رب، ابر ۱۳۱

⁽٣) حديث: "إذا وكع أحدكم" كي روايت تزندي (٣٤/٣ شع المحلبي) نے حطرت عون بن عبداللہ بن متبوعن ابن مسعود کے طریق ہے گی

تثنيه ا-۲، تيويب ا

. تىننىپە

تعریف:

ا - لغت میں ہے کہ تثنیہ ''تنبی ''کامصدر ہے اور کباجا تا ہے: ''ثنیت الستی ء '' جب تم کسی چیز کو دو بنادو۔ اور ملانے کے معنی میں بھی استعال ہوتا ہے، چنانچ جب کوئی شخص ایک کام مکمل کر کے دوسر اکام بھی ای کے ساتھ کر لے تو کباجا تا ہے: ''ثنبی بالأمو الثانی'' (ا)۔ اور ای کالغوی معنی اصطلاحی معنی سے الگنیس ہے۔

بحث کے مقامات:

۲- تشنیکالفظ اذ ان ، اقامت بنگی نماز بر اُنس کے ساتھ سنن رواتب اوررات کی نماز (نفل) کے بیان میں وارد ہواہے ، کیونکہ عدیث ہے:
"صلاقہ اللیل مثنی مثنی "(۲) (رات کی نماز (نفل) دود ورکعت ہے) ای طرح بیند کر کے تفیتہ کے بیان میں اور بیشتر ہور کی شہادت ہے ، ای طرح بیند کر کے تفیتہ کے بیان میں اور بیشتر ہور کی شہادت کے بیان میں وارد ہواہے ، مثلاً نکاح ، طلاق ، اسلام اور موت کے بیان میں اور ہر ایک کی تفصیل اپنی اپنی جگہ رہے۔

تفويب

تعریف:

اور تنویب کا اصطاعی معنی ہے: ایک مرتبہ نماز کا اعلان کرنے کے بعد دوسری مرتبہ نجر اعلان کرنا مثالاً الصلاة خیر من النوم" یا الصلاة الصلاة الصلاة " یا "الصلاة حاضرة" یا کسی دوسرے لفظ کے ذریعیہ، خواد کسی بھی زبان میں ہو اور نبی علیہ اور صحابہ کے زمانہ میں اس میں "میعلینیں" (حی علی اس کا نام تنویب نتما (۳)، کیونکہ اس میں "میعلین " (حی علی

⁽۱) سور کایقره ۱۳۵۸ (۱۳

٢) ثانع العروس، المغرب بالسان العرب مادهة " ثوب"، فتح القدير الر ٣١٣ ضبع
 داراحياء التراث العربي، المحطاب الر ٣٣٣ صبع دارالفكر.

⁽٣) ان عن العروس، لمنعر ب ما دهة " تُوبِ"، الحيطاب اس ٣٣٢ طبع دار الفكر.

⁽٣) المغنى ار ١٠٨ مطبع الرياض.

⁽¹⁾ لسان العرب الر ٨٤٣، المصباح لممير الرسمة مادهة "معنى" _

 ⁽۲) عدیث: "صلاة اللیل مثنی مثنی" کی روایت بخاری (الشخ ۱۹۷۱ مطبع استفیه) و رسلم (۱۹۷۱ هطبع النبی) نے کی ہے۔

الصلاة، حي على الفلاح) كم عنى كورم الا ب، يا ال وجه ك المجب الك مرتب "حي على الصلاة" كور ويدنماز كي لئ ابحارا، بحب الك مرتب "حي على الصلاة" كور ويدنماز كي لئ ابحارا، بحر "حي على الفلاح" كما تو"الصلاة خير من النوم" كي ورايدال في دواردنماز كي لئ ابحارا۔

فقهاء کے فردیک تھویب کا استعال نین طرح سے ہوتا ہے: الف۔ پر انی تھویب یا تھویب اول: یہ فجر کی افران میں ''الصلاۃ خیرمن النوم'' کا اضافہ کرنا ہے۔

ب نئی تھویب، بداؤان وا قامت کے درمیان "حی علی الصلاق"، "حی علی الفلاح"، یا کسی الیی دومری عبارت کا اضافہ کرنا ہے جوہر شہر کے لوگوں کے درمیان متعارف ہو۔

ے ۔وہ تھویب جوالیے اشخاص کے لئے خاص ہے جومسلمانوں کے معاملات اور مصالح میں مشغول رہتے ہوں، چنانچ ایک شخص ان لوگوں کو او قات نماز کی خبر دینے کے لئے مقرر کیا جائے، تو اس طرح خبر دینے یا آواز لگانے برچھی'' تھویب'' کالفظ بولا جاتا ہے (۱)۔

متعلقه الفاظ:

الف-نداء(آواز دینا):

۳-نداء کامعنی پکارنا اور ایسے الفاظ کے ذر معید آواز بلند کرنا ہے جو بامعنی ہوں (۳) ، تو نداء اور تھو بیب پکار نے اور آواز بلند کرنے کے انتہار سے ایک ہیں مرند اء تھو بیب کے مقابلہ میں عام ہے۔

- (۱) أمرسوطا ۱۳۸۷ طبع دار أمعرف، مدائع المصنائع الر ۱۳۸۸ طبع دارا لكتاب العربي
 الكفائية برحاشية فتح القديم الر ۱۳۱۳ طبع دار احياء التراث العربي، الحطاب
 الر ۱۳۳۱ طبع دار الفكر، نهاية المحتاج إلى شرح المنهاج الره ۳۰ طبع
 مصطفی المها بی المحلی -
- (٣) المصباح لمعير مادة "مدا"، الفروق في الملغة ص ٣٩، ٣٩ طبع دارالآفاق الجديده.

ب-وعا(يكارنا):

سا- دعا بمعنی طلب کرنا ہے، یہ بآواز بلندو پست دونوں طرح ہوتا ہے، چنانچ کہا جاتا ہے: "دعو ته من بعید" (میں نے اس کو دور سے پارا) اور کہا جاتا ہے: "دعوت الله في نفسي" (ا) (میں نے ایخ دل میں اللہ کو پکارا) مینداء اور تھو بیب دونوں سے عام ہے۔

ج -ترجيع (آواز کوحلق ميں گھمانا):

الله - كباجاتا ہے: "رجع في أذائه" جب مؤذن شها دنين كو ايك مرتب آبسته كيم اور دومرى مرتب بآواز بلند كيم (٢)، الله لوئے اور مرتب بيل ليكن دونوں الله محل كر كمرر كينے بيل ليكن دونوں الله محل كے اعتبار ہے مختلف ہيں۔ اكثر فقهاء كرز ديك تتويب كامحل اذان فجر ميں مؤذن كا" الصلاة حيو من النوم" كهنا ہے، جہاں تك ترجيح ميں مؤذن كا" الصلاة حيو من النوم" كهنا ہے، جہاں تك ترجيح ميں النوم" كهنا ہے، جہاں تك ترجيح ميں النوم" كهنا ہے، جہاں تك ترجيح كائل ہيں ان كين شها دنين كومرر كہنے كاتعلق ہے تو جولوگ الل كے قائل ہيں ان كے خرد ديك مينام نمازوں كى اذان ميں ہے۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

۵ - تحویب کے مواقع استعال اور اوقات نماز کے اختلاف ہے اس کا اجمالی تھم بھی مختلف ہوتا ہے۔

قدیم یا اول تحویب فجرکی اذ ان میں'' حیعائیں'' کے بعد یا اذان کے بعد جیسا کہ بعض دخنیہ کے فرد یک اضح قول ہے، "الصلاق خیر من النوم" کا اضافہ کرنا ہے۔ بیتمام فقہاء کے فرد یک سنت ہے اور بعض دغنیہ اور بعض شافعیہ کے فرد یک بیعشاء میں جائز ہے (۳)۔

⁽۱) ولدرايت

⁽٢) المصباح المعير مادة "رجع" _

⁽س) بدائع الصنائع، الر ١٣٨ فيع دارالكتاب العربي، المجموع سر ٥٤، ٨٥ طبع الكتاب العربي، المجموع سر ٥٤، ٨٥ طبع الكتابية التنافيد

تفويب٧-4

اور بعض ثنا فعیدنے اس کوتمام نمازوں میں جائز قر اردیا ہے (۱)۔مالکید اور حنابلد کے نز دیک فجر کے علاوہ نمازوں میں بیکروہ ہے اور حفیہ وثنا فعیہ کا مذہب بھی یمی ہے (۲)۔

اذان فجر میں تھویب:

۲- امام او حنیفہ اور امام محمد بن اس کے علاوہ تمام فقہاء کے زور کے سید

علات ہے کہ فجر کے لئے دواؤائیں مشروع ہیں: ایک اذان کے

وقت سے قبل اور دومری وقت شروع ہونے کے بعد۔ اور نووی نے

فر مایا کہ اسحاب کا ظاہر اطلاق ہیہ ہے کہ تحویب فجر کی اذان ہیں مشروع ہے، خواہ وقت سے پہلے ہویا وقت کے بعد، اور بغوی نے ' المبند یہ' میں فر مایا کہ دواقو ال ہیں سے اسح ہیہ ہے کہ اگر اذان اول ہیں تھویب کی گئی ہوتو اذان تا فی ہیں تھویب نہ ہوگی۔ بقیہ فقتہاء جوفجر کے لئے دو

فر گئی ہوتو اذان تا فی ہیں تھویب نہ ہوگی۔ بقیہ فقتہاء جوفجر کے لئے دو

اذانوں کی مشروعیت کے قائل ہیں ان کی کتابوں کے مطالعہ سے یہ

اذانوں کی مشروعیت کے قائل ہیں ان کی کتابوں کے مطالعہ سے یہ

اذانوں کی مشروعیت کے تاکل ہیں ان کی کتابوں کے مطالعہ ہے یہ

اذانوں کی مشروعیت کے تاکل ہیں ان کی کتابوں کے مطالعہ ہے یہ

اذانوں کی مشروعیت کے تاکل ہیں ان کی کتابوں کے مطالعہ ہے یہ

وانان اول ہیں ہوگی یا اذان تانی ہیں یا دونوں ہیں، رائے ہے کہ دونوں ہیں کی جائے گی جیسا کہ نوووی نے اس کورائے تر اردیا ہے (۳)۔

کے اور نگی تھویب جے حضیہ ہیں سے علی الفلاح "کوفجر کی اذان کی دونوں کی ایش مرون المحدی کو کوں کی ایش مرون المحدی کے مطابق مثالے کھنکھارتا یا "الصلاق الصلاق" یا "قامت،

عبارت کے مطابق مثالے کھنکھارتا یا "الصلاق الصلاق" یا "قامت،

(۱) الجموع سهر عه ۸۸، طبع أسكتنية الشلقيد

(۲) کشاف الفتاع ار ۱۱۵، اُمغنی ار ۰۸ م، الحیطاب ار ۱۳ م، الجموع سر ۹۵.
 بدائع الصنائع ار ۱۳۸۸

(۳) سنمین کی رائے بیہ براس وقت تجرکی اذان نا کی کے ساتھ تھو رہا کو تخصوص کرنے کا عمل زیادہ تو ک ہے کیو تکہ مسلمانوں کے عمل کا تسلسل بھی رہا ہے جو اس کوراز عج قر اردیتا ہے۔

قامت" وغیرہ کا اضافہ کرنا ، تو متقدمین حفیہ کے مزدیک بیصرف اذان فجر میں بہتر ہے ممر متاخرین حفیہ نے تمام نمازوں میں اس کو مستحسن تر اردیا ہے ()۔

اور جولوگ مسلمانوں کے ہمور ومصالح کی انجام دی میں مشغول ہوں مثلاً امام وغیرہ ان کو خاص طور پر او قات نماز کی خبر دینے کے لئے ایک شخص کو مقرر کرنا حفیہ میں سے امام ابو یوسف کے بز دیک جائز ہے اور ثافعیہ کا ایک قول اور بعض مالکیہ کا ایک قول کی جہی بہی ہے، اور حنا بلد کا خیال بھی بہی ہے اگر امام وغیرہ نے اذان نہی ہو (۲)، اور محمد بن الحن اور بعض مالکیہ نے اس کو بکر وہ قرار دیا ہے کہ ہو (۳)۔



⁽۱) بدائع الصنائع الر ۱۳۸، فلح القدير الر ۱۳۱۳

⁽۲) بدائع الصنائع الر ۱۳۸، المرير ب الر ۹۹، كشا ف القتاع الر ۱۳۵۵

⁽٣) فتح القديمة الرسام، الحطاب الراسم.

سیا تا جرنبیوں،صدیقین اورشہداء کے ساتھ ہوگا)۔

سا- نی الجملة تجارت کے جواز پر مسلمانوں کا اجماع ہے اور بیکمت
کا تقاضا بھی ہے، اس لئے کہ لوگ ایسی بہت ہی چیز وں کے ضرورت
مند ہوتے ہیں جودوسروں کے قبضہ میں ہوتی ہیں اور بیطریقۂ زندگ
بھی ہے اور تجارت کا مشروع وجائز ہونا ہی وہ واعد طریقہ ہے جس
سے ہر شخص اپنے مقصود کو عاصل کرسکتا ہے اور اپنی ضرورت پوری
کرسکتا ہے اور اپنی ضرورت و

متعلقه الفاظ:

الف-ئيني (بيجينا):

سم - بھے کے معنی ہیں: مال کو مال کے عوض اس طرح بدلنا کہ ما لک منا اور ما لک بنانا بایا جائے۔

جہاں تک تجارت کا تعلق ہے تو وہ یہ ہے کہ کوئی شخص کسی چیز کو نفع کے ساتھ فر وخت کرنے کے لئے خریدے، کبند ادونوں میں فرق یہ ہے کہ تجارت میں نفع حاصل کرنے کا ارادہ ہوتا ہے، خواہ یہ تحقق ہویا نہ ہو۔

ب-سمسره (دلالي):

۵ - مسمسرة لغت کے اعتبار سے تجارت ہے۔خطابی نے فر مایا که اسمسار'' مجمی لفظ ہے اور ان میں سے بیشتر لوگ جن سے فرید فر وخت ہوتی تھی مجمی ہوتے تھے، ان عی مجمیوں سے بیلفظ لے لیا گیا، رسول اللہ علی شیخ نے اس کو لفظ تجارت سے بدل دیا (۲)جو

تجارت

تعریف:

ا - تجارت لغت واصطلاح میں نفع کی غرض سے خرید وفر وخت کے ذر معید مال کے بدلنے کو کہتے ہیں (۱) ، اور بیدر اصل مصدر ہے جو پیشہ پر دلالت کرتا ہے اور اس کا فعل تنجو یتجو تنجو اُ و تنجار اُ استعال ہوتا ہے۔

تجارت کے مشروع ہونے کی دلیل:

اور رسول الله عَلَيْثُ كا به ارشاد هِ: "التاجو الأمين الصدوق مع النبيين والصديقين والشهداء" (المانت دار

^{= (}فيض القدير ٢٨ ٢٥٨ طبع أكمانية التجاريه).

⁽۱) مختی سر ۵۲۰۔

⁽٣) عديث: "كان اسم النجارة سماسوة فغيره رسول الله نائي كي روايت تزندي (٣/ ٥٠٥ طبع لجلمي) اورعاكم (٢/٢ طبع واترة

⁽۱) تاع العروس مادهة "تجر" (

⁽r) سرونا وروتا

⁽۳) سورهٔ جموره ۱۰

⁽٣) عديث: "الناجو الصدوق الأمين" كي روايت ترندي (٣٠١ ٥٠ هـ) طبع لحلي) نے كي ہے اس كي سندضيف ہے كيوكداس ميں انقطاع ہے

عربی زبان کاایک آم ہے(ا)۔

اور سمر وکا اصطلاحی معنی ہے: بائع اور مشتری کے بی رہنا، اور سمسار وہ مخص ہے جو بائع اور مشتری کے درمیان بی کونا فذکر نے سمسار وہ مخص ہے جو بائع اور مشتری کے درمیان بی کونکہ بیٹی کی طرف کے لئے کام کرے، ای کا دوسرانام دلال ہے، کیونکہ بیٹی کی طرف مشتری کی اور شمن کی طرف بائع کی رہنمائی کرتا ہے (۳)۔

شرى تىكم:

السان حصول زر كى غرض ييشه بي، جيد اسان حصول زركى غرض ييشه بي، جيد اسان حصول زركى غرض يد اختياركرتا بي اور بيكمائى مشروع بي، كيونكه ال ك ذر بيم معاشره كى ضروريات بورى بيوتى بين، لبذ الصاأبيا باحث ك دائره بيل داخل بي اور بهي بهي الله بين بقيد احكام شرعيد بثلا وجوب، عرمت، كرابت وغيره جارى بوت بين، ان احوال وظروف كے ليا ظ ہے جوال كے مطابق بوت بين، ان احوال وظروف كے ليا ظ ہے جوال كے مطابق بوت بين۔

اور تجارت ہے متعلق احکام بشمول فقد کی بنیا دی کتابوں کے اسے فقہاء وہ احکام مراد لیتے ہیں جن کو وہ حضر ات حسبہ، آو اب شرعیہ اور فقا وی کی کتابوں میں ذکر کرتے ہیں اور بعض حضر ات نے اس میں خصوصی کتابیں تالیف فر مائی ہیں، مثلاً سرخسی نے اپنی کتاب خصوصی کتابیں تالیف فر مائی ہیں، مثلاً سرخسی نے اپنی کتاب ''الاکتباب فی الرزق المستطاب' اور ابو بکر خلال نے ''کتاب اتجارہ' تالیف کی ۔ اور پچھ نے حالات اور تجارتی ادارے بیدا ہوگئے ہیں جن کا تکم فقہا کے بیان کر دہ عام تو اعدا وران کے احکام سے معلوم ہوسکتا ہے۔

جییا کہ فقہاء مال تجارت کے بعض مخصوص احکام کوعروض

(سامان تجارت) کی زکاۃ کے باب میں بیان کرتے ہیں، جیسے زکاۃ کا واجب ہونا ایسے مال میں کہ اگر وہ بغرض تجارت ند ہوتو اس میں زکاۃ واجب ند ہو، جیسے کیڑ ااور زمینیں، ای طرح ان موال میں نکالی جانے والی زکاۃ کی نوع اور اس کی مقدار کا بدل جانا جن کے بغرض تجارت ہونے کی صورت میں ان میں زکاۃ واجب ہے، جیسے جانور اور وہ موال جن کے عشر اواکئے جاتے ہیں، نیز تجارت کے بعض احکام مضاربت اور دومری شم کی شرکتوں کے باب میں بیان کئے جاتے ہیں۔

شجارت کی فضیلت:

2- تجارت صول مال کابہتر ین طریقہ ہے بشرطیکنا جرحرام کمائی کے طریقوں سے بے اور تجارت کے آداب کی رعابیت کرے۔
صدیث میں آیا ہے: "سئل النبی خالیہ ای الکسب طیب فقال: عمل الوجل بیدہ و کل بیع مبرور" (ا) (نبی علیہ الله علیہ کا فقال: عمل الوجل بیدہ و کل بیع مبرور "(ا) (نبی علیہ الله علیہ کے دریا فت کیا گیا کہ کون کی کمائی پاکیزہ ہے؟ تو آپ علیہ نے فرا مایا: آدمی کا اپنے ہاتھ سے کام کرنا اور ہر پاکیزہ نے کہ شرقاوی نے اپنے عاشیہ میں فر مایا کر آپ علیہ ہے قول: "کل شرقاوی نے اپنے عاشیہ میں فر مایا کر آپ علیہ ہے قول: "کل بیع مبرور" میں تجارت کی طرف ایک اشارہ ہے (۱)۔

ممنوعات تجارت:

۲- تجارت میں ہر طرح کا فریب، دھوکہ اور جموٹی تشم کے ذر معیہ سامان کورائج کرنا حرام ہے۔ حضرت رفاعہ بن رافع سے مروی ہے، وہ کہتے ہیں کہ میں نبی علیق کے ہمر اوعید گاہ کی طرف ذکا!، آپ

⁼ فعدارف العشائيه) نے کی ہے حاکم نے اس کوسیح قر اردیا ہے اور ڈائن نے ان کی موافقت کی ہے۔

⁽۱) تخفة وأحوذي سر ۱۸۹س

⁽۲) این مایزین ۳۹/۵ س

⁽۱) عدیگ: "أطیب الکسب عمل الوجل بیده....." کی احمد (۱۳/۳) طبع کمیردیه)نے کی ہے ابن جمر نے فر ملا که ان کے دجال میں کوئی تریخ میں ہے(فیض القدیمیارے ۵۳ طبع الکتابیة التجاریہ) ک معامیة الشرقاوی کی گفریم ۱۲ ساطبع عیمی الحلی ۔ (۲) حاصیة الشرقاوی کی گفریم ۱۲ ساطبع عیمی الحلی ۔

عَلِیْ نَے لوگوں کوٹر بیر فر وخت کرتے ہوئے دیکھا تو فر مایا: "یا معشر التجار" (اے تا جروں کی جاعت!) تو لوگوں نے آپ علیہ فیلی آپ کی آ واز پر لبیک کہا اور اپنی گردنیں اور نگاجیں آپ کی طرف بلند کرلیں، پھر آپ علیہ فیلی نے فر مایا: "ین التجار ببعثون بوم القیامة فجاراً، إلا من اتقی الله وبو وصلی "(ا) (ب شک تیامت کے دن تاجر آپ حال میں اٹھائے جا کیں گے کہ وہ فاجر ہوں گے ہوں تاجر اس حال میں اٹھائے جا کیں گے کہ وہ فاجر ہوں گے ہوں کے جو اللہ سے ڈرے، نیک عمل کرے اور بھوں گے ہوں کے ہوں کو ہوں کے ہوں کے ہوں کے ہوں کے ہوں کی ہوں کے ہوں کے ہوں کی ہوں کے ہوں کو ہوں کے ہوں کو ہوں کو ہوں کے ہوں کیکھوں کے ہوں کو ہوں کو ہوں کی ہوں کے ہوں کی ہوں کو ہوں کے ہوں کو ہوں کو ہوں کو ہوں کو ہوں کو ہوں کی ہوں کو ہوں

كركے كم قيت ميں اس كا سامان خريد في- اس كى تفصيل "تلتى الركبان" كى اصطلاح ميں ہے-

1- ای قبیل سے احتکار (مبنگانر وخت کرنے کے لئے سامان کو روک کررکھنا) ہے۔ اس لئے کہ صدیث ہے: "المجالب موزوق و الممحتکر ملعون" (ا) (فروخت کرنے کی فرض سے مال لانے والے کورزق ویا جاتا ہے اور مالی کوروک کرر کھنے والا ملعون ہے)، نیز صدیث ہے: "لا یحتکو الا خاطیء" (۲) (گنه گاری مال کوروک کررکھنا ہے) نیز کررکھنا ہے) نیز کررکھنا ہے) نیز احتکار کی اصطلاح دیکھی جاسکتی مرکز کا اس طلاح دیکھی جاسکتی

11- ای قبیل سے بیہ ہے کہ آدمی اپنے بھائی کے بھاؤپر بھاؤکرے،
یعنی بائع اور مشتری سامان کی قبیت میں متفق ہوں اور عقد منعقد
ہونے کے تربیب ہو، پھر ایک تمیسر افخص آکر بیہ چاہے کہ وہ اس کوزیادہ
قیمت دے کر پہلے کے قبضہ سے نکال لے (۳)۔

۱۲ - ای قبیل ہے دہمن کے ساتھ ایسی چیز وں کی نظے کرنا ہے جس کے ذر معید دہمن ہمارے خلاف جنگ میں مضبوط ہوں ، جیسے ہتھیا راور او ہا، اگر چیسلح کے بعد بی کیوں نہ ہو، کیونکہ نبی علیافی نے اس سے منع فر مایا ہے۔ ہاں اس کے علاوہ چیز وں کو ان کے ہاتھ فر وخت کرنا جائز ہے، بشر طیکہ سلمان اس کے علاوہ ورت مند نہ ہوں (۳)۔

⁽۱) حدیث: "إن النجار يبعثون يوم القبامة فجارا" كي روايت ترندي (سهر ۵۰۱ هم لمجالحلي) نے كي ہے اس كي سند مجبول ہے (ميزان الاعتدال لمارچي امر ۳۳۸ طبع لمجلس)۔

⁽۲) حدیث: "کلاکة لا ينظر الله إليهم يوم القبامة" كي روايت مسلم (۱/ ۱۰۳۰ الحج الحلي) نے كي ہے۔

⁽۱) عدیدہ: "الجالب موزوق والمحتکو ملعون....." کی روایت ابن ماجہ (۲۷ ۸۲۷ مطع الحلق بتحلیق فؤ ادعبدالباتی) نے کی ہے اور پومیر کی نے الروائد شرق ملا کہ اس کی سندش علی بن زید بن عدمان ہیں جوضعیف ہیں۔ (۷) ۔ دریہ کے الارچاک رائد خاط ہے۔ "کی مدمہ مسلم (سی ۱۳۷۸ طبع

 ⁽۲) حدیث: "لا یحد کو إلا خاطیء" کی روایت مسلم (۱۳۲۸ شیع الحلمی) نے کی ہے۔

⁽m) لسان العرب مادة "سوم"، أمغى سهر ٢ ٣٣ طبع مكذبية الرياض_

⁽٣) ابن هايدين ٣٢٦٦، جوابير الأكليل ٢٧٣٠.

تجارت کے آداب:

سوا - تجارت کا ایک اوب بیہ کہ معاملہ میں زمی برتی جائے ، ایکھے اخلاق کا مظاہر ہ ہو، جمگر اند کیا جائے ، اور مطالبہ کے ذر معید لوگوں کو حرج میں مبتلاند کیا جائے۔

ال کے تعلق بہت کی احادیث واردہوئی ہیں، ان میں سے ایک حضرت جاہر بن عبداللہ کی وہ روایت ہے جس میں رسول اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ معلم اللہ رجالاً سمحا إذا بناع، وإذا اشتری وإذا اقتضی "(ا) (الل آدمی پر اللہ کی رحمت ہوجو بیچنے بخرید نے اور تقاضا کرنے کے وقت ایکھے اخلاق سے تیش آنے والا ہو)۔

اوررسول الله عَلَيْ فَ فَرْ مَا يَا: "غفو الله لوجل كان قبلكم سهلا إذا باع، سهلا إذا اشتوى، سهلا إذا اشتوى، سهلا إذا اقتضى" (٣) (الله تعالى في مغفرت كروى الشخص كى جوتم سقبل فريد في اور يجين اور تقاضا كرف كوفت نزى سي تُنْ آناتها) - مثل اور الله الله اوب مشتبه اموركو چهور و ينا ہے - مثلاً اليه بازار من كا ايك اوب مشتبه اموركو چهور و ينا ہے - مثلاً اليه بازار من تجارت كرنا جس ميں جرام وطائل تخلوط يہو تے يہوں - اور اليه تحض من تجارت كرنا جس كا بيشتر مال جرام يہو (٣) اس لئے كر عديث ہے: الله حلال بين و المحورام بين و بين ذلك أمور مشتبهات الا يعلمها كثير من الناس: أمن المحلال هي أم من المحورام؟، فمن توكها فقد استبوا لدينه وعوضه" (٣) (حرام وطائل فمن توكها فقد استبوا لدينه وعوضه" (٣) (حرام وطائل

دونوں واضح بیں، اور ان دونوں کے درمیان کچھ مشتبہ چیزیں ہیں جن کو بہت سے لوگ نہیں جائے کہ وہ طال ہے یا حرام، توجس نے اس کو چھوڑ دیا اس نے اپنے دین اور اپنی عزت کی حفاظت کرلی)۔ 10 - ای قبیل سے صدق اور امانت کی جبچو کرنا ہے، عدیث میں ہے: "التا جو الأمين الصدوق مع النبيين والصديقين والشهداء" (ا) (امانت دار اور چاتاجہ انبیاء، صدیقین اور شہداء

۱۱- اورای قبیل سے بال تجارت میں سے پچھ صدقہ کرنا ہے، اس کنے کہ صدیث ہے: "إن الشيطان و الإثم يحضوان البيع فشوبوا بيعكم بالصدقة، فإنها تطفىء غضب الرب" (٢) فشوبوا بيعكم بالصدقة، فإنها تطفىء غضب الرب" وَتُن الله وَوَوَل أَيْ كَوَفْت عاصر بهوتے بیں، تو تم ابنی آئی کے ساتھ صدتہ کرنا بھی شامل کرلیا کرو، کیونکہ وہ رب کے خصہ کو شخند اگر دیتا ہے)۔

احداث میں سے مجمع سورے تجارت کے لئے جانا ہے، حضرت صحر غامدی کی روایت ہے، وہ فرمات ہے ہیں کہ رسول اللہ علی ہے فرمایا: "اللہم ہارک لا متی فی بکور ہا" (") (اے اللہ میری امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صحر ایک تاجم آ دی امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صحر ایک تاجم آ دی امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صح ایک تاجم آ دی امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صح ایک تاجم آ دی امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صح ایک تاجم آ دی امت کی صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صح میں برکت دے)، اور کہا گیا ہے کہ صح ایک تاجم آ دی ایک تا جم آ دی ایک تاجم آ دی تا دی تاجم آ دی تا دی تاجم آ دی تاجم آ

⁽۱) عديث: "الناجو الأمين الصدوق مع البيين....." كَيْ حُرْ يَحُرُ الْقُره؟) ش كذر كل ـ

⁽۲) عدید: "إن المشبطان والإثم يحضو ان البع" كي روايت ترندي (۱۹۸۳ ه طبع الحلمي) ورحاكم نے كي بورحاكم نے اس كو تي قر ارديا ہے (۱۲ ك، دائرة المعارف العمانيه) وروايي نے ان كي موافقت كي ہے۔

⁽۳) حدیث: "اللهم بارک لامنی فی بکورها" کی روایت ترندی (۳/ ۵۰۸ هیم لهلی) نے صحر غامدی ہے کی ہے، منذ رکی نے افر غیب میں اس حدیث کے ان راویوں کا تذکرہ کیا ہے جو صحالی ہیں، پھرفر ملا کہ اس کی بہت کی سندوں میں کلام ہے، اور ان میں سے بعض سندیں صن ہیں (افر غیب وافر ہیب ۲/ ۵۲ م طبح کہلی)۔

⁽۱) عديث: "رحم الله رجلا سمحا إذا باع وإذا الشوى....." كَلَّ روايت بخاري (الفتح سم ۲ ۳۰ طبع التلقير) نے كى بے۔

⁽۲) حدیث: "غفو الله لوجل کان فبلکم سهلاً إذا باع" کی روابیت ترندی(۲۰۱/۳ طیم الحلی)نے کی ہےاوراے صن قرار دیا ہے۔

⁽٣) أقليو لي ١٨٢/٣.

 ⁽٣) عديث "الحلال بين والحوام بين" كى روايت بخار (الشخ سهر ٢٩٠ طبع المثانية) ورسلم (٣١٩ الطبع الحلي) نے كى ہے۔

تھے، جب وہ اپنے تا جروں کوروانہ کرتے تو آئییں صبح سور ہے روانہ کرتے ، اس طرح وہ مالد ارہو گئے اوران کامال بڑھ گیا (⁽⁾۔

مال تجارت ميں زكاة كاوجوب:

۱۸ - بال تجارت میں زکاۃ واجب ہے (۲)، اور مال تجارت ہر وہ مال ہے جس کی ملایت کسی معاوضہ کے ساتھ حاصل کرتے وقت اس کے ذر معیہ تجارت کا تصد کیا جائے ، بشر طیکہ اس پرسال گذرجائے ، مدینہ کے سات فقہاء (۳) نیز حضرت حسن ، جابر بن میمون ، طائیس ، ثوری بختی ، اور امام اور انتی ، ابوعبید ، اسحاق اور اصحاب رائے ای کے قائل ہیں ، اور امام شافعی نے اپنے قول جدید میں بہلز مایا ہے۔

اورمالکیہ نے تا جر مدیر اور تا جر محکر کے درمیان فرق کیا ہے، تا جر مدیر ہر وہ تا جر جوسامان کوال کی واقعی قیمت پرفر وخت کرکے دومر اسامان لائے، مثلاً دوکاندار، تو بیخض ہر سال زکا قراد اگر ہے والا تاجر جوباز ارمیں کرے گا اور تاجر محکر یعنی مال کا اشاک کرنے والا تاجر جوباز ارمیں سامان تجارت لے جانے کا انتظار کرنا رہے تا کہ قیمت بڑھ جا نمیں تو ایسے تا جرکی تجارت پر زکا قرواجب نہ ہوگی، تا آنکہ اس کا مال بشکل نقد ہوجائے، خواہ اس کے پاس وہ مال سالہا سال کیوں ندبا تی رہے (اس)۔

جمہور نے اس عدیث سے استدلال کیا ہے: "کان رسول الله ﷺ یأمونا أن نخوج الصدقة مما نعمه للبیع" (۵)

(۵) عديث: "كان يأمونا أن لخوج الصدقة" كي روايت الإراؤر

(رسول الله عَلَيْهِ بِمِينَ عَلَم دیا کرتے تھے کہم ہر اس مال کی زکاۃ
اداکریں جوہم نیج کے لئے تیار کرتے ہیں)، نیز اس حدیث ہے:
"و فی اللبز صدفۃ" (ا) (کپڑے میں زکاۃ ہے)۔ اس میں تو کوئی
اختا نے نبیس کہ اصل شی میں زکاۃ واجب نبیس، لہذا الیقی طور پر یہ
اختا نے نبیس کہ اصل شی میں زکاۃ واجب نبیس، لبذا لیقی طور پر یہ
ابات ہواک اس کی قیمت میں زکاۃ واجب ہوگی اور فقہا ء کے درمیان
اس میں بھی کوئی اختا ا نے نبیس کہ حوالان حول (سال گذریا) اور وجود
اس میں بھی کوئی اختا ا نے نبیس کہ حوالان حول (سال گذریا) اور وجود
نساب دونوں کا وجوب زکاۃ میں اعتبار کیا گیا ہے (۱۲)۔

تنصیل کے لئے و کیھئے: اصطلاح ''عروض تجارت'' (سامان تجارت) کی زکا ق^(m)۔



⁽۱) تحفة لأحوذي سر ۴۰۳ س

⁽r) - أمغني سهر وسه، روهية الطالبن ٢ /٣ ١٦، بد الع الصنائع ٢ / ٢٠_

⁽۳) وه سات فقهاء به بین معید بن المسرب عروه بن افریر و القاسم بن محی عبید الله بن عبدالله بن متب خارجه بن زید سلیمان بن بهار دور ساتوی ابوسلمه بن عبدالرحمٰن بن عوف بین اکثر کے نز دیک۔ دیکھتے الموسوعہ جلد اؤیز اہم ابتا ہماء کی بحث۔

⁽٣) المدونه ار ٣٥٣، الدسوقي ار ٣٧٣، ٣٧٣.

^{= (}۲۱۲ /۳۱۳ طبع عزت عبید دهای) نے کی ہے ابن حجر نے فر مایا کہ اس کی ہند میں جہالت ہے (الخیص آئیر ۲۲٫۹۵ طبع شرکۃ اطباعۃ انفلیہ)۔

⁽۱) عدیہ: "و فی البز صدافہ" کی روایت احد (۹/۵ کا طبع کیمدیہ) اورحا کم (۱/ ۳۸۸ط دائر قالمعارف اعتمانیہ) نے کی ہے، حاکم نے الے سیح قر اردیا ہے اور دُمبی نے ان کی مو فقت کی ہے۔

 ⁽٣) سابقه مراجع، أمنى ساراس، روهانه الطالبين ١٨ ١٩٨٤، بدائع الصنائع
 ١٣ - ١٩٠١٥٠٠ بدائع

⁽۳) ابن عابدین ۲ / ۱۳ ، ۱۳ ، المتی ۳ / ۱۳ ، کثاف القتاع ۲ / ۳ ، ۳۳ ، روهند الطالبین ۲ / ۲۲۹ ، کنی المطالب از ۸ ۸ س، المدونه از ۲ ۵۳ ، ۲۵۳ س

ہے، اور بعض حنفیہ سے تجدید وضو کی مشر وعیت بھی نقل کی گئی ہے اگر چیہ تجديد

تعریف:

ا - تجدید لغت کے اعتبار ہے"جلد"کامصدرہے، اور حدید قدیم کی ضدب، ای سے "جدد و ضوءه، أو عهده أو ثوبه" ب، يعني اس نے اپناوضو، اپنا عہدیا اپنا کیڑ انیا کیا⁽¹⁾۔

اوراصطلاح شرقی کااستعال بھی ای معنی میں ہے۔

شرعی حکم:

٢- اينموقع ومقام كانتلاف تتجديد كاحكم مختلف موتاب: چنانچ جمہورفقہاء کے زویک وضو کی تجدید سنت ہے یا متحب ہے، ان کی اصطلاعات کے اختااف کی بنیا دیر، اور ام احمد سے اس سلسلے میں دوروایتیں ہیں: ان میں سے اصحروایت جمہور کے مطابق ہے اور دوسر ی روابیت بیہے کہ اس میں کوئی فضیلت نہیں ہے (۲)۔ اور ثا فعیہ نے متحب ہونے کے لئے بیشر طالکائی ہے کہ سملے و ن ہے کم از کم دور کعت نماز پڑھ لے۔ اگر اس نے پہلے و نسو سے کوئی نما زبیں براھی تو تجدید مسنون نبیس، اگر اس نے اس کے خلاف کیا اور وضو کرلیا تو ای کا وضو درست نبیس ہوا، کیونکہ مطلوب

(۱) لسان العرب، لمصباح مادة "عبد د" -

(٣) - أمغني لا بن قد امه الر٣٣١ ـ

(۳) مغنی الحناع ارس ۷۔

کسی مجلس یا نماز کے ذریعیہ فسل نہ کرے (۱)۔ اور تجدید وضو کے لئے مالکیہ نے بیشرط لگائی ہے کہ پہلے وضو ے کوئی عبادت کرے ، ٹلاطواف یانماز (۲)۔

یا کسی نماز کے ذریعیہ مسل کرے، لہذا اگر اس طرح نصل نہ کیا تو مکروہ

اور حنفیا نے بیٹر طالگائی ہے کہ دونوں وضو کے درمیان کسی مجلس

اور اس کے مشروع ہونے کی ایک دلیل بیصدیث ہے:''من توضأ على طهر كتب له عشر حسنات'' ^(٣)(بو^{شخض} طہارت کی حالت میں وضو کرے اس کے لئے وی نیکیاں لکھی جائمیں گی)۔

اور خانناء ہر نماز کے لئے وضوکر تے بتھے اور حضرت ملی وضو كركة آيت ويل كى تااوت فرمالا كرتے تھے: "يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمُ إِلَى الصَّلاَةِ فَاغْسِلُوا وُجُوْهَكُمْ الآية" (٣) (اے ایمان والوجب تم نماز کواٹھوتو اینے چبروں اور ہاتھوں کوکہنیوں سمیت دھولیا کرو) اورال وجہ ہے بھی کہ ابتداء اساام میں ہر نماز کے لئے وضوضروری تھا، پھر اس کا وجوب منسوخ کردیا گیا اور اصل مطلوب بإتى ر بإ(۵)، د يكيفئه: اصطلاح" وضو" بـ

كان ك مح ك لئة ناياتى:

سا- عام شافعی کا مذہب رہے کہ کا نوں کامسح کرنے کے لئے نیا

- (۱) حاشيه ابن عابدين الراهر
- - (m) القرطبي×١٨١ـ

عديك: "من نوضاً على طهو كتب له عشو حسنات"كي روايت ترندی (۱/ ۸ هیم محلی) نے کی ہے اور ملا کراس کی سند ضعیف ہے۔

- (٣) سورة ما يورد
- (۵) مغنی اکتاع ارسایه

یا نی لیما سنت ہے، اس کے بغیر سنت حاصل نہ ہوگی، تمام حنابلہ اور مالکیہ کے نز دیک محیج یمی ہے (۱)۔ اور حفیہ کامشہور مذہب سے ہے كرسر كے لئے لئے ہوئے يانى سے عى دونوں كانوں كامسح كرنا سنت ہے ^(۳)۔

متخاضہ کے لئے بٹی اور گدی کی تجدید:

ہم - شافعیہ کا اصل مذہب رہے کہ ہر نماز کے وقت مستحاضہ رئی یٹی اورنگ گلری کا استعال ضروری ہے ، وضویر قیاس کرتے ہوئے اور بعض حضرات کہتے ہیں کہ بیضروری نہیں ہے، اس کئے کہ جب نجاست مسلسل ہوتو اس کے از الد کا کوئی معنی نہیں۔ یہ اختلاف تو اس صورت میں ہے جب پی کے اطراف رخون ظاہر نہ ہواور پی اپنی جگہ سے نہ بٹے۔ اور اگریٹی کے اطراف پرخون ظاہر ہوجائے یا وہ ا پی جگہ سے ہت جائے تو نئ پٹی لگانا ضروری ہے، اس میں ان کا ایک عی قول ہے (۳)۔

اور حنابلہ کے نز دیک پٹی کا دوبار دبا ندھنا اور خون کوہر نماز کے لئے دھوما ضروری نہیں ،بشرطیکہ با ندھنے میں کوتا بی نہ کرتی ہو۔ اوربعض فقرباء حنفیانے نجاست کو کم کرنے کی غرض سے متحاضه اوردیر معدور لوکوں کے لئے پی یا گدی باند سے کومتحب قر اردیا ہے اور تجدید کے مسلم میں کوئی صراحت نہیں کی ہے، جس کا نقاضا یہ ہے كربيدواجب نديموه كيونكداصل يني عي واجب نبيس-

ال سلسلے میں ہمیں مالکیہ کی کوئی صراحت نہیں مل (۳)۔

مرتدعورت کے نکاح کی تحدید: ۵ - جمہور فقہاء کے نز دیک اگر کوئی عورت مربد ہوجائے اور اسلام کی

طرف نہلو نے تو اس کوتل کر دیا جائے گا۔ حضیہ نے کہا کہ اس کوتل نہیں کیا جائے گا، بلکہ موت تک قید کر دیا جائے گا۔

اور بعض فقہاء حنفیہ کا مذہب ہیہ ہے کہ جب کوئی شا دی شدہ عورت مربد ہوجائے تو اس بر اسلام لانے اور شوہر اول سے نکاح کی تجدید کرنے ریز ورڈ الا جائے گا، خواہ اس کی رضا مندی کے بغیری کیوں نہ ہو، بشر طیکہ اس کا شوہر یہ جاہتا ہو، اور جب وہ مسلمان ہوجائے توشوہر کے ملاوہ سے نکاح کرنا اس کے لئے جائز نہیں اور ہر تاضی کے لئے لا زم ہے کہ تھوڑے میریر اس کے نکاح کی تجدید کروے ۔ تفصیل" روّت" کی اصطلاح میں ہے۔

اور اگر زوجین میں ہے کوئی ایک دخول کے بعد مربد ہوجائے تو حنفیہ اور مالکیہ کے نز دیک مربد ہوتے ہی نکاح ختم ہوجائے گا، پھر اگر ان میں سے مرتد ہونے والامسلمان ہوجائے اور عدت باقی ہوتو تجدید نکاح ضر ورئ ہیں۔ اور ثنا فعیہ وحنابلہ کا مذہب بیہ ہے کہ عدت کے ختم ہونے تک نکاح موقوف رہے گا۔ اگرعورت کے عدت میں رہتے ہوئے مرتد ہونے والا مخص مسلمان ہوجائے تو وہ دونوں اپنے نکاح اول بریا قی رہیں گے، اور اگر وہ مسلمان نہ ہوتو مربد ہونے کے وتت عی سے نکاح کو فتخ مانا جائے گا اور ای وقت سے عدت شار کی عِ اعَے گی (۱)۔ اس کی تفصیل'' روّت'' کی اصطلاح میں ہے۔

⁽۱) مغنی اکتاع از ۲۰، الانصاف ار ۳۵ ایسو ایب الجلیل ار ۳۴۸ ـ

⁽۲) حاشيه اين عابدين ار ۸۳،۸۳۸

⁽m) مغنی اکتاع ار ۱۱۲

⁽٣) وانصاف الر ٧٤ه، إطبيلا و كاكن مراتى الفلاح ص ٨٠ دار لا يمان دُهل _

⁽۱) البحرالمراكق نثرح كنز الدقاكق سر ۲۳۰، حاشيه ابن عابدين ۲۸ ۹۳ سه المغني مع الشرح الكبير بمر ١٤٠٥١٨٥٥ ١٥ـ

ت گر بہ

تعريف:

ا - "تجربة" "جرّبت" كا مصدر ب، ال كالمعنى ب: آزمانا، چنانچ كبا با تا ہے: ''جرّبت الشيء تجريباً وتجرباً، لعني ميں نے اس کوکی دفعہ آزمایا (۱)۔

اور فقہاءاں کواس کے بغوی معنی عی میں ستعال کرتے ہیں۔

اجمالی حکم:

۲-افطار کے مباح ہونے میں مرض کا اثر اگر تجربہ سے ال کے بڑھنے کا اندیشہ ہو:

ایسے مریض کے لئے افطار کرنا جائز ہے جس کوتجر بہ سے مرض کے ہڑھنے کا اند میشد ہوہ اگر چہ تجربہ ال مریض کے علاوہ کسی دوسرے مریض کا ہو، بشرطیکہ مرض ایک ہو(۲)۔

جہاں تک اس تندرست مخص کے حکم کا تعلق ہے، جس کوروزہ ر کھنے سے مرض کا اندیشہ ہواور وہ ضابطۂ مرض جو افطار کو جائز قر ار دے تواس کی تفصیل'' صوم'' کی اصطلاح میں دیکھی جاسکتی ہے۔

مدت خيار مين مبيغ كوآ زمانا:

سا- مت خیاریس مبع کوآزمانا جائز ہے، اور بدآزمائش سامان کے

- المصباح المعير ،لسان العرب، يجم تن الملقد مادده "مجرب" حاشيه ابن عابد بن ١٩٧٣ الطبع بولا ق، حاشية الدسوقي الر ٣٥ ه طبع المحلى -

تجرد

د يکھئے:''عورة''۔



بدلنے سے بدل جاتی ہے اور اس کے بعض انواع مندر جہذیل ہیں (۱):

الف-كير حكاتجريه:

سم - كيڑے كى لمبائى چوڑ ائى معلوم كرنے كے لئے مدت خيار يلى اس كا تجربہ كرنا جائز ہے اور جمہور فقہاء كے نزد يك اس كو اجازت نہيں سمجھا جائے گا، مَر حفيہ نے بيصر احت كى ہے كہ مشترى كيڑے كو ايك مرتبہ پہن كر دوبارہ اس كى لمبائى چوڑ ائى معلوم كرنے كے لئے پہنے تو اس كا خيار ساقط ہوجائے گا، كيونكہ كيڑے كو بار بار پہنے كى كوئى ضرورت نہيں، اس كئے كہ متصد تو صرف ايك عى دفعہ پہنے ہے حاصل ہوجا تا ہے۔

مالکیہ کے زویک مدت خیار میں کیڑ کے واستعمال کرنے کی سولہ صورتیں ہیں۔ ان کا خلاصہ بیہ ہے کہ ان میں سے بعض صورتوں میں تجربہ کرنے کے لئے مذکور مثر انظ کے ساتھ کیڑ ایج بننا جائز ہے (۲)۔ موضوع کی تفصیل کے لئے "خیار شرط" کی اصطلاح کی طرف رجوع کیا جاسکتا ہے۔

ب-مكان كاتجربه:

۵- مبیع اگر مکان ہو اور مدت خیار میں مشتری نے اس میں اقامت افتیار کرلی یا کسی کو اجرت کے ساتھ یا بلا اجرت اس میں کھیر ایا تو اس کا افتیار ختم ہوجائے گا، کیونکہ بیملیت کو افتیار کرنے یا

- (۱) كشاف القتاع سهر ۲۰۸ طبع عالم الكتب، حافية العدوى ۱۳۳۸ طبع داد المعرف
- (۲) بدائع الصنائع ۲۷۰ م ۲۷۰ طبع الجمال، تحفة التعماء ۲۲،۰۰، المشرح الصغير سهر ۱۳۳۱، حامية التعمودي على شرح الميالحين لرسالة ابن الي زيد، الرسام الطبع دار لهمر فيه، الجمل سهر ۱۱۹، لفروع لا بن المقلع سهر ۱۹۰، ۱۹۰، كشاف القتاع سهر ۲۰۸، ۹۰، كشاف القتاع سهر ۲۰۸ طبع حالم الكتب

ا*ں کو برقر ارر کھنے* کی دلیل ہے، کہذ احتفیہ کے فزو یک دلالتۂ اجازت ہوگی (۱)۔

اور مالکیہ نے بیصر احت کی ہے کہ شتری کے لئے بیجائز ہے
کہ آسانی سے تجربہ کرنے اور جائز ہ لینے کے لئے مدت خیار میں
خرید ہے ہوئے مکان میں قیام کرے اس تفصیل کے مطابق جو خیار
شرط کی بحث میں آری ہے (۴)۔

اور شافعیہ وحنابلہ کے بیان سے بیجھ میں آتا ہے کہ شتری کو اختیار ہے کہ شتری کو افتیار ہے کہ شتری کو اختیار ہے کہ شتری کو جس سے اس کوتجر بہ حاصل ہوجائے ، لہند اس کے لئے کیڑے اور گھر کا تجربہ کرنا جائز ہے اور اس کو اجازت نہیں سمجھا جائے گا(۳)۔

ج-جانورکا تجر به:

السند اوہ اس کی رفتار اور اس کی خور اک کود کھے گا۔ تجربہ کی کیفیت اور البند اوہ اس کی رفتار اور اس کی خور اک کود کھے گا۔ تجربہ کی کیفیت اور اس میں پھی تفصیل اور اختایا ف کس مدت میں جانور کا تجربہ میکن ہے اس میں پھی تفصیل اور اختایا ف ہے، جس کے لئے اس کے مقام نیز '' خیار شرط'' کی اصطلاح کی طرف رجوع کیا جاسکتا ہے (۳)۔

- (۱) يوالع الصنائع ۵ر ۲۷ ، تحفة الكلمها ١٥ ر ٨٠
- (۲) المشرح المعير سهر ۱۱۳۵ ۱۱۳۵ شرح الزرقانی ۱۱۱۸ ۱۱۱۰
- (۳) الجسل على شرح أنج سهر ۱۱۹، أن الطالب ۵۵/۳، لشرح الكبير مع أمغنى
 سر۲۷، مغنى الحتاج ۲/۹ س، روهند الطالبين سهر ۵۵ س، تضح لفروع سر۹۵ س، معنى الحتاج ۲۰۸ س.
- (٣) بدائع الصنائع ٥٦ م ٢٥ طبع الجمال، تحفة القفهاء ١٣ مه طبع وارافكر بدشق، المشرح الصفير ١٣٧،١٣٦، الطبع وارافعارف، المغنى مع المشرح الكبير ١٣٤،١١١،١٣٠

میں دیکھے جاسکتے ہیں ۔

بچہ کی عقل مندی معلوم کرنے کے لئے اس کا تجربہ:

2- بچہ کی عقل مندی معلوم کرنے کے لئے اس کو آزمایا جائے گا،
اور یہ اس طرح ہوگا کہ اس کے حوالہ ایسے تضرفات کئے جا نمیں گے
جس میں اس کے جیسے لوگ تغیرف کرتے رہتے ہیں۔

اگر وہ تاجر کی اولا دیمل سے ہے تو خرید وفر وضت کا کام ال کے حوالہ کیا جائے گا، اور اگر ال نے بار بار معاملہ کیا اور دھوک نہ کھا یا اور جو مال ال کے قبضہ میں تھا اس کو ضائع نہ کیا تو وہ عقل مند ہے اور کا شتکار کا لڑکا کا شتکاری کے ذریعیہ آ زمایا جائے گا، اور ان لوگوں کے افر اجات کے ذریعیہ آ زمایا جائے گا جو مصالح کا شت کی انجام دی میں مشغول ہوں، مثلاً تھیتی کرنا، تھیتی کا ٹنا اور اس کی نگر انی کرنا، اور بیشہ وروں کا لڑکا ای پیشہ کے ذریعیہ آ زمایا جائے گا جس سے اس کے والد اور رشتہ دار شعاق ہیں۔

امام ابو حنیفہ امام زفر اور امام نخعی کی رائے بیہ کہ جو شخص بے وقو نی کی حالت میں بالغ ہوا ہواں کے نجر بہ کی ضرورت نہیں ، جب اس کی عمر کے بچیس سال مکمل ہوجا نمیں نو ان کے فزد کیک اس کا مال اس کے حوالہ کردینا ضروری ہے اگر چہوہ عقل مند نہ ہوا ہوہ کیونکہ اس کا مال اس کے حوالہ نہ کرنا تو اوب سیکھانے کے لئے تھا اور جب اس کے اور جب اس کے اور جب سیکھانے کے لئے تھا اور جب اس کے اور جب اس کے اور جب سیکھانے کے لئے تھا اور جب اس کے موالہ نہ کرنا تو اوب سیکھانے کے اس محر میں دادا بن سکتا ہیں ہونے کی امیر نہیں (۱)۔

رشد کے معنی اور بچہ کی عقل مندی معلوم کرنے کے لئے اس کے تجربہ کے وقت کے سلسلہ میں فقہاء کی مختلف رائیں اور اختا! فات ہیں جو''حجر''،'' رشد'' اور'' سفہ'' کی اصطالا جات

قیافہ شناس کی مہارت کو جائے کے لئے اس کوآز مانا:

۸- ثبوت نسب کے تعلق قیا فہ شناس کی بات جن لوگوں کے زدیک قافہ شناس کی بات جن لوگوں کے زدیک قافہ شناس کے سلسلہ میں بیشرط ہے کہ وہ اصابت رائے میں تجربہ رکھتا ہو، اس لئے کہ عدیث ہے: "لا حکیم الا فو تجوبہ "(ا) (تجربہ کاری تحیم ہوتا ہے)۔ اور اس وجہ سے بھی کہ قیافہ ایک علمی کام ہے، لبذا قیافہ شناس کا اس علم سے واجہ سے بھی کہ قیافہ ایک علمی کام ہے، لبذا قیافہ شناس کا اس علم سے واقت ہونا ضروری ہے اور بی میں کے بیٹیس ہوسکتا۔

قیافہ شاس کی مہارت کو جائے کے لئے اس کے آزمانے کا طریقہ بیہ کہ ایک لڑکا ایسی چندعورتوں کے درمیان چیش کیا جائے ک کہ ان میں سے کوئی اس کی ماں نہ ہوہ ایسا تین مرتبہ کیا جائے ، پھر اسے ایسی چندعورتوں کے درمیان چیش کیا جائے کہ ان میں اس کی ماں بھی ہو، پھر اگر وہ سب کے درمیان چیش کیا جائے کہ ان میں اس کی ماں بھی ہو، پھر اگر وہ سب کے بارے میں درست رائے تائم کر لے تو اے تجر بیکار شمجھا جائے گا۔

یباں اس طرف اشارہ کرنا مناسب معلوم ہوتا ہے کہ حضیہ قیافہ شناس کے قول رحمل کرنے کو مطلقانا جائز قر اردیتے ہیں۔ ای وجہ سے انہوں نے قیافہ شناس کے قول کو حکم میں دفیل کے طور پر قبول کرنے کے لئے شرطین نہیں رکائی ہیں (۲)۔

اور موضوع ہے تعلق تفصیلات کے لئے'' قیا آنہ'' کی اصطلاح کیھی جاسکتی ہے۔

⁽۱) المغنى مع الشرح الكبير ۳ ر ۵ ۳۳ ۵، نهلية المتناع ۳ ر ۱۹ ۳ مغنى المتناع ۲ ر ۱۹ ۹، طبع مصطفیٰ المحلوی ماهیه الطبطاوی علی الدر الحقار ۳ ر ۵ ۸، در داخیکا مهشرح مجلة الأحکام مادهة ۴٬۲ م ۵ ۴٬۰ ر ۱۳۳ بغییر القرطبی ۵ ر ۳۸۔

⁽۱) عدید: "لا حکیم الا ذو نجوبة" کی روایت احمد(سهر ۱۹،۸ طبع لمیرید) نے کی ہے اور اس کی سند ضعیف ہے۔ (دیکھئے: میزان الاعتدال للذہبی ۱۲ ۲۳ طبع الحلمی)۔

⁽۲) روصه الطالبين ۱۰۲/۱۲ نهاييد الختاج ۱۰۲/۱۸ مطالب أولی أنها سهر ۲۹ ۳۵ مطالب أولی أنها سهر ۲۹ ۳۱ مثل أنها القاری المعنی مع الشرح الكبير ۲۹ ۸ ۳۱ مهدة القاری شرح صحیح المخاری ۲۱۸ ۱۹ ۱۹ ما اطبع أمیر ب الموسوعة القلمية اصطلاح " اشات " ـ

تجربه ۹ تجزؤة تجسسا -۲

اہل علم کا تجر بہ:

9 - جن اہل علم کے قول پر تنازعات میں عمل کیاجا تا ہے ان کے لئے شرط میہ ہے کہ ان کا علم مناسب تجربوں سے حاصل ہوا ہو۔ جیسے ڈ اکثر، اُنجینیر وغیرہ۔

تجسس

تعريف:

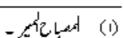
ا - تجسس کا لغوی معنی خبروں کی جبھو کرنا ہے، چنانچ کبا جاتا ہے: حبس الأخبار و تجسسها، جب کوئی شخص خبروں کی شخص و جبھو کرے، ای سے جاسوں ہے جوخبروں کی جبھو کرتا ہے اور مخفی مور کی کھود کرید کرتا ہے، پھر اسے آنکھ سے دیکھنے کے لئے بطور استعارہ استعال کرلیا گیا (۱)۔

اس کا اصطلاحی معنی لغوی معنی کے دائر ہ سے خارج نہیں ہے۔

متعلقه الفاظ:

الف-تحسس:

التحصی کامعنی خبر دریافت کرنا ہے، چنا نچ کبا جاتا ہے: "رجل حساس للا حیار" یعنی اس کوخبر وں گریڑ ک معلومات حاصل ہے، اور احساس کامعنی اصلی و کھنا ہے اور ای سے اللہ تعالی کا قول ہے: "هَلُ تُحِسَّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ" (۲) (سوآپ ان میں سے کس کو بھی درکھتے ہو، پھر یہ وجد ان اور علم کے لئے استعال کیا جانے لگا، خواد کسی بھی حاسم یعنی تو سدرک کے ذریعہ ہو، استعال کیا جانے لگا، خواد کسی بھی حاسم یعنی تو ت مدرک کے ذریعہ ہو، اور اللہ تعالی کے ارشا دن "وکلاً تَجَسَّسُولاً" (اور الله عیل مت کے اور اللہ تعالی کے ارشا دن "وکلاً تَجَسَّسُولاً" (اور الله عیل مت کے اور اللہ تعالی کے ارشا دن "وکلاً تَجَسَّسُولاً" (اور الله میں مت کے



⁽۲) سورة مريم ۱۹۸



ر کھھئے:''تبعیض''۔



تجس ۳-۵

رہو) کو ''و لا تحسسوا''عاء کے ساتھ بھی پڑھا گیا ہے (۱)۔ زخشری نے فر مایا کہ بیدونوں قریب اُمعنی ہیں اور کبا گیا ہے کہ تجسس کا اطلاق ہرائی پر ہوتا ہے اور تحسس (عاء کے ساتھ) کا ستعال اکثر بھاائی ہیں ہوتا ہے (۲)۔

ب- ترضد (گھات میں بیٹھنا):

سا - ترصّد کامعنی ہے: راستہ پر بیٹھنا اور ای سے" رصدی'' ہے، لعنی وہ خص جوئر کوں پر اس غرض سے بیٹھتا ہو کہ لوکوں کود مکھے کر ان کا مال ظلماً لے لے (۳)۔

تجسس اورتر صدال اعتبار سے تتحد ہیں کہ دونوں کا معنی لوکوں کے حالات کی جبتو کرنا ہے مترجس نو تفتیش اورکوشش کے ذر معید ہونا ہے تا کہ خبریں معلوم ہو تکیل ،خواہ س کر ہویا ایک جگہ سے دوسری جگہ جا کر اور ''تر صد'' کا تحقق تو جیھنے ، انتظار کرنے اور گھات میں لگنے سے ہونا ہے۔

تنصت (بغورسننا):

سم - تنصت كامعنى بسمّع يعنى كان لكانا بهد - كباجاتا ب: "أنصت إنصاقاً" يعنى الل في كان لكايا اورغور سه سننه كے لئے فاموش ربا نو يہجسس سے عام ہے، كيونكه تنصت نو حيب كر اور اعلانيه دونوں طرح ہوتا ہے (۱۳)۔

شرعی تکم: ۸-تحسرس:

۵- بحس کے تین احکام ہیں:حرمت، وجوب اور اہاحت۔

- (۱) سورهٔ فجرات ۱۳۸
- (۲) لمصباح لهمير تغيير الزقشري سر ۱۸ -۵۰
 - (٣) لمصباح لممير ـ
 - (٣) لمصباح لمعير ـ

مسلمانوں کے فلاف تنیش وجیتو کرنا دراسل حرام اور ممنوئ ہے، اس لنے کہ اللہ تعالی کافر مان ہے: "وَلاَ تَجَسَّسُوْا" (تم جاسوی نہ کرو)، اور اس وجہ ہے بھی کہ اس بین مسلمانوں کی پر وہ دری اور عیب جوئی ہے، اور جس کو انہوں نے چھپار کھا ہے اس کو آشکار اکرنا ہے۔ اور رسول اللہ علیہ نے فر مایا: "پا معشو من آمن بلسانه ولم یدخل الایسمان الی قلبہ لا تتبعوا عود ات المسلمین، فین من تتبع عود ات المسلمین، فین من تتبع عود ات المسلمین تتبع اللہ عود ته حتی یفضحه ولو فی جوف بیته" (ا) (اے وہ لوکو جوسرف زبان یفضحه ولو فی جوف بیته" (ا) (اے وہ لوکو جوسرف زبان ہے ایکان لائے ہواور ایکان تنہارے دل بین نیس وائل ہوا ہے، تم مسلمانوں کی پر دہ دری نہ کرو، کیونکہ جوشی مسلمانوں کی پر دہ دری حراث کرو، کیونکہ جوشی مسلمانوں کی پر دہ دری عوالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، علیہ تعالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، علیہ تعالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، علیہ تعالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، علیہ تعالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، علیہ تعالی اس کی پر دہ دری کرے گا اور اس کورسوا کردے گا، عور کے اندری کیوں نہ ہو)۔

این وہب نے فر مایا کہ پر دوپوشی واجب ہے، مگر امام ،حاکم اور زنا کے جار کواہوں میں سے ایک سے (کدان سے پر دوپوشی واجب نہیں ہے)۔

اور تفقیش کرنا مجھی واجب ہوتا ہے، چنا نچ ابن الماحثون سے نقل
کیا گیا ہے کہ انہوں نے فر مایا کہ چوروں اورڈ اکوؤں کے رہنے کی جگہ
کی تفقیش کی جائے گی اور ان کے خلاف تعاون کیا جائے گا، یہاں تک
کہ وہ قل کر دیئے جا کمیں یا جا اولمن کردیئے جا کمیں (۲) اور ان کی تایش
بغیر شجسس اور بغیر ان کی حالتوں کے دریا فت کئے ہوئے نہیں ہو عتی۔
مسلمانوں اور غیر مسلموں کے درمیان جنگ کے وقت کفار
مسلمانوں اور غیر مسلموں کے درمیان جنگ کے وقت کفار

(۱) تغیر الکثاف سر ۵۶۸۔

حدیث: "یا معشو من آمن بلساله" کی روایت ترندی (۲۷۸/۳ طبع الحلی) نے کی ہے اور فر بلاہے کر بیٹ نفر ریب ہے۔

(r) تجرة لوكام ١٧ المال

ناک ان کی تعداد، ان کے اسباب جنگ اور تھر نے کے مقامات وغیرہ سے تعلق معلومات حاصل ہو سکیس۔

ای طرح تعیش کرنا مباح ہے جب حاکم کو ینجر دی جائے کہ فلاں کے گھر میں شراب ہے، لبذا اگر چند کواہ کسی کے گھر میں شراب ہونے کی کوائی ویں تو صاحب فائد کے احوال کی تعیش کی جائے گی، لبذا اگر وہ اس چیز میں مشہور ہوجس کی خبر دی گئی ہے تو اس کا مواخذہ ہوگا اور اگر اس کا حال پوشیدہ ہوتو تفییش کی ضرورت نہیں ہے۔ امام مالک ہے اس پولیس کے بارے میں دریا فت کیا گیا جس کے پاس مالک ہے اس پولیس کے بارے میں دریا فت کیا گیا جس کے پاس ایک شخص نے آکر ینجر دی کہ چندلوگ ایک گھر میں شراب پہنے کے ایک اکٹر اور اگر اس کی قتیش نہیں ہوتا آپ نے فر مایا کہ اگر وہ لوگ مامعلوم گھر میں ہوں تو اس کی تعیش نہیں کی جائے گی، اور اگر وہ گھر اس میں مشہور ہوتو اس کی تعیش نہیں کی جائے گی، اور اگر وہ گھر اس میں مشہور ہوتو اس کی تعیش کی جائے گی، اور اگر وہ گھر اس میں مشہور ہوتو اس کی تعیش کی جائے گی، اور اگر وہ گھر اس میں مشہور ہوتو

اور محتب کو ال بات کاحق ہے کہ وہ جمرائم کا ارتکاب کرنے والوں کی تلاشی لے، کیونکہ گر ال مقرر کئے جانے کی بنیا دعی امر بالمعر وف اور نبی عن المنکر ہے (۱)۔

دوران جنَّك مسلمانوں كے متعلق تفتيش كرنا:

۲-مسلمانوں کے خلاف جاسوی کرنے والایا تو مسلمان ہوگایا ذمی یا کافر حربی اور ہارون رشید نے جب امام ابو یوسف سے ان لوگوں کے متعلق تھم دریا فت کیا تو انہوں نے جواب میں فر مایا: اے امیر المونیون! آپ نے ان جاسوسوں کے تعلق دریا فت فر مایا ہے جو ایر المونیون! آپ نے ان جاسوسوں کے تعلق دریا فت فر مایا ہے جو پائے جائے جائے وہ یا تو وہ یا تو ذمی ہوں گے یا حربی یا مسلمان، تو اگر وہ حربی ہوں یا یہود ونساری اور مجودی میں سے ایسے ذمی جوجز بیادا کر ہے ہوں تو ای جوجز بیادا

نو انہیں دردنا ک سز ا دیجئے اور ان کوطویل مدت تک قید میں رکھئے یہاں تک کہ وہ تو بہ کریں (۱)۔

امام محمد بن آلحن نے فر مایا کہ جب مسلمان کسی ایسے شخص کو پائیں جو مسلمان ہونے کا وجو بدار ہواور وہ مسلمانوں کے خلاف مشرکوں کا جاسوں ہوجو مسلمانوں کی پوشیدہ با تیں لکھ کران کے پاس بھیجا کرتا ہو، پھر اس نے برضا ورغبت اس کا افر از کر لیا ہوتو اسے تل نہ کیا جائے گا مگر امام اسے دردنا ک ہزادے گا، پھر فر مایا کہ اس جیسا شخص در حقیقت مسلمان نہیں ہوسکتا، تا ہم اس کو تل نہیں کیا جائے گا، کیونکہ جن چیزوں سے آدمی کا مسلمان ہونا تا بہت ہوتا ہے ان کو اس نے نہیں جچوڑ اسے ، ابہذا وہ ظاہر میں اسایام سے خارج نہیں مانا جید وہ ان چیزوں کو نہ چچوڑ دے جن کے ذر مید وہ اس بین وہ ان چیزوں کو نہ چچوڑ دے جن کے ذر مید وہ اسایام میں داخل ہوا ہوا۔

اوراس لنے بھی کہ اس کواس کے کئے ہوئے کام پر لائے نے اور اللہ کیا ہے، بداع قادی نے نہیں اور یہ بہترین توجیہ ہے اور اللہ تعالی نے اس کا تھم دیا ہے۔ فر مایا: "اللّٰیوْنُ یَسْتَمِعُونُ الْقُولُ اللّٰہ تعالی نے اس کا تھم دیا ہے۔ فر مایا: "اللّٰیوْنُ یَسْتَمِعُونُ الْقُولُ اللّٰهُ وَلَى اللّٰہ قاد اطلع علی الله قد اطلع علی آھی الله قد اطلع علی آھیل بدر فقال: اعتمادا ما شئتہ فقد الله قد اطلع علی آھیل بدر فقال: اعتمادا ما شئتہ فقد

⁽۱) الخراج لالي يوسف ۲۰۹،۳۰۵ س

^{-11/1/6/24 (}M)

⁽۱) حوالہ سابق۔

ائی طرح اگر ذمی نے ایسا کیا تو اسے بھی دردنا ک سز ادی جائے گی ، اور جیل کے حوالہ کردیا جائے گا اور وہ اپنے اس فعل کی وجہ سے عہد کو تو ڑنے والا نہ مجھا جائے گا، کیونکہ اگر کوئی مسلمان ایسا کرتا ہے تو اس کا یفعل اس کے لئے امان کو شتم کرنے والا نہ ہوگا۔ کیا اگر کوئی ذمی ایسا کرے تو یہ اس کے عہد کو بھی تو ڑنے والا نہ ہوگا۔ کیا آگر کوئی ذمی ایسا کرے تو یہ اس کے عہد کو بھی تو ڑنے والا نہ ہوگا۔ کیا آپ د کیھے نہیں کہ اگر کوئی ذمی ؤکستی کرتے ہوئے قبل بھی کرے اور

اوراگر وہ صراحة الله اوراس كرسول سے جنگ كرتے ہوئے ڈاكرزني کرے تو بیبدرجہاولی نہ ہوگا (بیناتض عہد و پیان نہ ہوگا) ای طرح اگر کوئی مستامن (این لے کردارالاسلام میں رہنے والا) ایبا کرے توید اس کے لئے بھی ناقض امان نہ ہوگا۔ جیسا کہ اگر وہ مخض وی کیتی کرے (توبیاس کے لئے ناقض امان نہیں) مگر ان تمام صورتوں میں ا سے سز ا کے طور پر تکلیف دی جائے گی، کیونکہ اس نے حرام کا ارتكاب كيااورايي فعل مصلمانون كونقصان يرتيجاني كااراده كيا-اگر اس کے امان طلب کرتے وفت مسلمانوں نے اسے کہہ دیاتھا کہ ہم نے تمہیں ہی شرط کے ساتھ امان دیا ہے کہ تومسلما نوں کے خلاف مشرکوں کی جاسوی نہیں کرے گایا جم نے تہہیں اس شرط کے ساتھ امان دیاہے کہ اگر تونے حربیوں کومسلمانوں کی پوشیدہ با توں ے باخبر کیا تو تیرا امان ختم ہوجائے گا اور صورت حال یہی ہو (مسلمانوں کے خلاف جاسوی کرتا ہو) تو اس کے قبل کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے ، ہی لئے کہ جو چیز کسی شرط کے ساتھ معلق ہووہ شرط کے بائے جانے سے قبل معدوم رہتی ہے۔ چونکہ اس نے اس کے امان کو اس شرط کے ساتھ معلق کیا ہے کہ جاسوں نہ ہو، لہذ اجب بد ظاہر ہوگیا کہ وہ جاسوں ہے تو وہ حربی ہوگیا جس کو کوئی امان نہیں ہے، لہذا اس کوفل کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے، اور امام اگر مناسب سمجھے ک اس کوسولی دے دی جائے تاک دوسرے کواس سے عبرت ہوتو ال میں بھی کوئی حرج نہیں ہے، اور اگر بیمناسب سمجھے کہ دوسر سے قیدیوں کی طرح س کومال غنیمت ہنا دیا جائے تو اس میں بھی کوئی حرج نہیں ہے، البنة يبال پر اس كولل كردينا بہتر ہے تا كه دوسر كواس ے عبرت ہو۔ اور اگر بجائے مرد کے عورت ہوتو اس کے قبل کرنے میں بھی کوئی حرج نہیں ہے، کیونکہ اس نے مسلمانوں کونقصان پہنچانے

الل بھی لے لے تو بیاس کے عہد و پیان کوتو ڑنے والانہیں ہوتا ہے،

⁽۱) حنظرت حاطب این الجایلات کی حدیث کی روایت بخاری (انتخ ۲ ۱۳۳۷ طبع استانیه) اورمسلم (سهر ۱۳۸۱ طبع کملنی) نے کی ہے۔

⁽۲) سوره مختد را به

⁽m) سورة انفال 174 (m)

کا ارادہ کیا ہے اور اس حالت میں حرب_{ید} کوفل کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے،جیسا کہ جب وہ قال کرے (تو اس کوتل کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے) ممراس کوسولی دینانا پیندید دہے، کیونکہ وہ عورت ہے اورعورت کی ستر بوشی اولی ہے۔ اور اگر نابا لغ لڑکا اس کام میں پکڑا جائے تو اس کو مال غنیمت بنالیا جائے گا اور اسے قل نہیں کیا جائے گا، کیونکہ وہ احکام شرع کا مخاطب نہیں ہے، لہذا اس کا فعل خیانت نہ ہوگا جومو جب قتل ہو، بخلاف عورت کے، اور پنظیر ہے بچیک کہ اگر وہ قال کرتے ہوئے پکر اجائے اور اس کو قیدی بنالیا جائے تو اس کوتل نہیں کیا جائے گا، بخااف عورت کے کہ اگر وہ قال کرتے ہوئے قیدی بناکر گرفتارکر لی جائے تو اس کولل کرنا جائز ہے، اور وہ بوڑھا جو قال کے لائق نہ ہو مجھے انعقل ہوتو اس کے سلسلے میں وی تھم ہے جو عورت کا ہے، کیونکہ وہ بھی مخاطب ہے، اور اگر مستامن اس کا انکار كرے كراس نے ايما كيا ہے اور كي كجو خط لوكوں نے اس كے باس بایا ہے، وہ اے راستہ میں ملاتھا اور اس نے اے لیا تھا تو مسلمانوں کے لئے یہ جائز نہیں کہ اسے بلاد میل قبل کردیں، کیونکہ بظلم وہ اُس والا ہے توجب تک وہ تی ٹابت نہ ہوجائے جو اس کے ا من کوشتم کرنے والی ہے اس کا قتل کرنا حرام ہوگا، پھر اگر وہ اس کو مار پیٹ یا قیدیا جیل خانہ میں ہند کرنے کی قصم کی دیں یہاں تک کہ وہ لتر ارکر لے کہ وہ جاسوں ہےتو اس کے اس لتر ارکا کوئی اعتبار نہیں ہے، کیونکہ بیکرہ ہے اور مکرہ کا اتر ارباطل ہے، خواہ قید کا إ كراہ ہو یا قتل کا اور اس کا جاسوس ہونا اس وقت ٹا بت ہوگا جب وہ خوش دلی ہے اتر ارکر لے یا دوکواہ اس کی کوائی دے دیں۔ اور اس سلسلے میں ذمیوں اور حربیوں کی کوائی قاتل قبول ہوگی، کیونکہ بیخض بھی ہمارے در میان حربی ہے، جاہے مستامن عی کیوں نہ ہواور حربی کے خلاف حربی کی کو ہی مقبول ہوتی ہے۔

اگر امام سی مسلمان یا ذمی یا مستامی کے پاس کوئی خط پائے جس میں اس کی تحریر مواوروہ پیچائی جاتی ہو، اوروہ حربیوں کے بادشاہ کے تام ہو، جس میں وہ مسلمانوں کے پوشیدہ ہور کی اطلاع دے رہا ہوتو امام اس کوفید کردے گا اورائی تی بات کی وجہ سے اس کومار آئیس جائے گا، کیونکہ تحریر میں تو اس کا امکان ہے کہ وہ خود میا خشہ ہو، اورا یک تحریر دوسر کی تحریر کے مشابہ ہوا کرتی ہے (۱)، لبند اس کے لئے جائز منیں کہ وہ اس تتم کے اختال کی بناپر اس کوئی کردے مرسلمانوں کو مذاخر رکھتے ہوئے اسے قید کردے گا بیباں تک کر حقیقت حال واضح مداخر واضح نہ ہو سے تو اس کو چھوڑ دیا جائے گا، اور مسلمانوں کو وار الحرب واپس کردیا جائے گا اور اسے اس کے بعد مستامی کو وار الحرب واپس کردیا جائے گا اور اسے اس کے بعد وار الاسلام میں تھیر نے کی اجازت نہ ہوگی، کیونکہ اس کے بعد وار الاسلام میں تھیر نے کی اجازت نہ ہوگی، کیونکہ اس کے تعلق شک مستامی کو ور اس طرح کے اشخاص سے دار الاسلام کو پاک کرنا بیاتھ ہوگا ہے، اور اس طرح کے اشخاص سے دار الاسلام کو پاک کرنا بیتر ہوگا ہے، اور اس طرح کے اشخاص سے دار الاسلام کو پاک کرنا بیتر ہوگا ہے، اور اس طرح کے اشخاص سے دار الاسلام کو پاک کرنا بیتر ہوگا ہے، اور اس طرح کے اشخاص سے دار الاسلام کو پاک کرنا بیتر ہوگا (۲)۔

2- مالکید کا مذہب ہیہ ہے کہ مستامی جاسوں کونٹل کردیا جائے گا،
اور جھون نے ایسے مسلمان کے بارے میں جومسلمانوں کی خبر حربیوں
کولکھ بھیجتا ہو، کہا ہے کہ اسے قبل کردیا جائے گا، اور اس سے تو بنہیں
کرائی جائے گی اور جنگ کرنے والے کی طرح اس کی کوئی دیت اس
کے وارث کونییں دی جائے گی۔ اور بعض حضر ات کہتے ہیں کہ بطور سرا

یوفتہاء ور دعقد بین کا ندہب ہے، کیونکہ ان کے پاس تحریروں میں فرق کرنے
اور ہر تحریر کے خواص معلوم کرنے کے و سائل فہیں تھے، ای لئے انہوں نے
احتیاطے کا م لیا ور ہمارے زمانے میں سائنس نے یہ انگشاف کردیا ہے کہ
ہر مخص کی تحریر کی ایک خاصیت ہے جس کی وجہہے وہ دوسر کی تحریروں ہے متاز
ہوجاتی ہے لہمدا آج تحریر پر اعتماد کرنا اور اے ایک ایسا قرید قر اردینا ممکن
ہے جن کے بموجب فیصلہ کیاجا سکے۔ بھی تھم انگلیوں کے نشان وغیرہ کا بھی
ہے جن کے بموجب فیصلہ کیاجا سکے۔ بھی تھم انگلیوں کے نشان وغیرہ کا بھی
ہے جن نے تحریر کی تقلیمیت تا بت ہوتی ہے۔

⁽٢) المسير الكبير ٧٥ / ٢٠٣٠ طبع شركة الاعلانات.

اس کوکوڑ اما راجائے گا اور کمی قید میں رکھا جائے گا اور اس جگہ سے جا او طمن کر دیا جائے گا جہاں وہ تھا۔ ایک قول رہے ہے کہ اسے قبل کر دیا جائے گا الا بیک وہ تو بہرے، اور ایک قول رہی ہے کہ لانکمی کی وجہ سے اس کومعند ور سمجھا جائے گا۔ اور ایک قول رہی ہے کہ اگر وہ اس کا عادی ہوتو قبل کر دیا جائے گا، اور اگر بیلغزش ہوتو اسے ماراجائے گا اور عبرت ناک ہز اوی جائے گا، اور اگر بیلغزش ہوتو اسے ماراجائے گا اور عبرت ناک ہز اوی جائے گی (ا)۔

الله تعالى كفر مان: "يَا أَيُّهَا اللَّذِيْنَ آمَنُوا لاَ تَتَخِذُوا عَدُو اللهُ تَتَخِذُوا عَدُو اللهُ تَتَخِذُوا عَدُو اللهُ عَدْ اللهُ اللهُ

جو صلی اور بہتا ہو، ان کے دالات بتاتا ہووہ ال کی وجہ سے واقف کراتا ہواور دھمن کو ان کے حالات بتاتا ہووہ ال کی وجہ سے کافر نہ ہوگا، اگر اس کا بیمل دنیوی غرض سے ہواور اس سلسلے میں اس کا اعتقا دورست ہو، جیسا کہ حاطب نے کیا تھا کہ ان کا ارادہ اس کے ذریعی صرف ہما ہیت و ہمدردی حاصل کرنے کا تھا، انہوں نے مرتد ہوگاتو ہونے کا ارادہ ہر گرنہیں کیا تھا اور جب ہم نے بیکبا کہ وہ کافر نہ ہوگاتو ہونے کا ارادہ ہر گرنہیں کیا تھا اور جب ہم نے بیکبا کہ وہ کافر نہ ہوگاتو کیا اس کو حد کی وجہ سے قبل کیا جائے گایا نہیں؟ اس میں لوگوں کا اختیا فی وجہ سے قبل کیا جائے گایا نہیں؟ اس میں لوگوں کا اختیا فی جہ اس میں اجتہا دکرے گا، اور عبد الملک نے فر مایا کہ اگر اس کی عادت میں اجتہا دکرے گا، اور عبد الملک نے فر مایا کہ اگر اس کی عادت میں ایسی ہوتو اس گوئل کر دیا جائے گا، کیونکہ وہ جاسوں ہے۔ امام ما لک نے فر مایا کہ جاسوں گوئل کر دیا جائے گا اور یکی سے جے ، اس کے کہ وہ مسلمانوں کونقصان پہنچا نے والا اور ملک میں فساد پھیا! نے المام ما لک نے فر مایا کہ واسوں کونقصان پہنچا نے والا اور ملک میں فساد پھیا! نے والا سے ، اور این الماحشون نے اس سلسلے میں تکرار کی رائے غالبًا اس والا ہے ، اور این الماحشون نے اس سلسلے میں تکرار کی رائے غالبًا اس والا ہے ، اور این الماحشون نے اس سلسلے میں تکرار کی رائے غالبًا اس والا ہے ، اور این الماحشون نے اس سلسلے میں تکرار کی رائے غالبًا اس

لنے افتیار کی ہے کرحضرت حاطب پہلی باریکڑے گئے تھے۔

اگر جاسوس کافر ہوتو اوز اگافر ماتے ہیں کہ بیاس کی طرف سے نفت عہد ہوگا، اور اسم نے نفر مایا کہ حربی جاسوس کوٹل کر دیا جائے گا اور مسلمان جاسوس اور ذمی جاسوس کوسز اوی جائے گا۔ ہاں اگر وہ اسلام کے خلاف مدوکریں توقتل کردیئے جا کمیں گے۔ اور حضرت علی بن ابی طالب ہے روایت کی گئی ہے کہ نبی عظیمی کے۔ اور حضرت علی ایک جاسوس لایا گیا جس کا نام فر ات بن حیان تھا، آپ علیمی کوں کا ایک جاسوس لایا گیا جس کا نام فر ات بن حیان تھا، آپ علیمی کو ایک میں کوئی ہے کہ جس کو ایک میں کوئی کے باس کوئی کر کہا: اے انسار کی جاسوس لایا گیا جس کا کا حم خر مایا تو اس نے چیخ کر کہا: اے انسار کی جماعت ! کیا میں قبل کر دیا جاوں گا جبکہ میں کو ای دیتا ہوں کہ اللہ کے مالوں کوئی معبور نہیں اور بیشک محمد علیمی کو ای دیتا ہوں کہ اللہ کے مسول ہیں؟ تو نبی علیمی کوئی معبور نہیں اور بیشک محمد علیمی کوئی منہ میں منہ میں اس کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں سے وہ ہیں جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں سے وہ ہیں جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں سے وہ بیں جیان ہیں کا ایمان ہے دیاں ان می میں سے وہ بیں جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں سے فر ات ایمن حیان " ان کی میں ہیں کوئی سے ایمان ہے ایمان سے دوران ان میں میں سے فر ات ایمن حیان " ان می میں ہیں ہے وہ بیں جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں ہے وہ بین جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں ہے وہ بین جن کوئیں ان کے ایمان کے حوالہ کرتا ہوں، ان می میں ہے ک

۸- امام شافعی اور ایک جماعت کا فدیب بید ہے کہ مسلمان جاسوں کی تعزیر جائے گی، اسے تل کرنا جائز نہ ہوگا۔ اور اگر وہ ذواہیت ہو یعنی خدمت اسلام میں شاند ار ماضی رکھتا ہوتو اسے حضرت حاطب کی حدیث کی بناپر معاف کردیا جائے گا۔ اور ان حضرات کے نزدیک مسلما نوں کے پوشیدہ ہور کی اطلاع دینے کی وجہ سے ذمی کا عہدو پیان ختم نہ ہوگا، اگر چہ عہدمامہ امان میں ان کے اوپر بیشر طالگائی گئی ہو، سے قول کے مطابق شرط ہوں کے علاوہ دوہر نے قول کے مطابق شرط ہوں ہو، سے داور اس کے علاوہ دوہر نے قول کے مطابق شرط ہوں کے میں کیا ہوں کے مطابق شرط ہوں کے مطاب

⁽۱) تيمرة لوكام ۲۸ / ۱۷۸ مدار

⁽۲) سوره مختد براب

⁽۱) تفییر القرطبی ۵۳،۵۲/۱۸ ورفر ات این حیان ہے متعلق حضرت علی کی عدیدے کی روابیت ابو داؤد (سهر ۱۱ طبع عزت عبید دھاس) اور حاکم (۳) ۱۵ دائر قالمعارف احتمانیہ) نے کی ہے حاکم نے اس کو سیح قر اردیا ہے اور فائن کی موافقت کی ہے۔ اور فائن کی موافقت کی ہے۔

ہونے کی صورت میں امان ختم ہوجائے گا(۱)۔

حنابلہ کی رائے بیہ ہے کہ ذمیوں کا عہد و پیان چند چیز وں کی وجہ
 سے نتم ہوجائے گا ، ان بی بیس سے جاسوی کرنا یا کسی جاسوں کو پنا ہ
 دینا ہے ، کیونکہ اس بیس مسلمانوں کونقضان پہنچانا ہے (۲)۔

سابقہ تفصیلات سے معلوم ہوتا ہے کہ حربی جاسوں مباح الدم ہے، ہر حال میں تمام لوگوں کے فزد کیک اس کوتل کر دیا جائے گا، اور ذمی اور مستامین کے بارے میں امام ابو یوسف بعض مالکیہ اور حنابلہ نے فر مایا کہ اس کوتل کر دیا جائے گا۔

اور شافعیہ کے چند آوال ہیں، ان میں سے اسے یہ ہے کہ مسلمانوں کے پوشیدہ ہور کی اطلاع دینے کی وجہ سے ذمی کا عہد شم شہیں ہوگا، کیونکہ یہ متصد عقد میں کخل نہیں ہے اور مسلمان جاسوں کی تعزیر کی جائے گی اور امام او پوسف، امام محمد اور بعض مالکیہ کے فرد کیا اے تل نہیں کیا جائے گا اور شافعیہ کی مشہورر وابیت اور حنابلہ کا خیال بہے کہ اس کونل کر دیا جائے گا۔

كافرول كےخلاف جاسوس كرنا:

* ا - دوران جنگ کافرول کی تعداد، ان کے اسباب اور ان کے جنسیار وغیرہ کے تعلق جاسوی کرنامشر وئ ہے۔ اور اس کی دلیل یہ ہے کہ رسول اللہ علیائی نے غز و بخندق کے موقع پر ایک رات دیر تک نماز او افر مائی، پھرلوگول کی طرف متو جہ ہوکرفر مایا: "من رجل یقوم فینظو لنا ما فعل القوم - پشتوط له النبی آن یوجع - فینظو لنا ما فعل القوم - پشتوط له النبی آن یوجع - ادر جما داللہ الجنة "(کوئی شخص ہے جو اٹھے اور جما رے لئے دیکھے

ك لوكوں (دشمنوں) كا كيا حال ہے؟ نبي كى اس كے لئے بيشرط ہے

ک وہ لوٹ آئے تو اللہ تعالی اس کو جنت میں داخل کرے گا) ، راوی

عدیث حضرت مذیفه فرماتے ہیں کہ کوئی مخص نہیں اٹھا، پھر آپ نے

نماز یراهی یباں تک کہ آپ ملکھ نے تین مرتبہ بیفر مایا تو سخت

خوف ہنخت سر دی اور شدت بھوک کی وجہ ہے کوئی نہیں اٹھا، جب کوئی

محض نہیں اٹھا تو آپ میلائی نے جھے بالیا یعنی رسول مللہ علیہ ہے

نے حضرت حذیفہ کو بلایا) جب آپ علی نے جھے بلایا تو اٹھے بغیر

كُونَى حِارِه ندر باه يُحرر سول الله عَلَيْنَ فِي الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ

فادخل في القوم فانظر ماذا يفعلون ولا تُحُدِثَنَّ شيئا حتى

تأتينا" (١) (اے حذیفہ! جاؤ اورلوگوں میں گھس جاؤ اور دیکھو کہ وہ

الوگ کیا کر رہے ہیں اور کوئی نئ حرکت نہ کرنا یہاں تک کہتم ہمارے

یاس آجاؤ) وہ فرماتے ہیں کہ میں گیا اور لوکوں کے درمیان تھس گیا،

اور ہوا اور اللہ كالشكر ان كے ساتھ جو كچھكر رباتھا ہر اكر رباتھا، جس

ے ندان کی قیام گاہ برقر اررہ کی، ندی ان کی آگ باقی ری اور ند

کوئی خیمہ، تو ابوسفیان نے کھڑ ہے ہوکر کہا: اسے تریش کی جماعت!تم

میں کام مخص این جم نشیں کود مکھ لے معذ یففر ماتے ہیں کہ میں نے

ال محض كا باتھ پكڑليا جوميرے پہلوميں تھا، پھر ميں نے كہا كەتو كون

ہے؟ تو اس نے كباك ميں فلال بن فلال ہوں ، پھر ابوسفيان نے كبا:

ائے تریش کے لوگوا خدا کی تشم اب تمہارے لئے تھبرنے کی کوئی

گنجائش باقی نہ رہی، جانور بلاک ہوگئے، ہوتر یظہ نے ہم سے

بدعبدی کی اوران کے تعلق جمیں ناپند مدہ بات پیچی (۲)۔ بیدور ان

جنگ کفار کے خلاف جاسوی کرنے کے جواز کی دلیمل ہے۔

(۱) نورو و خدق والی عدیث کوابن احماق نے اپنی سرت میں نقل کیا ہے وراس کی
استاد میں انقطاع ہے (البدایہ و النہایہ لابن کثیر سہر ۱۱۳ ساطیع
دار المحادہ ک

⁽۲) تفییر این کثیر ۵ر ۳ ۳،۳۳۱ طبع دارالا مالس ب

⁽۱) عمدة القاری ۱۲۵۲ مطبع لمعیر ب شرح المنبح بحامیة البحیر ی ۱۲۸۱، اقلیو لی سهر ۲۲۲، اشرقاوی علی اتخریر ۱۲۲۳ س

⁽۲) شرح نتتی الا دادات ۲ / ۱۳۸۸ ۱۳۹۰ سال

حاكم كارعايا كےخلاف جاسوى كرنا:

اا - ما قبل میں گزر چکا ہے کہ سلمانوں کے خلاف جاسوی کرنا ورحقیقت حرام ہے، اس لئے کہ اللہ تعالیٰ کا ارتباد ہے: "یَا اَیُّهَا الَّذِیْنَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا کَیْشِوا مَّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعُضَ الظَّنِّ إِنَّهُمْ الظَّنِّ اِنْجَمَّ مَانُول ہے: چوء کی اور اور ایس ہے گمانوں ہے بچوء کیونکہ بعض گمان گنا ہ ہوتے ہیں اور اور میں مت گھرہو)۔

اورحا کم وقت کے شی تو یکم اور بھی بخت ہوجا تا ہے، کیونکہ مسلمانوں کی پوشیدہ باتوں کی تختیش کرنے سے حکام کو رو کئے کے سلملہ میں خاص نصوص موجود ہیں، ان جی میں سے ایک وہ روایت ہے جو حضرت معاویہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ علیج نے ان سے فر مایا: "اِنک اِن اتبعت عور ات الناس افسلمتهم اُو کلات فر مایا: "اِنک اِن اتبعت عور ات الناس افسلمتهم اُو کلات اُن تفسلهم" (۲) (اگر تو مسلمانوں کی پوشیدہ باتوں کی تفیش کر رے گا تو یقین ہے کہ تو اُنیں بگاڑ دے گا یا بگاڑ کے قریب کر دے گا ، حضرت ابوللدرواء نے فر مایا کہ بیالی بات ہے جس کو حضرت معاویہ نے رسول اللہ علیج ہے سا ہے، اللہ تعالی ان کوائل حضرت معاویہ نے دسول اللہ علیج ہے سا ہے، اللہ تعالی ان کوائل سے کہ نبی علیج نے دسول اللہ علیج ہے صدیث مرنوع نقل کی گئ ہے کہ نبی علیج نے در مایا: "اِن الأمیو اِذا ابتعنی الویبة فی ہے کہ نبی علیج نے در مایا: "اِن الأمیو اِذا ابتعنی الویبة فی الناس افسلاهم" (۳) (امام جب لوگوں میں شکوک وشبہات تایا شکر کے گاتو وہ آئیس بگاڑ دے گا)۔

- (۱) سورهٔ فجرات ر ۱۳ ا
- (۲) حدیث: "إلک إن البعث عود ات العامی" کی روایت ابوداؤ د
 (۵) حدیث: "بالک إن البعث عود اس کی سند شیخ ہے (عون الس کی سند شیخ ہے (عون المحبود (۳۳ ۳۳ ۳۳ مطبع دار الکتاب العربی)۔
- (۳) حدیث: "إن الأمبر إذا ابنعنی الویدة فی الداس..... "كی روایت ابو داؤد (۱۵ م ۲۰۰ طبع عزت عبید رماس) نے حضرت ابوا مامہ ہے كی ہے اور نووى نے اس كو سبح قر اردیا ہے جیہا كہ فیض القدیر (۳۳ ۳۳ سطیع الكتبة التجاریہ) میں ہے۔

مر حاکم کے لئے رعایا کے خلاف جاسوی کرنا ال وقت جائز ہوجائے گا جب جاسوی نہ کرنے کی صورت میں کوئی ایسی حرمت پال ہوری ہوجس کی تا ان اعمان ہو، مثالًا اسے کوئی تا مل اعمادُخص بینجر دے کہ ایک شخص دوسر ہے خص کوئل کرنے کے لئے تبائی میں لئے گیا ہے یا ایک مردا یک عورت کے ساتھ زنا کرنے کے لئے تبائی میں نے گیا ہے با ایک مردا یک عورت کے ساتھ زنا کرنے کے لئے اس کو تبائی میں لئے گیا ہے، تو اس وقت اس کے لئے جاسوی کرنا اور شخین تبائی میں اندیشہ سے کہ عارم کی پردہ دری اور ممنوعات کا ارتکاب لازم نہ آئے جس کی تا افی ممکن نہ ہو۔ اور ای طرح اگر رضا کا رانہ کام کرنے والوں کو یہ علوم ہوجائے تو ان کے لئے بھی رضا کا رانہ کام کرنے والوں کو یہ علوم ہوجائے تو ان کے لئے بھی شخین قشیش کرنا جائز ہے۔

اور جوخرشک کے اعتبار ہے اس سے کمتر ہوال کے خلاف
تجسس کرنا اورال کے پوشید درازوں کا افشاء کرنا جائز نہیں ہے۔ اور
یوانغیقل کیا گیا ہے کہ حضرت عمر آیک ایس جماعت کے پال گئے جو
باہم شراب پی رہے تھے اور شراب فا نوں میں آگ سلگار ہے تھے، تو
حضرت عمر نے نر مایا کہ میں نے تم کوشر اب نوش ہے منع کیا تھا مرتم
لوگوں نے مقابلہ آرائی کی، اور شراب فانوں میں آگ سلگانے ہے
میں نے تم کومنع کیا تھا مرتم لوگوں نے آگ سلگائی، تو ان لوگوں نے
کبا: اے امیر الموسین! اللہ تعالی نے جاسوی کرنے سے منع فر مایا ہے
اور آپ بلا اجازت واضل ہوئے تو آپ نے فر مایا: ید دونوں ان
دونوں کے مقابلہ میں ہوگئیں اور وہ لوٹ گئے اور ان لوگوں ہے کوئی

اور امام احمد سے اس سلسلے میں روابیت مختلف ہے کہ ہر ائی کا تلم ہونے کے با وجود اس کو چھیانا ہر اہے بانہیں ، تو ابن منصور اور عبد اللہ

نے مثلاً ستار اور نشد آور اشیاء وغیرہ کے بارے میں روایت کی ہے اور کہا ہے کہ اگر مید پوشیدہ ہوں تو ان کونہ توڑ اجائے اور ان سے میہ بھی نقل کیا گیا ہے کہ ان کوتوڑ دیا جائے۔

اگر وہ کسی ایسے گھر سے گانے بجانے کی منکر آ وازیں سے جس کے لوگ اپنی آوازیں ظاہر کررہے ہوں تو گھر کے باہر بی سے اس پر کنیر کرے گا اور اچا نک گھر میں واخل نہیں ہوگا۔ اور اس کے علاوہ دوسری پوشیدہ جیزوں کی تحقیق و تنتیش اس کے لئے ضروری نہیں ہے۔ اور مہنا الا نباری نے امام احمد سے قتل کیا ہے کہ انہوں نے اپنے پڑوی میں ڈھول کی آ وازین تو اپنی مجلس سے اٹھ کر ان کے پاس گئے ، ان کو بلا بھیجا اور ان کو منع فرمایا۔

اور محد بن حرب کی روایت بیل ال شخص کے تعلق جو اپ کسی پڑوی کے گھر بیل بری بات ہے، بیہ ہے کہ انہوں نے فر مایا کہ ال کو منع کرے، اگر وہ فیما نے تو ال کے پاس دیگر پڑوسیوں کو جمع کر کے اس کو ڈرائے اور حصاص نے اللہ تعالی کے ارشاو: "وُلاً تَنجَسَّسُوُّ " کے ذیل بیل فر مایا کہ اللہ تعالی ایسے مسلمان سے برنطنی ہے منع فر مایا ہے جو ظاہر بیل عا دل ہواور اس کے احوال پر پر وہ ہو، پھر فر مایا کہ اللہ تعالی نے جاسوی ہے منع فر مایا ہے بلکہ گلہ گلہ گلہ گلہ گاروں کی پر دہ پو پھر روایت کی ہے کہ حضرت عبداللہ بن ہے اس پر اصر ارفاہر نہ ہو، پھر روایت کی ہے کہ حضرت عبداللہ بن ہے وہ حضرت عبداللہ بن ہے وہ حضرت عبداللہ بن ہے وہ حضرت عبداللہ بن ہے تو حضرت عبداللہ بن ہے وہ حضرت عبداللہ بن ہے تو حضرت عبداللہ نے ہما کی واڑھی ہے شر اب نیکنی ہے تو حضرت عبداللہ نے فر مایا کہ ہمیں جاسوی ہے منع کیا گیا ہے ، ہاں اگر کوئی چیز ہمارے سامنے ہوگی تو ہم اس پر گرفت ہی سامنے ہوگی تو ہم اس پر گرفت ہی سامنے ہوگی تو ہم اس پر گرفت کریں گے (۱)۔

محتب كاتبحس:

17 - محتب وہ محص ہے جو ہماائی کا تھم دے جب ہماائی متروک ہوجائی کا حکم دے جب ہماائی متروک ہوجائی کا حکم دے جب ہماائی متروک ہوجائے اور بُرائی ہے۔ اللہ تعالی نے نز مایا: "وَلْمَتُكُنُ مُنْكُمْ أُمَّةٌ بَلْدُعُونَ إِلَى الْمُحْمُووُنَ مَنْ الْمُنْكُمْ "(ا) (اور ضرور ہے کہ تم میں ایک ایس جماعت رہے جو نیکی کی طرف بالیا کرے اور ہماائی کا تھم دیا کرے اور ہماائی کا تھم دیا کرے اور ہماائی کا تھم طرف ہیا کرے اور ہماائی کا تھم طرف ہیا کہ سے جو تھی کی طرف ہیا گا کہ دیا کہ جائی ہم مسلمانوں کی طرف ہے ہے تا ہم مسلمانوں کی طرف ہے ہوئی کی وجہ سے ای پرمقررہے، طرف سے تی جو دوروں پر بینی والایت کی وجہ سے ای پرمقررہے، کی دیا ہے۔

اور محتسب کے لئے ان ممنوعات کی جاسوی جائز نہیں ہے جو طاہر نہ ہوں، نہ ٹی اس کے لئے اس فرض سے کس کی پر دہ دری جائز ہے کہ اس کو چیپ کر ان بُر انیوں کے کرنے سے بازر کھ سکے، کیونکہ رسول اللہ عنہا، فیمن آلئم فلیست ہو بستو الله عنہا، فیمن آلئم فلیست ہو بستو الله "(۲) (اس برائی سے بچو جس سے اللہ تعالی نے منع فر مایا ہے، تو جوکوئی اس کا مرتکب ہوہ اسے جائے کہ اللہ کے بردہ سے ایٹی بردہ ہو تی کر دہ سے ایٹ کے دائلہ کے بردہ سے ایٹی بردہ ہوتی کرے ا

اً رُعلامات وآثا رُکے ذریعیہ گمان غالب ہو کہ پچھلوگ حیب کر برائی کررہے ہیں تو اس کی دونشمیس ہیں:

ایک بیک بیچیناکسی ایسی حرمت کی پامالی کے سلسلے میں ہوجس کی تا افی ماممکن ہو، مثلاً کوئی تا مل اعتاد شخص اسے بینجر دے کہ ایک شخص ایک عورت کے ساتھ زنا کرنے کے لئے اس کو تنہائی میں لے

⁽۱) الاحكام اسلطانيه لا لي بطلي ۲۸۱،۳۷۹، الماور دي ۳۵،۳۵۸، احكام القرآن للجصاص سر ۷۰۷، القرطبي ۱۲ ار ۳۳۱

⁽۱) سورهٔ آل عمران ۱۹۳۸

 ⁽۲) حدیث: "اجندواها هاه القاذورة الني لهي الله علها....." كی روایت حاکم (۳/ ۲۳۳ طبع دائرة المعارف العثمانیه) نے كی ہے اور اس كوستح قر اردیا ہے اور دلای نے ان كی ہو فقت كی ہے۔

گیاہے، یا وہ ایک آ دمی کول کرنے کے لئے تنہائی میں لے گیا ہے، تو ایسی حالت میں اس کے لئے جاسوی کرنا اور شخفیق و تفتیش کرنا جائز ہے تا کہ نا تابل تا انی عمل سے بچاجا سکے یعنی حرام کا ارتکاب اور ممنوعات کا افتیا رکرنا۔

اور دوسری شم بیہ کے وہ اس دائر ہ سے خارج اور اس درجہ سے کمتر ہو، ایسی صورت بیس اس کے خلاف جاسوی کرنا اور اس کے پوشیدہ امور کو خلاف جاسوی کرنا وار اس کے پوشیدہ امور کو خلام کرنا جائز نبیس ہے (۱) جیسا کہ ماقبل میں گزر چکا (۲)۔

گھروں کی جاسوی کرنے کی سزا:

سا - امام سلم نے حضرت او ہریرہ سے اور آنہوں نے نبی علیج سے روایت کی ہے کہ آپ علیج نے نبی علیج سے روایت کی ہے کہ آپ علیج نے فر مایا: "من اطلع فی بیت قوم من غیر افزیهم حل لهم أن یفقئوا عینه" (") (جو شخص لوکوں کے گھریس ان کی اجازت کے بغیر جھا کے تو ان کے لئے جائز ہے کہ اس کی آنکھ پھوڑ دیں)۔

اس عدیث کی تا ویل میں علماء کا اختلاف ہے، بعض نے کہا ہے کہ بیائ ظاہر پرمحمول ہے، لہذا جن کوجھا نکا گیا ہے ان کے لئے

الاحقام السطاني للماوردي في احقام الحسيد ١٣٠٠ اوراس كے بعد كے صفحات _

(۲) آج کے دور میں مختلف مما لک میں تثریبندوں کے خلاف نیز ان لوگوں کے خلاف جن کے ارسے میں تثریبندوں کے خلاف نیز ان لوگوں کے خلاف جن کے ارسے میں شر، آبروریز کی، مال چیپنے وروا جب اعمل توانین کی خلاف ورز کی کا گمان کیا جاتا ہے وہ تعتیش جو واضح قر ائن کی بنیا دیر ان لوگوں کے بارے میں کی جاتی ہے جن کے تعلق ممنوع اشیاء مثلاً شراب اور بعتگ کی تجارت، نیز سعا ملات میں دھوکہ دی کا گمان گرز رہا ہے ای طرح بحرموں اور تخریب کا روں کا تعاقب تو اس میں فی الجملہ احکام اسلامے نکلنا کر زما جا کہ ریفساد کی نرخ کئی، حقوق ضا کی کے تحفظ ور امن ومکون کے لاز مہیں آتا بلکہ بیضاد کی نرخ کئی، حقوق ضا کی کے تحفظ ور امن ومکون کے

قیام کے لئے ضروری ہے۔ (۳) حدیث: "من اطلع فی بیت قوم....." کی روایت مسلم (۱۹۹۸ اطبع الحلی)نے کی ہے۔

جائز ہے کہ جھا تکنے کی حالت میں جھا تکنے والے کی آنکھ پھوڑ دیں اور
ان برکوئی حنان نہیں ہے۔ بیٹا فعیہ اور حنابلہ کا ندبب ہے۔ مالکیہ اور
حننے کہتے ہیں کہ بیا ہے ظاہر برمحول نہیں ہے، لہذا اگر کوئی آنکھ
پھوڑ دینے آب برحان لا زم ہوگا، اور حدیث منسوخ ہے، بیچکم
اللہ تعالی کے اس فر مان کے نازل ہونے سے قبل تھا: "وَ إِنْ عَاقَبُتُمُ فِعَاقِبُولَ بِحِمْلُ الله تعالی کے اس فر مان کے نازل ہونے سے قبل تھا: "وَ إِنْ عَاقَبُتُمُ فَعَاقِبُولَ بِحِمْلُ الله ليما عَوْقِ فَائِمَتُهُ بِهِ" (۱) (اور اگرتم لوگ بدلہ لیما چاہوتو انہیں اتنای دکھ پہنچاؤ جنتنا دکھ انہوں نے تہمیں پہنچایا ہے) اور بیکھی اختال ہے کہ بیصدیث بطور وعید آئی ہونہ کہ بطور وجوب، اور صدیث اختال ہے کہ بیصدیث بطور وعید آئی ہونہ کہ بطور وجوب، اور صدیث جب آن کے خالف ہوتو اس برعمل جائز نہیں ہوگا۔

نبی علی الله الله ایک بات فرمات اور مرادد وسری جیز لیت سخے، جیسا کہ حدیث میں آیا ہے کہ حضرت عباس بن مرد اللہ نے آپ علی ایک علی آیا ہے کہ حضرت عباس بن مرد اللہ نے آپ علی ایک علی اور آپ علی ایک ہے فران کی تعریف کی تو آپ علی ایک ہے فران کا اس کی زبان کا اللہ واللہ کا مقصود آپ علی کی مرادی کی کرا ہے کچھ دے دو، آپ علی کی کا مقصود فی الواقع زبان کا فران میں تھا۔

صدیث میں اس کا بھی اختال ہے کہ آپ علی نے آنکھ پھوڑنے کا ذکر کیا ہواور مرادیہوک اس کے سلسلے میں کوئی ایس کاروائی کی جائے کہ وہ اس کے بعد کسی دوسرے کے گھر میں نددیکھے۔

'' تبصرة الحكام' ميں ہے: اگر کسی نے روشن دان يا دروازہ سے جھا نكا اور گھر والے نے اس كى آئكھ پھوڑ دى تو وہ ضامن ہوگا، كيونكه جھا نكا اور گھر والے نے اس كى آئكھ پھوڑ دى تو وہ ضامن ہوگا، كيونكه وہ اس سے كم درجہ كى كاروائى كے ذر ميہ اس كى تو نيخ كرنے اور اس كو دفع كرنے ہے اور اس كے دفع كرنے ہے اور اگر اس نے اس كى تو نيخ كا ارادہ

⁽۱) سور کچل ۱۳۶۷ ـ

 ⁽۲) حدیث: "قال لبلال: قم فاقطع لساله" کی روایت این احواق نے اپنی کے روایت این احواق نے اپنی کے برت میں کی ہے جیرا کر سرت این بشام (۲/ ۹۳ میں میں ہے۔ میں سے جیرا کر سرت این بشام (۲/ ۹۳ میں ہے۔ میں ہے۔

تجس ۱۱۳ تجثؤ تجمل تجميل

کیالیکن اس کی آنکھ زدمیں آگئی حالانکہ اس کامقصد آنکھ پھوڑ مانہیں تھا تو اس پرضان ہے یانہیں اس میں اختلاف ہے۔

حفیہ کا خیال ہیہ ہے کہ اگر جھا نکنے والے کی آنکھ پھوڑ ہے بغیر اس کو دفع کرناممکن نہیں تھا اور اس نے اس کی آنکھ پھوڑ دی تو کوئی صال نہیں ہے، اور اگر آنکھ پھوڑ ہے بغیر دفع کرناممکن تھا پھر بھی اس نے آنکھ پھوڑ دی تو اس پر صال لا زم ہوگا۔

اورا گرکوئی شخص صرف جاسوی کرے اور لوٹ جائے توصاحب خانہ کے لئے اس کی آنکھ پھوڑنا بالا تفاق جائز نہیں ہے۔ تفصیل کے لئے ویکھئے: " وقع اصاکل" کی اصطلاح (ا)۔

اورجاسوی کرنے والے کی سز انعزیر ہے، کیونکہ اس کے تعلق کوئی حد مقرر نہیں ہے، اور نعز بر مختلف ہوتی ہے جس کو متعین کرنے کا افتیا رامام کوہے۔

د يمين: اصطلاح "تعزير"(٢) ي

تجشو

و کیھئے:"طعام"۔

تتجمل

د یکھئے:"نزین"۔



تتجميل

د کھئے:" تغیر"۔

- (۱) تغییر القرطبی ۲۱۳، ۲۱۳، ۳۱۳ طبع دارالکتب، تیمرة ادکام ۲ سه ۳۰، امغنی ۸ مر ۴۰، امغنی ۸ مر ۴۰، اوراس کے بعد، ابن هابدن ۲۵ س
- (۲) این هاید بن سر۱۳۵، الزیکنی سر۲۰۸، ۲۰۰ تیمرة لوکنام برحاشید فتح العلی المیا لک ۲ ر ۲۰۸، ۲۰۰۸، تحفته الکتاع ۱۸۵، ۱۸۱، مغنی الکتاع سر ۱۹۱، ۱۹۲، سه ۱، حاصیته القلیو بی سر ۲۰۵، ۲۰۹، المغنی ۲۰۸۵، ۸۲۵، سر ۱۷۰۳، الاحکام السلطانید لالی پیشلی سر ۲۹۵، ۲۹۵

تجہیز سے زیا وہ خاص ہے، کیونکہ تجہیز طعام اور اس کے علاوہ دوسری چیز وں کے ذر معیہ بھی ہوتا ہے اور تر وید صرف تو شہ تیار کرنے اور دینے سے ہوتا ہے (1)۔

تجهيز <u>سے متعلق احکام:</u>

فقہاء دلہن کو سامان جہیز دینے ، مجاہدین کے لئے اسباب جہاد تیار کرنے اور میت کی بخہیز دینے ، مجاہد ین کے لئے اسباب جہاد تیار کرنے ہیں کہ وہ کس پر واجب ہے؟ اس کا تعلم اور اس کی مقدار کیا ہے؟ اس کی تفصیل حسب ذیل ہے:

دلبن کے لئے سامان جہیز تیارکرنا:

سے بڑا فعیہ کا فدہب ہیں کہ سامان جیز کے لئے عورت کو مجبور نہیں کیا جاسکتا (۲) اور حنا بلہ کی نضریحات سے بھی یہی سمجھ بیں آتا ہے،

البند اعورت اور ال کے علاوہ کسی کو اس کے لئے مجبور نہیں کیا جائے گا۔
چنا نچ '' منتہی لا راوات'' بیس آیا ہے: ایک بیوی محض عقد کی جنار بھمل مہر کی مالک ہوجاتی ہے اور اس کے لئے سیجھ معین اضافی چیز یں بھی ہیں، مثلاً مکان اور اس بیس تصرف کاحق (۳)۔

جہاں تک حفیہ کا تعلق ہے تو حسکی نے زبدی سے '' اتفنیہ'' میں نقل کیا ہے کہ اگر کوئی عورت بغیر کسی مناسب سامان جہیز کے شوہر کے پاس بھیج دی جائے ، نوشوہر کواس کے باپ سے نقد رو پئے کے مطالبہ کا حق حاصل ہوگا۔ اور '' اپھر''میں'' آمنٹی '' سے نقل کرتے ہوئے یہ اضافہ بھی کیا ہے کہ اگر وہ ایک طویل مدت تک ضاموش رہا

/******

تعریف:

ا - جيميز كالغوى عنى بي: ضرورت كاسباب مبياكرنا - كباجاتا بي:

"جهزت المسافر" جبتم كس كے لئے ال كسفر كاسانان تيار كرنے پر كرو۔ اور ال كا اطلاق ولين يا ميت يا مجابدين كاسانان تياركرنے پر بيمى بوتا ہے اور كبا جاتا ہے: "جهزت على المجويح" تشديد كے ساتھ جب تو زخى كا كام تمام كروے، اور اسے جلد قبل كروے اور يا يطور مبالغہ ہے۔ اى كے مثل أجهزت ہے اور ال كافعل باب نفع سے ہور ميافعہ ہے۔ اى كوزن بر بھى آتا ہے (ا)۔

فقنہاء کے بیباں اس کا استعال اس کے لغوی معنی سے الگ نہیں ہے۔

متعلقه الفاظ:

الف-إعداد (تياركرنا):

۲- اعداد کامعنی تیار کرنا اور حاضر کرنا ہے، بنجینر اعداد کی بانسبت
 عام ہے، کیونکہ بنجینر اعداد اور اس کے علاوہ سب کوشامل ہے۔

ب-تزويد (تو شدرينا):

سا - تزوید: زوّدته کامصدر ہے، یعنی میں نے اس کوتوشہ دیا۔ یہ

⁽۱) المصباح، الصحاح، الجم الوسيط-

⁽۱) المصياح

⁽r) الجحلّ سر ۱۹۳۸ م

⁽m) عشمي لإ رادات ٢٠٤/٣٠ ثمَّا لَعَ كرده مكتبة دارالعروب.

تو پھر اسے مقدمہ دائر کرنے کا حق نہ ہوگا۔ کیکن " انبر" میں " البو ازید" کے حوالہ سے ہے کہ سیجے یہ ہے کہ وہ باپ سے کسی چیز کا مطالبہ بیس کرسکتا، کیونکہ عقد نکاح میں مال مقصود نبیس ہوتا ہے (ا)۔

ال کا مطلب میہ کہ باپ عی دلبن کے لئے سامان جہیز تیار
کرے گا بشرطیکہ لڑک کا مہر ای نے وصول کیا ہو، اور اگر لڑک نے خود
عی اپنام پر وصول کیا ہے تو ان لوگوں کے قول کے مطابق جو وجوب جہیز
کے قائل ہیں ای سے سامان جہیز کا مطالبہ کیا جائے گا، اور میرف وعادت کے مطابق ہوگا (۲)۔

اور مالکیہ نے فر مایا ک اگر عورت نے شوہر کے پاس شب زفاف میں جانے سے قبل علی اپنے مہر مجل پر قبضہ کرلیا، تو ال پر لا زم ہے کہ شہر یا دیبات کے عرف کے مطابق سامان جہیز تیار کرے، حتی ک اگر عرف مکان فرید نے کا ہوتو یہ ال پر لازم ہوگا، مگر ال سے زیادہ کا انتظام کرنا ال پر لا زم نہیں ہے۔ اور مہر مجل علی کی طرح وہ نقد مہر مؤجل می کی طرح وہ نقد مہر مؤجل ہی کی طرح وہ نقد مہر مؤجل ہی کی طرح اور اگر میں اوا کردیا جائے، اور اگر شب زفاف سے قبل عی اوا کردیا جائے، اور اگر شب زفاف کے بعد مہر پر قبضہ کیا گیا ہے تو ال پر سامان جہیز تیار کرنا لازم نہیں، خواہ مہر نقد ہویا اوصار ہولیکن ال کی اوا کی کی اوقت آ پہنچا ہو، مرشر طایا عرف کی بناپر یعنی شرط لاگا دینے یا عرف کے پائے جانے کی وجہ سے ورت پر جہیز دینالا زم ہوگا (۳)۔

مجابدین کے لئے اسباب تیار کرنا:

۵-مسلمانوں رپضر وری ہے کہ وہ جہاد فی سبیل اللہ کور ک نہ کریں، اور اس غرض سے وہ مجاہدین کے لئے ضر وری سامان جنگ، اسباب جہاد اور توشہ تیار کریں، اس لئے کہ اللہ تعالی کا ارشا دہے: "وَ أَنْفِقُواْ

- (۱) شرح الدر ۲۲۷۳ س
- (۲) این مایدین ش ای مقام پر ای کی طرف ایک اثاره ہے۔
 - (m) حافية الدروقي ٣٢٣/٣_

مجاہدین کے لئے سباب جہادتیار کرنا تمام مسلمانوں پرخواہ وہ حاکم ہوں یا محکوم فرض ہے، اور سیریٹ ٹو اب کا کام ہے، نبی علی کا ارشا و ہے:'' مَن جَهِّزُ غازیا فی سبیل الله فقد غزا" (۳) (جس نے کسی مجاہد نی مبیل ملاکے لئے اسباب جہادتیار کئے کویا اس نے جہادکیا)۔

اور مجاہدین کے لئے اسباب جہاد تیار کرنے کا ایک ذر معید '' فی سبیل ملا'' کی صنف سے زکاۃ ہے۔

مالکیہ مثا فعیہ اور حنا بلد کی رائے رہے کہ مجاہدین کو مطلقاً مال زکا قادیا جائے گا مخو او وہ مال داری کیوں ند ہوں۔

کیکن مالکیہ نے بیر قیدلگائی ہے کہ جنہیں بیمال دیا جار ہا ہووہ

- (۱) سورۇيقرەر ۱۹۵
- (٢) سورة انفالي ١٠٠ـ

ان لوکوں میں سے ہوں جن پر جہاد واجب ہے، اور ثا فعیہ نے یہ قیدلگائی ہے کہ جنہیں بیمال زکاۃ دیا جار ہاہووہ ان لوکوں میں سے نہ ہوں جن کانا م نوجی رجٹر میں درج ہے (۱)۔

اور حنفیہ کی رائے میہ ہے کہ مجاہد کو مال زکا قاس وقت دیا جائے گا جب وہ مجاہدین کی جماعت سے الگ تھلگ پڑا گیا ہو، اور میہ وہ لوگ ہیں جو اپنی مختاجی کی وجہ سے اسلامی اشکر کے ساتھ ملنے سے قاصر رہ گئے ہوں (۲)۔

ال سلسلے میں فقہاء کے اختااف کا سبب دراصل وہ اختااف ہے جومصارف زکا ق سے متعلق اللہ تعالی کے فرمان: ''فی سبیل اللہ ''(۳) (اور اللہ کی راہ میں) کی تفییر میں ان کے درمیان پایا جاتا ہے اور اس سلسلے میں تفصیل ہے جس کے لئے زکا ق کی اصطلاح کی طرف رجو شکیا جائے۔

ميت کی جنهيز:

۲ - میت کے لئے کفن و ذنن کے اسباب فر اہم کرنا ضروری ہے، کیونکہ نبی علی نے اس کا حکم فر مایا ہے، اور اس وجہ سے بھی کہ زندگی میں اس کی ستر پوشی واجب ہے، لہذا ریم نے کے بعد کفن کے ذریعیہ ای طرح واجب رہے گی۔

اور فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ میت کے لئے ان اسباب کی فر اہمی کر افرض کفاریہ ہے، چنانچ اگر چندلوگ اس کو انجام دے دیں تو سب کے ذمہ سے فرض ساقط ہوجائے گا، اور فر اہمی اسباب کے افراجات میت کے ترک سے پورے کئے جا کمیں گے، اگر اس نے افراجات میت کے ترک سے پورے کئے جا کمیں گے، اگر اس نے

- (۱) اورمو جورہ دوریس میوہ لوگ ہیں جن کا بیت المال ہے وظیفہ یعنی تخواہ تقریر ہو۔
- (۲) البدائع ۳ر۵ ۳، ابن هایدین ۳ر ۱۷، الفرطبی ۸ر۵ ۸، ۱۸۹، مثنی اکتتاج ایرالا، اُمغنی ۳ر ۱۷۰۰
 - (۳) سور کاتوبیر ۲۰ س

مال چیوڑ اہو، اوران افر اجائے کوال کے رض ، اس کی وصیت اورال کی وراشت پر مقدم رکھا جائے گا، سوائے رک کی ان اشیاء کے جن سے غیر کاحق متعلق ہو، مثلاً عین رئین اور بیج وغیر د، اوراگر اس کے پاس کوئی مال نہ ہوتو اس کی تجہیز اس شخص پر واجب ہوگی جس پر اس کا نفقہ اس کی زندگی میں واجب تھا، تو اگر ان میں سے کوئی بھی موجود نہ ہوتو اس کی تجہیز مسلمانوں کے بیت المال سے واجب ہوگی ، بشر طبکہ بیت المال موجود نہ ہو یا موجود تو ہوگئین وہاں کی تجہیز عام مسلمانوں پر فرض کفایہ میں گائی ہوگئی کا بیت المال موجود تو ہوگئین میں مسلمانوں پر فرض کفایہ وہاں سے لیما ممسلمانوں پر فرض کفایہ میگی ۔

اور دیوی رہر **بالا تفاق اپ** اس شوہر کی تجهیز واجب نہیں ہے جس کو چھوڑ کر وہ مراہے ⁽¹⁾۔

اور شوہر رہانی وفات یا فتہ بیوی کی تجہیز کے وجوب کے سلسلہ میں قد رے اختایاف ہے، جس پر تفصیلی بحث کے لئے اصطلاح ''جنائز'' کی طرف رجوٹ کیا جائے۔



⁽۱) البدائع الر ۳۰۹،۳۰۸، الشرح الكبير الرساس، ۱۳۱۳، المجموع ۵ / ۱۸۸، ۱۸۹، المغنی ۱۲ / ۵۲۱

تجهيل

تعریف:

ا - تہجھیل کا ایک بغوی معنی کسی کو جہالت کی طرف منسوب کرنا ہے، چنانچ کہا جاتا ہے: ''جھ لُٹ فلانا'' جب تم کسی کے بارے میں کہو کہ وہ جاہل ہے، جہل علم کی ضد ہے، اور جہل علم یعنی بردباری کی بھی ضد ہے، کہا جاتا ہے: ''جھل فلان علی فلان'' جب کوئی کسی کے پایں احد بن اور خلطی کرے (۱)۔

كباجاتا ہے: "جھل فلان جھلا و جھالة " اور جہالت بیہے كة لائلمى میں كوئی كام كرے۔

اصطااح میں جہیل ہیہ کہ وہ خص جس کے پاس امانت رکھی گئی ہووہ اپنی موت سے قبل اس ودیعت، یالقطہ یا بیتیم کے مال وغیرہ کا پھے بھی حال نہ بیان کر ہے جو اس کے قبضہ میں ہو، اور بیجا نتا ہوک بیر اس کے وارث کو معلوم نہیں ہے اور ای حال میں اس کی موت ہوجائے (۲)۔

اجمالي حكم:

۲۔ جہیل کبھی کبھی ود بعت کے سلسلے میں پیش آتی ہے، اور بیہ وہ مال

ہے جو کسی شخص کے پاس بغرض حفاظت رکھا گیا ہو (۱) ۔ بیدا یک امانت ہے ، اس کے بارے میں اللہ تعالی کافر مان ہے: " إِنَّ اللَّهُ يَأْهُو كُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الأَهَا فَاتِ إِلَى أَهْلِهَا" (۳) (الله تنهمیں تھم ویتا ہے کہ امانتیں ان کے اہل کوادا کرو)۔

کہا گیا ہے کہ بیآ بیت حضرت عثان بن طلحہ انجی الداری کے بارے میں ان کے اسلام قبول کرنے سے قبل نازل ہوئی ہے، فتح مکہ کے دن وہ کعبہ کے کلید ہر دار تھے، جب نبی علیہ مکھ میں واخل ہوئے تو انہوں نے کعبہ کا دروازہ بند کر دیا اور اس کی حالی دینے سے بدوعوی کرتے ہوئے انکار کیا کہ اگر ان کو یقین کے ساتھ معلوم ہوجا تا کہ وہ مللہ کےرسول ہیں تو وہ انہیں اس ہے منع نہ کرتے تو حضرے ملیؓ نے ان کا ہاتھ مروز کران سے جانی چھین کی اور دروازہ کھول کر کعبہ میں داخل ہو گئے۔جب باہر خطے تو حضرت عباس فے ان سے جانی ما تكى تاك ان كومقايد (يانى يلانے كاعمل) كے ساتھ ساتھ كعبدكى دربانی کاشرف بھی حاصل ہوجائے ،اس پر اللہ تعالی نے مٰدکور ہ آبیت ا زل فر مائی تورسول الله الله الله المسلطيني في حضرت علی كوشكم ديا كه حابي عثمان بن طلحہ کو واپس کردیں اور ان سے معذرت حابیں (حضرت علیؓ نے جانی واپس کردی اور ان سے معذرت جای) تو انہوں نے کہا ک تونے زیردئی کی، تکلیف پہنچائی اور پھر نرمی کرنے آئے ہوتو حضرت علیؓ نے فر مایا کہ اللہ تعالی نے تمہارے بارے میں قر آن نا زل نر مایا ہے اورانہیں مٰدکورہ آبیت پڑھ کر سنائی تو وہ مسلمان ہو گئے، پھر جبر بل علیہ الساام تشریف لاے اورفر مایا کہ جب تک سی گھر (کعبہ) رہے گا اس کی تنجی اور کلید ہر داری عثمان کی اولا دمیں رہےگی)(۳)۔

⁽۱) الصحاح، لسان العرب، الممصباح المعير مادهة "جهل" .

ر» المن ما بدين مركب المعلم والشاء والنظائر لا بن مجيم رض ٥٠١ طبع المطبعة. (٣) حاشيه ابن عابدين مهر ٩٥ م، الاشباه والنظائر لا بن مجيم رض ٥٠١ طبع المطبعة. المسينية المصريب

⁽۱) ابن عابدين مهر سه مه بحلة الاحكام العدليه دفعه ۱۳۵ مسخمه ۱۳۳ س

⁽۲) سورۇنيا پر ۱۵۸

 ⁽m) آنت"إِنَّ اللَّهُ يَأْمُو مُحْمُ أَنْ نُوَدُّوا الأَمَالَاتِ إِلَى أَهْلِهَا" كَسِيسِنزول

سو- نبی علی این کی اولا دکو قیا مت تک کعبہ کی کلید ہر داری کے لئے مقرر فر مادیا، چنانچ آپ علی این کے لئے مقرر فر مادیا، چنانچ آپ علی کے لئے مقرر فر مادیا، چنانچ آپ علی کا مقالم اسلام اسلام اسلام اسلام اسلام اسلام اسلام اسلام کے کوئی نہ چینے گا)۔ آبیت سے مرادتمام اشام کی امانتیں ہیں، لبذا جس شخص کے پاس کوئی امانت ہو، خواہ و دیعت ہویا غیر و دیعت اس پر واجب ہے کہ اس کی نفصیل بیان کردے تاکہ اس کو اچا نک اس حال میں موت نہ آجائے کہ وہ صاحب امانت کو متعین بھی نہ کر سکا ہو، اس طرح بیاس کے پاس ضائع ہوجائے اور وہ شخص اس کو مجبول رکھنے کا طرح بیاس کے پاس ضائع ہوجائے اور وہ شخص اس کو مجبول رکھنے کا فرمہ دار قر اربیائے۔

حضرت این عباس نے فر مایا کہ اللہ تعالی نے کسی تنگدست یا مال دارکواس کی اجازت نہیں دی ہے کہ وہ امانت کورو کے رکھے یعنی یہ کہ جب صاحب امانت اپنی امانت واپس ما ننگے تو وہ اس کوروک لے۔

آپ علیا ہے مروی ہے کہ آپ کے پاس بہت کی امانتیں متحییں ، جب آپ نے ہجرت کا اراد دفنر مایا تو اے ام ایمن کے پاس بہت کی امانتیں واپس محمود یا اور حضرت علی کوظم دیا کہ امانت والوں کو ان کی امانتیں واپس کردیں (۲) سینز آپ علیا ہے ہے مروی ہے کہ آپ علیا ہے اور کے اسلام المحدود یوا اور حضرت کی امانتیں واپس کردیں (۲) سینز آپ علیا ہے اور کی ایمان کی امانت کی امانتیں واپس کردیں (۲) سینز آپ علیا ہے اور کی ایمان کی امانت کی مند بیان کی ہے جیسا کہ المدد ایمان مردویہ نے اپنی تغییر میں اس کی سند بیان کی ہے جیسا کہ المدد المحدود (۲۲ م ۵ م ۵ م وار الفکر) میں ہے گرسند بہت ضعیف ہے۔

المحدود (۲۲ م ۵ م ۵ وار الفکر) میں ہے گرسند بہت ضعیف ہے۔

ان حدیث "خلوها خالدة دالدة لا ینزعها معکم إلا ظالم"کی روایت طبر الی (اام ۱۳۰ طبع وزارة الاوقاف العراقیه) نے اکبیر ش کی ہاور پیشی نے اس کو الجمع (۳۰ ۲۵۸ طبع القدی) ش ذکر کیا ہے اس ش عبر الله بن مؤل ہیں جن کو گفتہ قر اردیتے ہوئے ابن حمان نے فر ملا کہ پیل طبح کرتے ہیں ورایک روایت میں ابن محین نے آئیں تُقدر اردیا ہے اور ایک جماعت نے ان کو ضعیف قر اردیا ہے اور ایک جماعت نے ان کو ضعیف قر اردیا ہے اور ایک جماعت نے ان کو ضعیف قر اردیا ہے اور ایک جماعت نے ان کو ضعیف قر اردیا ہے۔

(۲) حدیث "أن الدی نافی کالت عدده و دانع....." کی روایت این معد نے اطبقات الکبری (۲۲/۳ طبع دارصا در) مل کی ہے۔

ارثا وفر مایا: "لیس علی المستودع ضمان مالم یُتَعَدُّ" (1) (جس شخص کے پاس امانت رکھی جائے اس پر کوئی صال نہیں ہے جب تک کہ وہ زیادتی نہ کرے)۔

الله تعالی نے امانت کے معاملہ کو انتہائی اہم تر اردیا ہے اور اس کی سخت تا کید فر مائی ہے، چنانچ اللہ تعالی کا ارشاد ہے: " إِنّا عَرَضْنا الأَمَائَةَ عَلَى السَّملُواتِ وَالأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنَّ الأَمَائَةَ عَلَى السَّملُواتِ وَالأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنَّ لَا مُمَائَةً عَلَى السَّملُواتِ وَالأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنَّ طَلُومًا الإِنْسَانُ إِنَّه كَانَ ظَلُومًا يَحْجَمِلُنَهَا وَ أَشْفَقُنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الإِنْسَانُ إِنَّه كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا اللهِ نُسَانُ الله كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا اللهِ نُسَانُ الله كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا الله عَلَى اور وہ اس جَهُولًا الله عَلَى اور وہ اس جَهُولًا الله عَلَى اور وہ اس جائے انہاں نے اپنے وَمِد لے لیاجِیْک و مِیْ اظالم ہے کے اور اسان سے انہاں نے اپنے وَمِد لے لیاجِیْک و مِیْ اظالم ہے کہا جائے الله اس کی اس مشقت ہے (۳)، اور جب و و یعت بڑا اجائل ہے)، یعنی اس کی اس مشقت ہے (۳)، اور جب و و یعت بطور امانت ہوتو بلاکت کی صورت میں مطابقاً اس کا کوئی عنمان واجب نہ ہوگئی اور والقصد امانت ہے اواقت رکھنا بھی ایک شم کی امانت رکھی گئی ہوا ور بالقصد امانت سے نا واقت رکھنا بھی ایک شم کی امانت رکھی گئی ہوا ور بالقصد امانت سے نا واقت رکھنا بھی ایک شم کی امانت رکھی گئی ہوا ور بالقصد امانت سے نا واقت رکھنا بھی ایک شم کی زیادتی ہے واقت رکھنا بھی ایک شم کی ایانت رکھی گئی ہوا ور بالقصد امانت سے نا واقت رکھنا بھی ایک شم کی رہے۔

'' البر ازید' میں ہے کہجیل کی بناپر وڈخض ضامن ہوگا جس کے پاس امانت رکھی گئی ہو، بشر طیکہ وارث ودیعت کی تنصیل نہ جانتا ہو۔

⁽۱) عدیث "لیس علی المسئودع ضمان ما لم یتعد..... کی روایت دارطنی نے مرفوعاً ان الفاظ میں کی ہے۔ "لیس علی المسئعیو غیو المغل ضمان ولا علی المسئودع غیو المغل ضمان" اس کی سند میں عمر و اورعیدہ ہیں اوروہ دونوں ضعیف ہیں اوردا دونوں کتے ہیں کرشریک سے یہدوایت غیر مرفوع سندے نقل کی گئی ہے (سنین الدارفنی ۱/۱۳ طبع دارالحاس، شخیص الحمیر سر مے ہیں۔

⁽۲) سورة التراس / ۲ کس

⁽m) - الرواجر عن اقتر اف الكبارُ مع الإ۲۶۲ طبع دارالمعرف .

⁽۳) - ابن عابدین ۳۸ سه سه المغنی لابن قدامه ۳۸۴ سه سه سه سوجه الریاض الحدید، جوابر لاکلیل ۳۷ ۴ ساه آم پر ب ۱۲۱ س

اوراگر وارث ودیعت کو جانتا ہواور جس کے پاس امانت رکھی گئی ہوا ہے بھی معلوم ہوکہ وارث ال سے باخبر ہے اور وہ خود بیان کرنے ہے قبل مرجائے تو اللہ پر ضان واجب نہ ہوگا۔ اگر وارث نے کہا کہ جھے معلوم تھا اور امانت کا مطالبہ کرنے والا وارث کے تلم کا انکار کرتا ہے تا کہ جمیل کی وجہ سے امانت تابل ضان ہوجائے تو دیکھا جائے گا: اگر وارث تنصیل بیان کر دیتا ہے اور کہتا ہے کہ امانت کے اور اللہ کے اور اللہ کے واصاف بیدیہ تھے اور وہ بلاک ہوگئی تو الل کی بات مان کی جائے گی اور اللہ کے تابل ضمان ہونے کا مصلب بیہ ہے کہ وہ اللہ کے ترک مصلب میں دین ہوجائے گی (۱)۔

۵- حاشیدائن عابدین بین ہے کہ مجمع الفتاوی "بین کہا گیا ہے کہ وہ شخص جس کے پاس امانت رکھی جائے، نیز مضارب، متعیر اور مستبضع اور ہر وہ شخص جس کے قبضہ بین مال بطور امانت ہو، اگر بغیر بیان کئے مرجائے اور متعین طور پر امانت معلوم ندہو سکے تو مال اس پر اس کے مرک بین وربیت کی بیان کے مرک بین وربیت کی بیاکت چاہنے والا ہوگیا، اور تجمیل کی جائی وربیت کی بلاکت چاہنے والا ہوگیا، اور تجمیل کی حالت بین مرجانے کا مصلب بلاکت چاہنے والا ہوگیا، اور تجمیل کی حالت بین مرجانے کا مصلب بیت کہ وہ امانت کا حال بیان ندکر ہے جیسا کہ " الا شباہ "بین ہے۔ اور شیخ عربی تجمیل کی مقدار جھے معلوم نہیں وریا فت کیا گیا جس نے بیکبا کہ میر سے پاس دکان بین فلاں کا ایک کا فقذ ہے انتقال ہوگیا اور وہ کا فقر نہیں پایا گیا تو انہوں نے جواب دیا کہ یہ تجمیل ہے ، اس لئے کہ " البدائع "بین ان کا بیا گیا تو انہوں نے جواب دیا کہ یہ تجمیل ہے ، اس لئے کہ " البدائع "بین ان کا بیا گیا تو انہوں نے کہ وہ لیمی تجمیل ہیے کہ نام سے اور متعین کے اس مربیا کیا تقال ہوجائے اور متعین کے تقال ہوجائے اور متعین کے تو اس معلوم نہ ہو سکے۔

٢ - امانت كى ايك تشم رئان بھى ہے۔ جب مرتبن بغير ايان ك

ہوئے مرجائے تو اس کی قیمت کا صان اس کے ترک میں سے واجب ہوگا اور ای طرح وکیل جب مقبوضة یک کوبیان کے بغیر مرجائے (۱)۔ '' مجلّه'' کی دفعہ ۱۰ ۸ میں بیسر احت ہے کہ'' جب اس شخص کا انتقال ہوجائے جس کے پاس امانت رکھی گئی ہواورود بعت اس کے تر کہ میں متعین طور پر یائی جائے تو وہ اس کے وارث کے قبضہ میں بھی امانت رہے گی، لہذا وہ صاحب امانت کو واپس کردے گا۔ اور اگر امانت متعین طور پر اس کے ترک میں نہ یائی جائے اور وارث بیٹا بت کرے کہ جس شخص کے باس امانت رکھی گئی تھی اس نے اپنی زندگی میں ودیعت کی تفصیل بیان کر دی تھی،مثلاً اس نے کہد دیا تھا کہ میں نے ودیعت صاحب ودیعت کولونا دی یا یوں کہا کر بغیر زیادتی وہبلاک ہوگئی تو صان لازم نہ ہوگا۔ای طرح اگر وارث نے کہا کہ ہم ود بعت کو جائتے ہیں اور اس کے اوصاف بیان کرکے اس کی وضاحت کردی، پھر اس نے کہا کہ وہ اس شخص کی وفات کے بعد جس کے یایں امانت رکھی تھی بلاک ہوگئی یا ضائع ہوگئی،نونشم کے ساتھ اس کی بات مان کی جائے گی اور اب صان واجب ندہوگا، اور اگر اوصاف بیان کئے بغیر اس محض کا انتقال ہوجائے جس کے باس ودیعت رکھی سنی تقی تو بیاس کی طرف سے تجہیل ہوگی، لہذا اس کے ترک سے روسر بے قرضوں کی طرح و دیعت بھی وصول کی جائے گی، ای طرح اگر وارث کے کہ ہم ودیعت کو جانتے ہیں مگر اس کی تفصیل اور اوصاف نه بیان کرے تو اس کا بیقول که وه ضائع ہو پیکی معتبر نه ہوگا، اں صورت میں اگریپٹا ہت نہ ہور کا کہ وہ ضائع ہو چکی ہے تو تر کہ ے صان لا زم ہوگا"^(۲)۔

2 - ابن تجیم کی'' الاشاہ و النظائز''میں ہے کہ جھیل کے ساتھ اس

⁽۱) الاشباه والنظائر لابن كيم رص ٩٠١_

⁽۱) روامخنا روحاشیه این عابد بن سهر ۹۵ م، ۵۴ م.

⁽٢) مجلية الاحكام العدليه وفعات: ٧٤٧، ٨٠٣ م٠٣، ١٥٣، ١٥٣ م١٥١ ما ١٥٨

تھخص کی موت ہے جس کے باس امانت رکھی گئی ہوامانت قا**تل** ضان ہوجاتی ہے، مَرتین شم کے حالات اس سے منتھی ہیں: وقف کامتو لی جب اس كا انتقال وتف كى آمدنى كو بيان كے بغير ہوجائے ، قاضى جب اس کا انتقال اس حال میں ہوجائے کہ اس نے تیموں کے ہوال کے بارے میں پینصیل نہ بتائی ہوکہ اس نے ان کوکس کے یاس بطور و دیعت رکھا ہے، سلطان جب مال غنیمت کا میچھ حصہ مجاہد کے باس بطور امانت رکھ دے پھر یہ وضاحت کئے بغیر اس کا انتقال ہوجائے کہ اس نے اسے کس کے باس بطورودیعت رکھا ہے۔ '' فتاوی قاضی خان'' میں وقف کے باب میں اور' الخااسد''میں ودیعت کے باب میں ای طرح ہے، اور اس کو والوالی نے ذکر کیا ہے، اور تین صورتوں میں سے ایک صورت بیذ کر کی ہے کہ شرکت مفاوضہ کرنے والے دوشریکوں میں سے ایک کا انتقال ہوجائے اور جو مال اس کے قبضہ میں ہووہ اس کا حال بیان نہ کرے اور نہ قاضی ہے اس کا تذکرہ کرے، اس طرح منتقی صورتیں جار ہوگئیں۔ اورصاحب '' الاشاه'' نے اس پر چند مسائل کا اضافیز مایا ہے: پہلا بیک وصی کا انتقال تفصیل بیان کئے بغیر ہو جائے تو اس پر کوئی صان نہیں ہے جبیبا ك" جامع الفصولين" ميں ب-دوسر الديك باب كا اين بينے كے مال کی تفصیل بیان کئے بغیر انتقال ہوجائے ، اس کو بھی ای میں ذکر کیا ہے۔تیسر اہ بیاکہ وارث کا انتقال اس ودیعت کی تفصیل بیان کئے بغیر ہوجائے جو بوقت موت اس کے پاس رکھی گئی ہو۔ چوتھا: بیک صاحب خانہ کا انتقال اس مال کی تفصیل بیان کئے بغیر ہوجائے جو ہوا کے ذر معید اس کے گھر میں آ گیا ہو۔ یا نیواں: بیاکہ صاحب خانہ کا انتقال اس مال کی تنصیل بیان کئے بغیر ہوجائے جس کو مال کے مالک نے صاحب خانہ کی لائلمی میں اس کے گھر میں رکھ دیا ہو۔ چھٹا: یہ کہ کسی بچہ کا انتقال اس ودیعت کی تفصیل بیان کئے بغیر ہوجائے جو

جر (نفر فات سے مما نعت) کی حالت میں اس کے پاس رکھی گئی ہو۔
اخر کے بیتین مسائل' الجامع الکبیر' للخلاطی میں ہیں، اس طرح مستثنی مسائل دیں ہوگئے، اور تفصیل بیان کئے بغیر انتقال ہوجانے کا مصلب بیہ ہے کہ امانت کا حال بیان نہ کرے اور اسے بیمعلوم ہوک اس کا وارث اسے نبیس جانتا ہے، چنانچ اگر اس نے بیان کر دیا اور اپنی زندگی میں کہہ دیا کہ میں نے اس کو لونا دیا ہے تو تجمیل نبیس ہے۔
بشر طیکہ وارث اپنے اس قول پر جوت پیش کرے ورنہ اس کی بات بشر طیکہ وارث اپ اور اگر وہ بیجا نتا ہوک اس کا وارث اس کی بات بشر طیکہ وارث اپ اس قول پر جوت پیش کرے ورنہ اس کی بات بشر طیکہ وارث اپ اس کو جانتا ہوکہ اس کا وارث اس کو جانتا ہے تو تجمیل نبیس ہے۔
تا بل قبول نہ ہوگی ، اور اگر وہ بیجا نتا ہوکہ اس کا وارث اس کو جانتا ہے تو تجمیل نبیس ہے (۱)۔

شافعیہ کے زویک اگر اس شخص کا انتقال ہوجائے جس کے پاس ادائت رکھی گئی ہواس حال میں کہ ادائت اس کے پاس ہواور اس نے اس کواپنی موت سے قبل صاحب ادائت کو واپس نہ کیا ہواور نہ اس کی وصیت کی ہولیجی کئی قاضی یا دائت و ارشخص یا وارث کو نہ بتا یا ہوجو اس کی موت کے بعد اس کو واپس کر دے، تو وہ اس کا صامن ہوگا بیر طیکہ وہ واپس کر نے پر تاور زبا ہواور اس نے ایسا نہ کیا ہو بخال نہ اس صورت کے جب وہ اس پر تاور نہ ہوا ہو، مثالًا ایا نہ کیا ہو بخال اس مورت کے جب وہ اس پر تاور نہ ہوا ہو، مثالًا اور اس کا انتقال ہوگیا یا اس وصورت سے جب وہ اس پر تاور نہ رہا ہو، مثالًا اور اس کا انتقال ہوگیا یا اس ورتوں میں اس سے تاصر ہے، اور اگر قاضی کا انتقال ہوجائے اور اس کو اور اس کا انتقال ہوجائے اور اس کے ترک میں بیٹیم کا مال نہ پایا جائے تو چاہے وہ وصیت نہ کر سے گئی بھی وہ ضامن نہ ہوگا، کیونکہ وہ شریعت کا امین ہے، بخان ف ورسرے امناء کے، نیز اس لئے کہ اس کی والایت عام ہے اور جس ورسرے امناء کے، نیز اس لئے کہ اس کی والایت عام ہے اور جس طرح کی عبارت کھو دیئیکا کوئی اثر نہ ہوگا کہ مثالًا بینال کی ودیعت کی وربیت کی عبارت کھو دیئیکا کوئی اثر نہ ہوگا کہ مثالًا بینال کی ودیعت کی وربیت کی وربیت کی وربیت کی وربیت کی وربیت کی میارت کھو دیئیکا کوئی اثر نہ ہوگا کہ مثالًا بینال کی ودیعت کی وربیت کی وربی

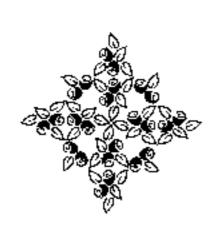
⁽۱) الاشباه والنظائر لا بن كيم رص ١٠ ا

ہے یا اس کے اپنے کسی کاغذ پر بید لکھنے کا بھی کوئی اثر نہ ہوگا کہ میرے پاپس فلاں کا ایسامال ہے ، الا بیکہ وہ اس کا اثر ارکر ہے یا اس پر بینہ قائم ہوجائے یا وارث اس کا اثر ارکر لے (۱)۔

اور صنان کے متعلق مالکیہ کا بھی یہی خیال ہے اور انہوں نے درازی وقت کا اضافہ کیاہے، چنانچ انہوں نے فر مایا کہ اگر اس شخص کا انتقال ہوجائے جس کے پاس امانت رکھی گئی ہواور اس نے اس کی نہ وصیت کی اور نہوہ مال اس کے ترک میں پایا گیا تو ود بعت کا صنان لازم ہوگا، لبند اس کے ترک سے وصول کیاجائے گا، کیونکہ اختال ہے کہ اس فوظور قرض لیا ہوالا بیکہ ود بعت رکھنے کے دن سے دس سال کا طویل عرصہ گزرجائے تو صنان واجب نہ ہوگا۔ اور اس کو دس سال کا طویل عرصہ گزرجائے تو صنان واجب نہ ہوگا۔ اور اس کو اس پر مجمول کیا جائے گا کہ انہوں نے امانت صاحب امانت کو واپس اس پر مجمول کیا جائے گا کہ انہوں نے امانت صاحب امانت کو واپس اور دس سالوں کے طویل ہونے کا محل وہ ہے جب اس اور دس سالوں کے طویل ہونے کا محل وہ ہے جب اس ما تھ نہ ہوگا، خواہ دس سال سے زیادہ کا عرصہ گذرجائے، اور امانت کا مالک اسے فواہ اس کی ملک ہے، خواہ اس شخص کی ہوجس کے پاس امانت رکھی گئی تھی یا اس کی ملک ہے، خواہ اس شخص کی ہوجس کے پاس امانت رکھی گئی تھی یا اس کی ملک ہے، خواہ اس شخص کی ہوجس کے پاس امانت رکھی گئی تھی یا رکھنے والے کی (۲)۔

اور حنابلہ کا خیال ہیہ ہے کہ اگر اس شخص کا انتقال ہوجائے جس کے پاس موجود ہو، مگر اس کے پاس موجود ہو، مگر اس کے باس مانت رکھی گئی تھی اور وہ اس کے پاس موجود ہو، مگر اس کے مال ہے مینز نہ ہوتو وہ صاحب امانت کا قرض خواہ ہوگا، لہذ ااگر اس کے ذمہ اس کے علاوہ کوئی اور قرض بھی ہوتو یہ اور دوسر مے قرض ہراہر ہوں گے۔

۸ علاوہ ازیں ووبعت کا ثبوت یا تو موت ہے تبل میت کے آخر ار کرنے ہے ہوگا یا اس کے ورثاء کے آخر ار سے یا کواہ کی کوائی ہے، اور اگر اس پر بیکھا ہوا پایا جائے کہ بید ودبعت ہے تو بیٹر پر ان کے خلاف جمت نہیں ہے گی، کیونکہ ممکن ہے کہ اس اتفا فہیں اس ہے تبل کوئی ودبعت رعی ہو، یا ان کے مورث کی ودبعت کی اور کے پاس رعی ہو، یا ان کے مورث کی ودبعت کی اور کے پاس نے اس کوئر بدلیا ہو، ای طرح آگر کسی نے اپنے والد کے کا غذات میں بیکھا ہوا پایا کہ فلاں کی ایک ودبعت میں ہو دبعت ہوا ور اس نے اس کو ٹر بدلیا ہو، ای طرح آگر کسی نے اپنے والد کے کا غذات میں بیکھا ہوا پایا کہ فلاں کی ایک ودبعت میں ہی ہو ہوا ہوا ہوا ور اس پر پھولانم نہ ہوگا، کیونکہ ممکن ہے کہ اس نے اس لونا و یا ہوا ور اس پر میر لگانا ہول گیا ہووغیرہ وغیرہ (ا)۔ اس کی تفصیل کے لئے '' ابضائ''، '' رئین''، '' عاریت''، '' مضاربت''، '' ودبعت' اور'' وقف'' کی اصطلاحات کی طرف رجوئ کہا جائے۔



⁽۲) الشرح الكبير سره ۳۷،۳۲۵، جوم لا كليل ۱۳۲۸ ا

تجويد

تعریف:

ا - لغت میں تجوید کا معنی کسی تی گو خید (عمده) بنانا ہے۔ اور جید ردی کی ضد ہے، چنانچ کبا جاتا ہے: "جوّد فلان کذا" یعنی فلال نے اس کوعمدہ بنایا اور "جوّد القواء ف"، یعنی اس نے ایسی قراءت کی جونطق کی خامیوں سے یا کتھی (۱)۔

اصطارح میں بیہ حرف کواس کالورائورائق دینا ہے، حرف کے حق ہے مراواس کی وہ صفت ذاتی ہے جواس کے لئے ثابت ہو، جیسے شدت اوراستعلاء، اور حرف کے سیحق ہمرادوہ نتیجہ ہے جو صفات ذاتیہ لا زمیہ سے پیدا ہوتا ہے، مثلاً تھیم (پُر پراھنا)، کیونکہ بیاستعلاء اور تکریر سے پیدا ہوتا ہے، مثلاً تھیم (پُر پراھنا)، کیونکہ بیاستعلاء اور تکریر سے پیدا ہوتا ہے، اس لئے کہ بیحرف کے ساکن ہونے اور مفتوح اور مضموم ہونے کی حالت بی میں ہوتا ہے، کسرہ کی حالت میں منتوح اور مضموم ہونے کی حالت بی میں ہوتا ہے، کسرہ کی حالت میں کرنے کے بعد بی ہوسکتا ہے۔ بعض لوگوں نے اس کو بجوید کی تعریف کرنے سے ادا کرنے کے بعد بی ہوسکتا ہے۔ بعض لوگوں نے اس کو بجوید کی تعریف مطلوب ہے، گرشے علی القاری نے فر مایا کہ بیات پوشیدہ نہیں ہے مطلوب ہے، گرشے علی القاری نے فر مایا کہ بیات پوشیدہ نہیں ہے کرنے کو اس کے خرج سے ادا کرنا بھی تجوید کی تعریف میں داخل

(۱) لسان العرب، طبيعة النشر في القراءات أحشر لمحمد بن محمد بن الجزري التوفي ۳۲سم هرص ۳۳س

(۲) المقدمة الجزرية وترمها لزكريا الانصاري وتعلى القاري رص ۲، نهاية القول للقيم محربن كمي بن نصررص ۱۱، والقان للسيوطي ۱۱، ۱۰-

ہے جیسا کہ ابن الجزری نے "کتاب التمہید" میں اس کی صراحت نر مائی ہے (۱) یعنی اس لئے کہ معر ف (وہ چیز جس کی تعریف کی جائے) تر اوت وہ ہے جوتو اعد تجوید کی رعابیت کے ساتھ کی گئی ہونہ کہ مطلق تر اوت ، اور وہتر اوت جوتو اعد تجوید کی رعابیت کے ساتھ کی گئی ہوہر حرف کواس کے مخرج سے ادا کے بغیر نہیں ہو کتی ہے۔

ابن الجزرى في مايا كتجويد كامعنى ب: حرف كوان كاحق دينا،
ان كوان كي ورجيه مين ركهنا، حرف كواس كخرج اور اس كى اسل كى طرف پهيريا، اس كواس كي نظير كيساتها في كرنا، اس كے لفظ كي تعجي اور اس كى كامل وضع اور ساخت كي مطابق لافت كيساته ذبان سے اس كى كامل وضع اور ساخت كي مطابق لافت سے ساتھ ذبان سے اس كى ادائيگى جومبالغة، بيجا كوشش، افر اط اور تصنع سے پاك بهو (۲) ك

متعلقه الفاظ:

الف-تلاوت،اداءاورقر اءت:

اسطال میں تااوت ہیے کرقر آن کریم کو تسلسل کے ساتھ پڑھا جائے مثلاً اجزاء اور اُسدال کے انتہار سے (یعنی چند اجزاء کرکے است مثلاً اجزاء اور اُسدال کے انتہار سے (یعنی چند اجزاء کرکے است می دنوں میں ان کو چھے حصوں میں تشیم کرکے ان کو چھے دنوں میں شتم کیا جائے اور تااوت مسلسل ہو)۔

اداء یہ ہے کہ استاد سے من کریا اس کی موجودگی میں پڑھ کر حاصل کیا جائے۔

اور قر اوت تااوت اورادا ودونوں سے زیادہ عام ہے (m)۔ اور بیام مخفی نبیس کہ تجوید ان متنوں الفاظ سے زائد ایک شی ہے،

⁽۱) مثرح المقدمة الجزرية يم على القاري رص ۲۱_

⁽۲) النشر کمحرید بن الجز ری ار ۳۱۲_

⁽۳) شرح المقدمه المجز دبیلهای ذکریا الانصاری، کشاف مصطلحات الفنون ایرا ۱۵، شرح مسلم الثبوت ۲۲ ۱۹،۱۹

لہذاوہ ان تنوں سے خاص ہے۔

ب-ترتيل (تضبر كله بركرية هنا):

سا- ترتیل افت کے اختبارے'' رتمل'' کا مصدرے، کہا جاتا ہے: یوقل فلان کلاهه، جب کوئی شخص اپنے کلام کے بعض حصر کو بعض حصد کے بعد تھم کھر کراور مجھ بچھ کر بغیر عجلت کے اداکرے۔

اور اصطلاح میں ترتیل ہے کہ حرف کے خارج کی رعامیت کی جائے اور قوف کالھو ظار کھا جائے۔

ای کے مثل حضرت علی سے منقول ہے، چنانچ انہوں نے فر مایا
کر تیل حرف کو عمدہ بنانے اور قوف کو پہچا نے کانام ہے (۱)۔

ر تیل اور تجوید کے درمیان فرق یہ ہے کہ رتیل تجوید کے ذرائع میں سے ایک ذریعہ ہے، اور تجوید میں وہ امور شامل ہیں جو حرف کی صفات ذاتیہ سے تعلق ہیں، ای طرح وہ امور بھی جوان صفات خات ہے لین جہاں تک تر تیل کا تعلق ہے تو وہ صرف مفات کرنے ہیں، جہاں تک تر تیل کا تعلق ہے تو وہ صرف مفارج حروف کی رعابیت اور قوف کو منفیط کرنے تک محد ود ہے مفارج حروف کی رعابیت اور قوف کو منفیط کرنے تک محد ود ہے تاکہ تیز تر اوت میں جروف ایک دوسر سے خلط ملط نہ ہوجا کیں، ای بنا پر علاء نے تر تیل کا اطلاق تر اوت کے ایک درجہ پر کیا ہے جو خارج اور مدوں کی ممل طور پر ادائیگی ہے تعلق ہے، اور اس کا درجہ بر کیا ہے جو خارج اور مدوں کی ممل طور پر ادائیگی ہے تعلق ہے، اور اس کا درجہ بر کیا ہے جو خارج اور مدوں کی ممل طور پر ادائیگی ہے تعلق ہے، اور اس کا درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے درجہ کے بعد ہے اور ان دونوں سے کمتر درجہ وقطی ہے

اجمالي تحكم:

سم- اس میں کوئی اختاا ف نہیں کہ علم تجوید سے وامتگی فرض

جس کانام'' مذوری"ہے، پھر" حدر"ہے جو آخری درجہہے (۲)۔

کنا پیپ^(۱)۔

جباں تک ال بڑمل کرنے کا تعلق ہے تو متقدین علا ہر اوت و
تجوید کا خیال ہے کہ تجوید کے تمام قو امد کا سیمنا واجب ہے، جس کا
تارک گنہ گار ہوگا، خواہ وہ حرف کو ان اغلاط سے بچانے سے متعلق
ہوں جن سے ان کے صیغوں میں تبدیلی واقع ہوجاتی ہے یا جن سے
معنی میں گڑ ہڑی پیدا ہوجاتی ہیا اس کے علاوہ امور سے تعلق ہوجن کو
علاء نے تجوید کی کتابوں میں ذکر کیا ہے، جیسے و دغام وغیر ہ ۔ اور محمد
بن الجزری نے "النشر" میں امام نصر الشیر ازی سے نقل کرتے
ہوئے فرمایا کہ انجھی طرح ادا کرنا قراءت میں فرض ہے اور قرآن
ہوئے والے پرلازم ہے کہ اس کی تلاوت اس طرح کرے جیسا کہ
ہوئے والے پرلازم ہے کہ اس کی تلاوت اس طرح کرے جیسا کہ
اس کی تلاوت کاحق ہے (۲)۔

اور متاخرین نے تجوید کے مسائل میں" واجب شرقی'' اور '' واجب صنائی'' کے درمیان تفصیل کی ہے، واجب شرقی وہ امور ہیں جن کے ترک سے صیغے تبدیل ہوجائیں یا معنی میں گڑ بڑی پیدا ہوجائے۔

واجب صنائی: وہ امور ہیں جن کو اس نمن کے ماہرین نے قر اوریہ بچولید کی کامل پختگی کی غرض سے لازم قر اردیا ہے، اوریہ تجولید کی کتابوں میں علماء کے بیان کردہ وہ مسائل ہیں جو اس نوٹ کے نہیں ہیں جیسے او دغام، اختفاء وغیرہ، اس نوٹ کا تارک ان کے نزدیک گندگارند ہوگا۔

شیخ علی القاری نے اس کو بیان کرنے کے بعد فر مایا کہ حروف کے نخارج ، ان کی صفات اور ان کے متعلقات بیسب زبان عرب میں قابل لحاظ ہیں، کہذا مناسب ہے کہ ان کے ایسے تمام قواعد کی

أنعر بفات للجرجاني

⁽۲) شرح طبیعة التشريرص ۵ سابشرح الجزر ريلاا نصاري رص ۳۰ ـ

⁽۱) نهاییة القول المفیدرص ۷ بشرح الجز ریدلقاری رص ۹ ا

⁽۲) النشر الراامي

رعایت وجوبی طور پر کی جائے جن کی رعایت ندکرنے کی صورت میں افظ کی اسل بدل جائے اور اس کا معنی غلط ہوجائے ، اور ان قو اعد کی رعایت اختیابی طور پر کی جائے جن کی رعایت سے لفظ عمدہ بنتا ہے اور اور کی جائے جن کی رعایت سے لفظ عمدہ بنتا ہے اور اور کی جائے جن کی رعایت سے لفظ عمدہ بنتا ہے اور اور کی جائے گئی کے وقت زبان سے ان کا نطق بہتر معلوم ہوتا ہے ، پھر لحن خنی کے تعلق جس کو سرف قر اور می جائے ہیں انہوں نے فر مایا جمکن نہیں کہ یغرض عین ہوکہ اس کے پڑ سے والے پر عذاب مرتب ہو ، کیونکہ اس میں بڑ احرج ہے (۱) ، نیز اس لئے کہ این الجزری نے تجوید سے اس عیس بڑ احرج ہے (۱) ، نیز اس لئے کہ این الجزری نے تجوید سے متعلق ابنی منظوم کتاب میں اور "الطیعة" میں گھی فر مایا ہے:

والأخذ بالتجويد حتم لازم من لم يجود القرآن آثم (تجويد كاسكِصالازم ہے، جوشخص قرآن كوتجويد كے ساتھ نہ پڑھے وہ گنہ گارہے)۔

ان کے فرزند احمدؓ نے اس کی شرح میں فرمایا: جو محص اس پر قادر ہواں پر بیواجب ہے، پھر فرمایا: اس لئے کہ اللہ تعالی نے قرآن کریم کوائل کے ساتھ مازل فرمایا ہے اور بیٹر آن نبی علیجی سے ہم تک تجوید کے ساتھ بیٹو امر پیٹھا ہے۔

اور احد بن محد بن الجزرى نے قدرت كى اس قيدكو ايك سے زائد مرت ذكر فر ما يا ہے (٢) اور اس كى دليل وہ حديث ہے جس كى روايت شيخين نے حضرت عائش ہے كى ہے، وہ فر ماتى بيس كر رسول اللہ عليہ نے فر مايا: "المماهو بالقوآن مع المسفوة الكوام البورة، و الذي يقو أ القرآن و يتعتع فيه، وهو عليه شاق له أجوان "(قرآن كا ماجران "مارا فر آن كا ماجران " (قرآن كا ماجران ")

ساتھ ہوگا جو انگال نامے لکھتے ہیں اور جوٹر آن پڑھتا ہے اور اس میں بکلانا ہے اوروہ اس پر دشوار ہونا ہے تو اس کے لئے دواتر ہیں)۔

ابن غازی نے اپنی ''شرح الجزری' (۱) پیس مختلف فید مسائل کے تعلق مشہور قراء میں ہے ہم قاری کی پہند مید وصور توں مثالا ایک علی مقام پر بعض کی پُر پڑ سے کی رائے اور بعض کی باریک پڑ سے کی رائے کو واجب سنائی بیس شار کیا ہے ، لبذا اس کا تارک ندگندگار موگا اور نداس کو فاسی قرار دیا جائے گا، ای قبیل ہے وہ مسائل بھی ہیں جو وقف ہے تعلق ہیں ، کیونکہ کی متعین کل پر قاری کے لئے وقف کرنا واجب نہیں کہ اگر وقف ندکر ہے تو گذیگار ہواور کسی متعین اور وہ اس کا قصد بھی کر ہے تو گذیگار ہواور کسی متعین اور وہ اس کا قصد بھی کر ہے ہو آگر اس نے ایسے معنی کا اعتماد رکھا جو اور وہ اس کا قصد بھی کر ہے ہو آگر اس نے ایسے معنی کا اعتماد رکھا جو ارشا د : ''اِنَّ اللّٰہ لاَ یَسْمَتُ حَیبی '' پر وقف کر ہے '' اُن یَسْمَتُ حیبی '' پر وقف کر ہے '' اُن یَسْمَتُ حیبی '' پر وقف کر ہے '' اُن یَسْمَتُ کیسی اللہ تعالی کے ارشا د : '' اِن اللّٰہ لاَ یَسْمَتُ حیبی '' پر وقف کر ہے '' اُللہ اللہ '' کے بغیر ہے اللہ تعالی کے ارشا د : '' و ما من اِللہ '' پر وقف کر ہے '' اِلا اللہ '' کے بغیر ہے اللہ کا لیک ارشا د : '' و ما من اِللہ '' پر وقف کر ہے '' اِلا اللہ '' کے بغیر ہے ۔

اور جہاں تک علاقہ اوت کے اس قول کا تعلق ہے کہ اس پر
وقف کرنا واجب ہے یا لازم ہے یا حرام ہے یا جائز نہیں ہے، اور
اس طرح کے وہ الفاظ جو وجوب یا تحریم پر دلالت کرتے ہیں تو اس
سے مرادوہ نہیں جو فقہاء کے یہاں ثابت ہے کہ اس کے کرنے
والے کو ثو اب ہوگا اور اس کے تارک کوسز اہوگی یا اس کے برعکس
(یعنی کرنے والے کو سز اہو اور چھوڑنے والے کو ثو اب)، بلکہ
مرادیہ ہے کہ قاری کے لئے مناسب ہے کہ اس پرکسی ایسی مصلحت

⁽۱) شرح الجزر رية على القاري رص ٢٠ بنهايية القول المغيد رص ٣٥ ـ

⁽۲) شرح الطبيه لاحمد بن محمد بن الجزري التوفي ۵۹ ۸رص ۳۱، بيد مستف الجزرب الطبيه اورائشر كفر زند بين-

⁼ الباري ٨٨ ١٩١ طبع التلقيه) اورمسلم (صبيح مسلم ار ٥٥٠ طبع لجلمي) نے كي ______

⁽۱) نهاية القول المفيدرص ۲۱،۲۵، نقلاعن شرح الجزرية ابن غازي ـ

کی خاطر وتف کرے جو اس پر وقف کرنے سے حاصل ہوتی ہو، یا اس ہنار کہ کہیں وصل کی وجہ ہے معنی مقصود کے بدل جانے کا وہم نہ پیدا ہوجائے یا بیمراد ہے کہ اس پر وقف کرنا اور اس کے مابعد سے شروع کرنا مناسب نہیں، کیونکہ معنی کے بدل جانے یا تلفظ کے مگر جانے وغیر ہ کا وہم ہوتا ہے۔

اور قر اء کا یقول کہ اس پر وقف نہ کیا جائے ، اس کا مصلب سیہ ہے کہ فنی طور پر بہاں وقف کرنا اچھانہیں ہے، اس کا بیمطلب نہیں ہے کہ اس جگہ وقف کرنا حرام ہے یا مکروہ ہے بلکہ خلاف اولی ہے، الا بیک وہ وہم پیدا کرنے والے معنی کا ارادہ کر کے عمراً ایسا کرر ہاہو(۱)۔

پھر ابن غازی نے تر اوت کا ارادہ کرنے والے کے لئے تجوید سيحي كاحكم بإن فرمايا ، چناني انبول نے نابت كيا ہے كربيال محض یر واجب نہیں ہے جس نے ماہر شیخ سے تر اوت سیمی ہواورای سے کن نہ ہوتا ہو، البتہ اسے مسائل تجوید کی ملمی واقفیت نہ ہو، اسی طرح اس کا سیکھنا اس فصیح اللیان عربی مخص پر بھی واجب نہیں ہے جس کے کلام میں خلطی نہ ہوتی ہوبایں طور کہ تجوید کے ساتھ قر اوت کرنا اس کی اطرت ہو، لہذاان دونوں قسموں کے اشخاص کے لئے احکام تجوید کاسیکھنا ایک امر صنائی ہے کیکن جس کی طرف سے ان متفق علیہ احکام میں نفض ظاہر ہویا وہ تصبیح اللیان عرب نہ ہوتو اس کے کئے مشائنے کی زبانی احکام کاسکھنا اور اس کے نقاضوں برعمل کرنا لازم ہے (۲)۔

امام الجزري نے" انتشر "میں فریایا کہ اس میں کوئی شک نہیں کہ امت کے لئے جس طرح معانی قرآن کو مجھنا اور اس کے عدود کو

(۱) نهايد القول المفيد نقلائن ابن غازي رص ۲۹۔

(٢) نهاية القول المفيد رص ٢٦_

وہ امور جو تجوید کے ذیل میں آتے ہیں:

۵-تجوید قرآنی علوم میں سے ایک علم ہے ممر وہ قرآن سے متعلق ويمرعلوم سے ال حيثيت مختلف ہے كرخواص اورعوام دونوں كوال کی ضرورت ہے، کیونکہ انہیں کتاب اللہ کو اس طرح براھنے کی ضرورت پراتی ہے جس طرح وہ نازل کی گئی ہے اور جس طرح وہ رسول الله عليه عليه سينقل كي تئ ہے، اور بديا تو اس كے مسائل سيجھنے ے ہوگایا علماء کی زبانی حاصل کرنے سے اور ان دونوں صور توں میں مثق اورتگرارضر وری ہے۔

تائم کرنا عباوت ہے، ای طرح اس کے الفاظ کی درستگی اور اس کے

حن كواى طرح قائم ركهنا جس طرح وه ائد قرات سے حاصل

ہوئے ہیں اور نبی علیہ ہے مربوط ہیں بھی عبادت ہے ⁽¹⁾۔

اوعمر والدانی فر ماتے ہیں کے غور کرنے والے کے لئے تجوید اور ترک تجوید میں فرق صرف جبڑے کی ریاضت کا ہے اور احمد بن الجزرى فرماتے ہیں كہ جھے نہیں معلوم كه القان، تجوید كی انتہاء تك پہنچنے اور صحت ودر تنگی کی غابیت تک رسائی حاصل کرنے کا کوئی ذر معیہ ایسا ہے جیسا کہ زبانی مشق اور بہتر ادائیگی کرنے والے کی زبان سے سیکھے گئے لفظ کی تکرار اور اس پر زبانی مثل ہے۔

> نلم تجوید بہت ہے مباحث رمشمل ہے: جن میں سے اہم ترین بیویں:

الف-حروف کے مخارج نا کہ ہر حرف کو اس کے سیجے مخرج سے نكالنے تك رسائی حاصل ہو۔

ب-حروف کی صفات، لیعنی جهر، جمس وغیره ان حروف کی شناخت کے ساتھ جوصفت میں مشترک ہیں۔

⁽۱) الانشر للجوري ار ۲۱۰، لا نقان ار ۱۰۰

ج - پُر پڑھنا، باریک پڑھنا اور بعض حرف مثلاً راء اور لام کوپُر اور باریک پڑھنا اور اس سے تعلق احکام ۔

د-نون ساکن، تنوین اورمیم ساکن کے احوال۔ ھ-مداور قصر اور مدکی انسام ۔ عدمت مقالیہ مقالیہ مقالیہ ۔

و-وتف، ابتداقطع اوراس سے تعلق احکام۔

ز- آغاز قر اوت یعن تعوذ اور بسم الله کے احکام قر آن کی تھیل کے احکام اور تااوت کے آداب۔

نلم تجوید کی کتابوں میں اس کی تفصیل کا مقام نلم تجوید کی کتابیں ہیں، ای طرح قراءت کی کتابوں کے اخیر کے مباحث، جیسا کہ شاطبی کی منظوم کتاب''حرز الا مائی''میں ہے یا اس کے ابتد ائی جصح جیسا کہ محمد بن الجزری کی کتاب'' الطیبہ'' اور علوم قرآن کی بعض دوسری مفصل کتابوں میں ہے، مثلاً زرکشی کی'' ابر بان'' اور سیوطی کی ۔'' الا تقان''۔

تبجوید میں نقص پیدا کرنے والے اموراوران کا تکم:
۲ - تبوید میں نقص یا تو ادائیگی حروف میں ہوگایا قراءت سے تعلق
ان صوتی تغیرات میں جونطق کے ماثور طریقد کے خلاف ہوں۔
متم اول کولین کہا جاتا ہے ، یعنی خطاء اور صحت سے اعراض کرنا ،
اور اس کی دوشمیں ہیں : جلی اور خنی ۔

سکون سے بدل دیا جائے،خواہ اس شلطی سے عنی میں تغیر پیدا ہویا نہ ہو۔ جو شخص اس تشم کی شلطی کی تا افی پر تا در ہو اس کے لئے بیڈلطی کرنا حرام ہے،خواہ اس سے معنی میں نقص کا وہم پیدا ہویا اعراب میں تبدیلی لازم آتی ہو۔

اور کن خفی الیی خلطی ہے جو لفظ میں پیش آتی ہے اور اس سے قر اوت کے عرف میں نفض پیدا ہوتا ہے ، معنی میں نبیس اس کو خفی اس سے کئے کہا جاتا ہے کہ اس کا علم صرف علما پتر آن اور علما و تجوید علی کو ہوتا ہے ، اور بیر حروف کی صفات میں ہوتی ہے (۱) ، اور اس کمن خفی کی دو قسمیں ہیں:

ایک سم تو ایس ہے جس کوعلا پتر اوت بی جائے ہیں جیسیا خفا وکا ترک کرنا اور پیزش عین نہیں ہے جس کے ترک پرسز امر تب ہوجیسا ک ماقبل میں گزرا، بال اس میں سرزفش اور وعید کا اند میشضر ورہے (۴)۔ دوسری سم کوصرف ماہر بین تر اوت بی جائے ہیں، جیسے راؤں کی تکر اراور لاموں کو مے کل مونا کر کے پڑھنا، ادائیگی کے وقت اس فتم کے امور کو لئے ظرکھنام سخب اور بہتر ہے۔

اور تجوید میں پیدا ہونے والے نقص کی دومری سم وہ ہے جو طریقہ تا اوت کی منقول حد میں کی یا زیادتی سے پیدا ہوتی ہے، خواہ قر اوت کے وقت حرف کی اوائیگی میں ہویا حرکت کی اوائیگی میں، اور نقص کا سبب مست کرنے والے اور گانے کی طرح آ واز کوحلق میں اور نقص کا سبب مست کرنے والے اور گانے کی طرح آ واز کوحلق میں محمانے والے کن کے ساتھ پرا مسناہے، اور میمنوع ہے، کیونکہ اس میں تا اوت کو اس کے سیج طریقوں سے بتانا اور قرآن کریم کو ان کانوں سے تشبید دینا ہے جن کامتصد مستی کا حصول ہوتا ہے (۳)۔ گانوں سے تشبید دینا ہے جن کامتصد مستی کا حصول ہوتا ہے (۳)۔ فقہاء نے اس کے ممنوع ہونے پر حضرت عالی گی اس

⁽۱) نهاية القول لمفيدرص ۴۲، ۲۴، ولا نقان للسيوطي ار • •ا_

⁽۲) کیجنی اس محض کے حق میں جو اس بر قا در ہو۔

⁽m) نهاية القول المفيدرص ٢٣٠

روایت سے استدلال کیا ہے جس میں ووفر ماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ علی کوفر ماتے ہوئے سا: "بادروا بالموت ستا:
امرة السفهاء و کفرة الشرط، وبیع الحکم، واستخفافا باللهم، وقطیعة الرحم، ونشوا یتخذون القرآن مزامیر یقدمونه یغنیهم، وان کان اقل منهم فقها" (ا) (چوچیزوں سفدمونه یغنیهم، وان کان اقل منهم فقها" (ا) (چوچیزوں سے پہلےموت کی طرف سبقت کرو: ہے وقونوں کی حکومت، کثرت شرط جم کی نیچ بخون کو عمولی جھنا قطع رحم اورائی مستی کہ لوگ قرآن کو صارتی بنائیں کے اورائی شخص کو گے بڑھا کیں گے جوان کو گاگا کر سنائے اگر چود الاہوگا)۔

یکٹے زکر یا انساری فریاتے ہیں کر ہوں کے لین سے مرادکسی مجھی طرح کی کمی اور زیادتی سے پاک وہ طری قرار اوت ہے جس پران کی پیدائش ہوئی ہے ، اور فاسقوں اور گناہ کے مرتبین کے لین سے مراد وہ تر نم ہے جو نظم موسیقی سے حاصل کیا جائے اور عدیث میں واردشدہ امرا بخباب پرمحول ہے اور نہی کر اہت پر بشر طیکہ الفاظ حروف کی صحت کو لی فر دکھا جائے ، ورنہ تحری کر اہت پر بشر طیکہ الفاظ حروف کی صحت کو لی فر دکھا جائے ، ورنہ تحری کر اہت پر بشر طیکہ الفاظ حروف کی صحت کو لی فر دکھا جائے ، ورنہ تحری کر ہمول کیا جائے گا (۲۲)۔

رافعی نے فرمایا کہ مروہ میہ ہے کہ مداور حرکتوں کے کھینچنے میں زیادتی کرے، یہاں تک کہ فتحہ سے الف اور ضمہ سے واؤوغیرہ پیدا ہوجا کمیں ۔ نووی کہتے ہیں کہ مذکورہ طریقہ پر زیادتی حرام ہے، اس طرح پڑھنے والا فاسق ہوگا اور سننے والا گنہ گار، کیونکہ وہ اس کوافتیار کر کے اس کے سیح طریقہ سے ہے گیا۔ کراہت سے امام

شافعی کی مرادیمی ہے۔

علاء تجوید نے اس کے چند نمونے ذکر کئے ہیں: ان میں سے بعض کور تعید بعض کور عید بعض کور اور بعض کور اور اللیمیں و الرفاوة فی الحروف (حروف کو لین اور رفوت (زبان سے تالو رفوت (زبان سے تالو کو لگا کرحروف کی اوائیگی کرنا اور تقطیع (حروف کو لکرے کرکے کر کے یا حدا) ہے (اک

ان کے مطالب کی تفصیل ان کے مراجع میں مذکور ہے۔ ان بی میں ہے'' اجرار یہ' اور'' نہایۃ القول المفید'' ہے، اوراس سلسلے میں امام علم الدین السخاوی کی منظوم کتاب سے چند اشعار ذکر کئے گئے ہیں پھراس کی شرح سے ان کا یقول نقل کیا گیا ہے: ہم حرف کے لئے ایک میز ان ہے جس سے اس کی حقیقت کی مقدار پہچا نی جاتی ہے، اور جب کوئی حرف اپنے وہ میز ان اس کا مخرج اوراس کی صفت ہے، اور جب کوئی حرف اپنے مخرج سے اس مال میں خطے کہ اعتدال کے ساتھ بغیر کسی کی اور نیا دقی حقیقات کی رعابیت کی گئی ہوتو بیا ہی میز ان بر نیا تا اموگا اور کی تجوید کی حقیقت ہے۔ اور اس کی طریقہ بیہ ہے کہ اسے مشاق فیر اوراس کی طریقہ بیہ ہے کہ اسے مشاق قر اوکی زبان سے سکھا جائے۔

⁽۱) حضرت عالم کی عدیدے کی روایت احجہ نے شریک کے واسطے سے ابوالیتظان بن محمیر سے کی ہے ورعدیت لینے شولند کی بنا پرمیجے ہے (مشد احجہ بن عنبل سہر ۱۹۳۳ ۲۸ ۲۲ طبع کیمیزیہ ، لمستدرک سر ۱۳۳۳ طبع دارالکتاب العربی، زاد فعاد بخفیق شعیب الا بناؤط وعبد القادر الا بناؤط ار ۹۱ ۲۱ طبع مؤسسة الربالہ)۔

⁽٢) شرح الجز دريلاا نصاري ٢١٠

⁽۱) شرح الجزر بيلا نصاري ولقاري رص ٢٢، نهاية القول المفيد رص ١٠٠٥-

⁽٢) لو مقان للسيوطي، ار ١٠٢، نهاية القول المفيدرص ٢٠-

تحالف، کبیس ، تجیر ۱-۲

تججير

تعریف:

ا - افت اور اصطالح میں تجیر یا احتجاریہ ہے کہ کسی زمین کی جاروں جانب پھر یا کوئی دوسری علامت رکھ کرزمین کو قاتل کاشت بنانے سے دوسروں کوروکا جائے،

یه اختصاص کا فائده ویتا ہے، ملکیت کانہیں ⁽¹⁾۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

الساح فقہاء کا اس بات پر اتفاق ہے کہ جس زمین کی تجیر کی جا چکی ہو اس کو قاتل کا شت بنانا جائز نہیں ہے ، کیونکہ جس نے اس کی تجیر کی ہے وہ دوسرے کے مقابلہ میں اس سے نفع اٹھانے کا زیا وہ ستحق ہے ، البتہ اگر وہ شخص اس کو بریار چھوڑ دے تو اس کے تعلق فقہاء کے یہاں تفصیلات ہیں۔

حفیہ اور مالکیہ نے تجیر کے ذریعیہ عاصل ہونے والے اختصاص کے لئے ایک آخری مدت مقرر کی ہے جو تین سال ہے۔ یہ عظم تو دیائہ ہے، اور قضاء یہ ہے کہ اس مقررہ مدت کے گزرنے سے قبل کوئی دوسر المحفق اس کو تامل کا شت بنالے تو وہ اس کا مالک ہوجائے گا۔ حفیہ کے فزدیک یجی تھم ہے، اگر وہ اس کو تامل کا شت نہ

(۱) لسان العرب، المصباح لم مير ماده: "جَرُ"، القتاوي البنديه ۱۸۵ ۳۸، شرح فتح القدير ۸۸ ۱۳۸، ۱۳۹، طعية الدسوتی سهر ۲۰ طبع عیمی الحلمی بمصر، المغنی لابن قد امه ۱۸ ۵۵تحالف

د کیھئے:''حالف''۔

تحبيس

ر میکھئے:'' وقف''۔

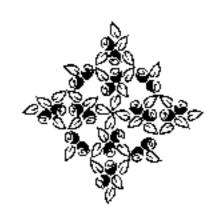


تحدید ۱-۲

ہنائے تو امام اس سے لے کر دوسرے کو دے دے گا، اس لئے کہ حضرت عمر کافر مان ہے کہ تجیر کرنے والے کو تنین سال کے بعد کوئی حق حاصل نہیں ہے (۱)۔ حق حاصل نہیں ہے (۱)۔

شا فعیہ کا مذہب جو حنابلہ کی ایک روایت ہے، یہ ہے کہ اگر تجیر کرنے والا محض زمین کو استعال میں نہ لائے اور اس کو قاتل کا شت بنانے والا کوئی دوہر المحض آجائے تو الیمی صورت میں تجیر کرنے والا محض عی اس کا زیادہ مستحق ہے۔

حنابلدگی دومری روایت بیہ بے کہ بغیر استعال کے تجیر بے سود ہے، اور حق تو ای شخص کا ہے جو اس زمین کو قاتل کا شت بنائے (۱۳)۔ تفصیل" احیاء الموات" (ج ۱۹/۴) کی اصطلاح میں گزر چکی ہے۔



(۱) شرح فتح القديم ۸م ۱۳۸۸، ۱۳۹۹ طبع دار صادر، رد الحتار ۸۵ / ۲۵۸، الفتاوي البنديه ۸۷ ۸ ۳، الدسوقی ۱۸۷۳، الربو کی ۱۸۷۷، ۱۳

(۲) نمهایید اُکتاع ۳۳۷،۳۳۷،۳۳۷ طبع اُمکتبته لا سلامیه، شرح اُمهاع سهر ۹۱، ۱۳۹۰، اُمغنی لا بن قد امه ۵۲۹، ۵۷۰، کشاف القتاع سهر ۱۳۹۹

تحديد

تعریف:

1- افت کے اعتبار سے تحدید "حکد"کا مصدر ہے، اور" عد" کی حقیقت روکنا اور دو چیز وں کے درمیان فرق کرنا ہے۔ کہاجاتا ہے: "حددت اللداد" جب کوئی شخص گھر کی آخری عدیں ذکر کر کے اس کواں کے قرب وجوار کے مکانات سے متاز کردے (۱)۔

اورفقہاء کی اصطلاح میں شن کی تحدید سے مرادال کے عدووکو ذکر کرنا ہے۔ اور بیزیا دور زمین وجائیداد میں مستعمل ہے جیسا کہ لوگ کہتے ہیں: "اِن ادعی عقادًا حددہ" (اگر کسی نے کسی زمین کا دعوی کیا ہے تو وہ اس کی تحدید کرے) یعنی مدی اس کے عدود بیان کرے (۲)۔

متعلقه الفاظ: الف-تعين:

ا تعین افتی کامعنی ہے: کی چیز وں میں ہے کسی ایک کو خاص کرنا ، کبا جاتا ہے: "عینت اللیدة" جب تم کسی متعین روزہ کی نیت کرو، اورائ سے خیار تعیین ہے، یعنی بیک خرید اردویا تین چیز وں میں ہے کسی ایک کو اس شرط پر خرید ہے کہ وہ اس کو تین ونوں کے اندر اندر متعین کرے گا(۳)۔

- (۱) لسان العرب، لمصباح لممير ماده " حددٌ "
- (۳) ابن عابدین سهر ۱۳۰۰، سهر ۱۳ س، الفتاوی ابر از بینی البندیه ۱۹/۱س، فتح القدیر ۱۵/۱۵
 - (m) الفتاوي البنديه سر ۵۳ ـ

تحديد ٣-٥ تحرّف ١-٢

ب-تقدير:

سو - تقدیر قدر سے ماخو ذہے۔ اور کسی شی کاقدر اور اس کی مقدار اس کے اندازہ کرنے کا آلہ ہے، لبذ القدیر کا معنی ہے: کسی شی کی مقدار مقرر کرنا یا اس کا اندازہ کرنا میا کسی امر کی در تنگی اور تیاری میں غور وفکر کرنا یا اس کا اندازہ کرنا میا کسی امر کی در تنگی اور تیاری میں غور وفکر کرنا ۔ اور ای سے قاضی کی طرف سے تعزیر میں جرم سے بازر کھنے والی ایسی سزا کی تقدیر (تعیین) ہے جوجرم اور مجرم کے مناسب حال ہو (۱)۔

اجمالي حكم:

سا - زمین و جائداد سے تعلق عقود میں معقود علیہ (مبیعے) کی حدیمان کرنا جس سے جہالت ختم ہوجائے ، محت عقد کے لئے شرط ہے ، اور وعوی کے سیح ہونے کے لئے اس کی حدیمان کرنا شرط ہے ، کیونکہ زمین کو حاضر کرنا ممکن نہیں اور ایٹارہ سے اس کی پیچان کرانا دشو ارہ تو ارہ تو صدود کے ذر معیمی اس کی پیچان کرائی جائے گی چنانچ مدی صدود اربعہ کو بیان کرے گا اور حدود والوں کے نام ونسب اور محلّہ اور شہر کا ذکر کرے گا ور حدود والوں کے نام ونسب اور محلّہ اور شہر کا ذکر کرے گا ور خری کے نہ ہوگا (۲) کے

اس کی تفصیل" وعوی" کی اصطلاح میں ہے۔

بحث کے مقامات:

۵- فقہاء مدعا (وہ شی جس کا وعوی کیا جائے) کی تحدید کو'' کتاب الدعوی" میں اور معقو دعلیہ (مہیع) کی تحدید کو'' نیچ" اور'' اجار ہ'' وغیر ہیں ذکر کرتے ہیں۔
 میں ذکر کرتے ہیں۔

(۱) لسان العرب ماده " قدرً"، ابن ها بدين سر ۱۷۷، جوام لو کليل ۱۲۹۹، المغني ۸ مر ۲۳۳س

(٣) ابن عابدين ١١٧٣ م، الاختيار ١٣ م ١١٠ تنكملة فتح القدير ٢٥ ١٥ ١٥.

تحرّ ف

غريف:

ا - تر ف كاليك معنى لفت بين ماكل بيونا اوركسي شي سے اعراض كرنا ہے۔ كباجانا ہے: حوف عن الشنى يحوف حوفًا و تحوف: اس نے اعراض كيا، اور جب كوئى شخص كسى شئ سے رخ پيم سے تو كبا جانا ہے: تحرف (1)۔

اور اصطااح میں اس کا اطااق جنگ میں گرف اختیار کرنے پر ہوتا ہے بعنی بیدکر مقتضائے حال کے مطابق جنگ کی ایک پوزیشن کو چھوڑ کر دوسری کوئی ایسی پوزیشن اختیار کی جائے جو جنگ کے زیادہ مناسب ہو، یا ایک جماعت کو چھوڑ کرکسی دوسری ایسی جماعت سے لڑنے کا تصد کیا جائے جو اس سے زیا دہ اہم ہو، یا دہمن پر پھر پور حملہ کے لئے اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کر کے جس کو پاناممکن ہو، اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کر کے جس کو پاناممکن ہو، اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کر کے جس کو پاناممکن ہو، اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کر کے جس کو پاناممکن ہو، اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کر کے جس کو پاناممکن ہو، اس کی کسی ایسی کمین گاہ کی تااش کی جائے (۳)۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

اگر مسلمانوں اور کافر وں کی نوج میں مقابلہ ہواور کافر وں کی تعد ادمسلمانوں سے دو گئی ہویا کم ہوتو بھا گنا اور واپس ہونا حرام ہے۔

⁽۱) لسان العرب العنجاح، المصياح المعيم ماددة " حرف" ـ

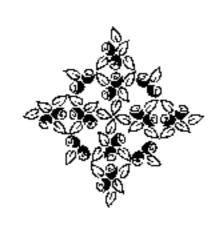
⁽٣) تغيير روح فعالي ١٨ الطبع ادارة الطباعة المعيرية بمصر، أمغني مع الشرح الكبير وارادة المعالم المعلم المارة الطبع الكبير وارادة ٥٥١ هم المعار بمصرطبع اول، شرح الزرقاني ١١٥ الطبع دار الفكر بيروت.

الایدک وہ جنگ کے لئے چال چاں رہا ہوتو الی صورت میں اس کے خال چان ہوتا جائز ہے، کیونکہ اللہ تعالی کا لئے چال چان ہے، کیونکہ اللہ تعالی کا فرمان ہے: ''یا أَیُّهَا الَّذِیْنَ آمَنُوْ اِذَا لَقِیْتُمُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْ از حُفَّا فَلاَ تُولُوُ هُمُ الْاَدُہارَ، وَمَنْ یُّولِیهُم یَوْمَئِذِ دُبُرَهُ إِلاَّ مُتَحَرِفًا فَلاَ تُولُو هُمُ الْاَدُہارَ، وَمَنْ یُولِیهُم یَومَئِذِ دُبُرهُ إِلاَّ مُتَحَرِفًا فَلاَ تُولُو هُمُ الْاَدُہارَ، وَمَنْ یُولِیهِم یَومَئِذِ دُبُرهُ إِلاَّ مُتَحَرِفًا فَلاَ تُولُو هُمُ اللهِ وَمَا وَاهُ لَيْتَالِ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِيئَةٍ فَقَدُ بَاءَ بِغَضَبِ مِنَ اللهِ وَمَا وَاهُ جَهَنَّمُ وَ بِئُسَ الْمُصِينُو '(ا)(اے وہ لوکو جوایان لاے ہوجب تمہرارامقابلہ کافروں ہے میدان جنگ میں ہوتو تم ان کے سامتے پیج میں واور جو ان کے سامتے ہی میں ہوتو تم ان کی سامتے پیج میں واور جو ان کے سامتے ہی اس دن پیچ پیجرے کا سوائے اس کے سامتے ہی میں وور مرک نوج سے جاملنا چاہتا ہوتا ہوتو وہ اللہ کے خاص کا متحق ہوگا اور اس کا تھانے نہ جہنم ہوگا جو بہت ی ہوتو وہ اللہ کے خضب کا مستحق ہوگا اور اس کا تھانا نہ جہنم ہوگا جو بہت ی ہوتو وہ اللہ کے خضب کا مستحق ہوگا اور اس کا تھانا نہ جہنم ہوگا جو بہت ی ہوتو وہ اللہ کے خضب کا مستحق ہوگا اور اس کا تھانا نہ جہنم ہوگا جو بہت ی ہوتو وہ اللہ کے خصب کا مستحق ہوگا اور اس کا تھانا نہ جہنم ہوگا جو بہت ی ہوتو کا دہ ہوگا نہ ہے)۔

دوران جنگ چال چلے والا خض وہ ہے جوحالات کے تقافیہ کے مطابق ایک ہے دوہری جگہ چا جائز کے مطابق ایک ہے دوہری جگہ چا جائے، آبداس کے لئے جائز ہے کہ نگل جگہ ہے کشادہ اورہموارز بین کی طرف اس کا پیچھا کرے، یا وہ ایک کشادہ اورہموارز بین کی طرف اس کا پیچھا کرے، یا وہ ایک کملی جگہ ہے دوہری کسی ایسی جگہ کی طرف متقل ہوجائے جو کملی ہوئی نہ ہوتا کہ وہ اس جگہ گھات بیس رہے اور جملہ کردے، یا اپنی جگہ ہے اس جگہ تنقل ہوجائے جو اس کے مقابلہ بیس ہوایا دھوپ یا پیاس ہے اس جگہ تنقل ہوجائے جو اس کے مقابلہ بیس ہوایا دھوپ یا پیاس ہو اس جگہ تنقل ہوجائے جو اس کے مقابلہ بیس ہوایا دھوپ یا پیاس ہو اس جائے متابلہ بیس ہوایا دھوپ یا پیاس جائے ہیں اور اس کو ان بیس موقعہ ل جائے، یا پیاڑ وغیرہ کا سہار الے جو جائمیں اور اس کوان بیس موقعہ ل جائے، یا پیاڑ وغیرہ کا سہار الے جو وہ ایک دن خطبہ دے رہے بھے کہ اچا نگ فر مایا: ''یا ساریة بن وہ ایک دن خطبہ دے رہے بھے کہ اچا نگ فر مایا: ''یا ساریة بن زنیم پیاڑ کی طرف ہوجاؤ) حالا نکہ زنیم الحجیل'' (اے ساریہ بن زنیم پیاڑ کی طرف ہوجاؤ) حالا نکہ زنیم نا لیجیل'' (اے ساریہ بن زنیم پیاڑ کی طرف ہوجاؤ) حالا نکہ زنیم الحجیل'' (اے ساریہ کی ایک کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کو عراق کے ایک کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کو کی ایک کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کو کی ایک کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے انہوں نے ساریہ کو کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کا کہ کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیا کی کوشہ بیں وہاں کے باشندوں ہے دو اور اس کی باشندوں ہے کی کیک کوشہ بیں وہ اس کی باشندوں ہے کوشہ بیا کی کوشہ بیس کی کوشہ بی وہاں کے باشندوں ہے کوشہ بیا کی کی کوشہ بیا ک

جنگ کرنے کے لئے بھیج رکھا تھا۔جب نوج واپس آئی تو اس نے بتایا کہ اس کا مقابلہ دشمن سے جمعہ کے دن ہوا، دشمن غالب آر ہاتھا کہ اس نے حضرت عمر گی آ واز سنی تو وہ پیاڑی طرف چلی گئی اور دشمن سے محفوظ ہوگئی اور دشمن پر غالب آگئی۔ اور جنگی حال چلنا بلا اختلاف جمہور فقتہاء کے نز دیک جائز

اور جنگی حال چلنا بلا اختلاف جمہور فقہاء کے مزد یک جائز ہے، مر مالکیہ نے اس کو امیر الموشین اور امیر لشکر کے علاوہ کے لئے جائز اردیا ہے اور جہاں تک ان دونوں کا تعلق ہے تو ان کے لئے میہ مائز ہے، کیونکہ اس کی وجہ سے نقص اور خرابی پیدا ہوتی ہے (۱)۔
ما جائز ہے، کیونکہ اس کی وجہ سے نقص اور خرابی پیدا ہوتی ہے (۱)۔
اس کی تفصیل کا مقام اصطلاح ''جہاد'' ہے۔



) تغییر القرطبی ۷۷ ه ۳۸، تغییر روح المعانی ۶ ر ۱۸۰، ۱۸۳، تغییر الطیری ۶ ر ۲۰۱، ۲۰۱، بوائع الصنائع ۷۷،۹ شع ول (الجمالیه) مهم، نهایته المتناج ۸ ۲۲، ۲۳، روصته الطالبین ۱۰ / ۲۳، المغنی مع المشرح الکبیر ۱۰ / ۵۵۱، ۵۵۲، کشاف القتاع سهر ۲ ۲، شرح الزرقافی سهر ۱۵ الطبع دار الفکر بیروت، حاصیة الدروتی علی المشرح الکبیر ۲ / ۱۵۵،۵۵ طبع دار الفکر

تحرّ ی

تعریف:

ا - تر ی کالغوی معنی اراده کرنا اور تایش کرنا ہے، چنانچ کہنے والے کہتے ہیں: "اقتحوی مسوقت " یعنی بیس آپ کی رضا چاہتا ہوں، ای سے اللہ تعالی کافر مان ہے: "فاُولئِکَ قَحَرَّوُا رَشَدًا" () ہوں، ای سے اللہ تعالی کافر مان ہے: "فاُولئِکَ قَحَرَّوُا رَشَدًا" () راس نے تو ہمای کی کاراستہ وُصوف نکالا) اور ای سے رسول اللہ علی کے صدیث ہے: "قتحووا لیلہ القلو فی الوقو من العشو الأواحو من العشو کروا ہوں میں شب قدر کوتایش کروا ہوں میں شب قدر کوتایش کروا ہینی اس کی تایش کا اینتمام کرو(اس اور اصطار حیل میں میقصود کو حاصل کرنے کے لئے کوشش کرنا، یا کسی چیز کی حقیقت معلوم نہ ہونے حاصل کرنے کے لئے کوشش کرنا، یا کسی چیز کی حقیقت معلوم نہ ہونے حاصل کرنے کے لئے کوشش کرنا، یا کسی چیز کی حقیقت معلوم نہ ہونے کے وقت غالب گمان کے ذریعہ اس کی تایش کرنا ہے کا اس کی تایش کرنا ہے کہا ہوں کے وقت غالب گمان کے ذریعہ اس کی تایش کرنا ہے کہا ہوں اس کرنا ہوں کا تایش کرنا ہوں اس کرنا ہوں کے وقت غالب گمان کے ذریعہ اس کی تایش کرنا ہے کا اس کی تایش کرنا ہوں کی تایش کرنا ہوں کا کرنا ہوں کی تایش کرنا ہوں کا کہنا ہوں کا کا کوشش کرنا ہوں کی تایش کرنا ہوں کہنا ہوں کہنا ہوں کے وقت غالب گمان کے ذریعہ اس کی تایش کرنا ہوں کی تایش کرنا ہوں کہنا ہوں کہنا ہوں کہنا ہوں کہنا ہوں کہنا ہوں کرنا ہوں کہنا ہوں کو کی کا کہنا ہوں کو کھونا کی کا کو کی کے دولت غالب گمان کے ذریعہ اس کی تایش کیا گھونا کی کو کھونا کو کھونا کو کھونا کی کو کھونا کی کو کھونا کو کھونا کی کو کھونا کی کو کھونا کی کو کھونا کی کو کھونا کو کھونا کی کو کھونا کی کھونا کی کھونا کے کو کھونا کی کو کھونا کو کھونا کو کھونا کی کھونا کے کھونا کو کھونا کو کھونا کو کھونا کو کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کو کھونا کی کھونا کی کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کی کھونا کو کھونا کھونا کو کھون

متعلقه الفاظ:

الف-اجتهاد (كوشش كرنا):

٢- تحرى اور اجتباد دوقريب المعنى الفاظ بين، اور ان دونوں كامفهوم

- (۱) سورهٔ چن از سما_ت
- (٣) حديث التحووا لبلة القدر كل روايت بخاري (النتج ١٥٩ مع ٢٥ طبع التنافير) ني كل ب
- (٣) المصباح لممير ، تا مج العروس، لسان العرب، مثن الملعه، العجاح ماده " حري"،
 أموسوط ١٠١٠ ١٥ الطبع وارالمعرف، القرطبي ١٩٢٥.
- (٣) ابن عابدين ار ١٩٠٠، ٣ / ١٤، أموسوط ٢/٥ ٨ اطبع مصطفیٰ المبالي الحلمی، مطالب أولی أثنی ار ۵۵۔

مقصودکو عاصل کرنے کے لئے پوری کوشش کرنا ہے، ممر لفظ اجتہا دیلاء کے عرف میں مجتہد کی طرف سے کی گئ اس انہائی کوشش کے ساتھ فاص ہوگیا ہے جواد کام شریعت کانلم عاصل کرنے کے لئے وہ صرف کرنا ہے، نیز اس کوشش کے ساتھ جو پیش آنے والے واقعہ کا تکم دلائل ہے معلوم کرنے کے سلسلے میں صرف کی جاتی ہے۔ دلائل ہے معلوم کرنے کے سلسلے میں صرف کی جاتی ہے۔ تخری بھی دلیل سے ہوتی ہے اور بھی بغیر کسی علامت کے کے محض قلب کی شہادت سے (۱)۔

ال طرح ہر اجتہا دیجری ہے اور مرتحری اجتہا ذہیں۔

ب-توخي (اراده کرنا):

سا- توخی ' وخی ' علی ماخوذ ہے بمعنی ارادہ کرنا، اس طرح تحری اور توخی ہر اہر ہیں، مرتوخی کا استعال معاملات میں ہوتا ہے، جیسا کہ رسول اللہ علی ہے ان دو شخصوں سے جومیراث کے متعلق جمگر رہ ہے بحض مایا: ''اذھبا و تو خیا، و استھما، ولیحلل کل واحد منکما صاحبہ ''(۲) (جاؤح کی کا تصد کرواور تر مداندازی کرلواور تم میں کاہر شخص این ساتھی کوہری کردے)۔

اور تحری کا بیشتر استعال عبادات میں ہوتا ہے (۳) جیسا ک رسول اللہ علیافی نے فر مایا: "اِذا شک احد کم فی الصلاة فلیتحو الصواب" (۳) (جبتم میں سے کسی کو اپنی نماز میں شک

- (۱) المستصفى للغوالى ۱۳ م ۳۵۰، الفروق فى الملعه ۱۹، ۵۰، حاشيه ابن عابدين ار ۴۹۰ طبع دارالتر اث العرلي پيروت -
- (۲) حدیث: "افھبا وہو جیا "کی روایت احمد (۳۰/۱۳ طبع کمیریہ) اور ابوداؤد(۱۳/۱۳ طبع عزت عبید دھاس) نے کی ہے اور اس کی سند صن ہے۔
 - (٣) الموسوط ١٨١٠ الطبع دار أمعر في تقن الملعد مادية "وفي" _
- (۳) عدیده: "بذا شک أحد كم " كي روايت بخاري (الشخ ار ۵۰۳ طبع التقبر) ورسلم (ار ۲۰۰ م طبع الحلمي) نے كي ہے۔

ہوجائے تواسے جاہتے کہ درست پہلو کا تصد کرے)۔

ج-ظن(گمان کرنا):

ادراک، چنانچ طن کامعنی ہے: نقیض (خالف) کے اختال کے ساتھ رائے پہلوکا ادراک، چنانچ طن میں دو مور میں ہے ایک کو دومر ہے پرتر ججے دینا ہوتا ہے، توبیہ اگر بلا دلیل ہوتو تابل مذمت ہے اور تحری میں غالب مگان کے ذر فید ترجیح دینا ہوتا ہے۔ بیا یک ایسی دلیل ہے جس کے مگان کے ذر فید ترجیح دینا ہوتا ہے۔ بیا یک ایسی دلیل ہے جس کے ذر فید ترجیک پہلوتک رسائی ممکن ہے اگر چہ اس کے ذر فید کسی فرر فید تاب ہوتا ہے اگر چہ اس کے ذر فید کسی ایسے امر تک رسائی نہیں ہوگئی جونام کو متلزم ہو، اور ظن کا استعمال بھی ایسے امر تک رسائی نہیں ہوگئی جونام کو متلزم ہو، اور ظن کا استعمال بھی یونین کے معنی میں بھی ہوتا ہے (۱) جیسے اللہ تعمالی کا ارشا د ہے: ''اللّٰہ فیفُ مُلاقف کو رَبُّھ ہُمُ ''(۲) (جنہیں اس کا خیال رہتا ہے کہ بُنظِینُ اللّٰہ مُنظِینُ کَ اللّٰہ مُنظِینُ کَ اللّٰہ مُنظِینُ کَ اللّٰہ مُنظِینُ کَ اللّٰہ ہُمُ مُلاقف کُر رُبُّھ ہُمُ ''(۲) (جنہیں اس کا خیال رہتا ہے کہ انہیں ایپ پر وردگار سے ملنا (بھی) ہے)۔

د-شک:

۵- شک کامعنی ہے: ہر اہر ورجہ کے اختالات کے ورمیان تر وو، یعنی اس کے بغیر کہ شک کرنے والے کے نزد یک ان دونوں میں سے کسی ایک کودوسر ہے ہر ترجے حاصل ہو(۳)۔ تے کسی ایک کودوسر ہے ہر ترجے حاصل ہو(۳)۔ تے کسی شک کوز ائل کرنے کا ایک ذر میں ہے۔

شرعی حکم: ۲-تری شرور

۲ - تری مشر وٹ ہے اور اس بر عمل کرنا جائز ہے۔ اس کی دلیل کتاب وسنت اور عقل سے ہے:

كَتَابِ الله ع الى كَل وليل بيآيت ع: " يَا أَيُّهَا اللَّفِيْنَ

- (1) لموسوط ١٨٢٨ اطبع دار أمعر في أنعر بيفات للجرجاني أمصباح لممير بادة" تحن"
 - (۲) سورة يقره ۱۲ س
 - (٣) المصباح لممير ، انعر بفات للجرجا في ماده "شك"، أمرسوط ١٨١٠ مار

آمَنُوا إِذَا جَاءَ كُمُ الْمُوْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَجِنُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُوْمِنَاتٍ فَلاَ تَوْجِعُوهُنَّ اللَّهُ إِلَى الْكُفَّادِ (() (اے ایمان والو جب تمہارے پاس مسلمان عورتیں ہجرت کر کے آئیں تو ان کا امتحان کرلیا کرو، اللہ ان کے ایمان سے خوب واقف ہے، پس آگر آئیس مسلمان سجھ لوتو آئیس کافروں کی طرف مت واپس کرو)۔

اور ینچری اور غالب گمان کے ذر معید ہوگا اور ای پر علم کا اطلاق کیا گیا ہے۔

اورسنت سے دلیل وہ دو عدیثیں ہیں جوتو خی سے تعلق بحث کے ممن میں گذر چکی ہیں۔

اور عقلی دلیل بیہ کہ احکام شرعیہ سے متعلق اجتہا و پر عمل کرنا جائز ہے، اور بیغالب رائے پڑھل کرنا ہے، پھرا سے احکام شرئ کے نصوص میں سے ایک نص فر اردے دیا گیا اگر چہ ابتداء اس سے احکام خابت نہیں ہوتے۔ ای طرح تحری بھی ادائیگی عبادت تک رسائی حاصل کرنے کا ایک ذر میہ اور وسیلہ ہے اگر چہ اس کے ذر میہ رسائی حاصل کرنے کا ایک ذر میہ اور وسیلہ ہے اگر چہ اس کے ذر میہ عبادت کا اثبات ابتد افییس ہوتا (۲)۔

علاوہ ازیں احکام شرع میں تحری کا بیان بہت می جگہوں پر ہوا ہے، اور مقامات کے اختلاف سے اس کا حکم بھی مختلف ہوتا ہے:

اول: پاک اور ناپاک اشیاء کے باہم مل جانے کی صورت میں پاکشن کومعلوم کرنے کے لئے تحری کرنا: الف-برتنوں کاباہم مل جانا:

2- اگر وہ برتن جن میں پاک پانی ہوا لیے برتنوں کے ساتھ مل جا کیں جن میں باک ہائی ہوا لیے برتنوں کے ساتھ مل جا کمیں جن میں با پاک پانی ہو، اور معاملہ مشتبہ ہوجائے اور اس کے

- (۱) سوره کند ۱ وال
- (۲) الروط الاهما، ۱۸ مار

پاس اس کے علاوہ کوئی دوسرایا ٹی نہ ہونیز پاک ناپاک سے ممتاز نہ ہو سکے:

تو اگر غلبہ پاک پانی والے بر تنوں کا ہوتو حفیہ اور بعض حنابلہ کے نزدیک تحری کی جائے گی۔ اس لئے کہ حکم غالب کا ہوتا ہے اور غالب ہونے کے انتہار سے پاک پانی کا استعال اس پر لازم ہوگا، اور تحری کے در بعیہ اس کے حجے تک پہنچنے کی امید ہے، نیز اس وجہ سے اور تحری کے ذر بعیہ اس کے حجے تک پہنچنے کی امید ہے، نیز اس وجہ سے کہ اباحث کا پہلور انجے ہے۔

اور اگر غلبہ ما پاک برتنوں کا ہویا دونوں برابر ہوں تو اس کے لئے تخری کرنا جائز نہیں ہے، ہاں ہوفت ضرورت پینے کے لئے جائز ہے، کیونکہ اس کے پاک اس کاکوئی بدل نہیں ۔ بخلاف وضو کے کہ اس کا ایک بدل ہیں ۔ بخلاف وضو کے کہ اس کا ایک بدل ہے (۱)۔

امام احمد اور ان کے بیشتر اصحاب کے کلام کا ظاہر بیہے کہ گری جائز نہیں ہے اگر چیفلبہ یا ک بر تنوں می کا ہو (۴)۔

اور ثنا فعیہ کے فردیک دونوں حالتوں میں تحری جائز ہے، چنانچ وہ انلب سے وضو کرے گا، اس لئے کہ بینماز کے لئے شرط ہے، لہٰد ا اس کے لئے تحری ای طرح جائز ہے جیسے قبلہ کے لئے (۳)۔

مالکید کی رائے بیہ ہے کہ جب اس کے پاس تین برتن نا پاک ہوں یا با پا کی سے ملوث ہوں اور دو پاک ہوں اور باہم گذشہ ہوں اور دو پاک ہوں اور باہم گذشہ ہوں کی تعداد کے مطابق تین برتوں سے وضوکرے اور ہر وضو سے وضوکرے اور ہر وضو سے نماز اداکرے (۳)۔

اور مالکید میں سے ابن الماجشون نے ایک دوسر اقول نیقل کیا

- (۱) کمیسوط ۱۰ ایران هایدین ۵۷ تا ۲۳ ماه ۲۵ سازه ۷ سازه کام انگفتی از ۲۰ الا
 - (۴) المغنی ایر ۱۹۰۰ الا ب
 - (٣) نماية الختاج الرحمية من وهوراول
 - (۳) الدسوقي الر۸۴_

ہے کہ وہ ہر ایک برتن سے وضو کرکے نماز ادا کرے(۱), تفصیل " " شتباد" کی اصطلاح میں ہے۔

ب- كيڙون كابا جم ل جانا:

۸- اگرکسی شخص پر پاک کپڑے ناپاک کپڑے کے ساتھ مشتبہ ہوجا کیں اور ان کے درمیان اتنیاز ناممکن ہواور اس کے پاس اس کے علاوہ بیتی طور پر کوئی پاک کپڑانہ ہواور نہ کوئی ایسی چیز اس کے پاس ہوجس سے وہ ان کو دھو سکے اور وہ ناپاک سے پاک کومتا زنہ کرسکتا ہواور اسے نماز کی ضرورت ہوتو حفیہ کے نز دیک وہ تحری کرسکتا ہواور اسے نماز کی ضرورت ہوتو حفیہ کے نز دیک وہ تحری کرسکتا ہواور اسے نماز کی ضرورت ہوتو حفیہ کرے میں نماز پڑھے جس کے تعلق اس کی تحری ہے، اوروہ اس کپڑے میں نماز پڑھے جس کے تعلق اس کی تحری ہوکہ وہ پاک کپڑوں کا یا دونوں پاک ہے ہواہ غلبہ پاک کپڑوں کا ہویا ناپاک کپڑوں کا یا دونوں کی ٹرے ہراہر ہوں۔

اور حنابلہ اور مالکیہ میں سے ابن الماحثون نے فر مایا کہ تحری جائز نہیں ہے، اور انہی کپڑوں میں سے ناپاک کپڑوں کی تعداد کے بقدر کپڑائین کر نماز اداکرے، اور ایک دفعہ دوسرے کپڑے کو پہن کر مزید نماز پڑھے۔ اور حنابلہ میں سے ابن تقیل نے فر مایا کسیجے قول کے مطابق مشقت کود فع کرنے کے لئے تحری کرےگا۔

اور ابو ثور اورمزنی نے فر مایا کہ ان میں سے کسی کو پہن کرنماز نہ پڑھے،جبیہا کہ برتن کے تعلق ان دونوں کاقول ہے (۲)۔

ج - ندبوح جانور کامر دار کے ساتھ ل جانا:

9 - اگر مروار جانوروں کے ساتھ مذبوح جانورال جائے تو حفیہ کا

⁽۱) المغنی ار ۲۹،۱۴_

⁽۲) کمسوط ۱۰۱ مر ۲۰۰۰ ما بن هایدین ۵ ر ۲۹،۳۲۱ مهماهینه الدسوتی ایر۹ ۵ ما دلیمطاب ایر ۲۹ منهاینه گفتاج ۳ بر کیا، ۱۸ ما کمفنی ایر ۳۳ در کیجیئه اثنتها ه کی اصطلاح به

خیال بدہے کہ حالت اضطرار میں مطلقاتحری کرنا جائز ہے، یعنی چاہے غلبہ مذبوح جانور کا ہویا مردار کایا دونوں ہراہر ہوں۔

اورحالت اختیار میں تحری جائز نہیں الا یہ کہ غلبہ طال کا ہو۔ اور انکہ ٹلانڈ کے نز دیک ایسی صورت میں تحری کی مطلقاً اجازت نہیں ہے (1)۔

د- حالت حيض مي*ن تحر*ي:

1- اگر کوئی عورت اپنے ایام حیش کی گفتی اور اس کی تاریخ بھول جائے اور حیش وطہر کے درمیان اس کی حالت مشتبہ ہوجائے تو جمہور فقنہاء کے اور کیش وطہر کے درمیان اس کی حالت مشتبہ ہوجائے تو جمہور اگر اس کی غالب رائے بیہوکہ وہ حالت حیش میں ہے تو اسے اس کا اگر اس کی غالب رائے بیہوکہ وہ پاک ہے تو اسے تکم دیا جائے گا، اور اگر اس کی غالب رائے بیہوکہ وہ پاک ہے تو اسے پاک عور توں کا تھم دیا جائے گا، کیونکہ گمان غالب بھی ایک دلیل اسے باک عور توں کا تھم دیا جائے گا، کیونکہ گمان غالب بھی ایک دلیل مشرق ہے۔

اوراگر وہ تنجیر ہ ہوجائے اور اس کا گمان غالب کسی طرف نہ ہوتو میتخیر ہ ہے یا بھولنے والی ہے، لہند الل کے لئے ضروری ہے کہ احکام میں احتیاط رحمل کرے (۲)۔

اور ال کے احکام کی تفصیل کے لئے'' حیض'' اور'' استحاضہ'' کی اصطلاحات کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

دوم: استدلال اورتحری کے ذریعہ قبلہ معلوم کرنا:

۱۱ - اگرنمازی استقبال قبله یر قادر بهو اوروه مکه میں بهو اور کعبه کو

- (۱) المرسوط ۱۰۱۱۹۱۱، ۱۹۸۰، ۱۹۸۰، ۱بن هایدین ۱۳۲۸، الفروق للفرافی ار ۲۲۲، نمیایته المتناع ار ۹۹، آنی العطالب ار ۲۳۰، الاشیاه و النظائر للسیوطی ۱۲۲۴، الفواعد لابن رجب رص ۲۳۰
 - (٣) ابن طابدين ار ١٩٠ مغنى اكتاع ار ٢ ٣٣٣ مغنى ار ٣٣١ _

دیکھنے اور اس کا مشاہد ہ کرنے کی حالت میں ہوتو فقنہاء کے درمیان اس میں کوئی اختلاف نبیس کہ اس پر عین کعبہ کی طرف متو جہ ہونا اور ذات کعبہ کے بالمتنامل ہونالازم ہے۔

اور اگر کعبہ سے دور اور ال سے غائب ہوتو حضیہ کا خیال ہیہ ہے کی خور وفکر کے ذریعیہ جہت کعبہ کی طرف متوجہ ہونا اس کے لئے کافی ہوگا، اور عین کعبہ کے سامنے ہونا ضروری نہیں، مالکیہ اور حنابلہ کے نزدیک یہی اظہر ہے اور امام ثافعی کا ایک قول بھی یہی ہے۔

اور شا فعیہ کا قول اظہر جومالکیہ کا ایک قول اور حنابلہ سے ایک روایت بھی ہے، یہ ہے کہ اس پر عین کعبہ کے سامنے ہونا لازم نہیں (1)۔

جمہور فقہاء کے نزدیک صحابہ کی تحرابوں کی موجودگی میں غور وفکر کرنا جائز نہیں ہے۔ ای طرح مسلمانوں کی ان تحرابوں کی موجودگی میں جس کی طرف رخ کر کے بار ہانمازیں ادا کی گئی ہوں۔

ای طرح غور وفکر کرنا ال وفت بھی جائز نہیں جب ال جگہ رہنے والوں میں کوئی ایسا شخص ال کے باس موجود ہوجو جہت قبلہ سے واقف ہو اوروہ ال سے دریافت کرسکتا ہو، بشرطیکہ وہ مقبول الشہادت ہو، لہذ اذمی ، جاہل، فاس اور بچہ کی خبر کا اس جگہ کوئی اعتبار نہیں ہوگا۔

(۱) یوائع لصنا تکح ار ۸۱۱، طبع دار اکتاب العربی، الحطاب ار ۵۰۸ طبع دارالفکر بیروت، نمیاییة الحتاج ار ۳۲ ساور اس کے بعد کے صفحات طبع مصففیٰ المبالی الحلمی، المغنی ار ۳۳ ساطبع مکتبة الریاض الحدید۔

غور وفکر کی صلاحیت رکھنے والاشخص وہ ہے جو دلاکل قبلہ سے واقف ہو، جو بد ہیں: ستار ہے، سورج ، چاند، ہوا، پیاڑ، نہریں اور ان کے علاوہ دوسر کے ذر الله اور علامات اگر چہوہ احکام شرع سے اواقف ہو، اس لئے کہ ہر وہ شخص جو کسی شئ کی علامات کا علم رکھتا ہووہ اس کے معلاوہ متعلق غور وفکر کرنے والوں میں سے ہے، اگر چہوہ اس کے علاوہ ہور سے اواقف ہو۔

اور اگر وہ علام**ات قبلہ ہے نا** واقف ہویا اند صابوتو وہ مقلد ہوگا، اگر چہوہ اس کے علاوہ امور سے واقف ہو⁽¹⁾۔

البذ اوہ نمازی جوغور وفکر کرنے پر قا در ہواگر بغیر غور وفکر کے نماز

پر اصلے تو جمہور فقہاء کے آو ال سے بیہ سیس آتا ہے کہ اس کی نماز

درست نہ ہوگی۔ اگر چہ وہ قبالہ کی طرف رخ کر کے اواکی گئی ہو۔ اس

طرح اگر اس کے غور وفکر نے ایک جہت کی طرف رہنمائی کی اور اس

نے اس کے علاوہ کی جانب رخ کر کے نماز پر اصلی، پھر اسے بیمعلوم

ہواکہ اس نے جہت کعبہ کی طرف رخ کر کے نماز اواکی ہے تو بھی اس

کی نماز انکہ اربعہ کے فرد کی باطل ہوگی، اس لئے کہ اس نے واجب

کورٹ کر دیا ہے جیسا کہ اگر کسی نے نماز پر اصلی یہ بھے تھوے کہ وہ

محدث ہے پھر معلوم ہواک وہ تو پاک ہے (۱۲)۔

اں کی تفصیل کے لئے'' استقبال'' کی اصطلاح کی طرف رجوٹ کیاجائے۔

۱۲ - جو شخص علامات کے ذریعیہ قبلہ معلوم کرنے سے عاجز ہو، ہا یں طور کہ قیدیا با دل کی وجہ سے علامات اس برخفی ہوں ، یا وہ اس برمشتبہ

ہوجا کیں یا وہ آپس میں متعارض ہوجا کیں اور وہاں کوئی ایسا شخص موجود نہ ہو جو اس کو بتائے ، تو اس کے متعلق فقہاء کے درمیان اختاا ف ہے، چنا نچ حفیہ اور حنابلہ کا ند بب جو مالکیہ کا قول معتمد بھی ہے، چنا نچ حفیہ اور حنابلہ کا ند بب جو مالکیہ کا قول معتمد بھی ہے، یہ ہے کہ اس پرتحری کرنا لازم ہے اور اس کی نماز سیجے ہوگی ، کیونکہ انسان بقدر وسعت و امکان عی مکلف ہے، اور اس کی قدرت میں صرف تحری ہے۔

اور ثنا فعیہ کے نز دیک مشہور بیہے کہ احتر ام وقت کے پیش نظر جس جہت کی طرف بھی ممکن ہونماز پڑھ لے بخواہ وقت میں گنجائش ہو بیا نہ ہو، اور چونکہ اس نشم کا واقعہا درہے اس لئے تضاکرے (۱)۔

اوراس سلسلے میں اسل وہ روایت ہے جو حضرت عامر بن رہید اسلامی کے انہوں نے فر مایا: "کنا مع رسول الله علیہ فلے فلے فلے ندر آین القبلة، فصلی کل رجل منا علی حیاله، فلما اصبحنا ذکونا ذلک لوسول الله علیہ فنزل قول الله عالی: "فَاَیْنَمَا تُولُوا فَئَمٌ وَجُهُ اللّهِ" (۲) (تم فنزل قول الله تعالی: "فَاَیْنَمَا تُولُوا فَئَمٌ وَجُهُ اللّهِ" (۲) (تم نیل فنزل قول الله تعالی: "فَایْنَمَا تُولُوا فَئَمٌ وَجُهُ اللّهِ" (۲) (تم نیل فنزل قول الله تعالی: "فَاَیْنَمَا تُولُوا فَئَمٌ وَجُهُ اللّهِ" (۲) (تم نیل فنزل قول الله تعالی: "فَایْنَمَا تُولُوا فَئَمٌ وَجُهُ اللّهِ" کے ساتھ ایک تاریک رات میں جُمُحص نے اپنے ہم بین معلوم کر سکے کہ قبلہ کس طرف ہے، اور تم میں ہم محض نے رسول الله علیال کے مطابق نماز اواکی پھر جب صبح ہوئی تو ہم نے رسول الله علیال کے مطابق نماز اواکی پھر جب صبح ہوئی تو ہم نے رسول الله علیال کے مطابق نماز اواکی پھر جب صبح ہوئی تو ہم نے رسول الله علیال کے مطابق نماز اواکی پھر جب صبح ہوئی تو ہم نے رسول الله علیال کے مطابق نماز اواکی پھر جب صبح ہوئی تو ہم نے رسول الله علیال کا یہ اور حضر سائل نے فر مایا کہ کری کرنے منہ پھیر واللہ عی کی ذات ہے) اور حضر سائل نے فر مایا کہ کری کرنے منہ پھیر واللہ عی کی ذات ہے) اور حضر سائل نے فر مایا کہ کری کرنے

⁽۱) ابن هایدین ار ۴۹۰ طبع داراحیاء انتر اعر لی، الرسوط ۱۹۲،۱۹۰ طبع دارافکر الدسوتی ار ۲۳۱ طبع دارافکر، نهاییه دار افکر الدسوتی ار ۲۳۲ طبع دارافکر، نهاییه الحتی جر ۴۳۰، ۱۳۳۰ سایم ۱۳۳۳، ۱۳۳۳ طبع مصطفیٰ البالی الحلمی، المغنی ار ۴۳۰، ۱۳۳۱ طبع مکتبة الریاض الحدید

⁽٢) ندايب اربعه كے مابقة واله جات _

⁽۱) حاشيه ابن عابدين ار ۹ ۴۸، بد انع الصنائع ار ۱۱۸، فتح القديم ۳۳۷، ۳۳۷ طبع دارا حياءالتر اے العربي، أمغنی ار ۳۳۳ طبع مکتبة الرياض المعدد، حاهية الدرو تی ار ۳۲۷، نهاية اکتاج ار ۳۳۳ طبع مصطفیٰ المبالی التحلی

⁽۲) سورۇپقر ۵/ ۱۱۵

معفرت عامر بن رہید کی عدیث کی روایت ابن ماجہ (۱۲۲۱ طبع الحلمی) نے کی ہے اور ابن کثیر نے اپنی تغییر میں اس سے متعلق عدیثیں ذکر کی ہیں۔ پھر انہوں نے فر ملا کہ ان سب کی سندوں میں ضعف ہے اور ٹارڈ ان میں سے بعض بعض کو تقویت کربیجاتی ہیں (تغییر ابن کثیر ابر ۲۷۸ طبع الا مالس)۔

دونوں امر ہر اہر ہوں تو وہ لیقین پر ہنا کر ہے گا بخواہ امام ہویا منفر د⁽¹⁾۔

سوم:نماز میں تحری کرنا:

ساا - جس شخص کونماز میں شک ہوجائے اور اسے بیمعلوم نہ ہوک اس نے کتنی رکعتیں پڑھی ہیں ، تو حضیہ کے فزد یک اگر اس کونماز میں بیشتر شک لاحق ہوتا ہواور اس کی ایک رائے ہوتو وہ تحری کرے گااور اپنی غالب رائے پر بنا کرے گا، اس لئے کہ رسول اللہ علی ہے نفر مایا: "من شک فی الصلاہ فلیت سے الصواب" (۱) (جس کونماز میں شک ہوجائے تو وہ درست پہلوکوتائی کرے)۔

اور ما لکیہ کے فز دیک کم پر ہنا کرے گا اور جس رکعت میں شک ہوا ہے اس کومطلقاً دوبار دا داکر ہے گا۔

اور ثافعیہ کا فدہب ہیں کہ اگر درمیان نماز میں شک ہوجائے تو کم کو اختیار کرنا ال کے لئے لازم ہے اور وہ تجد ہ سپوکرے گا، اور اگر ساام کے بعد شک ہوتو ان کے فز دیک دو آتو ال ہیں: ایک بیہ ہے کہ تا ایک ایک کہ تا اف کہ تا اف کے لئے کھڑ اہوجائے گا کویا ال نے ساام پھیر اس شہیں اور دوسر اقول: بیہ ہے کفر اخت کے بعد اس کا کوئی اختبار نہیں ہے، اس کے کہ اس میں تنگی ہے۔

اور حنابلہ اپ مشہور مذہب کے مطابق مام اور منفر دیے درمیان فرق کرتے ہیں، چنانچ جو مخص امام ہواور اسے شک ہوجائے اور معلوم نہ ہوک اس نے کتنی رکعت نماز اداکی ہے تو وہ تحری کرے گا اور اپ مگان عالب پر بناکرے گا، اور منفر دیقین یعنی کم پر بناکرے گا۔ اور ایک روایت کے مطابق مام کی طرح اپ غالب ظن پر بناکرے گا، دی وال می صورت میں ہے جبکہ اس کی کوئی رائے ہواور جب اس کے فرد کیک

چهارم:روزه مین تحری کرنا:

ہما - جو شخص قید میں ہویا شہر سے دور دراز اطراف میں ہویا دارالحرب میں ہوجی کی وجہ سے اس کے لئے خبر کے ذر معیم بینوں کا معلوم کرناممکن نہ ہو، اور رمضان کامبینہ اس پر مشتبہ ہوجائے تو فقہاء کا اتفاق ہے کہ اس پر تحری کرنا اور ماہ رمضان کو معلوم کرنے کے لئے کوشش کرنا لازم ہے، کیونکہ اس کے لئے تحری اور کوشش کے ذر معیم ایک فرض کا اداکرناممکن ہے، لید استقبال قبلہ کی طرح بی بھی لازم ہے۔

اگر ال کے ول میں کوئی الیی علامت ہوجس کی بنا پر گمان غالب بیہوکہ رمضان کا مہدینشروٹ ہوگیا ہے تو وہ روز ہ رکھ لے، پھر اگر اسے بیمعلوم ہوجائے کہ ال نے ماہ رمضان کو پالیا ہے، یا کوئی حالت مشخف نہ ہو سکے تو عام فقہاء کے قول کے مطابق بیاس کے حالت مشخف نہ ہو سکے تو عام فقہاء کے قول کے مطابق بیاس کے لئے کافی ہوگا، کیونکہ اس نے کوشش کے ذریعیہ اپنافرض ادا کر دیا اور تخری کے ذریعیہ اپنافرض ادا کر دیا اور تخری کے ذریعیہ اپنافرض ادا کر دیا اور

اور اگرا سے بیمعلوم ہوکہ اس نے اس سے ایک ماہ بل ہی روزہ رکھ لیا ہے تو ائمہ ٹلا ثد کا فد بب اور ثافعیہ کاسیح فد بب بیہ کہ بیاں کے لئے کافی ند ہوگا، کیونکہ اس نے وجوب عبادت کے سبب سے بل عی عبادت کو اور ثافی ند ہوگا جیسے کہ کوئی شخص وقت سے بہذا ایکافی ند ہوگا جیسے کہ کوئی شخص وقت سے پہلے نماز پڑا ہے اور ثنا فعیہ کاقول قدیم بیہ ہے کہ رمضان کے گزر جانے کے بعد اگر واضح ہوا تو بیکافی ہوگا، کیونکہ بیا ہی عبادت ہے جو

⁽۱) عديث: "من شک في الصلاة فلينحو الصواب" کي تخ تخ نظره نمبرا ٣ كي تحت كذر چكي ـ

⁽۱) فقح القدير الر۵۳ م، الدسوقي الر۵۷، نهلية المتناع الر۹۷، الوجيو الرا۵، المغني ۲/۷۱، ۱۸

سال میں صرف ایک عی وفعداوا کی جاتی ہے لہذ اجائز ہے کہ لطی سے وقت سے پہلے اواکر لینے سے بیزض ساتھ ہوجائے۔

اور اگر بیمعلوم ہوک ال نے رمضان کے بعد کے ایک ماہ کا روزہ رکھا ہے تو جمہور فقہا ہوکے ال جائز ہوجائے گا اور ثافعیہ کے بزو کی کے بھی بہی سیجے ہے ، اور بید وشرطوں کے ساتھ سیجے ہوگا: تعداد کا پورا کرنا (یعنی پورتے تیں دن روزے رکھے گئے ہوں) اور ماہ رمضان کرنا (یعنی پورتے تیں دن روزے رکھے گئے ہوں) اور ماہ رمضان کے لئے رات سے نیت کرنا ، کیونکہ بیا قضا ہے اور قضا میں ان دونوں شرطوں کا انتہار کیا جاتا ہے ، اور ثافعیہ کا ایک قول بیک وہ عذر کی وجہ سے ادا ہوگا ، ال لئے کی عذر بیا او قات غیر وقت کو وقت بنا دیتا ہے ، جیسے کہ جمع مین الصلا تین کی صورت میں ۔

اور ال صورت میں اگر وہ مہینہ جس میں اس نے روز ہ رکھا ہو ناقص ہواور جس رمضان کا دوسر بےلوگوں نے روز ہ رکھا ہووہ تکمل ہوتو ایک دن روز ہ رکھ لے، اس لئے کہ اس کے بعد دوسر سے ماہ کاروز ہ تضا ہوگا۔اور تضا کے لئے ضروری ہے کہ وہ نوت شدہ کے بقدر ہو۔

اور شا فعیہ کے دوسر سے قول یعنی میک میکھی اوا ہوگا، کے مطابق میکانی ہوگا، اگر چہ اس نے ہاتھی صورت میں روزہ رکھا ہوا ور دیگر لوگوں نے مکمل روزہ رکھا ہوا ہو، اس لئے کہ مہینہ تو دو چاندوں کے درمیان ہوتا ہے، ای طرح اگر اس نے پچھروزے رمضان میں رکھے اور پچھرمضان کے علاوہ دوسرے ماہ میں تو جوروزے رمضان میں میں یا رمضان کے بعد کے مہینہ میں رکھے وہ کافی ہوں گے اور جو اس نے رمضان سے اور جو اس کے اور جو اس نے رمضان کے بعد کے مہینہ میں رکھے وہ کافی ہوں گے اور جو اس نے رمضان سے قبل رکھے ہوں وہ کافی ندہوں گے۔

اور اگریگان ہواکہ ابھی رمضان کا مہدینیں آیا تھا کہ اس نے روزہ رکھایا تو یہ کافی نہ ہوگا، گرچہ اس نے سیح رکھا ہو، یہ بھم اس وقت بھی ہوگا جب اس کو ماہ رمضان کی آمد میں شک ہوجائے اور اس کی آمد کے سلسلے میں اس کاظن غالب نہ ہو۔

اور اگر ال مخض نے جس پر مہینے گذیڈ ہو گئے غور وفکر پر تاور ہونے کے با وجود بغیرغور وفکر اورتح ی کے روزہ رکھ لیا تو بیاس کے لئے کافی نہ ہوگا، جیسے کہ و مخض جس پر قبلہ مشتبہ ہوجائے (۱)۔

اور جس شخص کو با دل کے دن میں غروب آ قاب میں شک ہوجائے اوروہ تحری نہ کرے تو اس کے لئے افطار جائز نہیں ہے، کیونکہ اسل دن کا باقی رہنا ہے (۴)۔

پنجم: زکا ق کے مستحقین کی شناخت میں تحری کرنا:

۱۵ - اگر کسی کو اس شخص کے تعلق شک ہوجائے جس کو وہ زکا ق د بے
رہا ہے تو اس پر تحری کرنا لازم ہے ، اگر اس کی غالب رائے بیہووہ فقیر
ہے تو اس کو دے دے ، اور اگر بیمعلوم ہوا کہ وہ فقیر ہے یا اس کا پچھ حال معلوم نہیں ہوا تو بالا تفاق جائز ہے ، اور اگر بیمعلوم ہوا کہ وہ مال دارہے تو امام ابو صنیفہ وامام محمد کا ایک قول اور امام ابو بیسف کا تول اول کو اور امام ابو بیسف کا تول اول کے اس پر اس کا دوبارہ ادا اول جھی کہی ہے ، اور ان کا دوبارہ ادا کرنا لازم ہوگا اور امام ثانعی کا بھی ایک قول کی ہے۔

کرنا لازم ہوگا اور امام ثانعی کا بھی ایک قول کی ہے۔

اورمالکیہ کے فردیک اگر غور وفکر کے بعد زکا قالیے شخص کودے جودر حقیقت مستحق نہیں ہے، جیسے کہ مال داریا کافر کو بیگمان کرتے ہوئے دے کہ بیستحق ہے تو اس کے لئے کافی نہ ہوگا۔

شا فعیداور حنابلدگ اس کے تعلق دوروایتیں ہیں: ان میں سے ایک میہ ہے کہ مید کافی ہوگا اور دومری روایت میہ ہے کہ مید کافی نہ ہوگا (۳)۔

⁽۱) - لموسوط ۱۳۸۳ ۵ طبع دارالمعرف الدسوتی ارده ۵۱ طبع دارالفکر الحطاب ۱۳۷۲ است طبع دارالفکر، نهاینهٔ الحتاج سهر ۱۹۲۱، ۱۹۳۳ طبع مصطفیٰ المبالی تحلمی ، المغنی سهر ۱۲۱، ۱۳۳۳، کشاف الفتاع ۲۷۲۴ سه ۲۰۰۸ طبع حالم اکتنب

 ⁽۲) حاشيه ابن عليدين ۲/۴ ۱۰ ۱۱۳ طبع دار احياء التراث العربي نهاية الحتاج سهر ۱۹۳ ۱۰ سهر ۱۹۳ طبع مصطفی المبابی المحلمی، المغنی سهر ۱۹۳ طبع مکتابیة المریاض المعرف ...
 (۳) المجموط از ۱۸۵، ۱۸۹ ما الدسوتی از ۵۰۱ المغنی سهر ۱۹۲۷، ۱۹۲۸.

تح ی ۱۶–۱۵ تج کیش ۱–۲

ال کے احکام کی تفصیل جائے کے لئے اصطلاح'' زکا ق'' کی طرف رجوع کیا جاسکتا ہے۔

ششم: چندمتعارض قیاسوں کے درمیان تحری کرنا:

۱۶- جب دوقیا سوں کے درمیان تعارض واقع ہوجائے اوراس جگہ دونوں میں سے کسی ایک کو دوسر سے پرتر ججے و بینے کی کوئی دلیل نہ ہواور نظمل کے ذر میدی کسی ایک کو دوسر سے پرتر ججے و بینے کی کوئی دلیل نہ ہواور نظمل کے ذر میدی کسی ایک کو اختیار کرنا ٹابت ہوتو تحری کرنا ضروری ہے۔ بہ وہ فر ماتے ہیں کرتح ک لا زم نہیں بلکہ مجتہد کے لئے جائز ہے کہ ان دونوں میں سے جس پر چاہے ممل کرے، اور ای اختیاف پر وہ تحری کہی مین ہے جو دوصحانیوں کے قوال کے درمیان کی گئی ہوان لوگوں کے مذہب کے اغتبار سے جو قول صحابہ کی ججیت کے قائل ہیں (۱) تفصیل اصولی ضمیمہ میں ہے۔ قول صحابہ کی ججیت کے قائل ہیں (۱) تفصیل اصولی ضمیمہ میں ہے۔

بحث کے مقامات:

21- کتب فقد کے بہت سے اواب میں تحری کا ذکر آیا ہے، ان میں سے چند سے بیں: کتاب الصلاق میں استقبال قبلہ اور تجد ہ سہور پر بحث کے شمن میں، اور حیض وطہارت اور روزہ کے ابواب میں، اور صاحب '' آمہوط'' نے تحری کے لئے'' کتاب اتحری'' کے عنوان سے صاحب'' آمہوط'' نے تحری کے لئے'' کتاب اتحری'' کے عنوان سے ایک مستقل کتاب فاص کی ہے (۲)، ای طرح اس کے احکام کی تفصیل کے لئے'' استقبال''' استحاضہ' اور'' اشتباہ'' کی اصطلاعات کی طرف رجوئ کیا جاسکتا ہے۔

تحریش

تعریف:

ا - افت میں تحریش کامعنی انسان یا حیوان کوال طرح برا بیخته کرنا ہے کہ وہ اپنے ہم جنسوں سے لڑ پڑے، کہا جاتا ہے: "حوّش بین القوم" جب کوئی شخص ان میں نسا دیھیا! دے، اور بعض کو بعض کے خلاف برا بیختہ کردے۔

جوہری نے فر مایا کہ لوگوں اور جانوروں مثلاً کتے اور بیل وغیرہ
میں سے بعض کو بعض کے خلاف ہر اعظیفتہ کر کے لڑائی مجڑ کا ماتح لیش
ہے، تو تح لیش میں اس شخص کو جس کو ہر اعظیفتہ کیا جاتا ہے دوسرے پر
مسلط کرنا ہوتا ہے (۱)، اور شکاری کتے کوشکار پر مسلط کرنے کے لئے
'' اعدا ع' کالفظ بولا جاتا ہے۔

اور تحریش کا اصطلاحی معنی اس کے لغوی معنی سے الگ نہیں ہے۔

متعلقه الفاظ:

تحریض (آماده کرنا):

۲ تی بیش کا معنی لڑائی وغیرہ کے لئے ہرا پیختہ کرنا ہے۔ اور اس کا استعال اس استعال اس کا بیشتر استعال اس صورت میں ہوتا ہے، اور اس کا بیشتر استعال اس صورت میں ہوتا ہے جہاں ایک عی فریق کو مجر کا نا مقصود ہو، اور

⁽۱) مسلم الثبوت، ۲۲ ۱۹۳۳

⁽r) heredonani

⁽۱) لسان العرب مادة" حرثن" ـ

جہاں دونوں نریقوں کو ہرا پیختہ کرنا مقصود ہو اس جگہ تحریش کا لفظ سنعال کیاجائے گا۔

شرى خكم:

سا-نساد کھیا! نے کے ارادہ سے لوکوں کی تحریش حرام ہے، کیونکہ یہ
آلیسی نسادکا فرمیہ ہے، اور اللہ تعالی کونسا دیبند نہیں، اور تحریش کی
ایک شکل پخل خوری ہے، رسول اللہ علیہ نے نز مایا: "آلا آخبو کی
بافضل من درجة الصیام و الصلاة والصدقة؟ قالوا: بلی،
قال: صلاح ذات البین فإن فساد ذات البین هی
الحالقة، (ا) کیا ہی کوروزہ، نماز اور صدقہ سے زیادہ انکی درجہ
کے مل کا پہتے نہ بتادوں، تو صحابہ نے عرض کیا: ضرور بتاد یجئے۔ آپ
علیہ نے نز مایا: آپسی تعلقات کی در تکی ، کیونکہ آپس کا اختاا ف

اور جانور مثلاً شکاری کتے یا اس کے مثل دوسرے جانور کی تحریش بمعنی برا مخفتہ کرنا ، غالب کرنا اور شکار کے ارادہ سے بھیجنا ، مباح ہے۔

اور فقرباء کا ال پر اتفاق ہے کہ جانوروں میں سے بعض کو بعض کے خلاف کی تحریم ہے، کیونکہ یہ کے خلاف کی تحریم ہے، کیونکہ یہ ایک تشم کی نا دانی ہے جس سے جانوروں کو تکلیف کی نیجی ہے، اور بسااو قات ریغیر کسی جائز مقصد کے اس کی بلا کت کا سبب ہوجا تا ہے (۲)۔

اور عدیث میں آیا ہے: "نھی رسول الله ﷺ عن (۱) عدیث: "الا انحبو کم...." کی روایت ترندی (۱۹۳/۳)نے کی ہے وفر ملا کر بیعدیث کے ہے۔ پھرفر ملا کہ رسول اللہ ﷺ مروی ہے کہ آپ علی نظر ملا: "لا اللول بحلق الشعر ولکن بحلق المدین"۔

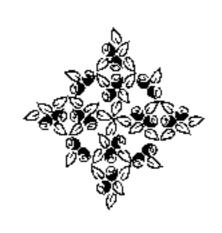
(۲) عون المعبود ۱/۲ سام، حافریة عمیره علی کمحلی سهر ۲۰۴، الأداب الشرعید سهر ۳۵۷، این البطالب سهر ۲۲۸

التحریش بین البھائم"() (نبی علیہ نے جانوروں کے درمیان تر ایش ہے۔ درمیان تر ایش ہے۔ درمیان تر ایش ہے۔

اور سلما نوں کے درمیان نسا دیھیا! نے اور فاتنہ باکرنے کے ارادہ سے تحریش حرام ہے، اور رسول اللہ علیہ فی نے فر مایا:" اِن الشیطان قلد بنس آن یعبد فی جزیرة العرب ولکن فی التحریش بینهم"(۲) (شیطان ال بات سے مایوس ہوچکا ہے کہ جزیرہ عرب میں ال کی عبادت کی جائے تحریش کی تجھوڑ کر)۔

اور مشروع کام کے لئے آمادہ کرنے کانام تحریض ہے۔اور ای سے گھڑسواری، تیراندازی اور فنون حرب سکھنے کے لئے تحریض ہے جو حائز ہے۔

> اور بعض فقہاء کا خیال ہے کہ یہ ستحب ہے (۳)۔ اس کی تفصیل'' تحریض'' کی اصطلاح میں ہے۔



- (۱) عدیث "الیهی عن النحویش بین البهانم" کی روایت ایو داؤد (۱۹۸۳ طبع عزت عبیدهاس)اورتر ندی (۱۹۸ ما۱۳ طبع کمامی) نے کی ہے اورتر ندی نے مرسل ہونے کی وجہے اس کو مقابل قر اردیا ہے اور اس میں قدرے ضعف ہے۔
- (٢) عديث "إن الشيطان لادينس أن يعبد في جزيو ة العوب" كل روايت مسلم (٣١٢/٣ طع الحلق) في بيد
- (۳) لأواب الشرعيد سهر ۵۵ س، روحة لطالبين ۱۰ ر۵۳ س، ان العطالب سهر ۲۲۹

تحريض

تعریف:

ا - تحریض کامعنی لغت میں لڑائی پر ابھارنا اور اس پر اکسانا ہے۔ قرآن کریم میں ہے: "فَقَاتِلُ فِي سَبِیْلِ اللَّهِ لاَ تُكلَّفُ إِلاَّ مَنْ كَلَّفُ إِلاَّ مَنْ كَلَفُ اللَّهِ لاَ تُكلَّفُ إِلاَّ مَنْ مَنْ مَن كَلَفُ اللَّهِ اللَّهُ مَن كَاه مِن قَال نَفْ مَن كَ راه مِن قَال مَنْ مَن الله كَ راه مِن قَال مَن مَن الله كَ راه مَن الله كَ اور آپ مسلمانوں كور هي آماده كرتے رہے)۔

اوران کااصطلاحی معنی انعوی معنی سے الگ نہیں ہے۔ حث (ابھارنا)، تعجویتش (براشیخته کرنا)، اِغواء (بھڑ کانا) اور تبھیلیج (آمادہ کرنا) بیسب تحریض سے قریب قریب ہیں (۲)۔

متعلقه الفاظ:

الف-تثبيط (بازركهنا):

(۱) سورة كما ير ۱۸س

(۳) مخار الصحاح ـ

ب-إرجاف(كھڑكانےكے لئے برى خبر كا يھيلانا):

سا – إرجاف أرجف في الشيء كامصدر ہے، يعنى وه ال يل وأل يہو آيا ، اور أرجف القوم كامعنى ہے: لوكوں كابرى باتوں اور فتنوں كے تذكرہ بيں مشغول ہو جانا۔ اللہ تعالى نے فر مايا: "وَالْمُوجِفُونَ فِي الْمَلِينَةِ" (1) (اور جو مدينہ بين افوائين اڑايا كرتے ہيں)۔

اور بیوہ لوگ ہیں جوالیی حجوثی خبریں گھڑتے ہیں جن کی وجہ سے لوکوں میں گھبر اہت ہوجاتی ہے (۴)۔

اں طرح اِ رجاف اس تشبیط کا ایک ذر مید ہے جو تحریض کی ضد ہے۔

ج تحريش(براهيخة كرنا):

ہم تے ایش کا معنی ہے: انسان یا حیوان کو اس کے ہم جنسوں سے لڑنے کے لئے ہر ایٹیختہ کرنا۔ اور اس کا استعال صرف ہری چیز وں میں ہوتا ہے اور اس کا تحقق اس صورت میں ہوگا جبکہ فریقین کو میٹر کایا جائے۔ اور اس کا تحقق اس صورت میں ہوگا جبکہ فریقین کو میٹر کایا جائے تو وہ تحریض ہے۔

شرى خكم:

۵ - موضوع کے اختاباف کے اعتبار سے تحریض کا تھم مختلف ہوتا ہے:
چنا نچ دوران جہا دقال برتح یض مطلوب ہے، یہی تھم ہما ائی
اور نیکی کرنے مثلاً مسکینوں اور قیموں کو کھانا کھا اے برتح یض کرنے
کا بھی ہے، اور فساد اور جرسم کی ہر ائی کے لئے تحریض حرام ہے۔
اور شکاری درندوں اور کا نے والے کتے کی تحریض معصوم الدم

 ⁽۲) لسان العرب ماده" ترض" _

⁽۱) سورهٔ اُکژاپ، ۲۰ پ

⁽۲) المان العرب بادة" رده".

انسان یا مال محترم کے خلاف حرام اور موجب صفان ہے جس کی تفصیل آری ہے۔

قال کے لئے مجاہدین کی تحریض:

۲- امام اورامیر جب کسی انتظر یا تافلہ کو جہاو میں نکلنے کے لئے تیار کریں تو ان کے لئے مسئون ہے کہ قال کرنے ،صبر کرنے اور جے رہنے پر ان کی تحریض کریں (۱)، اس لئے کہ اللہ تعالی کا ارشاو ہے: "فَقَاتِلُ فِی سَبِیلُ اللّٰهِ لاَ تُکلَّفُ إِلاَّ نَفْسَکَ وَحَوّضِ الْمُوْمِنِیْنِ" (۲) (اق آپ اللہ کی راہ میں قال کیجئے، آپ پر ذمہ واری المُموْمِنِیْنِ" (۲) (اق آپ اللہ کی راہ میں قال کیجئے، آپ پر ذمہ واری منیں والی جاتی بچز اپنی ذات کے اور آپ مسلمانوں کو بھی آ ما دہ کرتے رہنے)۔ اور اللہ تعالی کا بیارشا و: "یا نَبِی حَرِّضِ الْمُوْمِنِیْنِ عَرَّضِ الْمُوْمِنِیْنِ عَرَّضِ الْمُوْمِنِیْنِ عَرَّضِ الْمُوْمِنِیْنِ عَرَّضِ الْمُوْمِنِیْنِ کَا بِیارشا و: "یا نَبِی حَرِّضِ الْمُوْمِنِیْنِ کَوْمِنِیْنِ کَا بِیارشا و: "یا نَبِی عَرِیْنِ کَا بِیارشا و تَبِی عَرِیْنِ کَا بِیارشا و تَبِی عَرِیْنِ کَا بِیارشا و تَبِی عَرْضِ اللّٰمَوْمِنِیْنِیْنَ کَا بِیارشا و تَبِی عَرِیْنِیْنِ کَا بِیارشا و تَبِی عَرْضِی اللّٰہِی حَرِّضِ الْمُولُ مِنِیْنِ کَا یہ اللّٰہِی حَرِّضِ الْمُولُ مِنِیْنِ کَا یہ اللّٰہُ وَ اللّٰ بِیا کُرُسِی اللّٰ اللّٰہِی کُرِ اللّٰ کے اور اللہ اللّٰہِی کَا یہ اللّٰ اللّٰ کَا یہ اللّٰہِی کُرِیْنِ کَا اللّٰ اللّٰ کَا یہ اللّٰ کَا ہُولِیْ کَا اللّٰ اللّٰ ہُمَا کُرِیْ کَا یہ اللّٰ کَا ہُمَالُولُ کَا ہُمَالُولُ کَا اللّٰ ہُمَالُولُ کَا ہُمُولُ مِنْ اللّٰ کَا ہُمَالُولُ کَا ہُمَالُ کُھُولُ مِنْ مِنْ کَا ہُمَالُولُ کُولُولُ کَا ہُمَالِ مِنْ کَا ہُمَالُولُ کُلُولُ ک

مقابله كى تحريض:

2- گھڑ دوڑ کے مقابلہ، تیر اند ازی اور گھڑ سواری کے لئے مردوں کی تخریض مسنون ہے، اور امام کے لئے جائز ہے کہ بیت المال اور اپنے مال فاص ہے اس کا معاوضہ اوا کرے، جیسا کہ دیگر افر او کے لئے بھی جائز ہے کہ اس کا معاوضہ اوا کریں، کیونکہ بید نیک کام میں سرف کرنا ہے۔ اور اس کا معاوضہ اوا کریں، کیونکہ بید نیک کام میں سرف کرنا ہے۔ اور اس پر تواب ویا جائے گا، (۳) اس لئے کہ بید اس کا ایک حصہ ہے جس کا تکم اللہ تعالی نے اپنے اس فر مان میں ویا ہے: "وَ أَعِلُوا لَهُمُ مَا السَّعَطَعُتُمُ مَنُ قُوتُ وَ وَمِنُ دُبَاطِ

- (۱) روض الطالب ۱۸۸۸ (
 - (۲) سورۇنيا ورسىم
 - (m) سورة انفال 14. 14
- (٣) . روصة الطاكبين ١٠ / ٣٥٣، أي البطالب سمر ٢٢٨، أمغني ٨ / ٢٥٣_

'ننصیل'' سباق'' کی اصطلاح میں ہے۔

جانورگی *تریض*:

۸- اگر کسی نے کسی جانور کی تحریض کی اور اس نے کسی انسان کو

- (۱) سورة انفال ١٠ ١٠ ـ
- (۲) حدیث: "ادموا بنی بسماعیل...." کی دوایت بخاری (انتخ ۲۸ او طبع استانی) بنادی (انتخ ۲۸ او طبع التنافی) نام دین الاکوئے کی ہے۔
- (۳) حدیث: "آلا إن القوة الومي....." كي روايت مسلم (۱۵۲۲ اطبع الحلمي) نے حضرت عقبہ بن عامرے كي ہے۔
- (٣) عدیث: "إن اللّه ید خل الجدة بالسهم الواحد....." كی روایت احمد (٣/ ٣٣) طبع لميمريه)اورها كم (٣/ ٩ ٥ طبع دائرة المعارف العثمانيه)نے كى بےورها كم نے الے مجتم قرار دیا ہے ورڈ جمك نے ان كی موافقت كى ہے۔

تحريض وتحريف

نقصان پڑنچا دیا تو تحریض کرنے والے پر ضان واجب ہوگا، کیونکہ وہ
ال کے نقصان کا سبب بنا ہے۔ بیرائے مالکیہ اور حنابلہ کی ہے (۱)۔
اور ثا فعیہ کی رائے بیہ کہ اگر وہ کس وسیق و عریض جگہ میں تھا،
مثلاً جنگل میں پھر اس نے اس کوئل کر دیا تو اس کا کوئی ضان نہیں ہے،
کیونکہ اس نے اس جا نور کوائی خض کے تل کرنے پر آ ما دہ نہیں کیا تھا،
اور جوفعل اس کی طرف ہے پایا گا وہ مہلک نہیں۔ بال اگر وہ تک جگہ
میں ہویا ایسا خونخو ار اور حملہ آ ور ہوکہ جنگل میں بھی اس سے بھاگ کر
بینا مشکل ہوتو اس بھڑ کانے والے خض پر ضان واجب ہوگا (۱۳)
بینا مشکل ہوتو اس کوئورا قبل کردے۔ اور حنفیہ کے نز دیک ضامن نہ ہوگا۔

'نفصیل'' جنایات''ک اصطلاح میں ہے (m)۔

محرم (احرام والے شخص) کی طرف سے شکار کے لئے کتے کی تحریض:

9 - اگر کوئی محرم کسی کتے کو شکار کے لئے بھڑکائے تو وہ ضامن ہوگا، جیسے کہ کوئی غیر محرم شخص حرم میں ایسا کرے، کیونکہ دونوں صورتوں میں اس کا سبب بنیا قدر شتر ک ہے (۳)۔ تفصیل'' احرام''کی اصطلاح میں ہے۔

تحريف

تعریف:

ا تحریف لغت کے اعتبارے ''حوّف الشیء'کامصدرہے، یعنی جب کوئی کسی چیز کو ایک کنارے رکھ دے یا اس کے کنارہ سے پچھ حصر کولے لیے۔

اور تحریف الکلام عن مواضعه کامعنی ہے: کس کلام کو بدل دینا اور اس کواس کی اصل جہت ہے پہیر دینا، اور ای سے پہود ہے متعلق اللہ تعالی کا بدار اوا ہے: ''یُحَدِّفُوْنَ اللَّالِمَ عَنُ مَوَاضِعِهُ '' (اکر جو کلام کواس کے موقعوں سے پھیر تے رہتے ہیں)۔ معنی بدل دیتے ہیں (۲)۔ یعنی بدل کی اس کی جگہوں سے بدل دیتے ہیں (۲)۔

اوراصطااح میں تحریف کلمہ کی اس تبدیلی کانام ہے جو کہی اس کی حرکت کے بدلنے سے پیدا ہوتی ہے۔ جیسے الفکک اور الفُلک اور جینے سے پیدا انسانی)، یا کہی ایک حرف کو دومر سے حرف سے بدل دیے ہوں یا ہوتی ہے، خواہ وہ دونوں رسم الخط میں ایک دومر سے کے مشابہ ہوں یا نہ ہوں، یا ایک کلمہ کو دومر سے کلمہ سے بدل دینے سے جیسے "سری ا

⁽۱) مطالب أولى أنه من المراهم عنه العدوي على الخرشي المرام

 ⁽۲) روهه لطالبين ۱۳۳۸، الوجير ۱۳۳۸

⁽۳) ابن ما بدین ۵ر ۹۰ سه نتج القدیر ۹ ر ۲۳ س

⁽٣) - أكني البطالب الرهاس، روهية الطالبن سهر ١٣٨٨

⁽۱) سرونا ۱۸۲۳ (۱

 ⁽٣) ديكھئے المصباح له مير ، مخار الصحاح ماده " حرف" بتغيير جلالين الله تعالى كے ارشاده " يُحتو فُو دُن الْكِلِيمَ عن مو اضعه" كے شمن ميں، حاهية الصاول كل الحلالين اروس طبع ميروت _

بالقوم" اور "سوی فی القوم" اور کھی کلام میں زیادتی یا کی کی وجہ سے ہوتی ہے۔ اور کھی اس کواس کی مراد کے علاوہ پرمحمول کرنے کی وجہ سے ہوتی ہے۔

اور تلم اصول حدیث میں بعض لوکوں نے اس کو اس تبدیل کے ساتھ فاص کیا ہے جو ایک کلم ہودوسرے ایسے کلمہ سے تبدیل کرنے کی صورت میں پیدا ہوجورہم الخط اور نقط میں پہلے کلمہ کے مشابہ ہواور حرکت میں اس کے خلاف ہوجیت المخطق کو اکٹے لئی اور اُلْفَدُمُ کو الْفِحَلَق کو اکٹے لئی اور اُلْفَدُمُ کو اللّٰفِ کُلُم ہے تبدیل کردینا۔ یہ اصطلاح ابن حجر کی ہے جیسا ک'' نخبة الفکر'' اور اس کی شرح کے خلیم سے بچھ میں آتا ہے (ا) اور انہوں نے الفکر'' اور اس کی شرح کے خلیم سے بچھ میں آتا ہے (ا) اور انہوں نے اللّٰ کردیا ہے۔

متعلقه الفاظ:

الف تصيف (يراص مين غلطي كرنا):

المعنی مرادبدل الفظ کو اس طرح بدلنا ہے کہ اس کا معنی مرادبدل جائے۔ اور اس کی حقیقت فلطی ہے، چنانچ کہا جاتا ہے: صحفہ فتصحف ایعنی اس نے اس کو بدل دیا تو وہ ایسا بدل گیا کہ مشتبہ ہوگیا (۲)۔

اورتصحیف کی اصطلاحی تعریف میں دو آتو ال ہیں:

ایک قول میہ ہے کہ کلمہ کی تبدیلی کا نام تصحیف ہے، خواہ وہ نقطہ کے اختلاف سے، یا ایک حرف کود وسر سے کے اختلاف سے، یا ایک حرف کود وسر سے حرف سے یا ایک کلمہ کود وسر کے لمہ سے بدلنے کے ذر معیہ ہو، ابن جحر سے پہلے میشتہ محدثین کی اصطلاح میں یہی تعریف رعی ہے، ان میں سے پہلے میشتہ محدثین کی اصطلاح میں یہی تعریف رعی ہے، ان میں

ے خطیب ہیں" الکفائی "میں، حاکم ہیں" معرفۃ علوم الحدیث "میں،

نووی" النقریب "میں اور ابن الصلاح وغیرہ، یہ ال معنی کے لحاظ
ہے تحریف کے تربیب ہے گرتر بیف زیا وہ جامع ہے، کیونکہ اس
میں وہ تبدیلی بھی شامل ہے جولفظ کے اپنی حالت پر برقر ارر ہنے کے
ساتھ معنی میں کی جاتی ہے۔
ساتھ معنی میں کی جاتی ہے۔

ال طرح تصحیف کلمہ کے نقط یا شکل یا اس کے حروف بیل تحریف کانا م ہے، اور جو اس کے علاوہ ہووہ معنی بیل تحریف این کیم کیف ان کے مؤید ہے، ابن حجر اور ان کے مؤید ہیں کا خیال ہے کہ تصحیف ایک کلمہ کو دومر ہے کسی ایسے کلمہ سے بد لئے کے ساتھ فاص ہے جو رہم الخط بیس اس کے مشابہ ہواور نقط بیس اس کے مشابہ ہواور نقط بیس اس کے خلاف ہو، افعسکری کی کتاب ''شرح انصحیف و اُتحریف کے اور اس کی مثال ''لغدلو'' کو واتحریف کے مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کے میں کی مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کی مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کے میں اس کے میں کی مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کے میں کی مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کے میں کی مثال ''لغدلو'' کو واتحدیف کے میں کی مثال دیا ہے۔

اور تحریف کی اس مقیم کا نام تصحیف اس کنے رکھا گیا کہ بہا مرادبرل اوقات صحیفہ (کتاب) سے اخذ کرنے والے کے لئے کلمۂ مراداور صحیفہ اس کلمہ کے درمیان جوصورت بیں کلمۂ مراد سے مشابہ ہونے کی وجہ کہ مشتبہ ہوجاتا ہے ، فرق کرناممکن نہیں ہوتا ، بخلاف اس کمشتبہ ہوجاتا ہے ، فرق کرناممکن نہیں ہوتا ، بخلاف اس شخص کے جو اہل تلم کی زبانی حاصل کرتا ہے (۱) ، یہ اشتباہ زیادہ تر دوسری صدی ہجری بیس نقط کی ایجاد سے قبل فیش آتا تھا اور اس کے دوسری صدی ہجری بیس نقط کی ایجاد سے قبل فیش آتا تھا اور اس کے دوسری صدی ہجری بیس نقط کی ایجاد سے قبل فیش آتا تھا اور اس کے دوسر کے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی بواجی جو اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی اپنی جگہ سے ہے جائے دوسرے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی اپنی جگہ سے ہے جائے دوسرے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی اپنی جگہ سے ہے جائے دوسرے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی اپنی جگہ سے ہے جائے دوسرے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کہ جی بھی اپنی جگہ سے ہے جائے دوسرے اس کی پابندی کرتے ہیں ، کیونکہ نقط کے بھی اس بھیدا ہوجاتا ہے۔

⁽۱) نتية الفكر، لقط الدرد، ۸۳، التقييد والايضاح شرح مقدمه ابن المصراح للحافظ العراق مرح مقدمه ابن المصراح للحافظ العراق مرص ۲۸۳، ۲۸۳ طبع بيروت دارالفكر المسياه، الكفايه في اصول الرواية لخطيب المرحد ادى مرص ۲ ۱۳، ۱۹ ۱۳، ۱۹ ۱۳، مراد الراوى شرح تقريب الزاوى شرح تقريب النواوى مرص ۳۸۳ طبع المدينة المعوده، الكلابة العلمية و ٢٣٠ الها تقييفات المحدد ثين المقدمة برص ۳۸۰

⁽۱) تقعیفات المحد ثین للعسکری، المقد مدرص و سه لقط الدودگل تشرح نشیة افکررص ۱۸۲ القایم ومطبعه عبدالمبیدخفی -

⁽r) المصباح لممير مادهه "صحف" ـ

ب-رزور:

سا - زور کالغوی معنی ہے: جھوٹ، اورز ویر کامعنی ہے: جھوٹ کی ملمع سازی (۱)۔

اوراصطااح میں تزور ہر وہ قول وعمل ہے جس کے ذر معید باطل کو آراستہ کرنے کا ارادہ کیا جائے تا کہ اس کے حق ہونے کا گمان ہوجائے، چاہے بیقول میں ہومثاً اجھوٹی کوای دینا یا فعل میں جیسے باطل کو نابت کرنے کیقصد سے تحریریا سکوں کی نقل انارنا۔

توال کے اور تر یف کے درمیان فرق بیہ کرز وریہ ہے متصد کی تبدیلی وجود میں آتی ہے، اور تر یف سے بھی حقیقت بدل جاتی ہے اور بھی نقیس بدلتی ہے۔ اور بھی مقصود ہوتی ہے اور بھی مقصود نہیں ہوتی، اس طرح ان دونوں کے درمیان عموم وخصوص کی نبیت ہے۔

تحریف وقعیف کے اقسام: ہم نے نیف یا تولفظی ہوگی یا معنوی۔

تحریف لفظی بھی سند میں ہوتی ہے جیسا کہ طبری نے ملتبہ بن الندر کے ام میں تصحیف کی ، اور اسے ابن البذر کو ہدویا۔

اور کمی مثن میں ہوتی ہے جیسے این آہیعہ نے عدیث: "
''احتجو النبی ﷺ فی المسجد''(۲) میں تصحف کی اور الحتجم فی المسجد'' کہددیا۔

اورلفظی کی دوشمین ہیں:

پہل شم: وہ ہے جوحاسہ بھر سے دیکھی جا سکے جیسا کہ گذرا۔ اور دوسری شم وہ ہے جو س کر معلوم کی جائے جیسا کہ بعض

- (۱) مختا راتصحاح مادید'' زور''۔
- (۲) عديث: "احتجو الدبي نافج في المسجد" كي روايت بخاري (النخ ۱۰ مار ۱۵ طبع التلفيه) اورمسلم (۱ره ۵۳ طبع لجلمي) نے كي ہے تھيف والي روايت مشد احمد (۵/۵ ۱۸ طبع ليمريه) مل ہے۔

لوكوں نے عاصم احول كى حديث روايت كى تو فرمايا: ''واصل الأحدب" چنانچ وارتطنى نے ذكركيا ہے كہ بية اعت كى تقعيف ہے، فكاه كى بيس كويا ان كاخيال بيہ ہے (اسل علم تو اللہ عى كو ہے) كہ يتحرير كاه كى بيس ، كويا ان كاخيال بيہ ہے (اسل علم تو اللہ عى كو ہے) كہ يتحرير كے اعتبار ہے مشتر نہيں بلكہ جن لوكوں نے اس كى روايت اس طرح كى ہے ان سے سننے بيس كان نے خلطى كى ہے۔

تحريف وتصحيف كاتحكم:

تخريف يا تؤكتاب الله مين مقصود بهوكى ، يا احا ديث نبوييمي يا

- (۱) عدیدہ: "صلی اللهی نُلِجُنِّهُ إلی عنو ة" کی روایت بخاری (النَّحَ ۱۳/۳ ۳ طبع السّلة به) نُسَالته کی ہے۔
- (۲) مقدمه ابن الصلاح رص ۳۸۳، كشاف اصطلاحات الفنون رص ۸۳۳، شرح القيية العراقي ۴۹۸، ۹۸، ۵۳

ان دونوں کے علاوہ کلام میں:

الف-الله تعالی کے کلام میں تحریف: ۵-الله تعالى نے اس بات كى صانت لى ہے كه وه اپنى كتاب كے الغاظ اور ال کے حرف میں تبدیلی وتحریف سے اس کی حفاظت فر مائے گا۔ یہاں تک کہ وہ قیامت تک ای طرح باقی رہے گی جس طرح ازل كَيَّ مِي جِـ الله تعالى نے فر مايا: "إِنَّا نَحُنُ نَوَّ لُنَا اللَّهُ كُوَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ "(١) (قرآن تم نے عن ال كيا ہے اور تم عن ال كے محافظ ہيں)، چنانچ ال فے شياطين كوال كے سننے سے دور رکھا اور اس کے بھیجے وقت ان کوشہاب ٹا تب سے مارا اورقر آن کو ایسے محیفوں میں کر دیا جو مکرم ہیں، بلندمرتبہ ہیں، یا کیزہ ہیں۔ایسے کا جوں کے ہاتھوں میں ہیں جو معزز ہیں نیکوکا رہیں (۲) اور اللہ تعالی نے اپی مخلوق میں سے سی کو بیافتیا رئیس دیا کہ وہ اللہ کے تام کوہر ل دے اور اس میں تبدیلی کردے۔ اللہ تعالی فریاتے ہیں: "وَإِذَا تُتُلِّی عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِيْنَ لاَ يَرْجُونَ لِقَاءَ نَا انْتِ بِقُرُ آن غَيْرِ هَلَا أَوْ بَكُلُهُ قُلُ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَلَّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِيُ إِنْ أَتَّبِعُ إِلاَّ مَا يُوْحِي إِلَيَّ"(٣)(اور جب أَبين جماري تھلی ہوئی آیتی رہ ھرکر سنائی جاتی ہیں تو جن لوگوں کو ہمارے یا س آنے کا کوئی کھ کائبیں ہے کہنے لگتے ہیں کہ اس کے سواکوئی اور آن لاؤيا اى ميں ترميم كردو، آپ كهدو يجئ ميں ينبيس كرسكتا ك اس ميس اینے جی سے ترمیم کردوں، میں تو بس ای کی پیروی کروں گا جو

اورشر بعت نے مسلمانوں کوتر آن کریم کے حفظ کرنے ، اس کی

میرے یا س وی سے پہنچاہے)۔

تااوت کرنے اور یاد کرنے کی وقوت دی ہے۔ چنانچ امت مسلمہ نے اس کام کواچھی طرح انجام دیا۔ یبال تک کہ اطمینان ہوگیا کہ قر آن میں کسی فتم کی تبدیلی نہیں ہوگی۔ اگر کوئی آدمی کسی ایک حرف میں تبدیلی کر دیتا تو اسے دسیوں نہیں بلکہ سیکروں چھو نے بڑے مسلمان ایسے مل جاتے جواس تحریف کو بیان کر دیتے اور اس تبدیلی کو دورکر دیتے۔

اور الله تعالى نے اپني كتاب ميں ان الل كتاب كا قصد بيان كيا ہے جنہوں نے اپنے ماس موجود آسانی کتابوں میں زیا دتی ، کمی اور تبدیلی کے ذر معیر تحریف کی تھی، چنانچ اللہ تعالی نے فرمایا: ''وَإِنَّ مِنْهُمُ لَفُرِيْقًا يَّلُوُونَ أَلْسِنْتَهُمُ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُونُهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنُدِ اللَّهِ" (١) (اورانبي مين ہے کچھلوگ ايسے بھی ہيں جو این زبانوں کو کتاب میں کج کرتے ہیں تا کہ میں (جز) کو بھی کتاب میں سے مجھودرآ نحالیکہ وہ کتاب میں سے بیں ہے اور کہتے ہیں کہ بیہ الله کی جانب سے ہے درآ نحالیکہ وہ الله کی جانب سے نہیں ہے) اور فر مالي: "أَفَتَطُمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَلْدَ كَانَ فَرِيْقٌ مُّنَّهُمُ يُسْمَعُونَ كَلاَمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمُ يَعْلَمُونَ "(٢) (نَوْ كَيَاتُم إِلَى كَانُو نَعْ رَكِيتَةٍ بُوكَ وَهِ لُوكَ تَمْهَارِكِ (كہنے سے) ايمان لے آئميں كے درآ نحاليكم ان ميں سے ايسے الوگ بھی ہیں کہ اللہ کا کلام سنتے ہیں پھر اسے پچھ کا پچھ کر دیتے ہیں بعد ال کے کہ اسے مجھ چکے ہیں اور وہ اسے (خوب) جائے بھی سِ) اورار بالي: "فَهِمَا نَقُضِهِمْ مِينَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيهَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنُ مَّوَاضِعِهِ"(٣) (غُرْض ان كَل يَان

⁽¹⁾ مورة جراره_

⁽۱۲) سوره عمس / ۱۲ ـ

⁽۳) سورة يولس ۱۵ ا

⁽۱) سورهٔ آل عمر ان ۱۸ ۸۷

⁽۲) سورۇيقرەر 24_

⁽m) سورة ما مكرة / mاب

شکنی بی کی بناپریم نے آئیں رحمت سے دورکر دیا اوریم نے ان کے دلوں کو تخت کر دیا وہ کلام کوال کے موقع مجل سے بدل دیتے ہیں) نیز فر مایا: ''وَمِنَ اللَّٰهِ فَنَ هَا دُوْا سَمَّا عُوْنَ لِلْکَٰذِبِ سَمَّا عُوْنَ لِقَوْمِ فَرَ مایا: ''وَمِنَ اللَّٰهِ فَنَ هَا دُوْا سَمَّا عُوْنَ لِلْکَٰذِبِ سَمَّا عُوْنَ لِقَوْمِ آخَورِ فَنَ لَکُہ بِنَ مَعْدِ مَوَاضِعِه'' (1) آخَورِ فَنَ لَمْ بَاتُنُو کَ بُحَرِّ فُونَ الْکَلِیمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِه'' (1) (اور ان میں سے بھی جو یہودی ہیں جودے کے بڑے سنتے والے دوسر کے لوگوں کی فاطر، جوآپ کے پاس نیس آنے ، کلام کوال کے دوسر کے لوگوں کی فاطر، جوآپ کے پاس نیس آنے ، کلام کوال کے سنتے والے سیجے موقعوں سے بد لتے رہتے ہیں)۔

کلام الله کومرنشم کی تحریف یا تبدیلی مے محفوظ رکھنے کی غرض سے جہور علاء امت نے بغیر کسی تبدیلی کے مصحف عثانی کے رسم الخط کا التزام كيا ہے، خواہ آنے والے ادوار ميں خط كاطور طريقه كتنا عي تبدیل ہو، زرکشی نے کہا کہ بیان کی طرف سے الل نمینہیں تھا بلکہ ایک ثابت شده امرکی بنارتها - ابو البقائے " کتاب اللباب" بیس فر مایا کہ اہل افت کی ایک جماعت کا خیال بیہ ہے کہ ہرکلمہ کی کتابت ال کے لفظ کے مطابق ہوگی سوائے قرآن کریم کے رسم الخط کے، كيونكد انہوں نے اس سلسلے ميں اى كى بيروى كى ہے جے انہوں نے " المصحف لامام" (رہنما مصحف شریف) میں پایا، اور شہب نے فر مایا کہ امام ما لک رحمة علیہ سے دریافت کیا گیا کہ کیا آپ مصحف کو لوكوں كے سيكھے ہوئے حروف ہجاء كے مطابق لكھيں گے؟ تو انہوں نے فر مایا بنہیں، اولین طرز تحریر کے مطابق، اے" الدانی" نے بیان کیاہے، پھرفر مایا کہ اس میں علاء امت کا کوئی اختلاف نہیں ہے، اور امام حمد نے فر مایا کہ مصحف عثانی کے رہم الخط کی مخالفت کرنا حرام ہے، یعنی اس کے رسم کی''یاء''یا'' واؤ''یا'' الف''وغیرہ لکھنے میں اور اوعبیدہ نے فریایا کہ ہمار ہے نز دیکے مصحف عثانی کے حروف کی اتباع اس سنت قائم کی طرح ہے جس سے تجاوز کرنا کسی محض کے لئے جائز

(۱) سورۇماكدەراس

نہیں ہے^(۱)۔

مرام موکانی کی رائے ال سے مختلف ہے جس کو انہوں نے اپنی تفییہ بیں سورہ بقرہ بیں اللہ تعالی کے ارثا و: "اکّلِدِیْنَ یَا کُلُونَ اللّٰرِ بُولَ " (۲) کے ممن بیل بیان کیا ہے: انہوں نے فر مایا کہ لوگوں نے اللّٰرِ بُولًا " کے ممن بیل بیان کیا ہے: انہوں نے فر مایا کہ لوگوں نے اسے مصحف بیل واؤ کے ساتھ لکھا ہے بیخش ایک اصطلاح ہے جس کی بیروی ضروری نہیں، کیونکہ بیٹمام تحریری نقوش ایسے اصطلاحی امور بیل بیل جن بیل اختااف نہیں کیا جاتا ، سوائے الل صورت کہ جس بیل جن بیل اختااف نہیں کیا جاتا ، سوائے الل صورت کہ جس بیل موجود ہو، نیز ای طرح کی دوسری صورتیں ، انہوں نے فر مایا کہ میر بیرکیف کل میک کتا بت اور اس کے تحریری قش کو اس کے تفظ کے نتا ضہ بیرکیف کل میک کتا بت اور اس کے تحریری قش کو اس کے تفظ کے نتا ضہ کے مطابق می رکھنا زیا دہ بہتر ہے (۳)۔

لیکن قراءت میں ایساتغیر کرنا جو مصحف عثانی کے رہم الخط کے خلاف ہو کسی فرح جائز نہیں اور جو وجو دفتر اءت سیجے روایت سے خلاف ہو کسی فرح جائز نہیں اور جو وجو دفتر اءت سیجے روایت سے خابت ہیں ان میں تغیر کرنا جائز نہیں اگر چید مصحف امام میں اس کا اختال ہو۔

اور الفاظ قرآن میں تحریف سے حفاظت اس سے بھی ہوتی ہے کقر اوت کا علم رکھنے والے قراء کی زبان سے انہیں سیکھا جائے ، اور اس کو محض قرآن کریم میں دیکھ کر سیکھ لیما مناسب نہیں۔

اورقر آن کریم کی الیی تفسیر بیان کر کے جوال سے مقصود نہ ہو، معنی کوبدل دینا تنگین نوعیت کی تحریف ہے۔

یہ بات معلوم ہو پکی ہے کہ قر آن کی تفییر یا توقر آن کے ذر معیہ واجب ہے یا سنت صحیح کے ذر معیہ یا عربی زبان کائلم رکھنے

⁽۱) البريان في علوم القرآن ار ۳۸۰،۳۷۱ القام وعيسي المحلمي ۳۷۱ هـ ولا نقان في علوم القرآن للسيوطي ۴۷/۲۱ القام ومصطفی المحلمی ۱۳۵۳ هـ

⁽۲) سورۇيۇرى 240_

والوں کے لئے جوعر بی زبان کے نقاضے کے مطابق ہو، اور محض رائے ہے اس کی نفیہ کرنا شرعا جائز نہیں ہے، اس لئے کہ نبی علیاتی افقاد نے اربثا و فر مایا: "من قال فی القو آن ہو آیہ فاصاب فقد اخطاً" (ا) (جس نے قر آن کے تعلق اپنی رائے سے درست بات بھی کبی تو اس نے فلطی کی)۔

اوراگرخواہشات کی موافقت اور اس کی تا ئید کے لئے تخریف
کی جائے تو ایسا کرنے والا شخص سخت گراہ اور دوسروں کو گراہ کرنے
والا ہوگا، کیونکہ کتاب اللہ پر ایمان کا مصلب بیہ ہے کہ کتاب اللہ کو اس
طرح متبوئ مانا جائے کہ مومن اس کا امر بجالائے اور اس کی مما لعت
کے پاس رک جائے ، نہ بیک اس کو اپنی خواہشات کے ابح بنایا جائے
جیسا کہ بعض گر افٹر قوں نے اسے ایسا کر دیا ہے۔

میتیم معنی کی اس تبدیلی اور تر یف سے تعلق ہے جے مضر جان ہو جوکر کرتا ہے، جہاں تک خلطی سے معنی میں تبدیلی پیدا کردینے والی تفیہ کاتعلق ہے تو مناسب ہے کہ اس سے بھی بچا جائے، کیونکہ تفیہ کا کام قر آن، سنت اور عربی زبان کا عالم می انجام دے سکتا ہے جو اصول تفیہ کوسیکھ چکا ہو قر آن کے ملاوہ دیگر امور کو جن سے مضر کا واقف ہوا ورعموم و خصوص اور ان کے ملاوہ دیگر امور کو جن سے مضر کا واقف ہوا ضروری ہے، جانتا ہو (۲)۔

> ب-احادیث نبویه می*ن گریف وقعیف:* تقعیف کا^{حک}م:

۲ محدثین فرماتے ہیں کہ سیج قول کے مطابق صورت عدیث کوسند

(۲) وا تقان فی علوم القرآن ۱/۱۵ و داس کے بعد کے صفحات۔

اور متن کے اعتبار سے جان ہو جھ کر بدلنا جائز نہیں ہے، مَّر مدلولات الفاظ سے واقف ہو کہ معنی کس الفاظ سے واقف ہو کہ معنی کس طرح تبدیل ہوتے ہیں، تو ایسے شخص کے لئے تغیر کرنا جائز ہے، بشرطیکہ معنی کو تبدیل کرنے سے اجتناب کرے اور بالارادہ تصحیف روایت بالمعنی کی ایک تتم ہے (ا)۔

جباں تک خلطی ہے ہونے والی تصحیف وتر ایف کا تعلق ہو تو ایک محصل کی روایت میں اس قسم کی پچھ فاش غلطیاں ہوں اس کے متعلق کباجائے گا یہ بین السلم (کمز ورحافظہ والا) ہے، ایسے خص کی حدیث کو ترک کر دیا جائے گا اور اسے نہیں لیا جائے گا، او احمد العسکری نے عبد اللہ بن الزبیر الحمیدی سے نقل کیا ہے کہ وہ غفات جس کی وجہ سے روایت قائل ردہ وجائی ہے، ایسے خص کی غفلت ہے وایسا خوش فیم ہوکہ جموٹ کونہ جانتا ہو، بایں طورک اس کی تربیمیں کوئی مطابق مدیث بیان کرے اور لوکوں کے کہنے کے مطابق صدیث بیان کرے اور لوکوں کے کہنے پر اپنی تحریمیں تبدیلی مطابق صدیث بیان کرے اور لوکوں کے کہنے پر اپنی تحریمی متبدیلی کردے اور ان دونوں کے فرق کونہ جانے، یا ایسی فاش خلطی کرے کر جس سے معنی تبدیل ہو کر غیر معقول ہوجائے، بی بین معین سے نقل جس سے معنی تبدیل ہو کر غیر معقول ہوجائے، بی بین معین سے نقل جس سے معنی تبدیل ہو کر غیر معقول ہوجائے، بی بین معین سے نقل میں کہا گیا ہے، و دفر ماتے ہیں کہ جو خص تم سے صدیت بیان کرے اور وہ سے معنی تبدیل ہو کر نے رمیان فرق نہ جانتا ہو تو وہ وہ اس کا اہل نہیں کہ اس سے صدیت لی جائے (*)۔

اگر اس طرح کی خلطی بھی بھار ہویا کم ہواور زیا دہ ہڑی نہ ہوتو اس سے راوی مجر وح نہیں ہوگا، امام احمد نے فر مایا کہ خطا اور تقعیف سے ہری کون ہے؟ (۳)۔

⁽۱) حدیث: "من قال فی القو آن بو أیه" کی روایت ترندی (۲۰۰/۵) الحلمی)نے کی ہے ورفر ملا کہ بیھدیٹ غریب ہے اور سیل بن الجائز م کے متعلق بعض الم علم نے کلام کیا ہے۔

⁽۱) شرح نتنبة الفكر يقع على القارى أهمى رص ۵ ۱۳۰_

⁽٢) تصحيفات أمحد ثين الر١٢ ال

⁽m) مدّر رب الراوي رص ٣٨٣ متر ح مقدمه ابن الصواح رص ٢٨٢ ـ

تحریف ۷-۹

اور جہاں تک اس حدیث کا تعلق ہے جس میں تصحیف ہوئی ہو تو اگر بیضحیف متن حدیث میں ہوئی ہوتو وہ موضوع سے تربیب ہوگی، اور اگر سند میں ہوئی ہوتو وہ حدیث اس سند کی بنار ضعیف قر اریائے گی (۱)۔

تصحیف کی اصلاح:

2- "مقدمه ابن صلاح" اور" الباعث الحسشيث "ميں ہے كا اگر في خلطى كر نے ورست بيہ ك سننے والا درست طریقه براس سے اس کی روایت كرے بياوز ائل، ابن المبارك اور جمہور سے منقول ہے -

اور ابن میرین سے نقل کیا گیا ہے کہ وہ ای طرح غلط صورت میں اس کی روابیت کرے گا، ابن الصلاح نے فر مایا کہ بیا اتباع لفظ کے نقطہ نظر میں غلوہے۔

اور قاضی عیاض نے فر مایا کہ جس طرح آئیں روایت پیچی ہے۔
ہوروہ اپنی کتابوں میں کوئی تغیر نہیں کرتے ، جیسا کہ سیحین اور مؤطا میں اور وہ اپنی کتابوں میں کوئی تغیر نہیں کرتے ، جیسا کہ سیحین اور مؤطا میں ہوا ہے، مراہل علم حاشیہ میں اس کی طرف رہنمائی کردیتے ہیں ، اور ان میں سی بعض وہ ہیں جنہوں نے کتابوں میں تغیر اور ان کی اصلاح کی جسارت کی ہے۔ اور بہتر بیہ ہے کہ تغیر واصلاح کا در واز ہبند کردیا جائے تا کہ اس کی جسارت ایسا شخص نہ کر سے جو اس کو اچھی طرح جائے تا کہ اس کی جسارت ایسا شخص نہ کر سے جو اس کو اچھی طرح فر جائے منہ اور مبلی و پوشیدہ فلطی پر افراد فاش فلطی کی اصلاح فر مایا کرتے تھے، اور مبلی و پوشیدہ فلطی پر فاموش رہتے ۔

اور ابن کثیر نے فر مایا کہ بعض لوگ ایسے ہیں کہ جب کسی شیخ

(۱) كشا ف اصطلاحات الفنون/ص ۸۳۲

ے غلط روایت سنتے ہیں تو ان کی روایت چھوڑ دیتے ہیں، کیونکہ اگر وہ اس کا اتباع کریں تو نبی میں اللہ اسے کلام میں خلطی نہیں کرتے ہوں کا اتباع کریں تو نبی میں گئے ۔ اور اگر سیح طریقہ پر اس سے اس کی روایت کریں تو اس نے ان سے اس طرح سنانہیں ہے (۱)۔

قر آن وحدیث کے علاوہ میں تصحیف وتحریف:

۸- وٹاکن اور دستاویز ات وغیر ہیں عدائقعیف وٹر یف کرنا ایک فتم کی تزویر (جبوٹ کی مع کاری) ہے اور اس کا حکم بیہے کہ وہ حرام ہے اگر اس کے ذر معید سے کسی کا حق سا قط ہور ہا ہو، یا اپنے لئے یا کسی اور کے لئے ایساحق ٹابت کیا جار ہا ہوجس کا وہ مستحق نبیس، یا کسی شخص اور کے لئے ایساحق ٹابت کیا جار ہا ہواور جوشخص ایسا کرے وہ مستحق تعزیر کے ایساحق تعزیر کے۔

د يکھئے:"نڙور"۔

تحریف وتصمیف ہے بیخا:

9 - محدثین نے ایسے طریقے بیان کئے ہیں جن کے ذر معید تصحیف وقریف سے بچاجا سکتاہے، ان میں سے چند رید ہیں:

اول: ماہر اہل علم کی زبانی علم حاصل کرنا، کیونکہ تھیف زیا دوتر صورت میں حرف کے باہم مشابہ ہونے کی وجہ سے بیدا ہوتی ہے، چنانچ ایک کلمہ ایک سے زائد طریقوں پر پڑھاجا تا ہے، لہذ اراوی اگر اس کو اپنے شیخ کی زبانی سیکھے گا توضیح طریقہ پر سیکھے گا (۳)۔

دوم: روایت کرده نلم کولکھ لیما ، اور لکھے ہوئے کو یا دکر لیما تاک

⁽۱) الباعث المستديف رص ۱۳۵، طبع سوم القابمره، محمر على مبهج، شرح الفيد العراقي رص ۲،۱۷۵ مار

⁽۲) ابن عابدين مهر ۹۵ س، القليو لي مهر ۲۰۵ ـ

⁽m) الباعث المستثيف رص ۵ ۱۲ امقدمه ابن الصوارح ص ۲۲ س

دوسر کے سی علم سے اس کا اختاا طرنہ ہوجائے اور بیاس لئے کرسرف حافظہ پر اعتاد کریا کا فی شیس بعض سلف نے فر مایا کہ علم کوقلم بند کرلو۔ سوم بتحریر میں منقوط الفاظ پر نقطوں کی شخیل تا کہ ہم شکل حرف مثلًا باء، تاء، تاء، نون ، یاء ای طرح فاء، اور قاف میں امتیاز ہو سکے، اور جہاں تحر نف کا اند میشد ہو و ہاں اعراب لگالیا، بسا او قات کلمات کے ذریعہ منبط حرکات کی ضرورت پر اتی ہے مثلًا ان کا قول: "البو: باء موحدہ کے کسرہ اور راء مہملہ کے ساتھ"۔

چہارم: علوم لفت میں ماہر ہونا، کیونکدان کے ذر معید زیادہ ترتحر نف وقعیف واضح ہوجاتی ہے (ا)۔

علاء نے علم حدیث، اساء الرجال اور اسانید وغیرہ کی کتابوں میں ان مقامات کی نشاندی کی غرض سے جہاں تصحیف وتح بیف کا امکان ہوتا ہے مخصوص کتابیں تصنیف فرمائی ہیں، اگر طالب علم ان کو براجہ لے تو خلطی اور تحریف سے محفوظ رہے گا(۲)۔

اور کتب عدیث وغیرہ میں عملاً پیش آنے والی غلطیوں کی توضیح کے لئے انہوں نے دوسری کتا ہیں بھی تصنیف فر مائی ہیں (۳)۔

اور انہوں نے علم اصول حدیث سے متعلق اپنی کتابوں میں تصحیف سے آگاہ کیا ہے، اور اس سے متعلق پیش آپکی بہت می الیم مثالیں ذکر فر مائی ہیں جن کے ذریعیہ اس باب میں مقامات لغزش سے آگاہی حاصل ہوجاتی ہے (۳)۔

ای طرح انہوں نے اس سے بھی آگاہ کیا ہے کہ شیخ اپنی صدیث کو خلطی کرنے والے اور تصحیف کرنے والے کے پڑھنے کی کیفیت کے ساتھ بیان کرے (۱)۔

اور انہوں نے منبط روایت ، ساعت، کتابوں سے نقل، سناکر کھنے اور اسل سے نقائل کرنے کی کیفیت سے متعلق وہ طریقے بیان کئے ہیں جو ان کے نز دیکے جلیل القدر ائر سے منقول طریقوں کے استقراء سے ثابت ہیں، نیز روایت بالمعنی وغیرہ کے وہ ضو الط جن سے روایت کا منبط تحقق ہوتا ہے تاکہ عدیث اپنی ایل وضع سے نہ بہنے جس پر وہ تھی (۲)۔

اور تحریر شدہ کلام کو تحریف ہے بچانے کی غرض ہے جن لوکوں نے اس کے منبط پر گفتگو کی ہے ان چی میں ہے وہ حضر ات بھی ہیں جنہوں نے جنہوں نے اصول نوی کے سلسلے میں گفتگو کی ہے، چنانچ انہوں نے فر مالا کہ اگر جواب کے کاغذ میں فتوی کی جگہ تنگ پڑا جائے تو دوسر کے کاغذ میں جو اب کی خان مناسب نہیں، کیونکہ اس میں فتوی کے خلاف حلید کا اند بیشہ ہے، ای لئے مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری مناسب ہے کہ رفعہ میں فتی کا کلام آخری اند ویشہ ہے کہ سوال کرنے والا اس میں اپنی کوئی الیی غرض لکھ دے جو فقط ان دو ہو۔

نیز انہوں نے فر مایا کہ: اگر مفتی سوال کے پرزہ میں بعض سطروں کے درمیان یا اس کے آخر میں کوئی خالی جگہ دیکھے تو اس پر خط سمھینچ دے اور اس کو مشغول کردے، اس لئے کہ بعض دفعہ کوئی شخص مفتی کے ساتھ ہر ائی کا ارادہ رکھتا ہے اور اس کے فتوی دینے کے بعد اس خالی جگہ میں وہ ایسی باتیں لکھ لیتا ہے جوفتوی میں فساد پید اکر نے

⁽۱) شرح الفية العراقي ۲۴ م ۱۷۴ فاس، لمطبعة الجديده ۵۴ ۱۳ هـ

⁽۲) ان میں ہے ایک قاضی حیاض کی مشارق الانوار اور ابوعلی الحسانی کی تغییر آجمل ہے۔

ان عی میں ہے حمزہ بن انجس الا صغبا نی کی '' التعبیه علی حدوث التصحیف '' اور مسئر کی گی' ماہقع فی التصحیف و القریف '' ہے اور ان عی کی ایک تماہ تصحیفات المحد ثین ہے۔
 انحد ثین ہے اور خطا لی کی اصلاح خطا المحد ثین ہے۔

⁽۳) مثال کے طور پر اس سلیلے میں دیکھتے الباعث الحسین رص ۱۷، ۱۷، ۱۷، ۱۷، ۱۷ اللہ بندادی کی الکھاریرص ۲ ۱۱، ۱۹ ۱۱ الله ۱۷ الکی ترامیں جن کا اس بحث میں حوالہ

⁼ رابائے۔

⁽۱) شرح الفية العراقي ۱۲ ۱۲ ۱۲ ا

⁽٢) شرح الفية العراقي ١٢ ١٥٤ اوراس كے بعد كے صفحات _

تحريق بحريم ا

والی ہوتی ہیں۔ اور مناسب ہے کہ جواب واضح اور درمیانی سم کی تحریر میں کھا جائے اور اس کی سطر یں بھر یر اور خط ایک دوسر سے سطر یب ہر یہ اور خط ایک دوسر سے سطر یب رہیں ہا کہ کوئی شخص اس میں جھوٹ کی آ میزش نہ کر سکے (۱)۔
اور تمام تفصیلات جیسا کر مختی شمیں ، وثیقہ نولی ، اور شہا دتوں اور ان تمام دستا ویز ات کو منبط تحریر میں لانے پر منطبق ہوتی ہیں جن کے ذر معیہ حقوق ٹابت ہوتے ہیں۔

تحریق

و یکھئے:''إحراق''۔



(۱) صفة الفتوى و أنتى والمستمتى رص ٣١،٥٩،٥٨ دشق أسكنب الإسلاى

نخريم

تعريف:

۱- افت میں تحریم تحلیل کے خلاف اور اس کی ضد ہے، اور حرام طال کی ضد ہے۔ کہا جاتا ہے: حوم علیہ الشیء حومة و حواما (اس برایک چیز حرام ہوگئ)۔

اور حرام: وہ ہے جس کو اللہ تعالی نے حرام قرار دیا ہو، اور اللہ تعالی نے حرام قرار دیا ہو، اور اللہ تعالی نے حرام قرار دیا ہے۔ اور "آحو م بالحج آو العموة آو بھما" نے حرام قرار دیا ہے۔ اور "آحو م بالحج آو العموة آو بھما" اس وقت ہو لتے ہیں جب کوئی شخص تلبیہ کو بآواز بلند اوا کر کے احرام میں واضل ہوجائے، اس کے بعد اس پر بہت ہی الی چیز یں حرام ہوجائیں گی جو اس سے قبل حال تھیں جیسے شکار، اور عورتیں اور اس کو ہوجائیں گی جو اس سے قبل حال تھیں جیسے شکار، اور عورتیں اور اس کو سے اس نام چیز وال سے اجتماع کرنا ہوگا جن سے شریعت نے منع کیا ہوجائیں گی جو اس میں اور ال کو سے بوجائیں اور اس کو ہوئی ہونا ہو گار وغیرہ اور ان سب میں اصل ممنوئ ہونا ہے، کو یا احرام بائد سے والاُحض ان تمام چیز وال سے باز رہے گا۔ اور ان سے نماز سے متعلق بی صدیث ہے: "تعجویسها التحکییر" (۱) اس سے نماز سے متعلق بی صدیث ہے: "تعجویسها التحکییر" (ان کماز کا تحریم کا میں واضل اس کے دائرہ سے خارج اور ان حال کے دائرہ سے خارج اور انعال سے دک وائرہ اندائی گئے ہم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو تم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے، ای لئے تکبیر کو ترکھ کم کہا گیا ہے،

(۱) حدیث: "الصلاة بحویمها النكبو" كی روایت ترندي (۱۸ طع الحلی) اورحاكم (۱۳۲۷ طع دائرة المعارف العثمانيه) نے كی ہے اور اس كو صحیح قر اردیا ہے اور ڈمبی نے ان كی موافقت كی ہے۔

کیونکہ وہ نمازی کو ان سب چیز وں سے روک دیتی ہے۔

اوراحرام بھی تحریم کے معنی میں آتا ہے، چنانچ آحو م اور حوّم دونوں ایک علی معنی میں استعال ہوتے ہیں (۱)۔

اوریداصولیوں کی اصطلاح میں اللہ تعالی کا وہ خطاب ہے جو ایقی نی طور پر کسی کام سے رکنے کا نقاضا کرنا ہو، بایں طورک اس کا کرنا قطعا جانز نہ ہو (۲)۔

یدالل اصول میں سے متکلمین کی اصطابات کے مطابات ہے۔
اور حقی اصولیوں نے اس کی تعریف یوں کی ہے: ''وہ یہ ہے کہ کس ولین کی بنا پر کسی فعل سے رکنے کا مطالبہ کیا جائے ''(۳) جیسا کہ اللہ تعالی کے ارشا دمیں ہے: "یکا اُٹھا الَّذِیْنَ آمَنُو ا اِنَّمَا الْحَمُو وَالْمَنْ الله مُنْ عَمَلِ الشَّیطانِ وَالْمَنْ الله مُنْ عَمَلِ الشَّیطانِ فَالْحَوْنَ '' (۳) (اے ایمان والواشر اب اور جوا فَاجَتَنِبُوهُ لَعَلَّمُ مُنُ فَالِحُونَ '' (۳) (اے ایمان والواشر اب اور جوا اور بوا اور بوا اور بوا کے رہوتا کہ فلاح پاؤ)، چنا نچ اس جگہر کے ما ور بازر ہے کا کم سوال سے کے رہوتا کہ فلاح پاؤ)، چنا نچ اس جگہر کے ما ور بازر ہے کا کم تر آن کے نص قطعی سے نا بت ہے۔ ای طرح اللہ تعالی کے ارشاد: تر آن کے نص قطعی سے نا بت ہے۔ ای طرح اللہ تعالی کے ارشاد: تو حَوَّمُ اللَّهُ بَا '' میں ربا کا حرام تر اردیا جاتا ہے (۵)۔

البرک نے اپنی "النعریفات الفقہیہ" میں تحریم کی تعریف کرتے ہوئے فر مایا کہ بیکسی فرنم کی تعریف کرتے ہوئے فر مایا کہ بیکسی شن کو حرام کردینا ہے۔ اور نماز کی تکبیر اولی کو تحریم کیا گیا ہے کہ وہ نماز شروٹ کرنے سے بہلے کی تمام طابل چیز وں کوحرام کردیتی ہے، بفتیہ دوسر کی تکبیر ات ایسانہیں کرتیں (۱)۔

علاوہ ازیں جب تحریم کا صدور غیرشار ٹ سے ہوتو اس کا ایک دوسر اطلاق ہے، جیسے شوہر کا اپنی بیوی کو اپنی ذات پرحرام کرنا، یا بعض مباح چیز وں کوشم یا دوسری چیز وں کے ذر معید حرام کرنا، اس موقع پر اس کامفہوم ہوتا ہے: روکنا۔

متعلقه الفاظ:

كرابت(ناپىندكرنا):

۲-کراہت اورکراہیت بٹارٹ کا وہ خطاب ہے جو غیر قطعی طور پر کسی
کام سے رکنے کا تقاضا کرتا ہو، جیسے سیمین کی حدیث بیس ہے: "إذا
دخل أحد کم المسجد فلا يجلس حتى يصلي رکعتين" (۱)
(جب تم بیں کاکوئی شخص مجد بیں وافل ہوتو دورکعت نما زیرا سے بغیر نہ بیٹے)، اور این ماجہ وغیرہ کی روایت بیس ہے: "لا تصلوا فی أعطان الإبل فإنها خلفت من الشياطين" (۲) (اونت کے بیٹے کے آجھان الإبل فإنها خلفت من الشياطين" (۲) (اونت کے بیٹے کی گرجگہ نمازنہ پر احق کیونکہ وہ شیطان سے بیدا کیا گیا ہے)۔

اور تراہت تحریم دونوں میں قدر مشترک بازندر بنے کی صورت میں عند اب کا مستحق ہونا ہے، میں اعتبار سے دونوں جدا ہیں کتر اس اعتبار سے دونوں جدا ہیں کتر میم وہ مما لعت ہے جس سے بازر بناد میل قطعی کی بنار یقینی طور پر ثابت ہو، اور مکر وہ وہ ہے جس سے رکنا دلیل طنی کی بنار رائے قر ار بائے (۳)۔

⁽۱) لسان العرب، مختار الصحاح مادهة " حرم" بـ

⁽۲) جمع الجوامع الر ۸۰_

⁽m) شرح مسلم الثبوت للانصاري ا / ۵ ۸ ـ

⁽٣) سورة اكري ٩٠٠

⁽۵) مورۇپۇرە/ ۵۷م_

⁽١) أتعريفات التغهيدللمركي-الرسالة الرابعيرص ٢٢١-

 ⁽۱) عدیث: "إذا دخل أحد كم المسجد فلا يجلس" كی روايت
بخاري (الشخ سر ۴۸ طبع الشاتیه) اور سلم (ار ۱۵ ساطبع الحلمی) نے كی ہے۔
 (۲) جمع الجوامع ار ۴۸ بشرح مسلم الشبوت الواف اركى ار ۵۸۔

حدیث: "لا تصلوا فی أعطان الإبل" کی روایت ابوداؤد (۱۱ ا۳۳۳ طبع عزت عبید دهاس) اور این ماجه (۱۱ ۳۵۳ طبع انجلی) نے کی ہے اور مخلطائی نے اس کوسیح قر اردیا ہے جیسا کہ فیض القدیر (۲۸ ۲۰۰ انگلابیة التجاریب) میں ہے۔

⁽m) شرح ملم الثبوت الإانصاري الر ۵۸،۵۷، انعر بفات للجر جاني _

اور" مراقی الفلاح" میں ہے کہ کروہ وہ ہے جس میں ممالعت دلیل نظنی کی بناپر ہو، اوراس کی دوشمین ہیں: ایک مکروہ تنزیبی جو طال سے زیادہ قربیب ہے اور دوسری مکروہ تحریکی جو حرام سے زیادہ قربیب ہے، اگر کسی کام کا کرنا ترک واجب کو مشتزم ہوتو وہ مکروہ تحریکی ہے اور اگر ترک سنت کو مشتزم ہوتو وہ مکروہ تنزیبی ہے، آر اس کی کراہت شدید ہونے اور تحریم سے تربیب ہونے میں سنت کے مؤکد ہوئے اور ترک کا میں سنت کے مؤکد ہوئے اور ترک کی این بارے مختلف ہوگی (۱)۔

اجمالي حكم:

شارت کی تخریم اپنی تنصیل میں اصولی اصطلاح سے مربوط ہے، اور جہاں تک مکلف کی طرف سے کسی طلال چیز کے حرام قر ار دیئے جانے کا تعلق ہے تو اس سے مندر جہذیل احکام تعلق ہیں:

اول-بيوی کی تحريم:

تمہارے لئے تمہاری قسموں کا کھولنا مقرر کر دیا ہے)، لہذ اظاہر کے خلاف نیت کرنے میں قضاء اس کی بات نہیں مانی جائے گی۔ یبی درست ہے جیسا کہ اس بڑمل اور فتوی ہے۔

اور اگر وہ کے کہ میں نے طلاق مراد کی تھی تو ایک طلاق بائن ہوگی ، الابیاکہ وہ تین طلاقوں کی نبیت کرے۔

اوراگر وہ کیے کہ میں نے ظہار مراد کی تھی تو امام او صنیفہ اور امام او بیسف کے فرد کے بیل کے ظہار مراد کی تھی تو امام او صنیفہ اور امام محد فر ماتے ہیں کہ ظہار نہیں ہوگا، اس کئے کہ مرمہ کے ساتھ تشبید جو ظہار میں رکن ہے، مفقود ہے، اور شیخی ن کی دلیل بیہے کہ اس نے حرمت کو مطلق رکھا، اور ظہار میں بھی اور مطلق میں مقید کا اختال ہوتا ہے۔ اور مطلق میں مقید کا اختال ہوتا ہے۔

اور اگروہ کے کہ میں نے تر یم مراد لی تھی یا میں نے کچھ مراوئیں لیا تھا تو یہ مین ہے، وہ اس کے ذریعہ اللہ اکرنے والا ہوگا۔ اور بعض حنفیہ کہتے ہیں کہ عرف کی بناء پر لفظ تحریم سے بلانیت طلاق مراد ہوگی، کیونکہ لوگوں کے درمیان میعرف قائم ہے کہ ہمارے زمانے میں لوگ اس لفظ سے طلاق مراد لیتے ہیں۔ ابواللیث نے یکی فرمایا ہے (۱)۔

اور اگر اپنی دیوی سے کہے کہ میں تیرے اوپر حرام ہوں، اور طلاق کی نبیت کرے تو وہ مطاقہ ہوجائے گی (۳)۔

اور اگر ال سے کے کہ تو میر سے اوپر میری مال کی بیشت کی طرح حرام ہے اور وہ اس سے طلاق یا ایلاء کی نیت کرے تو امام ابوصنیفہ کے مزد دیک اس سے صرف ظہار بی ہوگا۔ اور حضر ات صاحبین نے فر مایا کہ اس کی نیت کا اعتبار ہوگا، کیونکہ لفظ ان تمام کا اختبار ہوگا، کیونکہ لفظ ان تمام کا اختبار ہوگا، کیونکہ لفظ ان تمام کا اختال رکھتا ہے، مرامام محمد کی رائے بیہ ہے کہ اگر اس نے طلاق کی نیت کی ہے تو ظہار نہ ہوگا، اور امام ابو یوسف کے مزد دیک دونوں واقع کی ہے تو ظہار نہ ہوگا، اور امام ابو یوسف کے مزد دیک دونوں واقع

⁽۱) - حاهية المحطاوي على مراتى الفلاح رص ۱۸۸،۹۸۸

⁽۲) سوره کر کیم ار

^{-11/2/30}p (m)

⁽۱) فتح القدير ۱۹۲/۳ مه اطبع دارصا در 🔻

⁽۲) فع القدير سراك

ہوں گے اور امام او صنیفہ کی ولیل ہیہ کہ بیلفظ ظبار کے لئے صریح ہے، کہذا اس میں اس کے علاوہ کا اختال نہیں ہے (۱)۔

اوراگرصرائة لفظ ظبار كا استعال كرے، چنانچ اپل يوى ہے كہ: "أنت على كظهر آمي" توال سے ظبارى مرادلياجا كا اور ال كى وجہ ہے ال كى يوى ال پرحرام ہوجائے گى اور ال ہو ولئى كرنا، ال كوچونا اور ال كوبوسه لينا جائز نہ ہوگا، يبال تك كو و كفار كرنا، ال كوچونا اور ال كا كر اللہ تعالى كا ارتاد ہے: "وَ اللّٰهِ يُن كَفَار كَا ظُهار اواكروے، الله لغالى كا ارتاد ہے: "وَ اللّٰهِ يُن كُفَاهِ وَ وَ يُن يُسَائِهِم ثُمّ يُعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحُويُو رُو فَهُ بِهِ مُن قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسًا "(۲) تا الله تعالى كول : "فَمَن لَمْ يَجِد فَصِيامُ شَهْرَيْنِ مُتَنَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسًا فَمَن لَمْ يَسَعَطِع فَي فَيْلِ أَنْ يَتَمَاسًا فَمَن لَمْ يَسِعِلُوا فَي عَلَى الله عَلَى الله الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله الله عَلَى الله الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَ

اگر کفارہ اوا کرنے سے قبل اس نے اپنی بیوی سے مجامعت کر لی تواللہ تعالی سے مغفرت طلب کرے گا۔ اور پہلے کفارہ کے علاوہ کوئی اور جیز اس پر واجب نہ ہموگی، اور اب کفارہ کی اوا یکی سے قبل دوبارہ مجامعت نہیں کرے گا، اس لئے کہ نبی علیہ نے اس شخص دوبارہ مجامعت نہیں کرے گا، اس لئے کہ نبی علیہ نے اس شخص سے جس نے کفارۂ ظبار کی اوا یکی کے درمیان اپنی بیوی سے مجامعت کر لی تھی فر مایا: "فاعتو لھا حتی تکفو عنک" (۳)

(٣) حديث: "فاعتزلها حتى نكفو علك" كي روايت ايوداؤ د (٢١١٧/٣

(تو اس سے الگ رہ میباں تک کہ کفارہ ادا کرے) اور اگر کوئی اور چیز اس پر واجب ہوتی تو ضرور اس پر تنبی فیر ماتے (۱)۔

اوراگر وہ کے کہ تومیری ماں کی طرح میرے لئے حرام ہے، تو اس میں طلاق وظہار دونوں کا اختال ہے۔

اور اگر وہ کے کہ میری نیت ظباریا طلاق کی تھی تو اس کی نیت کا اعتبار کیا جائے گا، کیونکہ اس میں دونوں کا اختال ہے یعنی ظبار کا تشبیہ پائے جانے کی وجہ سے اور طلاق کا تحریم کی وجہ سے۔ اور اگر اس کی کوئی نیت نہ ہوتو امام ابو بوسف کے قول کے مطابق پا بلاء ہوجائے گا اور امام محمد کے قول کے مطابق ظبار (۲)۔

علاوہ ازیں بیوی کوحرام کرنے کی حیار صورتیں ہیں: طلاق إیلاء ملعان اور ظہار۔ اس کے قائل حضیہ ہیں (۳)۔

سم- مالکیه کاخیال میہ کے اگر کس نے اپنی بیوی سے "انت علیّ حوام" (تو مجھ پر حرام ہے) کہا تو یہ بتات لیعنی بینونت کبری ہے(۳)۔

اور اگر ال سے کے کہ تومیر سے لئے ہر ال شی کی طرح ہے جس کو کتاب (قرآن) نے حرام تر اردیا ہے، اور یقینا کتاب نے مر دار، خون اور فنزیر کے کوشت کو حرام کہا ہے، تو کویا اس نے کہا تو مر دار اور خون کی طرح ہے، تو اس پر بینونت کبری لازم ہوجائے گی، میں این القاسم اور این ما فع کا مذہب ہے۔

اور" المدونة" ميں ہے: رہيد نے فرمایا: جس شخص نے بيكها ك

⁽۱) فح القدير سراسين

⁽۲) سورهٔ مجاطه رس

⁽۳) سورهٔ مجاطه رس

⁼ طبع عزت عبید دهاس) نے کی ہے اور ابن جرنے نتح الباری (۳۳۳ طبع استانیہ) میں اس کو صن قر اردیا ہے۔

⁽۱) فعج القدير ١٣/٣٢، ٢٢٨، ١٣٣٠ـ

⁽٢) فتح القدير سراسه.

⁽m) فقح القديم ٣/١٨ ٨١، ١٨ الشيع وارصا ورب

⁽٣) جوهم لا كليل ار ٣٦ ٣٠ موارب الجليل ٢٨ ر ٥٨،٥٥ .

توہر اس چیز کی طرح ہے جس کو کتاب اللہ نے حرام کیا ہے تو وہ ظہار کرنے والا ہوگا اور ابن الماجشون کا یکی قول ہے (۱)۔

۵- اور ثنا فعیہ نے فر مایا کہ اگر کسی نے اپنی بیوی سے کہا کہ تو میر سے
لئے حرام ہے یا بیس نے مجھے حرام کر دیا ہے اور طابات یا ظہار کی نیت
کی تو نیت کر دہ شی کا اعتبار ہوگا، اور ان کا غدیب حنفیہ کی طرح ہے اور
حنا بلد کی مشہور روایت امام احمد سے بیہ کہ اگر طابات کی نیت کی ہے تو
طابات ہوجائے گی مگر رجعی ہوگی۔ اگر اس نے عدد طابات کی نیت کی
ہے تو جنتی طابات کی نیت کی ہے اتن واقع ہوگی، اور ان کی رائے حفیہ
کی رائے کی طرح ہے کہ اگر ظہار کی نیت کی ہے تو ان کے خذیہ
طہار ہوگا جیسا کہ امام صاحب کے فرد دیک وہ ظہار ہے۔

اور اگر اس نے طابق اور ظہار دونوں کی ایک ساتھ نیت کی تو
اے اختیا رہوگا اور وہ ان میں ہے جس کو متعین کرے گا وی متعین
ہوگا۔ اور ایک قول یہ ہے کہ طابق واقع ہوگی، کیونکہ از لئہ ملک میں
طابق زیادہ قوی ہے، اور ایک قول ہے کہ ظہار ہوگا، کیونکہ اس نکاح
کابا تی رہنا ہے اور طابق و نکاح ایک ساتھ نہیں رہ سکتے، اس لئے کہ
طابق نکاح کو ختم کر دیتی ہے اور ظہار اس کی بناء کا متقاضی ہے۔

اور اگر اس نے اس عورت کی ذات یا اس کی شرم گاہ یا اس سے وطی کرنے کی تخریم کی نبیت کی ہوتو وہ اس پرحرام نبیس ہوگی، ہاں اس پر کفارہ کیمین واجب ہوگا (۲)۔

اور اگر اس نے اپن قول: "أنت علي حوام" كومطلق ركھا اور كھانت نه كي تو اس ميں دواقو ال بين:

ان میں سے اظہر بیہ کر کفارہ واجب ہوگا۔ اور اس کاقول:

(۱) الدسوقي على المشرح الكبير ۲/۴ ۳۴، ۳۴۳_

" أنت عليّ حوام" وجوب كفاره بين صرت مح موگا۔ اور دومر اقول ميہ ہے كہ اس ہر پچھ بھى واجب نہيں ہے۔ اور ميہ لفظ وجوب كفاره كے لئے كنامية موگا (1)۔

اوراگر وہ ال سے کے کہ توجھ پرحرام ہے، تو مجھ پرحرام ہے،
اورحرام کرنے کی نیت بھی کرے تو اگر بیات ال نے ایک بی مجلس
میں کبی یا چندمجلسوں میں کبی اور تا کید کی نیت کی تو اس ہے ایک بی کفارہ
واجب ہوگا، اور اگر بیات چندمجلسوں میں کبی اور دوبارہ حرمت کی
نیت کی تو اسح قول کے مطابق متعد دکفارہ واجب ہوگا اور ایک قول بیہ
ہے کہ اس پر ایک بی کفارہ واجب ہوگا، اور اگر مطلق رکھا تو دوقول
ہیں (۲)۔

اور اگر ظبار کے علاوہ کا ارادہ کرے تو امام احمہ سے ایک جماعت کی روایت بدہے کہ وہ ظبار ہے،خواہ طلاق کی نیت کرے یا نہ کرے۔

⁽۲) منهاج لطالبین وحاشیر قلّیو لی سر۲۱ س، روصة الطالبین ۸۸ ۲۳۳، ۳۸ طبع اسکنب لاسلامی، المغنی لا بن قدامه ۱۵۷، ۵۲۷ س

⁽¹⁾ روهية الطاكبين ١٩٨٨

⁽۲) روهيد الطاكبين ۱۸ ۳۰،۳۰

⁽m) روهية الطاكبين ۸/ اس

اورایک قول بہت کہ اگرات قول: "انت علی حوام" کے فرمید میمین کا ارادہ کرے تو میمین ہوجائے گی اور اس پر کفار ہ میمین ہوجائے گی اور اس پر کفار ہ میمین واجب ہوگا، چنا نچ حضرت ابن عبال ہے مروی ہے کہ انہوں نے فر مایا: جب کوئی شخص اپنی بیوی کو اپنے اوپر حرام کرلے تو بہ میمین ہے اور وہ میمین کا کفارہ اوا کرے گا، اور فر مایا: "لفَلَدُ کَانَ لَکُمْ فِی وَسُولِ اللّهِ أَسُوةٌ حَسَنَةٌ" (ا) (تمہارے لئے رسول الله عَلَیْ مُر مایا: "لفَلَدُ کَانَ لَکُمْ فِی کُن دَدگی میں بہتر بن مونہ ہے)، نیز اس لئے کہ الله قال نے فر مایا: "لیا أَیُهَا النّبِی لِمَ تُحرّمُ مَا أَحَلُ اللّهُ لَکَ تَبْتَعِی مَوْضَات کُن زَدگی میں بہتر بن مونہ ہے)، نیز اس لئے کہ الله لَکُمْ تَجلّهُ اللّهُ لَکَ تَبْتَعِی مَوْضَات کُن زَدگی میں بہتر بن مونہ ہے)، نیز اس لئے کہ الله لَکُمْ تَجلّهُ اللّهُ لَکَ تَبْتَعِی مَوْضَات کُن اللّهُ لَکَ تَبْتَعِی مَوْضَات کُن اللّهُ لَک تَبْتَعِی مَوْضَات کُن اللّهُ لَکُمْ تَجلّهُ اللّهُ لَک تَبْتَعِی مَوْضَات کُن اللّهُ لَکُمْ تَجلّهُ اللّهُ لَکُمْ تَجلّهُ اللّهُ لَکُمْ تَحْرَامُ کُن اللّهُ لَکُمْ تَجلّهُ وَاللّهُ لَکُمْ تَحِلُهُ وَاللّهُ لَکُمْ تَحْرَامُ کُن اللّهُ لَکُ مُن اللّهُ لَکُمْ تَکْمُ تَحْرَامُ کُولِوں کُرام فرائے ہیں اپنی جوہوں کی خوشنودی کا کھولنا مقر رفز مادیا ہے)۔ تو اللّه تعالی خوال کے اللّه تعالی کے اللّه تعالی کے حرام کو کیمین تر اردیا ہے (۳)۔

اور اگرید کے: "اعنی بانت علی حوام"الطلاق" (میری مراد" الطلاق" ہے) تو طایات ہوگی، امام احمد کی مشہور روایت کی ہے، اور اگر ال نے ال سے نین کی نیت کی تو تین طایقیں واقع ہوجا نمیں گی، کیونکہ اس نے تحریم کی تفییہ کرتے ہوئے الف لام کا استعمال کیا ہے جو استغراق کے لئے ہوتا ہے تو اس میں تمام طایقیں واقل ہوں گی، اور اگر کے: اعنی به طلاقاً (میری مرادطایا تا) ہے تو ایک عی طایق ہوگی، کیونکہ اس نے طایق کوئکرہ ذکر کیا ہے، لہذا ایک عی طایق ہوگی، کیونکہ اس نے طایق کوئکرہ ذکر کیا ہے، لہذا ایک عی طایق ہوگی، کیونکہ اس نے طایق کوئکرہ ذکر کیا ہے، لہذا ایک عی طایق ہوگی (۳)۔

اور اگریہ کے کہ تومیرے اوپر میری ماں کی پیتے کی طرح ہے اور اس سے طاباق مراد کی تو طلاق نہ ہوگی، کیونکہ بیا فظ ظہار کے لئے صرح ہے، لہذ اظہار کے علاوہ دوسری چیز مراد نہ کی جائے گی اور بیہ طلاق کے لئے کنا پہیں طلاق کے لئے کنا پہیں ہوتا ہے (۱)۔

اوراگر کے کہ تو میرے لئے مرداراورخون کی طرح ہے اورال نے طااق کی نیت کی تو طااق ہوجائے گی، اورال سے جتنی طااق کی نیت کرے گا اتنی طااق واقع ہوجائے گی اوراگر کچھ نیت نہ کرے تو ایک جی طااق واقع ہوگی۔

اور اگرظبار کی نیت کرے یعنی اس کوحالت نکاح پر باقی رکھتے ہوئے اپنے اوپر حرام کرنے کا اراوہ کرے تو اس میں ظبار اور عدم ظبار دونوں کا احتمال ہے۔

اور اگر ال نے بیمین کی نیت کی بینی بیک ال سے وطی ندکرنا مقصو دہو، ال کوحرام کرنا یا طااق دینامقصو دند ہوتو بی بیمین ہے اور اگر کچھ بھی نیت ندکی ہوتو طااق ند ہوگی، کیونکہ بیانہ تو طااق کے لئے صرتے ہے اور ندی ال نے ال کے ذریعہ طااق کی نیت کی۔

اور اس صورت میں کیا ظہار ہوگایا سمین؟ دواقو ال ہیں: ایک بیہے کہ وہ ظہار ہوگا اور دوسر ایہ ہے کہ وہ سمین ہوگا (۴)۔

اوراگر وہ اپنے قول: "أنت علي حوام" كے ذر معيد ظہار كى نيت كرے تو وہ ظہار ہے جيسا كہ جمہور فقہاء (امام ابو حنيفه، امام ابو بيسف، امام شافعی اور امام احمد) كا قول ہے اور اگر اس سے طلاق كى نيت كى تو طلاق ہوگى۔ اور اگر مطلق ركھا تو اس ميں دو روايتيں ہيں: ايك بيہ ہے كہ بيظہار ہے، دوسرى بيہ ہے كہ بيہين دوايتيں ہيں: ايك بيہ ہے كہ بيظہار ہے، دوسرى بيہ ہے كہ بيہين

⁽۱) سورگافزاپ/۱۴

^{-11/6/3/ (}r)

⁽٣) - أمغني لا بن قد المديم م ١٥٧، ١٥١ اطبع الرياض الحديث _

⁽٣) أمغني لابن قد امه ١٥٤/١٥٤١، ٣٣٣ـ

⁽۱) المغنى لا بن قد امه ۱/۷۵ س

⁽٢) المغنى لا بن قند امه ١٥٧٧هار

ے(۱)ہ

اور اگر کے: "آنت علی حوام" اور ایک ساتھ طااق وظہار دونوں کی نیت کرے تو ظہار ہوگا، طااق نہ ہوگی، کیونکہ ایک می افظ طااق اور اس کے لئے ایک ساتھ نہیں ہوسکتا، اور اس لفظ سے ظہار کا ہونا اولی ہے، لہذا ای کی طرف لوٹ جائے گا۔ اور بعض اصحاب ثانعی کا خیال ہے کہ اسے اختیار ہوگا، چنانچ اس سے کہا جائے گا کہ اس میں سے خیال ہے کہ اس میں اسکار کے جیسا کہ ماقبل میں گزرچکا (۳)۔

عموماً فقہاء کے درمیان اس سلسلے میں کوئی اختاا فسٹیں کہ ظہار کا کفارہ اداکرنے سے قبل اپنی بیوی سے مجامعت کرنا حرام ہے جیسا ک اس کانیان گذر چکا (۳)۔

دوم-حلال كوحرام كرنا:

۸ - اشیاء کے اندر اسل اباحث ہے، جب تک کہ اس کے حرام ہونے پر کوئی ولیل قائم نہ ہوجائے۔ شافعیہ اور بعض حفیہ نے جن میں کرخی بھی ہیں، یکی فر مایا ہے، اور اس کی تائیدرسول اللہ علیاتی کے اس ارشاد سے ہوتی ہے۔ "ما أحل الله فهو حلال، وما حوم فهو حوام، وما سکت عنه فهو عفو، فاقبلوا من الله عافیته، فإن الله لم یکن لینسسی شیئا "(م) (جس کو اللہ تعالی عافیته، فإن الله لم یکن لینسسی شیئا "(م) (جس کو اللہ تعالی

نے حلال قر اردیا ہے وہ حلال ہے، اور جس کوحرام قر اردیا ہے وہ حرام ہے، اورجس سے تعلق سکوت فر مایا ہے، وہ معاف ہے، لہذ الله کی طرف ہے اس معانی کو قبول کرو، کیونکہ اللہ تعالی ایسانہیں کا سی چیز کو بھول جائے)۔ اورطبر انی نے حضرت نگلبہ کے قل کیا ہے: " اِن الله فرض فرائض فلا تضيعوها،ونهى عن أشياء فلا تنتهكوها، وحدّ حدودا فلا تعتلوها، وسكت عن أشياء من غیر نسیان فلا تبحثوا عنها" (الله تعالی نے کھے چیز وں کو ہے شک فرض کیا ہےتم لوگ اس کوضائع مت کرو۔اور چند چیز وں ے منع فر مایا ہے تم لوگ اس کی خلاف ورزی نہ کرو، اور چند حدود مقرر فر مادی ہیںتم لوگ ان سے تجاوز نہ کرو، اور چند چیز وں کو بغیر بھولے ا بیان نبیس فر مایا ہے، لبذاتم لوگ اس کے باب میں تکلف میں نہ پڑو، اورایک روایت میں ہے: "وسکت عن کثیر من غیر نسیان فلاتتكلفوها رحمة لكم فاقبلوها"(١)(١وربهت ي چيزون كو بغیر بھولے بیان نہیں کیا الہذاتم لوگ دشو اری میں نہ پڑو۔ ریٹمہا رے لئے رحت ہے تو تم لوگ اس کو قبول کرو) اور تر مذی اور این ماجہ نے حضرت سلمانؓ نے تقل کیا ہے کہ نبی علیہ سے پنیر بھی اورغذا کے متعلق دريافت كيا ليانو آپ علي في خال الحلال ما أحلَ الله في كتابه، والحرام ما حرّم الله في كتابه، وما سكت عنه فهو مما عفا عنه"(٢) (الله تعالى نے اپني كتاب بيس جس كو

⁽۱) أمغنى لا بن قد امه 2/ ۳۳۳، فتح القدير سهر 21 طبع دار صادر، منهاج الطائبين ۸/ ۳۴۳، أكتب الطائبين ۸/ ۳۴۳، أكتب لا سلائ-

⁽۲) - المغنى لا بن قد امه ۱۷۷ ۳۳۵، منهاج الطالبين مع حاهية القليو في سهر ۳۲۹، روهة الطالبين ۸۲ ۸۲، ۳۳۳ اكترب لإسلامي

⁽m) - أمغني لا بن قدامه ٤/٨ ٢ من ملاس، ملاس، فلح القدير ٢٣١٣، ٢٣٨ ، ٢٣٨ ـ ٢٣٣ـ ـ

⁽۳) حدیث: الما أحل الله فهو حلال "كي روايت بزار (سهر ۳۵، در) حدیث: الما آحل الله فهو حلال "كي روايت بزار (سهر ۳۵، ان كشف الاستار هيم الرساله) نے كي ہے اور اس كي سند ضعيف ہے (ميز ان الاعتدال بدوجي ار ۲۳ م هيم لحلي) ۔

⁽۱) حدیث "إن الله فوحن فوانص فلا بضبعوها" کی روایت دار طنی (۱۹۸٫۸۳)نے کی ہے اوراس کی تعلق میں ہے پھل کے بارے میں جواس کی سند میں ہے، اسحاق بن راہو ریکا خیال ہے کہ وہ گذاب ہے اور ابوحاتم ورنیائی نے کہا کہ وہمتر وک ہے۔

⁽۲) الاشباره والنظائر للسيوطی رص ۲، الاشباره والنظائر لا بن تجتم رص ۲۷،۲۱۔ حدیث الحال ما أحل الله في تحابه کی روابیت تر ندی (سهر ۲۳۰ طبع لجلس) ورحاکم (سهر ۱۱۵ طبع دائر قالمعارف المشمانیه) نے کی ہے اور اس کے ایک راوی کے ضعیف ہونے کی وجہ نے دہی نے اس کو ضعیف قمر اردیا ہے۔

طال کیا ہے وہ طابل ہے، اور اپنی کتاب میں جس کوحرام کیا ہے وہ حرام ہے، اور جن چیز وں کو بیان نہیں کیا وہ ان چیز وں میں ہے جن کو معاف کردیا ہے)۔

اورطال كوترام كرنے كے تعلق الله تعالى كا يفر مان ازل ہوا ہے: "يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ" (1) "قَدُ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمُ تَحِلَّهُ أَيُمَا يِكُمُ مُ" (") _

چنانچ سے مسلم میں حضرت عائشہ ہے روایت ہے کہ بی عظیمہ میں حضرت زینب بنت جمش کے پاس قیام فر مایا کرتے تھے اور ان کے پاس شہدنوش فر ماتے ۔ وہ کہتی ہیں کہ میں نے اور هضعہ نے ال بات پر اتفاق کرلیا کہ ہم میں ہے جس کے پاس رسول اللہ عظیمی تشریف لا نمیں تو وہ کے کہ آپ ہے مغافیر کی ہو آری ہے۔ کیا آپ نے مغافیر اللہ علیمی تشریف کے باس مستعال فر مایا ہے؟ چنانچ رسول اللہ علیمی ہے۔ کیا آپ عالیمی نے مغافیر تشریف لا نے تو اس نے آپ ہے کہا۔ آپ علیمی نے فر مایا کہ بیس نے زینب بنت جمش کے پاس شہد بیا ہے، اور اب ہرگز نہ بیس نے زینب بنت جمش کے پاس شہد بیا ہے، اور اب ہرگز نہ بیس نے زینب بنت جمش کے پاس شہد بیا ہے، اور اب ہرگز نہ بیس کے اس پر اللہ فکک، اس پر اللہ تعالی کا بیار شاونا زل ہوا: "لیم تُنحو مُ مَا اَحَلَّ اللہ فکک، (۳) اس پر اللہ تعالی کا بیارشاونا زل ہوا: "لیم تُنحو مُ مَا اَحَلَّ اللہ فکک، (۳) اس کے لئے طال کیا ہے آپ اس کو کیوں جرام خریا ہے ہیں)، (اگر آپ کے دونوں (یعنی عائشہ وحفصہ) تو بہرلو)۔

اور ایک روایت میں ہے کہ جن کو آپ نے حرام کیا تھا وہ ماریہ تبطیبہ تھیں، چنانچ بیشم بن کلیب نے حضرت عمرؓ سے روایت کی ہے، وہ فر ماتے ہیں کہ آپ علیانی نے حضرت حفصہؓ سے مایا: "الا تعجبو ی

ائن وبب نے مالک سے اور انہوں نے حضرت زید بن آمام سے روایت کی ہے، وہ کہتے ہیں کہ رسول اللہ علیہ نے ام ایر انیم کو حرام کرلیا تو آپ علیہ نے نز مایا: "انت علی حوام، والله لا آتینک" (تو مجھ پر حرام ہے، بخد الیس تنہار ہے پاس نیس آوں گا) اس پراللہ تعالی نے اس کے تعلق بی آیت نازل فر مائی: "یا اُلیہ اُللہ لکہ اللہ تعالی نے اس کے تعلق بی آیت نازل فر مائی: "یا اُلیہ اُللہ اُلکہ اُلگہ اُلکہ اُلگہ اُلکہ اللہ اُلکہ ا

یداللہ تعالی کی حاول کروہ شی کوحرام کرنائییں ہے، کیونکہ جس چیز کو اللہ تعالی نے حرام نہیں کیا اسے حرام قر اردینے کاحق کسی کوئییں ، اور نہ وہ شی کسی کے حرام قر اردینے سے حرام ہوجائے گی ، اوررسول اللہ

J/6 / 201 (1)

_r/6/20+ (r)

⁻m/ 3/2 (m)

⁽٣) آیت کر بر به این اللیمی لیم نخوه ما أخل الله لک کائان نزول والی عدید کی روایت مسلم (١١٠ - ١١١ طبع الحلق) نے کی ہے۔

⁽۱) حضرت عمر کی حدیث: **الا دخیری أحدا" کی روایت این کثیر نے اپنی تغییر** میں ایسم بن کلیب ہے کی ہے اور قر ملا کہ ریسند سطح ہے اور سحاح ستہ کے مؤلفین میں ہے کسی نے اس کی روایت نہیں کی ہے (تغییر ابن کثیر ۱/۷۵ طبع دارالامالس)۔

 ⁽۳) حدیث این وجب: 'یَا آئیها اللّبِی لِلم نُحَوْمُ مَا أَحَلُ اللّهُ لَکَ" کی
شان زول کی روایت این جربر (۵۲/۲۸ اطبع آخلی) نے کی ہے وراس کی
سند میں ضعف ہے۔

_r/2 /800 (m)

تحریمه، محسین ۱ - ۲

. تر یمہ

د يكيئے:'' تكبيرة الاحرام''۔

تحسين

تعریف:

ا تحسین کالغوی معنی مزین و آراسته کرنا ہے، اور ای کے مثل جمیل (خوابصورت بنانا) ہے۔جوہری نے کہا: حسّنت المشيء تحسیناً یعنی میں نے اس کو آراستہ کیا۔

راغب اصفہانی نے کہا کہ لفظ" حسن"عرف عام میں زیادہ تر اس شمیٰ کے لئے بولا جاتا ہے جود کیھنے میں اچھی ہو، اور قرآن کریم میں اس کامیشتر ذکر الیی شئ کے سلسلے میں آیا ہے جو بصیرت (افر است) کے اعتبار سے بھلی ہو۔

الل لفت نے زّینت المشيء (جس نے چیز کومزین کیا)اور حسّنته (میں نے چیز کوآ راستہ کیا) کے درمیان کوئی فرق نبیس کیا ہے بلکہ دونوں کا ایک علی تجویز کیا ہے۔

تخسین کا اصطلاحی معنی اس کے بغوی معنی سے الگ نہیں ہے (۱)۔

متعلقه الفاظ:

الف-تجويد(عده بنانا):

٢ - تجويد: "جوّد الشيء" كامصدر بي يعني ال في ال كوعده كرديا ..

(۱) الصحاح للجوم كي مادة " حسن" ، تاع العروس ، شرح القاسوس ، لسان العرب ، مجم الوسيط ، محيط المحيط تمام كي تمام مادة " حسن" على لودلسان العرب مادة " ممل" على بَشير القرطبي ۱۲ ره ۲۲ طبع وارالكتب المصر بي تشير ابن كثير سهر ۴۰ س، ۲ر ۲۱ طبع وارالعرف ، المفر وات للر اغب الاصبها في مادة " زين" -

⁽۱) الجامع لاحظام القرآن للقرطبي ۱۸ مر ۱۸ ۱۸ ۱۸ ۱۸

اور اصطلاح میں تجوید کا مصلب ہے: حروف کو ان کاحق دینا،
ان کو ان کے در ہے میں رکھنا، حرف کو اس کے خرج اور اس کی اصل
کی طرف پھیرہا اور اس کو پورے طور پر اس طرح لطافت کے ساتھا وا
کرنا کہ اس میں نہ کوئی زیادتی ہواور نہ کی اور نہ کسی طرح کا افر اطابو
اور نہ کوئی تکلف(۱)۔

اس طرح تحسین تجوید سے عام ہے، کیونکہ تجوید قر اوت کے ساتھ خاص ہے۔

ب-تحليه (آراسته كرنا):

سا- جبكوئى عورت زيوريكن لے ياس سے آراستر ہوجائے تو كبا جاتا ہے: تحلت المو أن اور حليتها تحلية (تشديد كے ساتھ، باب تفعيل سے)، اس كامعنى بيہ كريس نے اس كوزيور پہناديا يا اس كے پہنے كے لئے بيں نے زيور لے ليا۔ اور كہتے ہيں: حليت المسويق ليعنى بيل نے ستو بيل كوئى ميٹھى چيز المائى تاك وہ عیا المسويق ليعنى بيل نے ستو بيل كوئى ميٹھى چيز المائى تاك وہ عیا المسويق العنى بيل نے ستو بيل كوئى ميٹھى چيز المائى تاك وہ عیا المسويق الموری المائى تاك وہ عیا الموری المائى تاك وہ عیا الموری المائى تاك ہوجائے (۲)۔

اورال کااصطلاحی معنی ال کے لغوی معنی سے علاصدہ نہیں ہے۔ اور شعبین کا لفظ تحلید کے لفظ سے عام معنی رکھتا ہے، کیونکہ بسااو قات بعض چیزیں بغیر تحلید (میٹھا کئے) حسین ہوجاتی ہیں، مثلاً کھانا نمک ملانے سے اچھا ہوتا ہے نہ کہ ال کو پیٹھا کرنے ہے۔

ج-تقبیح (بدشکل بنانا):

سم - کسی شی کوبدشکل بنانے یا س کوبر ان کی طرف منسوب کرنے کے

- (۱) لا نقان الروم الطبع المحلمي و ۱۳۷۷ هه ۱۹۵۱ء، مقافیس الملعة ، لسان العرب مادههٔ ''جودُ"
- (٣) الفروق في الملعد إذا في بلال العسكري ٣٣ طبع دارالأفاق المجديده بيروت،
 المصباح المعير ماده: "طلائه

لئے تقیع کا ستعال ہوتا ہے، اور پیٹسین کی ضد ہے۔

تعسین و تقبیح کی بنیاد: ۵ - تحسین و تقبیح کا اطلاق تین طرح سے ہوتا ہے:

پہلی صورت طبیعت کے مناسب اور نا مناسب ہونے کے اعتبار سے ہے جیسے ہم کہتے ہیں: گلاب کی مہک اچھی ہے، اور مردار کی مہک بری ہے۔

دوسری صورت صفت کے کامل اور ناقص ہونے کے اعتبار سے ہے، بٹلائلم اچھاہے اور جہالت ہری ہے۔

اور ان دونوں اقسام کاسر چشمہ عقل ہے بشریعت پر موقوف نہیں اور اس میں کوئی اختلاف معلوم نہیں ہے (۱)۔

اور تیسری صورت ثواب شرق اور عذاب شرق کے اعتبار سے ہے، اس کے تعلق قدرے اختاا ف ہے، چنانچ اشاعرہ کا مذہب سے ہے، اس کا سرچشمہ شریعت ہے، عقل ندا سے اچھا ٹابت کر عمق ہے اور ندیرا، اور ندواجب کر عمق ہے اور ندیرام۔

اور ماترید بیکا کبنایہ ہے کہ اس کو بھی عقل عی اچھایا ہرا کہ مسکتی ہے، کویا کہ انہوں نے حسن شرق اور بھی شرق کومنا سب اورنا مناسب ہونے کی طرف پھیر دیا ہے۔

اور معتز لد کا خیال بہ ہے کہ عقل عی اچھا قر اردیتی ہے اور ہرا ہونا ٹا بت کرتی ہے، واجب کرتی ہے اور حرام کرتی ہے۔ اس مسئلہ میں مز بد تفصیل ہے جس کامقام اصولی ضمیمہ ہے (۲)۔

⁽۱) شرح الكوكب لمعير لا بن الملحام ار ٣٠٠ طبع مركز البحث العلمي في جامعة الحلك عبد العزيز ٢٠٠ الهام أواتح الرحموت ار ٢٥ المطبعة البولاقية الاولى الملك عبد العزيز ٢٠٠ الهامة أملية السول شرح منهاج الوصول للاسنوى الره ١٣ الطبع مطبعة لمهادة مصر-

⁽٢) كشف الاسرار سهر ٢٣٠، هُبِع دار الدحاده استنبول، شرح الكوكب لمعير

تحسينيات:

۲- مقاصد شریعت کی بحث اصول فقد کی ایک اہم بحث ہے، علاء اصول بیز کرکرتے ہیں کہ مقاصد شریعت کی صرف تین قشمیں ہیں:
 پہلی شم ضرور رہے، دوسری شم حاجید اور تیسری شم تحسینید ہے۔

ضروریہ وہ جیزیں جومصالح دین و دنیا کے قیام کے لئے
اس طرح ضروری ہوں کہ اگر وہ نہ پائی جا نمیں تو مصالح دنیا سیح نہیں
رہ سکیں، بلکہ فتنہ و نساد پھیل جائے ، زندگی مشکل ہوجائے ، آخرت
میں فعمتوں کے نوجہ ہونے اور صرح نقصان پیش آنے کا اند بیشہ
ہوجائے۔

صاجیہ: وہ چیزیں ہیں جو وسعت پیدا کرنے اور الی تنگی کو دور کرنے کے لئے ضروری ہیں جوعموماً ایسی مشقت وحرج کا سبب مخت ہیں جن سے مقصود نوت ہوجا تا ہے، لہذا اگر ان کی رعابیت نہ کی جائے تو لوگوں کو نی الجملہ تنگی اور مشقت چیش آ جائے مردین کی پاپٹی بنیا دی ضروریات میں کوئی خلل واقع نہ ہو۔

تحسینید کا مصلب ہے: ایسے امورکو اختیار کرنا جو انہی عادات کے ثابان ثان ہوں، لہذا مید مکارم اخلاق اور شرعی آ داب دونوں کا جامع ہے (۱)۔ اس کی تفصیل اصولی ضمیمہ میں ہے۔

فقه اسلامی میں شخسین کا حکم:

 فی الجمله زینت افتایار کرنا مطلوب ہے بشر طیکہ نیت الحیحی ہواور خیر کا ارادہ کیا گیا ہو، اور مکروہ یا حرام ہے، اگر نیت سیح نہ ہو یا وہ

- = ار ۲ وس، الروكل المعطقيين لا بن تيميه رص ۳۰ طبع ادار وترجمان القرآن لا جور بإكتان، ۱۳۹۹ه، مدارع السالكين لا بن القيم ار ۳۳۱ مطبعة السنة المحمد به ۲۳۵هه
- (۱) الموافقات للفاطبي ۲ مر ۸ اور اس کے بعد کے صفحات طبع اسکتبة التجاریة الکبري مصر، الاحکام کن مدی ۲ مر ۳۸، استصفی للغو الی امره ۱۳۳۳، ارستا داکول للفوکالی مرم ۱۸۹۰

ارتکاب حرام کاسب ہویا اس سے خیر کاار اوہ نہ کیا گیا ہو۔

ال کے موضوع کے اعتبار سے اس کا تعلم مختلف ہوجاتا ہے۔ سچھ ثالیں درج ذیل ہیں:

شكل وصورت كوآ راسته كرنا:

۸- عام شکل وصورت کوبغیر مبالغه آرائی کے آراسته کرنامستحب به رسول الله علیه اس کا تشم فرناتے بھے۔ آپ علیه کا ایک ارشا و یہ ہے: "اصلحوا رحالکم، و اصلحوا لباسکم حتی تکونوا کا تکم شامة فی الناس، فإن الله لا یحب الفحش ولا التفحش" (ا) (تم اپنی سواری کو اچھا رکھو اور اپنے لباس کو اچھا رکھو، تا کرتم لوگوں کے درمیان ممتاز رہو، اس لئے کہ اللہ تعالی برصورتی اور بے حیائی کو پندنیس فرناتا ہے)۔

اور داڑھی اور مونچھ کومزین کرنامتحب ہے۔ اس عدیث کی بنا پر جس کی روابیت حضرت عمر و بن شعیب نے اپنے والد سے اور انہوں نے اپنے وادا سے کی ہے کہ "کان یا خد من لحیته من عوضها و طولها" (۲) (رسول اللہ علیہ ابنی داڑھی کولمبائی اور چوڑ ائی میں درست فر مایا کرتے بتھے)، اور سیجے مسلم میں ہے کہ رسول اللہ علیہ فی نے فر مایا:" جزوا الشوادب و آد خوا اللحی، خالفوا المعجوس" (۳) (مونچیس کترواؤ اور داڑھی بڑھاؤ اور

- (۱) عدیث: "أصلحوا رحالكم، وأصلحوا لباسكم" كي روايت ايوداؤد (سهره ۳۳۶زت عبير دهاس) نے كي ہےاوراس كي سند ميں جہالت ہے (ميز ان الاعتدال للدجبي ۲۹۳۷س)۔
- (۲) حدیث: "کان یا تحل من لحب من عوضها و طولها" کی روایت تر ندی (۵ / ۴ هم طبع لحلی) نے کی ہے اور اس کی سند میں عمر بن ہارون آگئی ہے جو جم ہم الکذب ہے (میزان الاعتدال سمر ۲۲۸ طبع کملی)۔
- (٣) عديث: "جزوا الشوارب وأرخوا اللحي" كي روايت مسلم (٣) عديث: "جزوا الشوارب وأرخوا اللحي" كي روايت مسلم

مجوسیوں کی مخالفت کرو)۔

9 - عورت کاچرہ کومزین کرنا نامناسب جگیوں پراگے ہوئے بالوں کی صفائی کے ذر مید ہوتا ہے ، اس کوز اگل کرنا حضد کے ذر مید ہوتا ہے ، اس کوز اگل کرنا حضد کے ذروی کے مستحب ہوگا (۱)۔ چنا نچ این ابن ابن السقر کی بیوی نے روایت کی ہے کہ وہ حضرت عائشہ کے پاس تھیں تو ایک عورت نے ان سے دریا فت کیا کہ اس کے فراید چرہ پر چند بال ہیں کیا ہیں اسے اکھاڑ دوں تا کہ اس کے ذر مید ہیں اپنے شوہر کے لئے مزین موسکوں؟ تو حضرت عائشہ نے فرایا کہ تکلیف دہ چیز کو اپنے سے دور کرواور اپنے شوہر کے لئے مزین کرواور اپنے شوہر کے لئے ای طرح زینت اختیار کروجس طرح کراروں اگر تم پر وہ کوئی سم کھالے تو تم اس کی قسم پوری کراروں اور اگر تم پر وہ کوئی سم کھالے تو تم اس کی قسم پوری کراروں اور اس کے گھر ہیں ایسے شوش کو این کہ سم پوری کراروں اور اگر تم پر وہ کوئی سم کھالے تو تم اس کی قسم پوری کراروں اور اس کے گھر ہیں ایسے شوش کو اجازت نہ دوجس کو وہ ناپند کرادوں اور اس کے گھر ہیں ایسے شوش کو اجازت نہ دوجس کو وہ ناپند کرا ہو (۲)۔

اور مالکیہ نے فر مایا کئورت کے لئے ایسے بال صاف کرلیما ضروری ہے جس کے صاف کرنے میں اس کی خوابصورتی ہو، مثلاً داڑھی کابال اگر اسے نکل آئے۔

اور اس کے لئے ایسے بالوں کا رکھنا ضروری ہے جس کے ہونے میں اس کی خوبصورتی ہو، آبند اس کے لئے اپنے سر کا بال منڈ انا حرام ہے (۳)۔

اور حنابلہ نے اس سے منع فر مایا ہے اور استرہ کے ذر معید اس کو

- (۱) حاشيه ابن عابدين ۵/ ۴۳۵، حامية القليو لي سهر ۵۲ س
 - (۲) مصنف عبدالرز ا**ق** ۳۲ ۱۳س
 - (m) المفواكه الدوالي ۱/۱۴ س

صاف کرنے کی اجازت دی ہے⁽¹⁾۔

اور شکل کوخوبصورت بنانے کا ایک طریقہ یہ ہے کہ زائد از ضرورت عضوکوبدن سے کا کے کرعلا صدہ کردے مثلاً زائد دانت ، زائد اُنگل اورز اُند بھیلی، کیونکہ اس کی موجودگی میں برصورتی ہوتی ہے اور اس پران تمام برصورتیوں کو قیاس کیا جائے گا جو بدن میں پیدا ہوجا کمیں، البتہ اس عضوز اُند کے از الدمیں بیشرط ہے کہ اس کے از الدمیں سیشرط ہے کہ اس کے از الدمیں سامتی اور تحفظ کاظن غالب ہو (۲)۔

دانتوں کوخوبصورت بنانا، دوا، مسواک اور دوسری ملہ امیر کے ذرقعیہ ہوتا ہے (اور اس کے حکم کے لئے تھلیج کی اصطلاح دیکھی جائے)اور مسواک توہر حال میں مستحب ہے۔

1- عورت کو اپنے شوہر کی خوشنودی کے لئے اپنی شکل کومزین
 کرنے اور شوہر کو اپنی بیوی کی خوشنودی کے لئے اپنی شکل کومزین
 کرنے کی تاکید ہے۔

ائی طرح جمعہ وعیدین اور اذان کے لئے جاتے وقت شکل کو مزین کرنے کا ٹاکیدی تھکم ہے ^(m)۔

لباس کیرزئین:

۱۱ - لباس کو اس طرح مزین کرنا کرف اور سنت کی حدے فارج نہ ہوہ مستحب ہے ، اس لئے کر حضرت ابو الاحوس سے روایت ہے کہ میرے والد نبی علیانی کی خدمت میں اس حال میں آئے کہ آپ میرے والد نبی علیانی کی خدمت میں اس حال میں آئے کہ آپ

و يحصّه ابن عابدين ٧٥ - ٢٦، الفتاوي البنديه ٥٨ ٥٥، أغليو لي
 ٢٦ - ٣٥ ، زاوالمعاوار ٨٤١، الموطأ ١٣ ٩ ٣٠٠

⁽۱) المغنی ار۵۷، ۱۹۳

 ⁽۲) الفتاوي البندية ۱۵ / ۳۱۰ س.

⁽۳) حاشيه ابن عابدين ار۷۷، ۵۳۷/۳ ، ۵۳۷/۳ ، ۴۷۳/۵ ، ۴۷۳/۵ ، مواجب الجليل ار ۳۷۷، حافية القليو لي سهر ۷۳۰، شرح منتهي لإ رادات سهر ۹۹، عقود للحويمي في بيان حقوق الزوجين رص ۸،۵ مطبوء مصر داراحياء التراث العربيه احياء علوم الدين ار ۱۸۱، زادالمعادار ۱۳۳۱، ابن الجشيبه ار۸۲

رِ اگذرہ بال اور برشکل تھے، تو رسول اللہ علی الله عز وجل، قال:
اُمالک مال؟ قال: من کل قلد آتانی الله عز وجل، قال:
فإن الله عز وجل إذا أنعم علی عبد نعمة أحب أن توی علیه "(۱) کیا تمہارے پاس کوئی مال نیس ہے؟ تو آنہوں نے کہا کہ اللہ عز وجل نے بھے ہرشم کی چیز یں عطافر مائی ہیں اس پر آپ علی فی اللہ عز وجل نے بھے ہرشم کی چیز یں عطافر مائی ہیں اس پر آپ علی فی نا نے نو وہ نے فر مایا کہ اللہ تعالی جب کسی بندے کوکوئی فعمت عطافر ما تا ہے تو وہ عابر ما تا ہے تو وہ عابر ما تا ہے تو وہ عابر ما تا ہے تو وہ علی ہے۔

مندرجونیل اشیاء کے در میدلبال مزین کیا جاسکتا ہے:
الف الباس صاف تھر اہو، کیونکہ رسول اللہ علیہ نے ایک شخص کو پر اگندہ حال دیکھ کرفر مایا: "أما کان بجد هذا ما بسکن به شعوہ، ورأی آخو علیه ٹیاب و سخة فقال: أما کان هذا بجد ما بغسل به ثوبه "(۲) (کیا اے کوئی ایسی چیز میسے نہیں جس سے وہ اپنے بال درست کرے، اور ایک دوسر شخص کے جس سے وہ اپنے بال درست کرے، اور ایک دوسر شخص کے

گندے کیڑے دیکھ کرفر مایا: کیا اس کوکوئی ایسی چیز میسنہیں جس سے

وداینے کیڑےصاف کرے)۔

ب ایسا کشادہ اور پھیاا ہوا نہ ہو جو عدضرورت سے زائد ہو، کیونگہ اس میں ایک شم کا اسراف ہے۔ امام مالک نے اسے البند کیا ہے کہ کسی بھی آ دمی کا کیڑا زیادہ پھیاا ہوا ہوا ور زیا دہ لمبا ہو۔ ابن القاسم فر ماتے ہیں کہ جھے بیروایت پیچی ہے کہ حضرت عمر بن افظابؓ نے ایک شخص کی آستین میں ہے اس کی ہتھیلی کی انگلیوں ہے

(۱) حدیث: "إن الله إذا ألعم علی عبد لعمة....." کی روایت طبر اتی نے اکسٹیر (۱/۹ کے اطبع آمکانیة السّلتیہ) میں کی ہے اور پُٹمی نے کہا کہ اس کے رجا ل سیح کے رجال ہیں (مجمع الروائد ۲۵ ۱۳۳۳ طبع القدی)۔

(۲) عدیث: "أما كان يجد هذا ما يسكن به شعره" كی روایت ايوداؤد
 (۳) عدیث: "أما كان يجد هذا ما يسكن به شعره" كی ب حاكم نے اے سي حاكم نے اے سي حاكم نے اے سي حاكم نے اس كي موافقت كی ہے۔

زائد حصد کاف ویا اوروہ زائد کیڑا اے دے کرفر مایا: اواور اس سے اپنی دوسری ضرورت ہوری کراو (۱)۔

ق البات الياتم آبنك اورمرتب به وجوعرف ورواح ك مطابق به و بوعرف ورواح ك مطابق به و كونكه رسول الله عليه كا ارشاد به الصلحوا رحالكم و أصلحوا لباسكم، حتى تكونوا كانكم شامة في الناس، فإن الله لا يحب الفحش و لا التفحش "(٢) (ابني سوارى اورا ب لباس درست ركونا كم لوكون بين ممتازر بوه كونكه الله تعالى برصورتى اور بح حيائى كويند نبين كرتا بي) ـ

اور خوبصورت لباس استعال کرنا جمعه عیدین اور جماعتوں کے لئے ضروری ہوتا ہے ^(۳)۔

ای طرح خاص طور پر علما و کو احجها کپڑ استعمال کرنے کی تا کید ہے (۳)۔

وَ نَكُن كُوخُو بصورت بنانا:

17 - آئلن اورمكان كوصاف تقرااور آراسته كرك خويصورت بنانا سنت ہے۔ ال حديث برخمل كرتے ہوئے جس كى روايت حضرت عامر بن سعد في اپنے ولد كے واسطے سے نبی علي ہے كى سے: "إن الله طيب يحب الطيب، نظيف يحب النظافة، كريم يحب الكوم، جواد يحب الجود، فنظفوا أفنيتكم ولا تشبهوا باليهود" (ه) (م شك الله تعالى يا كيزه ہے اور

⁽۱) المدخل لا بن الحاج ابراس ا

⁽۲) عدیث کی تخ مجتمع ونمبرر ۱۱ کے تحت گذر چکی ہے۔

⁽۳) - زادالمعادا/۱۸۳۱ ۱۳۴۱ احباعطوم الدین ار ۱۹۴۰ ۱۹۴

⁽٣) الموطا ١/١١٥٠

⁽۵) حدیث: "إن الله طیب یحب الطیب....." کی روانیت تر ندی (۱۱ /۵) طبع لجلمی)نے کی ہے ورفر ملا کہ حدیث خریب ہے اور خالد بن الیاس ضعیف قر اردیئے جاتے ہیں۔

تعتمسين ساا – ١٥

پائیزگی کوپندفر ماتا ہے، صاف تھراہے، صفائی و تھر انی کوپندفر ماتا ہے، کریم ہے کرم کو پند فر ماتا ہے، کریم ہے کرم کو پند فر ماتا ہے، کریم ہے تا ورتخی ہے سخاوت کو پند فر ماتا ہے، کہذا تم اپنے آئن اور گھروں کو صاف تھر ارکھواور یہودیوں کی مثابہت اختیارنہ کرو)۔

متجدجاتے وقت مزین ہونا:

۱۳ - منجد جانے کے لئے مزین ہونا مندرجہ ذیل طریقے سے ہوتا ہے:

الف مسجد جائے وقت نیت کوخالص رکھنا،کسی دوسری نیت کو شامل نہ کرنا مثلاً چہلی قدمی وغیر ہ۔

ب۔ اوائیگی فریضہ کے لئے متجد جانے کی نیت کے ساتھ ساتھ اعتکاف کی نیت کا اضافہ کرنا۔

ی ۔عام استعالی کیڑوں کے علاوہ خاص سے لباس میں متجد جانا ، کیونکہ اللہ تعالی نے تھم فر مایا ہے: ''یا بیٹی آڈم خُلُوْا ذِیْنَتُکُمُ عِنْدَ کُلِّ مَسْجِدِ" (۱) (اے اولا د آدم ہر نماز کے وقت اپنالباس پہن لیا کرو)۔

د مبحد میں دائمیں با وک کومقدم کر کے داخل ہونا (۲)۔

ملا قات ، سلام اوراس کے جواب میں اچھاطر یقد اپنانا:
سما - مسلمانوں سے اچھی طرح ملنا، اچھے انداز سے سلام کرنا
اوراس کا جواب دینا مستحب ہے، کیونکہ اللہ تعالی نے نر مایا ہے:
"وَإِذَا حُیِّینَتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیَّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْرُدُّ وَهَا" (۳) (اور

جب تمهیں ساام کیاجائے توتم اس سے بہتر طور پر ساام کرویا ای کولونا دو)، اور ساام کا بہتر جواب اس طرح ہوگا: و علیکم السلام ورحمته الله و بو کاته (۱)۔

ا خچى آواز بنانا:

10 - آواز الحیمی بنانے کا مصلب ترخم اور غناء ہے، بشر طیکہ اس میں آواز کو حرف کے ساتھ نہ گھمایا گیا ہواور نہ کلمات اپنی اصل وضع سے بدیے ہوں، ساتھ بی تو اعد تجوید کالحاظ بھی کیا گیا ہو (۲)۔

قر آن اور اذ ان کی آ وازکوا چھا بنانا مستحب ہے، کیونکہ بید چیز لوگوں کو ان دونوں کی طرف کھینچتی ہے اورلوگوں کے اندران دونوں کی محبوبیت پیدا کرتی ہے۔اور ان میں ان دونوں کے لئے آشر اح پیدا کرتی ہے۔

مت کرنے والی آواز کجن پیدا کرنا اور گا کر پڑھنا اور کھینج تان کر ہڑھانا گھٹانا بیسب حرام ہیں۔

فقہاء کا اتفاق ہے کہ مؤذن کا خوش الحان ہوا مستحب ہے، کیونکہ رسول اللہ علی نے حضرت اومحذ ورڈ کوان کی خوش الحانی کی وجہ سے مؤذن منتخب فر مایا تھا (۳)۔

- (۱) المدخل لا بن الحاج الر١٩٠، حاهية قليو لي ١٣١٣، حاشيه ابن عابد بن ١٩٥٥ مس، شرح شنمي لإ رادت ٢١ ١٣٣٠، الافكار للعووي ٢١٨ طبع مصطفل البالي المحلمي -
- (۲) حاشیہ ابن عابدین ۵ / ۳۲۲، البخاری فی فضائل الفرآن باب نمبر ۱۹، مسلم صلاقہ البسافرین نمبر ۳۳۳ اور ابوداؤ دوتر کے بیان میں، دیکھئے حاشیہ ابن عابد ین ار ۹۵، المدخل لابن الحاج ار ۱۵۔
- (۳) ابن عابدین ار ۲۵۹، تعمین الحقائق ار ۱۹،۹۰، مواجب الجلیل ار ۳۰،۹۰، مواجب الجلیل ار ۳۰،۹۰، مواجب الجلیل ار ۳۸،۳۳۸، شرح روش الطالب ار ۳۳۸، شرح روش الطالب ار ۱۳۹۰ فلای المدخل لا بن الحاج ار ۵۳،۵۰، حاهید البحیری علی شرح شیح الطزاب ار ۱۷۳۰، المدونه از ۵۸، الملی سر ۲ ۱۳۱، مصنف عبدالرزاق ار ۳۲،۳۰

⁽۱) سورهٔ همرافسهٔ است

⁽۲) المدخل لا بن الحاج اره س

⁽۳) سورۇنيا ورالام

ابن کثیر نے فر مایا کہ بیروہ آداب ہیں جن کا تھم ملا تعالی نے میں بین کشم ملا تعالی نے میں ان کی علیمیں اس تھم میں ان کی علیمیں اس تھم میں ان کی تابع ہیں (۴)۔

قرطبی نے ''فلا تخصعن بالقول''کُنفیہ بیں فرمایا کہ وہ خرم باتیں نہ کریں، اللہ تعالی نے آئیں بی تھم فرمایا ہے کہ ان کی گفتگو مھوں ہو، ان کی بات دوٹوک ہواور اس طرح نہ ہوکہ اس سے دل میں ایک تشم کا تعلق ظاہر ہوجو عموماً فرم گفتگو سے ظاہر ہوتا ہے (۳)۔

رفتاركومزين كرنا:

14 -معروف اور معتاد طریقے سے چلنا انسان کے لئے ضروری

(m) تغییر القرطبی ۱۳ ر ۱۷۷ المدخل لابن الحاج ار ۳۳ سه

ہے، اور مصنوعی اور جا ذب نظر اند از رقا را پنانا ممنوع ہے۔ اور مردوں کے لئے میں کی ممانعت کے لئے ممنوع ہونے کی بہ نسبت عور توں کے لئے اس کی ممانعت زیادہ سخت ہے، کیونکہ عورت کا معاملہ پوشیدگی پر ممنی ہے، چنا نچ اللہ تعالی نے فر مایا: "وَ لا یَضُو بُنَ بِاَرْ جُلِهِنَّ لِیُعَلَمَ مَا یُخَفِیْنَ الله تعالی نے فر مایا: "وَ لا یَضُو بُنَ بِاَرْ جُلِهِنَّ لِیُعَلَمَ مَا یُخَفِیْنَ مِنْ ذِیْنَتِهِنَّ لِیُعَلَمَ مَا یُخَفِیْنَ مِنْ ذِیْنَتِهِنَّ الله تعالی مَا یُخَفِیْنَ الله قال ذور سے نہ رَحِیس کہ ان کا مختی زیور معلوم ہوجائے)۔

قرطبی نے فرمایا کہ جوعورت اپنے زیور سے خوش ہوکر ایسا کر نے تیکروہ ہے، اور جوعورت مردوں کے لئے آراستہ ہونے اور اس کو مائل کرنے کے لئے آراستہ ہونے اور اس کو مائل کرنے کے لئے ایسا کر نے تو وہ حرام اور مذموم ہے۔ ای طرح جومردا پنے جوتے کوفخر وغر ورمیں بجائے تو بیچرام ہے، کیونکہ فخر وغر ورمیں بجائے تو بیچرام ہے، کیونکہ فخر وغر ورمیں بجائے تو بیچرام ہے، کیونکہ فخر وغر ورمیں جائے کے لئے ایسا کر بے تو بیا جائز ہے (۲)۔

اورسب ہے آپھی رفتار تو نبی علی ایک او تارہے۔ صدیت میں آیا ہے: "آنه کان اِذا مشا تکفا، و کان آسوع الناس مشیة، و آسکنها و آسکنها" (آپ علی آب ہو ہے آگے گی طرف و آسکنها و آسکنها" (آپ علی آب ہو کی اُن آسوع الناس مشیة اُن ہو کہ ہو جاتے آگے گی طرف مائل ہو کر چلتے ، اور آپ علی آب ہو کہ اور باوقار رفتار و اور بی مراواللہ تعالی کے اس قول میں ہے: "وَعِبَادُ اللهِ حَمْنِ الَّذِيْنَ يَمُشُونَ عَلَى الْاَدُ ضِ هَوْناً" (اور رحمان کے بندے وہ ہیں جوز مین پرعاجزی کے ساتھ چلتے ہیں)۔

اورا کثرسلف کا ارشاد ہے کہ اس سے مر ادا طمینان اور و قار ہے جس میں نہ تکبر ہواور نہ ستی (۵)۔

ت صدیت: "اختار أبا محلورة مؤذنا لحسن صوده" كی روایت تراتی و این تراتی الموسی (۱/۲ طبع المکانیة التجاریه) نے كی ہے ابن دقیق العید نے اس كوسی قر اردیا ہے التجاری الر ۲۰۰ طبع شركة الطباعة التوبيد)۔

⁽۱) سورهٔ افزاب ۱۳۳۰

⁽۲) تغییراین کثیر سر ۸۸۳_

⁽۱) سور کانوربراس

⁽r) تغییر القرطبی ۱۲ ۸ ۲۳۸_

 ⁽۳) عدیث: "کان (ذا مشی تکفأ....." کی روایت مسلم (۳/ ۱۵ ۱۸ اطبع الحلی) نے کی ہے۔

⁽٣) سور كمر قان ١٣٠٧

⁽۵) - زادالمعاد في بزي خيرالعباد لا بن قيم ار ١٦٤ طبع مؤسسة الرساليه ١٩٩٩ هـ الهـ

اخلاق كومزين كرنا:

14 - اخلاق كوآرات مرئاشرعاً مطلوب ب- الله تعالى في مايا: ' ُ وَلاَ تَمُش فِي الأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنُ تَخُرِقَ الأَرْضَ وَلَنُ تَبُلُغُ اللَّجِبَالَ طُولاً "(١) (اورزين بر اترانا بوامت چال، کیونکہ نو زمین کو نہ میار سکتا ہے اور نہ پیاڑوں کی لمبائی کو پہنچ سکتا بِ) ـ اور الله تعالى في ما إ: " يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا الا يَسْخُرُ قَوُمٌ مِّنُ قَوْمٍ عَسٰى أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُم، وَلاَ نِسَاءٌ مِنْ نِسَاءِ عَسٰى أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ، وَلاَ تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ، وَلاَ تَنَابَزُوا بِالأَلْقَابِ، بِئُسَ الإسْمِ الْفُسُوقَ بَعْدَ الإِيْمَانِ، وَمَنْ لُّمْ يَتُبُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ يَا أَيُّهَا الَّلِيْنَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيْرًا مِّنَ الظُّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظُّنِّ إِثْمٌ وَّ لاَ تَجَسَّسُوا وَلاَ يَغْتَبُ بَعْضُكُمُ بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمُ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيْهِ مَيْتًا فَكُوهُتُمُونُهُ، وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ''(٣) (اے ائمان والوانة تومر دول كومر دول ريبنا جائية ، كيا عجب كه وه ان سے بہتر ہوں، اور نه عورتوں كوعورتوں ر بنسنا جائے، كيا عجب كه وه ان ے بہتر ہوں اور ندایک دوس کے وطعندد واور ندایک دوس کے وہرے القاب سے یکارو، ایمان لانے کے بعد گناہ کانا میں ہراہے۔ اور جو تو بہنہ کریں گے وہی ظالم تھبریں گے۔اے ایمان والوابہت ہے ا کما نوں ہے بچو، کیونکہ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں اورٹوہ میں مت گےرہواورکوئی کسی کی غیبت بھی نہ کیا کرے کیاتم میں ہے کوئی اس بات کولیند کرتا ہے کہ اپنے مرے ہوئے بھائی کا کوشت کھائے؟ ال کونو تم یا کوار مجھتے ہو، اور اللہ سے ڈرتے رہو، ہے شک اللہ ہڑ اتو بہ قبول کرنے والامہر بان ہے)۔ اور اس کے علاوہ بھی بہت ہی آپتیں

ہیں جو صن اخلاق کا تھم دیتی ہیں۔ اور اللہ تعالی نے اپنے رسول کی تعریف ان الفاظ میں فرمائی ہے:''واڈکٹ لکلی خُلقِ عَظِیمِ"'() (اور مے شک آپ اخلاق کے اللی مرتبہ یر ہیں)۔

اور عظمت حق کے ساتھ تحسین اظاق مناسب ہے، توجس کا حق ہمارے اور ہڑ اہواں کے ساتھ ایھے اظاق کابرنا و کرنا زیادہ طروری ہوگا۔ ای وجہ سے اللہ تعالی نے انسان پرحرام لم مایا ہے کہ وہ ایٹ والدین میں سے کسی سے اف اف کیے، کیونکہ اولا و پر ان دونوں کاحق عظیم ہے۔ اللہ تعالی نے فر مایا: ''ولا تَقُلُ لَّهُمَا أُفُ وَلاَ تَنْهَرُ هُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قُولًا مَورِيْهَا ''(۲) (سوان کو بھی ہاں سے ہوں بھی مت کرنا اور نہ ان کو جھڑ کنا اور ان سے خوب ادب سے ہوں بھی مت کرنا اور نہ ان کو جھڑ کنا اور ان سے خوب ادب سے ہا۔

بہوتی نے فر مایا کہ زوجین میں سے ہر ایک کے لئے مستحب کے دوسر سے کے ساتھ حسن اخلاق اور زمی کابرتا و کرے اور اس کی تکلیف کو ہر داشت کرے، چنانچ رسول اللہ علیف کی حدیث میں ہے: "استو صوا بالنساء خیرا، فإن المر أة حلقت من ضلع" (۳) (عور توں کے تعلق بھا ائی کی انسیحت قبول کرو، کیونکہ وہ پہلی سے بیدائی گئی ہیں)۔

حسن طن قائم رکھنا: الف-اللہ تعالی کے ساتھ حسن طن رکھنا:

19 - مسلمانوں پر واجب ہے کہ وہ الله تعالی کے ساتھ بہتر گمان

⁽۱) سورهٔ امراء ۱۳۷۸

⁽۲) سورهٔ مجرات راا، ۱۳ ا

⁽۱) سورة قلم س

⁽۲) مورة امراء ۲۳۳_

 ⁽٣) عدیث: "استوصوا بالدساء، فإن الموأة خلقت من ضلع" کی روایت بخاری (۱/۱۹ الفتح طبع استقیر) اورمسلم (۱/۱۹ واطبع الحلی) نے کی ہے۔

ر سیسی، اورخاص طور پر مصائب اورموت آنے کے وقت اللہ تعالی کے ساتھ حسن ظن رکھنا ضروری ہے۔ حطاب نے نر مایا کر بیب المرگ لوگوں کے لئے اللہ تعالی کے ساتھ حسن ظن رکھنا مستحب ہے۔ اللہ تعالی کے ساتھ حسن نظن رکھنا اگر چہموت اور مرض کی حالت بیس مؤکد ہوتا ہے، مرم کلف کو اللہ تعالی کے ساتھ بمیشہ حسن ظن رکھنا جا ہے (۱)، پوتا ہے، مرم کلف کو اللہ تعالی کے ساتھ بمیشہ حسن ظن رکھنا جا ہے (۱)، چنا نچ سے مسلم بیس ہے: "اللہ یمون آحد کم اللہ وھو یحسن النظن باللہ" (۱) (تم بیس ہے کسی کو ہرگز موت نہ آئے مراس حال بیس کی وہ اللہ تعالی کے ساتھ حسن طن رکھنا ہو)۔

ب-مسلمانوں کے ساتھ حسن ظن رکھنا:

۲- ایک مسلمان کے لئے ضروری ہے کہ وہ دوہر ہے مسلمانوں
کے ساتھ حسن ظن رکھے، بیباں تک کہ اگر ان میں ہے کسی ہے کوئی
للطی سرز دیموجائے تو وہ اس کومعاف کردے اور درگز رکرتے ہوئے
اس کے لئے کوئی عذر تا اِش کرے۔

اور مسلمانوں کے ساتھ اس وقت تک حسن ظن رکھے جب تک اس کے لئے کوئی شکل بناممکن ہو سکے، اور ضروری ہے کہ وہ اپنے آپ کوئی شکل بناممکن ہو سکے، اور ضروری ہے کہ وہ اپنے آپ کوئیم ہجھتار ہے اور اپنے نفس کے ساتھ حسن ظن ندر کھے، کیونکہ یدوسوکہ سے دورر بنے اور امر اض قلب سے حفاظت کا بہتر بن ذر میم ہے۔ ابن الحاج نے '' المدخل'' میں فر مایا کہ جب کوئی شخص نماز کے لئے جائے تو اسے اس سے ڈرنا چاہئے کہ کہیں اس کے دل میں یہ خیال پیدانہ ہوکہ وہ اپنے کسی مسلمان بھائی سے بہتر ہے ورنہ وہ بڑی مصیبت میں پھنس جائے گا، بلکہ اسے چاہئے کہ وہ اپنے مسلمان

بھائیوں سے حسن نظن قائم رکھتے ہوئے اور اپنی ذات کے ساتھ بد گمانی رکھتے ہوئے نظے، اور نیک کام میں بھی اپنی ذات کو معہم سمجھے(۱)۔

تحرير كومسين بنانا:

۲۱ - خوش خطی پراسنے والے کو غلط پراسنے سے محفوظ رکھتی ہے، اور جوکلام جنتا زیادہ تاکل احترام ہوال میں ای قدر خوش نولیی اپنا اضروری ہے، کیونکہ اس میں خلطی کا واقع ہونا زیادہ براہے۔ اس منیاد پرقر آن کریم کو دوسری چیز کی بہ نسبت اچھی تحریر میں کھنا زیادہ ضروری ہے، پھر اس کے بعد رسول اللہ علی کے عدیث پھر آثار صحابہ اور اس کے بعد رسول اللہ علی کے مدیث پھر آثار صحابہ اور اس کے بعد احکام شرعیہ کو اچھی تحریر میں کھنا ضروری ہے۔

ال كى وليل حضرت معاوية الق الدواة، وحرّف القلم، عليه المناء وحرّف القلم، والمسبب الباء، وفرّق السين، ولا تعود المميم، وحسن الله، ومد الوحمن، وجود الرحيم، (٢) (المعاوية دوات ركوة الم بناوًاور إلى "كوهر الروية من كوجر الرحيم، كونيرها مت كرور الله "كواچالهو، الرحمن كومر الرور الرور الرحيم، كونيرها مت كرور الله "كواچالهو، الرحمن كومره الرور الرورة الرحيم، كونيرها مت كرور الله "كواچالهو، الرحمن كومره الرورة الرحيم، كومره كومره الرحيم، كومره الرحيم، كومره الرحيم، كومره المحورة الرحيم، كومره المحورة الرحيم، كومره المحورة الرحيم، كومره المحورة المرحيم، كومره المحورة المرحيم، كومره المحردة ا

منگيترخانون کي آرائش:

۲۲ - جب کوئی پیغام نکاح دینے والاشخص اپنی منگیتر کو دیکھنا جاہے،

⁽۱) - مواہب الجلیل ۳ر ۳۱۹،۴۱۸

⁽٣) عديث: "لا يمونن أحدكم إلا وهو يحسن الظن بالله" كل روايت مسلم (٣٠ ٢٣ طع الحلي) في ي

⁽۱) المدخل لا بن الحاج ۱۸۰۱ ـ

 ⁽۲) حدیث: "بیا معاویة ألق الدواة، و حوف القلم" كی روایت حدیث: "بیا معاویة ألق الدواة، و حوف القلم" كی روایت حمط فی نے اوب الا ملاء (برص ۱۵ کا طبح لیدن) شرکی ہے اور اس كی سندش ارسال ہے۔

تومنگیتر کے لئے اپنی شکل وصورت کو حسین بنانا، اور ایجھے کپڑے زیب تن کرنا ممنو کنبیس بشرطیکہ نہ کسی عیب پر پردہ ڈالا جائے، نہ وصوکہ میں ڈالا جائے اور نہ ضول خرچی سے کام لیا جائے (۱)۔

قرآن كريم كوآراسته كرنا:

۲۳ - قرآن کریم کوآرات کرنامستخب ہے اور اس کی تر نمین ریہ ہے کہ اس کی تحریر اچھی بنائی جائے، اس کے اجزاء بنائے جا نمیں، ہر سورت کانام اور اس کی آیتوں کی تعداد سورہ کے شروع میں لکھی جائے، اعراب اور نقطے اور علامات وقوف لگائے جا نمیں اور جلد بندی کی جائے۔

س کی تفصیل قرآن کی اصطلاح میں ہے (۲)۔

الحچھی طرح ذیج کرنا:

۳۲- بانورکوالی عمرگی کے ساتھ وزی کرنا کرونے کے بانے والے بانورکوتی المقدور راحت پنچے باتفاق فقہاء مستحب ہے، لہذا وزی کرنے ہے پہلے چھری کوتیز کرلیا پندیدہ ہے (۳)، اور کندچھری ہے وزی کرنا کروہ ہے، کیونکہ الی چھری ہے وزی کرنے میں بانور کے لئے افیت ہے، (۳) کیونکہ حضرت شداد بن اول کی حدیث ہے: "ثنتان حفظتھما عن رسول الله ﷺ قال: اِن الله کتب الإحسان علی کل شیء، فإذا قتلتم فاحسنوا القتلة، وافا ذبحتم فاحسنوا الذبحة، ولیحد احدکم

اور مستحب ہیہ ہے کہ ذرائے کئے جانے والے جانور کے سامنے چھری کو تیز نہ کرے، اور نہ ایک جانور کو دوسر ہے جانور کے سامنے ذرائے کرے، ای طرح ذرائے کرنے سے قبل اس کو پائی پلانا مستحب ہے۔ اور جن جانور وں کی گر دئیں کوتا ہ ہوں ان کو حلق میں ذرائے کرنا اور جن کی گر دئیں ہوں، مثلاً اونٹ، شتر مرائے اور جنگی آئے ان کولبہ اور جنگی آئے ان کولبہ کے مقام میں ذرائے کرنا مستحب ہے، کیونکہ اس طرح اس کی روح کا کھنا آسان ہے۔

اور ذہیجہ برچھری کورمی اور کم سے کم تکلیف کے ساتھ پھیر اجائے۔ اور بیک گدی کی جانب سے ذرج نہ کیا جائے، دونوں شہرگ اور حلقوم کولمبائی میں نہ کانا جائے، نہ گردن تو ڑی جائے، اور روح نکلنے سے قبل اس کا کوئی حصہ نہ کانا جائے (۲)۔

اور ای طرح قصاص یا حدیث البھی طرح قل کرنا بھی گزشتہ حدیث کی ہنار مستحب ہے۔

سامان تجارت کومزین کرنا:

۲۵ - سامان تجارت كوآراست كرنامباح ب،بشرطيكداس سے سامان

⁽۱) مواہب الجلیل سهر ۴۰ س

 ⁽۲) تغییر القرطبی ار ۲۳ ، ۲۳ ، المدخل لا بن الحاج ار ۷۷ ، سهر ۷۸ ـ

⁽٣) حامية الجمل على نثرح لهمنهاج ٣٣١/٥ طبع داراحياء الزائ العربي، ثبل الاوطار ٣١٨ طبع دارالجليل_

⁽۴) شرح منتهی لا رادات، سهر ۴۰۸ س

⁽۱) عديك: "إن الله كتب الإحسان على كل شيء" كي روايت مسلم (۱۵۳۸هما طبع الحلي) نے كي ہے۔

⁽۲) حامیة الجمل ۵ / ۲۳۵ اوراس کے بعد کے صفحات، نثر ح لممہاج ۵ / ۲۳۳، المغنی ۸ / ۵۷۸، کملی ۷ / ۳۳۳ طبع لمعیر بید

کے عیب کی پروہ پوشی، یا خریدار کے ساتھ دھوکہ بازی، یا ایسی وقتی تزئمین نہ ہوجونورائشم ہوجائے، لہذا تزئمین کے ذرقعہ جس عیب کو چھپایا گیا ہے اگر وہ خرید ار پرعیاں ہوجائے تو اسے خیار عیب حاصل ہوگا(ا)۔

ال كى تفصيل" بيچ"، " نفرر" اور" خيار" عيب كى بحث ميں ہے۔

قرض کاامچھی طرح مطالبہ کرنا: ۲۶-ادائیگی قرض کا مطالبہ امپھی طرح کرنا مستحب ہے، جس کا طریقة مندر جہذیل ہے:

رئی کے ساتھ مطالبہ کرنا، اس لئے رسول اللہ علیہ کا ارشا و اللہ وجلا سمحالفا باع، و إذا اشتوی، و إذا اشتوی، و إذا الله وجلا سمحالفا باع، و إذا اشتوی، و إذا الله وجلا سمحالفا باع، و إذا اشتوی، و إذا الله وخت کرتے وقت برید نے وقت اور قرض کا مطالبہ کرتے وقت بری کرنے والا ہو) اور ایسے وقت بی مطالبہ کیاجائے جس بی مقروض کی خوش حالی کا گمان ہو، چنا نچ حضرت سعید بن عامر بن حذیم، حضرت عمر بن کا گمان ہو، چنا نچ حضرت سعید بن عامر بن حذیم، حضرت عمر بن کورہ لے کران پر چڑھ آئے تو حضرت سعید نے کہا: اے امیر المونین! الحطاب کی حدمت بی آئے، جب بیان کے پاس آئے تو حضرت عمر المونین! آپ کا سیاب آپ کی بارش پر سبقت کرگیا، اگر آپ سزادیں گوتو مشرک میں صبر کروں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے تو شکر گز ار ہوں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے تو شکر گز ار ہوں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے تو شکر گز ار ہوں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے تو شکر گز ار ہوں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے تو شکر گز ار ہوں گا اور اگر آپ معاف کردیں گے۔ تو حضرت عمر اگر آپ عذر جا ہیں گے تو تم معذرت قبول کریں گے، تو حضرت عمر اگر آپ عذر جا ہیں گے تو تم معذرت قبول کریں گے، تو حضرت عمر اگر آپ عذر جا ہیں گے تو تم معذرت قبول کریں گے، تو حضرت عمر اگر آپ عذر جا ہیں گھر کو تا ہوں گا وراگر آپ معذرت قبول کریں گے، تو حضرت عمر اگر آپ عذر جا ہیں گھر کو تا ہوں گا ہوں گو حضرت عمر ہوں گا ہ

نے فر مایا کرمسلمان پر یجی ضروری ہے۔ کیابات ہے کہ ادائیگی شرائ میں تو نے تا خیر کردی؟ تو سعید نے کبا کہ آپ نے حکم فر مایا ہے کہ کسانوں سے چار دینار سے زیادہ نہ لوتو ہم اس سے زیادہ تو نہیں لیس کے مرہم انہیں پیداوار کی آمد تک مہلت دیں گے ۔ اس پر حضرت عمرؓ نے فر مایا: "لاعز لتک ما حییت" (ابس تک میں زندہ رہوں گا تجھے معز ول نہ کروں گا)۔

ميت، كفن اورقبر كومزين كرنا:

21-میت کی شکل کومزین کرنامستخب ہے، چنانچ" تنبیین الحقائق" میں ہے: جب کسی کا انتقال ہوجائے تو اس کے جبڑوں کو ہاند ھودیا جائے، اس کی آئٹھیں بند کر دی جائیں، کیونکہ ای میں اس کی تزئمین ہے، اس لئے کہ اگر اسے اپنی حالت پر چھوڑ دیا جائے تو میت کی شکل دیکھنے میں ڈراؤنی ہوجائے گی ، پھر اسے شسل دیا جائے (۲)۔

۲۸-میت کے فن کومزین کرنا بھی متحب ہے، اس لئے کرمیت کا کفن زندوں کے لباس کی طرح ہے۔ اور اس عدیث کی بنار بھی جس کی روایت حضرت جابر ؓ نے کی ہے، وہ کہتے ہیں کہ نبی علی ہے نے فر مایا: "إذا كفن أحد كم أخاه فليحسن كفنه" (جب تم میں سے كوئی شخص اپنے بھائی كو نفن دے تو اس كو اچھا كفن دیا كر رہے۔

میت کا گفن نین چیز وں سے مزین ہوتا ہے: نفس گفن کومزین کرنا ،صفت گفن کومزین کرنا اور اسے میت کواچیمی طرح پہنانا ۔ الف نفس گفن کی تزئمین کے بارے میں مالکیہ نے صراحت

⁽۱) الفتاوي البنديه سهر ۳۳، ۵۰، الزيلتي سهر۵ ۱۳، ۱۳، ۲۳، مصنف ابن الي شيبه ار ۳۳۳، مواجب الجليل سهر ۲۳۷، المغنی سهر ۱۹۵، ۱۹۵، ۱۹۵، ۱۹۵، المدخل لابن الحاج سهر ۴۸،۴۸، سعالم القرب في احقام الحسبه للفرشي رص المدخل ۱۳،۹۳، ارتبه للشيز ري رص ۳۳، ۹۵۔

⁽۲) حدیث: "رحم الله رجلا سمحا إذا باع" کی روایت بخاری (الفتح سهر۲۰۱۱ طبع استقیر) نے کی ہے۔

⁽۱) - الاموال لا بي عبيرص ٣٣، المغنى ٨٨ ـ ٥٣ ه، المدخل لا بن الحاج الر٩٩ _

⁽٢) تنبيين الحقائق ار ٢٣٥_

⁽۳) عدیہ: "إذا كفن أحدكم أخاه فليحسن كفنه" كي روايت مسلم(۱۵۱/۳ طع كلي)نے كي ہے۔

کی ہے کہ میت اپنی زندگی میں جمعہ اور عیدین کے لئے جیسالباس استعال کرنا تھا (اس حال میں کہ وہ ان مواقع پر اچھے کپڑے پہنتا مو)ویسائی گفن دیا جائے گا، وارثین کا جب اختلاف ہوتو فیصلہ اس منیا دیر کیا جائے گا، بشر طیکہ اس پر کوئی قرض نہ ہو⁽¹⁾۔

ب-جہاں تک صفت کفن کی تزئین کی بات ہے تو کفن کے لئے سفید رنگ عی مستحب ہے، ال لئے کہ حضرت ابن عبائ کی مرفوع صدیث ہے: "البسوا من ٹیابکم البیاض، فیانھا من خیر ٹیابکم، و کفنوا بھا موقا کم، "(تم سفیدلباس زیب تن کیا کرو، کیونکہ تمہارا ایہ بہترین کپڑا ہے۔ تم اپنے مردے کوائی میں کفن دو) اور بہ نبعت پرانے کفن کے نیا کفن افضل ہے۔ اس میں فقہاء کے درمیان اختاان ہے (")

ج ۔ جہاں تک کیفیت کفن کی تر نمین کی بات ہے تو اس کی شکل بیہے کہ ایسا اچھا افغا فیہ بنایا جائے جولوگوں کے لئے قاتل دید ہو، اس طرح کفن اچھامعلوم ہوگا ^(۳)۔

٢٩ - قبر كو آراستد كرنا متحب ب، ال كى آراتگى مندرجد ذيل طريق ير بهوگى:

النف ۔ اگر ممکن ہوتو بغلی قبر ہنائے اور قبر کو ہند کر دے، اور قبر بند کرنے میں سب سے انصل کچی اینٹ، پھر تنتیاں، پھر پکی اینٹ،

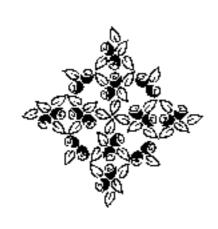
- (۱) مواړب الجليل ۱۲۸۳ ـ
- (۲) حدیث: "البسومن ثبابکم البیاض" کی روایت ایوداؤد
 (۳۸ مهر ۳۳۳ طبع عزت عبید دهای) اورها کم (سهر ۱۸۵ طبع دائرة فعا رف احتمانیه) نے کی ہے اورها کم نے اس کوسی قر اردیا ہے اورؤ جی نے ان کی موافقت کی ہے۔
- (٣) سبل السلام عمر ٩٦، تبيين الحقائق الر ٣٣٨، أمغني عمر ١٣ م، كفاية الاخيار الر ٣٢٣ بشرح فتني لإ رادات الر ٣٣٨.
- (۳) کمغنی ۳ مر ۱۲۳ موراس کے بعد کے صفحات ،المدخل لا بن الحاج سهر ۱۳۳۱ور اس کے بعد کے صفحات ،کیل الملام ۹۹/۲۴۔

پھریانس کا ستعال ہے⁽¹⁾۔

ب قبر کی گر ائی قد آ دم ہو،جس کی مقد ارتقریبا تین ہاتھ ہے، اور ایسی کشا دہ ہو کہ میت کے لئے گئی محسول ندکی جائے۔ ج ۔ اگر زمین پھر لی ہو یا کوئی دوسری وجہ ہوتو اسے بالو سے ہراہر کر دیا جائے۔

د۔قبرز مین سے ایک بالشت کے بقدراونچی ہو۔ اور وہ سطح ہویا کو بان نما ہو، ان دونوں میں انصل شکل کی تعیین میں فقہاء کے مامین اختاا ف ہے۔

ھ۔میت کے سرکے پاس پھر سے ملامت لگادی جائے۔ قبر پختہ بنانا ملی سے لیوپا اور اس پر عمارت بنانا اچھانہیں بلکہ روہ ہے ۔۔۔



- (۱) مواہب الجلیل ۱۲ ۳۳۳۔
- (۳) المدخل لابن الحاج الر ۳۵۸، مواہب الجلیل ۴۳۳۲، کفایة الاخیار
 الر ۴۳ س، شرح نشتی الا رادات الر ۳۳۹ وراس کے بعد کے صفحات، حاشیہ
 ابن حابد بن الر ۲۰۱۱، ۲۹۹، ۳۹۱، ۳۳۱، حاشیہ قلیو کی الر ۵۳۱۔

تحسينيات ١-٣

متعلقه الفاظ:

الف-ضروريات:

اورانت سروریات کے افوی معنی کائلم مادہ ضرق کے معنی سے ہوتا ہے، اور افت میں ضرخلاف نفع کانام ہے، نیز "ضرق،" و "ضاری ف" دونوں کے معنی ایک ہیں، جس کا آسم ضرر ہے۔ ازہری نے کہا ہم وہ چیز جو بد حالی، نقر اور بدن کی کسی شدت سے متعلق ہو کو صُر (چیش کے ساتھ) اور جو نفع کی ضد ہووہ صُرّ (فتہ کے ساتھ) ہے (۱)۔

الل اصول کے نز دیک ضروریات ان امورکانام ہے جومصالح دین و دنیا کے قیام کے لئے ضروری ہیں ، اور وہ مصالح دین ، عقل ، نسل ، مال اور جان کی حفاظت ہیں ، بیسب سے اعلی ورجہ کے مصالح ہیں ، بیسب سے اعلی ورجہ کے مصالح ہیں (۳) کہ اگر بینوت ہوجا کمیں تو مصالح دنیا قائم نہیں رہ سکیں گے ، بلکہ فتنہ ونسا داور زندگی کا نوت ہونا لازم آئے گا اور آخرت میں نجات وفعت نوت ہوجائے گی اور کھا ایموانة ضان ہوگا۔

ال سے ضروریات و تحسینیات کے درمیان فرق واضح ہوجاتا ہے، اس لئے کتحسینیات مناسب والیسی عادتوں کے افتیا رکرنے اور ایسے معیوب احوال سے گریز کا نام ہے جوعقول صیحے کے فردیک ناپندید دہوں۔

ب- حاجيات:

سا- ال کالغوی معنی حاجت کے معنی سے پیچایا جاتا ہے اور حاجت متاج ہونے کو کہتے ہیں (۳)۔

الل اصول کے نز ویک حاجیات: وه چیزی کہلاتی ہیں جن کی

تحسينيات

تعریف:

ا تحسینیات لغت میں ماد و کسن سے ماخوذ ہے، اور کسن (پیش کے ساتھ) لغت میں جمال وخوبصورتی کو کہتے ہیں اور" السحاح" میں ہے کہن بھی کہنا جاتا ہے (ا)۔

اہل اصول کی اصطالاح میں تحسینیات وہ ہمور ہیں جو ضرورت اور حاجت کے درجہ کی نہ ہموں، بلکہ ان سے تر نمین وآسانی اور عادات ومعاملات میں الچھطر یقوں کی رعابیت کا فائدہ ہمو⁽⁸⁾۔

اس کی متعدد مثالیس ہیں: مثلاً التجھے اخلاق کی حفاظت کے لئے گندگیاں اور درند وں جیسی خبیث اشیاء کی حرمت (۳)۔

اور جیسے نکاح میں ولی کا اعتبار کیا گیا ہے تا کے ورت بذات خود عقد کرنے سے محفوظ رہے اور بیچے، کیونکہ بذات خود عقد کرنے سے معلوم ہوتی ہے کہ وہ مردوں کی مشاق وآرز ومند ہے اور بیم وت کے خلاف ہے ، ای لئے اس کے عقد نکاح کی ذمہ داری ولی سے سپر و کردی گئ تاکہ اخلاق کے ایجھے معیار کو برقر ار رکھا جا سکے سپر و کردی گئ تاک اخلاق کے ایجھے معیار کو برقر ار رکھا جا سکے (۳)۔

⁽۱) الصحاح، القاسوس، المصباح مادة" ضرد" _

⁽٢) الموافقات ١١،٨/٢ طبع دارالمعرف كمنته مي الر٢٨٧ طبع الاميرييه

⁽m) ماده "حرج" كيمتى ديكيئة القاسوس، الصحاح اورالمصباح مل _

⁽۱) اِلصحاح، القاموس، لسان العرب، المصباح ما ده" حسن" ـ

⁽٢) المستعمى الر٢٨، و٢٥ طبع الاميري الاحكام لؤلدي سروم طبع صبح، الموافقات للهاطبي ٣/ الطبع دار أمر فيه

⁽m) مسلم الثبوت ٣ / ٣ ١٣ طبع الاميريب

⁽٣) روعية الناظريص ٨٤،٤ مطبع التلقيب

حاجت پیش آتی ہے، کیکن وہ ضرورت کی حد تک نہیں پہنچتیں، چنانچ ان کی رعابیت نہ کرنا مکلف انسانوں کے لئے مجملہ حرج وہشقت کا باعث ہوتا ہے، کیکن وہ اس فساد کے درجہ تک نہیں پہنچتا جس کی تو قع مصالح عام میں ہوتی ہے۔

ضروریات کے بعد حاجیات دوسرے درجہ میں ہیں اور تحسینیات تیسرے درجہ میں ہیں (۱)۔

تحسینیات کی اقسام: هم-تحسینیات کی دوشمیں ہیں:

پہلی سم: وہ ہے جو تو اعد شرعیہ سے معارض نہ ہو، جیسے گندی چیز وں کی حرمت، اس لئے کہ ان سے طبعیوں میں ایسی نفرت ہوتی ہے جو اعلی اخلاق پر آمادہ کرنے کے باعث ان اشیاء کی حرمت کا ذر معید پنتی ہے۔

ووری شم: وہ ہے جو تو اعد کے معارض ہوجیت کتابت، (مال کے بدلہ فالم یاباندی کو آزاد کرنا) اس لئے کہ انسان کو اس کی حاجت نہیں ہوتی ہے، کیونکہ اگر اسے اختیار نہ کیا جائے تو کوئی ضرر لازم نہیں آتا ،کین بیعاد تأسخس ہے، اس لئے کہ بیغالم کی آزادی کا ذریعہ ہے، اور اس سے بیغاعد ہ ٹوٹ رہاہے کہ کسی کا اپنے بعض مال کو اپنے بیغض مال کو اپنے بعض مال کو اپنے بعض مال کے بدلہ فر وخت کرنا ممنوع ہے، اس لئے کہ مکا تب جو بیعض مال کررہا ہے وہ اس کے مالک کی ملایت کے درجہ میں ہے، بیغورک فالم خود کہانے سے عاجز ہو (۳)۔

(۱) - جمع الجوامع ۲ مر ۲۱۸ مطبع الحلقي ،الموافقات ۲ مر ۱۰،۱۱ طبع وارالمعر فيه...

اجمالي احكام:

الف تحسينيات كي حفاظت:

۵- تحسیبات ان دور میں سے ہیں جن کی حفاظت بٹارٹ کو مقصود
ہو، اس لنے کہ مصالح میں اگر چہ ان کا اونی ورجہ ہے لیکن ان سے
ان حاجیات کی شکیل ہوتی ہے جن کا مرتبہ ان سے بلند ہے، اور
حاجیات کے افتیار کرنے سے ان ضروریات کی شکیل ہوتی ہے، جو
ان دونوں (حاجیات تو سیبیات) کی اصل ہیں، نیز تحسیبات کور ک
کرنا بلاآ فرضروریات کے ترک کا باعث بنتا ہے، اس لئے کہ جو
کرنا بلاآ فرضروریات کے ترک کا باعث بنتا ہے، اس لئے کہ جو
کرنا بلاآ فرضروریات کے ترک کا باعث بنتا ہے، اس لئے کہ جو
کرنا بلاآ فرضروریات کے ترک کی اوجہ ہے کہ نماز پرا صفح والا اگر صرف نماز
مزک پرجم اُت کرسکتا ہے، یہی وجہ ہے کہ نماز پرا صفح والا اگر صرف نماز
برا فض پر اکتفاکر ہے تو اس کی نماز میں صن پیدا کرنے والی کوئی چیز
برا قرن بین رہتی ، نیز تحسیبات اور حاجیات (جن کی نا کیر تحسیبات ہے
مزوریات کے درمیان فعل اور فرض جیسی فیبت ہے، اور حاجیات و
ضروریات کے درمیان فعل اور فرض جیسی فیبت ہے، اور حاجیات و
مزوریات کے درمیان فعل اور فرض جیسی فیبت ہے، وہ ان ہو جن ورت اور
کا مندوب ہونا کل کے واجب ہونے کا باعث بن جانا ہے، چنا نچ
مطلق مندوب ہونا کل کے واجب ہونے کا باعث بن جانا ہے، چنا نچ
مطلق مندوب ہونا کل کے واجب ہونے کا باعث بن جانا ہے، چنا نچ

ب-تحسینیات کاغیر تحسینیات سے تعارض:

۲ تحسینیات اگر چدان حاجیات کی تعمیل کے لئے ہیں جو تحسینیات کی اسل ہیں بلین اس اعتبار سے کہ وہ حاجیات کی تعمیل کرتی ہیں ان کی رعامیت کرنے میں میشرط ہے کہ ان کی وجہ سے ان کی اصل باطل نہ ہوجائے ، لہذااگر ان کی رعامیت اپنے سے املی (حاجیات) کے ہوجائے ، لہذااگر ان کی رعامیت اپنے سے املی (حاجیات) کے

⁽٣) جمع الجوامع مع حاهية البناني ٣٨١، ٣٨١ مطبع لحلمي، أرثار أثول ٣١٤، ١١٢ طبع لحلمي

⁽۱) و کیجے شاطبی کا قول ان کی کتاب الموافقات ۱۹۸۱، ۲۵ طبع دار العرف فدیش نوع اول کے چوتھے مسئلہ کے شمن میں۔

ترک کا سبب بن جائے تو خود ان کو بی ترک کر دیا جائے گا۔ اور یبی تھم حاجیات کا ضروریات کے ساتھ ہے، کیونکہ ہر وہ چیز جس کی حیثیت تکمله کی ہواگر اس کا اعتبار کئے جانے سے اس کی اصل عی باطل ہوجائے تو اس تکملہ کی طرف توجہ نبیں کی جائے گی جس کی

پہلی وجدید ہے کہ اگر اسل باطل ہوجائے تو تکملہ بھی باطل ہوجاتا ہے، اس لئے کہ تکملہ کی نبیت اس کے ساتھ جس کا وہ تکملہ ہے الیی ہے جیسی موصوف کے ساتھ صفت کی نسبت کہ اگر صفت کا اعتبار كرنے كى وجد سے موصوف ختم ہوجائے تو اس سے صفت كا بھى ختم ہونا لا زم آئے گا، لبند اس طریقہ یر اس تکملہ کا اعتبار کرنے سے خود ای کا اعتبار نہ کرنا لازم آئے گا، اور بیمال ہے جس کا تصور نہیں کیا جاسكتا ہے۔ اور جب بيغير متصور ہوا تو تكمله كا اعتبار نبيس كيا جائے گا، بلکہ اصل کا اعتبار بغیر کسی زیادتی کے ہوگا۔

دوسری وجدید ہے کہ اگر ہم بیان لیں کہ تکمیلی مصلحت ال وقت حاصل ہوگی جبکہ اصلی مصلحت نوت ہوجائے تو اصلی مصلحت کو حاصل کرنا بہتر ہوگا ، اس کئے کہ ان دونوں میں بہت تفاوت ہے۔

اں کی وضاحت پیہے کہ جان کی حفاظت کلی طور پر اہم ہے، اور مرونوں (تقوی، دیانت) کی حفاظت مستحسن ہے، ای لئے نجاستوں کو حرام قر ار دیا گیا تا که مروتوں کی حفاظت ہو، اور اہل مروت میں امپیمی عادتوں کی جرائت پیدا کی جائے ،کیکن اگر ضرورت اس کی دائی ہوک جان کی حفاظت کے لئے مایاک چیز کا استعال کیاجائے تو اس کا استعال اولی ہوگا(1)۔

یٹن عز الدین بن عبرالسلام نے اپنے''قو عد'' میں بیان کیا ے کہ مصالح میں جب تعارض ہوتو اعلی مصالح کو افتیا رکیا جائے اور

ادنی کو چھوڑ دیا جائے ، کیونکہ اطباء بڑے مرض کو دورکرنے کے لئے ادنی مرض کو ہاتی رکھنے کا التز ام کرتے ہیں، املی ساامتی وصحت کو اختیار کرتے ہیں گرچہ اونی سامتی وصحت کوچھوڑ ناپڑے، اورطب شریعت کے مانند ہے، جے ساامتی و عافیت کے مصافح کو حاصل کرنے اور بلاکتوں و بہاریوں کے مفاسد کو دور کرنے کے لئے وضع کیا گیا ہے، اوراس لنے کہ ان میں ہے جس کود ورکرناممکن ہے اسے دور کیا جائے اورجس کا حصول ممکن ہے اسے حاصل کیا جائے ، اور اگر تمام مفاسد کو اختم كرنايا تمام مصافح كوحاصل كرنا دشوار بهوتو دونوں اگر مرتبه ميس برابر ہوں تو دونوں میں اختیا رہوگا اور اگر ان میں تفاوت ہواور کسی کی ترجیح بھی معلوم ہوتو ترجیح کو اختیار کیا جائے گا، اور اگر اس سے ما واقفیت ہوتو تو تف کیا جائے گا^(۱)۔

ج تحسينيات بصاستدلال:

2- غزالی نے" المتصفی" میں ذکر کیا ہے کصرف تحسینیات کے ذر معید تھم لگانا جائز نہیں ہے، جب تک کہ کوئی اصل موجود نہ ہواور اس کے ذربعیدا سے تقویت نہاں گئی ہو، البتہ بسا او قات وہ ضرورتوں کے ورجه میں آ جاتی ہیں، اس لئے بعید نہیں کہ ان تک سی مجتبد کا اجتہاد پہنچ جائے، ایسی صورت میں اگر کوئی شرعی رائے موجود نہ ہوتو اس کا درجہہ التحسان کے مانند ہوگا، اوراگر کسی اصل کے ذر معیدا سے تقویت حاصل ہوجائے تو وہ قیاس ہوگا۔اور اس امر میں حاجیات بھی تحسینیات ہی کے مانند ہیں ^(۴)۔

اں کی تفصیل اصو فیضمیمہ میں ہے۔

⁽I) الموافقات ۲/ ۱۶۱۳ اطبع دارالمعرف ب

⁽۱) قواعد الاحکام رص ۴ طبع العلميه _ (۲) لمستصلی ار ۴۹۳، ۴۹۳ طبع الامير په روصة الناظر رص ۸ طبع استان ب

.. تحصن

تعریف:

ا - افت اور اصطااح بین تحقن کے مین : قاعد بین داخل ہوجانے اور اس کے ذریعہ اپنا بچاؤ کرنے کے ہیں۔ '' القاموں'' بین ہے کہ '' مصن' ہم ایسی مضبوط جگہ کو کہتے ہیں جس کے اندر نہ پہنچا جا سکے۔ اور '' المصباح'' بین ہے کہ'' مصن'' اس مکان کو کہتے ہیں جس کی افراد کی وجہ سے اس بین پہنچانہ جا سکے، اس کی جمع حصون ہے، اور بلندی کی وجہ سے اس بین پہنچانہ جا سکے، اس کی جمع حصون ہے، اور آبادی کی حفاظت کے لئے جونسیاں وغیرہ بنائی جاتی ہے اس کے لئے اللے مالی کی جمع حصون ہے اس کے لئے اللے کی کے اللے ہیں۔

تصن كوشك وشبه على كربن كم عنى مين بهى استعال كيا جاتا ہے، اى سے عفيفه و پاكدا من عورت كورُسّان كبا جاتا ہے (١)، الله تعالى كا ارشا و ہے: "وَ لاَ تُكُوهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِعَاءِ إِنْ أَرَدُنَ تَحَصَّناً، (٢) (اورا پنى بائد يوں كوزنا پر مجبور مت كروجبكه وه پاكدا من ربنا چاہیں ...)۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

٢- دار الحرب ميں رہنے والے كفار اگر مسلمانوں سے قبال كے لئے

آئیں تو تحصن (قاعد بند ہوجانا) شرعاجائز ہے، خواہ قاعد ہیں مسلمان کفار کے نصف عدد ہے کم ہوں یا زائد اور قاعد بندی اس لئے ہے تا کر قر بیلی ممالک اور شہروں ہے آئیں کمک وطاقت پہنے جائے اور وہ قوت حاصل کرلیں، اور اس طرح ان کی تعداد ہیں اضافہ ہوجائے پھر ان کے دشمن پر ان کارعب ہوء نیز تحصن اور قاعد بند ہونے سے مسلمانوں کو جنگ ہے راہ فر ارافقیا رکرنے کا گناہ نہ ہوگا، کیونکہ گناہ اس صورت ہیں ہے جب محاربین سے مذہبے ہم کے بعد پیچے دکھا کر بھاگا جائے جونہ جنگ چال کے طور پر ہواور نہ جی کسی گروہ سے جا ملنے کی مطربیو، اور قاعد ہیں پناہ گزیں فاطر ہو، اور قاعد سے باہر ان کی ملہ بھی ہوجائے تو بھی قال کی طرف مائل ہوتا یا موتا ان کے لئے جائز ہے، اس لئے کہ بیجی قال کی طرف مائل ہوتا یا موتا ان کے لئے جائز ہے، اس لئے کہ بیجی قال کی طرف مائل ہوتا یا کسی جماعت سے پناہ لیمنا ہے، اور یہ سئلہ شفق علیہ ہے (۱)۔

اگر حربی کفارا پنے ملک میں تھیرے ہوں اور جنگ کا ارادہ نہ ہو تو مسلمانوں کے لئے مناسب بیہ ہے کہ احتیاطاً مضبوط قلع اور خندق بنائیں اور ان کورٹمن کا مقابلہ کرنے والے افر او و سامان سے بھر دیں، اور اس کی ذمہ داری مسلمانوں میں ان لوگوں کودی جائے جو قابل اعتاد ہوں اور شجاعت میں مشہور ہوں (۲)۔

اس کی تفصیل اصطلاح ''جہا د''میں ہے۔

سو - مسلما نوں کے لئے بیکھی جائز ہے کہ وہ خندتوں کے ذر میداپنی حفاظت کریں، جیسے غز و ہُ خندق میں رسول اللہ علیائی نے اس وقت کیا جبکہ مختلف جماعتیں آپ علیائی سے قال کے لئے مدینہ کے گر و جمع ہوگئیں (۳) ہے آن کریم میں اللہ تعالی کا ارشا و ہے: "یکا أَیُّهَا

⁽۱) لسان العرب، لمصباح لمعير، الصحاح مادة "حصن"، شرح فتح القدير سهر ۲۸۴ طبع بول الأميرية مصر، حافية الجمل على شرح المنبح ۱۳۳۵ طبع دادا حياء التراث العربي

⁽۴) سوره نو در ۱۳۳س

⁽۱) المغنی لا بن قد امه ۸۸۲۸ هم مکتبه امریاض، الخرشی ۱۳۸۳ هم دارصادر پیروت، نماییه اکتباع ۸۸ ۹۲ هم الحلمی مصر

 ⁽۲) نهایة اکتاع ۲/۸ ۳، روهه اطالبین ۱۰ / ۲۰۸ طبع اکتب لا سلای ...

 ⁽۳) عديث: "تحصن رسول الله نَائِبُ بالخددق و مشاركته إياهم"
 كاروايت بخاري (الله عمر ۱۹۹۸ طبع المثانيم) نے كى ہے۔

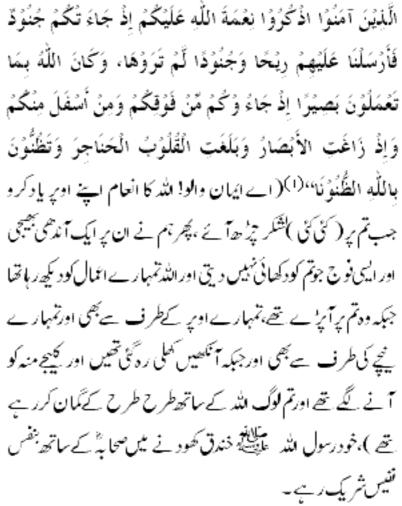
تحصن مه بحصدین تجقق

.. تحصدين

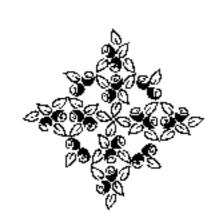
د يکھئے:"اِ حصان"اور"جہاد"۔

تحقق

ر کھنے:" تثبت"۔



سم - جس طرح قلعوں اور خندقوں کے ذریعیہ حفاظت کی جاتی ہے،
ای طرح دشمنوں کے اچا تک حملہ سے حفاظت کرنے والے ان تمام
وسائل سے حفاظت درست ہے جوخطرہ کی انسام کے لتاظ سے بدلتے
رہتے ہیں، اور زمان ومکان کے اعتبار سے اس کی صورتیں مختلف ہوتی
رہتے ہیں، اور زمان ومکان کے اعتبار سے اس کی صورتیں مختلف ہوتی
رہتی ہیں،



⁽۱) - سورة التزاب (۱۹۰۱)

 ⁽۲) البدایه و النهایه للحافظ بن کثیر ۱۱،۹۲۸،۱۱، الروض لا لف لابن بشام البدایه و النهایه للحافظ بن کثیر ۱۲۸،۳۵۸ طبع دار الکتب المصر بی تغییر روح للمعالی ۲۷،۳۵۸ و راس کے بعد کے صفحات، نتج الباری ۲/۳۵۳ سی

تحقير

تعريف:

ا - لغت بین تخفیر کے معنی: ناقدری کرنے اور ذکیل و تقیر بنانے کے بین، یہ حقو کا مصدر ہے۔ محقرات: صغائر کو کہتے ہیں۔ کہا جاتا ہے: هذا الأمو محقوة بك: یعنی یه امرتمہارے لئے باعث حقارت ہے۔

حقیر: گھٹیا اور ذلیل کو کہتے ہیں، کہاجاتا ہے: حقّو حقادہ و حقوہ و احتقرہ و استحقرہ: یعنی اے گھٹیا سمجھا اور تقیر جاتا اور حقّرہ کامعنی ہے: اے حقیرو ذلیل کیا، یا اے حقارت کی طرف منسوب کیا۔

حقو المشيء حقارة كامعنى ہے: اس كامر تبر كھك آليا، چنانچ اس كى طرف تو جنبيس كى جاتى ، اس لئے كه وہ تقير ہے (۱)۔ اس كے اصطلاحی معنی بھی يہی ہیں۔

اجمالي حكم:

تحقیر کے متعددا حکام ہیں:

۲ فینیر مجھی ممنوع اور حرام ہوتی ہے: جیسے مسلمان کا مسلمان کو کمتر و فیل مجھ کراس کا مداق اڑانے اور اس کی عظمت کو پایال کرنے کے لئے حقیر مجھنا۔ ای سلسلہ میں اللہ تعالی کا ارشا دے: ''یاانگھا الگیلین

آمَنُوْا الاَ يَسْخَوُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى أَنْ يَكُونُوْا خَيْرًا مَنْهُمْ، وَلاَ تَلْمِزُوْا وَلاَ يَسْخَوُ قَوْمٌ مِّسْى أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ، وَلاَ تَلْمِزُوْا فَلاَ يَسْفَعُهُ وَلاَ تَلْمِزُوا بِالأَلْقَابِ بِمُسَ الِاسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ وَمَنْ لَمْ يَتُبُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ "(1) (1) الإينان والوا نهم دول كوم دول پر بنستا چاہي كيا عجب كروه ان سے ايمان والوا نهم دول كوم دول پر بنستا چاہي كيا عجب كروه ان سے بہتر ہول اور نه ايك دومر كوطعت دواور نه ايك دومر كو برك بہتر ہول اور نه ايك دومر كوطعت دواور نه ايك دومر كو برك بهتر القاب سے پكارو۔ ايمان كي بعد گناه كانام عي براہے اور جواب بھي القاب سے پكارو۔ ايمان كے بعد گناه كانام عي براہے اور جواب بھي توبہ نه كريں گے وي ظالم شهر يں گے)، نيز اس مضمون كي دير آيتيں بھي ہيں۔

اور تيج مسلم على حضرت الوجرية كل روايت ب، ووفر مات بيل كرسول الله علي في في المايدة الإستحاسلوا ولا تعاجشوا ولا تعاخضوا ولا تعابد الله إخوالله المسلم أخو المسلم، لا يظلمه ولا يخلله عباد الله إخوالله المسلم أخو المسلم، لا يظلمه ولا يخلله ولا يحقره. التقوى ههنا. ويشير إلى صلره ثلاث مرات. بحسب امريء من الشرأن يحقر أخاه المسلم، كل المسلم على المسلم حرام دمه وماله وعرضه (١) (ايك دوم عن المسلم على المسلم حرام دمه وماله وعرضه (١) (ايك يحقر أخاه المسلم، كل ومر عدد مدن كرواورة في تعانات نكرواورة عن الشرقان بي المدن المرادة المسلم على المسلم المسلم على المسلم المسلم

⁽۱) الصحاح، لسان العرب، المصباح الممير ، مثناً والصحاح مادة " حقر" _

⁽۱) سورهٔ حجرات رااب

تقوی میبال ہے۔ بیفر ماتے ہوئے آپ علی نے اپنے سینہ مہارک کی طرف تین مرتبہ اشار فر مایا۔انسان کے ہرے ہونے کے مہارک کی طرف تین مرتبہ اشار فر مایا۔انسان کے ہرے ہونے کے لئے بیکانی ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائی کو تقیر سمجھے۔ہم مسلمان پر دوسرے مسلمان کا خون ،اس کا مال اور اس کی آ ہر وحرام ہے)۔

مسلم شریف بی میں حضرت این مسعود ی منقول ہے، وہ نبی میں مسلم شریف بی میں حضرت این مسعود ی منقول ہے، وہ نبی المجنة من فی قلبه منقال ذرق من کبو، فقال رجل: إن الله الرجل یحب آن یکون ثوبه حسنا و نعله حسنة قال: إن الله جمعیل یجب المجمال. الکبو بطو الحق و غمط الناس وفی روایة: "و غمص الناس" (وہ خض جنت میں داخل نبیل ہوگا و فی روایة: "و غمص الناس" (وہ خض جنت میں داخل نبیل ہوگا ہیں ہوگا ہیں کہ ایر بھی کبر ہوگہ خض نے کہا کہ آدی یہ پند کرتا ہے کہ اس کا کیڑا اچھا ہواوراس کے جوتے الیجھے ہوں تو آپ میں میں اللہ اللہ تعالی جمیل ہیں اور جمال کو پند فر مایا کہ اللہ تعالی جمیل ہیں اور جمال کو پند فر مایا کہ اللہ تعالی جمیل ہیں اور جمال کو پند فر مایا کہ اللہ تعالی جمیل ہیں اور جمال کو پند فر مایا کہ اللہ تعالی جمیل ہیں اور جمال کو پند فر مایا کہ اللہ تعالی جمیل ہیں ہوں ہے: غمصہ الناس")، اطرح کا کامعنی حل کو ختم اور باطل کرنا اور نمط اور غمصہ دنوں ایک بی معنی میں ہیں: یعنی خقیر سجھنا) (۲)۔

الله تعالى كا ارتاد ہے: "بِنَسُ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعُدَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعُدَ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعُدَ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعُدَ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْنَ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْنَ الإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْنَ تَرَطَّبِي كَتَّةِ بِينَ: ایک قول کے مطابق اس سے مراد وہ شخص ہے جو ایٹ کہتے ہیں: ایک قول کے مطابق اس سے مراد وہ شخص ہے جو ایٹ کا مُداق ارْ اے اور ایسا شخص ایٹ ہوائی کا مام ہرائی ہے لیے یا اس کا مُداق ارْ اے اور ایسا شخص فاسق ہے (۳)۔

ابن حجربيتمي كيتي بين كه تخر بيه فقير وذكيل بمجصنا اورعيوب ونقائص

کا ایسے موقع پر ذکر کرنا ہے جس پر ہنسی اڑ ائی جائے، اور تحقیر کبھی نقالی کے ذر معید ہویا قول یا اشارہ و کنا یہ کے ذر معید ہویا قول یا اشارہ و کنا یہ کے ذر معید یا کہ کہ کے بہو ہے ہمجھے یا غلط ہو لئے پر ، یا اس کی حرکت یا اس کی برصورتی پر ہنسی اڑانے کے ذر معید ہوتی ہے (۱)۔

جس شخص نے کسی کی ایس شختیر کی جس کی ممانعت وارد ہے تو اس نے ایسے فعل حرام کا ارتکاب کیا جس پر اس شخص کی تا دیب کے لئے شرعاً تعزیر کی جائے گی۔

ی تغزیر امام کی صوابر میر بر بہوگی، وہ شریعت اور مصلحت کی صدود میں رہ کرسز اوے گا، جس کی تفصیل '' تغزیر'' کی اصطلاح میں ہے، اس لئے کہ اس مے مقصود زجر وتو بیخ ہے، اور اس سلسلہ میں لوکوں کے احوال مختلف ہوتے ہیں، لہذ اہر ایک کو اس کے مناسب حال سز ادی جائے گی (۲)۔

نیز بیتوزیرال صورت میں ہے جب ان مور سے تخیر مقصود ہو، اوراگر ان مور سے تعلیم یا خلطی پر تنبیہ وغیر ہ مقصود ہو چخیر مقصود عی نہ ہوتو اس میں کوئی مضا کقہ نہیں۔ اور اس کے ارادہ کا اندازہ احوال فحر ائن سے لگایا جائے گا۔

سا - جو تحقیر حرام ہے وہ بسا اوقات ارتد ادتک پہنچا دیت ہے، جیسے کوئی شخص شعار اسلام میں ہے کسی شعار کی تحقیر کردے، مثالا نماز، اذان، مبحد اور قرآن وغیرہ کی تحقیر کردے، مثالفین کی صفت بیان کرتے ہوئے اللہ تعالی نے ارشا دفر مایا ہے: ''و لَئِنْ سَأَلْتَهُمُ لَكُونُ لِنَا لَهُ وَاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ وَاللّٰهِ وَاللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ اللّٰهِ وَاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰ

⁽۱) عديث: "لايمنخل الجدة من كان في قلبه....." كي روايت مسلم (۱۲ مهر ۱۲ مه الحيم الحجلي) نے كي ہے۔

⁽۲) وافركا ليلمووي ۱۳ ۱۳ ۱۳ س

⁽۳) القرطبي ۲۱/ ۳۲۸__

⁽۱) الزواجر عن اقتراف الكبائر ۱۴ ۸۳ دار لمعرف س

 ⁽٣) ابن عابدين سهر ١٤ ١٥، ١٥ الشرح الكبير سهر ١٣٣٥، ١٣٣٥، الشرح المسفير
 سمر ٢٢ ٣١، ٢٢ ٢، المهدب في فقه الإمام الثنافعي ٢ ر ٢٤ ٥، ٢٤ ، كشاف
 القتاع من متن الاقتاع ٢ ر ٢١١ ٢١١ الطبع النصر الحديد ...

كُنْتُمْ تَمْتَهُزَءُ وَنَ لاَ تَعْتَلِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ" (١٠) (اوراگر آب ان سے سوال سیجئے تو کر دیں گے ہم تو محض مشغلہ اور خوش طبعی کررہے تھے،آپ کہددیجئے کہ اچھاتوتم استہزاءکررہے تھے الله اور اس کی آیتوں اور اس کے رسول کے ساتھ ، اب بہانے نہ بناؤ تم كافر ہو كيك اين اظہار ايمان كے بعد)، دوسرى جگه ان عى مَنَافَقَيْنَ كَ بَارِكِ مِينَ ارْثَا وَ بِ: ''وَ إِذَا نَاذَيْتُمُ إِلَى الْصَّلاَةِ اتَّخَلُوْهَا هُزُواً وَّلَعِبًا"(٢) (اورجبتم يكارتے ہونماز كے لئے تو یلوگ اس کوہنسی اور کھیل بنالیتے ہیں)'' فتح انعلی المالک''میں ہے کہ اگر کوئی شخص نماز کی اور کبھی نمازیوں کی تؤمین کرے اور بہت سے لوگ ال کی کوای دیں، جن میں سے کچھ کائز کید کیا گیا ہواور کچھ کانبیں تو جوحظرات ال بات محمول کرتے ہیں کہ بینمازیوں کی توہین ہے اس لئے کہ ان کے تعلق اس کا اعتقاد میجے نہیں ہے تو ان کے لتا ظ سے میہ مسلمان کوسب و شتم کرنے کے قبیل سے ہے، اس صورت میں اس کے لئے حاکم کی رائے کے بقدرتا دینی کارروائی لازم ہے، اورجنہوں نے اسے عبادت کی تو ہین رمحمول کیا ان کے اعتبار سے مجھے بیہے کہ بیہ زند قرنبیں بلکہ ارتد اوہے، اس لئے کہ اس نے اسے ظاہر وشہور کرویا ہے، لبذ ال رمرية كا حكام جارى ہوں گے (m)_

الله - يَسِى تَخْتَرُ واجب بهوتى ہے: جِن الله كَتَاب مِن سے ان الوكوں كَ الله عَلَى الله الله عَلَى الله عَلَ

صَاغِوُ وُنَ ''() (اہل کتاب میں سے ان سے لڑو جونہ اللہ پر ایمان رکھتے ہیں اور نہ روز آخرت پر اور نہ ان چیز کوحرام سمجھتے ہیں، جنہیں اللہ اور اس کے رسول نے حرام کیا ہے، اور نہ سچے دین کو قبول کرتے ہیں، یہاں تک کہ وہ جزید دیں رعیت ہوکر اور اپنی پستی کا احساس کر کے) یعنی ماتحت حقیر ورسواہوکر۔

ان کے جزید سینے کے وقت ذلت وحقارت کی کیاصورت ہوئی علیہ جن؟ اس سلسلہ میں فقہاء کا اختلاف ہے، جس کے لئے دیکھیے: اصطلاح '' اہل ذمہ'' اور'' جزید''۔

البی چیز کے ذریعہ تعزیرجس میں شختیر ہو:

۵ - تعزیر کی ایک سم تو بی ہے، جو تحقیری کی ایک صورت ہے اور تعزیر میں تو بیخ کی مشر وعیت پر فقہاء نے سنت نبوی سے استدلال کیا ہے، حضرت ابو ذرّ سے روایت ہے کہ انہوں نے کسی آ دمی کوسب وشتم کرتے ہوئے اسے اس کی ماں کی عار دلائی، تو رسول اللہ علیہ ہے نہ نہا اباذر آعیہ وتہ ہا مہ الایک امر و فیدک جاھلیہ ہیں (۱) فرمایا: "یا آباذر آعیہ وتہ ہا مہ اللہ علیہ ہیں کی ماں کی عار دلائی ہے؟ تو ایسا آ دمی ہے جس میں جا لیت ہے)۔ نیز رسول اللہ علیہ ہیں کا ارشاد ہے: "لی گا اور ایک الرشاد ہے: "لی گا اور ایک الرشاد ہے: "لی گا اور ایک الرشاد ہے: "لی گا ایک آبر واور مز اکو طال کر دیتا ہے) حقارت و مے مزتی کی تفیہ سے کی گئیے ہے کی گئیے ہے۔ اور یہ کی گئیے ایک گئی ہے کہ مثلاً کہا جائے اے طالم اسٹریا دئی کرنے والے، اور یہ کی گئیے ہیں گی گئی ہے کہ مثلاً کہا جائے اے طالم اسٹریا دئی کرنے والے، اور یہ کی گئی ہے کہ مثلاً کہا جائے اے طالم اسٹریا دئی کرنے والے، اور یہ

⁽۱) سورة توبير ۱۹،۲۴ س

⁽۲) سورۇمانكە يە 🗚 🕳

ر) فلح العلى الهاك في الفتوى على نديب الامام ما لك للعزامه الشيخ محمد عليض (٣) مع العلام الك في الفتوى على نديب الامام ما لك للعزامه الشيخ محمد عليض ٢ / ٢ ١٩٣ ، ٣١٠ -

⁽۱) سورۇتۇپىيە ۱۹

⁽۲) حدیث: "یا آبا فر اعبوده بامه" کی روایت بخاری (النج اس۸۳ طبع التنافیہ) نے کی ہے۔

⁽۳) حدیث: "لمی الواجد بحل عوضه و عقوبه" کی روایت ایوداؤد (۳۵/۳ طبع عزت عبیدهاس) نے کی ہےاورابن مجر نے اسے نتح الباری (۲۲/۵ طبع استقیہ) میں صن کہاہے۔

زبانی تعزیر کی ایک تم ہے، این فرحون کی "تیمرة الحکام" میں ہے:
زبان سے تعزیر کی دلیل ابوداؤد میں حضرت ابوہریرة کی بیصدیث ہے:
"اضربوہ" فقال ابوھریوۃ: فمنا الضارب بیله، ومنا الضارب بنعله، والمضارب بنعوبه ۔ وفی دوایة "بکتوه" فاقبلوا علیه یقولون: ما اتقیت الله؟ ما خشیت الله؟ ما فاقبلوا علیه یقولون: ما اتقیت الله؟ ما خشیت الله؟ ما استحییت من دسول الله ﷺ "" (رسول الله علیہ کے پاس استحییت من دسول الله ﷺ " " (رسول الله علیہ کے پاس کی کوارو (۱) جضرت او ہریرة کہتے ہیں کہم میں سے پھھ اپنے کے فر مایا:
اس کومارو (۱) جضرت او ہریرة کہتے ہیں کہم میں سے پھھ اپنے ہاتھ سے مارر ہے تھے، پھھ اپنے ہوتے سے، اوربیض اپنے کیڑ ہے۔
اور ایک روایت میں ہے کہ "ا سے مرزفش کرو، جھڑکو" تولوگ اس کی خون نہیں ہوا؟ تجھے الله کا ڈرنییں ہوا؟ تجھے رسول الله علیہ کے الله کا ڈرنییں ہوا؟ تجھے الله کا ڈرنییں ہوا؟ تجھے رسول الله علیہ کی تھی شرم نہ آئی؟) بیمرزش خون نہیں ہوا؟ تجھے رسول الله علیہ کے الله کا ڈرنییں ہوا؟ تجھے رسول الله علیہ کی تھی شرم نہ آئی؟) بیمرزش

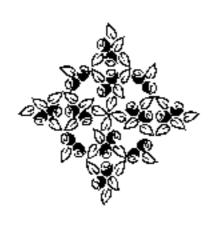
و کیھئے: اصطلاح '' تعزیر''۔

۲ - بھی بھی تحقیر عملا ہوتی ہے، جیسا کہ جمو نے گواہ کو بدنا م کرنے کی صورت میں، اس کی بدنا می یوں ہوتی ہے کہ اس کے بارے میں لوگوں کو بتایا جائے اور اس کی شہیر کی جائے اور یہ شہیری اس کے قت میں تعزیر ہوتی ہے۔ جمو نے گواہ کی شہیر کے بارے میں" تارخانیہ" میں ہے کہ امام ابو حنیفہ کامشہور تول بیہے کہ اسے گھمایا جائے گا اور تشہیر کی جائے گی اور" اسراجیہ" تشہیر کی جائے گی اور" اسراجیہ"

(۲) ابن عابد بن ۱۸۲/۳ المتيمرة الحكام ۱۲ ۲۰۰ معین الحكام للطر البسي رص ۱۳۳۱

یں ہے کہ ای پر فتوی ہے۔ ' جامع العابیٰ ' میں ہے کہ شہر یہ ہے کہ اسے شہر میں گھمایا جائے اور ہر محلّہ میں اعلان کیا جائے کہ یہ جبونا کو او ہے، کوئی اس کی کوائی قبول نہ کرے۔ خصاف نے اپنی کتاب میں ذکر کیا ہے کہ صاحبین کے قول کے مطابق اس کی تشہیر کی جائے گ لیکن پٹائی نہ ہوگی اور حضرت عمرؓ سے جوروایت ہے کہ اس کا چہرہ سیاہ کردیا جائے گا سرخس کے مزد دیک اس کی تا ویل یہ ہے کہ یہ اس مصاحت ہمجھ، صورت میں ہے جب حاکم سیاست کے طور پر ای میں مصلحت ہمجھ، اور امام صاحب کے مزد دیک اس سے مرادر سوائی قشہر ہے، کیونکہ اور امام صاحب کے مزد دیک اس سے مرادر سوائی قشہر ہے، کیونکہ اسے بھی چہرہ کا سیاد ہونا کہا جاتا ہے۔

شری رحمداللہ سے منقول ہے کہ وہ جمونا کواہ اگر باز ار سے تعلق رکھنے والا ہونا تو اسے باز ارتبیجتے اور اگر کوئی اور ہونا تو اسے عصر کے بعد اس کی قوم کے لوگ جہاں جمع ہوتے وہاں تبیجتے، اور اسے پکڑ کر لے جانے والا کہنا کہ شریح نے آپ سب کوسلام عرض کیا ہے اور ان کی طرف سے بیاملان کیا جاتا ہے کہم نے فلاں شخص کو جمونا کواہ پایا ہے، اس لئے آپ سب اس سے مختاط رہیں اورلو کول کو اس سے نہیئے کے لئے کہیں (۱)۔



⁽۱) ابن عابدين ۳۸ با ۱۹۲۱، البدايه سهر ۱۳۲ طبع مصطفیٰ البالي المحلمی، ابن عابدين ۱۳۸۰ ۱۳ الاختيار شرح الحقّار ۱۲ ۹ ۳ طبع المحلمی ۱۹۳۱، المبدب فی فقه الا مام الشافعی ۲ ۴ ۳ ۲۰ المختی لا بن قد امد ۱۹۸۹ طبع الریاض الحدید

⁽۱) عدیہے: ''آلئی بوجل قلد شو ب.....'' کی روایت بخاری (فتح الباری ۱۱۲۲ طبع استفیہ)نے کی ہے دوسری روایت ابوداؤد(سمر ۱۳۰ طبع عزت عبیددعاس)نے کی ہے۔

گمان کیاجائے گا۔

اجماع کے ذریعیہ ملت کے معلوم ہونے کی مثال عدالت ہے،
اس کنے کہ بی قبول شہادت کے وجوب کی ملت ہے، اور بیالت
اجماع کے ذریعیہ معلوم ہوئی ہے، البتہ کسی شخص کا عادل ہونا غور
واجتہاد کے ذریعیہ غلبہ خطن کی بنیاد پر ہوتا ہے۔

استنباط کے ذر میرملت کے معلوم ہونے کی مثال عقل میں مستی
پیداکر نے والی شدت ہے، اس لئے کہ وہ شرب خمر کے حرام ہونے کی
ملت ہے، پس نبیز میں ای ملت کی معرفت کے لئے غور وفکر کرما ہی
شخصی مناط ہے، اورا سے شخصی مناط اس لئے کہا جاتا ہے کہ مناط یعنی
وصف کے بارے میں میں علوم ہے کہ میمناط ہے، اور اب اس مناط
کے کسی متعین صورت میں یا نے جانے کی شخصی ریخور کرما باتی رہا (ا)۔

اجمالي حكم:

۲ تحقیق مناط ملت کے راستوں میں سے ایک راستہ ہے، جسے افتیار کرنے میں کما کوئی اختااف نہیں ہے۔ اور کبھی شخفیق مناط کو قیاس ملک میں سے شار کیا جاتا ہے۔

امام غزالی کہتے ہیں کہ اجتباد کی اس شم میں امت کے مامین کوئی اختلاف نبیس اور قیاس تو مختلف فیہ ہے تو اسے قیاس کیسے کہا جاسکتا ہے (۲)؟

اور پیش آمدہ واقعات میں علت علم کی تطبیق کے لئے مجتہد، قاضی اور مفتی کو تحقیق مناط کی ضرورت پیش آتی ہے۔ اس کی تفصیل اصولی ضمیمہ میں دیمھی جائے۔

شحقيق مناط

تعریف:

ا -حقق الأمو: كے معنى كسى امر كالقين كرنے يا اسے ثابت ولا زم كرنے كے بيں-

اورمناط:موضع تعلیق (معلق کرنے کی جگہ) کو کہتے ہیں۔ اہل اصول کے نز دیک مناط^{حک}م ب^{حک}م کی نبلت اور اس کے سبب کو کہتے ہیں ⁽⁽⁾۔

اور خین مناط اصر میں کے نزدیک: بد ہے کہ نص یا اجمال یا اجمال یا اجمال یا اجمال یا اجمال یا اجمال یا استنباط کے ذر معید کسی ملت کو جائے کے بعد مختلف افرادی صور توں میں اس ملت کی موجودگی کوجائے کے لئے خور وفکر اور اجتباد کے ذر معید مسلم میں خور وفکر اور اجتباد کے ذر معید مسلم کی موجودگی تا بت کرنے کا مام تحقیق مناط ہے۔

نص کے در میں نالے کہ معلوم ہونے کی مثال جہت قبلہ ہے، اس لئے کہ وی قبلہ کی طرف رخ کرنے کے وجوب کی نالت ہے، اور یہ نالت نص سے معلوم ہے، اللہ تعالی کا ارتباد ہے: ''و حَیْشُمَا کُنٹُنٹُمُ فَوَلُّوا وُجُو هُکُمُ مُ شَطَّرَهُ ''(۲) (اور تم جہاں کہیں بھی ہوا ہے چیرے کرلیا کروای کی طرف)، اشتباد کی حالت میں سمت کاتعین کہ قبلہ کدھر ہے؟ اس میں نشانات وعلامات کود کیے کر اجتباد کے در میہ

⁽۱) وأحكام لؤامدي سهر ۲۳، ممتصفي للغوالي ۲۲ ۱٬۳۳۰، ارتاد الحول للغوالي ۲۳ ۱٬۳۳۰، ارتاد الحول للغوالي ۱۳۳۰، ارتاد الحول للغوكا في رص ۲۲۳_

⁽۲) - اربيًّا دادگو ل رص ۲۳۳، المنتصى ۴ را ۳۳، روهند الناظر رص ۲ ۱۳، جمع الجوامع ۴ را ۳۳س

⁽۱) المصباح لممير ، مختار الصحاح، أنجم الوسيط ماده " مخطق"، " ناط" _

⁽۲) سورۇيقرەر ۱۳۳۳

"تحکیم

تعریف:

ا - افت میں تحکیم: "حکمه في الأمو والشيء" کا مصدر ہے،
 یعنی فلاں نے فلاں کو تکم بنایا، اور فیصلہ اس کے پر دکیا۔

قرآن کریم میں ہے: "فَلاَ وَرَبِّکَ لاَ يُوْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُونَ حَتَّى يُحَكِّمُونَ حَتَّى يُحَكِّمُونَ كَ يَعْمُونَ كَ فِيهُمَا شَجَوَ بَيْنَهُمْ" (١) (سُوسَم ہے تیرے رب کی وہ مومن نہ ہوں گے یہاں تک کہ جھے کوی منصف جانیں اس جمگڑے میں جوان میں اٹھے)۔

کباجاتا ہے: حکمہ بینھم یعنی فلاں کو بیتکم دیا کہ وہ فلاں فلاں کے درمیان فیصلہ کر دے اور فیصلہ کرنے والا تھم اور تھکم کہلاتا ہے۔
اور صدیت شریف میں ہے: "اِن المجنیۃ للمحکمین" (۲)
(جنت محکمین کے لئے ہے) یباں محکمین سے وہ لوگ مراد ہیں جو دشمن کے پنجہ میں پھنس جا کمیں، اور آئیس شرک قبل میں سے کسی ایک چیز کا افتیار دے دیا جائے، پھر بھی وہ اسلام پر ٹابت قدم رہتے ہوئیل ہونے آل ہونے کوافتیار کرلیں۔

اور مجازاً كباجاتا ہے: حكمت السفيه تحكيماجب جب كوئى كسى سفيه كوكسى كام كے كرنے ہے روك دے، يا اے اس كام كا انجام بتادے، اور اى معنى ميں نخعی كا قول ہے: حكم اليتيم

(۱) سرونا ۱۸۵۶ (۱)

(۲) عدیدہ: "إن الجدة للمحكمین" كوابن افیر نے (النہایہ سهر ۱۳۰ طبع عزت عبیدهاس) مل بیان كیا ہے ورائے كى كی طرف منسوب تیس كیا ہے۔

کما تحکم ولدک یعنی بیتم کوغلط کاموں سے اس طرح روکوجیے تم اپنی اولا دکوروکتے ہو، اور ایک قول سے ہے کہ اس جملہ سے ان کی مراد سے ہے کہ اس کے مال میں اس طرح ہماائی سے کام لوجیسے اپنی اولا دے لئے ہماائی سے کام لیتے ہو(ا)۔

اور افت میں تحکیم کے معنی فیصلہ کرنے کے بھی آتے ہیں۔ بولا جاتا ہے: "فضی بین الخصمین" (۲) (دوفر یقوں کے درمیان فیصلہ کیا)، "فضی له" (کسی کے حق میں فیصلہ کیا) "فضی علیه" (کسی کے خق میں فیصلہ کیا) "فضی علیه" (کسی کے خلاف فیصلہ کیا)۔

اصطلاح میں تحکیم رہے کر فریقین کسی کو حکم بنا نمیں جو ان کے درمیان فیصلہ کرے (۳)۔

''مجلۃ الأحكام العدليہ'' میں ہے: تحکیم بیہ ہے كافر یقین اپنے جگڑے اور دعوى میں فیصل کے لئے باہمی رضا مندی سے كسی كو عكم مقرر كرليں۔

اور ال کے لئے کہاجاتا ہے: مُکُم (جا اور کاف کے فتھ کے ساتھ)اور کُکُم (میم کے پیش، جا کے زیر اور کاف پر زیر اور تشدید کے ساتھ)(۴)۔

متعلقه الفاظ:

الف-قضاء:

۲- افت میں قضاء کا ایک معنی: فیصلہ کرنا ہے، اور اصطلاح فقہاء

(۲) لسان العرب،القاسوس الحيط . للأحرب

القاسوس الحيط، تاج العروس، لسان العرب، مجم مقاييس الملعه، أمغر ب،
 اساس البلاغه، النهاية في غربيب الحديث، مفردات الراغب، أنجم الوسيط -

⁽٣) الدرالخار كلفتكى ٣٨/٥ ممع حاشيه ابن هابدين مطبع لمبالي لجلى ، البحر الرائق شرح كنز الدقائق لا بن كيم ٢/ ٣٨ طبع دار أمعر فد بيردت _

⁽٣) مجلة الاحكام العدلية وفعه ٩٠ ١٤

تنحکیم سو- ہم

میں نضاء عمم شرق کو ظاہر کرنا ، اے لازم کرنا اور خصومت وجھگڑے کا فیصلہ کرنا ہے۔ اس معلوم ہوا کہ تحکیم و نضاء دونوں بی لوگوں کے مامین نزاع کو ختم کرنے اور صاحب حق کی تعیین کا ذر معید ہیں ، اس لئے فقہاء نے ان دونوں کے لئے ایک بی جیسی شرطیس مقرر کی ہیں جن کا بیان عمقر بیب آر ہاہے (۱)۔

تاہم ان دونوں میں چند بنیا دی فرق ہیں جوال بات میں ظاہر ہیں کو جیس کا جہ اور تھکیم فر ٹ ہے، اور قاضی کو ولا بیت عامہ حاصل ہوتی ہے، چنانچ قضاء کے دائر سے سے کوئی شی فارج نہیں اور ال کے افتیارات سے کوئی موضو ہے۔ فارج نہیں اور ال کے افتیارات سے کوئی موضو ہے۔ کسی کو عکم بنایا ال کے متعینہ قیو دوشر انظ کے مطابق قاضی یا فریقین می کی طرف سے ہوتا ہے، نیز بیات بھی قاتل لحاظ ہے کہ بعض امور تھیم کا محل نہیں ہیں جیسا کو نقر بیب آر ہاہے۔

ب-اصلاح:

سا - اصلاح افت میں فساد کرنے کی ضد ہے، اصلیح کامعنی ہے: کسی بھلائی اور خیر کا کام انجام دینا اور اصلیح فی عمله یا فی آموہ کامعنی ہے: یعنی اس نے اچھا اور نفع رساں کام کیا۔

اور أصلح المشيء كالمعنى ہے: اس نے سی چیز کے نساد كوز اكل كرديا -

اور أصلح بينهما، إذات بينهما، إمابينهما كالمعنى ب: فريقين كى رضا مندى سے ان كے مايين كى عداوت ونزائ كوختم كرديا۔

قرآن مجيدين ج: "وَإِنَّ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُوَّمِنِينَ اقْتَتَلُوا

(۱) مطالب اولی انهی فی شرح غایبة انتهی ۲۸ ۵۳ م، اُسکنب لا سلای دُشق، بد انع اصنا بَع ۲۸۷ طبع الجمالیه مغنی الحتاج سهر ۲۳ س

فَأَصَّلِحُوا بَيْنَهُمَا، فَإِنَّ بَعَتُ إِحْلَاهُمَا عَلَى الأَخُواى فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبَعِي حَتَّى تَفِيءَ إِلَى أَمْرِ اللَّهِ، فَإِنْ فَاءَتُ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبَعِي حَتَّى تَفِيءَ إِلَى أَمْرِ اللَّهِ، فَإِنْ فَاءَتُ فَأَصَّلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدُلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُ فَأَصُلِحُوا بِينَهُمَا بِالْعَدُلِ وَأَقْسِطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُ اللَّهُ مَعْرَبُ اللَّهُ يَحِبُ اللَّهُ مَا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللللَّةُ الللللِّ الللللَّهُ الللللَّةُ اللللللِّلِي الللل

معلوم ہواک اصلاح اور تحکیم دونوں کے ذر میدنزائ کو تم کیا جاتا ہے، البتہ تھم کا تعین تاضی یا فریقین کی طرف سے ہونا ضروری ہے اور اصلاح میں طرفین یا کسی رضا کارکو افتیار ہوتا ہے۔

شرعی حکم:

شخکیم کی مشر وعیت قر آن و سنت اور اجماع سے ثابت ہے(۲)۔

٣ - قرآن كريم مين الله تعالى كا ارثا وج: "وَإِنَّ خِفْتُمُ شِفَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَنُو احْكَمًا مِنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِنْ أَهْلِهِ اللهِ يَوْكُمُ مِنْ أَهْلِهِ اللهِ وَحَكَمًا مِنْ أَهْلِهِ اللهُ يَيْنَهُمَا "(") (اور اگر تهبين دونوں ك ورميان كُفَاش كانكم بونوتم ايك حكم مرد كے فائدان سے اور ايك حكم عورت كے فائدان سے اور ايك حكم عورت كے فائدان مي مقرر كردواگر دونوں كى نيت اصلاح حال ك بوگرت ونوں كے درميان موافقت پيدا كردے گا)۔

⁽۱) سورهٔ جمرات ره ۱

⁽۲) مجمع الانهر ۴ر ۱۷۳ بشرح العنايه ۵۸ ۸۰ س

_ ma/s Libor (m)

قرطبی کہتے ہیں: یہ آیت تحکیم کے ثبوت پردلیل ہے (۱)۔

۵- سنت نبو یہ طہرہ سے ثبوت یہ ہے کہ تعیلہ بنوریطہ کے یہودی جب حضرت سعد بن معاق کی تحکیم پر آ ما دہ اور ان کے فیصلہ کو تتعلیم کرنے پرراضی ہوگئے تو رسول اللہ علیائی نے حضرت سعد کے تحکم بنائے جانے پررضامندی ظاہر فر مائی (۲)۔

اور تبیلہ ہوئنر نے جب اموال زکا قالوٹ کئے تو آپ علیہ ہے۔ ان کے معاملہ میں افور بن بٹامہ کے حکم بنائے جانے پر راضی ہوئے (۳)۔

نيز صديث شريف يمل به الآن أبا شويح هانيء بن يزيد رضي الله عنه لما وفد إلى رسول الله الله الله قومه، سمعهم يكنونه بأبي الحكم. فقال له رسول الله الله الله الله هو الحكم. وإليه الحكم، فلم تكنى أبا الحكم؟ فقال: إن قومي إذا اختلفوا في شيء أتوني، الحكم؟ فقال: إن قومي إذا اختلفوا في شيء أتوني، فحكمت بينهم، فرضي كلا الفريقين. فقال رسول الله فحكمت بينهم، فرضي كلا الفريقين. فقال رسول الله شريح، ومسلم، وعبدالله. قال: فما أكبرهم؟ قلت: شريح، ومسلم، وعبدالله. قال: فما أكبرهم؟ قلت: شريح، قال: أنت أبو شريح. ودعا له ولولله" (٣) شريح. قال: أنت أبو شريح. ودعا له ولولله" (٣)

پاس آئے تو رسول اللہ علی نے ساک ان کی قوم کے لوگ آئیں ان کی تورسول اللہ علی نے ان سے کہا: علم تھے لاکار ہے ہیں تو رسول اللہ علی نے ان سے کہا: علم توصرف اللہ تعالی ہے اور ای کو عم کاحق ہے تو آپ کی کئیت ابوالحکم کیوں ہے؟ اس پر انہوں نے کہا: جب کسی معاملہ میں میر کی قوم میں اختااف ہوتا ہے تو وہ میرے پاس آتے ہیں، اور میں ان کے درمیان فیصلہ کر دیتا ہوں، جس پر دونوں فریق راضی ہوجاتے ہیں، اور میں اس کے درمیان فیصلہ کر دیتا ہوں، جس پر دونوں فریق راضی ہوجاتے ہیں، میں کر رسول اللہ علی ہے نے فریایا کہ یہ بہت اجہی بات ہے، کیا تمہاری کوئی اولا دہمی ہے؟ انہوں نے کہا کہ شریح بمسلم اور عبداللہ میر کے لئے دیا کہ ان کر ایا کہ ان میں بڑا کون میر کے اور ان کی اولا دیے ان علی بڑا کون اور کے لئے دیا فریا فت فریا ایم اور شریح ہو۔ اور ہے؟ میں نے کہا: شریح ہو۔ اور سے کے اور ان کی اولا دیے لئے دیا فریائی)۔

اجہائ سے تحکیم کا ثبوت ہیہ کہ حضرت عمر اور حضرت ابی بن کعب رضی اللہ عنہما کے درمیان تھجور کے درختوں کے سلسلہ میں ہزائ تھی تو انہوں نے حضرت زید بن تا بت گواہے درمیان تھم بنایا (ا)۔ اور حضرت عمر کا ایک آ دمی کے ساتھ ایک تھوڑے کے معاملہ میں اختا اف ہوا جو تھوڑ احضرت عمر ٹے نے سائمہ ہونے کی شرط کے ساتھ خرید اتھا، اس معاملہ میں ان دونوں نے حضرت شریح کو تھم بنایا (۲)۔

نیز حضرت عثان اور حضرت طلحه رضی الله عنبما نے حضرت جبیر بن مطعم مم کو تکم بنایا (۳)، حا**لانکه حضرت زید**، حضرت شر^ح اور حضرت جبیر (الل وقت) قاضی نبیل تنصه

اور اس طرح کے معاملات کبارصحابہ کی ایک جماعت کے

⁽۱) الجامع لاحقا م القرآن للقرطبي ۵ر۹۵ اطبع دارالكتب أمصرييه

⁽۲) ببود کے معالم ملے میں حضرت معد بن معافہ کی تحکیم کی عدیدے کی روایت بخار کی (۴) (فتح الباری ۲۱ (۱۲۵ طبع الشافیہ) نے کی ہے۔

 ⁽٣) حديث: "أن رسول الله نظين رضي بنحكيم الأعور بن بشامة"
 كي روايت الصحاب عن ابن ثا بين في كي، اور اللي كي سند عن جهالت
 به الاصابلا بن جمراء ۵۵ ثا تع كرده الرماله)۔

⁽٣) عديث: "بن الله هو الحكم" كي روايت الإداؤد (١٥٠٥ طبع عزت عبيدهاس) منا كي (٢٢١٨ طبع أمكونية التجارير) نيزها حب جامع الاصول (٣٤٣/١) في جاوراس كي سندسن ب

⁽۱) أمرسوط ۱۲ الر ۱۲، فتح القدير ۱۵ مرمه ۱۳، أمنى ۱۰ رمه ۱، كثاف القتاع المتاع ۲ سرمه ۱۰ سرمه ۱۰ مرسوس

 ⁽٣) المغنى ١١ر ١٩٥٥ طلبة الطلبه في الاصطلاحات القابية رض ٢ ١٣٦٠

⁽m) المغنى والرووا، كثا ف القتاع الرسوس، أي الطالب سهر ١٧٧_

ساتھ ٹیش آئے ،جن رکسی نے نگیر نہیں کی البذا سیاجہا کے ہوا (۱)۔ 2- اسی بنار فقہاء نے تھکیم کے جواز کو افتیار کیا ہے (۲)۔

البتہ حضیہ میں سے بعض نے اس کا نتوی و بینے سے گریز کیا ہے،
ان کی دلیل بیہ کے کسلف فیصلہ کے لئے ایسے خص کو افتیا رفر ماتے تھے
جوصالح ومتدین عالم ہو، وہ اپنی بلم کے مطابق احکام شرع کی روشی
میں یا جہترین کے اجتہاد کی روشن میں جو پچھ بچھتا اس کے مطابق فیصلہ
کرتا ۔ اور آج کل اگر تحکیم کو جائز قر ارد نے دیا جائے توعوام اور وہ لوگ
جوعوام عی کے تھم میں ہیں اپنے جیسے لوگوں کو فیصل بنانے کی جسارت
کریں گے، اور وہ فیصل اپنی جہالت ونا واقفیت کی وجہ سے شرق احکام
سے ہٹ کر فیصلہ کیا کرے گاجو ہڑنے نساد کا ذریعیہ ہے، ای وجہ سے
ان فقہاء نے تحکیم کی ممانعت کا فتوی دیا ہے (۳)۔

اسنع مالکی کہتے ہیں: میں تحکیم کو پسندنہیں کرنا بکین اگر اس کے ذر**عی**ہ فیصلہ ہوجائے تو نافذ ہوگا۔ اوربعض مالکیہ نے تحکیم کوسرے سے نا جائز کہاہے ^(۳)۔

اور بعض شافعیہ اس کے عدم جواز کے قائل ہیں، اور بعض یہ کہتے ہیں کہ اگر شہر میں کوئی تاضی نہ ہوتو شحکیم جائز ہے، اور بعض صرف مال میں اس کے جواز کے قائل ہیں (۵)۔

بہر حال حفیہ کا اصح اور ظاہر مذہب شحکیم کے جواز کا ہے اور جمہور ثنا فعیہ کے فزد یک یکی اظہر ہے اور یکی حنا بلد کا مذہب ہے۔

- (۱) کوسوط ۱۲ / ۲۲، شرح العنابید ۵ / ۹۸ سمفنی اکتاع سمر ۸۷ سر نهایید اکتاع ۱۳۳۰ / ۲۳۰ -
- (۳) فتح القدير ۵ر ۹۸ م، بدائع الصنائع عرس، مواجب الجليل ۱۱۳، تهمرة لويما مر ۱۱۳، تهمرة لويما مر ۳۳۰، أنتنى المحكام الرسم، المشرح الكبير سر ۱۳۵۵، نهايند الحتاج ۸ر ۳۳۰، أنتنى ۱۱۰ ۱۷۰۰، المنتنى ۱۲ ۱۷۰۰، المنتنى ۱۲ ۱۷۰۰، المنالب أولى أنهى ۱۲ ۱۷ س.
 - (m) حاشيه ابن هايو بن ۲۵ سر۳۰ س
 - (٣) الماتع ولوكليل ٢٩ /١١٢ ، مواجب الجليل ١٩ / ١١١٢ ، حاهية الدمو قي سهر ١٣٥٥ ـ

مالکیہ کے کلام سے ظاہر ہوتا ہے کہ اگر تھکیم پڑھمل کرتے ہوئے فیصلہ ہوجائے تو نافذ ہوگا (۱)۔

۸- تحکیم میں طرفین وہ دونوں فریق ہوتے ہیں جو اپنے درمیان نزائ کوبذر معید تحکیم نتم کرنے پر متفق ہوجا نمیں ، ان میں سے ہر ایک کومجام (کاف پر تشدید اور زیر کے ساتھ) کہتے ہیں۔

اور فریقین کبھی دواور کبھی دو سے زائد کبھی ہوتے ہیں (۲)۔ 9 - محکیم فریقین کے لئے بیٹر ط ہے کہ ان میں باہم عقد کرنے کی سیجے اہلیت پائی جائے جس کا حاصل عقل ہے، اس لئے کہ اس اہلیت کے بغیر عقد بی سیجے نہیں ہوتا (۳)۔

وکیل کے لئے اپنے مؤکل کی اجازت کے بغیر تھکیم جائز نہیں ہے، ای طرح جس بچے کو تجارت کی اجازت ہواں کے لئے اپنے ولی کی اجازت ہواں کے لئے اپنے علی کی اجازت ہواں کے لئے اپنے عامل مضاربت میں عامل (میت کرنے والا) کے لئے بغیر مالک کی اجازت کے تھکیم جائز جائز نہیں، ای طرح ولی، وسی اور ای شخص کی طرف سے تھکیم جائز نہیں جس کو افلاس کی وجہ سے نضرفات سے روک دیا گیا ہو، بیمدم جوازای صورت میں ہے جب تھکیم کی وجہ سے اہلیت نہ رکھنے والے شخص یا ترض خواہوں کو ضرر پہنچتا ہو (س)۔

تحكم كے لئے شرطيں:

الف-جس کو حکم ، نایا جائے اس کے لئے شرط ہے کہ وہ معلوم

⁽۱) - حاشيه ابن عابدين ۵/ ۳۰ ۳، العقو دالدريه الر۹ اس، الروضه ۱۱/ ۱۲ ا، کشاف القتاع۲۷ ۸ ۴ ۳،مو ایب الجلیل۲۷ ۱۱۲، حاهمیة الدسوقی ۳۸ ۵ سال

⁽۲) حاشیه ابن حامد بن ۵ ر ۲۸ سمه فنح الو باب ۲ ر ۲۰۸ س

⁽m) البحر المراكق ۱۷ ۳۲، تؤير الا بصار ۱۸ ۸ ۳۸ س

⁽۳) ابن عابدین ۶۷ سه، الفتاوی البندیه سر ۲۷، مغنی اکتاع سر ۹۷س. نهایید اکتاع ۸۷ سه۔

و متعین ہو، اگر فریقین مثالا ایسے خص کو تھم بنائیں جوسب سے پہلے مجد میں داخل ہوتو یہ بالاجماع جائز نہیں ہے، اس لئے کہ اس میں جہالت ہے (۱) البتہ اگر اس داخل ہونے والے کو جائے کے بعد فریقین اس پر راضی ہوجائیں تو بہتھم کے متعین ہونے کی وجہ سے جائز ہوگا۔

11 - ب علم کے لئے ایک شرط بیہ کہ وہ ولایت قضاء کا اہل ہو۔
 اس پر چاروں فقہی مذاہب کا اتفاق ہے ، اگر چہ اس اہلیت کے عناصر کی تعیین میں اختلاف ہے (۴)۔

یباں پر اہلیت قضاء ہے مراد قضاء کی مطلق اہلیت ہے، نہ کہ خاص واقعہ میں جس میں مزائ ہے۔

بٹا فعیہ کا ایک قول ہے ہے کہ اس شرط سے استعناء صرف اس صورت بیں ممکن ہے جب کوئی اس کا اہل موجود بی نہ ہواور بعض بٹا فعیہ اہلیت تضاء کو مطلقا شرط عی تر از بیس دیتے اور بعض نے تحکیم کو اس صورت بیس جائز کہا ہے جب کوئی قاضی موجود نہ ہو، اور ایک قول ہے ہے کہ تحکیم تضاص اور عقد نکاح کو ٹابت کرنے کے لئے درست نہیں، بلکہ صرف مال کے ساتھ خاص ہے۔

حنابلہ کا ایک قول ہے ہے کہ تھم کے اندر قاضی کی تمام صفات کا پایا جانا ضروری نہیں ہے۔

اں شرط سے متعلق احکام میں تفصیل ہے جس کے لئے ''دعوی''اور'' قضاء'' کی اصطلاحات دیکھی جائیں۔

دفنیہ کہتے ہیں کہ میں تھکیم کے وقت سے فیصلہ کے وقت تک اہلیت فضاء کا موجود ہونا ضروری ہے (۳)، ای لئے اس صورت

(m) مغنى الحتاج سرم سره سره ماية الحتاج مرمه، فتح الوراب (m)

میں تھم کامسلمان ہونا شرط ہے جب دونوں فریق یا ان میں سے کوئی
ایک مسلمان ہو، اور اگر فریقین غیر مسلم ہوں نو تھم کامسلمان ہونا شرط
نہیں۔ اور ملت ال کی بیہ ہے کہ غیر مسلم غیر مسلم وں کے درمیان
شہادت کا اہل ہے، تو فریقین کا اس پر راضی ہونا ایسا ہوگا جیسا ک
با دیا ہ کا اس کو تھم بنانا اور بیم علوم می ہے کہ غیر مسلموں کے درمیان
غیر مسلم تھم کی ولایت درست ہے اور یہی تھم تھیم کا ہے۔

اور اگرفریقین غیر مسلم ہوں، اور وہ باہمی اتفاق ہے کسی غیر مسلم کو علم بنالیں تو بیجائز ہے، چنا نچ اگر فیصلہ سے پہلے فریقین میں سے کوئی ایک اسلام لے آئے تو اس حکم کا فیصلہ مسلمان کے خلاف بانذ نہیں ہوگا، البنتہ اگر اس کے موافق ہوتو با نذ ہوجائے گا اور ایک قول بیہے کہ اس کے حق میں ہوتا بھی یا نذ نہیں ہوگا۔

الله - مرتد كوتكم بنانا امام او حنيفه كيز ديك موقوف رہے گا، اگر وه اسلام كى طرف لوث آئے او اس كوتكم بنانا سيح به وجائے گا، ورنه باطل به وجائے گا۔ اور امام ابو بوسف اور امام محمد كيز ديك اس كى تحكيم بہرحال جائز ہے۔

ال وضاحت کے مطابق اگر ایک مسلمان اور ایک مرتد فیل کرکسی کو حکم بنایا اور اس نے ان کے درمیان فیصلہ کردیا، پھر مرتد قتل کردیا گیا ، یا دار الحرب چاہ گیا تو ان کے سلسلے میں اس کا فیصلہ جانز نہ ہوگا (۱)۔

سوا - فقرباء نے اس پر متعدد نتائج مرتب فرمائے ہیں جو بعض جزئیات کی شکل میں ظاہر ہوتے ہیں....مثالاً اگر فریقین نے کسی بچہکو تھم بنادیا پھرود بالغ ہوگیا، یا غیر مسلم کو تھم بنایا پھر وہ اساام لے آیا اور

⁽۱) البحر الرائق ۲۷۲ م، القتاوي البنديه ۳۲۹۳

⁽٣) البحراً لرائق عر ٣٣، بدائع الصنائع عرس، مواجب الجليل ٢ / ١١٣، تبعرة الحكام ارسه، مغني الحتاج مهر ١٨ ٨، الكافي سهر ٢ ٣ م، المغني وار وه ا

⁽۱) حاشیه ابن عابدین ۱۸۳۵، البحرالراکن ۱۳۳۷، الفتاوی البندیه سر ۲۲۹،۲۹۹، فتح القدیر ۲۸۰۰۵

بچہ نے بالغ ہونے یا غیر مسلم نے اسلام لانے کے بعد فیصلہ کیا، تو ان کافیصلہ نافذ نہ ہوگا۔

اور اگرفر یقین نے کسی مسلمان کو تکم بنایا، پھر وہ مربقہ ہو گیا تو اس کا فیصلہ بھی یا فذنہیں ہوگا۔ اور اس کا مربقہ ہونا بی اس کا معز ول ہونا سمجھا جائے گا، چنانچ اگر وہ اسلام کی طرف لوٹ آئے تو اس کو از سرنو تھم بنایا ضروری ہوگا۔

اوراگر تھکم کی بینائی جاتی رہے، پھر اس کی بینائی بحال ہوجائے اور وہ فیصلہ کرنے قو اس کا فیصلہ جائز نہ ہوگا۔

البنة اگر تھم سفریٹس چاا جائے ، یا بیار یا ہے ہوش ہوجائے ، پھر سفر سے واپس آکر، یا شفلاب ہوکر فیصلہ کرے تو فیصلہ جائز ہوگا، کیونکہ اس سے قضاء کی اہلیت متاثر نہیں ہوتی۔

اوراگر غیر مسلموں نے غیر مسلم کوتھم بنایا، پھر فیصلہ کرنے سے
پہلے وہ تھم مسلمان ہوگیا تو وہ حسب سابل تھم عی رہے گا، اس لئے کہ
غیر مسلموں کا مسلمانوں کوتھم بنانا جائز ودرست ہے۔ اگر فریقین میں
سے کسی نے تھم عی کوخصومت کا وکیل بنادیا اور اس نے وکا لت کو قبول
کر لیا تو امام ابو بوسف کے قول کے مطابق وہ تھم عی ندر ہا اور تھکیم ختم
ہوگئی اور امام ابو حنیفہ اور امام محمد کے فرد کیے تھکیم ختم نہیں ہوئی، جبکہ
بعض علاء کا کہنا ہے کہ تھکیم بالا تفاق سب کے فرد کیے ختم ہوگئی (ا)۔
سما اس جے جھیم کی صحت کے لئے یہ تھی شرط ہے کہ تھم اور کسی فریق
سمال اس کے جھیم کی صحت کے لئے یہ تھی شرط ہے کہ تھم اور کسی فریق
سمال اس کی تر ابت نہ ہوجو ما فع شہادت ہو۔ اور اگر تھم یا اس کا
سمالیا کوئی ایسا آ دمی جس کی شہادت تھم سے حق میں قبول نہیں وہ چیز
میٹا یا کوئی ایسا آ دمی جس کی شہادت تھم سے حق میں قبول نہیں وہ چیز
موجاتی ہے۔

اور اگر فریقین میں سے ایک نے دوسر کے وہم ہنادیا اور اس نے اپنے حق میں یا اپنے خلاف فیصلہ کر دیا تو ابتداءً اسے حکم بنانا جائز ہے، اور اگر واضح ظلم نہ ہوتو اس کا فیصلہ نا نذ ہوگا، حنفیہ اور حنا بلہ کا یمی مذہب ہے۔

مالکیہ کے ہی سلسلہ میں نین او ل ہیں:

پہاوتول ہیہے کہ بیصورت مطلقاً جائز ہے،خواہ وہز یق جس کو تھم بنایا گیا ہے ناضی ہویا کوئی دوسر اُخض ہو۔

وہر اقول ہیہ ہے کہ بیہ مطلقاً جائز نہیں ، اس لئے کہ اس میں نہمت ہے۔

تیسر اقول ہیہ کہ حکم کے قاضی ہونے اور نہ ہونے میں فرق کیا جائے گا، و فر یق جس کو حکم بنایا گیا ہے اگر قاضی ہوتو بیجا تر نہیں، اوراگر وہ قاضی نہ ہوتو جائز ہے۔

ان اقوال میں پہاوتول معتدہے اور حنابلہ نے بھی ای کو اختیار کیاہے (۱)۔

محل تحکیم:

متحکیم کن کن چیز وں میں درست ہے؟ اس سلسلہ میں فقہاء کا اختلاف ہے۔

10 - حفیہ کے نز دیک باتفاق روایات بطور حق اللہ واجب ہونے والے عدود میں محکیم جائز نہیں ہے۔

ں ان کی دلیل میہ ہے کہ حدود واجبہ کے اجراء میں ولی امر مستقل

⁽۱) - البحر الرائق ۷٫ ۳۵،۴۳، ابن ما بوین ۵٫۱۳۳، فتح القدیر ۵٫۹۹، الفتاوی البندیه سهر ۱۲۸،۹۲۸

بالذات ہوتا ہے اور حکم کا فیصلہ غیر فریق کے حق میں جمت نہیں ہوتا ، تو اس میں شبہ بہدا ہو گیا اور حدود شبہ سے ختم ہوجاتے ہیں۔

اورسر حسی کا جوقول ہے کہ حدقذف میں تھم بنانا جائز ہے وہ ضعیف ہے، کیونکہ اس میں اللہ تعالی کا حق غالب ہے، اس لئے معالی کا حق غالب ہے، اس لئے مدرس حنفیہ میں اسح قول کے مطابق تمام حدود میں تحکیم جائز نہیں ہے (۱)۔

17 - جہاں تک قصاص کا تعلق ہے تو امام ابو حقیقہ سے روایت ہے کہ اس میں محکیم جائز نہیں ہے۔

خصاف نے بھی ای کو اختیار کیا ہے، اور یکی مذہب میں سیجے ہے، اس لئے کہ تحکیم صلح کے درجہ میں ہے اور انسان اپنے خون کا مالک نہیں کہ اس کوسلے کا کھل بنائے۔

ویر حقوق پر قیاس کرتے ہوئے تصاص بین تحکیم کے جواز ک
جوروابیت ہے وہ روابیت وورابیت دونوں اعتبار سے ضعیف ہے، اس
لئے کہ قصاص بیں اگر چہ انسان کا حق غالب ہے کیئن وہ خالص
انسان کا حق نہیں بلکہ بعض مسائل بیں وہ صدود کے مشابہ ہے (۳)۔

انسان کا حق نہیں بلکہ بعض مسائل بیں وہ صدود کے مشابہ ہے (۳)۔

انسان کا حق نہیں ہے، اس لئے کہ حکمین کو عاقلہ پرکوئی والا بیت حاصل حکم بنانا سیح نہیں ہے، اس لئے کہ حکمین کو عاقلہ پرکوئی والا بیت حاصل نہیں اور نہ ان دونوں کے لئے تنبا قائل پر دبیت کا حکم لگانا ممکن ہے،

اس لئے کہ بیکم شرع کے خلاف ہے، شریعت نے عاقلہ کو چھوڑ کر تنبا قائل پر دبیت کا حکم لگانا ممکن ہے،

تاکل پر دبیت واجب نہیں قر اردی ہے، البتہ چند متحینہ مقامات اس سے مشتی ہیں، مثلاً وہ خود قبل خطاکا اقر ارکر لے (۳)، تنصیل کے لئے سے مشتی ہیں، مثلاً وہ خود قبل خطاکا اقر ارکر لے (۳)، تنصیل کے لئے درکھئے: اصطاباح ''دبیت' اور'' عاقلہ'۔

(m) البحر الرائق ٢/٧ م، بدائع الصنائع ٢/ سي

ان چند متعینه مقامات میں تحکیم جائز وما فذ ہے (۱)۔
۱۸ - تعلم کولعان میں فیصلہ کی اجازت نہیں جیسا کہ بر جندی نے ذکر
کیا ہے، اگر چہابن تجیم نے اس میں تو قف کیا ہے اور اس کی ملت میہ
ہے کہ لعان حد کے قائم مقام ہے (۲)۔

اوپر ذکر کئے گئے مقامات کے علاوہ میں شحکیم جائز و ما فند ہے (۳) ک

نیز تھم کو بیان تنیار نہیں ہے کہ قید کی سز ادے، البتہ صدر الشر میعہ سے اس کا جواز نقل کیا گیا ہے (۳)۔

19- مالکیہ کے نزدیک درج ذیل تیرہ مقامات کے علاوہ میں محکیم جائز ہے:

رشد، رشد کی ضد، وصیت جس (وقف)، غائب کا معاملہ،
نب، ولاء، حد، قصاص مال یتیم ،طلاق، غلام کی آزادی، لعان۔
ان مور میں تحکیم اس لئے جائز نہیں ہے کہ بیامور قضاء کے ساتھ فاص ہیں (۵)۔

اور ال کا سبب میہ ہے کہ میداموریا تو ایسے حقوق ہیں جن سے اللہ تعالی کا حق متعلق ہیں جسے حدقتل اور طلاق، یا ایسے حقوق ہیں جونر یقین کے علاوہ سے تعلق ہیں، جیسے نسب اور لعان ۔

کن امور میں تحکیم جائز ہے؟ ان کی حد متعین کرتے ہوئے ابن عرف نے کہا ہے کہ ظاہر روایت کے مطابق ان مور میں تحکیم جائز ہے جن میں فریقین میں ہے کسی ایک کے لئے اپنے حق کوچھوڑ دینا سیجے ہو۔

⁽¹⁾ البحر الراكق ٢/٧ م، بدائع الصنائع ٢/ ٣_

⁽۲) - البحرالراكن ۲۷ مارد ۲ مارد الع الصنائع ۲۷ س، الفتاوی البندیه ۳ ر ۲۹۸ ـ

⁽۱) البحرالراكق ۲۹/۷_

 ⁽۲) حافية الدرد ۳۱/۲ m، حامية الطمطاوي سهر ۲۰۸.

⁽m) الدرافقار ۵/ ۴ ۳۰، الفتاوي البندية سر ۲۹۸ س

⁽٣) البحر الرائق ٢٨ ٨٠ ٣٠٠ / ٢٨، الدراكة ما ١٣٨ مدر الشريعية ٢٨ • ٧٠ ـ

۵) حافية الدسوقى ١٨٢٣ أتبيم قالحكا م١٨٣٣، ١٣٨.

ں شرائط تحکیم:

منحكيم كے لئے درج ذيل شر انظ ہيں:

۲۲-الف بیزاع قائم ہو، اور حقوق میں سے کسی حق میں خصومت ہو(ا)۔

ال شرط کا حکما بیرتقاضہ ہے کہ باہم مخالف فریقین کا وجود ہو، اور ہر ایک دوسر ہے کی جانب اپنے حق کا دعوید ارہو۔

۲۳-ب۔ دونوں فریق اس کا فیصلہ قبول کرنے پر راضی ہوں، البتہ جو قاضی کی طرف سے فیصلہ کے لئے متعین ہواس پر ان کا راضی ہونا شرط نہیں، اس لئے کہ وہ قاضی کا نائب ہے۔

حفیہ کے فزویک میشر طنبیں ہے کہ فریقین تھم بنانے سے پہلے راضی ہوں، بلکہ فیصلہ ہونے کے بعد بھی اگر دونوں فریق اس کے فیصلہ برراضی ہوجا کمیں تو بھی جائز ہے۔

اور ثا فعیہ کے مزد یک بیشر وری ہے کہ تھم بنانے سے بل راضی ہوں (۲)۔

سلا - ج - بی بھی شرط ہے کہ فریقین اور تھم معاملہ تھیم کے قبول کرنے پر متفق ہوں، اور اجمالی طور پر بید ونوں اتفاق عی رکن تھیم بنتے ہیں، اور بیہ وہ الفاظ ہیں جو تھیم پر دلالت کریں، ساتھ عی دوسر سے کا قبول کرنا بایا جائے۔

یدرکن بھی صراحتہ ظاہر ہوتا ہے جیسے فریقین بیکبیں کہم نے آپ کو اپنے درمیان حکم بنادیا یا حکم ان دونوں سے کے کہ میں تنہارے درمیان فیصلہ کررہاہوں، اوروہ دونوں اسے قبول کرلیں۔ تنہارے درمیان میک مکا اظہار دلالت ہوتا ہے، جیسے فریقین اپنے درمیان کی شخص پر اتفاق کرلیں ، اورجس پر اتفاق کیا ہے اس کی

لخمی وغیرہ نے بیان کیا ہے کڑتحکیم صرف اموال اوران چیز وں میں سچھے ہے جواموال کے معنی میں ہوں (۱)۔

۲۰ - شا فعیہ کے فزویک حدود اللہ میں شحکیم جائز نہیں ، اس لئے کہ ان میں حد کا طالب متعین نہیں ہوتا ، اور یہی ان کا سیحے مذہب ہے ، اور حدود اللہ کے علاوہ میں اگر فریقین کسی آدمی کو حکم بنادیں تو علی الاطلاق جائز ہے ، شرط میہ ہے کہ اس آدمی میں قضاء کی اہلیت ہو ، اور ایک قول عدم جو از کا ہے۔

ایک قول میہ ہے کہ اس وفت تھم بنانا جائز ہے جبکہ شہر میں قاضی مذہبو۔

اور ایک قول رہے کہ تحکیم ہو ال کے ساتھ خاص ہے، قصاص ونکاح وغیر دبیں درست نہیں (۴)۔

۲۱ - کن صورتوں میں حکم بناما جائز ہے؟ اس میں حنابلہ کا اختلاف ہے۔

امام احمد کا ظاہر کلام ہے ہے کہ جن خصوبات وز اعات کو تاضی کے سامنے چیش کیا جاسکتا ہے ان تمام میں تحکیم جائز ہے جیسا کہ ابو الخطاب نے کہا ، اس میں مال ، قصاص ، عد اور نکاح ولعان وغیر ہ سب ہر اہر ہیں ، نیز تاضی کے موجود ہونے کی صورت میں بھی تحکیم جائز ہے ، اس لئے کہ تکم تاضی کے مائند ہے ، ان دونوں میں کوئی فرق نہیں ۔ تاضی ابو یعلی صرف اموال میں جواز تحکیم کے تاکل فرق نہیں ۔ تاضی ابو یعلی صرف اموال میں جواز تحکیم کے تاکل ہیں ، ابند انکاح ، قصاص اور عدمیں تحکیم جائز نہیں ، اس لئے کہ بیہ موراحتیا طرح میں ہیں ، فیصلہ کے لئے انہیں قضاء میں چیش کیا جانا مروری ہے (۳)۔

 ⁽٣) البحر المراكق ٢٥/٤، فتح القدير ٢/٥٠٤، مجلة الاحكام العدلية وفعدا ١٨٥٥.

⁽۱) تېمرة لويکا م ۱۲۱س، الشرح اکليير سر ۱۳۷۱

⁽٣) روهيد الطاكبين الراماا، نهايد أكتاج ٨/ ٢٣٠، مثني أكتاج سر ٨٨.٣٠. ٣٤٩ - صدر

⁽m) - الكافئ لابن قد امه سهر ۲ ۳۳ ،المغنى •ابرا ۹ ايمطالب اولى أنبي ۲ برا ۷ س

اطلات نہد یں کیکن جنگڑ ہے کو لے کر اس کے پاس جلے جا کمیں ، اور وہ ان کے درمیان فیصلہ کردے ، تو جائز ہے۔

اور اگر تھم تحکیم کو قبول نہ کرے تو از سر نوشکم بنائے بغیر اس کا فیصلہ کرنا جائز نہ ہوگا (۱)۔

نیز فریقین کے لئے بی بھی درست ہے کہ تحکیم کو کسی شرط کے ساتھ مقید کردیں، چنا نچ فریقین نے اگر کسی کو اس شرط پر تھم بنلا کہ وہ آجی ، یا ای مجلس بیں ان کے درمیان فیصلہ کردی ہوگئ مے لئے بیشر طالا زم ہوگی ، اور اگر اسے تھم بنلا اور شرط لگا دی کہ فلاس سے نتوی عاصل کر کے اس فتوی کے مطابق ان کے درمیان فیصلہ کر سے تو بی بھی جانز ہے۔

اور اگرفر یقین نے دو شخصوں کو کم بنایا، پھر ان میں سے ایک تکم نے فیصلہ کردیا تو یہ جائز نہیں، بلکہ جو فیصلہ ہور ہا ہے اس پر ان دونوں کا اتفاق ضروری ہے۔ اگر دونوں میں اختلاف ہوتو فیصلہ جائز نہ ہوگا (۲)۔

ای طرح اگرفریقین کسی متعین شخص کوهم بنانے پر اتفاق کرلیں تو وہ تھم کسی دوسر ہے شخص کوهم نہیں بنا سکتا، اس لئے کہ فریقینکسی دوسر ہے کے تم بہونے ہیں۔ اور اگر اس تھم نے دوسر سے کے تھم بونے پر راضی نہیں ہوئے ہیں۔ اور اگر اس تھم نے کسی دوسر سے کوهم بنادیا، اور دوسر سے نے فریقین کی رضامندی کے بغیر فیصلہ کردیا، اور پہلے تھم نے اس فیصلہ کو جائز قر اردے دیا تو بھی جائز نہیں، اس لئے کہ ابتداء اس کا اجازت دینا تھے نہیں ہے، تو انتہاء بھی تھے نہیں ہوگا، بلکہ فیصلہ کے بعد فریقین کا اجازت دینا ضروری ہے۔ اور ایک قول بیہ ہے کہ مناسب بیہ ہے کہ بیصورت جائز ہو، جیسے ہے۔ اور ایک قول بیہ ہے کہ مناسب بیہ ہے کہ بیصورت جائز ہو، جیسے

وکیل اول جب وکیل ٹانی کی ٹیچ کو جائز نقر اردے دے(ٹو ٹیچ درست ہوتی ہے)۔

البتہ تحکیم کوسی شرط پر معلق کرنا، جیسے فریقین کسی غلام ہے کہیں کہ جب تو آزاد ہوتو تم ہمارے درمیان فیصلہ کردینا، اور تحکیم کی فسیست وفت کی طرف کرنا، جیسے فریقین کسی شخص ہے کہیں کہ ہم نے کھیے کل آئندہ تھم ہنادیا، یا بیہ کہیں کہ مہدنہ کے پہلے دن میں مجھے تھم ہنادیا، اور بیسف کے قول کے مطابق بیتمام صورتیں جائز نہیں اور مام جھے کا امام اور یوسف کے قول کے مطابق بیتمام صورتیں جائز نہیں اور امام جھے کا اس میں اختااف ہے، لیکن فتوی پہلے قول پر ہے (۱)۔ امام محمد کا اس میں اختااف ہے، لیکن فتوی پہلے قول پر ہے (۱)۔ امام جھے کا ایسے تھم پر اتفاق کر لیما جائز نہیں جو تھم ہنائے جائے کا اہل نہ ہو۔ اگر غیر مسلم نے مسلمانوں کے درمیان فیصلہ کردیا، اور انہوں نے درمیان فیصلہ کردیا، اور انہوں نے اسے جائز رکھا تو بھی جائز نہیں ہوگا، جیسے کہ اسے ابتداءً عمم بنانا جائز نہیں ہے (۱)۔

۲۶ - شحکیم پر اتفاق کے لئے کواہوں کا ہونا ضروری نہیں کہ وہ کواہی دیں کفریقین نے فلا ک شخص کو عکم بنایا ہے۔

البنة انكار كے انديشه كى وجہ سے كواہ بناليما مناسب ہے، اور اس كاعملا فائدہ ہے، الله النظر الفين نے كسى كوهم بنايا، اور ال نے ان كے درميان فيصلہ كرديا، پھر ان ميں سے اس شخص نيس كے فلاف فيصلہ بوايہ كم الله فيا كرديا ، پھر ان ميں سے اس شخص نيس كے فلاف فيصلہ بوايہ كم كريا كہ ميں نے است حكم نيلا تھا، تو تحكم كا يقول كر است حكم بنايا تھا بقو كم كا يقول كر است حكم بنايا تھا بغير بينہ كے بول ند به وگا (٣)۔

⁽۱) ماهمية الطحطاوي سهر ۲۰۵، حاشيه ابن هابدين ۵ م ۲۸ س

⁽۲) البحر الرائق ۱۲۷، البدايه اور اس كی شروح ۵۰۲/۵، الفتاوی البنديه سهر ۵۶۸، حاشيه اين هايدين ۵۷ اسس، حاهيد الطبطاوی سهر ۵۸۸ س، مغنی التناع سمر ۵۷۸، فتح الوباب ۲۲ ۲۰۸۰

⁽۱) البحرالرائق ۷۷ ۲۹،۳۳، فتح القدير ۵۰۳،۵۰ الفتاوي البنديه ۳۱۷،۳ ۵۷۰، جامع الرموز ۲۲ ا۳۳، حاهيد الطهلاوي سهر ۲۰۳، ۲۰۸، حاشيه ابن عابدين ۱۸ سر

⁽۲) - القتاوي البندية سهر ۲۱۸ ، فتح القدير ۲۷۵ ، البحرالرائق ۱۲ ۳۳ ، حاشيه ابن عابدين ۲۸۷ س

⁽۳) گرموط ۱۳۸۱ ۱۱ الدموتی سر۵ ۱۳ مطالب یولی آبی ۲/۱ ۲ سر کشاف القتاع ۳۰۳/۱۲

27-فیصلہ ہوجائے تک حکم بنائے جانے پر اتفاق کا باقی ربناضر وری ہے، کیونکہ اگر فیصلہ ہونے سے قبل فریقین میں سے کوئی تحکیم سے رجو عکر لیے تقریب آر ہاہے۔

اگر محم نے فریقین میں ہے کسی ہے کہا کہ تو نے میر ہے سامنے الر ارکیا ہے، یا اس سلسلہ میں تیرے خلاف میر ہے سامنے بینہ تائم موگیا ہے، اس لئے میں نے تیرے ذمہ بیلازم کردیا، یا بید فیصلہ کردیا، اس کے میں نے تیرے ذمہ بیلازم کردیا، یا بید فیصلہ کردیا تو اس اس پر جس کے خلاف فیصلہ ہوا ہے اس نے اثر اربیا بینہ کا انکار کردیا تو اس کے قول کا اعتبار نہیں کیا جائے گا، اور فیصلہ بانند ہوگا، اس لئے کہ محم کی ولایت قائم وموجود ہے، اور اس حالت میں وہ قاضی کے مانند ہے۔

البنة فریق اگر اسے معزول کردے اور پھر بیات کے، تو تھم کے قول یا فیصلہ کا اعتبار نہ ہوگا، جیسے قاضی کے معزول ہوجانے کے بعد اس کے کئے ہوئے فیصلہ کا اعتبار نہیں ہوتا ہے (۱)۔

۲۸ - و۔ فیصلہ پر کواہ بنانا صحت شخکیم کے لئے شرط نہیں ہے، بلکہ انکار کے وقت تھم کا قول معتبر ہونے کے لئے شرط ہے، اور اس کے لئے شرط ہے، اور اس کے لئے مجلس تھم بیں جی کواہ بنانا ضروری ہے (۴)۔

فيصله كاطريقه:

۲۹ - کسی جیز کاطریقہ وہ کہلاتا ہے جواس جیز تک پہنچائے،خواہ فیصلہ ہویا کچھ اور (۳)۔

چنانچ فیصلہ کا طریقہ وہ ہے جس کے ذریعیہ حق جوزائ وخصومت کاموضوئ ہے، ٹابت ہو۔

اور سیاتو بینہ کے ذر معیہ ہوتا ہے، یا اتر ارکے ذر معیہ، یا حلف

- (۱) فتح القدير ۵ / ۵۰۳،۵۰۱ الفتاوي البندية سر ۲۹۹، جامع الرموز ۲ / ۳۳۳، لميسوط ۲۱ / ۳۲، الكفاية سهر ۱۷۷
 - (۲) شرح العنابيه ۵۰۲/۵۰
 - (m) كثاف القاع (m)

اٹھانے سے گریز کے ذریعیہ ہوتا ہے۔

ال میں تکم اور قاضی کا فیصلہ ہر اہر ہے۔

چنانچ اگر فیصلہ ای بنیاد پر ہوتو وہ شرّ بعت کے موافق اور جمت ہے، ور ندباطل ہے۔

ال مے معلوم ہوا کہ تھم اپنے علم کی بنیا دیر فیصلہ ہیں کرے گا۔ اور تھم کی تحریر قاضی کے نام، یا قاضی کی تحریر تھم کے نام جائز نہیں، اِلگا بیا کہ فریقین اس ہر راضی ہوں، حنا بلد کا اس میں اختا اِ ہے، وہ اس کے جائز اور نا فذہونے کے قائل ہیں (۱)۔

تنحکیم سے رجوع:

• سا-چونکہ علم بنانا جائز ہے، اس لئے اس سے رجو تا کا حق بھی ہے، کیکن بیش ملاطلاق نہیں ہے۔

اسا- چنانچ حنفیہ اور مالکیہ میں سے محون کا مذہب بیہ ہے کہ فیصلہ ہونے سے پہلے پہلے فریقین میں سے ہر ایک کو تحکیم سے رجو گ کرنے کا حق ہے، جس میں فریقین کامتفق ہونا بھی ضروری نہیں۔ کرنے کا حق ہے، جس میں فریقین کامتفق ہونا بھی ضروری نہیں۔ چنانچ فریقین میں سے اگر کسی نے رجو ٹ کرلیا تو اس سے حکم معز ول ہوجائے گا۔

سین فیصلہ ہوجانے کے بعد کسی کوتھیم سے رجو ٹ کرنے ،یا تھم کومعز ول کرنے کاحق باقی نہیں رہتا، اور فیصلہ ہوجانے کے بعد فریقین میں ہے کسی نے اگر رجوٹ کر لیا توفیصلہ باطل نہیں ہوگا، اس لئے کہ فیصلہ کے وقت تھم کو والا بہت شرعیہ حاصل تھی، جیسے کہ قاضی فیصلہ کردے، پھر فیصلہ کے بعد با دثاہ اسے معز ول کردے (توفیصلہ باطل نہیں ہوتا)۔

ای وضاحت ہے معلوم ہوا کہ اگر دو شخصوں نے متعد دوجو وَں

⁽۱) البحر أقل ۱۷۵،۲۵، الفتاوي البنديه سر ۲۷۰، فتح القديم ۵۰۳۵، طشيه ابن هايو بن ۱۵ را ۳۳، أمغني ۱۰ را ۱۹۰

تحکیم ۳۷–۳۵

میں فیصلہ کے لئے کسی کو تھم بنادیا، اور اس نے ان وجوؤں میں سے بعض میں کسی ایک کے خلاف فیصلہ کردیا، اس کے بعد جس کے خلاف فیصلہ کردیا، اس کے بعد جس کے خلاف فیصلہ ہوا اس نے اس تھم کو تنظیم کرنے سے رجو ت کرلیا تو پہا افی فیصلہ تو نافذ رہے گا، البتہ باقی وجو وک میں تھم کو فیصلہ کرنے کاحق نہیں ہوگا، اور اگر وہ فیصلہ کرد نے فانذ نہیں ہوگا۔

اور اگر تھم نے فریقین میں سے کسی سے کہا کہ تیرے خلاف جس حق کا وعوی کیا گیا ہے اس کے تیجے ہونے پرمیر سے پاس جمت قائم ہو چکی ہے، اتنا سنتے می اس فریق نے تھم کو معز ول کر دیا، پھر اس کے بعد تھم نے اس کے خلاف فیصلہ کیا تو اس کا فیصلہ اس پر نافذ نہ ہوگا(ا)۔

سلامالکیہ کے فردیک فیصلہ ہونے تک فریقین کی رضا کا باقی رہنا شرط نہیں ہے، بلکے فریقین نے اگر تھم کے پاس بینہ قائم کر دیا، پھر کسی فرین کا ارادہ ہواکہ فیصلہ سے پہلے ہی تحکیم سے رجو ت کرلے تو بھی تھم پر فیصلہ کرنامتعین ہوگا اور اس کا فیصلہ جائز ہوگا۔

اور استی کہتے ہیں کہ تھم کے سامنے خصومت شرو ت کرنے ہے پہلے پہلے نریفین میں سے ہر ایک کورجوٹ کرنے کا حق ہے، اور اگر خصومت شروع کر دی تو آخر تک اس پر قائم رہنا ان کے لئے لا زم وشعین ہے۔

ابن الماجشون کہتے ہیں کہ فصومت شروع کرنے سے پہلے بھی فریقین میں ہے کسی کورجوع کاحق نہیں ہے (۲)۔

سوسو - شا فعیہ کے نز دیک فیصلہ ہونے سے پہلے رجوع جائز ہے، اگر چہ بینہ قائم ہوجانے کے بعد ہو۔ یہی اسل مذہب ہے، ایک قول

ال کے عدم جواز کا ہے اور فیصلہ ہوجانے کے بعد ال پر فریقین کا راضی ہونا شرط نہیں، جیسے کہ بیشرط قاضی کے فیصلہ بین نہیں ہے۔ اور ایک قول بیہ ہے کہ فریقین کی رضامندی شرط ہے، اس لئے کہ ان کی رضا اصل تحکیم بین معتبر ہے، تو فیصلہ کے لازم ہونے بیں بھی معتبر ہوگی اہیکن قول اول بی اظہر ہے (۱)۔

سم ۱۹۰۰ - حنابلہ کے مزد یک فیصلہ شروع کرنے سے پہلے پہلے فریقین میں سے ہر ایک کوتھکیم سے رجوع کرنے کاحق ہے۔

اور فیصلہ شروع کرنے کے بعد اور پورا ہونے سے پہلے رجوع کرنے میں دوقو ل ہیں:

ایک قول مدہے کہ اس کو رجوٹ کاحل ہے، کیونکہ فیصلہ پورا ہونے سے پہلے ایسامی ہے جیسے شروٹ می ندکیا ہو۔

دوسر اقول بہ ہے کہ اس کے لئے رجوع سیجے نہیں ہوگا، کیونکہ اس صورت میں بیلا زم آئے گا کہ فریقین میں سے کوئی تھم کی جانب سے اپنے خلاف کوئی بات دیکھے تو وہ نور ارجوع کر لے گا اور تحکیم کا مقصد عی باطل ہوجائے گا، چنانچے اگر فیصلہ ہوگیا تو وہ نانذ ہوگا (۲)۔

تحکم بنانے کااڑ:

۳۵- تحکیم کے اثر سے مرادال پر مرتب ہونے والے نتائج ہیں۔ اور بیار محکم کے لازم اور اس کے نافذ ہونے کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے، جیسا کہ فیصلہ سے پہلے تحکیم کے ٹوٹنے کے امکان کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے۔

⁽۱) - روهنة الطاكبين الر١٣٢ا، مغني الحماع عمره ٢٣٥، نهاية الحتاج ٨/ ١٣٣١.

⁽۴) الكافى سهر ۲ سام، المغنى والروها، اله المطالب اولى المبنى ۲ م ۲ سائد كشاف القتاع ۲ م ۳۰۰س

⁽۱) البحر الرائق ۲۷/۲، فتح القدير ۵ر ۵۰۰، الفتاوي البنديه ۳۸/۳، تبعرة لونكام ارسس

⁽r) تيمرة لوكام ١٣٣٧ (r)

اول: فيصله كالزوم اوراس كانفاذ:

ا سا-جب سلم اپنا فیصلہ کردے تو وہ فیصلہ دونوں جھکڑنے والے فر این کے لئے لازم ہوجائے گا، اس کا نفا ذخر یقین کی رضار موقو ف خبیس رہے گا، فقہاء نے ای کو اختیا رکیا ہے اور اس صورت میں تھم کا فیصلہ تاضی کے فیصلہ کے اندہوگا۔

تھم کے لئے اپنے فیصلہ سے رجون کرنا جائز نہیں ، اگر اس نے اپنے فیصلہ سے رجون کرلیا اور دوسر سے کے حق میں فیصلہ کر دیا تو اس کا فیصلہ سیجے نہ ہوگا ، اس لئے کہ پہلے فیصلہ سے تحکیم مکمل ہو چکی ہے ، اہم دادوسر افیصلہ باطل ہوگا (ا)۔

کے ۳۰ - البتہ تھم کا جو فیصلہ لازم ہے وہ صرف فریقین کے حق میں ہے ، کیونکہ ہے ، ان کے علاوہ دوسر ہے لوگوں کے حق میں لازم نہیں ہے ، کیونکہ فریقین نے اس بات پر اتفاق کرلیا ہے کہ تھم ان کے مامین فرائ و خصومت میں فیصلہ کرے گا اور جب اتفاق کرلیا تو تھم کو ولا بیت شرعیہ حاصل ہے ، کہذا ہے فیصلہ فریقین کے حق سے متعلق ہوگا اور فریقین میں سے کسی کو اپنے علاوہ دوسر وں پرکوئی ولا بیت حاصل فریقین میں سے کسی کو اپنے علاوہ دوسر وں پرکوئی ولا بیت حاصل فریقین میں کے علاوہ پرنہیں میں اس لئے تھم کے فیصلہ کا کوئی اثر فریقین کے علاوہ پرنہیں برائے گا وہ برنہیں میں اس کے علاوہ پرنہیں

۸ سا- ال اصول کے مطابق اگر فریقین نے کسی کو پیغ کے عیب کے سلسلہ میں تھی ہونا اور تھی نے بیٹے واپس کرنے کا فیصلہ کر دیا تو ہا گئے کو بیہ حق نہ ہوگا کہ وہ اس مبیع کو اپنے ہا گئے کو واپس کر دے الا بیک ہا گئے اول اور ہائع ٹانی اور ٹرید ارسب بی اسے تھی بنانے پر راشنی ہوجا کیں ، تو ایسی صورت میں ہائع ٹانی ہو کا ایک اول کو بھی جمیع واپس کرسکتا ہے۔

ای طرح اگرکسی نے دوسرے آدمی پر ایک ہز اردرہم کا دعوی کیا، اور اہل میں ان کے درمیان بز ائی ہوئی، پھر مدی نے دعوی کیا کہ فلال شخص جو غائب ہے وہ ال شخص کی جانب سے میرے لئے ایک ہز ار درہم کا گفیل بن گیا تھا، اور ان دونوں نے اس سلسلہ میں ایٹ ما بین کسی کوشم بنالیا، حالا تکہ فیل غائب ہے، اور مدی نے مال اور کفالت کا فیصلہ کردیا تو بین قائم کردیا، اور تھم نے ای بنیا دیر مال اور کفالت کا فیصلہ کردیا تو بینے قائم کردیا، اور تھم نے ای بنیا دیر مال اور کفالت کا فیصلہ کردیا تو بینے قائم کردیا، اور کھیل کے خلاف فیصلہ جے نہ ہوگا۔

اگر کفیل موجود ہو اور مکفول (جس کی کفالت کی گئی ہے) غائب ہو، نیز قرض دینے والا اور کفیل دونوں راضی ہوجا کمیں، اور حکم مذکورہ بالا فیصلہ کردے تو فیصلہ جائز ہوگا، کیکن صرف کفیل کے حق میں مانذ ہوگا، مکفول کے حق میں مانذ ندہوگا (۱)۔

ال اصل سے سرف ایک مسئلہ منتنی ہے جس کی سراحت دخنیہ نے کی ہے، وہ بیک اگر دوشر یکوں میں سے ایک اور اس کے قرض خواہ نے کسی کو تھم بنایا اور اس نے ان کے درمیان فیصلہ کردیا اور مال مشترک میں سے بچھ مال شریک کے ذمہ لازم کردیا تو یہ فیصلہ نافذ ہوگا، اور غائب شریک تک جائے گا، اس لئے کہ اس کا فیصلہ شریک غائب کے درجہ میں ہے اور سلح تا جروں کا رائج طریقہ ہے تو دونوں شریکوں میں سے ہر ایک سلح اور اس چیز برراضی ہے جو سلح بی کے درجہ کی ہو (۲)۔

بالفاظ دیگرید کئے کہ تاجمہ وں کے درمیان میر ف ہے کہ اس میں اگر ایک شریک کسی کو حکم بناتا ہے تو کویا تمام شرکاء اسے حکم بنادیتے ہیں، ای لئے فیصلہ ان تمام شرکاء کے حق میں ما فنذ ہوگا۔

⁽۱) البحرالراكق عربه ۴ الفتاوي البنديه ۱۲۷۳ (۲۷ ـ

⁽۲) البحرالرائق ۱۲۹۷، لهمهاج سهر ۱۵س، السراج الوباج رص ۱۸۵، نمهاییة کتاج ۱۳۸۸ الکافی لابن قد امه سهر ۳۳۷، کشاف الفتاع ۲۹ س۰ س

⁽۱) فتح القدير ۵ روو ۴ مه حاشيه ابن عابدين ۵ را ۳۳ مه البحر الرائق ۲۸ – ۲۸

⁽۲) البحرامرائق ۲۸/۷، الدرالخيار ۲۹/۵ س

دوم:فيصلةو ژنا:

9 سا- بعض مرتب فریقین فیصله برراضی ہوکرا سے افذ کر لیتے ہیں اور کبھی کوئی فریق میں مصلحت کے پیش نظر دارالقصنا عیس اس فیصلہ کے خلاف ایل کرتا ہے۔

شا فعیہ اور حنا بلد کے فز دیک اگر قاضی کے یہاں تھم کے فیصلہ کو چیش کیا جائے تو وہ اس فیصلہ کونہیں تو ڑے گا ، البتہ اگر ایسی بنیا دیں ہوں جن کی وجہ سے دوسر سے قاضیوں کے بھی فیصلے ٹوٹ جائے ہیں تو وہ تھم کا فیصلہ بھی تو ڑ دے گا (۱)۔

حفیہ کے فرد دیک تھم کا فیصلہ جب قاضی کے سامنے جائے تو وہ اس میں غور کرے گا، اگر وہ فیصلہ اپنے مذہب کے موافق ہوتو اسے عی اختیا رکر کے اس کونا نذکر دے گا، اس لئے کہ اسے تو ژکر دوبارہ فیصلہ کرنا لا حاصل ہے۔

ال نفاد کا فائدہ بیہ وگاکہ آگر بیفیلکسی ایسے قاضی کے بہاں چیش کیا گیا جس کی رائے اس کے برخلاف ہوتو اسے تو ڑنے کا اختیار ندہ وگا، اس لئے کہ اس کونا فذکر دینا ایسانی ہے جیسے بیفیلہ ابتداء اس نے کیا ہو۔ اور آگر وہ فیصلہ اس قاضی کے غدیب کے خلاف ہوتو وہ اسے باطل کردے گا اور بیلازم کردے گا کہ اس کے مطابق عمل نہ کیا جائے ، آگر چہ وہ امر فقہاء کے درمیان مختلف فیہ ہو ہیں گئین فیصلہ کا باطل کردے ، اگر قاضی جائے ، آگر چہ وہ امر فقہاء کے درمیان مختلف فیہ ہو ہیں گئین فیصلہ کا باطل کرنا لا زم نہیں ، بلکہ جائز ہے ، اگر قاضی جا ہے تو باطل کردے ، اور اگر جائے ہوئے اور اگر

- (۱) روهند الطاكبين ۱۱ ر ۱۳۳۱، مغنی الحتاج مهره ۷۳، المغنی ۱ ار ۹۰ ایمطالب اولی اُتن ۲ را ۷ م، کشاف الفتاع ۲ ر ۳۰ س
- (۲) البحرالرائق ۲۷۷ء حامیة الدر ۱۲۳ ۳۳ عاشیه ابن عابدین عابدین ۱۳۳۱ کا ساتی البحر الرائق ۲۷۷ء حامیة الدر ۱۲۳۳ عام حاشیه ابن کا پیته چلتا ہے اگر تھم نے کسی مجبید فید مسئلہ میں فیصلہ کیا اور اس فیصلہ کو قاضی کے بیماں پیش کیا گیا ور اس قاضی کی رائے تھم کی رائے کے خلاف ہوئی تو اس قاضی کی رائے تھم کے فیصلہ کو مان کا میں تا میں تھم کے فیصلہ کو مشہوخ کر دیتا جائز ہے (بد اکع الصنا کع ۲۲ س)۔

ہم - بیضر وری ہے کہ قاضی کی اجازت حکم کے فیصلہ کے بعد ہو۔

ال شرط کی رو سے فریقین نے اگر کسی کو تھم بنلا، اور ال کے فیصلہ کرنے سے پہلے قاضی نے اس کے فیصلہ کی اجازت دے دی، پھر ال نے اس تاضی کی رائے کے خلاف فیصلہ کر دیا تو یہ فیصلہ جائز ندیموگا، ال لئے کہ قاضی نے اس فیصلہ کی اجازت دی ہے جومعدوم ہے۔

اور کسی چیز کے وجود میں آنے سے پہلے اس کی اجازت دے دینا باطل ہے، تو ایسا ہوگیا جیسے قاضی نے اجازت دی بی ندہو۔

کین سروسی کہتے ہیں کہ یہ جواب اس صورت ہیں تو سیجے ہے جب ناضی کے لئے کسی دوسر کے واپنانا شب بنانے کی اجازت نہ ہوہ اوراگر ناضی کے لئے دوسر کے وائن بنانے کی اجازت ہوتو اس کی اجازت جائز و درست ہوجائے گی اور اس صورت ہیں اس کی اجازت کو یہ سمجھا جائے گا کہ اس ناضی نے اس تھم کو فریقین کے درمیان فیصلہ کے لئے ناشب بنادیا ، البد اس کے بعد ناضی کے لئے اس کے میں اس کی اجازت نہ ہوگی۔

اور اگر فریقین نے کسی کو تھم بنایا اور اس نے ان کے درمیان فیصلہ کر دیا ، پھر فر یقین نے کسی دوسر ہے کو تھم بنایا ، اس نے دوسر افیصلہ کر دیا پھر دونوں فیصلے قاضی کے بیباں پیش کئے گئے تو وہ اس فیصلہ کو بانذ کرے گاجو اس کی رائے کے موافق ہو۔

یہ پوری تنصیل حنفہ کے زویک ہے۔

مالکیہ کے نز دیک قاضی تھم کے فیصلہ کوئیس تو رُسکتا ،خواہ قاضی کی رائے کے موافق ہویا مخالف الا بیک اس کا کیا ہوا فیصلہ صرح اور کھالے ہوائلم ہو۔

مالکیہ کہتے ہیں کہ اس میں اہل علم کا کوئی اختلاف نہیں ہے، ابن ابی کیلی کابھی یہی قول ہے (۱)۔

⁽۱) البحرالرائق ۲۷۷، حاشیه هایدین ۵ر ۳۳، المدونه سر۷۷، الکافی لا بن

تحکیم استحلل ا

تحكم كامعز ول هونا:

ا ہم - درج ذیل اسباب میں ہے کئی بھی سبب کے پائے جانے سے تعلم معز ول ہوجاتا ہے:

الف معزول کرنا: فیصلہ سے پہلے نریقین میں سے ہر ایک

کے لئے تھم کو عزول کرنے کا اختیار ہے، البتہ اگر قاضی نے تھم کے
ساتھ اتفاق کرلیا ہوتو فریقین کو اسے معزول کرنے کاحق نہ رہے گا،
اس لئے کہ اس صورت میں قاضی نے اسے اپنانا مَب بنادیا ہے۔
ب فیصلہ ہونے سے پہلے تحکیم کامتعین وقت ٹمتم ہوجائے۔
ج بے تھم محکیم کا اہل می نہ رہے۔
ج نے تھم محکیم کا اہل می نہ رہے۔
د فیصلہ محکیم کا اہل می نہ رہے۔



= عبدالبر ۲ ر ۹ ۵۹، مواجب الجليل ۲ ر ۱۱۱، الناج ولإ كليل ۲ ر ۱۱۳، تبرة الحكام ارسس

تحلّل

غريف:

ا تُحلِّل حلَّ سے ثلاثی مزید کامصدرہے۔

شرعا بھی بیافظ ای معنی میں استعال ہوتا ہے⁽¹⁾۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات: احرام سے حلال ہونا: اس سے مرادا حرام سے نکلنا ہے۔ جوامور محرم رچرام ہیں ان کے حاال ہونے کی دوشتمیں ہیں:

⁽۱) لسان العرب، لمصباح لمعير ، الصحاح ، لمغرب في ترتيب لمعرب ماده: "محلل"، بدائع الصنائع ٢٨ ١٥ ١، حاهيد الدسوق ٢٨ ١٨ ١، أمغني لابن قدامه ٨٨ ١٨٨-

الف تحلل اصغر، جي تحلل اول بھي ڪهتے ہيں:

1- ثا فعیہ اور حنابلہ کے فز دیک تحکمل اول تین امور میں سے دوکو پورا کر لینے سے ہوتا ہے اور وہ تین امور جمرہ و عقبہ کی رمی بخر، اور حلق یا تقصیر ہیں۔ اس تحکمل سے سلے ہوئے کیڑے بہننا اور دیگر تمام اشیاء طال ہوجاتی ہیں، البتہ عورتیں با جمائ ممنوئ رہتی ہیں۔ اور بعض کے فز دیک خوشبو اور مالکیہ کے فز دیک شکار بھی ممنوئ رہتا ہے (۱)۔ کے فز دیک خوشبو اور مالکیہ کے فز دیک شکار بھی ممنوئ رہتا ہے (۱)۔ حفیہ کے فز دیک تحکمل اصغر رمی جمار، حلق یا تقصیر سے ہوجاتا ہے، اور ان مورکو انجام دینے کے بعد محرم کے لئے تمام چیز یں حاال ہوجاتی ہیں، البتہ عورتیں اس سے منتی ہیں۔

اور حنفیہ کی بعض کتابوں میں خوشبو اور شکار کا جو استثناء ہے وہ ضعیف ہے۔

نیز متمتع اور قارن اگر قربانی پر قادر یموں تو ان پر واجب ہے کہ رمی اور حلق کے درمیان قربانی کریں، کیونکہ حضیہ کے نز دیک ان افعال حج میں ترتیب واجب ہے (۲)۔

ال اختایات کا مدار حضرت عائشہ گل عدیث ہے، وہ نر ماتی ہیں: "کمت اطلب النبی خلیج قبل اُن یحوم، ویوم النحو قبل اُن یحوم، ویوم النحو قبل اُن یطوف بالبیت بطیب فیہ مسک "(") (یس نبی علیج کوفو شبولگاتی تھی آپ علیج کے احرام باند سے ہے بہلے، اور یوم کم میں بیت اللہ کے طواف سے پہلے اور اس فوشبو میں مشک ہوتی میم کم میں بیت اللہ کے طواف سے پہلے اور اس فوشبو میں مشک ہوتی محتی)۔

(۱) الدسوقي ۱۲۵ م، نهاييد الحتاج ۱۲۹۹، روصنه الطالبين ۱۰۳ ۱۰۳، المغنى سر ۸۳ مه مطالب ولي التهي سر ۲۷ س

(٣) حفرت ما کثر کی عدید: "کنت أطیب النبی نظی قبل أن یحوم...." کی روایت سلم (٩/٣ مه طیم لیملی) نے کی ہے۔

بعض احادیث میں ہے کہ جمر ہُ عقبہ کی رمی کے بعد عورتوں اور خوشبو کے علاوہ ہر چیز حاول ہوجاتی ہے جبیبا کہ امام مالک نے مؤطا میں حضرت عمرؓ نے روابیت کی ہے کہ حضرت عمرؓ نے عرفہ میں لوگوں کے سامنے خطبہ دیا ، انہیں جج کے احکام بتا ئے ، اور ان سے بیہ بھی فر مالیا کہ جب تم منی پہنچ جاؤ تو جو شخص رمی جمار کرے گا اس کے لئے عورتوں اور خوشبو کے علاوہ وہ تمام چیز یں حاول ہوجا تمیں گی جو حاجی پر حرام تھیں (۱)۔

اور امام ما لک جوشکار کوبھی حرام تر اردیتے ہیں وہ اللہ تعالی کے اس ارشاد کے عموم سے استدلال کرتے ہیں: ''لا تَقُتُلُوا الصَّیدُ اس ارشاد کے عموم سے استدلال کرتے ہیں: ''لا تَقُتُلُوا الصَّیدُ وَ اَنْتُمُ حُورُمٌ مِنْ)، اور آبیت و اَنْتُمُ حُورُمٌ مِنْ)، اور آبیت کے عموم سے استدلال کی وجہ بیہے کہ حاجی کو ایس وقت تک محرم می سمجھاجا تا ہے جب تک وہ طواف افاضہ نہ کرلے۔

اور جمرة عقبه كى رمى كے بعد كيڑے پينے اور ديگر اشياء كے طال ہونے كى دليل بير عديث شريف ہے: "إذا رميتم الجموة فقد حل كل شيء إلا النساء" (٣) (جب تم نے جمره كى رمى كر في توعورتوں كے علاوہ جرچيز طال ہوگئى)۔

نیز حضرت عائشہ کی سابقہ صدیث بھی اس پر ولالت کرتی ہے ^(۳)۔

⁽۲) - الاختيار ار ۱۵۳، افزيلعي ۳۸،۳ سه، ابن عابدين ۲۸،۳ ۱۸، ۱۹۹، حاهية الطيلاوي كل الدرار ۵۸_

⁽۱) حظرت عمر کول"إذا جنسم مدی فیمن د می المجمع ق....." کی روایت امام مالک نے موطأ (ار ۱۰ ۳ طبع کھلمی) میں کی ہے اوراس کی مندسی ہے۔ (۲) سور کا مکرہ ۹۵۔

⁽۳) حدیث: "إذا رمیم الجموة فقد....." كی روایت احد (۱۱ ۲۳۳ فیع لمیریه) نے حضرت این عباس کے ہاس حدیث كا ایک شاہر بخاری (الفتح سر ۵۸۵ فیع استفیہ) ش حضرت عا كشكی عدیث ہے۔

⁽٣) حاشيه ابن عابدين ٢ م ١٥ ه طبع مصطفی لجلمی مصر، حامية الدسوتی علی المشرح الکبير ٢ م ۵ م طبع عيمی لجلمی مصر، نهاية الحتاج ٣ م ١٩٩٥ طبع آمکنته ولا سلامي، روحة الطالبين ٣ م ١٠٣٠، ١٠٠١ طبع آمکنته ولاسلامي، آمنی لابن قد امه سهر ٣٣٨ طبع المرياض، مطالب ولی انجی ٢ م ٢ ٢ ٢، د کیھئے '' ج

ب یحلل اکبر، جے تحلل دوم بھی کہاجاتا ہے:

سو- بیروہ کلال ہے جس سے بغیر کسی استثناء کے وہ تمام چیز یں عاال ہوجاتی ہیں جو حالت احرام میں حرام تغییں اور حنفیہ اور مالکیہ کے نزدیک وہ وقت جس میں گلل اکبر کے انعال سیحے ہوتے ہیں، وہ بیم تحل میں طاوئ فجر سے شروئ ہوجاتا ہے اور ان کے نزدیک سیکلل طواف میں طاف نجر سے شروئ ہوجاتا ہے اور ان کے نزدیک سیکلل طواف افاضہ سے حاصل ہوجاتا ہے، البتہ باتفاق حفیہ ومالکیہ حلق یا تفصیر شرط ہے۔ اگر طواف افاضہ کرے اور حلق نہ کرائے تو حفیہ اور مالکیہ کے نزدیک حلق کرائے تک وہ حال ال نہ ہوگا۔

مالکیہ مزید کہتے ہیں کہ طواف سے پہلے سعی بھی ضروری ہے،
سعی کرنے سے پہلے وہ طال نہ ہوگا، اس لئے کہ مالکیہ کے فزدیک
سعی رکن ہے اور دخنے کہتے ہیں کہ طال ہونے بیس سعی کوکوئی وطل نہیں
ہے، اس لئے کہ وہ مستقل واجب ہے۔ اور تحکیل اکبر کے وقت کی
انہا عمالکیہ اور حننے میں سے ہر دو کے فزدیک طابل ہونے کے اپنے
طریقہ کے اعتبار سے طواف عی ہے اور وہ فوت نہیں ہوتا ہے (ا)۔

شا فعیہ اور حنابلہ کے فز دیگ تحکیل اکبر کا وقت وی تا ریخ کی نصف شب سے شروع ہوجاتا ہے، اور ان دونوں کے فز دیگ تحکیل اکبر تحکیل کے فدکورہ انعال کو بھمل کرنے سے حاصل ہوتا ہے، اور یہ افعال تین ہیں اس قول کی رو سے کہ حلق انعال حج میں سے ہے، اور ایک فیر مشہور قول یہ ہے کہ حلق انعال حج میں داخل نہیں، اس قول ایک فیر مشہور قول یہ ہے کہ حلق انعال حج میں داخل نہیں، اس قول کے حافظ سے انعال تحکیل دو ہیں: اگر تحکیل اکبر طواف یا حلق یا سعی پر موقوف ہے تو شا فعیہ اور حنابلہ کے فرد دیک تحکیل اکبر کا آخری وقت وہ موقوف ہے وہ طال ہوجائے۔

اور رمی کا وقت ایام تشریق کے آخری دن کے فروب ممس کے

ساتھ موقت ہے، چنانچ جب تحلیل رمی پرموقوف ہواور ایام تشریق نمتی موجائے گا۔ ہوجائے تک بھی رمی نہ کر نے قرمی کا وقت بالکل فوت ہوجائے گا۔ حنابلہ کے بزویک صرف دفت کے فوت ہوجائے می سے وہ حال ہوجائے گا، اگر چہ اس کے بدلہ اس پر فدیدلا زم ہوگا، شافعیہ کا بھی ایک قول بیہے کہ رمی کا وقت نوت ہوجائے گا، اگر چہ اس کے بدلہ اس پر فدید اسے قول بیہے کہ رمی کا وقت فوت ہوجائے گا، گہذا وہ حال نہیں ہوگا جب تک کہ کفارہ اوا نہ ہوجائے گا، گہذا وہ حال نہیں ہوگا جب تک کہ کفارہ اوا نہ کروے گا، گہذا وہ حال نہیں ہوگا جب تک کہ کفارہ اوا نہ کروے گا،

تحلل اکبرنین افعال کوکمل کر لینے سے حاصل ہوتا ہے جو یہ بیں: جمر ہُ عقبہ کی رمی جلق اورطواف افاضہ جس سے پہلے سعی کرلی گئی ہو، طواف افاضہ سے وہ ہوں افاضہ سے وہ تمام جیزیں باجماع حال ہوجاتی ہیں جو حالت احرام میں حرام تحییں (۲)۔

عمرہ کے احرام سے حلال ہونا:

سے جہبور فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہمرہ میں محرم ادائیگی ممرہ کے بعد صرف ایک عی مرتبہ میں حاول ہوجاتا ہے اور اس کے لئے وہ تمام چیز یں مباح ہوجاتی ہیں جوحالت احرام میں حرام تحصیں، نیز نداہب کا اس پر اتفاق ہے کہ بیصلت حلق یا تقصیر سے حاصل ہوتی ہے۔جس کی تفصیل اصطلاح ''عمرہ'' میں ہے (۳)۔

- (۱) المجموع شرح المهذب ۱۷ ۱۵ ۱۵ ۱۵ ۱۵ منهایینه المحتاج سمر ۲۹۹، ۳۰۰، شرح الممهاج مع حاشیه قلیو لی ۱۲ و ۱۲ الطبع مصطفل الحلمی مصر، المغنی لا بن قدامه سهر ۲۳۳۸، ۲۳۳ طبع مکاتبنه الریاض الحدید، مطالب اولی آنهی ۲۲ ۲۷ ۱۳ اوراس کے بعد کے صفحات ۔
 - (۲) مالقدراني۔
- (۳) ردانتارس می اوراس کے بعد کے مفعات ،حاصیۃ العدوی کی شرح الرسالہ ار ۸۳۷، روصیۃ اطالبین سر ۱۹۰۸، مطالب اولی اُتھی ۲۲ ۲۳ س، اُمغنی

⁽۱) شرح فتح القدير ۱۸۳/۳ طبع دار أفكر، حامية الدسوتي على المشرح الكبير ۱۲۲ س، ۷ مطبع عيمي لجلمي مصر، حامية العدوي الرام ۷ مطبع دارالمعرف.

شحلل ۵، تحلي

يمين (قتم) يصطلال ہونا:

۵- فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ سین منعقدہ جو کسی کام کے کرنے یا کسی کام ہے رکنے کو لازم کرتی ہے وہ اس عمل سے نتم ہوجاتی ہے جس ہے آ دمی حانث ہوجا تا ہے، اور اس سے مراد جس بات ریشم کھائی گئی ہے اس کے خلاف کرنا ہے، یعنی اس کام کوکر لیاجائے جس کے نہ کرنے کی تشم کھائی ہو، یا اس کام کوچھوڑ دیا جائے جس کے کرنے کی تشم کھائی ہو، اور جس کام کے کرنے کی قشم کھائی ہو اس میں اتنی تا خیر ہوجائے کہ اس کام کا کرناممکن ندر ہے تو تشم کھانے والا حانث ہوجاتا ہے اور بیمطلقانہ کرنے کی شم میں ہوتا ہے، جیسے کوئی شم کھائے کتم اس روٹی کوضر ور بالصر ورکھاؤ گے اور اسے کوئی دوسر اکھا لے، یا جس ونت اس کام کے کرنے کی شم کھائی تھی وہ ونت می نکل جائے اور بیاس صورت میں ہوتا ہے جب متعین زمانہ میں کوئی کام کرنے کی فتم کھائی ہو، جیسے کوئی کہ: اللہ کی شم میں آج بیکام ضر ورکروں گا، تو اگر وہ دن گز رجائے اور وہ بیکام نہ کرے تو خودی حانث ہوجائے گا۔ اور فقنهاء کااس پر اتفاق ہے کہ ایمان میں او ایکی کفارہ کی حیار صورتیں میں جن کا بیان قرآن کریم کی اس آیت میں ہے: "لا يُؤاخِلُكُمُ اللُّهُ بِاللَّغُوفِي أَيْمَانِكُمُ وَلَكِنَ يُّؤَاخِذُكُمُ بِمَا عَقَدْتُهُمْ الأَيْمَانَ فَكَفَّارُتُهُ اطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِيْنَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيْكُمُ أَوْ كِسُوتُهُمُ أَوْ تَحُرِيْرُ رَقَبَةٍ فَمَنَ لَّمُ يَجِدُ فَصِيَامُ ثَلاَثَةِ أَيَّامِ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَائِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمُ^{، (١)} (الله تم ہے تمہاری مے معنی قسموں ریمو اخذہ بیس کر تاکیکن جن قسموں کو تم مضبوط کر چکے ہوان برتم ہے مواخذہ کرتا ہے، سوال کا کفارہ دیں مسكينوں كواوسط درجے كا كھانا ہے جوتم اينے گھر والوں كوديا كرتے ہو

یا آئیس کپڑادینایا غلام آزاد کرنا بھین جس کو اتنامقد ورنہ ہوتو اس کے لئے تنین دین کے روز ہے ہیں، بیتمہاری قسموں کا کفارہ ہے جبکہ تم حلف اٹھا چکے ہو)۔

جمہور فقہاء میہ کہتے ہیں کہ اگر قسم کھانے والا عائث ہوجائے تو اول الذکر تین چیز ول میں اسے افتیا رہے یعنی روزہ رکھتا اسی وقت جائز ہوگا جب وہ تینوں چیز ول سے عاجز ہو(۱)، اس لئے کہ اللہ تعالی کافر مان ہے: ''فَهُمَنُ لَّمَّ يَجِدُ فَصِيمَامُ ثَلاَثَةِ آيًا مِ''۔

اس کی تفصیل اصطلاح'' اُئیان' میں ہے۔

اور شم میں تحلل ال سے استثناء کرنا ہے جیسے کہدد سے: انتاء اللہ (اگر اللہ نے جاہا)، اور استثناء کا متصل ہونا شرط ہے یا نہیں؟ اس میں علاء کا اختاا ف ہے جس کی تفصیل اصطلاح '' ایمان' اور''طلاق'' میں ہے۔
میں ہے۔

تحتي

ر کھنے:" حلیہ'۔

⁼ لا بن قد امه ۱۳۸۳ س

⁽۱) سورة باكري ۱۸

تحليف، تحليق ١-٢

تحليق

تعریف:

ا تخلین کاایک انوی معنی محمانا اور کی چیز کو صافعہ کی طرح بنانا ہے (ا)۔

نیز تحلین کے معنی: بال کائے کے بھی آتے ہیں کہا جاتا ہے:

حلق راسہ بحلقہ حلقا و تحلاقا یعنی ال نے اپنے بال موثر لئے ، جیسے کہا جاتا ہے: حلقہ و احتلقہ (۲) بمعنی موثر نا، اس سے اللہ تعالی کا ارشا دہے: '' مُحَلِّقِیْنَ رُءُ وُ سَکُمُ ''(۳) (اپنے سروں کو موثر اتے ہوئے) اور صدیث شریف میں ہے: "اللہ م اغفر موثر اتے ہوئے) اور صدیث شریف میں ہے: "اللہ م اغفر للمحلقین'' (اک اللہ محلقین کی مغفرت فریا)، اور تحلین للمحلقین'' (اے اللہ محلقین کی مغفرت فریا)، اور تحلین معنی ہے اور کلین معنی ہے اور کا اور سریافظ کو سے بال کا کچھ محصہ کا شاہے اور اصطااح فقہاء میں مذکورہ دونوں معانی میں استعال ہوتا ہے، اور بیافظ اصطااح فقہاء میں مذکورہ دونوں معانی میں استعال ہوتا ہے۔ اور بیافظ اصطااح فقہاء میں مذکورہ دونوں معانی میں استعال ہوتا ہے۔

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات: تحکیق جمعنی تشہد میں حلقہ بنانا:

٢ تحليق كے معنى: نماز ميں تشهد كے اندر حلقه بنانے كے بيں ،خواد

تحليف

د کیھئے:''حلف''۔



⁽۱) لسان العرب مادية" علق"-

⁽٢) ترتيب القاسوس الحيط

⁽۳) سورة فقيم ساس

⁽٣) عديك: "اللهم اغفو للمحلقين....." كى روايت بخاري (الفتح ١١/٣ ٥ طبع التلقير) ورسلم (٥/١ مه طبع التلقير) ورسلم (٥/١ مه طبع التلقير)

تعدہ اولی میں تشہد ہویا تعدہ اخیرہ میں، اس کاطریقہ بیہ ہے کہ نمازی
اپنے دائیں ہاتھ کی انگلیوں میں سے خصر و بنصر (چھکلی اور اس کے
ہراہر کی انگل) کو بند کرے، اور انگوشے کو درمیانی انگل کے ساتھ
ملا کرحلقہ بنا لے اور شہادت کی انگل سے اشارہ کرے (اور بیوہ انگل
ہے جو انگوشے کے بعد ہوتی ہے) اور بیاشا رہ لفظ اللہ کہتے وقت
شہادت کی انگل اٹھا کر کیاجائے، حنابلہ کا فدہب، شا فعیہ کا دومر اقول،
مریقہ برحلقہ بنایا سنت ہے ، فقہاء نے اس کومفتی بہ کہا ہے اور فدکورہ
طریقہ برحلقہ بنایا سنت ہے (۱)۔

مالکیہ کے زویک متحب ہیہ ہے کہ نمازی تشہدیں اپنے واکمیں ہاتھ کی انگلیوں میں سے خضر، بضر اور وسطی کا حاقہ بناکر اپنی واکمیں ران پررکھ لے اور ان کے کناروں کو انگو شھے کے بنچے والے کوشت پر اس طرح رکھ لے اور ان کے کناروں کو انگل بن جائے، اور شہادت کی انگل اور انگو شھے کو پھیلا لے، اور انگو شھے کے پہلوکو تھ کی انگل پر اس طرح پھیلا نے کہ بیس کے عدد کی شمل بن جائے، چنانچ اس صورت میں پوری بیک انتیاب کے عدد کی ہوجائے گی، اکثر مالکیہ کا پہل تول ہے، اور بیٹھی مستحب ہے کہ پورے تشہد میں شہادت کی انگل کو درمیانی اور بیٹھی مستحب ہے کہ پورے تشہد میں شہادت کی انگل کو درمیانی طریقہ پر دائمیں ہائمیں حرکمت دیتا رہے (۲)۔ مالکیہ اس صورت کو طریقہ پر دائمیں ہائمیں حرکمت دیتا رہے (۲)۔ مالکیہ اس صورت کو شکلیت کانام نہیں دیتے ہیں۔

ا کی تفصیل اصطلاح '' تشہد' میں ہے۔

تحليق بمعنى بال صاف كرنا:

سو- اس پر فقرہا ء کا اتفاق ہے کہ حلق ان ممنوع اشیاء میں سے ہے جو

مرم کے بدن سے تعلق ہیں، اللہ تعالی کا ارتا وہے: "وَلاَ تَحْلِقُوْا رُءُ وَسَكُمْ حَتَّى يَبُلُغُ الْهَدِيُ مَحِلَهُ فَمَنُ كَانَ مِنْكُمْ مَوِيْطًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَّأْسِهِ فَهِلْهَةٌ مِّنْ صِيَامٍ أَوْصَدَقَةٍ أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَّأْسِهِ فَهِلْهَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْصَدَقَةٍ أَوْ بَهِ أَذًى مِنْ رَّأَسِهِ فَهِلْهَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْصَدَقَةٍ أَوْ بَهُ سُكِ" (اورجب تك قربانی این مقام پرنہ ہے ہی جائے اپ نسرنہ وہ اولیکن آرتم ہیں ہے کوئی بیارہویا اس کے سریس کچھ تکلیف ہوتو وہ روزوں سے یا خیرات سے یا ذرج سے ندیدوے وے)۔ پانچ محرم کے لئے اپ یا گئی وی برجرم کے سرکے بال کا فنا ممنوع ہے، اگر محرم ہوتا ہے، اور چند بالوں کا جڑ سے یا اوپ سے کا فنا بھی ممنوع ہے، اگر محرم نے اپ ایک اپنا بھی ممنوع ہے، اگر محرم نے اپ اپ اور چند بالوں کا جڑ سے یا اوپ سے کا فنا بھی ممنوع ہے، اگر محرم نے اپ اس کا درمیان اپ بال کا نے تو اس پر فہ کورہ فض کی وجہ سے ندیدلازم ہوگا)۔

رسول الله علی خطان کرنے والوں کے لئے تین مرتبہ اور تصر کرنے والوں کے لئے تین مرتبہ اور تصر کرنے والوں کے لئے تین مرتبہ اور تصر کرنے والوں کے لئے ایک مرتبہ دعا فر مائی، بیاں بات کی دلیل ہے کہ حج وعمر ہیں حلق تقصیر سے انصل ہے۔ اور بیاس صورت میں ہے جب صرف عمر ہ کا احرام با ندھا جائے جمتع کا ارادہ نہ ہو، اور اگر ہے جب صرف عمر ہ کا احرام با ندھا جائے جمتع کا ارادہ نہ ہو، اور اگر

⁽۱) كشاف القتاع الر ۲۹۲ طبع مكتبة التصر الحديد، نهاية الختاج الر ۵۰۲،۵۰۱ طبع المكتبة الإسلاميه، شرح المنهاج الر ۱۶۳ طبع مصطفیٰ الحلق، حاشيه ابن عابدين الر ۵۰۵،۵۰۸ طبع مصطفیٰ الحلیق.

⁽۱) سورۇيقرە/۱۹۹ـ

⁽۲) حطرت ابن مرکی عدیث کی تخریخ شیخفر هنمبرر املی گذر چکی۔

حمتع کرے، اور عمرہ سے حلال ہونے کا ارادہ کرے تو اس کے لئے تقصیر انفغل ہے تاکہ حج کے احرام سے حلال ہونے کے لئے پورے طور پر حلق ہو سکے (۱)۔

ال پر علاء کا اجماع ہے کہ مردوں کے لئے تقصیر بھی کانی ہے اور
عورتوں کے لئے حاال ہونے کا طریقہ تقصیر بی جائی ہے۔
منقول ہے کہ آپ علی النہ اللہ علی النہ ساء حلق
النہ المعلی النہ التقصیر "(۲) (عورتوں کے لئے حلق نہیں ہے، ان
کے لئے تقصیر بی ہے)۔ اور جج میں سرکاحلق کرانا بالا تفاق جج کے
ائمال میں سے ہے۔ اگر سر پر بال ہوں تو حلق یا تقصیر فی نفسہ واجب
ہوں تو حفیہ اور مالکیہ کے زدیک اس کے لئے اپنے سر پر استرہ بھیرنا
واجب ہے اور شافعیہ وحنا بلد کے زدیک استرہ بھیرنا مستحب ہے (۳)۔
مالتی سے فارش ہوکر تین مرتبہ اللہ اکبر کے اور میدوعاء پراھے:

حلق سے فارع ہوکر مین مرتبہ اللہ البر کے اور بید عاء پڑھے:
"اللهم هله ناصیتی بیدک، فاجعل لی بکل شعوة نورا
یوم القیامة، واغفولی ذنبی یا واسع المعفوة" (اے
اللہ میری چیٹا فی تیرے قبضہ میں ہے، قیامت کے روز جھے ہر بال
کے بدلہ نور عطافر ما، اور اے بہت زیادہ مغفرت کرنے والے میری
مغفرت فرما)۔

اس کی تفصیل کا مقام اصطلاح'' احرام'' اور''حلق''ہے۔

- (۱) كثاف القتاع ٢ ر ٨٨ م، الدرو تي ٢ / ٣ م.
- (۲) حدیث: "لیس علی الدساء، حلق و إلها علیهن النقصیو" کی روایت ابوداؤد (۲/۲ ۵۰ طبع عزت عبید دهای) نے کی ہے اور ابن جمر نے لیا۔
 افلی (۲/۲ ۱۱/۳ ، طبع شرکة اطباعة الفدیہ) ش اے صن کہا ہے۔
- (٣) تغيير القرطبي ٢٨١، ٢٨١، ٢٨٢ طبع دوم بد أنع الصنائع ١٢ ١٣ طبع ول مصر، حاصية الدموتي على المشرح الكبير ٢٨٥ م ١١،٣ ٢ طبع مصطفیٰ الحلبی، نهاية الحتاج سهر ٢٩٩ اوراس كے بعد كے صفحات _
 - (۲) نماییه اکتاع ۳۸ ماه می مره ۱۳۸

تحليل

لعريف:

شریعت بین حلیل اللہ تعالی کا بیٹم ہے کہ فلا ن فعل حاال ہے۔
ابن ویب کہتے ہیں کہ ما لک نے کہا کہ لوگوں کے فتو ہے بیٹیں ہیں کہ وہ کہتے گئیں کہ بیرال ہے اور بیٹرام ہے۔ بلکہ یوں کہیں کہ فلاں، فلاں کام ہے بچو، بیس بیکام نہیں کرسکتا فرطبی کہتے ہیں کہ اس کامصلب بیہوا کہ کسی چیز کوحاال یا حرام کرنا صرف اللہ تعالی کی ذات کے ساتھ فاص ہے، اللہ تعالی نے اگر کسی چیز کے حاال یا حرام ہونے کو بیان نفر مایا ہوتو کسی ہے لئے بیجائز نہیں کہ وہ اس چیز کے حاال وحرام ہونے کو بیان نفر مایا ہوتو کسی کے لئے بیجائز نہیں کہ وہ اس چیز کے حاال وحرام ہونے کی بیات کے اور اس کی صراحت کرے (۳)۔

پھر مزید فرمایا کہ بسا اوقات مجتبد کے باس کسی چیز کے حرام ہونے کی دلیل قوی ہوتی ہے، ایسی صورت میں وہ اس چیز کوحرام کہ پرسکتا

⁽۱) سورۇيقۇرەر ۲۷۵ـ

⁽٢) المصباح لهمير مادة "حلل" .

⁽m) تغییر القرطبی ۱۱۲۱۱ دارا لکتاب۔

شحلیل ۲-۴

ہے، جیسے کہا جاتا ہے کہ چھ چیز وں کے علاوہ میں بھی سود حرام ہے۔ بسا او قات تحلیل بول کرظلم کومعاف کرنامر ادلیا جاتا ہے، اور کبھی تحلیل بول کر اس عورت کو جس کو تین طلاقیں دی جا چکی ہوں طلاق دینے والے کے لئے علال کرنامر ادہونا ہے۔

متعلقه الفاظ:

اباحت:

اصطلاح میں المحت حاال کرنے کو کہتے ہیں، اور اہل اصول کی اصطلاح میں اللہ تعالی کے اس خطاب کو کہتے ہیں جو مکلفین کے افعال سے اس طرح متعلق ہوکہ آئیں اس کے کرنے نہ کرنے میں افعال سے اس طرح متعلق ہوکہ آئیں اس کے کرنے نہ کرنے میں افتیارہو(۱)۔ اور اس پر اس کے بدلہ میں کوئی چیز واجب نہ ہو۔

اور فقہاء کے نزویک اجازت کے عدود میں رہ کر کرنے والے کی مشیت کے مطابق کام کرنے کی اجازت وینا اباحت ہے (۲)۔

مجمعی لفظ الم حت کا استعال ظر (ممانعت) کے مقابلہ میں ہوتا ہے، اس صورت میں لفظ الم حت فرض، واجب اور مندوب سب کو شامل ہوگا (^{m)}۔ الم حت میں افتیار ہوتا ہے، رہی صلت تو بیشر عا المحت ہے عام ہے، دیکھئے: '' الم حت''۔

حرام كوحلال كرنا:

ال سے مراد حرام كو حال بنادينا ہے، جيسے مودكو حال كرا، يہ اللہ تعالى پر افتراء وكذب ہے، اللہ تعالى كے فرمان مقدل ميں اللہ يہ وقد ہے: "وَلاَ تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنتُكُمُ الْكَاذِبَ هَا مَا حَرامٌ لَتَفْتَرُوا عَلَى اللهِ الْكَاذِبَ، إِنَّ الَّاذِيْنَ حَلَالًا الْكَاذِبَ، إِنَّ الَّاذِيْنَ

یَفْتُوُوْنَ عَلَی اللَّهِ الْکُذِبَ لاَ یُفْلِحُوْنَ "(اوراپی زبانوں کے حُوث ہنائے ہوئی کے اور فلاں جے اور فلاں جیز طال ہے اور فلاں حرام جس کا حاصل ہیں ہوگا کہ اللہ پر جموثی تنہمت لگا دو گے ہے شک جولوگ اللہ پر جموثی تنہمت لگا دو گے ہے شک جولوگ اللہ پر جموثی تنہمت الگا دو گے ہے شک جولوگ اللہ پر جموثی تنہمتیں لگا ہے ہیں وہ فلاح نہیں پا ہے)۔

قرضوں وغیرہ ہے معاف کرنا:

الهم - قرض میں تعلیل سے مراد مقروض کوترض سے نکالنا ہے ، اور تعلیل مظالم سے چینکارا طلب کرنے کو کہتے ہیں۔ حضرت ابوہر برہ سے مروی ہے ، وہ فر ماتے ہیں کہ اللہ کے رسول علیہ ہے ارشا و فر مایا: ''من کائٹ که مظلمة لأخیه من عوضه أو شيء فر مایا: ''من کائٹ که مظلمة لأخیه من عوضه أو شيء فلیتحلله منه الیوم قبل أن لا یکون دینار ولا در هم'' (۲) فلیتحلله منه الیوم قبل أن لا یکون دینار ولا در هم'' (۲) وہری جیز برظم کیا ہوتو اس کو جہ ہے کہ آئی می اس سے معاف کرا لے قبل اس کے کہ نہ کوئی دینار جواور نہ می کوئی درہم)۔

اور تعلیل مبھی کسی چیز کے عوض میں ہوتی ہے اور مبھی بغیر عوض کے ۔

عوض میں ہونے کی صورت بیہ ہے کہ الکوئی عورت اپنے شوہر سے خلع کرنا جا ہے تو وہ اسے پھھ ال وے تاکہ وہ اس کے ساتھ خلع منظور کر لیے۔ اس کی اصل اللہ تعالی کافر مان ہے: ' وُلاَ یَجِلُ لَکُمُ مَنظور کر لیے۔ اس کی اصل اللہ تعالی کافر مان ہے: ' وُلاَ یَجِلُ لَکُمُ اَنَّ تَا تُحَدُّونَ اللّٰهِ اللّٰهِ یَقِیمُا حَدُودَ اللّٰهِ فَلاَ جُناحَ حَدُودَ اللّٰهِ فَلاَ جُناحَ عَلَيْهِ مَا افْتَدَتْ بِهِ '' (اور تمہارے لئے جائز نہیں کہ جو عَلَیْهِ مَا افْتَدَتْ بِهِ '' (اور تمہارے لئے جائز نہیں کہ جو عَلَیْهِ مَا افْتَدَتْ بِهِ '' (اور تمہارے لئے جائز نہیں کہ جو عَلَیْهِ مَا افْتَدَتْ بِهِ '' (اور تمہارے لئے جائز نہیں کہ جو

⁽۱) مسلم الثبوت اورا**س** کی تثر ح۱۱۳/۱۱

 ⁽٣) تعريفات الجرجاني ـ

⁽m) تعبيين الحقائق ١٠/١١_

⁽۱) سور کچل ر ۱۱۱، القرطبی ۱۰ ار ۱۱۱_

 ⁽۲) عدیث: "من کالت له مظلمة الأخیه من عوضه....." کی روایت بخاری (انتخ ۱/۵ اطبع التالیم.) نے کی ہے۔

⁽٣) سورۇپقرە، ١٣٩ــ

مال تم آئیں دے چکے ہواں میں سے پچھ واپی لو، بال بجر ال صورت کے کہ جب اند بیشہ ہوکہ اللہ کے ضابطوں کودونوں قائم ندر کھ سکیل گے، سواگرتم کو بیاند بیشہ ہوکہ تم اللہ کے ضابطوں کو قائم ندر کھ سکو گے تو دونوں پر ایل مال کے باب میں کوئی گنا ہ نہ ہوگا جو عورت معاوضہ میں دے دے)۔

اور بهااو قات تحلیل بغیرعوض کے ہوتی ہے، جس کی اصل اللہ تعالیٰ کا ارتبادہے: "وَ آتُوا النّه سَاءَ صَهُ لَقَاتِهِ قِنَّ نِحُلَةً فَإِنَّ طِبُنَ لَكُمْ عَنْ مُسْءً مُنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيْنًا مَّوِيْنًا " (اورتم طِبُنَ لَكُمْ عَنْ مُسْءً وَمُنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيْنًا مَّوِيْنًا مَّوِيْنًا " (اورتم يويوں کو ان کے مهر خوش ولی سے دے دیا کرو، لیکن اگر وہ خوش ولی میے تمہارے لئے اس میں کا کوئی جز جھوڑ ویں تو تم اسے مزید اراور خوشگوار تجھ کر کھاؤ)۔

یہ آیت ال پردلالت کرتی ہے کئورت کے لئے مہر ہبد کردینا جائز ہے دراں حالیکہ وہ شوہر پر قرض ہے ۔

زندہ اور مردہ مخص کے غیر مالی حقوق اور واجبات سے معاف کرنا:

2- جس نے اپنے مسلمان بھائی کے حق میں کوئی خطا کی، اس پر واجب ہے کہ اللہ تعالی سے اپنے گناہ کی تو بہر ہے، علاء کہتے ہیں کہ تو بہر نے والا اس خص کے حق سے تو بہ کے لئے پچھٹر انظ ہیں، مثلاً تو بہر نے والا اس خص کے حق سے بری ہوجائے جس پر اس نے ظلم کیا ہے، اگر وہ مال ہوتو اسے واپس کروے، اور اگر عدفذ ف وغیرہ ہوتو اسے اس پر قدرت دے وے کروے، اور اگر عدفذ ف وغیرہ ہوتو اسے اس پر قدرت دے وے ہوتو اسے اس پر قدرت دے وی کہوتا ہے۔ اور اگر غیبت کی ہوتو اسے اس سے معاف کرائے، اور اگر غیبت کی ہوتو اسے اس سے معاف کرائے ۔

- (۱) سورة نيا يرس
- (۲) الجماص ۲/۰۷۰
- (m) رياض الصالحين/ص ال

نكاح محلل:

۲ - فقہاء کہتے ہیں کہ اگر کوئی شخص اپنی ہوی کو ایک یا دورجعی طااق دے
 دینواں کے لئے جائز ہے کہ عدت کے اندرا سے لونا لے۔

اوراگر اپنی بیوی کوتین طااقیس دے دیتو تین طااقوں کا اصل تکم یہ ہے کہ بیوی سے فائدہ اٹھانے کی ملابت بھی ختم ہوجاتی ہے، اور کل کی طلبت بھی ختم ہوجاتی ہے، اور کل کی طلبت بھی باقی نہیں رہتی ہتی کہ اس عورت سے نکاح کرنا اس کے لئے جائز نہیں رہتی قبل اس کے کہ دوہر سے شوہر کے ساتھ اس عورت کی شا دی ہو، اس لئے کہ اللہ تعالی کافر مان ہے: "فَإِنْ طَلَقَهُا فَلاَ تَعْجِلُ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّی تَنْکِیحَ ذَوْجًا غَیْرَهُ" (اگر کھڑ اگر کوئی اپنی عورت کو طااق دے ہے کہ دوری و سے فاح کرے کہ اس کے بعد جائز ندرہے گی بیاں دے بعد جائز ندرہے گی بیاں کے بعد کہ وہ کسی اور شوہر سے نکاح کرے)، جو اس فر مان باری کے بعد ہے: "اَلْظَلاَقُ مُوّ قَانَ" (طااق قودوی بارک ہے)۔

نیز حرمت ختم ہونے اور پہلے شوہر کے لئے حاال ہونے کے لئے بھی سیجھ شر انظامیں:

الف-نكاح:

2- عادل ہونے کی پہلی شرط نکاح ہے، اس لئے کہ اللہ تعالی کا

⁽۱) سورۇپقرەر ۱۳۹۹

فر مان ہے: ''حَتَّی تَنْکِحَ ذَوْجًا غَیْرہ کَ '' (جب تک نکاح ندکر ہے اس فاوند ہے اس کے سوا)، اللہ تعالی نے اس آ بیت کر بہہ بیں تنین طلاقیں وینے والے شوہر کے حق بیں عورت کی صلت کی فی فر مادی، اور فی کی حدد ومر سے شوہر کے میا تھ ٹنا دی مقرر فر مائی اور جس تھم کی کوئی حدمقر رہواں حد کے وجود ہے پہلے وہ تھم ختم نیس ہوتا، لہذا (دومر ہے شخص ہے) شادی کرنے ہے پہلے وہ تھم ختم نیس ہوتا، لہذا (دومر ہے شخص ہے) شادی کرنے ہے پہلے وہ میں ہوگی، لہذا اس سے قبل وہ سابق شوہر کے لئے لازما حال نہیں ہوگی۔

ائ سے بیمسلدگاتا ہے کہ اگر کسی نے مطاقہ ٹلانڈ سے زنا کرلیایا شبہ کے طور پر وطی کر لی تو وہ اپنے پہلے شوہر کے لئے علال نہ ہوگی، اس لئے کہ ان صور توں میں نکاح نہیں پایا گیا (۱)۔

ب-صحت نكاح:

۸- پہلے شوہر کے حق میں عورت کے حاال ہونے کے لئے نکاح ٹائی میں شرط ہے کہ وہ نکاح سیح ہو، لہذ ااگر نکاح فاسد ہو، خواہ دخول و صحبت بھی ہوجائے تب بھی وہ پہلے شوہر کے لئے حاال نہ ہوگ ، اس لئے کہ نکاح فاسد حقیقت میں نکاح بی نہیں ہے ، اور نکاح جب مطلق بولا جائے تو اس سے حقیقی نکاح مراد ہوتا ہے۔

اگر نکاح ٹانی کا فاسد ہونا مختلف فیہ ہو، اور اس میں دخول وصحبت ہوجائے تو جولوگ اس نکاح کے نساد کے قائل ہیں ان کے فز دیک مذکورہ رقیل کی وجہ سے وہ شوہر اول کے لئے عال نہ ہوگی (۲)۔

ج فرج میں وطی:

9- جمہور کے مذہب کے مطابق صحت نکاح کے ساتھ بیٹھی شرط ہے کہ دومر سے شوہر نے اس کے ساتھ فر بیل میں وطی کی ہو، لہذا اگر اس نے در بیل اس نے فرج کی کر لی تو وہ پہلے موہر کے لئے حاول نہ ہوگی، اس لئے کہ نبی علیج نے حلت کو ان دونوں کے عسیلة (مزه) چھنے پر معلق کیا ہے، چنانچ آپ علیج نے ماہ دونوں کے عسیلة (مزه) چھنے پر معلق کیا ہے، چنانچ آپ علیج کے رفاعہ قرطی کی بیوی سے فر مایا: "آ تعریدین آن تعرج عی اللی رفاعہ " لا حتی تعلوقی عسیلته ویدوق عسیلتک" (ا) کیا تو رفاعہ " لا حتی تعلوقی عسیلته ویدوق عسیلتک" (اکیا تو رفاعہ کے اور وہ تیر امزه کی ہے لئے کہ تو

اور بید چیز فرج میں وطی کے بغیر عاصل نہیں ہوگئی۔ کیکن حضرت سعید بن المسیب کہتے ہیں کہ وہ (پہلے شوہر کے لئے) صرف عقد نکاح بی سے عاال ہوجاتی ہے، اس لئے کہ وہ تر آن کریم کی آ بیت میں وارد لفظ نکاح کو جمائے کے بجائے عقد برمحمول کرتے ہیں، اور عام علماء نے اس آ بیت کو جمائے پرمحمول کیا ہے، نیز وطی کا اونی درجہ سیے کہ حفظ فرج کے اندر داخل ہوجائے، کیونکہ وطی کے احکام ای سے متعلق ہیں، اور اس میں بھی آ لہ کا منتشر ہونا شرط ہے، کیونکہ تھم مز دیجھنے سے تعلق ہیں، اور اس میں بھی آ لہ کا منتشر ہونا شرط ہے، کیونکہ تھم مز دیجھنے سے تعلق ہیں، اور اس میں بھی آ لہ کا منتشر ہونا شرط ہے، کیونکہ تھم مز دیجھنے سے تعلق ہیں، اور اس میں بھی آ لہ کا منتشر ہونا شرط ہے، کیونکہ تھم مز دیجھنے سے تعلق ہیں، اور اس میں بھی آ اند کا منتشر ہونا شرط ہے، کیونکہ تھم

حضرت حسن بصری کے علاوہ کسی فقیہ نے امزال کی شرط نہیں لگائی ہے، حضرت حسن بصری کہتے ہیں کہ وہ بغیر وطی اور امزال کے پہلے شوہر کے لئے علال ندہوگی۔

اگر وطی غیر مباح وقت جیسے جیش یا نفاس میں ہوجائے تو اس وطی سے عورت پہلے شوہر کے لئے حاال ہوگی یانہیں؟ اس سلسلہ میں فقہاء کے درمیان اختلاف ہے۔

⁽۱) البدائع سهر ۱۸۵،۵ ۱۸، فتح القدير سهر ۱۸۵، ابن عابدين ۱۳ سام ۵۳۵ طبع بولاق اوراس كے بعد كے صفحات، بدلية الجمع، ۱۲ مه،۵۵، القوائين الكفهيه رص ۱۳۳، الدار العربيد للكتاب، تغيير القرطبي سهر ۹ ۱۲، ۱۵۵، مغني الحتاج سهر ۱۸۲، ۱۸۳، ۱۸۳، ۱۹۳۰، المغنی ۲۸۲ مهر، ۲۸ ۱۲، ۱۸ ۱۲، ۱۸ ۲۵

⁽۲) مايتدمرائع۔

⁽۱) عديث: "أنويلين أن نوجعي إلى دفاعة؟ لا، حتى....." كي روايت بخاري (الفتح ١٥ هم المع الشاتير) ورسلم (١١/٥ ١ المع الحاس) نے كي ب

امام ابوطنیفہ، امام ثافعی، توری اور اوز ائی کہتے ہیں کہ وطی سے عورت طال ہوجاتی ہے، خواہ وطی غیر مباح وقت بی میں ہوجیتے بیش میں ہوجیتے بیش یا نظاس، اور خواہ وطی کرنے والا عاقل وبالغ ہو، یاتر بیب البلو ن بچہ ہویا مجنون ہو، کیونکہ بچہ اور مجنون کی وطی ہے بھی احکام نکاح جیسے مہر اور حرمت ای طرح متعلق ہوتے ہیں جیسے عاقل وبالغ کی وطی سے ہیں۔ اور حرمت ای طرح متعلق ہوتے ہیں جیسے عاقل وبالغ کی وطی سے ہو۔ تے ہیں۔

ائی طرح اتنی کم عمر بچی ہوجس سے جمائ کیا جا سکتا ہو، اگر ال کا شوہر اسے تین طلاقیں دے دے اور دوہر سے شوہر نے اس سے دخول کرلیا تو وہ پہلے شوہر کے لئے طلال ہوجائے گی، اس لئے کہ اس کی وطی سے بھی احکام نکاح جیسے مہر وحرمت ای طرح متعلق ہوتے ہیں۔ ہیں، جیسے بالغدی وطی سے متعلق ہوتے ہیں۔

مالکید اور حنابلہ کا مذہب ہیہ کہ وطی کا حلال (مباح) ہوناشرط ہے، کیونکہ غیر مباح وطی اللہ تعالی کے حق کی وجہ سے حرام ہے، اس لئے اس سے حلت حاصل نہ ہوگی، جیسے مرمد عورت سے وطی کرنا۔

اس بنیا دیر اگر دومراشوہر اس سے روزہ ، تجے ،یا حیض یا اعتکاف کی حالت میں وطی کر لیے تو وہ عورت اپنے پہلے شوہر کے لئے حلال نہ ہوگی۔

مالکیہ کے فزد یک بیجی شرط ہے کہ جمائ کرنے والا بالغ ہوہ اور حنابلہ کے فزد یک بیشرط ہے کہ وہ بارہ سال کا ہو، اس لئے کہ جو بالغ نہ ہو یا بارہ سال ہے کم کا ہواں کے لئے جمائ کرناممکن نہیں۔

اورری ذمی عورت تو اس کے تعلق جمہور فقہاء یہ کہتے ہیں کہ اگر اس کا ذمی شوہر اس سے وطی کرلے تو اس کی وجہ سے وہ پہلے شوہر کے لئے طال ہوجائے گی، کیونکہ نصر انی شوہر ہے۔

اور امام ما لک، ربیعہ اور ابن القاسم کے نزدیک اس کی وجہ ہے وہ صال نہ ہوگی (1)۔

علاله کی شرط کے ساتھ نکاح:

• 1- اگر کوئی شخص مطاقۂ ٹلانڈ سے نکاح کرے اور عقد نکاح میں صراحۃ بیٹر طالگائے کہ وہ اس کو اس کے پہلے شوہر کے لئے حاال کرے گاتو یہ جمہور کے نز دیک حرام ہے، اور حنفیہ کے نز دیک مکروہ تخریک مکروہ میں ہے، اور حنفیہ کے نز دیک مکروہ تخریک کی ہے، اس لئے کہ حضرت ابن مسعودؓ کی حدیث ہے: "لعن رسول اللہ خریج ہے المصحلل و المصحلل له" (") (رسول اللہ علیہ ہے حال اللہ علیہ کے حال اللہ کیاجائے دونوں میں سے لئے حال کہ کیاجائے دونوں میں سے ایک میں کیا ہے کہ کیاجائے دونوں میں سے لئے حال کیاجائے دونوں میں سے کے لئے حال کیاجائے دونوں میں سے کیا گھٹا کے کا دونوں میں سے کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کہ کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کو کا کو کیا گھٹا کیا گھٹا کے کا دونوں کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کو کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کو کے کا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کو کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کو کیا گھٹا کے کہ کا کہ کو کیا گھٹا کے کہ کو کیا گھٹا کے کہ کو کیا گھٹا کیا گھٹا کیا گھٹا کے کہ کو کیا گھٹا کی

ووری صدیث ہے: "آلا آخبر کم بالتیس المستعار؟ قالوا:

بلی یا رسول الله قال: هو المحلل لعن الله المحلل له"

(کیا میں تنہیں مائے ہوئے سائڈ کے بارے میں نہ بتاؤں؟ صحابہ نے

کبان کیوں نیس اے اللہ کے رسول! آپ علی نہ نے مالا کہ وہ طالہ

کرنے والا ہے، اللہ تعالی نے اس کے لئے طالہ کرنے والے پر لعنت
فرمائی ہے)۔

اور نہی مہی عند (جس چیز ہےروکا جائے) کے نساد پر دلالت کرتی ہے۔

⁽۱) مايتمراڻي<u>۔</u>

 ⁽۲) حدیث: "لعن رسول الله نَائِظُ المحلل....." كی روایت ترندي (۳)
 (۳) حدیث: "لعن رسول الله نَائِظُ المحلل....." كی روایت ترندي (۳) (۳) مع المراه ۱۵ مع شركة المراه ۱۵ مع شركة المواجد الله به المراه ۱۵ مع شركة المواجد الله به المراه ۱۵ مع شركة المواجد الله به المراه الله الله به المراه الله به الله به المراه الله به المراه الله به المراه الله به المراه الله به الله به المراه الله به المراه الله به المراه الله به الله به المراه الله به الله به الله به المراه الله به ا

 ⁽۳) حدیث: "ألا أخبو كم بالیس المستعار؟ هو المحلّل....." كی
روایت این ماجه(ام ۱۹۳۳ طیم الحلی) اورحا كم (۱۹۸۹ اطیع دائرة المعارف
العشانیه) نے كی ہے، اورحا كم نے الے صحیح قر اردیا ہے اور دو ميك نے ان كی
موافقت كی ہے۔

جمہور (مالکیہ، شافعیہ، حنابلہ اور حنفی میں سے امام ابو یوسف)
نے سابقہ دونوں صدیثوں کے پیش نظر اس نکاح کے فاسد ہونے ک صراحت فر مائی ہے، اور اس لئے بھی کہ جو نکاح طاللہ کی شرط کے ساتھ ہووہ نکاح مؤقت کے معنی میں ہے، اور تو تیت کی شرط نکاح کو فاسد کر دیتی ہے، اور جب تک نکاح فاسد ہواں کے ذریعہ مطاقہ ثلاثہ فاسد کر دیتی ہے، اور جب تک نکاح فاسد ہواں کے ذریعہ مطاقہ ثلاثہ اپنے سابق شوہر کے لئے طال نہیں ہوگی، اس کی تا سیر حضرت عمر سے اس قول سے ہوتی ہے: "اللہ کی شم میر سے پاس جس کس طاللہ کرانے والے کولا یا جائے تو میں ان دونوں کو کرمے کروں گا'۔

امام ابو صنیفہ اور امام زفر کا فدیب ہیے کہ نکاح سیجے ہے۔ اور اگر دوسر اشوہر طاباق دے دے اور ال عورت کی عدت گزر جائے تو وہ پہلے شوہر کے لئے حابل ہوجائے گی۔ اگر چہ بیفعل پہلے شوہر اور دوسر سے شوہر دونوں کے لئے مکروہ ہے، اس لئے کہ نکاح کا عموم جو از کا نقاصا کرتا ہے، خواہ اس میں حابالہ کی شرط ہویا نہ ہو، تو اس شرط کے ساتھ نکاح سیجے ہوگا اوروہ اللہ تعالی کے فر مان: ''حتی شرط کے ساتھ نکاح سیجے ہوگا اوروہ اللہ تعالی کے فر مان: ''حتی قد کہ خواہ ہی منافی ہوگا، لہذا اس نکاح کے وجود سے حرمت ختم ہوجائے گی، لیکن اس شرط کے ساتھ نکاح مکر وہ تھیر ہ ہے، حرمت ختم ہوجائے گی، لیکن اس شرط کے ساتھ نکاح مکر وہ تھیر ہ ہے، اس لئے کہ بیشرط مقاصد نکاح لیمن سکون، تو الد و تناسل اور بی کہ منافی ہے، کیونکہ بیہ مقاصد نکاح کے بقاء اور دوام پر موقوف ہوئے ہیں۔

امام محمد کہتے ہیں کہ دوہر انکاح تعیجے ہے، کیکن ال سے وہ پہلے شوہر کے لئے حال نہ ہوگی، اس لئے کہ نکاح دائمی عقد کانام ہے، اور حال کی شرط اس چیز کوجلدی طلب کرنا ہے جسے اللہ تعالی نے حال لہ کی غرض کے لئے مؤ فر کیا ہے، لہذ اشرط باطل ہوجائے گی اور نکاح سیجے خوض کے لئے مؤ فر کیا ہے، لہذ اشرط باطل ہوجائے گی اور نکاح سیجے

ہوگا،کیکن اس ہے مقصد حاصل نہ ہوگا (۱)۔

حلالہ کے ارادہ سے ثنا دی کرنا:

11 - حفیہ اور شافعیہ کا مذہب ہیہ ہے کہ عقد میں شرط لگائے بغیر،
صلالہ کے ارادہ سے شا دی کرنا سیجے ہے، البتہ شافعیہ کے بزویک ہیہ
جواز کر اہت کے ساتھ ہے، اور دوسر اشو ہر اگر اس سے وطی کرے
تو وہ پہلے شوہر کے لئے حلال ہوجائے گی، اس لئے کہ معاملات
میں مجر دنیت کا اعتبار نہیں ہے، لہذ اعقد سیجے ہوگا، اس لئے کہ صحت
عقد کی تمام شرطیں موجود ہیں اور وہ پہلے شوہر کے لئے حلال
ہوجائے گی، جیسے کہ نا کے ومنکوحہ دونوں توقیت یا دیگر شرائط فاسدہ
کی صرف نیت کرلیں۔

دوسرے نکاح سے پہلے شوہر کی طاباقوں کا ختم ہونا: ۱۲ - اس پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ اگر پہلے شوہر نے تین طابا قیس دی ہوں تو دوسر اشوہر انہیں ختم کر دیتا ہے، کیکن اگر طابا قیس تین سے کم

ر() سابقهٔ نگام اخل

 ⁽۲) عديث: "لعن رسول الله نائط المحلل....." كَاتْخ تَجْ تُقْرهُ بُمِر، ١٠ من كَارْخ تَجْ تُقْرهُ بُمِر، ١٠ من كُذر يَكِي، نيز وكيك: مرا بقد تها مراجع...

تحليه ۱-۳

ہوں تو انہیں دوسراشوہ منتم کردیتا ہے یا نہیں؟ اس میں فقہاء کا اختلاف ہے۔ اس کی صورت رہے کہ مثلاً تمیسری طلاق سے قبل دوسر سے شوہر سے نکاح کرے، پھر اس سے مطلقہ ہوجائے، اور اس کے بعد اپنے پہلے شوہر کے پاس لوٹ کرآئے (تو پہلا شوہر کتنی طلاق کاما لک ہوگا؟)۔

اس میں جمہور(امام مالک، امام ثافعی، امام احداور امام محد بن الحسن) کا ندیب ہیں جہور(امام مالک، امام ثانعی، امام احداور امام محد بن کہاں کہاں کا ندیب ہیں ہیں تین کے ساتھ مخصوص ہے، اس لئے کہ طلاق کوشم نہیں کرے گا۔

امام ابوطنیفدکا فدیب بیدے کہ دوسر اشوہر تین طابات ہے کم کوبھی ختم کردیتا ہے، کیونکہ جب وہ تین کوختم کردیتا ہے تو تین ہے کم کوئو بدرجۂ اولی ختم کردے گا،حضرت ابن عمر،حضرت ابن عباس،عطاء اور نخعی بھی ای کے قائل ہیں (۱)۔

تحليبه

تعريف:

۱ - افت میں تحلیہ عورت کو زیور پہنا نے یا اس کے پہنے کے لئے رہے لئے اور لینے کو کہتے ہیں۔

کباجاتا ہے: تحلت الموافہ: یعنی اس نے زیور پہنا یا زیور پہنا یا زیور پہنا یا زیور پہنا یا دیور پہنا یا دیور ساتھ یعنی میں نے اسے زیور پہنایا یا اس کے پہنے کے لئے زیور حاصل کیا (۱)۔ تحلیہ شرعا بھی ای معنی میں استعال ہوتا ہے۔

متعلقه الفاظ:

رتبين:

۲ - تربین زینت سے مشتق ہے ، اور لفظ زینت ان تمام چیز وں کے لئے بولا جاتا ہے جن سے زینت حاصل کی جائے (۲)۔
لئے بولا جاتا ہے جن سے زینت حاصل کی جائے کہ وہ زیور کے علاوہ اشیاء کو بھی شامل ہے جیسے سرمہ لگانا ، بالوں میں کنگھی کرنا اور خضاب لگانا۔

شرعی حکم: ۳- تحلیه (آراتگی) کا حکم حالات کے امتیار سے بدلتار ہتاہے۔



- (١) المصباح لمعير مادة" طلائب
- (٣) لسان العرب، الصحاح للمرعقلي، مِنْ رالصحاح مادة " زين" _

م بھی تحلیہ واجب ہوجاتا ہے جیسے ستر چھیانا (۱)اور شوہر کے مطالبہ پر بیوی کا اس کے لئے زینت اختیار کرنا (۲)۔

مبھی آ رائٹگی مستحب ہوتی ہے جی<u>ت م</u>ر د کا جمعہ وعیدین ،لو کوں کے مجمعوں اور وفود سے ملا قات کے لئے آ راستہ ہونا ^(m) اور مر داور عورت کازردیاسرخ خضاب لگانا،جیسا که حنفیه کامذ بب ہے (۳)۔ ممجھی بیآ رہنگی مکروہ ہوجاتی ہے جیسے دغیہ کے نز دیک مردوں کے کنے مصفر یا زعفر ان سے رفگا ہوا کیڑا پہننا(۵ کیامرد کا ہاتھوں یا پیروں پر خضاب لگانا ، اس لئے کہ اس میں عور توں کی مشابہت ہے (۱)۔

ممجھی بیآر التکی حرام ہوتی ہے جیسے مردوں کے لئے عور توں کے ما نند، اورعورتوں کے لئے مردوں کی طرح زیب وزینت اختیار کرنا، اور جیسے مردوں کے لئے سوما پہننا(2)۔

آرائقگی میں اسراف:

مهم مباح ما مستحب آراتگی میں اگر اسراف ہونو وہ ممنوع ہوجاتی

- حاشيه ابن عابدين ٢٨٣٨، الاختيارشرح الخقار اره ٧، المهدب في فقه لإ مام الثنافعي الراب، أمغني لا بن قد المدار ٢٥ ٥، ٥ ٥٥ طبع الرياض المعديد، لشرح الكبيرار ٢١١٧ .
- (۲) حاشیه این جایدین ۳۷۵۲،۳۸۸۸،۵۲۸۳، روضه الطالبین عرسه سراكم زب في فقه لإ مام الثنا فعي ١٨ علا، ١٨٠ ـ
- (٣) حاشيه ابن عابدين الر٥٩٥،١٥٥، فتح القدير ١/٠٥، روصة الطاكبين ۲،۴۵/۳ د. حاهمية الجمل على تثرح أتميح ۲/۲ ۴، ۸۹ ، الشرح الكبيرمع حاهية الدرموتي الرام ٨٠٠٨ه، جوامير لو كليل الر٩٩، ١٠٠١، الا قتاع في فقه لإ مام احمد بن حنيل ار عها، ٢٠٠، كشاف القتاع عن ستن الاقتاع ٢٧٢ مه، ٥١ أطبع الصر الحديد، الجامع وأحمًا م القرآن للقرطبي عرده، عدا، أمغني لابن قد امد ۱۲ و ۳۷ طبع الرياض الحديثار
 - (۴) حاشيه ابن هابدين ۱/۵ ۳۸۲ ۴۸۳ س
 - (۵) سالقهرافع۔
 - (۱) این ها برین ۱/۵ سال ۱/۵

ہے، اور بھی حرام کے درجہ تک پھنچ جاتی ہے۔

اسراف: میاندروی کی حد سے تجاوز کرنے کو کہتے ہیں، جو کبھی حلال سے حرام تک تجاوز کرنے سے ہوتا ہے، اور مجھی خرچ کرنے میں صدی تجاوز کے ذریعہ ہوتا ہے۔

ال سے آدی اللہ تعالی کی وعید کامستحق ہوجاتا ہے، اللہ تعالی کا ارِثَا و بِ: '' إِنَّ الْمُهَلِّرِيْنَ كَانُوْا إِخُوَانَ الشَّيَاطِيْنِ ''() (مِ ثَنَك فضولیات میں اڑادینے والے شیطانوں کے بھائی ہیں)، چنانیے اسراف (زیا دتی و تجاوز) اور اقتار (کمی و بخل) دونوں مذموم ہیں، اور میاندروی اوسط ورجه بي (٣٨ الله تعالى كا فرمان بي: "وَالَّذِيْنَ إِذَا أَتْفَقُوا لَهُ يُسُوفُوا وَلَمْ يَقُتُووُا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا "(امِروه الوَّك ك جب خرچ کرنے لگتے ہیں تو نہ فضول خرجی کرتے ہیں اور نہ تنگی کرتے ہیں، اور اس کے درمیان ان کافری اعتدل میں رہتاہے)۔

سوگ والی مورت کی زیب وزینت:

۵- سوگ والی عورت اس کو کہتے ہیں جو اپنے شوہر کے انتقال کے بعد عدت وفات میں زینت و آ رائتگی اور خوشبو جھوڑ دے، اور اس عورت کا ان چیز وں کو چھوڑ دینا عداد (سوگ) کہلاتا ہے (مم)۔

اصطلاح فقہاء میں اس عورت کا سوگ یہ ہے کہ وہ مخصوص احوال میں مخصوص مدت تک اینے شوہر کی حبد انّی کے ثم میں زینت اور ان تمام چیز وں کو چھوڑ دے جوزینت کے معنی میں ہیں،خواہ بیجد الی

- (۱) سورهٔ امراء/ ۲۵_
- (٢) احكام القرآن للجصاص ١٦٣٣ طبع المطبعة البهيه _
 - (m) مور كار تان م ١٤٧ـ
- (2) حاشيه ابن عابدين ١٤٤٥ / ٢٤١٠ / ٢٤١٠ روهية الطاكبين ٢ / ٢٣ أكتب 💎 (٣) لسان العرب، المصباح لمعير وفتار الصحاح بادهة "حددٌ "

ول سلاي، نهايية الحتاج الي شرح لمهاج ٢٢ ١٣ م. كثاف القتاع عن متن الاقتاع الر ۲۸۲۸ ۸۸ طبع اتصر الحديث _

موت کے سبب ہو، اور اس مسلمیں اتفاق ہے، یا طلاق بائن کے سبب ہو، اور اس مسلمیں اتفاق ہے، یا طلاق بائن کے سبب ہو، اور مید نظید کا مُدبب ہے المُداحناف کے آپس میں اختلاف کے ساتھ (۱)۔
کے ساتھ (۱)۔

۲- اس پر فقہا وکا اتفاق ہے کہ سوگ والی عورت کے لئے کسی طرح مجھی سونے کا استعال حرام ہے ، لہذا جب اے اپنے شوہر کے انتقال کا پیتہ چلے تو اس پر لازم ہے کہ سونا اتار دے ، خواہ سونا کنگن ہوں یا بازو بند ہوں یا انگوشی ، یمی تھم جو اہر کے زیورات کا ہے ، اور سونے چاندی کے علاوہ ہاتھی کے دانت وغیرہ کی وہ چیزیں جو آرائنگی کے لئے استعال کی جاتی ہیں وہ بھی ای تھم میں داخل ہیں (۲)۔

بعض فقہاء نے چاندی کے زیورات کو جائز کہا ہے ،کین بی ول مردود ہے ، اس کئے کہ سوگ والی عورت کو زیور پہنے ہے منع کرنے میں حضور علی کا قول مبارک عام ہے ، آپ علی ہے نے فر ملا: "و لاالحلی" (اور نہ زیور پہنے) ، نیز اس لئے کہ چاندی ہے مجھی زینت حاصل ہوتی ہے ، اس لئے اس عورت کے لئے چاندی اور اس کا زیور زیب تن کرنا سونے عی کی طرح حرام ہے ۔ امام غز الی نے صرف چاندی کی انگوشی کومباح تر اردیا ہے ، اس لئے کہ اس کی حلت

- (۱) حاشیه این علدین ۱۷۲۳، ۱۳۰ مواجب الجلیل شرح مخضر خلیل للحطاب سهر ۱۵۳، نبایته الحتاج الی شرح الهمهاج للرقی ۷۷، ۱۳،۱۳۰ طبع الحلی که سیاه، نبایته المحتاج الدین قدامه ۱۲۷، ۱۲۱ طبع المناد ۱۳۳۸ه حاشیه معدی کلی کل شرح نفخ القدیر سهر ۱۲، نفخ القدیر سهر ۱۲۱، الشرح الکبیرمع حاهیته الدسوتی ۱۲، ۲۵ سازم می شرح المری ب ۱۲ ۱۳۳۸، قلیو فی وجمیره سهر ۱۳۳۰
- (۲) المجموع شرح المريرب ب الروم، وسيقلبوني وعميره نهر ۵۳، فتح القدير المراع المراع المريرب بالراع المشرح الكبير مع حافية الدسوتي ۱۲ و ۷۷، المشرح الكبير مع حافية الدسوتي ۱۲ و ۷۷، المغنى لا بن قد امد و ۱۲۷ طبع المنان المحر وفي فقه المنا بلد ۲۲ ر ۱۰۵ و ۱۰۸.
- (٣) عديث: "لولا الحلي" كي روايت ابوداؤد (٢٥٧/٢ طبع عزت عبيد دماس) نے ان الفاظ كے راتھ كي ہے "ولا فلبس المعصفو من الفياب ولا المحمشقة ولا الحلي" اورابن مإن (م ٣٢٣ موارد الحل آن طبع استان) نے الے مجمع ارد الحل آن طبع استان) نے الے مجمع ارد الحل آن طبع استان) نے الے مجمع ارد الحل ا

عورتوں کے ساتھ مخصوص نہیں ہے، اور ال پر ال مقصد سے زیب و زینت افتیار کرنا بھی حرام ہے کہ صراحة یا اشارة کسی بھی فرر میں ہے لوگ اسے پیغام نکاح وے کیس (۱)، اس لئے کہ حضور اکرم علیہ کا ارشا دہے جس کی روایت نسائی اور ابوداؤ دنے کی ہے: "و لا تلبس المعصفر من النیاب و لا المحلی" (وقورت مصفر سے رنگے ہوئے کیڑے اورزیورنہ پہنے)۔

احرام میں زیب وزینت:

⁽۱) حاشیه ابن عابدین ۱۷۷۲، کشرح انگبیر مع حامیه الدسوتی ۱۲ ۸۷۸، ۱۹۷۹، نمیاییه الحتاج الی شرح کهمها ج۷ر ۱۳،۱۳۱، کمفنی لابن قدامه ۱۲۹۸ طبع امناب

ابن قد امه کتے ہیں کہ یا زیب اور اس جیسے دیگرزیورات مثلاً كنكن وباز وبند كے سلسله ميں خرقی كے كلام كا ظاہر يد ہے كه ان كا پہننا جائز نہیں۔امام احمد کہتے ہیں کہ احرام والی عورت اور وہ عورت جس کے شوہر کا انتقال ہوگیا ہو، خوشبو اور زینت جھوڑ دیں، ان کے علاوہ کی انہیں اجازت ہے، عطاء سے مروی ہے کہ وہ احرام والی عورت کے لئے ریشم اورزیورکو مکروہ تر اردیتے تھے، اور اے توری اور او تورنے بھی مکر وہ کہا ہے۔ اور قبادہ سے روایت ہے کہ احرام کی عالت میں عورت کے لئے انگوشی اور بالی پینے میں کوئی مضا نقہ ہیں ہے، البنة كنكن، بإز وبند اور يا زبيب كا پېښنا مكروه ہے۔ امام احمد بن حنبل کا ظاہر مذہب سے کہ اس کی رخصت ہے۔ اور یمی حضرت این عمر ،حضرت عائشہ رضی اللہ تعالی عنہما اور اصحاب رائے کاقول ہے، امام احمد نے حنبل کی روابیت میں کہا کہ احرام والی عورت زیور اور زرد کیڑے پہن سکتی ہے۔اور ما فع کی روایت سے کہا کہ حضرت ابن عمر کے گھر کی عورتیں اور ان کی بیٹیاں حالت احرام میں زیور اور عصفر ہے ریکے ہوئے (زرد) کیڑے پہنی تھیں اور حضرت عبداللہ ال رکوئی تکیرنبیس کرتے تھے، نیز امام احمد نے مناسک میں حضرت عائشہ ﷺ سے روایت بیان کی ہے، وہ فرماتی ہیں کے عورت احرام کی حالت کے علاوہ میں جو خام یا پڑتەرلیٹم کے کپڑے اور زیورات پہنتی ہے وہ حالت احرام میں بھی پہن سکتی ہے۔اورۃم نے حضرت ابن عمر ک بیصدیث ذکر کی ہے کہ انہوں نے نبی علی کا و کرفر ماتے ہوئے عًا: ''ولتلبس بعد ذلك ما أحبت من ألوان الثياب من معصفر أو حز أو حلى" (اس كے بعد عورت كو جائے ك جس رنگ کے کیڑے بہندآ تمیں بہنے زر درنگ کے ہوں یاریشی یا زیورہو)، ابن المنذر كتے ہيں كەبغيرىسى دليل كےعورت كواں ہے روكنا جائز نہیں، اور امام احمد اور خرقی نے جو منع خر مایا ہے اس ممانعت کو کر اہت

مِمحول کیاجائے گا، اس لئے کہ اس میں زینت ہے۔

حنفیہ ، ثنا فعیہ اور حنا بلہ کے فرد کیک چاندی کی انگوشی پہننا مرد وعورت دونوں کے لئے جائز ہے، مالکیہ کے فرد دیک مرد کے لئے جائز نہیں ہے اور پہننے پر فد بیلازم ہوگا، البتہ عورت کے لئے جائز ہے (ا)۔

۸- حالت احرام میں بدن پرخوشبولگانا بھی آ رائی میں داخل ہے، اورخوشبو اگر چہ احرام کی حالت میں ممنوع ہے، لیکن احرام کے لئے تیار ہوتے وقت خوشبولگانا جمہور کے فزویک مسئون ہے، مالکیہ کے فزویک خوشبولگا کر احرام بائد هنا مکروہ اور بغیر خوشبو کے مندوب ہے۔

احرام باندھنے سے قبل احرام کے کپڑوں میں خوشبولگانا جمہور کے مزد یک ممنوع ہے اور ثا فعیہ نے اپنے قول معتدمیں اس کو جائز قر اردیا ہے۔

اور احرام باند سنے کے بعد خوشبو یا ایس کسی دوسری چیز سے
آ رائٹگی ممنوع ہے (۲) اور حالت احرام میں عورت کے زیور پہننے
میں کوئی مضا لکتہ نہیں بشرطیکہ اس میں کوئی فتنہ نہ ہو، دیکھئے:
"احرام"۔

⁽۱) المسلك المتضط ۸۳، الشرح الكبير ۷ / ۵۵، الجموع (۲ ۱۰، نهايية الحتاج ۷ / ۹ سمه،مطالب اولی الهی ۲ ر ۵۳ س، المغنی سهر ۳ سه طبع الرياض۔

⁽۲) المهدب فی فقه لو مام الثنافتی ار ۲۱۹،۳۱۱، المغنی لابن قدامه سهر ۳۱۰ طبع الریاض الحدید، تنویر الابصار ۲۰۱۲، دو الحتاری الدرالخار ۲۲،۱۹۲۰، ۱۹۲۰ الشرح الکبیر ۲/۹۵،۱۹،۹۲، منار السیل فی شرح الدلیل ار ۲۷۳ طبع اکتب لاسلای، شرح اللباب ۸۰،۱۸۰

شرعی تکلم:

۲- اپنے مواقع کے لحاظ ہے تخص کا حکم بدلتار بہتاہے، چنانچ شہادت میں گخص کفاریہ ہے، چنانچ شہادت میں گخص کفاریہ ہے، اور قبل خطا وقبل شبہ عمد کی دبیت میں عاقلہ پر واجب میں ہے۔

اول-مخلشهادت:

سا الکید بی افعیہ اور حنابلہ کا اس پر اتفاق ہے کہ صدود کے علاوہ مثلاً نکاح اور اتر ارکی تمام قسموں بیس تحس شہادت فرض کفا بہہ، اور اس فرضیت کی وجہدیہ کے شہادت کی ضرورت پیش آتی ہے، نیز اس لئے کہ نکاح کا انعقا دائی شہادت پر موقوف ہے، اللہ تعالی کافر مان ہے: ''ولائیا کہ المشقیداء یافا ماڈ عُوا'' (۱) (اور کواہ جب بلاے جا نیس تو انکار نہ کریں)، آبیت بیس ان لوکوں کوشہادت دینے والے جا نیس تو انکار نہ کریں)، آبیت بیس ان لوکوں کوشہادت دینے والے مجازاً مستقبل کے اعتبار ہے کہا گیا ہے، اگر آئی تعداد بیس لوگ کواہ بن گئے جو شہادت بیس شرط ہے تو باقی لوکوں سے ذمہ داری ساقط ہوجائے گی، ورنہ سب گندگار ہوں گے۔ بیاس صورت بیس ہے جب کہ لوگ ہوں جن میں ہوجائے گی، ورنہ سب گندگار ہوں گے۔ بیاس صورت بیس ہے جب کہ لوگ ہوں جا ہوں جا جب کہ لوگ ہوں جا ہوں جا ہوں جا ہوں اور اگر صرف است بی لوگ ہوں جو ہوں جا ہوں جا ہوں اور اگر صرف است بی لوگ ہوں جا ہوں جا شہادت کے لئے شرط ہیں تو تحق شہادت آئیس پر ضروری ہوں (۲)۔

گواه بننے ہے گریز کرنا:

سم - کسی مکانف آ دی کونکاح یا قرض وغیر دمیں کواہ بننے کے لئے کہا جائے تو اس پر کواہ بنا لازم ہے۔ نیز اگر اس کے پاس شہا دت ہواور اسے شہا دت دینے کے لئے کہا جائے تو اس پر شہا دت دینالا زم ہے، پھر اگر دوآ دمی بھی کواہ بننے یا کوائی دینے کا فریضہ انجام دے دیں تو

تخل

تعريف:

الحت مين حمل مصدر ب تحمل الشي كاجس كم معنى كوئى چيز الشاف كاجس كم معنى كوئى چيز الشاف كاجس كم معنى كوئى چيز الشاف كاج بين بيلفظ معنى مين بولا جاتا ہے، رجل حمل السمر دكوكبا جاتا ہے جولوكوں كابو جوالشائ (1)۔

روایت میں ہے: ''لا تحل المسألة الا لفلاث منها: رجل تحمل حمالة عن قوم'' (سوال کرا سرف نین طرح کے آ دمیوں کے لئے جانز ہے، ان میں سے ایک وہ ہے جولوکوں کا بوجھ اشائے)۔

اورجس سلسلہ میں آ دمی سے شہادت طلب کی جاتی ہے اسے تخمی نام رکھنے میں اس طرف ایثارہ ہے کہ شہادت امانت کا اعلی درجہ ہے جس کے اٹھانے میں تکلیف ومشقت کی ضرورت چیش آتی ہے (۲)۔

اصطلاح شریعت میں تخمی کسی ایسی چیز کو اپنے افتیار سے اپنے ذمہ لازم کر لیما ہے جو ابتد اء کسی اور پر واجب ہوئی ہو، یا وہ شریعت کی طرف سے اس پر لازم کر دیا گیا ہو (۳)۔

⁽۱) سورۇپۇرەر ۱۸۳ــ

⁽٣) المغنى ٩/٩ مارتحقة التلاع ٨٠ / ٨٠ الرقا في ١٩٠ / ١٩٠

⁽۱) لسان العرب مادة "حمل" .

⁽۲) تختاکتاع۸۰/۸۳

⁽m) الانصاف، ۱۲ ۳۸ انفرف کے راتھ ۔

سب کا گناہ ختم ہوجائے گا اور اگر کوئی بھی اس ذمہ داری کو انجام نہ دے نو سب گنه گار ہوں گے، کیکن اس فریضہ کو انجام نہ دینے کی صورت میں گناہ ای کوہوگا جے اس فریضہ کی انجام دی میں کوئی ضرر نہ ہو، اور اس کی شہادت سے کوئی فائد دہھی ہو، اور اگر کو او بنے یا کو ای دینے سے اسے کوئی ضرر پہنچا ہو، یا وہ ان لوکوں میں سے ہوجن کی شہادت قبول نہیں کی جاتی ہویا تز کیہ وغیرہ میں و قار ہے گر اہواطرز عمل اختیا رکرنے کی ضرورت پیش آتی ہوتو بیلازم نہیں ہے، اس لئے ك الله تعالى كالربان ب: "وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلاَ شَهِيلًا" (1) (اورنه نقصان پہنچایا جائے لکھنے والے کواورنہ کو ادکو)، اور نبی علیہ نے فرمایا:" لا صور و لاصوار "^(۲) (نضرراشانا ہے اور نہ ضرر پہنچانا ہے)، نیز اس کئے کہ دوسروں کو فائدہ پہنچا کرخو دکوضرر پہنچانا کسی پر لا زمنہیں ، اور اگر وہ مخص ان لو کوں میں سے ہوجن کی شہادت قبول نبیس کی جاتی نو اس سر کواه منها یا کوای دینا واجب عی نبیس، اس لئے کہ اس سے شہادت کا مقصدی حاصل نہ ہوگا، اور اگر کوئی شخص کواہ بنتے یا کوائی وینے کافریضہ انجام نہ دے اور اس کے قائم مقام کوئی دومر ۱آ دمی ال جائے تو وہ گنه گار ہوگایا نہیں؟ اس میں حنابلہ کی دو روايتي ہيں:

ایک بیکہ: وہ گندگار ہوگا، کیونکہ جب اے اس امر کے لئے بلایا

(۱) سورهٔ پقره ۱۸۳ـ

گیا تو وہ اس کے لئے متعین ہوگیا ، نیز اس لئے کا گریز کرنے کی مما نعت ہے، اللہ تعالی کافر مان ہے: "وَلاَ يَأْبُ الْشُهَا لَهُ إِذَا هَا دُعُوا" (اور کو ادجب بلائے جائمی تو انکار نہ کریں)۔

دوسری رائے بیہ ہے کہ: ال پر کوئی گناہ نہ ہوگا، ال لئے کہ دوسرا آ دمی ال کے قائم مقام ہے تو بیدامر اس کے لئے متعین ندر ہا جیسا کہ اگر اسے بلایانہ جاتا ⁽¹⁾۔

گواه بنخ رراجرت لیما:

۵- اگر کواہ بنا نرض کفاریہ ہواور ال میں مشقت ہوتو مالکیہ اور شافعیہ دونوں کے فدیب میں ایک قول کی روسے جائز ہے، اور اگر ال میں مشقت نہ ہوتو اس پر اجرت لیما جائز نہیں، اور اگر کواہ بنیا اس پر متعین ہوگیا کہ اس کے علاوہ کوئی دوہر افتض موجود نہ ہوتو دونوں فدیب کے اصح قول میں اجرت لیما اس وقت جائز ہوگا جب کواہ بننے میں مشقت ہو۔ قول میں اجرت لیما اس وقت جائز ہوگا جب کواہ بننے میں مشقت ہو۔ اور کواہ بننے پر اجرت لیما قول ہیں، اگر کواہ بنیا کسی کے لئے متعین ہوتو اے اس پر اجرت لیما فول ہیں، اگر کواہ بنیا کسی کے لئے متعین ہوتو اے اس پر اجرت لیما جائز نہیں، کہی مطلق فدیب ہے، اور جس کے لئے کواہ بنیا متعین نہ ہو جائز نہیں، کی مطابق اجرت ہیں جائز نہیں ، اور دور واقوں میں سے اسح کے مطابق اجرت لیما جائز نہیں، اور دوہر کی دور واقوں میں سے اسح کے مطابق اجرت لیما جائز ہے۔

اور ایک قول بہ ہے کہ ضرورت ہوتو اجمہت لیما جائز ہے، اور ایک قول بہ ہے کہ ضرورت ہوتو اجمہت لیما جائز ہے، اور ایک قول بہ ہے کہ مطلقاً جائز ہے، حفیہ کہتے ہیں کہ اگر کوئی دوسر اند ہوتو کو او بنا اور اسی طرح کو ای دینا کو اور واجب ہوگا، اس لئے کہ بہ فرض میں ہے، اور کو او کے لئے کوئی اجمہت نہ ہوگا (۲)۔

⁽۱) المغنی ۱۳۷۸ (۱۳

⁽۲) - ابن عابدين مهر ۷۰-۳، الاختيار ۴ر۷ ما، الفتاوي البنديه مهر ۵۳ م، الدسوقي مهر ۹۹، تخذ الحتاج ۸را ۸م، الروشه الر۵۷، الانصاف ۱۲۲، عل

گوابی بر گوابی دینا:

۲ – اس پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ اموال، اوروہ امور جن سے مال مقصود ہواور نکاح ، عقود کا فتح کرنا ، طلاق ، رضاعت ، ولادت ، عورتوں کے عیوب ، عدود کے علاوہ اللہ تعالی کے حقوق جیسے زکاق ، مساجد کا وقف اور عمومی او قاف میں کو ای پر کو اہنیا جائز ہے (۱)۔

تصاص اور حدقذف میں فقہاء کا اختلاف ہے، مالکیہ اور شافعیہ کہتے ہیں کہ تصاص اور حدقذف میں کو اہنما جائز ہے، ال لئے کہ بیآ دمی کا حق ہے، اور منازعت پر منی ہے، اگر کوئی اس کا اتر ار کرنے کے بعد رجو شکر لے تو بھی بیش ساتھ نہیں ہوتا، اور اس کو چھپانا پہند بیرہ اور اچھانہیں ہے، البند ایرش اموال کے مشابہ ہوا۔

حفیہ اور حنابلہ کے بیباں قصاص اور حدقذ ف میں دوسرے کی کو ای پر کو او بنیا جائز نہیں ہے، اس لئے کہ وہ دونوں جسمانی سز ائیں ہیں جوشبہات سے ختم ہوجاتی ہیں، اور وہ ساقط کرنے پر منی ہوتی ہیں، البد اید عدود کے مشابہ ہوتے ہیں (۲)۔

کوائ برگواہ بننے کے لئے پچھشر انظ ہیں جن کے لئے اصطالح" شہادت" دیکھی جائے۔

دوم- جنایت کرنے والے کی طرف سے نیا قلہ کا قل خطاو شبہ عمد کی دیت دینا۔

اس پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ قبل خطا کی دیت عاقلہ پر واجب
 ہے، پھر اس میں اختلاف ہے کہ دیت اولاً کس پر واجب ہے۔ جمہور

کا مُدبب اور شا فعیہ کا اسم ومعتد قول میہ ہے کو آل خطا کی دبیت ابتداء جنابیت کرنے والے پر لازم ہے، پھرائی کی طرف سے عاقلہ اسے ہر داشت کرتے ہیں اور شافعیہ کا دوسر آول میہ ہے کہ دبیت ابتداءً عی عاقلہ پر واجب ہوتی ہے (۱)۔

اس واقعہ میں اس کافٹل شبہ عمد تھا، تو فٹل خطا میں اس کا ثبوت بدرجۂ اولی ہے۔

اور دیت کے ہر داشت کرنے میں عاقلہ کی جہت وتر تیب کے لئے اصطلاح' ما قلہ" کی طرف رجو تاکیا جائے۔

⁽۱) المغنی ۱۳۰۹، روهیهٔ الطالبین ۱۱ره ۲۸، تخفهٔ اکتاع ۸۸ مر ۸۸، حاشیه این مایدین سر ۹۳ س

⁽۲) گفتی ۱۹۰۹، ۱۹۰۹، روهنته الطالبین الر۱۸۹، حاشیه این حامدین سهر ۱۹۳۳، سودس، الزرقانی پر ۱۹۸۰

⁽۱) نهایته اکتاع ۱۹۸۸ طبع اکلابته الاسلامی، اتفلیو بی سر ۱۵۵، امنی ۱۷ - ۷۷، طامیته الدسوتی سر ۲۸۲، حاشیه این هار ۱۳۱۰، ۳۱۱

⁽۲) مالقمرائی۔

⁽۳) نهایت اکتاع۲۹/۷ (۳)

⁽٣) حديث: "قضاء الدي نلائط باللدية على العاقلة" كي روايت بخاري (الفتح ١٢/ ٢٥٢ طبع الشانب) اورسلم (١٣/ ١٣١٠ طبع لجلمي) نے كي ہے۔

تخل ۸-۹ تخمید ۱-۲

سوم:مقتدى كى طرف يصامام كالخل:

۸ - امام کے پیچے مقتدی پرتر اُت واجب شیں، اس کی طرف سے امام کی آر اُت کانی ہے، امام ابوصنیفہ، امام مالک اور امام احمد بن حنبل کے نزویک مقتدی مسبوق ہویا غیر مسبوق دونوں کا حکم کیاں ہے، البتہ اس میں اختایاف ہے کہ امام کے پیچے آر اوت کا حکم کیا ہے؟ چنانچ حفیہ کے نزویک سراو جبراہر طرح قر اُت مکروہ ہے، مالکیہ کے نزویک جبرائمروہ ہے، اور حنابلہ کے نزویک مستحب ہے، اور حنابلہ کے نزویک مستحب ہے (ا)۔

شافعیہ کے زردیک اگر مقتدی مسبوق ہو، اور امام کورکوئ میں پائے ، یا قیام میں اس وقت پائے کہ وہ فاتح نہ پڑاھ سکے تو امام کا سور ، فاتح نہ پڑاھ سکے تو امام کا سور ، فاتح پڑاھ لیما مقتدی کے لئے کافی ہوگا، نیز اقتد اوک صورت میں امام مقتدی کے سہوکی طرف سے کافی ہوگا (۲)۔

اور اگر مقتدی مسبوق نہ ہوتو امام کا پڑھنا مقتدی کے لئے کا فی نہ ہوگا اور اس پر قر اُت واجب ہوگی جس کی تفصیل اصطلاح ''قر اُت''میں ہے۔

نیز درج ذیل امور میں امام مقتدی کی طرف سے مخمی کرنا ہے: سجد ہ سہو، سجد ہ تااوت اور سترہ اس لئے کہ امام کا سترہ پیچھے والوں کا بھی سترہ ہونا ہے۔

بحث کے مقامات:

9 فقہا ﷺ کے اور شہادت، دیت، امام کا مقتد ہوں کی خلطی کو ہرداشت کرنے ہیں۔

(1) موامِب الجليل الر ۱۸ ۵، ابن طاعه بين الر ۲۷ m، المغنى الر ۲۷ هـ

(r) الجِمل عَلَيْرُ حِلْمُنْجِ الره ۲۱،۳۳۵ س

تخميد

تعريف

ا تحمید کالغوی معنی: عمدہ صفات پر کثرت کے ساتھ تعریف کرنا ہے، سیحمد کے مقابلہ میں زیادہ بلیغ ہے (۱)۔ اور شریعت میں تحمید سے مراد کثرت کے ساتھ اللہ تعالی کی تعریف کرنا ہے، اس لئے کہ تقیقتۂ حمد کا مستحق وی ہے۔

اللہ تعالی کی سب سے بہتر تعریف سورہ فاتح، اور نماز میں پر ہمی جانے والی ثنایعنی سبحانک اللہم و بحمدک ہے(۲)۔

متعلقه الفاظ:

الف-شكر:

۲ - افت میں شکر بیہے کرمحن نے دومر سے پر جواصان کیا ہوائ پر اس کی تعریف کی جائے (۳)۔

> اس کے اصطلاعی معنی بھی یمبی ہیں۔ شرر یہ

اور شکر جس طرح زبان سے ہوتا ہے اس طرح ہاتھ اور دل سے

مجھی ہوتا ہے۔

⁽۱) لسان العرب، الصحاح، مثناً رالصحاح، الممصياح لم مير مادة "محد"، الجامع لاً حكام القرآن للقرطبي الرسسات

⁽۲) - الجامع لأحكام القرآن للغرطبي ارسه ۱۳۳۳، الرسالية الرابعيمن قواعد لفظه للمركة مرص ۲۲۳

⁽m) لسان العرب،الصحاح، المصباح ليمير ماده: "شكر" _

شکر محن کے احسان کا براہ ہوتا ہے، اور شکر کی جگہ لفظ حمر بھی مستعمل ہے، تم کہتے ہو: حصلته علی شجاعته ، یعنی میں نے اس کی شجاعت پر اس کی حمد وقعریف کی ،جیسا کہتم کہتے ہو: شکوته علی شجاعته یعنی میں نے اس کی شجاعت پر شکر بیادا کیا، بیدونوں علی شجاعته یعنی میں نے اس کی شجاعت پر شکر بیادا کیا، بیدونوں انفاظ قریب امعنی ہیں، البتہ حمد عام ہے، اس لئے کہ صفات پر حمد تو ہوتی ہے، شکر نہیں ہوتا، ای سے معلوم ہوتا ہے کہ ان دونوں کے درمیان فرق ہے (ا)۔

ب-مدح:

سو- مدح کے نغوی معنی: انہی تعریف کے ہیں ہم کہتے ہو: مدحته مدحا باب نفع ہے جس کے معنی ہیں: کسی کی جسمانی پیدائش یا افتیاری عمدہ صفات پر اس کی تعریف کرنا۔

اور اصطلاح میں: اختیاری خوبیوں پر زبان سے تصداً تعریف کرنے کومدح کہتے ہیں۔

ای لئے مدح حمد سے عام ہے(۴)۔

اجمالي حكم:

سم- انسان کی زندگی میں تعریف کرنے کے مواقع متعدد ہیں، اور انسان سے اس بات کا مطالبہ ہے کہ وہ اپنے اوپر اللہ کی تعمقوں کے اعتراف اور اس کے بٹایان بٹان تعریف وثنا بجالانے کے لئے حمر کرے، کیونکہ اللہ نے اس کو مے ثمارتعین عطا کررکھی ہیں، اللہ تعالی

حدیان کرنا کہی واجب ہوتا ہے جیسے خطبہ جمعہ میں کہیں سنت مؤکدہ ہوتا ہے جیسے خطبہ جمعہ میں کہیں سنت مؤکدہ ہوتا ہے جیسے چھینکنے کے بعد، اور کہی مندوب ہوتا ہے جیسے خطبہ نکاح اور دعاؤں کے شروع میں، اور ہر انہم کام کی ابتداء میں، نظبہ نکاح اور دعاؤں کے شروع فیرہ ۔ بیا او قات حمد بیان کرنا مکروہ ہوجاتا ہے جیسے گندگی کی جگہوں میں اور کہی حرام ہوجاتا ہے جیسے معصیت سے خوش ہوکر (۲)۔

اس کی پوری تفصیل درج ذیل ہے:

جمعہ کے دونوں خطبوں میں حمد بیان کرنا:

۵- جمعہ کے دونوں خطبوں میں حمد بیان کرنا شرعام مطلوب ہے،
اگر چہ اس کے فرض یا مندوب ہونے میں فقہاء کا اختایات
ہے(۳) اور حمد سے دونوں خطبوں کی ابتداء کرنامتحب ہے، کیونکہ حضرت ابو ہر برڈ سے مرنوعاً روایت ہے: "کل کلام لا یبداً فیہ بالحمد فہو اُجدم" (ہر وہ کلام جوحمد سے شروع نہ کیا جائے بالحمد فہو آجدم" (ہر وہ کلام جوحمد سے شروع نہ کیا جائے

- (۱) سورهٔ ایرانیم سرس
- (٢) حامية الطحطاوي على مراتى الفلاحرص ١٠٠ كشاف القتاع ار ١٦ـ
- (۳) ابن عابدین از ۵۳۳، ۵۳۳، ۱۱،۵۳۳، مراتی انقلاح رص ۱۳۸، ۲۸، ۴۸، ب فی فقه لا مام افتافعی از ۱۱۸، کشاف القتاع عن مثن الاقتاع ۲ راسم ۳۳ طبع انصرالحدید، المشرح اکلیبراز ۸۵، ۳۵، ۵۳، الاذکارللووی ۱۰۴
- (٣) عديك: "كل كلام لا يبدأ فيه بالحمد فهو أجدم" كي روايت ايوراؤر

⁽۱) لتعريفات ليح جاني رص ۱۲۸، أنظم لمستزيد بسار و_

 ⁽۲) أمصباح لهمير ، مخار الصحاح، لسان العرب، النظم المستحدة ب في شرح خريب المريب بهاش المهدب في فقد لإ مام الثافعي ۱۸۳۸، اتعر بفات للجرجاني رص ۲۰۷٠.

وددم بریده ربتا ہے)، اور حضرت جائر عروایت ہے: "أن النبي خطب کان یخطب الناس یحمد الله ویشنی علیه بما هو الله "(ا) (نبی علیه بلا کول کے سامنے خطبہ دیتے تو اللہ تعالی کی حمد اور اس کی وہ ثنا کرتے جس کا وہ سخت ہے)۔
اور اس کی وہ ثنا کرتے جس کا وہ سخت ہے)۔
اس کی تفصیل "صلاق الجمعہ" میں ہے۔

خطبهٔ نکاح میں حمد بیان کرنا:

سَدِيْلًا، يُصْلِحُ لَكُمُ أَعْمَالَكُمُ وَيَغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمُ وَمَنْ يُطِع اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدُ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا" (ثمَامِ تَعْرِيْفِي اللَّهَ قَالَ كَ لے فاص ہیں ہم ای کی حمد بیان کرتے ہیں، ای سے مدوطلب کرتے ہیں، ای سے مغفرت کی درخواست کرتے ہیں، ہم الله تعالی کی پناہ جاہتے ہیں اپنے نفسوں کےشر اور اپنے ہرے امکال ہے، جسے اللہ تعالی ہدایت دے دیں اے کوئی گمراہ کرنے والانہیں، اور جے گمر اہ کر دیں اے کوئی ہد ایت دینے والانہیں ، میں کو ای دیتا ہوں کہ اللہ تعالی کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اور میں کوائی دیتا ہوں کہ محمد علیقیہ اس کے بندے اور اس کے رسول ہیں)،(اےلوکو! ڈرتے رہوایئے رب ہے جس نے پیدا کیاتم کو ایک جان سے اور ای سے پیدا کیا اس کا جوڑ ااور پھیاائے ان دونوں سے بہت مرواور عورتیں اور ڈرتے رہواللہ سے جس کے واسطہ سے سوال کرتے ہوآ اپس میں اور خبر دارر ہیر ایتوں کے باب میں، جشک اللهُ تم يرنگهبان ہے)، (اےائيان والوا اللہ ہے ڈروجیسا كہ ڈرنے كا حق ہے، اور جان نہ دینا بجز اس حال کے کہم مسلم ہو)، (اے ایمان والوااللہ ہے ڈرواور رائی کی بات کہو، للد تمہارے لئے تمہارے ائمال سنو ارد ہے گا اور تنہا رے گنا ہ معاف کرد ہے گا، اور جس کسی نے الله اوراس کے رسول کی اطاعت کی سووہ ہڑی کا میانی کو پہنچے گیا)۔

نماز کےشروع میں حدییان کرنا:

انماز کے آغاز میں حمد بیان کر اجس کو ثنا کہا جاتا ہے مسنون ہے ،
 چنا نچ رسول اللہ علی جب نماز شروع فرماتے نو تکبیر کہتے ، پھر اپنے دونوں ہاتھ اٹھا تے بہاں تک کہ اپنے دونوں انگوٹھوں کو اپنے دونوں

نيز ديکھئة ابن عابدين ارا ۵، ۱۲۲۳، کشاف القتاع عن ستن الاقتاع ۵/ ۱۱، الاذ کارلفووي ۵۰، کشرح الکبير ۲۱۲/۳

⁽۱۷۲/۵ طبع عزت عبید دهای)نے کی ہے اور اس عدیث کو ارسال کی وجہ معلیل کہا ہے نیز اس کی سند میں ایک ضعیف داوی ہے (فیض القدیر للمناوی ۱۳/۵ طبع آمکندید انتجاریہ ک

⁽۱) عدیہ: ''کان یخطب العاص یحمد الله....." کی روایت مسلم (۲/ ۱۳۰۳ ۵ طبع لجلس) نے کی ہے۔

⁽۲) حدیث: "بن الحمد لله لحمده و لسعیده" کی روایت ایوداؤد (سر ۹۲ ۵ طبع عزت عبید رهاس)نے کی ہے ور اس کے طرق سیم بین (مختص آمیر لابن مجر ۱۵۲ اطبع شرکة الطباعة التدید)۔

⁽۳) سورۇڭيا وراپ

⁽۳) سورهٔ آل عمر ان ۱۹۳۸

⁽۱) سورهٔ افز اب، ۲۰۰۰ ک

کانوں کے ہراہر کر لیتے، پھر یہ دعاء پڑھتے: سبحانک اللهم و بحصدک، و تبارک اسمک، وتعالی جدک، ولا الله غیرک" (اے اللہ ہم تیری پاک کا اثر ارکرتے ہیں، اور تیری تعریف نیس کا افر ارکرتے ہیں، اور تیری تعریف نیس کر اور تیری ہوت ہر کت والا ہے، اور تیری ہرگی ہرتر ہے، اور تیری مواکوئی مستحق عبادت نہیں)۔ اس پر حفیہ باور تیری ہور تیری کا فعیہ اور حنابلہ کا اتفاق ہے (۲)۔

حدیان کرنا واجب ہے، وارتظامی میں روایت ہے کہ نبی علیجہ نے حمریان کرنا واجب ہے، وارتظامی میں روایت ہے کہ نبی علیجہ نے حضرت بریدہ تا ہویلہ افراد وفعت و آسک من الرکوع فقل: سمع الله لمن حملہ، ربنا ولک الحمد "(اے بریدہ! جبتم رکوع ہے ہر اشاؤ تو: سمع الله لمن حملہ، ربنا ولک لمن حملہ، ربنا ولک الحمد کبا کرو)، اور حفیہ اور ثانعیہ لمن حملہ، ربنا ولک الحمد کبا کرو)، اور حفیہ اور ثانعیہ کے نز دیک مقتدی ومنفرد کے لئے اس مقام پر حمدیان کرنا سنت ہے، مقتدی اور مقتدی ومنفرد کے لئے اس مقام پر حمدیان کرنا سنت ہے، مقتدی اور مقتدی بالا تفاق صرف حمدیان کرنا سنت ہے، مقتدی اور مقتدی بالا تفاق صرف حمدیان کرنے پر اکتنا وور کی گئی اور مقتدی بالا تفاق صرف حمدیان کرنے پر اکتنا کرے کہ ایک الحمد کرے گا، اس لئے کہ اے ای کا کم ہے، حضرت انس اور حضرت انس اور حضرت انس اور حضرت انس اور حضرت کرنے کہ نبی عقولوا: ربنا ولک الحمد "(۳) اسمع الله لمن حملہ، فقولوا: ربنا ولک الحمد "(۳)

(جب المام سمع الله لمن حمدہ کے،تو تم ''ربنا ولک المحمد" كبو)، اورضيح بخارى مين حضرت رفاعه بن رافع الزرقيّ سے روايت ہے، وہ فرماتے ہیں :"کنا يوما نصلي وراء النبي عُنْكُمُ ، فلما رفع رأسه من الوكعة قال: "سمع الله لمن حمله"، فقال رجل وراء ٥: ربنا ولك الحمد حمدا كثيرا طيبا مباركا فيد فلما انصوف قال: "من المتكلم؟"قال:أنا. قال: "رأيت بضعة وثلاثين ملكا یبتلوونها آیهم یکتبها آول''⁽¹⁾(ایکروزنمنی عَلِیْنَم کے بیجھے نماز ریا ھارہے تھے، آپ علی نے جب رکوٹ سے سر اٹھایا تو ''سمع الله لمن حمده'' كِهاءآب عَلَيْكُ كَ يَحِيدايكُ مُحْصَ نے بیکیا: ' ربنا ولک الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیه" (اے ہمارے پر وردگارتمام تعریفیں تیرے لئے خاص ہیں، ہم تیری بہت زیادہ یا کیزہ اور باہر کت تعریف کرتے ہیں)۔ آپ علی اُ نے لوکوں کی طرف رخ کیا توفر مایا کہ'' بیدعائس نے پڑھی؟'' ہ شخص نے کہا کہ میں نے ،نو آپ عظیم نے نر مایا کہ میں نے تمیں سے زائد فرشتوں کو اس دعا کی طرف تیزی سے دوڑ تے دیکھا کہ اے سب سے پہلے کون لکھے)۔

امام یا منفرد کے ''سمع اللہ لمن حملہ'' کئنے کے بعد یہ حمد بیان کرنا مالکیہ کے زویک مندوب ہے (۴)۔

⁽۲) مراقی الفلاح (۱۳۹۰ ۱۳۱۸ ۱۵ الا ذکار ۳۳ کشاف القتاع ار ۳۳۳۳ ر ۳۳۳

⁽۳) حدیث: "یا بریدة إذا رفعت رأسک....." کی روایت دار قطش (۱/ ۳۳۹ طبع شرکة اطباعة الفزیه) نے کی ہے اور اس کی سندانتہائی ضعیف ہے(میز آن الاعتدال للدجی سر ۲۱۸ طبع کولئی)۔

⁽١) - عديك: "إذا قال الإمام سمع الله لمن حمده..... "كَلَّ روايت بخاري

الفتح ۲۸۳ مطبع المتلقب) اور ۱۸۳ مطبع الجليل) نے کی ہے۔

⁽۱) حضرت رفاعہ بن رافع کی حدیث کی روایت بخاری (انفتح ۲۸۳ معج السُنفیہ) نے کی ہے نیز دیکھئے کشاف الفتاع عن ستن الاقتاع ام ۳۳۳، ۱۳۳۸، ۱۳۳۹، ۱بن حابد بن ام ۳۳۳، مراتی الفلاح ۲۳،۱۱، ۱۵۴، المرید ب فی فقہ لا بام اشافعی ام ۸۹،۸۲،الاذکارللنووی ره ۳س

⁽۲) الشرح الكبيرار ۴۳۸،جوم لوكليل ار ۱۵_

سلام پھیرنے کے بعد نماز سے فارغ ہونے والے کے لئے حمد بیان کرنا:

حفي اورحنابله كنزوكك نماز ك بعدهم بيان كرا سنت ب، رسول الله عليه كافر مان ب: "من سبّح الله في دبر كل صلاة ثلاثاً وثلاثين، وكبر الله ثلاثاً وثلاثين، وكبر الله ثلاثاً وثلاثين، وكبر الله ثلاثاً وثلاثين، فتلك تسعة وتسعون وقال في تمام المائة لا إله إلا الله وحمه لا شريك له، له الملك وله

الحمد، وهو على كل شيَّ قليو" ((جُوُخُصُ مِرَمَازَ كَ بعد تَّيَّنَيْسِ مُرَتَّ الله الله الله الله الله وحده لا شريعً له، له المملك وله الحمد، وهو على كل شيَّ قليو الرّية الله وحده لا شريك له، له المملك وله الحمد، وهو على كل شيَّ قليو تواسُخُصُ كَ لناه معاف بوجات بين، خواه وهمندر كرجُها ك كرابر بهوں) وهمندر كرجُها كي كرابر بهوں) وهمندر كرابر بهوں) و

اوران کے زویک اس کے بعد یہ پڑھنامسنون ہے: "آللھم اعنی علی ذکرک و شکرک و حسن عبادتک" (اے اللہ اپنے فکر، اپنے شکر اور صن عبادت پر میری مدفر ما) اور آخر میں یہ پڑھے: "سبحان ربک رب العزة عما یصفون و سلام علی الموسلین، و الحمد لله رب العلمین" (پاک ہے آپ کاپر وردگار بڑی مزت والا پر وردگار ان چیز وں سے جو یہ لوگ ، یان کرتے ہیں، اور سالام ہو پیمبروں پر اور ساری خوبیاں اللہ پر وردگار عالم کے لئے ہیں)، اور حنابلہ نے شافعیہ کی استدلال کردہ روایت پر اضافہ کیا ہے (سادلال کردہ روایت پر اضافہ کیا ہے (سادلال

اولی و بہتر یہ ہے کہ پہلے سمان اللہ کے، اس لئے کہ بداز قبیل تخلیہ ہے، اس کے بعد الحمد للہ کے، اس لئے کہ یہ تحلیہ وتربین کے باب سے ہے، اس کے بعد اللہ اکبر کے، اس لئے کہ یہ قطیم ہے (۳)۔

⁽۱) المم برب فی فقه لا مام امثا فعی ار ۸۷، الافز کارللووی ر ۱۸ بزیده استفری شرح ریاض الصالحین للمووی ۲۲ سرمه ، سرمه

⁽۲) عدیث: "کان یهلل فی آثو کل صلاة....." کی روایت مسلم (۱۱۵/۱۱/۱۱ طیع الحلی) نے کی ہے۔

⁽۱) حدیث: "من سبّح الله فی دبو کل صلاة....." کی روایت مسلم (۱/ ۱۸ مطمع الحلمی) نے کی ہے۔

 ⁽۲) حدیث افرکار صلاق کے افغاً م پر رسول اللہ علیف کافر مان اسبحان ربک
 رب العزق کی روایت ابو یعلی نے حضرت ابو سعید ہے کی ہے اور اس
 کی سند ضعیف ہے تغییر ابن کثیر (۲۱ / ۳۳ مطبع دارالاعلی)۔

 ⁽٣) مراتی الفلاح را ۱۷، ۱۷۳ ابن عابدین ار ۵۲ سه کشاف القتاع عن ستن الاخلاع ار ۲۵ سه ۱۷سـ

⁽۴) مراتی الفلاح ص ۲ کار

عیدین کی نماز میں تحریبہ کے بعد حمد بیان کرنا:

9 - دخیے کے فرد کیک بیامام و مقتدی سب کے لئے سنت ہے، چنانچ وہ ثنا وحمد بیان کرتے ہوئے یہ پڑھے گا: ''سبحانک اللهم و بحدک، و تبارک اسمک، و تعالی جدک، و لا إله غیرک" (اے اللہ م تیری پا کی کا آر ارکرتے ہیں اور تیری تعریف بیان کرتے ہیں اور تیری تعریف بیان کرتے ہیں، اور تیری ترکت والا ہے، اور تیری بر رگی برتر ہے، اور تیری بر رگی برتر ہے، اور تیری بر کی برتر ہے، اور تیری برانام بہت برکت والا ہے، اور تیری برز کی برتر ہے، اور تیری برانام بہت برکت والا ہے، اور تیری برز کی برتر ہے، اور تیری برانام بہت برکت والا ہے، اور تیری برانام برانام بہت برکت و الا ہے، اور تیری برانام بران

حنابلہ کے فرد یک تجیرات کے درمیان حمد بیان کرامسنون ہے، چنانچ تجیرات کے درمیان کیے گا: اللہ آکبو کبیرا، وصلی والحمد لله کثیرا، و سبحان الله بکرة و آصیلا، وصلی الله علی محمد النبی و آله وسلم تسلیما کثیرا" (الله بہت ہڑ اہے، ہم ال کی بار بارتعریف بیان کرتے ہیں اور شیح وثام ال کی تقدیمی بیان کرتے ہیں اور بار بار در ودوسایم بازل ہواللہ کے ہی محد پر اور ان کی آل پر)۔ اس لئے کہ حضرت مقبد بن عامر شرے معلوم نی محد پر اور ان کی آل پر)۔ اس لئے کہ حضرت این مسعود شرے معلوم کیا کہ وہ عید کی تجمیرات کے درمیان کیا پڑ صنے ہیں؟ آنہوں نے فر مایا کہ وہ عید کی تجمیرات کے درمیان کیا پڑ صنے ہیں؟ آنہوں نے فر مایا کہ الله تعالی کی حمد وثنا بیان کرتے ہیں، نبی علی تھی جر در ود تھیجتے ہیں، کی طرح عاکر نے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں، نبی علی تھی در ود ود کھیجتے ہیں، کہا ورک کے ہیں، اور کا کہ کے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں، اور کیمیر کہتے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں، اور کیمیر کہتے ہیں، اور کیمیر کہتے ہیں، اور کیمیر کہتے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں اور کیمیر کہتے ہیں اور کیمیر کیتے ہیں اور کیمیر کیمیر کیمیر کیتے ہیں اور کیمیر کیمیر کیتے ہیں اور کیمیر کیتے ہیں اور کیمیر کیتے ہیں اور کیمیر کیمیر کیمیر کیمیر کیتے ہیں کیمیر کیمیر کی کیا کی کیتے ہیں اور کیمیر کیم

ا ستسقاءاور جنازه کی نماز میں حمد بیان کرنا:

• ا - نماز استنقاء کے خطبہ پی بٹا فعیہ اور حنابلہ کے نزدیک حمد بیان کرناسنت ہے ، اور حفیہ اور مالکیہ کے نزدیک متحب ہے۔ اور حفیہ کے نزدیک متحب ہے۔ اور حفیہ کے نزدیک متحب ہے۔ اور حفیہ کے نزدیک نماز جنازہ بیں پہلی تکبیر کے بعد حمد بیان کرنا مسنون ہے ، نماز پڑھے والا بیدعاء پڑھے: "سبحانک اللهم و بحمدک، و تبارک اسمک و تعالی جدک، ولا الله غیرک "()۔

تكبيرات تشريق مين حمد بيان كرنا:

⁽۱) - مراتی الفلاح را ۹۹، کشاف الفتاع من مثن الاقتاع ۴ ر ۹۱،۵۳ ۵ طبع الصر الحدید۔

 ⁽۲) سیجیرات عید کے درمیان اذکا روالی عدیث کی روایت بیکی نے حضرت ابن مسعود نے قولاً دفعلاً عمدہ سند کے ساتھ کی ہے، ابن علان نے "الفتوحات المیانیة" میں بی کہا ہے (سهر ۲۳۳)، نیز دیکھتے: اسنن الکہری للفنظی (سهر ۱۹۳) کی ایمانی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الفنظی الکہری الفنظی الکہری الفنظی الفنظی المین الکہری الفنظی الفنظی الفنظی الفنظی المین الکہری الفنظی الفنظی الفنظی الفنظی الفنظی المین الکہری الفنظی الفنظ

⁽۱) المبدب في فقه لإ مام الشافتي ار ۳۳ ا، كشاف القتاع عن مثن الاقتاع ۴ ر ۱۹، مراتي الفلاح ر ۲۹۹، ۳۰ م، ابن هايد بن ار ۷۱ هـ

⁽۲) حدیث: "فوله نظینے الله أكبو، الله أكبو" كى روایت وارقطنی (۲) حدیث: "فوله نظینے الله أكبو، الله أكبو" كى روایت وارقطنی (۲٪ ۵۰ طبع شركة الطباطة العدیہ) نے كی ہے ابن تجرنے كہا كہ: اس كی سند طبی عمر و بن شمر ہے اور وہ ستروك ہے (تنخیص أبير ۸۷/۲ طبع شركة الطباطة الفدیہ)۔

خارج نمازچچنگنےوالے کاحمد بیان کرنا:

۱۲ - علاء كاس راتفاق ب كرجب كى كوچينك آئ توالله تعالى كى حمد بيان كرناس كے لئے سنت ب، چنانچ چينك كے بعد كے:
"الحمد لله" ـ اور" الحمد لله رب العالمين" يا" الحمد

(۱) عديث: "قوله على الصفا: الله أكبو، الله أكبو "مسيح مسلم على الصفا: الله أكبو ، الله أكبو "مسيح مسلم على المسلم المسلم المسلم المسلم المسلم المسلم المسلم على كل شيء الديو "، ابن ماجه على "وحمده"كا اضافه بهر على المسلم (١٢ ٨٨٨ هيم الملم)، ابن ماجه على المسلم (١٢ ٨٨٨ هيم المسلم في المسلم ا

(۲) المفواكه الدواني ابر ۲۱ سهمثا نع كرده دارالمعرق.

لله على كل حال" كبنا أهنل ب، حضرت الوجرية عميقول علي عليه في المنافضة في الإدا عطس أحدكم فليقل: الحمد لله وليقل له أخوه أو صاحبه: برحمك الله" (١) الحمد لله وليقل له أخوه أو صاحبه: برحمك الله" (١) (جبتم مين سي كن كو چينك آئة تو چائج كه وه: "الحمد لله" كم اور چائج كه ال كابحائي با ماهي است كم: "برحمك الله" كم اور جائج كه ال كابحائي با ماهي است كم: "برحمك الله").

حضرت الوہریر ڈی ہے روایت ہے، وہ نبی علی ہے تال کے کر مایا: "اِذا عطس احد کم فلیقل الحمد لله علی کل حال" (جبتم میں ہے کی کو فلیقل الحمد لله علی کل حال" (جبتم میں ہے کی کو چھینک آئے تو چا ہے کہ وہ کہ: "الحمد لله علی کل حال"، حضرت آئی ہے معقول ہے، وہ فر ماتے ہیں: "عطس رجلان عند النبی خلی ہے معقول ہے، وہ فر ماتے ہیں: "عطس رجلان فقال الذي لم یشمت احدهما، ولم یشمت الآخو۔ فقال الذي لم یشمته: عطس فلان فشمته، وعطست فلان فشمته، وعطست فلم تُشمّته، وعطست تحد الله تعالی، والذی لم تحد الله تعالی، والدی تو آپ علی والدی وا

⁽۱) حديث: "إذا عطس أحدكم فليقل: الحمد الله" كي روايت بخاري (الفتح ار ۲۰۸ طبع لستانيه) نے كي ہے۔

⁽۱) عدیث آفا عطس أحد كم فليقل: الحمد لله على كل حال كل روایت ابود تؤد (۱۵/ ۲۹۰ طبع مرت عبید دهاس) نے كى ہے وراس كى سندس ہے ہے۔

⁽٣) حديث: "هدا حمد الله و إلك لم تحمد الله" كي روايت بخاري (الفتح ١١٠/١٠ طبع المناقب) اورسلم (سهر ٢٢٩٢ طبع الحلمي) نے كي ہے الفاظ سلم كے بين۔

تعالی کی حمد بیان کی ، اور تو نے اللہ کی حمز بیں کی)، حضرت ابوموی اشعری ہے منقول ہے ، وہر ماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ علیہ علیہ فر ماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ فشمتوہ فر ماتے ہوئے سنا: "إذا عطس أحد كم فحمد الله فشمتوه فإن لم بحمد الله فلا تشمتوه" (اسم جب تم میں ہے كسی كو چھينك آئے اوروہ اللہ قالی کی حمد بیان کر ہے تو اس كا جواب دو، اور اگروہ اللہ تعالی کی حمد بیان ترک ہے تو اس كا جواب دو، اور اگروہ اللہ تعالی کی حمد بیان ترک ہے تو اس كا جواب دو، اور اگروہ اللہ تعالی کی حمد بیان ترک ہے تو اس كا جواب دو، اور اگروہ اللہ تعالی کی حمد بیان ترک ہے تو اس كا جواب نددو)۔

قضاء حاجت کے بعد ہیت الخلاء سے نکلنے والے کاحمد بیان کرنا:

ساا - مالكيه اور شافعيه كيز ديك بيمندوب هي، اور حفيه اور حنابله كيز ديك سنت هي، الهذا (نكلنے والا) بيه كيم: "غفوانك" (٢) (اے الله ميں جھوي ہے بخشش طلب كرنا ہوں) د" الحصد لله الذي اذهب عني الأذي و عافاني" (تمام تعريفيں الله تعالى على كے لئے فاص ہيں جس نے مجھ ہے اذبيت كودوركر كے جھے عافيت بي كے لئے فاص ہيں جس نے مجھ ہے اذبيت كودوركر كے جھے عافيت بي كي كے لئے فاص ہيں جس نے مجھ ہے اذبيت كودوركر كے جھے عافيت بي كي كے لئے فاص ہيں جس

حضرت ابن عمرٌ سے منقول ہے، وہنر ماتے ہیں کہ رسول اللہ ملاہنو علیقہ جب بیت الخالاء سے باہر تشریف لاتے توفر ماتے:"المحمد

(۱) عدیث: "إذا عطس أحدكم فحمد الله فشمنوه" كی روایت مسلم (۳۱ مع ۱۳۹۳ طبع الحلی) نے كی ہے نیز دیکھے: وا ذكارللوري رص ۳۳۰۔

لله الذي أذا قني للنه، و أبقى في قوته و أذهب عني أذاه "(أ) (تمام تعريفي الله تعالى كے لئے فاص ہیں جس نے جھے أذاه "(أ) كاندت سے لطف اندوز كيا، اور مير سے اندر اس كى قوت كو باقى ركھا، اور اس كى اور يت كو جھے ہے دور كيا)۔

كهاني پينے والے كاحد بيان كرنا:

۱۹۳ - کھانے اور پینے والے کے لئے حمد بیان کرنا مستحب ہے، رسول اللہ علیہ کافر مان ہے: "إن الله ليوضى من العبد أن يأكل الأكلة أو يشوب الشوبة فيحمده عليها" (٢) (بيتك الله تعالى الله بنده سے راضى ہوجائے بیں جوكوئى لقمہ كھائے يا كوئى گھونٹ ہے اور اللہ تعالى كی حمد بیان كرے)۔

 ⁽۲) حدیث: "للوله : غفو المک" کی روایت ابوداؤ د (۱/ ۳۰ طبع عزت عبید دهاس) اور حاکم (۱/ ۵۸ طبع دائرة لمعارف العثمانیه) نے کی ہے اور ڈئی کے نے اور ڈئی کے نے اور ڈئی کے نے اور ڈئی کے ایس کے ایس کی ہے اور ڈئی کے ایس کی ہے ہے۔

⁽٣) عدیث: "المحدد الله الله الله أذهب عبی الأذی و عافالی" کی روایت این ماجه(ام ۱۱۰ طع الحلی) نے کی ہے وراین ماجه کے حاشیہ شل ہے کہ اس حدیث کی سند میں اسامیل بن مسلم میں جن کے ضعیف ہونے پر اتفاق ہے وران الفاظ کے ساتھ حدیث ٹابت ٹیمیں ہے۔

 ⁽۲) عدیث: "إن الله ليوضى من العبد أن يأكل الأكلة....." كى روایت مسلم (۱۹۵۸ طبح لحلی) نے كى ہے۔

⁽۳) حدیث: "کان بذا اُکل اُو شوب قال: الحمد لله....." کی روایت تزندی (۵۰۸/۵ طبع لُحلی) نے اور بغوی نے شرح اسند (۱۱/۹۵ طبع اُسکنب لاسلای)ش کی ہے اور بغوی نے انقطاع کی وجہے اسکومعلول کہا ہے۔

ذنبه "() (جس نے کھانا کھاکر بید عاپر ہمی: "الحمد لله الذي أطعمني هذا ورزقنيه من غير حول مني و لا قوة "تمام تعريفيں اللہ کے لئے ہیں جس نے مجھ کو بیکھانا کھا ایا اور میری تو ت وطاقت کے بغیر مجھے رزق دیا اس کے پچھلے گنا ہ معاف کرد ئے جاتے ہیں)۔

دیاس پر تیری عی تعریف ہے)۔

خوش خبری سفنے، کسی فعمت کے حاصل ہونے یا کسی مصیبت و پر بیٹانی کے دور ہونے پر حمد بیان کرنا:
مصیبت و پر بیٹانی کے دور ہونے پر حمد بیان کرنا:
10 - ہر شخص کے لئے مستحب ہے کہ اللہ تعالی کی پاک ذات کی حمد بیان کرے، اور اس کی شایان شان شاء کرے، اللہ تبارک وتعالی کا بیہ فرمان ای سلسلہ میں ہے: " اللّح مُمَدُ لِلْهِ اللّٰذِي اَدُهَبَ عَنّا اللّٰحَوَٰ رَنَّ " (اللّٰدِی اللّٰمِی اللّٰمِی ہے: " اللّٰحَمَدُ لِلْهِ اللّٰذِی اَدُهَبَ عَنّا اللّٰحَدَرُنَ " (اللّٰمِی اللّٰمِی اللّٰمُی اللّٰمِی اللّٰمُی اللّٰمِی اللّٰم

اور حضرت داؤد وسلیمان میها الصلاق والسلام کے قصد میں الله تعالی کا ارشاد ہے: ''وَ قَالاً اللّٰهِ مَلَّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَیٰ فَضَّلْنَا عَلَیٰ کَیْنَیْوِ مَنْ عِبَادِهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهُ اللّٰهُ عَبَادِهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهُ عَبَادِهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَلَيْهِ اللّٰهِ عَبَادِهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهُ عَبَادِهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَبَادِهِ عَلَيْهِ عَبْهُ عَلَيْهِ عَبْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَى عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَى عَلَيْهِ عَ

اور حضرت ابرائیم علیہ الصلاق والسلام کا ارشاد قرآن کریم میں ہے: ''الْکھ مُلْد اللّٰهِ الَّٰذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَو إِسْمَاعِيْلَ بِهِ الْلَّهِ اللَّٰهِ اللَّٰهِ اللَّٰهِ اللّٰهِ عَلَى الْكِبَو إِسْمَاعِيْلَ وَاللّٰهِ عَلَى الْكِبَو إِسْمَاعِيْلَ وَإِسْحَاقَ'' (''' (شکر ہے اللّٰہ کاجس نے بخشا مجھ کو آئی بڑی عمر میں اساعیل اور الحق)۔

صیح بخاری میں ہے کہ حضرت عمر ان این بینے حضرت عبدالله

ابن استی نے مل الدم و الملیاء (رص ۱۳ طبع دائرۃ المعارف العشائیہ) میں
 کی ہے و داخق حات الربائید لا بن علان میں ہے کہ ابن مجر نے اے سی قر اد دیا ہے۔
 دیا ہے (۱۳۲۸ طبع المعیر ہیر)، نیز دیکھتے کشاف القتاع ۱۳۷۵، الحام القرآن الا بن الحاج الر ۱۳۲۷، الحامع وا حکام القرآن للتوطی الراس اللامی الدین الحاج سر ۱۸ ۱۵، المام ۱۸۳۳۔

⁽۱) سورة فاطرير ۲۳۳

⁽۳) سورهٔ تمل ۱۵ ا

⁽۳) سورهايراتيم ۱۳۹

⁽۱) عدیث: "من أكل طعاما فقال : الحمد الله الله أطعمنی هدا" كی روایت ترندي (۵ / ۵۰۸ طبع لجلمی) نے كی ہے اس كى مندصن ہے۔

 ⁽۲) عدیث: "کان إذا أکل أو شوب قال: الحمد لله اللهی أطعم....."
 کی روایت ابوداؤر (۳/۱۸۸۸ الطبع عزت عبیر دهاس) نے کی ہے،
 نووکیدئے" الاذکار" میں اے سیح کہا ہے (اس ۲۱۲ طبع الحلمی)

⁽٣) عديث: "كان إذا قو بإليه طعاماً يقول: بسم الله....." كل روايت

کو حضرت عائشةً کے باس بھیجا کہ وہ ان سے اجازت لیس کے تمر اپنے صاحبین (رسول الله علی اور حضرت ابو بکڑ) کے باس ونن ہونا عاستے ہیں، جب حضرت عبداللہ واپس آئے تو حضرت عمر نے كبان کیا جواب لائے ہو؟ حضرت عبداللہ نے کہا: امیر المؤمنین جوآ پ عاہتے ہیں، انہوں نے اجازت مرحت فرمادی توحضرت مر انے کہا: "ألحمد لله" كوئى چيزمير نزويك ال سے المنبيل تقى (1) _ حضرت ابو ہر بر ہ ہے روایت ہے:" أن النبی ﷺ أتى ليلة أسري به بقدحين من خمر ولبن، فنظر إليهما، فأخذ اللبن، فقال له جبريل عليه السلام: "الحمد لله الذي هداک للفطرة، لو أخذت الخمر غوت أمتك''^(r) (شب معراج میں نبی عظیمہ کے باس ایک پیالہ شراب کا اور ایک بیالہ دودھ کا لایا گیا ،آپ علی نے ان دونوں کی طرف دیکھا ، اور دودھ کو اختیار فر مالیا، تو حضرت جبرئیل علیہ السلام نے آپ علیج ے فربایا:"الحمد لله الذي هداک للفطرة" (تمام تعریفیں اس الله تعالى كے لئے بين جس نے آپ كى اطرف رہنمائى فر مائی)اگرآ پشراب لے لیتے توآ پ کی امت گمراہ ہوجاتی)۔

کان فی مجلسه ذلک "() (جو خص کی مجلس میں بیٹھا اور وہاں اس کی فضول ہائیں بہت ہوگئیں پھر مجلس سے کھڑ ہے ہونے سے پہلے اس کی فضول ہائیں بہت ہوگئیں پھر مجلس سے کھڑ ہے ہونے سے پہلے اس نے بید عا پڑھ لی: "سبحانک اللهم و بحمدک، آشهد أن لا إله إلا أنت، آستغفر ک و أتوب إليك "تو اس كی اس مجلس كی تمام غلطياں معاف كردى جاتی ہیں)۔

اعمال حج میں حمد بیان کرنا:

21 - اتمال تج میں حمد بیان کرنا مستحب ہے، اور ملتزم کے پاس رسول اللہ علی نے جودعا کمیں ما کلیں ان میں سے ایک بیہ ہے:
"اللهم لک الحمد حمدا ہوا فی نعمک، و یکافی عمزیدک، آحمدک بجمیع محامدک، ما علمت منها ومالم أعلم، وعلی کل حال۔ اللهم صل وسلم علی محمد وعلی آل محمد اللهم أعلني من الشيطان الرحيم وأعذني من کل سوء، وقعني بما رزقتني، وبارک لی فید اللهم من کل سوء، وقعنی بما رزقتنی، وبارک لی فید اللهم حتی القاک یا رب العالمین (۲) (اے اللہ میں تیری الی تیری الی تو یہ بین تمام خویوں پر تیری تعری تعریف وحمد کرتا ہوں، خواہ بھے وہ محامد معلوم ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور ہر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، معلوم ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور ہر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، معلوم ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور ہر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، معلوم ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور ہر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، معلوم ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور ہر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، حمد کرتا ہوں، اور مر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، حمد کرتا ہوں یا معلوم نہ ہوں یا معلوم نہ ہوں، اور مر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، حمد کرتا ہوں یا معلوم نہ ہوں اور مر حال میں تیری حمد بیان کرتا ہوں، اور مر حال میں تیری حمد کرتا ہوں کرتا ہوں کرتا ہوں اور حضر سے محمد کرتا ہوں کرتا ہوں کرتا ہوں کرتا ہوں اور حضر سے محمد کرتا ہوں کر

⁽۱) عديث: "ممن جلس في مجلس فكثو فيه لعطه....." كي روايت ترندي (۱۵ هه ۳ طبع الحلمي) نے كي ہے اورفر ملا به عديث صن سي ہے۔ اور دركيجية: لا ذكار للتو وكير ۷۷، ۳۲۳، ۳۲۵، لا داب الشرعيد لا بن مفلح سر ۲۲۳، ۱۲۳

⁽۲) عدیدے مکتزم کے بارے میں ابن جحرنے کہا ہے کہ جھے اس کی اسل معلوم میں بوئی (افقة حات الربانیہ ۳۸راه ۳ طبع کم میرید)۔

اے اللہ بھے شیطان مردود سے اپنی پناہ میں رکھ، اور بھے پناہ دے ہر ہرائی سے، اور بھے جورزق تونے عطائر مایا ہے اس پر قناعت میسے فر ما،
اور اس میں میرے لئے ہر کت عطائر ما۔ اے اللہ اپنے پاس آنے
والوں میں بھے سب سے مکرم بنا، اور اے تمام جہانوں کے پالنہار
اپنی ملا قات تک میرے لئے استقامت کی راہ کولازم کردے)۔

نیا کپڑا پہننے والے کاحمد بیان کرنا:

10- نیا کیڑا کینے والے کے لئے تمدیلان کرنامستحب ہے۔ چنا نی حضرت معاذبین انس کے روایت ہے کہ رسول اللہ علیہ نے ارشا و فرمایا: "من لبس ثوبا جدیدا فقال: الحمد لله الذي کساني هذا، ورزقنيه من غیر حول مني ولا قوة غفر الله له ما تقدم من ذنبه" ((جوشخص نیا کیڑا کیمن کریدوعا پڑھے: "الحمد لله الذي کساني هذا، ورزقنیه من غیر حول منی ولا قوق" (تمام تعریفی الله تعالی کے لئے فاص بیل جس نے منی ولا قوق" (تمام تعریفی الله تعالی کے لئے فاص بیل جس نے بی کیڑا پہنایا، اور میری کسی قوت وطاقت کے بغیر جھے یہ عطا فرمایا) تو الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرماد سے بیل ایک الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرمایا کیلئی الله تعالی اس کے پیچھے گناه معان فرمایا کیلئی کیلئی کے الله تعالی اس کے بیل کیا دیا کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کا دیا کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کیلئی کو کیلئی ک

سوكرا ٹھنے والے كاحمد بيان كرنا:

19 سوكرا شخصف والے كے لئے حمد بيان كرنامستحب ہے۔ رسول الله منظم جب سوكر ائتحت تو بيد وعاء برا حصت: "الحصد لله الذي الحيانا بعد ما أماتنا، وإليه النشور" (") (تمام تعريفيس الله تعالى

- (۱) حدیث المن لبس ثوباً جدیدا فقال کی روایت ایوداؤد (۳۱۸ ما هم محرّت عبیدهاس) نے کی ہے اوراین مجرنے اس کو صورتر ار دیا ہے جیسا کہ الفقوحات المیانید (۱۸ ۳۰۰ طبع کمیرید) میں ہے۔ نیز دیکھئے الافز کارللووی م ۱۲۔
- (٣) حديث: "كان إذا استيقظ قال: الحمد لله....." كي روايت بخاري (٣) (الفتح ١١/ ١٣٠٠ فيم استقير) نيكي بيد

کے لئے خاص ہیں جس نے جمیں مارد سے کے بعد زندگی بخشی اور ای کے باس لوٹ کر جانا ہے)۔

حضرت عائشاً نبی علی الله الله تعالی راتی بیل کرآپ علی الله الله و حده الا شریک له الله و حده الا شریک له اله الملک و له الحمد، و هو علی کل شیء قدیر الا غفر الله تعالی له ذنوبه و لو کانت علی کل شیء قدیر الا غفر الله تعالی له ذنوبه و لو کانت مثل زبد البحر" (جو بنده بی الله تعالی ک طرف ہ ابی روح کافا کے لوائے وائے (سوکر المحنے) پر بیدعاء پر ھے: " لا الله الا الله و حده لا شریک له اله الملک و له الحمد، و هو علی کل شیء قلیر" (نبیل ہے کوئی معود سوائے الله تعالی کے وہ تنبا کل شیء قلیر" (نبیل ہے کوئی معود سوائے الله تعالی کے وہ تنبا کے ایرای کے اور ای معافی نر کے تیاں ہے اور ای معافی نر کے تیاں کے اور ای معافی نر اور وہ ہر چیز پر تا در ہے) تو الله تعالی اس کے گناه معافی نر اور وہ ہر چیز پر تا در ہے) تو الله تعالی اس کے گناه معافی نر اور وہ ہر چیز پر تا در ہے) تو الله تعالی اس کے گناه معافی نر اور چیز ہیں ، خواہ وہ سمندر کے جھاگ کے ہر ایر ہوں)۔

⁽۱) عدیث: "إذا استيقظ أحد كم فليقل: الحدد الله اللي" ابن السي خ مل اليوم والليله (رص ۴ طبع دائرة المعارف العثمانيه) على كي هج، اور الفقوحات على مبح كرابن حجر نے اس كوشن قرار ديا ب(ار ۱۹۹۱ طبع المهريد) -

 ⁽۲) حدیث: "ما من عبد یقول عدد رد الله روحه....." کی روایت
این استی نے مل الیوم واللیله (رص ۳ طبع دائر قالمعا رف العمائيه) میں
کی ہے ابن حجر نے اے ضعیف کہا ہے جیسا کہ الفقوعات الربائیه
(۱/ ۲۹۲ طبع کمیرید) میں ہے، نیز دیکھئے: الاؤکا رللووک رص ۱۱۔

بسترير لينتة وفت حمد بيان كرنا:

وضو كن شروع بين اوروضو سے فراغت برحمه بيان كرنا:

١٦- وضو بين حمد بيان كرنامتحب هـ، چنانچ بسم الله كے بعد وضو
كرنے والا به دعا پڑھے: "الحمد لله الذي جعل المماء طهودا" (تمام تعريفين اس الله كے لئے فاص بين جس نے پانی كو پائی كا فرميم بنلا) - اور سلف سے منقول ہے كر آپ علي في سے الله وعا كے بير الفاظ بھی نقل كے گئے بين: "باسم الله العظيم ، والحمد لله على دين الإسلام" (الله تعالی كی علی دون الإسلام)

(۱) عدیت: "إذا أویشها إلى فوانسكها أو إذا أخلهها....." كی روایت بخاری(انتخ ۱۱۱ ۱۹۱ طبع الترفیه) اورسلم (سهر ۱۹۰۱ طبع الحلمی) نے کی ہے۔ (۲) الاذ كارللمو و كرص ۸۳

کے ام سے شروع کرنا ہوں اور تمام تعرفینیں اللہ تعالی کے لئے خاص ہیں جس نے دین اسلام میسر فرمایا)۔

و فسو سے فارغ ہوکرحمد بیان کرنامتحب ہے۔ و فسو سے فارغ يموكر بيادعا يرجمي جائے:" أشهد أن لا إله إلا الله وحده لاشريك له، وأشهد أن محمداً عبله ورسوله، اللهم اجعلني من التوابين، واجعلني من المتطهرين. سبحانك اللهم و بحمدك، أشهد أن لا إله إلا أنت، انستغفوک و اتوب البیک" (میں کوائی دیتا ہوں کہ اللہ تعالی کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے، اس کاکوئی شریک نہیں، اور میں کوائی دیتا ہوں کرمجمہ اللہ کے بندے اور اس کے رسول ہیں۔اے الله بھے تو بہ کرنے والوں میں سے، اور خوب خوب یا کی حاصل كرنے والوں ميں سے بنا۔اے الله ميں تيري سيج اور تيري حمد بيان کرتا ہوں، میں کوای دیتا ہوں کہ تیرے علاوہ کوئی بھی لائق عبادت نہیں، میں جھے سے مغفرت طلب کرنا ہوں، اور تیری طرف لوبٹا ہوں)۔ نیز آپ علیہ نے فرمایا: ''من توضأ فأسبغ الوضوء ثم قال عند فراغه من وضوئه:سبحانك اللهم وبحمدک، أشهد أن لا إله إلا أنت، أستغفرك و أتوب إليك ختم عليها بخاتم فوضعت تحت العرش فلم يكسر الى يوم القيامة" (1) (جس نے وضوكيا اور الي عرض كيا، پھروضو سے فارغ بوكر بيدعا يرضى:سبحانك اللهم وبحمدك، أشهد أن

⁽۳) حدیث: "باسیم الله العظیم" کی روایت دیلمی نے سندائر روس ش کی ہے جیسا کراتھاف السارة المتقیمی (۳۸ سهم کمیمریہ) ش ہے اور

⁼ اس کی مند ضعیف ہے۔

⁽۱) حدیث: "نسبحالک اللهم و بحمد ک الشهد....." کی روایت ابن استی (رص و طبع دائر قالعارف العثمانیه) نے کی ہے بیٹمی نے بھی انجمع (۱؍ ۶۳۳ طبع القدی) میں اس کا ذکر کیا ہے اور کہا کہ طبر الی نے الاوسط میں اے روایت کیا ہے اور اس کے رجال میچ کے رجال ہیں۔

لا إله إلا أنت، أستغفوك و أنوب إليك تواس رايك مهر الكاكرا مع مش كم ينچ ركاديا جاتا ہے، جمار وزقيامت تك بيس توژا جاتا ہے)۔

حال دریافت کئے جانے برحمہ بیان کرنا:

۲۲- جس شخص ہے اس کی خیر بہت اور حال دریا فت کیاجائے اس
کے لئے حمد بیان کرنامستحب ہے، چنا نچ سیح بخاری بیس حضرت ابن
عباسٌ ہے روایت ہے کہ حضرت علیؓ رسول اللہ علیہ ہے جس بیس آپ
عُلیاتُو جب رسول اللہ علیہ ہی اس تکلیف بیس سے جس بیس آپ
علیہ ہے گا انتقال ہوا تو لوگوں نے ان ہے ہو چھا: اے ابو انحسن: رسول
اللہ علیہ ہی طبیعت کیسی ہے؟ تو حضرت علیؓ نے فر مایا '' الحمد للہ
آپ ٹھیک ہیں'(۱)۔

۳۳- بوشخص کی کومرض یا کی اور پریتانی میں بتایا و کھے اس کے لئے بھی حمد بیان کرنامستحب ہے، چنانچ حضرت ابو ہر برڈ سے روایت ہے، وہ نجی عیالی نے سالی کی سے بولی کی اس کے بوہ نوائی میں کا آپ علی کے لئے اللہ کا داندی عافائی مما ابتلاک به، و فضلنی علی کثیر ممن خلق تفضیلا، لم یصبه ذلک البلاء "(م) (جس نے کی کوکس پریتانی میں بتایا و کھر یہ وعا پریمی: "الحمد لله الذي عافائی مما ابتلاک به، و فضلنی علی کثیر ممن خلق تفضیلا "(تمام تعریفی اللہ کے فضلنی علی کثیر ممن خلق تفضیلا "(تمام تعریفی اللہ کے فضلنی علی کثیر ممن خلق تفضیلا "(تمام تعریفی اللہ کے فضلنی علی کثیر ممن خلق تفضیلا "(تمام تعریفی اللہ کے

لئے فاص ہیں جس نے جھے ال مرض یا پر بیٹانی سے عافیت بخشی جس میں تو بہتا ہے، اور بہت ہی مخلوق پر جھے نشیلت عطائر مائی) تو اس شخص کو وہ مصیبت لاحق نہیں ہوتی)۔ نو وی نے کہا: علاء کہتے ہیں کہ بیدعا اس طرح آ ہستہ پراھنی چا ہے کہ خودی کو سنائی دے، اور اس کو مصیبت زدہ شخص نہیں سکے تا کہ اس کے ول کو اس سے تکلیف نہ ہوت الا بیک اس کی وہ مصیبت معصیت ہوتو اگر کسی مفسد ہ کا اند چشہ نہ ہوتو اسے بیدعا سنانے میں مضا کہ نہیں (ا)۔

۳۲-بازاریم واقل ہونے والے کے لئے بھی حمد بیان کرا متحب میں بہت چائی حضرت عمر بن افطاب سے روایت ہے کہ رسول اللہ علیہ نے فر الیا: "من دخل السوق فقال: لا الله الا الله وحله لا شریک له، له الملک وله الحمد، یحیی ویمیت و هو حی لا یموت، بیله الخیروهو علی کل شیء قلیر، کتب الله له آلف آلف حسنة، و محاعنه آلف آلف سیئة، و رفع له آلف آلف درجة" (۲) (جوشی بازاریم الف سیئة، و رفع له آلف آلف درجة" (۲) (جوشی بازاریم الف سیئة، و رفع له آلف آلف درجة" (۳) (جوشی بازاریم له الف الله و حله لا شویک له، وائل ہوکر یوعاء پر ہے: "لا الله الله و حله لا شویک له، له المملک و له الحمد، یحی و یمیت وهو حی لا یموت، له المملک و له الحمد، یحی و یمیت وهو حی لا یموت، بیده الخیر وهو علی کل شیء قلیر" (الله تعالی کے واکوئی ساجی نہیں، تمام تر بیده الخیر وهو علی کل شیء قلیر" (الله تعالی کے واکوئی ساجی نہیں، تمام تر بادئا ہت ای کے لئے ہواورتام تعریفی ای کے لئے ضوص ہیں، بادئا ہت ای کے لئے ہواوری بارتا ہے اور وہ زندہ ہے، ال پرموت طاری وی زندہ کرتا ہے اور وی بارتا ہے اور وہ زندہ ہے، ال پرموت طاری شیل ہوتی، نیر اور زخوائی ای کے قبنہ وقد رہ بیل ہی ہوت طاری نہیں ہوتی، نیر اور زخوائی ای کے قبنہ وقد رہ بیل ہوت طاری نہیں ہوتی، نیر اور زخوائی ای کے قبنہ وقد رہ بیل ہوت طاری نہیں ہوتی، نیر اور زخوائی ای کے قبنہ وقد رہ بیل ہوت ہوت کو وہ کو ایکوئی ساجی کی بیل ہوت طاری

⁽۱) لأ ذ كارللبو وي ۱۸ ۳۲۹

 ⁽۲) حدیث "من دخل المسوق فقال الا إله إلا الله" كى روایت تر ندي (۱/۵) حدیث "من دخل المسوق فقال الا إله إلا الله" كى روایت تر ندي (۱/۵) منظان ۱۹ سام طبع لمحمر به كه نيز ديكھئة ألا ذكا رلمووي ۱۹۵۸ م.

⁽۱) حطرت على كرقول: "أصبح بحمد الله بادنا" كى روايت بخارى (الفقح الرحد على الله بادنا كا روايت بخارى (الفقح الرحد على الفقيد) في سب نيز در يكف الأوكار للمووى رود م

 ⁽۲) حدیث: "من رأی مبلی فقال....." کی روایت ترندی (۷۵ ۹۳ ۴ طبع الحلی) نے کی ہے اور پیاطر ق کے اعتبار ہے حس ہے نیز دیکھئے: الأؤكار للووک ۲۹۹ سے

ر تاور ہے)۔ اللہ تعالی ال شخص کے لئے دی لا کھ نیکیاں لکھ دیتے ہیں، اور اس کی دی لا کھ ہرائیاں معاف فر مادیتے ہیں، اور اس کے دی لا کھ درجات بلندفر مادیتے ہیں)۔

نماز میں چھنکنے والے کاحمہ بیان کرنا:

۲۵- اگر نماز براجتے ہوئے چھینک آجائے تو حضیہ اور حنابلہ کے نز دیک جبراً الحمد لله کبنا مکروه ہے، اور اگر بغیر تلفظ کےصرف دل ہی دل میں الحمد للہ کو یہ لیے تو اس میں کوئی مضا کقتہ بیں (⁽⁾ اور ثا فعیہ کے نز دیک الحمدللد کبنا حرام ہے، اس لئے کرحضرت معاوید بن الحکم کی روایت ہے، ووفر ماتے ہیں کہ میں رسول اللہ علیہ کے ساتھ نماز میں تھا کہ لوگوں میں سے ایک مخص کو چھینک آئی تو میں نے کہا: يو حمك الله، تولوك جُص كتكهيون عدد كمض كله، مين نے كبا: الله تنهارا بها كرے، ميرى طرف كيون و كير بو؟ لوكون في رانوں پر ہاتھ مارے، پھر جب رسول اللہ علیہ متو جہ ہوئے تو جھے بلایا، میرے ماں باب آپ علیہ ریتر بان ہوں، آپ علیہ ہے بہتر تعلیم دینے والا معلم میں نے نہیں دیکھا، اللہ کی نشم رسول اللہ ملائق نه بحص مار ااور نه و انت و بيث كيا، پر فر مايا: "إن صلا تنا هذه لا يصلح فيها شيء من كلام الآدميين، إنما هي التسبيح والتكبير وقواء ة القوآن" (بماري ال نمازش آ دمیوں کی گفتگو میں سے پچھ بھی درست نہیں، یہ نماز توشیع وتکہیر اور قر اُت قر آن کانام ہے)۔

اوراگر قضاء حاجت کے وقت چھینک آ جائے تو بھی الحمدللد

- (۱) مراتی الفلاحر ۲۸۳،کشاف القتاع من متن الا قتاع اروم ۳۸۱،۳۳۰
- (۲) عدیث: "إن صلا ندا هده لا يصلح فيها شيء من....." كى دوایت مسلم (۱۸ ۱۸ سطیع الحلی) نے كى ہے۔ نیز دیکھئے: لم ذہب فی قد لا مام الشافعی اس ۹۳، ۱۳۳۔

كهنا مكروه ب، البنة الربغير تلفظ كي صرف دل مين دل كهد في تو كوفى حرج نبيس، رسول الله عليه المرشاد بي الأوجة الن المرشاد بي الكوفى حرج نبيس، رسول الله على طهو "(ا) (باكل كي بغير الله تعالى كا ذكر جهي الله يلا على طهو "(ا) (باكل كي بغير الله تعالى كا ذكر جهي مكروه والبند به)-



(۱) عدیدہ: "کو هت أن أذ کو الله إلا علی طهو" کی روایت ایوداؤد (۱/ ۲۳۸ طبع عزت عبید دھاس) اور حاکم (۱/ ۱۲۵ طبع دائرۃ المعارف العثمانیہ) نے کی ہے اور حاکم نے اسے سیح قر اردیا ہے اور ڈیمی نے ان کی موافقت کی ہے۔

نیز دیکھنے مراتی انفلاح اس المبدب فی فقہ لا مام انشافتی ار ۳۳۳، ۴۸۳ ، جوہر لاکلیل از ۱۸ الشرح الکبیر ار ۲۰ ا، الاذ کارللووی ۳۸ ، ۳۳ س

. تحسنیک

تعریف:

۱ - لغت میں تحسنیک کا ایک معنی یہ ہے کہ تھجور کو ہاریک کر کے بچہ کے منہ کے اندرتا لوپر رگڑ اجائے (۱)۔

تحسنیک کو اصطال حا مذکورہ معنی میں بھی بولا جاتا ہے اور اس کے علاوہ دوہر نے معنی میں بھی ، جیسے میت وغیرہ کی تحسنیک ۔ ۲ – میت کی تحسنیک بیہ ہے کہ کپڑے کا لکر الے کرتا لو اور شوڑی کے ینچے گھمایا جائے ۔ اس کی تنصیل" جنائز" میں ہے۔ سا۔ وضو میں تحسنیک بیہ ہے کہ وضو کرتے ہوئے تا لو اور شوڑی کے

۳- وسویل حسنیک بیہ کروسوکرتے ہوئے نالواور تھوڑی کے
ینچے کے حصد کا مسے کیا جائے جس کی تفصیل" وسو" میں ہے۔
ما۔ تحسنیک مُنامہ جسے تی بھی کہتے ہیں بیہ کے گری کے ایک
دولیت ٹھوڑی کے نیچے سے دینے جائیں (۲)۔

نومولود بچه کی تحسنیک: شرعی تکم:

۵- نومولود بچه کی تحسنیک مستحب ہے، صحیحین میں حضرت ابو بردہ اللہ کی حدیث ہے، وہ حضرت ابوموی کی حدیث ہیں: انہوں نے کی حدیث ہے، وہ حضرت ابوموی کی سے تقل کرتے ہیں: انہوں نے فرمایا: "ولد لی غلام فاتیت النبی النہی اللہ کی فسیماہ ابوا اهیم

(٢) كثاف القتاع الر١١٩ ٨١٠ ٢٨

و حنکہ بتموہ "⁽¹⁾ (میرے یہاں بچہ پیدا ہوا، میں اے نبی علیفیے کے پاس لے گیا، تو آپ علیفیے نے اس کانام ابر ائیم رکھا اور کھجورے اس کی تحسنیک فرمائی)۔

۲- بچہ کی تحسنیک مرد وعورت دونوں کے لئے درست ہے، نبی مالیسیان فیبوک علیہ کان یونتی بالصبیان فیبوک علیہ کے ایس سے اللہ کان یونتی بالصبیان فیبوک علیہ و بحنکھم" (آپ کے پاس بچلائے جائے تو آپ علیہ کے اس کے لائے جائے تو آپ علیہ ان کے لئے برکت کی دعا فر ماتے اور ان کی تحسنیک فر ماتے)۔
 فر ماتے)۔

این الیم نے بیان کیا ہے کہ اام احمد بن خبل کے یہاں بچہ پیدا ہواتو انہوں نے ورت کوال کی تحصنیک کے لئے کہا (۳)۔

2 - نومولود کی تحصنیک تحجور سے کی جائے گی، اس لئے کہ حضرت اسائے سے روایت ہے کہ حضرت عبد اللہ بن الزبیر ان کے حمل میں بخصے وہ فر ماتی ہیں: "خوجت و آنا مُتیم، فاتیت المسلینة، فنزلت بقیاء، فوللته بقیاء، ثم آتیت به النبی مُنْ اللہ فَانِی فوضعته فی حجوہ، ثم دعا بتموة فمضغها ثم تفل فی فوضعته فی حجوہ، ثم دعا بتموة فمضغها ثم تفل فی فیم، فکان أول شیء دخل جوفه ریق رسول الله الله اللہ اللہ منازی میں حنکہ بتموة، ثم دعا له وہوک علیه، اور مدینہ میں آگر المرسی کی جبیدا ہونے کے تربیب تھا، اور مدینہ میں آگر قباء میں نظل جب کہ بچم بیدا ہونے کے تربیب تھا، اور مدینہ میں آگر قباء میں نظل جب کہ بچم بیدا ہونے کے تربیب تھا، اور مدینہ میں آگر قباء میں

⁽۱) لسان العرب، لمصباح لممير: ماده "حَك" ب

⁽۱) حشرت ایوموی کی حدیث محوله لی غلام فلیت الدی نظایش کی روایت بخاری (انفتح مر ۸۸۷ طبع استان به کورسلم (سهر ۱۲۹۰ طبع مجلی) نے کی ہے۔

 ⁽۲) عدیث: "کان یؤنی بالصیان فیبوک علیهم و یحدکهم" کی روایت مسلم (۱/۲۳۱ طبع الحلی) نے کی ہے۔

⁽۳) تحفظ الودود في احكام المولود ص٩، فتح الباري ٥، ٥٨٨، ١/٩ ٣٣، قليو لي وتحميره ١٨٧، دوهند الطاكبين ١٣٣٣ طبع أسكتب وإسلامي، أمغني ٨، ١٩٥٠، الحطاب ٢٥١، حاهيد الجمل علي شرح المنبح ١٨٩، ٨-

⁽٣) عديث أساعة "ألها حملت بعبد الله بن الزبيو" كي روايت بخاري (الفتح ١/ ٢٣٨ طبع التلقير) نے كي ہے۔

تحسنیک ۸-۹

قیام کیا، اور بچہ قباء میں پیدا ہوا، پھر میں اے لے کرنبی علیاتی کے پاس کئی اور آپ علیاتی کی آغوش میں دے دیا، آپ علیاتی نے ایک محجور منگائی، اے چبایا اور اپ منہ ہے اس کے منہ میں ڈال دیا تو اس کے منہ میں ڈال دیا تو اس کے منہ میں اور اپ اور اپ منہ ہے اس کے منہ میں ڈال دیا تو اس کے پیٹ میں سب سے پہلے رسول اللہ علیاتی کا لعاب پڑا، پھر آپ علیاتی نے ایک محجور سے اس کی تحسیک فرمائی، پھر اس کی تحسیک فرمائی، پھر اس کے لئے برکت کی دعائیں کیس)۔

اگر تھجور میں نہ ہوتو تر تھجور ہے، ورنہ کسی بھی مینٹھی چیز ہے تحسنیک کی جائے گی، نیز مینٹھی چیز وں میں شہدسب سے زیا دہ بہتر ہے، اس کے بعد وہ چیزیں جن کوآگ کی آٹے نہ گلی ہو، اس کی نظیر روزہ افطار کرنے والی اشیاء ہیں۔

۸ - بچہ جس روز بیدا ہوائ دن تحسنیک کی جائے گی، این تجر کہتے ہیں ک' نداق' کی قید الفاظ عدیث کی اتبائ کرتے ہوئے لگائی گئی ہے، اور لفظ' نداق' بول کر وقت مراد لیاجا تا ہے تحسنیک کے وقت مستحب ہے کہ تعسنیک کرنے والا بچہ کامنہ کھولے، تا کہ کھجور وغیر دکی مشحاس بچہ کے بیٹ میں پہنچ جائے (۱)۔

گیری میں تحسنیک:

9 - پیڑی میں تحسنیک کی صورت یہ ہے کہ شوڑی کے پنچے پیڑی کے ایک دو بی تھمائے جائیں ، اور پیڑی میں تحسنیک مالکیہ اور حنابلہ کے ایک سنت ہے ، ان کے بز دیک اس سلسلہ میں حاصل کام یہ ہے کہ تحسنیک وشملہ کے بغیر پیڑی مکروہ ہے ، اگر تحسنیک وشملہ و نوں ہوں تو بینہ ایر آگر ان دونوں میں دونوں ہوں تو بینہا بیت مکمل درجہ اور سنت ہے ، اور اگر ان دونوں میں ایک بھی پایا جائے تو کر اہت ختم ہوجاتی ہے ، البتہ کر اہت کی ملت میں اختا ان ہے ، ایک قول یہ ہے کہ اس کی وجہ سنت کے خلاف ہونا

(۱) نخ لمبارۍ ۱۸۸۸ ۲۰۵۸ ۳۳ س

ہے۔ حفیہ اور ثنا فعیہ کے فزد یک پگڑی میں تحسنیک مسنون نہیں ہے بلکہ صرف شملہ مسنون ہے (۱)۔



⁽۱) ابن هایدین ۵ر ۸۱ مهموایب الجلیل ار ۳۵۱ هامید الجمل ۴ر ۹ ۸، کشاف القتاع ار ۱۹۱۹ ۲۸ س

چیز میں گر جانے سے ہوتا ہے،جس کی تفصیل عنقریب آری ہے۔

تحول کے احکام:

تحول کے پچھ احکام ہیں جومقام کے لحاظ سے مختلف ہوتے رہتے ہیں، چنداہم احکام درج ذیل ہیں:

الف-عين كاتحول اورطهارت وحلت ميں اس كاارث:

سا- حنف اورما لکیہ کا مذہب، اور امام احمد کی ایک روایت یہ ہے کہ کوئی نجس اھین استحالہ (حقیقت کے بدلنے) سے پاک ہوجا تا ہے، چنا نچ تا پا کی کی را کھا پا کے نہیں ہوتی، اور وہ نمک تا پا کی نہیں ہوتی، اور وہ نمک تا پا کی نہیں ہوتی ، اور وہ نمک تا پا کی نہیں ہوگا جو پہلے گدھا یا خزیر یا پچھ اور رہا ہو اور نہیں وہ نجاست جو کنویں میں گرکرمٹی ہوجائے تا پا ک رہے گی، اور ای طرح شراب جب ہر کہ بن جائے تو تا پا ک نہیں رہے گی، خواہ خودی سرکہ بن جائے یا گسی انسان وغیرہ کے فعل سے ہے ، اس لئے کہ اس طرح اس کی حقیقت بدل جاتی ہے ، اور اس لئے کہ شریعت نے وصف نجاست کو اس حقیقت سے وابستہ کیا ہے ، تو اس حقیقت کے ختم ہوجائے گا، لبذ اجب ہڈی اور کوشت نمک ہوگئی تو ان دونوں کا حکم نمک می کا ہوگا ، اس لئے ک کر شریعت کے کہ کہ کو اس حقیقت کے ختم کوشت نمک ہوگئی تو ان دونوں کا حکم نمک می کا ہوگا ، اس لئے ک

شریعت میں اس کی بہت کی نظیریں ہیں، جیسے علقہ (بستہ خون) ناپاک ہے، کیکن جب وہ مضغہ (کوشت کا لؤٹھڑ ۱) میں بدل جائے تو پاک ہوجاتا ہے، اور کشید کیا ہوارس پاک ہے، کیکن اگر وہ شراب ہوجائے تونا پاک ہوجاتا ہے۔

ال سے بیات واضح ہوئی کہ جب کسی شن کی حقیقت بدل

تحول

تعریف:

ا - تحوّل افت میں ' تحوّل ' کا مصدر ہے ، اس کے معنی ہیں:
ایک جگہ سے دوسری جگہ نتقل ہوجانا ، اور اس کا ایک معنی زوال بھی
ہے ، بولا جاتا ہے : ' تحول عن الشيء ' یعنی اس کے پاس سے
فلاں چیز کسی دوسر ہے کے پاس جاتی رہی۔

ال کے معنی تغیر اور بدلنے کے بھی ہیں، اور تحویل'' حواً ل'' کا مصدرہے، جس کے معنی نقل کے ہیں، اس لئے تحول ، تحویل کا اثر اور متیجہ ہے (ا)۔

فقہا ہتول کواں کے بغوی معنی میں ستعال کرتے ہیں۔

متعلقه الفاظ:

استحاليه:

۲- الغت میں استحالہ کا ایک معنی کسی چیز کا اپنی طبیعت و وصف ہے۔
 کیل جانا ہے ، اور ایک معنی ممکن نہ ہونا ہے (۴)۔

چنانچ استحالہ بھی تحول کے معنی میں بولا جاتا ہے، جیسے میں نجس یعنی گندگی ہشر اب اور خزر کا استحالہ یعنی ان کا اپنی ذات سے نکل جانا اور ان کے اوصاف کا ہدل جانا ۔ بیداستحالہ جلنے ہسر کہ ہنانے یا کسی

⁽۱) - مخارالصحاح، الصحاح في الماهير والعلوم لسان العرب مادهة " حول" ـ

⁽٢) لمصباح لمعير ماده ''حول''۔

جائے تو ال رپمرتب ہونے والا وسف بھی ختم ہوجا تا ہے (۱)۔

بٹا فعیہ کے زویک اسل اور حنابلہ کے ظاہر مذہب میں بیہ ہے کہ کوئی نا پاک چیز حقیقت کے بدلنے سے پاک نہیں ہوتی ، لہذا کتا وغیرہ اگر نمک کی کان میں گر کر نمک بن جا کمیں ، اور نجاست کی ایدھن سے اٹھنے والا دھوال ، ای طرح اس سے اٹھنے والا بھاپ جب کسی ٹھوں جسم پرتر اوٹ کی شکل میں جمع ہوجا کمیں ، پھر ٹیکنے گئیں تو بیسب نجس ہول گے والدہ ک

الله - بثا فعیہ اور مالکیہ کے یہاں اس میں کچھ مستثنیات ہیں، مثلاً شراب اگر خود بی سرک بن جائے تو سرک بن جانے سے وہ پاک ہوجاتی ہے، اس لئے کہ نجاست کی ملت نشہ بیدا کرنا ہے اور وہ ملت ختم ہوگئی، نیز اس لئے رس عموماً شراب بنے کے بعد بی سرک بنتا ہے، تو اگر اس کی پاک کا تھم نہ لگایا جائے تو سرک حاصل نہیں ہو سکے گا، جبکہ سرک بالا تفاق حلال ہے۔

اور اگر آ دمی ای میں پھھ ڈال کر اس کاسر کہ بنا لے تو ان کے نزد یک وہ یا ک نہ ہوگی۔

اور شافعیہ نے صراحت کی ہے کہ اگر ہوا کے گرادیے کی وجہ سے شراب سرکہ بن گئی تو بھی ان کے بیباں وہ پاکٹیس ہوگا،خواہ سے شراب سرکہ بن گئی تو بھی ان کے بیباں وہ پاکٹیس ہوگا،خواہ سرکہ بنانے میں اس کا دخل ہو،جیسے پیاز اور گرم روٹی یا دخل نہ ہوجیسے سرک بنانے میں اس کا دخل ہو،جیسے پیاز اور گرم روٹی یا دخل نہ ہوجیسے

ای طرح اس میں بھی کوئی فرق نہیں کہ جو چیز اس میں ڈالی جائے وہ پاک ہو یا ناپاک ہو^(m) اور اس موضوع میں مزید تفصیل ہے جسے اصطلاح '' فتخلیل'' اور'' استحالہ''میں دیکھا جائے۔

(1) - ابن ملدِ بن اربه ۲۰ ۵ اندام الدروقی ار ۵ ۵ س۵ ،الانصاف ار ۱۸ سه انتخی ار ۲ ک

ب-کھال کودیا غت کے ذریعہ یا ک کرنا:

۵- وباغت سے پہلے مروار کی کھال کے ناپاک ہونے رفقہاءکا اتفاق ہے (۱) البتہ وباغت کے بعد اس کی پاک میں فقہاءکا اختابات ہے جس میں فقہاء کے رجی نات مختلف ہیں ، اور اس موضوع کی مختلف ہیں ، اور اس موضوع کی مختلف ہیں اور اندابیت ہیں جس کی تفصیل ہزئیات ہیں اور ندابیب میں متعدد اختابا فات ہیں جس کی تفصیل فقہاء نے نبجاست اور اس سے پاکی کی کیفیت پر کلام کرتے ہوئے کی ہے اصطلاح '' وباغت' کی طرف رجوئ کیا ہے ۔

ج -وصف یا حالت کاتحول: تھہر ہے ہوئے یانی کا جاری ہوجانا:

الله حفظ كيزويك مختاري ہے كالفهر اہوانا پاك پائى اگر جارى پائى بين تبديل ہوجائے تو صرف جارى ہوجائے كى وجہ سے پاک ہوجاتا ہے، اور جارى وہ پائى كہلاتا ہے جسے لوگ جارى سجھتے ہوں (٣) كہ پائى ايك طرف سے داخل ہور ہاہواورائى وفت دوسرى محلف طرف سے نكل رہاہو، اگر چہ نكلنے والا پائى كم بى ہو، اس لئے كہ وہ حقیقنا جارى ہے، اور پھھ پائى كے نكل جانے ہے پائى بين نجاست كے باقى رہنے بين شك پيدا ہوگيا، اور شك كے ہوتے ہوئے وہ نجاست ندرى ۔

اس مسلمیں حنفیہ کے فز دیک دوضعیف اقوال ہیں۔ پہاوتول میہ ہے کہ صرف جاری ہوجانے سے وہ پاک نہ ہوگا،

 ⁽٣) نهاية الحناج الر٢٣ طبع مصطفى البالي لحلى ، أمغنى الر٣ ٢ طبع مكة بنة الرياض الحديث ، ووحة الطاكبين الر٣٨ طبع أمكتب الإسلا كاللطباعة والنشر _

⁽۳) بالقيراني.

⁽۱) د اغت بیل کھال کوم بی سی "بھاب" اور" مسک "کتے ہیں۔

 ⁽۲) ابن عابدین ار۳ ۱٬۱۳۵ اطبع داراحیاء انتراث الإسلاک پیروت، حاشیة
 الدسوتی ار ۵۵٬۵۳ ه طبع دارالفکر، امغنی ار۲۲ اوراس کے بعد کے صفحات۔

⁽۳) الانتيارارهاب

بلکدات یانی کا تکانا ضروری ہے جتنے میں نجاست ہو۔

اور دوسر اقول میہ ہے کہ اس سے تین گنے پائی کا تکانا ضروری ہے۔

مختار قول اوردیگر اتو ال کے درمیان نمر ق اس و فتت ظاہر ہوگا کہ قول مختار کے امتبار سے حوض سے نکلنے والا پانی صرف نکلنے علی سے پاک ہوجائے گا اور دیگر دو اتو ل کے لحاظ سے تھر سے ہوئے پانی کی باک کا حکم لگائے جانے سے قبل وہ پاک نیس ہوگا۔

یمی اختلاف کنویں بنسل فاند کے حوض اور برتنوں کے تعلق ہے (۱)۔

مالکیہ کے زردیک کیٹر ناپاک پائی تغیر کے زائل ہونے سے پاک ہوجاتا ہے، خواہ یہ تبدیلی تلیل یا کیٹر یا مطلق پائی ڈالنے سے ہوئی ہو، یا اس میں دوسری چیز ملا ہوایا کوئی قیدلگا ہوا ایسا پائی ملانے ہوئی ہو، یا اس میں دوسری چیز ملا ہوایا کوئی قیدلگا ہوا ایسا پائی ملانے سے ہوا ہوجس کی نجاست ختم ہوگئا ہو، یا یہ تبدیلی اس میں کوئی دوسری چیز ڈال دینے سے جیسے ملی یا گارے سے ہوئی ہو، کیئن جوچیز اس میں ڈائی گئی ہواس کا کوئی وصف اس میں ظاہر نہ ہو، اس لئے کہ اس کی نالی کی صرف تغیر کی وجہی سے تھی اور وہ تغیر ختم ہوگیا ، اور تکم اپنی ملک بالی کی صرف تغیر کی وجہی سے تھی اور وہ تغیر ختم ہوگیا ، اور تکم اپنی ملک کے ساتھ بی باقی رہتا ہے یا ختم ہوتا ہے، جیسے کہ شراب جب وہ سرک ہوجائے ، اور اگر وہ خود بدل جائے یا بعض کے نکا لئے سے بدلے تو ہوجائے ، اور اگر وہ خود بدل جائے یا بعض کے نکا لئے سے بدلے تو اس میں دواقو ال جیں (۲)۔

شا فعیدکا مذہب سے کہ پائی جب دو منظے ہوجائے تو وہ ما پاکی کے ملنے سے ما پاک نہیں ہوتا ، کیونکہ صدیث ہے: "إذا کان المماء

قلتین لم یحمل الخبث''⁽¹⁾ (جب پانی دو نظے کے برابر ہوجائے تو اس پرنا یا کی اثر انداز نہیں ہوگی)۔

یال صورت میں ہے جب ک ال کارنگ یامز دیا ہونہ برلے ہوں، لبذ ابد لئے سے ناپاک ہوجائے گا، کیونکہ صدیث میں ہے:
"إن الماء طهور لا ينجسه شيء إلا ما غير لونه أو طعمه أو ريحه" (الماشہ پانی پاک ہے، اے کوئی چيز ناپاک نيس کرتی مروه چيز جوال کارنگ یامز دیا ہو بہل دے)۔

- (۳) عدیده: "إن المهاء طهورلا بدجسه شيء إلا ما....." کی روایت آگی فی فی سند و ایده آو فی سند می رواید آگی سند و بده آو فی سند می الفاظ بر بیل المهاء طاهو (لا إن نغیر ویحه آو طعمه آو لوله بدجاسة نحدث فیها "اور آگی نے کہا کہ برعدید قول فی فیم سند می شخص شخص سند سنتی موجانے کے بعد پالی کی بوجانے می جمیل کوئی اختلاف معلوم بیش فول نے کہا ہے کہ اس عدید کوضعیف قر اردیے برحد ثین کا اتفاق ہے۔" البدر لم می "میل ہے کہ ندکورہ استیاء ضعیف ہے اس لئے نجاست کی وجہ سے بدل جانے والے پالی کے اپاک ہونے پر استدلال کرنا ایما کے متعین ہوگیا۔

جہاں تک حدیث کے پہلے جز "إن المعاء طهور لا بنجسه شيء" کا تعلق ہے اس کی روایت احمد، ابوداؤ داور تر ندی نے کی ہے ور کہا ہے کہ یہ حدیث صن ہے اور یکی بن معین، احمد بن عنبل ورحا کم وغیرہ نے اسے سیح قر اردیا ہے (اسنن اکبر کی لیم بیٹی اس ۲۹۰ طبع البند، تحفۃ الاحوذی اس ۲۰۳، م ۲۰۵ مٹا کع کردہ الکتریة المشاقیہ، ٹیل لا وظار للحوکا کی اس ۳۵، ۳۵ مطبع دار الحیل)۔

⁽۱) این هایو بین از ۱۳۰۰ اسال

⁽٢) حافية الدسوقي الر٢ ١٧، ٢٧.

پس اگر ان اوصاف میں ہے کوئی وصف متغیر ہموجائے تو پائی اپلے ہوجاتا ہے، اور اگر اس کاریغیر خم ہوجائے، خواہ خود بخو دخم ہو یا پائی ملانے سے ختم ہوتو پھر وہ پاک ہوجاتا ہے، اور جو پائی دومشکوں سے کم ہو وہ نجاست کے ملنے سے ناپاک ہوجاتا ہے، اور اگر پائی ملاکر جائے اور اس میں کوئی تغیر نہ ہوتو وہ پاک ہوجاتا ہے، اور اگر پائی ملاکر جائے اور اس میں کوئی تغیر نہ ہوتو وہ پاک ہے اور اگر پاک پائی ملاکر اس میں اضافہ کیا گیا لیکن وہ دو منظے نہ ہوتو وہ پاک نہ ہوگا، اور کہا گیا ہے کہ وہ خود تو پاک ہے، لیکن دوسری چیز کو پاک کرنے والا نہیں (۱)۔

حنابلہ کے نزدیک ناپاک پانی کو پانی کی زیادتی کے ذرمیہ پاک کرنے کے مختلف طریقے ہیں جو پانی کے نین مختلف احوال کے لحاظ سے ہیں۔

وہ نین مختلف احوال ہے ہیں: پانی دومنکوں سے تم یا دومنکوں کے برابر یا دومنکوں سے زیا دہ ہو۔

(1) اگر پانی دومنکوں ہے کم ہوتو دوسر اپانی ملا کرزیا دہ کرنے سے پاک ہوجاتا ہے۔

اگرنا پاک پانی میں ناپاک پانی الا دیا جائے تو وہ تمام ناپاک عی ہوگا، خواہ وہ کتناعی زیادہ ہو، اس لئے کہ ناپاک سے ناپاک کے ملئے سے کوئی پاکی حاصل نہیں ہوتی، جیسے کتے و خزریہ سے پیدا ہونے والی نسل ، اس سے معلوم ہواکہ اگر تغیر زائل ہوجائے اور پانی دو منگے ہوجائے تو وہ پاک ہوجائے گا(۲)، حدیث شریف میں ہے: "افا بلغ الماء قلتین لم یحمل المنجبٹ" (۳) (جب پانی دو منگے کے

برابر بموجائے تو ال ربایا کی اثر انداز نہیں بموتی)، دوسری صدیث ے: "اِن الماء طھور لا ینجسه شيء اِلاماء غیرلونه أو طعمه أو ربحه" (ا) (بلاشه پانی پاک ہے، اے کوئی چیز مایا کئیں کرتی مروہ چیز جوال کارنگ یا ذائقہ یا بو بدل دے)۔

ال میں تمام نجاستوں کا تھم کیاں ہے، لیکن انسان کے پیٹے پائٹا نہ کے بارے میں امام احمد کی اکثر پیٹاب اور ان کے پلے پائٹا نہ کے بارے میں امام احمد کی اکثر روایتیں بیابی کہ ان سے ماء کثیر بھی ناپاک ہوجاتا ہے، الابیاک پائی کی مقد اراتی ہوکہ اس کا نکالناممکن عی نہ رہے، جیسے بڑے تالاب، چنانچے ایسایا نی کسی چیز سے ناپاک نہیں ہوتا۔

(۲) دومری صورت بیک پانی دومنکوں کے ہراہر ہو۔
اگر وہ پانی متغیر نہ ہوتو فدکورہ زیادتی سے وہ پاک ہوجاتا ہے،
اور اگر وہ متغیر ہوتو زیادتی سے اس صورت میں پاک ہوتا ہے جب
اس زیادتی سے تغیر ختم ہوجائے، یا اسے اپنی حالت پر چپھوڑ دیا جائے،
یبال تک کہ دیر تک تھیر ہے دہنے سے اس کا تغیر ختم ہوجائے۔
یبال تک کہ دیر تک تھیر کے دہنے سے اس کا تغیر ختم ہوجائے۔
(۳) تمیسری حالت بیک پانی دومئلوں سے زیا دہ ہو۔
اگر وہ تغیر کے بغیر عی نا پاک ہوتو بغیر زیا دتی کے اس کے پاک
کرنے کا کوئی دوم اطریقہ نہیں ہے۔

اور اگر نجاست سے متغیر ہوکر ناپاک ہوا ہوتو ال کی پاکی کا طریقہ میہ ہے کہ اس میں پائی کا اضافہ کر دیا جائے ، یا ال کے تھیر ب رہنے سے اس کا تغیر ختم ہوجائے ، یا اس میں سے اتنا پائی نکال دیا جائے جس سے اس کا تغیر ختم ہوجائے ، یا اس میں سے اتنا پائی نکال دیا جائے جس سے اس کا تغیر ختم ہوجائے ، اور اس کے بعد بھی پائی دو جائے جس سے اس کا تغیر ختم ہوجائے ، اور اس کے بعد بھی پائی دو شکے یا اس سے زیادہ بچار ہے (۲)۔

⁽۱) - لهمها جللووي وشرحه کلی ۱۲۳،۳۱۸

⁽٣) الكافى ار ١٠، الطبع أكتب لإسلاي _

⁽٣) عديث کي تريخ کذر چکي۔

⁽۱) عديث کي تخ کوريکي۔

⁽٣) - المغنى الر٣٥، ٢٣، الانصاف الر٢٧، الكافى الرااء الر٥٠٨، روصة الطاكبين الر٢١٧، لمغنى الر٩ ٣٣، كشاف القتاع الر٣٠٥

اں موضوع میں تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح'' طہارت'' کی طرف رجو تکیا جائے۔

قبله كى طرف يا قبله يي تحول:

اس پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ نماز پڑھے والا اگر کعبہ کود کیے رہا ہو تو نماز میں پورے بدن کا رخ مین کعبہ کی طرف کرنا اس پر فرض ہے کہ بدن کا ایک عضوبھی کعبہ کے مین ہے نہ پھرے ، اگر بغیر عذر کے کسی دوسری جہت کی طرف پھر گیا تو اس کی نما زباطل ہوجائے گی (۱)۔

چیرہ گھمانے کے متعلق حضے کا مذہب سیا ہے کہ اگر اس کا چیرہ عین کعبہ سے اس طرح پھر گیا کہ بالکلیہ مواجہت ختم نہ ہوئی تو کر اہت کے ساتھ نماز درست ہے (۲)۔

اوربغیرعذراگر سینه کعبہ سے پھر جائے تو نماز فاسد ہے (۳)۔ مالکیہ اور حنابلہ کے فز دیک اگر کسی کا پوراجسم بھی قبلہ سے ہت جائے کیکن اس کے دونوں بیر قبلہ کی طرف ہوں تو اس کی نماز فاسد نہ ہوگی (۴)۔

شافعید کی رائے میہ ہے کہ کعبہ سے کسی دوسری طرف کھومنا اگر جان ہو جھ کر ہوتو نماز باطل ہوجائے گی، اور اگر بھولے سے ہوتو نماز باطل نہیں ہوگی (۵)۔ اس موضوع میں اختلاف اور تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح '' استقبال'' کی طرف رجوع کیا جائے۔

- (۱) ابن عابدین از ۲۸۷، عاهیه الدسوتی از ۳۳۳، انتظاب از ۵۰۸، روضه الطالبین از ۲۱۲، المغنی از ۳۳ ۲، کشاف القتاع از ۳۰۵
 - (۲) این طابرین از ۱۸۸۰،۸۸۷ س
 - (۳) این طاعه بین ۱۸ ۳۳،۳۳۱ س
- (۳) الجطاب الر ۵۰۹،۵۰۹، شرح الزرقاني الر ۱۸۳ طبع دار الفكر، كشاف القتاع الره ۳۷۹،۳۹۹
 - (۵) روهية الطالبين الر١١٣ س

نماز میں قیام ہے قعود کی طرف آنا:

٨- قيام ع تعود كى طرف، اور تعود عديت لين يا پهاو ك بل ليُنے كى طرف [1] تاعده: "المشقة تجلب التيسيو" (مثقت آ سانی کو تھینچ لاتی ہے) کی فروعات میں سے ہے اور اس سلسلہ میں الله الله تعالى كا ارشاد ب: "يُويْدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسُو وَلاَ يُويْدُ بكُمُ الْعُسُو" (الله تمباري تل مين سبولت جابتا ہے اور تمبارے حق میں دھو اری نہیں جاہتا)، دوسری جگہ فر مان خداوندی ہے: '' وَ هَا جَعَلَ عَلَيْكُمُ فِي اللَّيْنِ مِنْ حَوَجٍ (٢)(١٠ نِيمٌ رِوين کے بارے میں کوئی تنگی نہیں کی)، ای لئے اہل علم کا اجماع ہے کہ اگر کوئی تعخص قیام کی طاقت ندر کھے، اور نماز سے پہلے یا نماز کے دوران اس پر حقیقتایا حکما قیام دشو ار ہوجائے ، بایس طورک اے مرض میں زیادتی کا اند بیٹنہ ہو، یامرض کے دریہ سے ٹھیک ہونے میاسم چکرانے کا خوف ہو، یا کھڑے ہونے میں شدید تکلیف محسوں ہوتی ہووغیرہ، تو اس کے لئے بیٹھ کرنماز پڑھنے کی اجازت ہے، اوراگر اس کی بھی استطاعت نہ ہوتو حت لیك كراشاره سے نماز پڑھے، چنانچ نبی علی نے حضرت عمر ان بن صين مع مايا: "صلَ قائمًا، فإن لم تستطع فقاعلًا، فإن لم تستطع فعلى جنب" (شماز كھڑے ہوكريا صو، اگر اتني ہمت نہ ہوتو بیٹھ کر براھو، اگر اتی بھی استطاعت نہ ہوتو پہلو کے تل یراهو)، اور نسانی میں اتنا اضافہ ہے: "فیان کم تستطع فمستلقیا" (اگراس کی بھی استطاعت نہ ہوتو حیت لیٹ کر پراھو)۔ نو الل میں مزید بیہ ہے کہ نوالل میں بغیرعذر بھی قیام کوچھوڑ کر

⁽۱) سورۇپقرە ۱۸۵_

⁽۲) سورۇنچى 🗚 💵

⁽۳) حدیث "صل قانما....." کی روایت بخاری (انتخ ۲۸ ۵۸۷ طبع استانیه) نے کی ہوئیت بخاری (انتخ ۲۸ ۵۸۷ طبع استانیه) نے کی ہے۔ جامع وا صول ۱۳/۵ استانا کع کردہ مکامینہ الحلو الی۔

تعودافتياركرنا درست ہے۔

اس موضوع میں تفصیل ہے جس کے لئے'' کتاب الصلاق'' میں مریض کی نماز کی بحث دیکھی جائے۔

> مقیم کامسافر اورمسافر کامقیم ہونا: الف-مقیم کامسافر ہونا:

9- دو اموریس سے کسی ایک کے پائے جانے سے مقیم مسافر ہوجاتا ہے:

اول بیک سفر کی نیت ہے اپنے مقام کے گھروں ، اور ان ہے متصل شہر کے تو ابعات کو تجا وز کر جائے ، اور اتی مسافت کا ارادہ ہو جس ہے اس سفر کا تحقق ہوجائے جس ہے احکام بدل جائے ہیں۔ اور نیت میں اعتبار متبوع و پیشوا کی نیت کا ہے ، نہ کہ تا ایع کی نیت کا ، چنا نچ شوہر کی نیت ہے ، اور شکر کے سفر کا چھتے تو کی مسافر ہوجاتی ہے ، اور شکر کے سفر کا تحقق تا ند کی نیت ہے ، اور ہر ال شخص کا یکی تکم ہے جس پر دومر ہے کی اطاعت لازم ہوہ جیسے سلطان اور شکر کا امیر (۱)۔ پر دومر ہے کی اطاعت لازم ہوہ جیسے سلطان اور شکر کا امیر (۱)۔ دوم میک اتا مت کے بعد سفر شروع کر دے۔ دوم میک اتا مت کے بعد سفر شروع کر دے۔ اس موضوع کی تفصیل کے لئے دیکھتے "صلاق المسافر" (۲)۔

ب-مسافر کامتیم ہوجانا: ۱۰- درج ذیل امور میں ہے کسی ایک کے پائے جانے سے مسافر مقیم ہوجاتا ہے:

(۱) بدرائع الصنائع ابرسمه طبع دارالکتاب العرلی

(۲) ابن عابدین ۱۸۵۱ ۱۸۵۱ میدائع الصنائع ۱۸۳۸، الانتیار کشلیل افغار ۱۸۹۱ ۱۸۹۸ طبع دار المعرف القوائین التعهیه ۸۹،۹۸، ۹۹، روصه الطالبین ۱۸۰۸ اوراس کے بعد کے صفحات ۸۹،۳۸۱، المغنی ۲۸۸۳ اوراس کے بعد کے صفحات، کشاف القتاع ۱۸۳، ۵۹، ۱۹۵۱ اوراس کے بعد کے صفحات ۔

اول: مسافر اپنے وغمن اسلی میں لوٹ آئے ، اگر چہ وہاں انا مت کی نیت بھی نہ کرے۔

اس میں اصل میہ کہ اس جگدمیں واپس داخل ہوجائے جہاں سے تجاوز کرنے کو آغاز سفر کے سلسلہ میں فقہاء نے شرط قرار دیا ہے (۱)۔

دوم: جس جگد کے لئے سفر کیا ہے اس جگد پہنے جائے ، اور اس جگد پر اتی مدت قیام کا پہنتہ ار اوہ ہوجتنی مدت رخصت سفر سے ما فع ہے ، اور وہ جگہ قیام کی صلاحیت بھی رکھتی ہو، اور رخصت سفر سے ما فع مدت میں اختلاف ہے ، اس کے لئے "صلاقہ السافر" کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

سوم: مسافر کسی بہتی میں نکاح کرے، اگر چدا سے وطن نہ بنائے، اور وہاں اتامت کی نیت بھی نہ کرے۔

چہارم: راستہ میں اقامت کی نیت کر لے ، کیکن اس کے لئے چارچیز بی ضروری ہیں: اقامت کی نیت ،مدت اقامت کی نیت ،جگہ کا ایک ہونا ، اور اس جگہ میں اقامت کی صلاحیت ہونا ۔

اور جنگل وغیر دمیں اقامت کی نیت سے سفر کے منقطع ہونے میں اختااف اور تفصیل ہے (۲)جس کے لئے "صلاق المسافر" کی بحث دیکھی جائے۔

پنجم: تابع ہونے کی حیثیت سے اقامت: جس کی صورت میہ ہے کہ اصل شخص مقیم ہوجائے، تو اصل کی اقامت سے تابع بھی مقیم ہوجا تا ہے (۳)۔

⁽۱) - ابن عابدین از ۵۲۸، القوائین الکلهیدر ۹۰، روضه الطاکبین از ۳۸۳، المغنی ۲ ر ۲۹، الشرح اله فیر از ۸۱۱

⁽۲) ابن عابدین از ۵۲۸، الشرح اله فیر از ۱۸س، روهند الطالبین از ۳۸۳، ۱۳۸۳، المغنی ۶ر ۲۸۸

⁽m) - بدائع الصنائع الراوا، روهية الطاكبين الر ٣٨٣_

واجب كوجهور كربدل كواختيا ركرنا:

واجب کو چھوڑ کر اس کے بدل کو اختیار کرنے کی بجث مختلف مقامات میں ہے جن میں سے چند درج ذیل ہیں:

الف-زكاة:

11- حفیہ کا فدہب ہیہ کے زکا ق میں واجب کوچھوڑ کر بدل کو اختیار کرنا جائز ہے، اور ائی اور توری کا بھی یمی فدہب ہے، اور حفرت عمر بن عبد اُعزیز اور حسن بھری سے بھی یمی روایت ہے، چنا نچ ما لک کے لئے بیجائز ہے کہ وہ وہی میں مال دے دے (جو واجب ہوا ہو) یا فقد ین (سونا چاندی) اور سامان وغیرہ کی قیمت دے دے، اگر چہوہ مخصوص سامان موجود ہوجس کے بارے میں تھم وارد ہوا ہے، اس لئے کہ اللہ تعالی کا فرمان ہے: ''خُولَدُ مِنُ أَمُوا لِهِمُ صَدَقَدُهُ '(ا) لئے کہ اللہ تعالی کا فرمان ہے: ''خُولَدُ مِنُ أَمُوا لِهِمُ صَدَقَدُهُ '(ا)

اس میں صراحت ہے کہ جولیا جاتا ہے اس سے مراو'' صدقہ'' ہے اور جوجنس بھی لے گا وہ صدقہ بی ہوگا۔

نیز ال لنے کر حضرت معافر کو نبی علیجی نے جب اہل یمن کے پاس بھیجا تو حضرت معافر نے اہل یمن سے بیکبا: "انتونسی بعوض ثیاب خمیص او لبیس فی الصدقیۃ مکان الشعیر والمذرق، اُہون علیکم و خیر الأصحاب النبی الشیجیجی اورجوکی جگہ پر اور سے یا پہنے کے کپڑے لا

(۱) سور کاتوبیر ۱۹۳۳

(۲) قول سعافۃ "انسولی بعوض قیاب خصیص اُو لیس فی الصدافۃ "..... کی روایت بخاری (اُسُح سمراا ساطع اُسُلابیہ) نے کی ہے۔
عیاض اور ابن آر قول کے قول کے مطابق بخاری نے لفظ ''خمیص'' ما دکے ساتھ ذکر کیا ہے داودی اور جوہری وغیرہ نے کہا ہے قوب قیس (سین کے ساتھ) ہے اور اے خمول بھی کہا جاتا ہے اور اس ہم رادوہ کیڑ اہے جس کی ساتھ جدد داع ہو، یعنی چھوٹا کیڑ الاعمرۃ القاری میں سطع کمیر یہ فتح الباری سے رادہ ''خم'' ۔

کردو، یہ تمہارے لئے آسان ہے اور مدینہ میں نبی علیقے کے سحابہ کے لئے بہتر ہے) اور حضرت معاقب علیقے کے پاس سامان لائے اور آپ علیقے کے پاس سامان لائے اور آپ علیقے نے کوئی تکمیز بیں فرمائی۔

فتهی وجہاں کی بیہ کہ متصد فقیر کو متعینہ رزق پہنچانا ہے، اور
مسکین کی حاجت کو پورا کرنا ہے، اور وہ قیمت ہے بھی حاصل ہوجا تا
ہے۔ رسول اللہ علیہ فیصلے نے ارشا وفر مایا: ''اِن اللہ تعالی فوض
علی الأغنیاء قوت الفقواء و سماہ ذکاہ'' (بیشک اللہ تعالی
نے مال داروں رِفقراء کے گزارہ کے بقدر فرض کیا ہے اور اس کا نام
زکاۃ رکھاہے)۔

قیت کا اعتبار کرنے کی صورت میں ادائیگی کے دن کی قیت دی جائے گی یا وجوب کے دن کی؟ اس میں اختااف ہے جس کے لئے اس کے اصل مقام کی طرف رجو ٹا کیا جائے (۳)۔

مالكيه اور حنابله كےنز ديك جوچيز واجب ہوا سے چھوڑ كربدل

(١) مديكة "إن الله تعالى فوض على الأغباء....."كوما صِ الاقتيار نے آئیں الفاظ کے ساتھ ذکر کیا ہے، اور مٹن واکٹا رکے جومرا جع ہما رہے ہی ہیں ان میں جمیں بیصدیت خمیں کی ، البیتہ ا**ں** مفہوم پر و ہصدیت ولالت کر تی ہے جسے طبر الی نے وا وسط اور اکسٹیر میں ان الفاظ کے ساتھ مُفکل کما ہے۔ ''إن الله فرض على أغياء المسلمين في أموالهم بقدر اللتي يسع فقر الهم، ولن يجهد الفقراء إذا جاعوا وعروا إلا بما يصنع أغبالهم، ألا و إن الله يحاسبهم حسابا شديما و يعلبهم علمابا ألبما" (_بِعُك اللہ نے مسلمانوں کے ختیاء یون کے اموال میں اتن مقدار فرض کی ہے جو ان کے فقر اء کے لئے کا فی ہو او فقر اء جب بھو کے اور نظیم ہوں تو ای وجہ ہے یم دیثان موں گے جوان کے ختیا وکاعمل موگا، اور بلائٹر اللہ تعالی روز قیامت ان کا سخت حماب لے گا اور آئیں دردیا ک عذاب دے گا) بطر الی نے کہا ہے کہ تا بہت بن محمد الراہد اس على منفرو بين، حافظ منفرد كي نے كہا كہ تا بہت تقد اور صدوق ہیں، بخاری وغیرہ نے ان سے روایت کی ہے اور اس کے بقیر ر ہو کا بھی ٹھیک ہیں، بیدروایت حضرت مکل ہے سوقوفا مقول ہے ہور یہی اشہہ بِ (الترغيب والتربيب للمندري ٢/١٤ واطبع مطبعة المعادة حر) . (۲) - ابن عابد بن ۴۲/۳، الانتزار تشليل الخيّار ار۴۰، ۳۰۱-

کو افتیار کرنا صرف دنا نیر و درا ہم میں جائز ہے، چنا نیچ زکا ق دینے والے کے لئے جائز ہے کہ دنا نیر کی زکا ق میں صاب لگا کر درا ہم دے دے، اور چاندی کی زکا ق میں صاب لگا کر درا ہم دے دے، اور چاندی کی زکا ق میں صاب لگا کر سونا دے دے، خواہ قیت اس کی کم ہویا زائد، اس لئے کہ وہ تو اس کے حق میں معاوضہ ہے، تو دیو تمام معاوضات کی طرح اس میں بھی قیت کا اعتبار ہوگا (۱) اور وہ دونوں ایک بی جنس کے ما تند ہیں۔

شا فعیہ اے جائز نہیں کہتے (۴)۔

اورمولی میں دفیہ کے زوگ قیمت دینی جائز ہے، ال لئے کہ ان کے یباں قاعدہ سے کہ جرچیز میں قیمت دینی درست ہے، اور ثافعیہ کے نزدیک بھی یہی سیجے ہے۔ مالکیہ کے نزدیک اسل واجب کوچھوڑ کر اس کابدل دینا مکروہ ہے، اس لئے کہ اس میں صدقہ کے اندررجوٹ کے معنی پائے جاتے ہیں، اور بیٹھی ممکن ہے کہ اوا کردہ قیمت اسل واجب ہے کم ہوجائے، اورفقراء کے حق میں کی ہوجائے، البتہ اگر زکاۃ وصول کرنے والا خودی زکاۃ دینے والے پر اصرار وجبر کرے کہ وہ اصل واجب زکاۃ کے بدلہ دراہم می ادا کرے اس کی واجب کی وہ اس کی طرف ہے اوا گی درست ہوجائے گی، شرط یہ ہے کہ اسل واجب کی اورادائیگی کے وقت کی شرط یہ ہے کہ اسل واجب کی اورادائیگی کے وقت کی قیمت ہو (۳)۔

شا فعیہ کا دومر اقول ہے ہے کہ اگر اس کی قیمت بکری کی قیمت سے کم ہوتو وہ کافی نہیں۔ اور ان کے بیبال تیسری رائے ہیہ ہے کہ اگر تمام اونٹ بیار یوں، یا کسی عیب کی وجہ سے کم قیمت ہوں تو وہ اونٹ کافی ہوگا جس کی قیمت ہوں اونٹ کیجے و

(۱) الحطاب ۳۵۵/۳ المدونه ار ۴۳۳ ، کشاف لفتاع ۲۸ ۵۱۲ ، نیل لهآ رب

(r) المسراح الوماج على تتن أمنها جر ١٣٣ طبع الحلمي ، القليو لي ٣٣/٣ ـ "

__ 140 • 71

(۳) الحطاب ۱۳۰۳ المدونه از ۳۰۸

سالم ہوں تو ناقص اونٹ کا فی شیس ۔ ***

اں موضوع میں تفصیل ہے جس کے لئے'' زکا ق'' کی بحث کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

حنابلہ کے نزدیک مولیثی میں ایک جنس سے دوسری جنس یا قیت کی طرف رجو ع جائز نبیس ہے (۱)۔

ب-صدقهُ فطر:

۱۲ - مالکیہ اور ثافعیہ کے نزدیک اور حنابلہ کے ظاہر مذہب میں صدقہ اطریس میں صدقہ اطریس میں صدقہ اور شاخلیں ، حنفیہ کے نزدیک جانز ہیں ، حنفیہ کے نزدیک جانز ہے (۲)۔

ری بیصورت کہ خوراک کی ایک جنس سے دوسری اجناس کی طرف رجوٹ کیاجائے یا ادنیٰ کوچھوڑ کر اعلی جنس دی جائے یا اس کے برقکس ہوتو اس میں اختااف اور تفصیل ہے جس کے لئے'' زکا قالفط'' کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

ج عشر:

ساا – مالکیه اور حنابله کامذیب بیه به کرمشر (وسویس حصه) میں اصل واجب کوچھوڑ کریدل کوافت یا رکرنا جائز نبیس (۳)۔

اور حفیہ کا مُدہب ہیہ ہے کہ عشر میں بھی اصل واجب کو چھوڑ کر بدل کو اختیا رکرنا جائز ہے، اس کے دلائل وی ہیں جن کا بیان اس

⁽۲) ابن عابدین ۱۲۳۳، الانتیار ۱۲۳۱، ۱۳۰۳، روهند الطالبین ۱۳۳۳، آمنی سهر ۱۹،۹۲۳، کشاف القتاع ۲ ر ۲۵۳، ۱۵۳، المدونه از ۳۵۸، ایمطاب ۲ ر ۲۸۳، نیل لما آرب از ۲۵۸، تشرح کمجلی علی المنهاج ۲۲۷س

⁽m) البطاب ٢ م ١٠ ٣٠ ما المدونه الر ٥٠ م. كشاف لقتاع ٢ مر ٤٠ أمغني ٢ م ١٥٥٨ م

^{- 279 -}

سے پہلے گزر گیا، اور ثافعیہ کے فزدیک اگر خلہ جات اور پھل ایک عی نوع کے ہوں تو اصل واجب کو چھوڑ کرصر ف اعلی شم کو افتایا رکرنا جانز ہے۔

اوراگر انوائ مختلف ہوں توہر نوٹ سے اس کے حصد کے بقد رایا جائے، البتہ بیاس صورت میں ہے جب کہ اس میں دشواری نہ ہو، اور اگر اس میں دشواری ہوکہ ہر نوٹ سے اسل واجب کولیا جائے بایں طورکہ انوائ کیٹر ہوں اور ان کے پھل کم ہوں تو اس میں چندرا کمیں میں:

پہلی رائے میہ ہے کہ جانبین کی رعامیت کرتے ہوئے درمیانی نوع سےلیاجائے اور یہی سیجے ہے (۱)۔

دوسری رائے میہ کے ہر نوٹ سے اس کی مقدار کے ہراہر لیا جائے۔

تیسری رائے بیہ کہ جوغالب ہوائ سے لیاجائے ، اور ایک قول ہے کہ ہرصورت درمیانی نوع سے لیاجائے (۲)۔

ال موضوع میں تغصیل ہے جسے اصطلاح ''عشر''میں دیکھا بائے۔

د- کفارات:

مها - جمہور کا مذہب یہ ہے کہ کفارات میں اسل منصوص واجب کو چھوڑ کر کسی دوسری چیز کو اختیار کرنا جائز نہیں، اگر واجب کو متعین کردیا گیا ہوتو ان اشیاء میں اختیار دیا گیا ہوتو ان اشیاء میں اختیار ہوگا جن کی ہو۔

حفیہ کی رائے میہ ہے کہ اگر کفارہ مالی ہوتو کفارات میں اصل واجب کوچھوڑ کر ہدل کو افتیار کرنا جائز ہے ۔ نیز اس میں اختااف اور

- (۱) ستن لهمها ج لمطبوع مع السراج الوماج ۲۲/۵ اه روحیة الطالبین ۲/۲ ۳۳ ۱۳۳
 - (٢) روهية الطاكبين ٢/ ١٣٧٧

تنصیل ہے جس کے لئے اصطلاح "کفارات" کی طرف رجو ٹ کیا جائے (ا)۔

ھ- نذر:

10 - مالکیہ اور حنابلہ کا مذہب، اور ثنا فعیہ کاسیحے مسلک بیہ ہے کہ جس نے متعین اور غیر مطلق نذر مائی ہوتو اس پر متعین ثن کا نکالنا واجب ہے، معین کوچھوڑ کر کسی دوسری چیز بدل یا قیمت کی طرف رجو ی جائز نہیں۔ اس میں اختااف اور تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح میں۔ اس میں اختااف اور تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح منین۔ اس کی طرف رجو یک کیا جائے۔

حفیہ کے نز دیک بید مطلقاً جائز ہے، جیسا کہ ان کے نز دیک نذروں میں واجب کو چھوڑ کر قیمت اختیا رکر ٹی جائز ہے، البتہ انہوں نے عتق ، ہدی اور اُضحید کی نذر کا استثناء کیا ہے (۲)۔

فرض روزہ کے بدلہ فعد بیددینا:

۱۷- عام فقہاء کا اس پر اتفاق ہے کہ شیخ فانی جوروزہ کی طاقت نہ رکھتا ہو، یا روزہ سے اسے سخت تکلیف ہوتی ہوتو اس پر روزہ رکھتا ضروری نہیں ، اور اس برفد بیہ کے وجوب میں فقہاء کا اختلاف ہے۔

حنفیہ اور حنابلہ کا مذہب اور ثنا فعیہ کا اظہر قول اور مالکیہ کا ایک غیر مشہور قول میہ ہے کہ اس پر فعد میہ واجب ہے۔

مالکیه کامشهور مذہب، اور شافعیہ کے بزویک غیر اظہر بیہ کے کہ اس بر فدید واجب نہیں، اور حاملہ اور دودھ بلانے والی عورت جسے

⁽۱) المدونه الر۵ ۳۳ مرا ۱۱۱ ابن هاید مین ۱۳ ۳۳ ، الانتیار کشکیل الحقا را ر ۳ ۱۰ ا ۱۰۳ ما ، المغنی ۸ ۸ ۷۳۸ ، روهه هطالمیین ۸ ۸ ۹۸ ۵ ، ۵ ۳۰۰ کشاف القتاع ار ۲۱۳ ، ۲۱۷ ، نیل المآرب الر ۲۵۸

⁽۲) ابن هایدین ۲۲۳۲، الانتها رتسلیل افغار ار ۲۰ ۱۰ ۱۰۳ ما المیدونه از ۸۸ ۱۳ ۱۳ ۱۳ ۱۱ ۱۱ ا القوانین انگلیبه ر۵ که ادروه پوروالیس ۲۸ سر ۲۸ سو آمنی ۱۸ را ۱۰

(روزہ رکھنے میں) اپنی ذات یا اپنے بچھ پر اند بیٹہ ہو، اور ایسا بیارجس کے تندرست ہونے کی امید نہ ہوان پر وجوب فدید کے سلسلہ میں اختلاف اور تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح "صوم" اور" فدید" کی طرف رجو ٹ کیا جائے (ا)۔

جس عقد کی شرا لطابوری نه ہوئی ہوں اس کا دوسر ےعقد کی طرف منتقل ہونا :

21 - حفیہ اور حنابلہ کا ند ب اور ثا فعیہ کے ند ب کا اظہر قول ہے کہ بہد میں اگر عوض کی شرط ہوتو عقد سچے ہوگا اور وہ نیچ کے حکم میں ہوجائے گا، لہذا الل میں خیار اور شفعہ ثابت ہوں گے، اور قبضہ سے پہلے لا زم ہوجائے گا، اور عیب اور خیار رؤیت کی بنار اسے والیس کیا جا سکتا ہے، ثا فعیہ کا ایک قول ہی ہے کہ بیعقد باطل ہوجائے گا، اس کے اسکتا ہے، ثا فعیہ کا ایک قول ہی ہے کہ بیعقد باطل ہوجائے گا، اس کے تا سے کے خلاف ہے۔

مالکیہ کا مذہب ہیں ہے کہ جبہ بالعوش ابتداء نیج ہے، ای لئے جبہ کی موت سے وہ باطل نہیں ہوتا، اور بیکی جبہ پر قبضہ سے پہلے واہب کی موت سے وہ باطل نہیں ہوتا، اور بیکی جائز نہیں کہ سونے کے بدلہ جائدی یا جائدی کے بدلہ سونا دیا جائے، اس لئے کہ اگر مجلس میں دونوں وضوں پر قبضہ نہ پایا جائے تو نیج صرف میں ایک عوض کا مؤخر ہونا الازم آئے گا۔ اور وض کے معلوم یا مجبول ہونے، ای طرح اس کے ابتداء یا انتہاء تنج ہونے میں تفصیل ہے ہونے، ای طرح اس کے ابتداء یا انتہاء تنج ہونے میں تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاح ''بید' کی طرف رجوں کیا جائے (۴)۔

اورجس عقد کی شرانط پوری نہ ہوئی ہوں اس کے دوسرے

عقد کی طرف منتقل ہونے کی بھی دوسری مثالیں ہیں جیسے ایک مثال: مضارب کے نضرفات کے اعتبار سے مضاربت صحیحہ کا وکالت میں بدل جانا ہے، ای لئے جمہورفقہاء کی بالجملدرائے ریہے کہ مضارب کے نضرفات وکیل کی طرح مصلحت کے ساتھ و ابستہ ہیں (۱)۔

اور اگرمضارب کونفع ہوجائے تو مضاربت شرکت ہوجاتی ہے، اور اگر مضاربت فاسد ہوجائے تو وہ اجارہ فاسدہ میں منتقل ہوجاتی ہے(۲)۔

دوسری مثال رہے کہ اگر مسلم فیہ مین ہوتو شا فعیہ کے ایک قول کے مطابق سلم نیچ مطلق ہوجاتی ہے۔ اور اگر باکٹر رہ کے کہ میں نے بغیر قیمت کے فروخت کیا تو وہ ہبہ ہوجاتا ہے اور تول اظہر رہ ہے کہ سلم باطل ہوجاتا ہے (۳)۔

تمیسری مثال میہ ہے کہ استصناع میں اگر مدت متعین کردی جائے تو بعض حفیہ کے نز دیک وہ سلم ہوجاتی ہے، حتی کہ اس میں شر انظ سلم کا اعتبار کیا جائے گا(۳)۔

یان کردہ مثالوں میں ہے ہر ایک مثال میں اختلاف و تفصیل ہے جے اصطلاعات "عقد"، "سلم"، "مضاربت"، "شرکت" اور "مصنات" میں دیکھاجائے۔

عقدموقوف كانا فذبوجانا:

۱۸ - حفیہ اور مالکیہ کا مُدہب، ثا فعیہ کا ایک قول اور حنابلہ کی ایک
 روایت بیے کے فضولی کی نیج ما لک کی اجازت پر موقوف ہوکر منعقد

⁽۱) ابن عابد بن ۱۷ ماه القوائين الكلمية ر ۱۳۵ مثل لمآ رب ار ۲۷۳ م المغنى سر ۹ ساه ۹ ساه اساه روهه الطاكبين ۲ م ۳۸۳

⁽۲) ابن عابدين سهر۱۹۵، بدليد الجعبد ونهايية المتعصد ۳۵۸،۳۵۷ طبع مكتبة الكليات وازمرب روعية الطالبين ۳۸۲۸، أمغني ۲۵۵،۸۸، الفواكه الدوانی۳۲۲۲

⁽۱) بدائع الصنائع ۲۱ ۸۷، ۹۳، الانتيار تشليل الخار ۳۸، ۹۱

 ⁽٣) ابن عابدين ٣٠ ١٨٨٨، الاختيار تشكيل الخار ٣٠، لشرح الهنير
 ٣٠ ابن عابدين ٣٠ ١٨٨، الاختيال ١٨٥، أمنى ١٨٣، ١٨٠.

⁽m) روهية الطاكبين سهر ٢، الوجير الر ١٥٣٠

⁽۳) این طایر بین ۱۳۸۳ (۳)

ہوجاتی ہے، اور جب مالک اجازت وے دینوو دمانند ہوجاتی ہے، ورینہیں، اسحاق بن راہو پیکائھی یہی مذہب ہے۔

شا فعیہ کا قول جدید اور حنابلہ کی دوسری روایت یہ ہے کہ یہ نجے باطل ہے، اور اس کور دکر دینا واجب ہے، ابو تور اور این المنذ ر کا بھی یہی مذہب ہے (۱)۔

جوفقہاء نیے فضول کے منعقد ہونے کے قائل ہیں انہوں نے اس کے تعلق مفسل کلام کیا ہے، جس کے لئے اصطلاحات" عقد"، "موقوف" اور'' فضولی'' کی طرف رجوع کیا جائے۔

دىن مۇجل كامعجّل ہوجانا:

چند مقامات ایسے ہیں جن میں دین مؤجل معجل ہوجاتا ہے، جن میں سے بعض ربیبیں:

الف-موت:

99 - حفیہ مالکیہ اور ثافعیہ کا مذہب اور حنابلہ کی ایک روایت بیہ ہے کہ موت ہے میت کا ذمہ ختم اور مطالبہ دھو ار ہوجا تا ہے۔ شعبی اُنجعی اور توری کا بھی بہی قول ہے۔

حنابله کی دومری روایت به ہے کہ اگر ورناء اس دین کی توثیق کردیں تو دین مؤجل معجل نہیں ہوتا ، ابن میرین ، عبد اللہ بن الحن ، اسحاق اور ابوعبید کا بھی بھی قول ہے (۲)۔

(۱) ابن عابدین سهر ۱۳۵۵ اور اس کے بعد کے صفحات، اکشرح اصغیر سهر ۲۹، القوائین انتھیدر ۵۰، روعیۃ الطالبین سهر ۵۳، المغنی سهر ۲۲۷۔

اور مربقہ اگر دار الحرب بین چا جائے تو کیا اس کی موت مخفق ہوجائے گی اور اس کی موت کے تعلق احکام ٹابت ہوں گے یائیں؟ اس بیں فقہاء کا اختلاف ہے جس کے لئے کتب فقہ بیں اس کے مقام کی طرف رجو ت کیا جائے (۱)، نیز اصطلاح "ردت"، اور اصطلاح "اجل" (فقر د ۹۵ ج ۲) کی طرف رجو ت کیا جائے۔

ب-مفلس قرار دیا جانا:

۲۰ - حنفیہ میں سے امام ابو بوسف اور امام محمد جو انلاس کی وجہ سے (نضرفات پر) پابندی لگانے کے قائل ہیں ان کے آو ال سے متباور اور شافعیہ کا قدیم ہیں ہے کہ دین مؤجل مفلس اور شافعیہ کا قول اظہر اور حنابلہ کا فدیم ہیں ہے کہ دین مؤجل مفلس کا تر اردیئے جانے سے معجل نہیں ہوتا ، اس لئے کہ مدینے قرض مفلس کا حق ہے تو وہ اس کے مفلس ہوجانے سے ساتھ نہیں ہوگا جس طرح اس کے دیگر حقوق ساتھ نہیں ہو ہو تے ، نیز اس لئے کہ اس کے جوحقوق دوسر وں پر ہیں اس کے جوحقوق دوسر وں پر ہیں اس کے جوحقوق اس کے خوحقوق اس کے خوصتان میں جو خوصقوق اس کے خوحقوق اس کے خوصتان میں جو کھی ہوگیاں نہیں ہوگی (۲۰)۔

امام او حنیفهٔ کے نزدیک ایسانہیں ہے، اس لئے کہ ان کے نزدیک آزاد عاقب و ہا فغ شخص پر دین کی وجہ سے (تضرفات پر) یا بندی لگانا جائز نہیں ہے (۳)۔

مالکیہ کا مذہب، ثنا فعیہ کا ایک قول اور حنابلہ کی ایک روایت جسے ابو الخطاب نے ذکر کیا ہے، یہ ہے کہ جس شخص پر اس کے افلاس

⁽۲) ابن عابدین ۵ رسمه، اشرح الصغیر سهر ۱۳۵۳، ۱۳۵۳، القوانین التقهید ر ۱۳۸۳، القلیو کی ۲ ر ۲۸۵، روحیة الطالبین مهر ۱۲۸، المغنی مهر ۱۸۸، معنی سمر ۱۸۸،

⁽۱) - ابن هایدین سر ۴۰۰، اتفایه کی ۱۸ ۴۸۵، جوابر وانگلیل ۱۸ ۴۷، ۴۸۰، انتخی ۸ره ۱۲، ۳۰۰

 ⁽۲) ابن عابدین ۵۲٫۵، الشرح الصغیر سهر ۵۳٫۵ سه سه القوانین الكلمید
 ر ۳۲۳، اتفایه لی ۲۸۵، روصه الطالیین سهر ۱۲۸، المغنی سهر ۱۸س.

⁽m) ابن طابر بين ۱۹۳۷هـ

کی وجہ سے پابندی لگا دی گئی ہواس کا دین مؤجل معجل ہوجاتا ہے، اس کئے کہ مالی دین کاتعلق مفلس قر اردیئے جانے سے ہے تو موت کی طرح مدت دین ساتھ ہوجائے گی (۱)، اس کی تفصیل اصطلاح ''حجر''میں ہے۔

مستحق وقف کے نتم ہونے ہے وقف کا نتم ہوجانا:

ا ۲- عام فقرہا ء کا مذہب ہیں کہ وقف میں پیشگی شرط ہے، اور جس وقف کی صحت میں کوئی اختاا ف نہیں وہ وہ وقف ہے جس کی ابتداء معلوم ہواورا نہنا غیر منقطع ہو، نثال اس کی انہنا ء ایسی جہت ہوجومنقطع نہ ہو، نثال اس کی انہنا ء ایسی جہت ہو جومنقطع نہ ہو، جست مساکین، یا ان کی کوئی خاص نہ ہو، جسیا کہ وقف کی آخری جہت مساکین، یا ان کی کوئی خاص جماعت ہو، اس لئے کہ ان کا ختم ہوجا نا عادة ناممکن ہے (۲)۔

اگر مستحق وتف منقطع ہوجائے تو اس میں فقہا عکا اختلاف ہے:

امام ابو یوسف اور مالکیہ کا مذہب، ثا فعیہ کا ایک قول اور حنابلہ
کی ایک رائے ہیہ کہ اس صورت میں وتف واتف، یا اس کے
ورثا علی طرف لوٹ جائے گا، الایہ کہ واتف نے بیکہا ہوکہ بیصد تہ
وتف ہے، اس سے فلاں فلاں پر خرج کیا جائے اور جب متعین لوگ
ندر ہیں تو یفتر اعومہا کین کے لئے ہے (۳)۔

شا فعیہ کے فزدیک اظہر ، اور حنا بلد کا مذہب ہیہے کہ وہ وقف باقی رہے گا اور واقف سے تربیب لوگوں پر صرف کیا جائے گا اور وقف

(۱) المشرح أمنير سر ۱۳۵۳، ۱۳۵۷، القوانين القهيه ر ۱۳۳۳، أهميو لي ۱۲۸۵، روصة الطاكبين مهر ۱۲۸، أمني مهر ۱۸۸۰.

(m) - ابن ها بدين سهر ۱۲ سه ۱۵ سه، الانتها لتعليل افتاً رسم ۲ س.

ک اس سم کے صرف کے تعلق ثافعیہ کے دیگر اقو ال بھی ہیں (۱)۔ اس موضوع کی تفصیل کے لئے اصطلاح '' وقت '' کی طرف رجوع کیا جائے۔

اباحت کی ملکیت عامه کا ملکیت خاصه کی طرف اور اس کے برعکس مقل ہونا:

۲۲- ملکیت کے اسباب میں سے کسی سبب کی وجہ سے بسا او قات ملکیت عامد ملکیت خاصد ہموجاتی ہے، جیسے بیت المال کی زمینوں سے جا گیردینا۔

چنانچ باوشاہ کے لئے جے حسب مصلحت مال دینا درست ہے ای طرح بیت المال کی زمین کوملایت کے طور پر دینا درست اور سیح ہے، اس لئے کہ مستحق کو دینے میں مال اور زمین کے اندر کوئی فرق نہیں ہے، اس لئے کہ منزید و کیجئے اصطلاح:" اقطاع"۔

اور خصوصی ملکیت عمومی ملکیت اس صورت میں ہوجاتی ہے جب اس کے مالک انتقال کرجائیں اور اس ملکیت کے ذوی القروض یا عصبہ وارث بھی مستحق نہ ہوں ، تو وہ تمام مسلمانوں کی میراث ہوکر بیت المال میں آجاتی ہے (۳)۔

اور او یعلی نے بیان کیا ہے کہ ایسی ملکیت مصافح مسلمین میں صرف کئے جانے کے لئے ہیت المال کے پاس آ جاتی ہے،میراث کے طریقہ برنہیں آتی (۳)۔

- (۱) المشرح المنفير سهر ۱۳۱ اور اس کے بعد کے صفحات، المغنی ۵ / ۱۲۳ ، روصة الطالبین ۲۸۵ س
- (٣) ابن عابد بن ١٩٥٧، ١٣٤٥، المشرح الصغير ١٨٧٨، ٥٠، القوائين الكاميد
 (٣) ابن عابد بن ١٩٥٨، ١٣٨٨، القليو في ١٨٧٨ طبع داراحياء الكتب العربيد أمغنى ١٨٣٨٨
 - (٣) وأحكام لسطاني للما در دي 14 ال
 - (٣) وأحكام استطانيروا في يعلى ٢٠٠٥.

 ⁽۲) ابن عابدین سهر ۲۵،۳۲۳ ساء الانتیار کشلیل کختار سر۲ ساء الشرح اکه فیر
 سهر ۱۲۱ اور اس کے بعد کے صفحات، المغنی ۵/۹ الا، ۳۲۷،۳۲۳ ، روصة الطالبین ۵/۵ ۳۲،۳۲۵ ساء ۳۲۸،۳۳۳

تحول ۲۳-۲۳

ملکیت خاص کے عام ہوجانے کی چندصورتیں اور بھی ہیں مثلاً مسجد کے لئے ، یا راستہ کی توسیق کے لئے یا قبرستان وغیرہ مصالح مسلمین کے لئے کسی کے مملوک مکان کی ضرورت پیش آ جائے، بشرطیکہ اس کابدالہ دیا جائے۔

عقد نكاح ميں ولايت كامنتقل ہو جانا:

۲۳ - چند مقامات ایسے ہیں جہاں پر ولی اتر ب کی ولا بیت ولی ابعد کی طرف متقامات ایسے ہیں جہاں پر ولی اتر ب کی ولا بیت ولی ابعد کی طرف متقامات سے ہیں:

مثلاً ولی الرب مفقود ہو، اور ایسے بی وہ گرفتاریا جیل میں ڈال دیا جائے تو حفیہ، مالکیہ اور حنابلہ کا مذہب سیا ہے کہ اس صورت میں ولی الرب کی والایت ولی داعد کی طرف منتقل ہوجاتی ہے۔

شا فعیہ کے فرد کیک اس صورت میں ولایت حاکم کی طرف منتقل ہوجاتی ہے۔

ال کی دوسری مثال ولی کا غائب ہونا ہے، لہذا اگر ولی غیبت منقطعہ کے ساتھ غائب ہوتو ولی اقر ب کی ولایت ولی ابعد کی طرف منقل ہوجاتی ہے، حفیہ اور حنابلہ کا ندیب یہی ہے۔ اور مالکیہ کے خوالی ہوجاتی ہے، حفیہ اور حنابلہ کا ندیب یہی ہے۔ اور مالکیہ کے نزدیک اس صورت میں ولایت حاکم کی طرف منتقل ہوجاتی ہے، اس کنے کہ غائب کا ولی حاکم ہے اور ثا فعیہ کے نزدیک بھی یہی حکم ہے، البتہ اگر قاضی ولی اقر ب کی موت کا حکم لگا کر اس کامال اس کے ورثاء بہتہ اگر قاضی ولی اقر ب کی موت کا حکم لگا کر اس کامال اس کے ورثاء پر تفتیم کردے تو ان کے نزدیک بھی ولایت ولی ابعد کی طرف منتقل ہوجاتی ہے۔

ائی کی تیسری مثال عنسل ہے، یعنی ولی کا اپنی زیر ولا بیت لڑکی کو کفوء میں شا دی کرنے سے روکنا۔ حنفیہ ، مالکیہ اور شا فعیہ کا مذہب اور امام احمد کی ایک روایت ہیہ ہے کہ اگر ولی امتر ب کفوء میں شا دی سے منع کردے تو ولا بیت با دشا ہ کی طرف منتقل ہوجاتی ہے، حضرت

ابوبكراً في الى كو اختيار فر مايا ہے، حضرت عثان بن عفان اور شرت ك الوبكراً في التي كو اختيار فر مايا ہے، حضرت عثان بن عفان اور شرت ك ولايت على منتقل ہوجائے كى (١) الى كى تفصيل اور اختاا فات كے لئے و كيھے: اصطلاح "ولاية النكاح"۔

حق پرورش کامنتقل ہوجانا:

۲۲۳ - پرورش میں اسل بیت کہ اگر تمام شرائط کمل ہوں تو پر ورش میں سب سے مقدم بچہ کی ماں ہے، اس لئے کہ حضرت عبداللہ بن محر و بن العاص کی روایت ہے: ''آن امو آق قالت یا رسول الله، اِن ابنی هذا کان بطنی له وعاء، و ثدیبی له سقاء، و حجر ی له حواء، و اِن اَباه طلقنی، و آراد اُن ینزعه منی، فقال رسول الله منابع الله علقنی، و آراد اُن ینزعه منی، فقال رسول الله منابع اللہ عند کے رسول، بیم الرکا ہے، میر اپیٹ اس کر ہنے کی جگہ تھا، میر ک اللہ حیاتیوں نے اسے میر الرکا ہے، میر اپیٹ اس کر ہنے کی جگہ تھا، میر ک چھا تیوں نے اسے میر اب کیا، میر ک کوداس کامکان ری ، اس کے والد فیصا تیوں نے اسے میر اب کیا، میر ک کوداس کامکان ری ، اس کے والد فیصا تیوں نے اسے میر اب کیا، میر ک کوداس کامکان ری ، اس کے والد فیصا تیوں نے اسے میر اب کیا، میر ک کوداس کامکان ری ، اس کے والد بی اُن ورسول اللہ علیاتی نے اپنے بیں کہ اس لڑکے کو مجھ سے جھین لیں تو رسول اللہ علیاتی نے فر مایا: جب تک تو نکاح نہ کر سے تو تو تو کی ان یا دولت دارہے)۔

اگر ماں تمام یا بعض شرائط کے مفقود ہونے کی وجہ سے یاحق

⁽۱) ابن عابدین ۲۴ ۱۹،۳۱۵ ۳، الانتیار کشکیل الخارسهر ۹۹ طبع دار اسر ق الشرح اکه فیر از ۳۹۵ طبع دارالمعا رف مصر، القوائین الکلمیه بر ۳۰ ۵، روهه الطالبین ۷/ ۵۸، ۹۸، ۹۸، کشاف القتاع ۵/ ۵،۵۵ ۵، المغنی ۲/ ۷۲ س

ر ورش کو چھوڑ دینے کی وجہ سے رروش کی اہل ندر ہے تو ماں کا تعدم ہوگی اور حق رروش اس کے بعد والے مستحق کو حاصل ہوجائے گا، اور ای طرح اتر ب سے منتقل ہوکر اس کے بعد والے مستحق کو حق رروش حاصل ہوتا رہے گا (۱)۔ اس میں کچھ تنصیل ہے جس کے لئے اصطلاح '' حضائت'' کی طرف رجوٹ کیا جائے۔

معتده کی عدت طاباق کا عدت وفات کی طرف منتقل ہوجانا:

۲۵- اگر عورت طااق کی عدت گزار رہی ہواور اس کے شوہر کا انتقال ہوجائے تو اگر طااق رجعی تھی تو اس کی عدت طااق سا قط ہوکر عدت وفات کی طرف منتقل ہوجائے گی ، یعنی بالا تفاق اس کی عدت وفات سے جار ماہ دس دن ہوگی۔

این المندر نے کہا ہے کہ جن اہل علم کی رائے ہمیں معلوم ہے
ان سب کا اس مسلم پر اتفاق ہے، اس لئے کہ جسےطاا قی رجعی دی گئ
وہ بیوی بی ہے، اس پر اس شوہر کی طلاق بھی واقع ہوجاتی ہے، اور اس
مطاقہ کو اس شوہر کی میر اث بھی حاصل ہوتی ہے، اس لئے اس پرعدت
وفات لا زم ہوگی۔

اور اگر کسی نے اپنی بیوی کوطاات بائن دی اور وہ عدت میں تھی کشوم کا انتقال ہوگیا ، اورطاا ق صحت وتندری کی حالت میں دی تھی ، یا اس بیوی کے مطالبہ پر طااق دی تھی تو وہ مطاقہ مدت طااق می کو پوری کرے گی ، اور بیمسئلہ بھی مشفق علیہ ہے، البتہ اگر شوم نے مرض الموت میں اپنی بیوی کے مطالبہ کے بغیر طااق دی ہوتو اس صورت میں اختاا ف ہے۔

(۱) ابن علدين ۱۲ ۳۸،۱۳۳، الاختيار تشكيل الخيار سر ۱۵،۱ القوائين الكلهيه ر۲۲۹،روهند الطاكبين ۱۸ مه، المغنى ۲۷ سالا، كشاف القراع ۱۹۸۵ و ۲۹۹۸

ال صورت میں مام ابوطنیفہ امام احمد، توری اور محمد بن الحن کا
مذہب رہے کہ وہ احتیاطاً دونوں مدتوں (عدت طلاق اورعدت وفات
کی مدتوں) میں سے جوزیا دہ ہوائی کے مطابق عدت گز ارے گی، ال
لئے کہ ریشہ ہے کہ زوجیت قائم ہو، کیونکہ وہ اس شوہر کی وارث ہے۔
امام ما لک، امام شافعی، ابوعبیدہ، امام ابو یوسف اور ابن المندر
کا غدیب رہے کہ وہ عدت طلاق عی کو پوری کرے، اس لئے ک
بالکلیہ زوجیت ختم ہوچکی ہے (اک

مہینوں کی عدت کا حیض کی عدت کی طرف اوراس کے رمکس نتقل ہوجانا:

الف میمینوں کی عدت کا حیض کی عدت کی طرف منتقل ہوجانا:

۲۶ - اس پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ وہ مغیرہ جس کو حیض نہ آتا ہو، اور
ایسے می وہ الغہ جے حیض نہ آتا ہو، اگر پچھ مینے عدت گزار پچلی ہوں،
اور مدت پوری ہونے ہے پہلے آئیس حیض آجائے تو ان کی عدت
مہینوں سے حیض کی طرف منتقل ہوجاتی ہے، اس کی وجہ بیہ کہ مہینوں سے عدت حیض کا ہدل ہے، اور یہاں مبدل (اسل) پر
قدرت ناہت ہوگئی، اور بدل سے مقصود کے حاصل ہونے سے پہلے
اگر مبدل پرقدرت حاصل ہوجائے تو ہدل کا تھم باطل ہوجاتا ہے جیسے
اگر مبدل پرقدرت حاصل ہوجائے تو ہدل کا تھم باطل ہوجاتا ہے جیسے
اگر مبدل پرقدرت حاصل ہوجائے تو ہدل کا تھم باطل ہوجاتا ہے جیسے
کیم کرنے والے کے حق میں خصور پرقدرت حاصل ہوجائے گر الہد آئیدوں
کا تھم باطل ہوکر اس کی عدت جیش کی طرف منتقل ہوجائے گر (۱۲)۔
کا تھم باطل ہوکر اس کی عدت جیش کی طرف منتقل ہوجائے گر (۲۰)۔

⁽۱) فتح القدير ۱۳۳،۱۳۳،۱۳۳ طبع داراحياء التراث العربي، ابن عابدين ۱۲۵،۲۶، القوائين ۱۳۳۲، لوطاب ۱۵،۱۵۰ طبع دارافقر، روهنه الطالبين ۱۸م۹۹، المغنی ۲۷۷،۷۳

 ⁽٣) ابن هابدین ۲۰۹/۳، بدائع لصنائع سر۲۰۰ طبع دارالکتاب العربی، القوانین الکلهیدر ۳۳۱، روصه الطالبین ۲۸۰۷۳، آمنی لابن قدامه ۱/۲۷۲ م، ۲۸ س.

ای طرح آئمہ (جو حیض سے نا امید ہو چی ہو) اگر مبینوں سے
پچھ عدت گزار چی ہو، پھر وہ خون دیجھے، تو بعض حفیہ کے نزدیک
اس کی عدت حیض کی طرف منتقل ہوجاتی ہے، اور بید حفیہ کی وہ روایت
ہے جس میں انہوں نے نا امیدی کے لئے کوئی عمر متعین نہیں گی۔
یہ بھم ثنا فعیہ کے نزدیک ہے (۱)۔
یہ بھم ثنا فعیہ کے نزدیک ہے (۱)۔

مالکیہ کے فزد کے اگر پہاس سال کی عمر کے بعد اور ستر سال کی عمر سے پہلے خون دیکھے۔ اور ایسے علی حنابلہ کے فزد کیک اگر پہاس سال کی عمر کے بعد اور ساٹھ سال کی عمر سے پہلے خون دیکھے تو وہ خون مشکوک ہوگا جس کے لئے عور توں کی طرف رجوٹ کیا جائے گا۔

البنة حنا بلدمیں سے ابن قد امد نے کہا ہے کہ اگر عورت پیچاس سال کی عمر کے بعد اس عادت کے موافق خون دیکھے جو پہلے اس کی عادت تھی توسیح قول کے مطابق و دیش ہی ہے۔

اورجس روایت میں حفیہ نے نا امیدی کے لئے عمر متعین کی ہے اس کے موافق حفیہ کا ندبب رہے کہ اس مدت کے بعد وہ جو خون دیکھیے، ظاہر ندبب کے مطابق وہ حیش نہیں، الاید کہ وہ فالص خون موقو وہ حیش ہوگا، اور اس کی وجہ سے مبینوں سے عدت گزارنا باطل ہوجائے گا(۲)، اس موضوع کی تفصیل کے لئے اصطلاعات مات درجوع کیا جائے۔
'' ایاس'' اور''عدت'' کی طرف رجوع کیا جائے۔

ب-حیض کی عدت کامہینوں کی عدت کی طرف منتقل ہوجانا: ۲۷ - جس عورت نے خون دیکھا اور اس کے بعد اس کا حیض منقطع ہوگیا، اور وہ ابھی سن ایاس کو بھی نہ پیچی ہو، اسے مرتا بد (شک والی

عورت) کہاجاتا ہے۔ اس کے بارے میں تمام فقہاء کا مذہب ہیں ہے کہ اگر حیض کا منقطع ہونا کسی معروف سبب کی وجہ ہے ہو، جیسے رضاعت و نفاس با ایسام ض جس سے شفاء کی امید ہو، تو وہ حیش آنے کک رکی رہے ، اور حیض آنے پر حیض بی سے عدت گزارے ، یا پھر سن ایاس کو پہنچنے کے بعد مہینوں سے عدت گزار لے اور مدت انتظار کے لمبا ہونے کا کوئی اعتبار شیس ، اس لئے گزار لے اور مدت انتظار کے لمبا ہونے کا کوئی اعتبار شیس ، اس لئے کم مہینوں سے عدت گزارا مدت ایاس کے بعد منصوص ہے ، البند اس لئے ایس سے عدت گزارا عامدت گزارا عامز نہیں ۔

اورجس کا حیض کی ایسی ملت کی وجہ سے منقطع ہوگیا ہوجو ملک معروف نہ ہو، اس کے تعلق ما لکیہ کا ندیب، مام شافعی کا قول قدیم اور حنابلہ کا ندیب ہیں ہے کہ وہ نوماہ انتظار کرے گی، اس کے بعد تین مہیئے عدت گزارے گی، اس طرح ایک سال ہوجائے گا اور فقہاء نے اس کی ملت بیدیان کی ہے کہ عام طور پر مدت حمل نوماہ ہے، اور جب نوماہ گزر کے نئے تو رقم کا صاف ہونا واضح ہوگیا، اس لئے اب وہ مہینوں سے عدت گزارے گی جسن بھری سے بھی یکی روایت ہے، اور حضرت عمر ان سے صحابہ رضی اللہ عنیم اجمعین کی موجود گی میں یکی فیصل فرمایا۔

اور اما م شافعی کے قول قدیم میں بیجھی روایت ہے کہ وہ چھ ماہ انتظار کر کے نین ماہ عدت گز ار ہے گی، اور ان کے قول قدیم میں بیہ مجھی ہے کہ وہ جارسال انتظار کر کے نین ماہ عدت گز ار ہے گی (۱)۔

عشر ی زمین کاخراجی اورخراجی زمین کاعشر ی ہوجانا: ۲۸ - جمہورفقهاء کا مذہب بیہ ہے کہ خراجی زمین کبھی بھی عشری نہیں ہوتی ، اورای طرح عشری زمین بھی خراجی نہیں پنتی ، اور امام ابوحنیفہ

⁽۱) بدائع الصنائع سهر ۲۰۰۰، فتح القديم ۱۲۵۳، روحية الطالبين ۲۸۸ س. السراج الوماج روسي

البرائع سر ۲۰۰۰، ابن طاير بين ۱۸۷۳، الروقاني سر ۲۰۰۳، أختى البرائع مر ۲۰۰۳، أختى البرائاتي المراد ۱۳۰۳، أختى البراد سر ۱۳۰۳، المتنى

 ⁽۱) ابن عابد بن ۲۰۲۷، بدائع الصنائع سهر ۲۰۰، القوائين الكلمبيه ر ۳۳۱،
 روصة الطالبين ۸۸ اسم، المغنى لا بن قد امد ۱۳۳۷ سد ۲۷ سم، متن الهمها ج المطبوع مع السر اج الوباج ره سس

اور امام زفر کا مذہب ہیہ کوشری زمین کو اگر کوئی ذمی خرید لے تو وہ خراجی ہوجاتی ہے (۱)۔

امام ابو بیسف کی "کتاب الخراج" "بیس ہے کہ بادیا ہ کواس کی اجازت ہے کہ وہ عشری زمین کوخر ابحی، اور خراجی زمین کوعشری بنادے، البتہ تجاز، مدینہ، مکہ اور یمن کی زمینیں اس ہے متنفی ہیں، بنادے، البتہ تجاز، مدینہ، مکہ اور یمن کی زمینیں اس ہے متنفی ہیں، اس لئے کہ ان زمینوں میں خراج نہیں ہوسکتا، ابد ابادیثا ہ کے لئے بھی ان میں کوئی تغیر طاول نہیں ہے، اور جس پر رسول اللہ علیا ہے کا امر و تھم جاری ہوگیا، اس سے پھیر دینا اس کے لئے جائز نہیں (۳)۔ اس کی جاری ہوگیا، اس کے لئے اصطلاحات "ارض"، "معشر"، اور "خراج" کی طرف رجوئ کیا جائے۔

مستأمن كاذمي موجانا:

۲۹ - جمہور فقہاء (حنف، شافعیہ اور حنابلہ) کا مُدبب یہ ہے کہ فیر مسلم کو کمل ایک سال دار الاسلام میں رہنے کا موقع نہیں دیا جائے گا، اگر وہ ایک سال یا اس سے زائد دار الاسلام میں رہ جائے تو اس پر جزیم قرر کر دیا جائے گا، اور اس کے بعد وہ ذمی ہوجائے گا۔

ی پردی روروی بست به موسی سے بدیدہ وہا ہے کہ مستاً من مذہب حفی کے مقون کے ظاہر سے بدیدہ چلتا ہے کہ مستاً من کے ذمی ہونے کے لئے بیشرط ہے کہ امام بدیجے کہ اگرتم ایک سال یا اس سے زیادہ قیام کرو گے تو ہم تم پر جز بیمقر رکردیں گے، اس بنیا در اگر امام نے ایک سال یا اس سے زیادہ قیام کیا تو وہ ذمی نہیں ہوگا۔

ای طرح مستامن تا بع ہوکر بھی ذمی ہوجاتا ہے، جیسا کہ اگر کوئی شخص اپنی بیوی کے ساتھ ان کی چھوٹی ہوکر اور ان کے ساتھ ان کی چھوٹی ہڑی اولا وال کے بڑی اولا وہ اور وہ ذمی ہوجائے تو اس کی چھوٹی اولا وال کے تابع ہوگی ، بڑی اولا دکا بی کھم نہیں ہوگا (۱)۔

اور مستاً من کے ذمی ہوجانے پر متعدد احکام مرتب ہوتے ہیں، ان کی تفصیل کے لئے اصطلاحات: '' اُمل الذمہ''ا ور ''مستامن'' کی طرف رجوع کیاجائے۔

مستأمن كاحر في هوجانا:

 سا- جمہور فقہاء کی رائے رہے کہ چند مور کی وجہ ہے مساڑ من حربی ہوجاتا ہے:

مستاً من جب دار الحرب میں اقامت کی نیت سے چاجائے، خواہ اپنے شہر کے علاوہ کسی جگد پنچے (تو وہ حربی ہوجائے گا)، لہند ااگر تجارت یا پیغام پہنچانے یا سیر قفر تک یا کسی ضرورت کو پوراکرنے کی خوض سے جائے، اور وہ پھر دار الاسلام میں واپس آ جائے تو وہ اپنی جان وہال کے اعتبار سے حسب سابتی مامون رہے گا

اگر وہ امان تو ڑو ہے مثلاً عام مسلمانوں نے قال کرے میا ہم (مسلمانوں) سے جنگ کرنے کی وجہ ہے کسی گاؤں یا تلعہ پر غلبہ حاصل کر لے میا تقاضائے امان کے خلاف کسی ممل کا قند ام کرے (۳) تو اس کا عہد ٹوٹ جائے گا اور وہ حربی ہوجائے گا۔

جن چیز وں سے عہد و بیان ٹوٹ جاتا ہے ان میں اختاا ف اور

⁽۱) ابن عابدین سر ۳۶۳، الاختیار تسلیل افخا رار ۱۱۵،۱۱۳ طبع دار آمر فی، اکشرح اکسفیر از ۱۰۸ بوراس کے بعد کے صفحات، لااحکام اسلطانیہ للما وردی ۱۳۵۰ طبع مطبعة الدحادہ، اُمغنی ۷/۴ ۲۵، لااحکام اسلطانیہ لاالج بینظی ۱۵۳

⁽۲) بامش لأحكام السلطانية لأبي يعلى رسمة الطيع مصطفى البالي المحلمي ، كماب الخراج لا لي يوسف ر 18 طبع مطبعه بولاق_

⁽۱) - ابن هایدین سهر ۱۹۳۹، لأحکام اسداطانیه للساور دی ۱۳۳۸، اُمغنی ۸۸ و ۳۰ س لأحکام اسداطانیه لألم بینظی ۵ سال

⁽۲) این هاید مین ۳ر ۲۵۱،۲۵۰ امنی ۸ر ۳۰۰ س

⁽۳) ابن مایدین سهر ۳۵۱، ۳۵۳، الشرح اله فیرار ۱۳۱۷، جوایر لوکلیل ار ۳۲۹، مغنی الحتاج سهر ۳۵۸ تا ۳۹۲، المغنی ۸ر ۵۰ ساز ۵۸ تا اوراس کے بعد کے صفحات ۔

تحول ۳۱–۳۳

تفصیل ہے جس کے لئے اصطلاحات: "اکل الحرب" اور"مستاً من" کی طرف رجوع کیاجائے۔

ذى كاثر ني هوجانا:

ا سا- اس پر فقنہاء کا اتفاق ہے کہ اگر ذمی مختار وفر مانبردار ہوکر دار الحرب میں چاہ جائے اور وہاں اقامت افقیار کر لے، یا اپنے عہد ذمہ کوتو ژ دے، تو وہ حربی ہوجائے گا، اور اس کا خون ومال حاال ہوجائے گا، اور اس کا خون ومال حاال ہوجائے گا اور اس کا خون ومال حاال ہوجائے گا اور اس کے جواز اور وجوب کے بارے میں فقنہاء کے درمیان ساتھ جنگ کے جواز اور وجوب کے بارے میں فقنہاء کے درمیان اختااف ہے، ای طرح جن چیز وں سے عقد فرمہ ٹوٹ جاتا ہے ان میں تفصیل ہے (ا) جس کے لئے اصطلاحات '' اہل الحرب' اور میں کی طرف رجو تا کیا جائے۔

حر بی کامستاً من ہوجانا:

سوس جن مسلمانوں کو امان دینے کاحق حاصل ہواگر ان سے کوئی حربی امان حاصل کر لے تو وہ مستاً من ہوجاتا ہے، اس میں فقہاء کا اختلاف بھی ہے جو کتب فقہ میں اس بحث کے مقام پر مذکور ہے، نیز اس کے لئے اصطلاحات" امان"اور"مستاً من" بھی دیکھ لی جا نمیں۔

دارالاسلام کادارالحرباوراس کے برعکس ہوجانا: سوسا- شافعیہ اور حنابلہ کامذہب یہ ہے کہ اگر کسی بہتی کے باشندے مرمذ ہوجا کمیں اوراس بہتی میں ان کے احکام جاری ہوجا کمیں تووہ بہتی دارالحرب ہوجاتی ہے، اور بادشاہ پر ان کوڈرانے ان پر اتمام جمت کے بعد ان سے قال لازم ہوجاتا ہے، اس لئے کہ حضرت او بکرصد پن ٹ

نے صحابہ کی جماعت کے ساتھ مرتدین سے قال کیا (۱)۔ مہا سا۔ امام ابو حذیفہ کا مذہب ریہ ہے کہ نین امور کے بغیر دار الا ساام دار الحرب نہیں ہوتا:

الف - بیک ال ملک میں علی الاعلان اہل شرک کے احکام جاری ہوجا نمیں ، اور مسلما نوں کے احکام کے مطابق فیصلے نہ ہوں اور اگر مسلما نوں اور اہل شرک دونوں کے احکام جاری ہوں تو وہ ملک دار الحرب نہ ہوگا۔

ب ۔ بیک وہ ملک اس طرح دار الحرب کے پڑ ویں میں ہوکہ ان دونوں کے درمیان کوئی دار الاسلام نہ ہو۔

ج مسلمانوں کو اسلام اور ذمیوں کو عقد ذمہ کی وجہ سے کفار کے غلبہ سے قبل جوامان حاصل تھی ودہا قی ندر ہے۔

امام ابو بوسف اور امام محمد کے مزو یک صرف ایک شرط ہے کہ وہاں کفر کے فیصلہ کا اظہار ہو، اور یہی قیاس ہے (۴)۔

اور کسی دار کے دارالردہ ہوجانے پر چند احکام مرتب ہوتے ہیں، جن میں فقہاء کا اختلاف ہے، اس کے لئے ای کی بحث، اور اصطلاح ''ردت'' کی طرف رجوٹ کیاجائے۔

۳۵- اور اگر دار الحرب میں مسلمانوں کے احکام جاری ہوجائیں، جیسے جمعہ وعیدین، تو وہ دار الاسلام ہوجاتا ہے، اگر چہ اس میں کوئی کافر اصلی بھی رہ جائے، اور وہ کسی دار الاسلام سے مجاور ومنصل بھی نہ ہو (۳)۔

ایک مذہب سے دوسرے مذہب کی طرف منتقل ہو جانا: ۲ سا- ایک دین سے دوسرے دین کی طرف منتقل ہوجانے کی تین

⁽۱) این هایدین سهر ۱۰سه، الشرح اکه فیرار ۱۷ س، ۱۷سه، جوام ولاکلیل ار ۲۹۹، انفی ۸ ر ۵۸ مه، مغنی اکتاع سهر ۲۸۸ - ۲۹۳

⁽۱) لأحكام السلطانية للماوردي مر ۲۵ ۴۳ مه المغنى ۸۸ ۱۳۸۸ س

⁽۲) ابن مایوین سر ۲۵۳ س

⁽m) الأحكام السلطانية للماوردي ١٧ م، اين عابدين سهر ١٠٥٣ س

تشمير بالإين:

پہلی شم: باطل مذہب سے باطل مذہب کی طرف منتقل ہوا،

اس کی تین صورتیں ہیں: اس لئے کہ ودیا تو ٹا بت شدہ دین سے ٹا بت شدہ دین کی طرف منتقل ہوگا، جیسے نصر انی کا یہودی ہوجا تا یہ یہودی کا نصر انی ہوجا تا یا ٹا بت شدہ دین کی طرف منتقل ہوگا، جیسے نصر ٹا بت شدہ دین کی طرف منتقل ہوجا تا یا نصر انی کا بت پرتی کی طرف منتقل ہوجاتا یا موجاتا یا خیر ٹا بت شدہ دین سے ٹا بت شدہ دین کی طرف منتقل ہوگا، جیسے کس خیر ٹا بت شدہ دین سے ٹا بت شدہ دین کی طرف منتقل ہوگا، جیسے کس بت پرست کا یہودی یا نصر انی ہوجاتا ۔ ان حالات میں جس دین کی طرف وہ نتقل ہوا ہے جز مید لے کر اس دین پر اسے باقی رکھا جائے گایا مطرف وہ نتقل ہوا ہے جز مید لے کر اس دین پر اسے باقی رکھا جائے گایا میں؟ اس میں اختایاف اور تفصیل ہے، جس کے لئے کتب فقہ میں اربور ٹاکیا جائے۔

دوسری سم: وین اساام ہے کسی باطل وین کی طرف منتقل ہونا اور اس سے مراد العیا فباللہ مسلم کا مرتد ہونا ہے، اس صورت میں اس کی طرف سے اسلام کے علاوہ کوئی دین قبول نہیں کیا جائے گا، اس کی تفصیل کے لئے اصطلاح ''ردت'' کی طرف رجو ن کیا جائے۔

تیسری سم ہے: کسی باطل مذہب سے اسلام کی طرف منتقل ہونا ، اور اس پر مختلف احکام مرتب ہوتے ہیں جن کو کتب فقد میں ان کے مقام پر (۱) اور خاص اصطلاحات میں دیکھا جائے، نیز اصطلاحات '' تبدیل'' اور'' اسلام'' کی طرف رجو ٹ کیا جائے۔

تحويل

تعریف:

۱- تحویل افت میں: عَل الشّیٰ (بابِ تفعیل) کا مصدر ہے، ال کے معنی نقل، تغییر اور تبدیل کے ہیں۔ '' حوّ لته تحویلا" کسی چیز کو ایک جگه سے دوسری جگه منتقل کرنے کے لئے بولا جاتا ہے، اور '' حوّ لت الوداء": کے معنی بیہ ہیں: چاور کے ہر کنارہ کو دوسری طرف منتقل کردیا۔

اور "حوالة" فتح كے ساتھ نقل (منتقل كرنے) سے ماخوذ ہے، بولا جاتا ہے: "أحلته بدينه" يعنى قرض كودوسرے كے ذمه بين منتقل كرديا-

اں لفظ کو فقہاء اس کے نغوی معنی عی میں استعال کرتے ہیں (۱)۔

> متعلقه الفاظ: الف-نقل:

۲ - نقل: کسی چیز کو ایک جگه سے دوسری جگه متقل کرنے کو کہتے ہیں، اور اس میں اصل ایک مقام سے دوسر سے مقام کی طرف منتقل کرنا ہے۔

⁽۱) لسان العرب،المصباح لمير مادة "حول" ـ

⁽۱) ابن ما يوين ۲/۲ ۳، روهند الطاكبين ۲/۷ ۱۳۳

بسااوقات ال کااستعال معنوی مور میں بھی کیا جاتا ہے، جیسے ایک صفت کی طرف منتقل کرنا، اور جیسے کسی لفظ کو ایک صفت کی طرف منتقل کرنا (ا)۔ استعال مجازی کی طرف منتقل کرنا (ا)۔

ب-تبديل،ابدال اورتغيير:

سا- ال سے مرادیہ ہے کہ کسی چیز کی جگہ کوئی دوسری چیز رکھ دی جائے، یا اسے ایک صفت سے دوسری صفت کی طرف منتقل کردیا جائے۔ اس سے واضح ہوتا ہے کہ بیالفاظ تربیب المعنی ہیں، البعثہ تحویل کوایک ذات کودوسری ذات سے بدلنے کے معنی میں استعمال نہیں کیا جاتا ہے (۲)۔

تحویل کے احکام: الف-وضو میں تحویل نیت:

س- مالکید اور شافعید کا مدبب سید م که نیت وضو کے فر ایک میں سے ہے۔

حنابلہ کا مذہب بیہ کہ نیت ، وضو کی صحت کے لئے شرط ہے ، حفیہ کا مذہب بیہ کہ وضو میں نیت سنت مؤکدہ ہے ، وضو کی صحت کے لئے شرط نہیں ، بلکہ وضو کے عبادت بننے کے لئے شرط ہے۔

حاصل بیک وضوییں رفع عدت کی نیت کے بجائے اگر شنڈک باصفائی تقر ائی حاصل کرنے کی نیت کر لی تو حفیہ کے فز دیک وضو کے فاسد ہونے پر اس کا کوئی اثر مرتب نہ ہوگا، اس لئے کہ ان کے فزدیک نیت فرض بی نہیں۔ اس انتقال نیت کا اثر ان کے فزد دیک صرف بیہ ہوگا کہ وہ وضو عبادت نہیں کہلائے گی، ای سلسلہ میں

ابن عابدین کاقول ہے کہ وضویس اگر نیت ندگی گئی ہوتو بھی اس سے
ہمار نے زدیک نماز سیح ہوجاتی ہے، البتہ وضو کے عبادت ہونے کے
لئے نیت مسنون ہے، اس لئے کہ بغیر نیت کے وضو کو ایس عبادت نہیں
کہا جائے گاجس کا تھم دیا گیا ہے، اگر چہ اس سے نماز درست
ہوجائے گی۔

البداو البداو البريل البيت كے ساتھ ہو يا بغير نيت كے ہو يا تبديل البيت كے ساتھ ہو، بہر كيف صحت نماز كی شرط ہونے كی حيثيت سے سيج ہے، اگر چه بغير نيت كے ساتھ اسے عبادت نبيس كبا جائے گا۔ اور مالكيه بثا فعيد اور حنابلد كيز ديك تحويل نيت كا الروشو كا سركر نے اور شرعا ال كے غير معتبر ہونے كی صورت میں ظاہر ہوگا (۱)۔ اس سلسلہ میں مزید تفصیل ہے۔

چنانچ مالکیہ کے نزدیک وضو کے درمیان میں اگر نیت ختم کردی اور پھر فوراً لوٹ کر ای نیت کے ساتھ وضو کمل کرلیا تو کوئی مضا کقہ نہیں، اس کی صورت یہ ہے کہ ان کے نزدیک رائے قول کے مطابق رفع حدث کی نیت کی، پھر اس نے یا تو وضو کی تحییل ہی نہ کی یا دوسری نیت مثالاً شنڈک یا صفائی کی نیت کے ساتھ اس کی تحییل کی تو باتفاق وضو باطل ہوجائے گا۔ اور ای طرح اس نے وضو کی تحییل تو پہلی نیت ہے ساتھ کی لیون کے ماتھ کی کیکن کی خوصل کے بعد ایسا کیا تو اس صورت میں بھی وضو باطل ہوجائے گا۔ اور ای طرح اس کے بعد ایسا کیا تو اس صورت میں بھی وضو باطل ہوجائے گا۔

شافعیہ کے نزدیک اگر کسی نے سیح نیت کی، پھر پیر دھوتے ہوئے مثلاً مُصندُک یا صفائی کی نیت کر لی تو اس کی دوحالتیں ہیں: پہلی حالت یہ ہے کہ پیر دھوتے وقت وضو کی نیت کا استحضار نہ

⁽۱) المصباح لمعير ماده: "نفلٌ"، الفروق بص ٩ سا_

⁽۲) الممباح لممير ، من رانعهاج، الفروق ۱۳۳۸ ، ۱۳۰۹ ، الكليات ۱/۱۷. العربيفات ر ۱۲۳

^{. (}۱) - حاشيه ابن عامد بين الا ۱۰ ما ۵۰ اه فتح القديم الر ۲۸ ، روهه الطاكبين الر ۷ س، حاهية الدسوقي الرسم، ۹۵ ، لوطاب الر ۴ ۲۳ ، الانصاف الر۲ ۱۳۳

⁽r) الدموتي الره، الحطاب الرمه س

رہے، ہی میں دوقو ال ہیں:

یہا قول میہ کر پیروں کا دھونا سیح نہ ہوگا ، اور یکی سیح ہے۔ دوسر قول میہ ہے کہ پیروں کا دھونا سیح ہے ، اس لئے کہ پہلی نیت کا حکم ہاتی ہے۔

دومری حالت رہے کہ نیت وضو کا بھی استحضار ہواور ٹھنڈک حاصل کرنے کی بھی نیت ہو، جیسے کہ طہارت کے شروع عی میں ٹھنڈک حاصل کرنے کے ساتھ وضو کی نیت کرلی ہوتو اس بیں دو آوال ہیں:

پہاقول ہے ہے کہ وضو سیح ہے، اس لئے کہ رفع عدث کی نیت موجود ہے۔اور یکی سیح قول ہے۔

ووسر اقول سیے کہ پیروں کا دھونا سیجے نہیں ، اس کنے کہ اس نے نیکی کے ممل کو دوسر مے مل کے ساتھ شریک کر دیا ہے (۱)۔

حنابلہ کے بڑو یک اگر کسی شخص نے بعض اعضا وکو وضو کی نیت کے ساتھ اور بعض کو شندک کی نیت سے دھویا تو سیح نہیں ، الا بدک جو اعضا و شندک کی نیت سے دھویا تو سیح نہیں ، الا بدک جو اعضا و شندک کی نیت سے دھوئے ہوں انہیں وضو کی نیت سے دوبارہ دھو لے ، بشر طیکہ درمیان میں طویل فصل ندہو، تو اس صورت میں اس کا وضو سیح ہوگا ، اس لئے کہ نیت بھی موجود ہے اور موالات میں اس کا وضو سیح ہوگا ، اس لئے کہ نیت بھی موجود ہے اور موالات (یے دریے مل) بھی۔

اور اگر فصل اس قد رطویل ہوجائے کہ والات نہ پائی جائے تو اس کی وجہ سے وضو باطل ہوجائے گا(۴)۔

ب-نماز مین خویل نیت:

۵- تحویل نیت کے نتیجہ کے تعلق فقہاء کے پیبال تفصیل ہے:
 حفیہ کا مذہب بدہے کہ نماز پڑھتے ہوئے اگر دومری نماز کی

طرف منتقل ہونے کی نیت کرلی جائے تو اس سے نہ نماز باطل ہوتی ہے اور نہ برلتی ہے، بلکہ تبدیل کی نیت سے پہلے جو نیت کی تھی ای پہناز باقی رہتی ہے، الاید کہ دوسری نیت کے ساتھ تکبیر کہد لے، جس کی صورت بدہ کونش شروئ کرنے کے بعد نفل کی نیت سے تکبیر کے یا اس کے برقس کرے، یا تنہا نماز پڑا ہے ہوئے فائنة کی نیت سے تکبیر کے یا اس کے برقس کرے، یا تنہا نماز پڑا ہے ہوئے فائنة کی نیت سے تکبیر کے یا اس کے برقس کرے، یا تنہا نماز پڑا ہے ہوئے فائنة کی نیت سے تکبیر کے یا اس کے برقس کرے، یا تنہا نماز پڑا ہے ہوئے فائنة کی نیت

اور ان صورتوں میں بھی پہلی نماز ال وقت فاسد ہوگ جب قعدہ اخبرہ میں تشہد کی مقدار بیٹھنے سے پہلے نیت کی تبدیلی پائی جائے، اگر اس کے بعد اور سلام سے پچھ پہلے نیت کی تبدیلی پائی گئی تو پہلی نماز باطل نہ ہوگی (۱)۔

مالکیہ کے فزویک بغیر طویل قرائت اور رکوٹ کے بھولے سے ایک فرض سے دوسر مے فرض کی طرف یا فرض سے فعل کی طرف نیت کو بدلنا تا ہل معانی ہے۔

این فرحون ماکنی کہتے ہیں کہ نماز پڑھنے والا اگر فرض سے نفل کی طرف منتقل ہونے کی نبیت کرے ، نو اگر نبیت کی تبدیلی سے فرض کو چھوڑ نے کا تصد کیا ہونو نماز باطل ہوجائے گی ، اور اگر فرضیت کو ختم کرنے کی نبیت نہ کی ہونو اس کی دوسری نبیت پہلی نبیت ہے منافی نہ ہوگی ، اس لئے کہ نفل شارع کا مطلوب ہے ، اور مطلق طلب واجب میں موجود ہے ، لہذ انفل کی نبیت اس میں تا کید پیدا کرنے والی ہوگی ، اس میں تخصیص کرنے والی نہ ہوگی (۲)۔

شافعیہ کے مزد دیک نماز پڑھنے والا جونماز پڑھ رہاہے اگر ال نماز کو دوسری نماز سے جائے ہوئے جان ہو جھ کر بدل دے تو وہ نماز باطل ہوجائے گی، پھر اگر اسے کوئی عذر ہوتو نفس نماز درست

⁽۱) الجموع ار ۱۳۷۷، ۳۸ منهایته اکتاع ار ۱۳۷۷

⁽٣) كشاف القتاع الرحم، مطالب أولى أنهي ارح وال

⁽۱) - حاشیه ابن هامدین از ۱۸۳۱، حافیته الطحطاوی د ۱۸۳

⁽٣) - حافية الدسوقي الر ٣٣٥، مواجب الجليل مع البّاج و لو كليل الر ١٩هـ

ہوجائے گی ، کیکن وہ نفل سے بدل جائے گی۔ اور اس کی صورت یہ ہے کہ مثاً دخول وفت کا گمان ہوااور فرض کے لئے جبیر ترخ بہہ کہی ، پھر معلوم ہواکہ وفت تو ابھی ہوائی نہیں تو اس نے اپنی اس نماز کونفل سے بدل دیا ، یا اس نماز کونفل سے بدل دیا ، تاک جماعت میں شریک ہوجائے ، کیکن اگر اس نے متعین نفل، جیسے جماعت میں شریک ہوجائے ، کیکن اگر اس نے متعین نفل، جیسے چاشت کی دور کعت سے بدل دیا تو نماز سے خ نہ ہوگی ، اور اگر کسی سب یا سیجے غرض کے بغیر نیت بدل دی تو این کے فرد دیک اظہر یہ ہے کہ نماز باطل ہوجائے گی (۱)۔

حنابلہ کے نزدیک پہلی نماز کا بھا! ن اس کے ساتھ مقید ہے کہ اس نے اپنی نیت کو ایک فرض سے دوسر نے فرض کی طرف منتقل کردیا ہو، اور اس حالت میں اس کی نمازغل سے بدل جائے گی۔

اور اگرفزض سے نفل کی طرف منتقل ہوا ہوتو نماز باطل نہ ہوگی، کیکن ایسا کرنا مکروہ ہے، البنۃ اگر کسی فرض سیجے کی وجہ سے بیتبدیلی پائی گئی تو کوئی کرا ہت نہیں اور ایک روایت بیہ ہے کہ نماز سیجے نہیں، جیسے کوئی منفر د دیکھے کہ جماعت شروئ ہوگئی، اور جماعت میں شریک ہونے کے لئے دور کعت برسایام پھیر دے، تو اس کے تن میں سنت بیہ کہ کہ ان نماز کوفل سے بدل دے اور دور کعت برسایام پھیر دے، اس لئے کہ فرض کی نیت نفل کی نیت کوشامل ہے اور جب فرض کی نیت نئم کے تنیق نفل کی نیت نئم ہوگئی تو نفل کی نیت باتی رہ گئی (۴)۔

اس تفصیل ہے معلوم ہوا کہ اس پر فقتہا مِشفق ہیں کہ نفل نماز ہے۔ سے فرض کی طرف منتقل ہونے کی نبیت کا نماز کے نتقل ہونے رپر کوئی اگر مرتب نہیں ہوتا ، بلکہ وہ نفل بی رہتی ہے، اس لئے کہ اس صورت

میں ضعیف رقوی کی بنیا در کھنالا زم آتا ہے، جو سیجے نہیں۔

ج -روزه میں نیت کو بدلنا:

۲- حفیہ اور ثا فعیہ کا مذہب یہ ہے کہ فرض روزہ میں اگر نفل کی طرف نتقل ہونے کی نبیت کی جائے تو فرض روزہ باطل نبیس ہوتا ، اور نہی نقل سے بداتا ہے۔

منب ثا فعیہ کے واقول میں سے اسم یمی ہے۔

اور دوسر اقول ہیہ ہے کہ اگر غیر رمضان میں ایسا ہوتو روز ہفل سے بدل جائے گا، اور رمضان میں ہوتو نفل نہیں ہوگا، اس لئے کہ رمضان کامبدینہ رمضان کے فرض روز ہ کے لئے بی متعین ہے، لبذا رمضان میں غیر رمضان کاروز ہ تھیجی نہیں۔

شافعیہ نے صراحت کی ہے کہ اگر کسی نے نذر کا روزہ رکھ رکھا ہو، پھر وہ اپنی نیت ، کفارہ کی طرف پھیرد ہے یا اس کے برتکس کر سے تو ان کے بیباں بالا تفاق وہ روزہ درست نہ ہوگا جس کی طرف منتقل ہوا ہے ، اس لئے کہ کفارہ میں رات سے نیت شرط ہے۔

اورجس روزه کی نیت پہلے کی آھی اس کی دوصور تیں ہیں: پہلی میہ کہ وہ حسب سابق ہاتی رہے گا، باطل ندہوگا۔

دوسری میک وہ باطل ہوجائے گا، اور قول اظہر کے مطابق نفل سے بھی نہ بدیلے گا، اور اس کے مقابل میقول ہے کہ اگر غیر رمضان میں ہوتو وہ نفل سے بدل جائے گا(۱)۔

مالکیہ اور حنابلہ میں ہے ہر ایک کے بیبال تفصیل ہے: مالکیہ کامد بہب رہے کہ اگر کسی نے فرض روز ہر کھا اور پھر اپنی نیت نفل کی طرف پھیر دی تو اگر ایس نے جان کر بلاضر ورت ایسا کیا

⁽۱) البحرالراكق ۳۸۳/۳، لأشاه و انظائر لابن مجيم بحاهية الحموي الر ۷۸. روهية الطالبين ۷۲ ۳۵ س، الجموع ۲۷ ۸ ۹۹، ۹۹۹_

⁽۱) الجموع ۱۸۲۸، نهایته کتاع ار ۱۳۸۸

 ⁽۲) كثاف القتاع المهاس، الإنصاف ۲۹/۳ م.

ہے تو ان کے نز دیک بالا تفاق اس کاروز ہ فاسد ہوجائے گا، اور اگر اس نے بھول کر ایسا کیا ہوتو ان کے مذہب میں اختلاف ہے (ا)۔

حنابلہ کے بزویک فارج رمضان میں اگر اولاً تضاء کی نیت کی ،
پھر قضاء کی نیت کونفل سے بدل دیا تو تضاء کاروزہ باطل ہوجائے گا،
اس لئے کہ اس نے تضاء کی نیت بی شم کردی، اور اس صورت میں نفل بھی سیح نہ ہوگا، اس لئے کہ جس کے ذمہ رمضان کی قضاء ہو، قضاء سے پہلے اس کانفل روزہ درست بی نہیں ،" الاقناع" میں ایسابی ہے، اور" القروع" ،" کا اللہ کانفل روزہ درست ہوجائے گا، اوراگر کسی نے نذریا کفارہ کاروزہ رکھا، پھر اس کی نورہ سے سے مردی اورفل کی نیت کرلی تو درست ہے۔

حنابلہ نے سراحت کی ہے کہ اگر کسی نے قضاء کی نیت کو نفل کی طرف پہیر دیا تو اس کی قضاء باطل ہوجائے گی، اس کئے کہ اس کی نیت بالکلیہ ختم می ہوگئی، اور اس کا وہ روز ہ نفل بھی نہ ہوگا، اس کئے کہ جس کے ذمہ رمضان کی قضاء ہوتو اس قضاء کی ادائیگی ہے قبل اس کا نفل روزہ درست بی نہیں (۲)۔

د قريب المرك كوقبله كي طرف يجيرنا:

2- قریب المرگ آ دمی کوقبله رخ کردینابا تفاق فقها عمندوب ہے،
اور ال کی صورت میہ کہ اسے دائمیں پہلو پر قبله رخ پھیر دیا جائے،
اور اگر جگه کی تنگی یا کسی دیگر سبب سے ایسا کرنا دشو ار ہوجائے تو گدی

کے تل چیت لٹا کر اس کے بیر قبله رخ کردیئے جائمیں (۳)۔

قبلدرخ كردين كى دليل حضرت ابو قادةً كى بيرعديث ب:

ھ-استىقاءمىن چادرىللىتا:

۸- جمہور (مالکیہ، ثافیہ، حنابلہ اور حفیہ میں سے امام محمہ، اور حفیہ کا مفتی بہ قول یکی ہے) کا مذہب یہ ہے کہ استبقاء میں چاور پاٹنا مستحب ہے، اور امام ابو حفیفہ کا اس میں اختاا ف ہے، ان کے فرد یک استبقاء میں چا در پاٹنا نہیں ہے، اس لئے کہ ان کے فرد یک بید دعاء استبقاء میں چا در پاٹنائیں ہے، اس لئے کہ ان کے فرد یک بید دعاء ہے، جس میں نماز نہیں ہے۔

اورامام ابو بوسف کی دوروایتیں ہیں:

⁽۱) المواقع فليل بها ش الحطاب ۳۳۳، ۳۳۳.

⁽۲) كثا**ن القاع ۱**۲/۲۳ س

⁽۳) البنامية ۱۳ مه، المشرح الصغير الر۵۹۳، روضة الطالبين ۱۲ مه، ۵۷، الجموع ۲۵ مه المطالب أولى أنهى الر۸۳۷

⁽۱) حدیث الحاقادة "أن الله بی نظیفی مسأل عن الهواء....." کی روایت حاکم (۱/ ۳۵۳، ۳۵۳ طبع دائر قالمعارف العثمانیه) نے کی ہے، حاکم نے اس کو صبح قر اردیا ہے ورڈجی نے ان کی امو فقت کی ہے۔

اور جاور بلننے کا مصلب سیہ ہے کہ جاور کا جوجہ دو آئیں کندھے پر ہوا سے بائیں کندھے پر اور جو بائیں کندھے پر ہوا سے دائیں کندھے برکر دیا جائے (۱)۔

شافعیہ کا ندیب، یعنی ان کا قول جدید جوان کے فزو کے سیجے
ہے، سیہ کہ ای طرح الثنامت جب موراس کی صورت سیہ کہ
چادر کے اور کے حصر کو نیچے اور نیچے کے حصر کو اور کر دیا جائے، ال
میں مالکیہ اور حنا بلد کا اختاا ف ہے، وہ اس طرح النے کے قائل نہیں
ہیں۔

اور جاور ال وقت پلٹی جائے جب دعاء کے لئے قبلہ کی طرف رخ کریں، اور حفیہ، ثا فعیہ اور حنابلہ کے مزد کیک خطبہ کے درمیان پلٹی جائے۔

اورمالکیہ کے فرد کی دونوں خطبوں سے فار ٹی ہوکر پلٹی جائے۔
سنت نبوی میں چا در پلنے کی دلیل حضرت عبداللہ بن زیر گل صدیث ہے: "أن النبی اللہ من سلی و کست سقی، فتوجه إلی القبلة یلعو وحول رداءہ، ٹم صلی رکعتین جھو فیھما بالقواء ہی (انبی علیلی استقاء کے لئے نظے، اور قبلہ رخ ہوکر دعا وفر مائی اور ابنی چا در پلٹی، چردورکعت نماز پر شی اور ان میں موکر دعا وفر مائی اور ابنی چا در پلٹی، چردورکعت نماز پر شی اور ان میں مرکز دائے البیم فر مائی)۔

ایک قول میہ ہے کہ جاور پلئنے کی حکمت خوش حالی اور وسعت میں حالت کے تبدیل ہونے کے لئے نیک فال ہے۔

مالکید، شا فعیہ اور حنابلہ کے مزویک جاور بلٹنا امام اور مقتدی سب کے لئے مستحب ہے، دخنے کا اس میں اختلاف ہے، ان کے

- (۱) حاشیه ابن عامدین ۲ م ۱۸۴، فتح القدیم ۱۸۴ انه المشرح اکه فیرار ۹ ۵۳۰ کشاف القتاع ۱۸۴۷ ک
- (۲) حدیث عبدالله بن زمیهٔ "منحوج بست مسقی....." کی روایت بخاری (الله ع ۳ مر ۹۸ م طبع السلند) نے کی ہے۔

یبان مفتی بقول کے مطابق صرف امام عی اپنی جا در پلنے گا(۱)۔

وقترض کومحول کرنا:

9 فقہاء نے قرض کو محول کرنے کی مختلف تعرفین کی ہیں جو قریب
 قریب ہیں، مثلاً حق کا مطالبہ ایک کے ذمہ سے دوسرے کے ذمہ کی طرف پھیروینا (۳)۔

دوہری تعریف: دین اور قرض کو محیل (قرض حوالہ کرنے والے) کے ذمہ سے محال علیہ (جس کے حوالہ قرض کیا گیا ہو) کے ذمہ کی طرف منتقل کردینا(۳)۔

حوالة دين كل مشروعيت اجماع سے نابت ہے، جس كل دليل نبي عليه في كاليه ارشاد ہے: "مطل الغنى ظلم، وإذا أحيال أحد كم على مليء فليتبع" (مال داركا نال مثول كرنا ظلم ہے، اور جب تم ميں سے كسى كومال داركى طرف بيمير اجائے تو جا ہے كرائى كا بيجيما كيا جائے)۔

اور حولہ ٔ دین کا نتیجہ بیہ ہوتا ہے کہ وہ مال جس کا حوالہ کیا گیا ہو محیل (قرض حوالہ کرنے والے) کے ذمہ سے محال علیہ (جس کے حوالہ قرض کیا گیا ہو) کے ذمہ لا زم ہوجا تا ہے۔

چنانچ حوالہ کے ذریعہ مجیل محال کے قرض سے ہری ہوجاتا ہے،
اور محال علیہ محیل کے دین سے ہری ہوجاتا ہے، اور محال کاحق محال
علیہ کے ذمہ کی طرف منتقل ہوجاتا ہے، بیصورت حوالہ مقیدہ میں ہوتی
ہے، اور یمی غالب صورت ہے جس میں محیل محال علیہ کو قرض دینے

⁽۱) مالقيراني

⁽۲) كثاف القتاع سر ۳۸۳ س

⁽m) الافتارسم س

⁽٣) حديث "مطل الغدي ظلم....." كي روايت بخاري (الفتح ١١/٥ طبع الشاقب) اورسلم (سهر عه ١١ طبع لجلس) نے كي ہے۔

والا ہوتا ہے۔ اور حوالہ مطاقہ میں صرف محیل بری ہوتا ہے، اور حوالہ مطاقہ بیس صرف محیل بری ہوتا ہے، اور حوالہ مطاقہ بیہ کی مطاقہ بیہ ہو(ا)۔
تنصیل کے لئے اصطاباح "حوالہ" کی طرف رجو تکیا جائے۔

تحيز

تعريف:

ا - تحير كافوى معانى ميں الله معنى ماكل مونا ہے۔ اى الله تعالى كا ارشا و ہے: "يَا أَيُّهَا الَّهٰ يُونَ الْمَانُو الْإِذَا لَقِينَتُمُ الَّهٰ يُونَ يُولِهُمْ يَوْمَئِذِ ذَبُوهُ كَفَوْ وَا زَحْفًا فَلاَ تُولُوهُمْ الأَدْبَارَ وَمَنْ يُولُهِمْ يَوْمَئِذِ ذَبُوهُ كَفَوْ وَا زَحْفًا فَلاَ تُولُوهُمْ الأَدْبَارَ وَمَنْ يُولُهِمْ يَوْمَئِذِ ذَبُوهُ لَا مُتَحَيِّرًا اللّٰ فَيْهُ "(1) (الله ايمان والواجب تمباراسامنا موجائے گا كافر ول كُشكركا توان سے بشت والواجب تمباراسامنا موجائے گا كافر ول كُشكركا توان سے بشت مت يجيرنا اور جوكوئى ان سے اپنى بشت ال روز يجير كا سوال كر بيتر المل رابعولا ائى كے لئے يا اپنى جماعت كى طرف پنا ہ لے كر بيتر المل رابعولا ائى كے لئے يا اپنى جماعت كى طرف پنا ہ لے مائل مونے والا موجماعت مسلمين كى طرف، الل عرب بولئے ہيں: مائل مونے والا موجماعت مسلمين كى طرف، الل عرب بولئے ہيں: النحاذ الوجل إلى القوم "جس كامعنى ہے: وہ قوم كى طرف مائل

''لمان العرب'' میں ہے: انحاز القوم: یعنی وہ اپنے مرکز اور عرکۂ قال کوچھوڑ گئے '' اور دوسری جگہ کی طرف ماکل ہوگئے۔
اور اصطلاح میں: ''المتحیز اللی فئلة'' کے معنی بیر ہیں کہ قال کرنے والا جماعت مسلمین کے ساتھ ال جائے، اور ان کے ساتھ ال کرنے والا جماعت صلمین کے ساتھ ال کرنے، نیز اس میں کوئی فرق کر دشمنوں کے خلاف طاقت حاصل کرلے، نیز اس میں کوئی فرق



٢/ ٢١ ٣، كشاف القتاع سر ٣٨٢ س

⁽r) المصباح لممير ، نسان العرب.

نہیں کہ مسافت بعید ہویا قریب۔ چنانچ حضرت ابن عمرٌ نبی علیہ ے روایت کرتے ہیں کہ آپ علی نے ارشا وفر مایا: ''امّا فئہ

متعلقه الفاظ:

۲- تخرف کا ایک لغوی معنی: مائل ہونا اور اعراض کرنا ہے۔ اگر کوئی انسان کسی چیز سے اعراض کر کے (دوسری چیز کی طرف مائل ہو) تو ال کے لئے عربی میں: "تحوف، انحوف اور احرودف" بولا

مائل ہونے کو ایک جنگی حربہ ارکیا جاتا ہے، کیونکہ بعض مرتبہ میدان کی

المسلمين"(أ (يس ملمانون كى جماعت (عامى) يون)، حالانکہ وہ مسلمان آپ علیہ ہے دوری پر تھے۔حضرت ممڑنے فر مایا ہے کہ '' میں ہرمسلمان کی جماعت (عامی) ہوں'' عالانکہ حضرت عمرٌ مدینهٔ منوره میں تھے اور ان کے شکر مصر، ثام بحر اق اور خر اسان میں تھے۔ بید دونوں روایتیں سعید بن منصور نے نقل کی ہیں اور حضرت عمرٌ اُ نے فریایا: '' للہ تعالی ابو عبیدہ بررحم فریائے'' اگر وہ میری طرف مائل ہو تے تو میں ان کے لئے جماعت اور نوج ہوتا''^(۲)۔

تح ف:

الله تعالى كا ارتا وب: "إلا مُتَحَرِّفًا لِقِيمَالِ" (سواس کے کہ پیتر اہدل رہا ہولا ائی کے لئے)۔ اس سے مراد قال عی کے لنے مائل ہونا ہے، نہ کہ شکست کی وجہ ہے، اس لئے کہ قال کے لئے

تنگی کے باعث آ دمی دوڑنے اور حملہ کرنے پر قادر نہیں ہویا تا، تو وہ

وسیع جگه کی طرف آتا ہے، تا کہ جنگ پر قندرت حاصل کر سکے ^(۱)۔

منتقل ہو جہاں وہ قال اور جنگ پر یوری طرح قند رہ حاصل کر سکے،

مثلًا سورج بإبهوا ما منے سے ستار ہے بهوں تو ان سے رخ موڑ لے ، با

پت جگہ سے بلند یا بلندجگہ سے پت جگہ کی طرف آئے، یا بیاس کی

جگہ سے یانی کی جگہ کی طرف آئے میا ان میں اے موقع ہاتھ

آ جائے ، یا کسی پہاڑکا سہارالے ، یا جنگ کرنے والوں کی عادت کے

اس کی بوری تنصیل اصطلاح ""تحرف" میں ہے۔

چنانچ تحیز اور تخرف دونوں اس صورت میں یائے جاتے ہیں

جب جنگ میں مسلمانوں اور کافروں کی مڈیجیئر ہوجائے ، اور دونوں

کے تشکروں میں گھمسان کی جنگ ہونے لگے، لہذا متحیز وہ ہے کہ وہ

بذات خوداینے دشمن کا مقابلہ، اور اس میں کا میابی حاصل نہ کر سکے،

اس کنے کہ دشمنوں کی تعداد اور ان کا سامان جنگ زیادہ ہو، اور

مسلمانوں کی جماعتوں سے مدداور کمک حاصل کئے بغیر حارہ بی نہ

رہے، تو اس کے لئے مسلمانوں کی جماعت کی طرف مائل ہونا مباح

ہے، تا کہ ان کے ذریعہ طاقت حاصل کرے اس کے ذریعہ دشمن پر

غلبه وكامياني اوراس كے خلاف مد دحاصل كر كيے۔

موانق کوئی دیگرصورت اختیارکرے ^(۲)۔

اصطلاح میں تحرف بیہے کہ جنگ کرنے والا الی جگه کی طرف

اور متحرف وہ ہے کہ اسے خیال ہوکہ وہ مدمقاتل کے لئے کوئی حیلہ افتیارکرے اور اس کے ذریعہ اس پر غلبہ حاصل کرے ، اور اے معلوم ہوجائے کہ دشمن کو زک پہنچانے اور اس بر کا میانی اور غلبہ حاصل کرنے کے لئے اپنے منصوبوں کو بدلنا ضروری ہے، خواہ اس

⁽۱) المصباح لممير -

⁽٢) المغنى لا بن قدامه ۸م ۳۸۳ ۸۵ ۵ ۴ دوجية لطالبين ۱۸ ۲ ۳۸ س

⁽۱) عديث: "ألما فنة المسلمين" كي روايت ايوداؤد (سهر ٤٠ واطبع عرّت عبید دعاس) نے کی ہے اور اس کی سند ضعیف ہے (عون المعبود ۲۸ ۹ ۳۳۰ سٹا نع کروہ دارا لکتاب العرلی)۔

⁽٣) - أمغني لا بن قد امه ٥/٨ م م طبع الرياض الحديثة ، روحية الطالبين ١٠ر ٢٣٠٧ ـ

⁽m) لسان العرب ـ

⁽٣) سورة انفال ١٩٧٠

کے لئے جگہ تبدیل کرنی پڑے، یا پیچھالو نے، ناک دشمن بھی پیچھالو کے ساتھ اللہ اس کے ساتھ اللہ اس کے اور پھر ایک دم اس پر آ رام سے حملہ آ ور ہوجائے یا ان کے علاوہ کوئی ایسی صورت اختیار کی جائے جوجنگی حیلوں میں سے ہو، تو اس کے لئے بیصورتیں اختیار کرنا مباح ہے، حیلوں میں سے ہو، تو اس کے لئے بیصورتیں اختیار کرنا مباح ہے، اس لئے کہ جنگ تو تذہیر اور جال کانام ہے، البتہ ان صورتوں کے علاوہ کوئی دیگہ طریقہ اختیار کرنا متحیز اور جحرف میں سے کس کے لئے بھی حادل نہیں ہے۔

اجمالي حكم:

سا - تحیر اس صورت بیل مباح ہے جب مخیر کو یہ صول ہوجائے کہ اب وہ مقابلہ ہے عاجز ہے اور اسے دیگر مسلما نوں سے کمک حاصل کرنی ضروری ہے، اور اس کا ارادہ یہ ہوکہ وہ مسلمانوں کی جماعت بیل شامل اور شریک ہوکر اپنے دشمنوں کے مقابلہ بیل طاقت حاصل کرےگا، اور اُنہیں شکست دے کر ان پر کامیابی حاصل کرےگا، اور اُنہیں شکست دے کر ان پر کامیابی حاصل کرےگا، اور اگر ایسا نہ ہوتو مخیر کو راہ فر ارافتیا رکرنے والا کہا جائے گا، اور ایسا کرنا حرام ہوگا، اس لئے کہ اللہ تبارک و تعالی کا ارشاد ہے: ''یا اُلیفا الَّذِیْنَ آمَنُوا إِذَا لَقِیْتُمُ اللَّذِیْنَ کَفُرُوا اِنْ فَلَا تَوْلُوهُمْ مَوْلُوا اِلْا اللَّهِ فَاللَّهُ مَنْ اللَّهِ فَاللَّهُ مَنْ اللَّهِ فَاللَّهُ مَنْ اللَّهِ فَاللَّهُ مَنْ اللَّهِ وَمُنْ اِللَّهِ مَنْ اللَّهِ وَمُنْ اللَّهِ عَصْبِ مِنْ اللَّهِ وَمُنُوا اِنْ اِنْ اِنْ اِنْ اللَّهِ وَمُنْ اللَّهِ عَصْبِ مِنْ اللَّهِ عَمْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللَالِهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

جب مسلمان اور كفار جنگ بين برسر پيار بهون اور همسان كى جنگ بين برسر پيار بهون اور همسان كى جنگ بين دونون كافترون كافتر بحيم بهورى بهونو ايك عام ضابطه كے طور پر مسلمانوں پر واجب ہے كہ وثمن كے مقابله كے لئے تابت قدم رئيں ، اور راونر ارافقيا ركزا ان پرحرام ہے ، ال لئے كہ خداوند قد وال كافر مان ہے: "فَلاَ تُولُو هُمُ الاَّدُ بَارَ" (تو مت پهيروان ہے پيتے) ، اور دوسرى جگه الله تُولُو هُمُ الاَّدُ بَارَ" (تو مت پهيروان ہے پيتے) ، اور دوسرى جگه الله تُولُو هُمُ الاَّدُ بَارَ" (تو مت بهيروان ہے پيتے) ، اور دوسرى جگه الله تعالى كا ارشا د ہے: "يَا الله الله الله الله تعالى الله تعالى كا ارشا د ہے: "يَا الله الله الله الله الله الله تعالى الله الله الله الله تعالى الله تعالى الله الله تعالى الله تعالى الله تعالى الله الله تعالى الله تعال

چنانچ مسلمانوں پر واجب ہے کہ اپنے کافر وشمنوں کے مقابلہ میں

⁽۱) سورهٔ انفال پر ۵ س

⁽۲) عديث "اجتبوا السبع الموبقات...." كي روايت بخاري (الشخ ۱۹۳۷۵ طبع التقير) اورسلم (۱۹۲۱ طبع الحلمي) نے كي ہے۔

⁽١) سورة انفال ١٨ ١٥ ١٢ ١

نابت قدمی اختیار کریں، اور ان سے جنگ میں راوفر ار اختیار کرنا مسلمانوں برحرہ ہے، اور بیاس صورت میں ہے جب مسلمان کفار کے ہر اہر ہوں یا ان کی تعداد کفار کے مقابلہ میں آ دھی ہویا اس سے پچھ کم ہوہ آل لَيْ كَاللَّهُ تَعَالَى كَالرَّمُا وَيَهِ: "فَإِنْ يَكُنُّ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغُلِبُوا مِانَتَيْنِ وَإِنَّ يَكُنُ مِّنْكُمُ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِويُنَ " (سواگرتم ميں سے سونابت قدم ہوں تو دوسور غالب رہیں گے اور اگرتم میں سے ہز ارہوں تو دوہز ار پر غالب رہیں گے اللہ كے حكم سے ، اور الله نابت قدموں كے ساتھ ہے) ، البته ال كى اجازت ال صورت میں ہے جب ان کا ارادہ بدیموکہ جماعت مسلمین کی طرف مائل ہوں اور ان سے مدو وقوت حاصل کر کے دشمن کے خلاف طاقت حاصل کریں، اور اس میں کوئی فرق نہیں کہ جس جماعت کی طرف مائل موامقصود موودان عقريب مويا دور السلف كالشتعالى كاار ثادة "أوّ مُتَحَيِّزًا إلى فِئَةٍ" عام ب- قاضى إو فيعلى كتب بين كراكر مك عاصل کرنے والی جماعت خراسان میں ہواور کمک دینے والی جماعت تبازمیں ہوتو اس کی طرف ماکل ہونا بھی جائز ہے، اس کئے کہ حضرت ابن عمرٌ کی صديث ب كرنبي علي في الشافر مايا: "إني فئة لكم" (الس تمہارے لئے جماعت ہوں)، حالانکہ وہ لوگ آپ علی ہے دور تھے، اور حضرت عمر كاار ثاوي: "أنا فئة لكل مسلم" (مين برمسلمان ك لنے جماعت ہوں)، حالانکہ حضرت عمرٌ مدینہ میں اور ان کے شکر شام، عراق اورخر اسان ميس تصاور حضرت عمرٌ في لا "دحم الله أبا عبيلة لوكان تنحيز إليّ لكنت له فئة"(الله رحم فريائے اوسمبيرہ پر آلر وہ میری طرف مائل ہوتے تومیں ان کے لئے جماعت ہوتا)۔

۵- اگر کفار کی تعداد مسلمانوں کے مقابلہ میں دو چند سے زیادہ ہوتو مسلمانوں کے مقابلہ میں دو چند سے زیادہ ہوتو مسلمانوں کے لئے کہ اللہ تعالی نے

ورج ذیل آبت بین سوموسین پر دوسو کفار کا مقابلہ واجب قر ار دیا ہے: "فَإِنْ یَکُنْ مُنْکُمْ مِاللَةٌ صَابِرَةٌ یَعْلِبُواْ مِالْتَیْنِ" (سواگر بول تم بین سوخض نابت قدم رہنے والے تو غالب ہوں دوسوپر)۔
اس سے پنة چلتا ہے کہ ان پر دوسو سے زائد کا مقابلہ واجب نہیں۔
حضرت ابن عبال ہے منقول ہے ووفر ماتے ہیں: "من فرّ من الثین فقد فرّ، ومن فرّ من ثلاثة فلم یفو" (جودو کے مقابلہ سے بھا گاتواں نے رافر ارافقیار کی، اور جو نین کے مقابلہ سے بھا گاتواں نے رافر ارافقیار کی، اور جو نین کے مقابلہ سے بھا گاتواں میں، البتہ اگر مسلمانوں کا غالب گمان بیہ ہوکہ وہ ان پر کامیا بی اور فقی ماسل کرلیں گرتو اللہ کے کی کھی کہ کو بلند کرنے کے لئے ان پر جاسے قدمی اللہ علی بلاکت اور راہ فر ار بین نجات ہوں کا غالب گمان بیہ ہوکہ مقابلہ میں بلاکت اور راہ فر ار بین نجات ہوں کا غالب گمان بیہ ہوکہ مقابلہ میں بلاکت اور راہ فر ار بین نجات ہے تو راہ فر ار ان کے لئے اولی اور بہتر ہے، کیونکہ اللہ تعالی کافر بان ہے: "و کلا تُلْقُواْ مِلْیَا بِیْکُمْ إِلَی التَّهُلُکُوهُ" (اور این جان کو بلاکت بین بوکہ اور اگر اس صورت میں بھی وہ نابت این جان کو بلاکت میں نہ فر اور اگر اس صورت میں بھی وہ نابت

قدم رہیں تو بیجھی ان کے لئے جائز ہے، اس لئے کہ اس صورت میں

مقصدشهادت ہے، نیز ال لئے تا کرمسلمان شکست خورد ہند ہوجا کمیں،

اوراں لئے کہ بیجھی ممکن ہے کہ انہیں کفار پر غلبہ حاصل ہوجائے ، کیونکہ

الله تعالی کافضل وسیق ہے، جمہور فقہاء کا یہی مُدہب ہے، اور مالکیہ کہتے

ہیں کہ اگر مسلمانوں کی تعداد ہارہ ہزار ہوجائے توان برراد فرارافتیار کرنا

حرام ہے، خواہ کفار کی تعداد کتنی ہی زیادہ ہو، الا بیاک مسلمانوں میں

اختلاف ہوجائے یا قال می کے لئے تحیر مقصود ہو⁽⁶⁾۔

⁽١) سورة انفال ١٢٧ (

⁽٢) حديث: "إلى فنة لكم" كَلْ تَحْرُ تَكُفِّرُ هُبُرِرُ اللَّي كَذَر حِكَلِ.

⁽۱) سورۇيقرەر ۱۹۵

⁽۲) بدائع المعنائع فی ترتیب الشرائع ۸۸٫۷۵، ۹۹، المهدب فی فقه لا مام الشافع ۳۳۳، ۳۳۳، روهند الطالبین ۱۲۷۵، ۳۳۸، الشرح الکبیر ۱۲۸۸/۱۰۹۵، ۱۸ الشرح الصغیر ۳۷۸،۳۷۷، المغنی لا بن قدامه ۸۷ ۸۵،۳۸۳، کشاف القتاع عن ستن الاقتاع سر۵ ۲،۵۳، الجامع لا حکام القرآن للتو طبی ۷۷، ۳۸۰، ۳۸۳ بغیر روح المعانی ۱۸۲،۱۸۰

اجمالی حکم اور بحث کے مقامات:

 ۲- جمہور فقہاء کا اتفاق ہے کہ تحید مندوب ہے، اور ادائیگی تحید کا حکم بدتیار ہتا ہے جس کی تفصیل حسب ذیل ہے:

الف-زندہ لوگوں کے مابین تحیہ:

سو- علاء کاس بات پر اجماع ہے کسام کی ابتداء سنت ہے، جس کی ترغیب دی گئی ہے، اور ساام کا جو اب دینا فرض ہے (۱) ۔ اس لئے کہ اللہ تعالی کا ارشا دہے: "وَ إِذَا حُینَیْتُمْ بِتَحِیدٌةٍ فَحَیدُو بِاَحْسَنَ مِنْهَا أَوْرُدُو هُو اَلَى ارشا دہے: "وَ إِذَا حُینَیْتُمْ بِتَحِیدٌةٍ فَحَیدُو اَ بِاَحْسَنَ مِنْهَا أَوْرُدُ وُهَا" (اور جب تمہیں سلام کیا جائے تو تم اس ہے بہتر طور پر سلام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح مور پر سلام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح میں اسلام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح میں اللہ ساام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح میں اللہ ساام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے: اصطلاح میں اللہ سلام کرویا ای کولونا دو)، تفصیل کے لئے دیکھئے اور اسلام کرویا ای کولونا دو کا میں کولونا دو کا میں کولونا دو کا میں کولونا دو کا میں کولونا دو کے ایک دیکھئے اور اسلام کرویا ای کولونا دو کا میں کولونا دو کا میان کولونا دو کا میں کیا کہ کولونا دو کا میں کولونا دو کی کولونا دو کا میں کولونا دو کا میں کولونا دو کا کولونا دو کا میں کولونا دو کا میں کولونا دو کا کولونا دو کولونا کولونا دو کولونا کولونا کولونا دو کولونا کولونا کولونا کولونا کولونا کولونا کو

ب-مردول کاتحیه:

تعریف:

فقتہا ء نے لفظ ''تحیۃ '' کوسلام کے علاوہ ''تحیۃ المسجد'' کے لئے بھی استعمال کیا ہے۔

تحيه

⁽۱) تفسير القرطبي ۵ر سه ۴، ۴، ۴، ۳، ۳، فتح لمباري ۱۲،۲ ۱، ۱۲،۲ اطبع المحدوب أسبل المدادك سهر ۵۱ ۳، ۳۵۳ طبع عيمي الحلني مصر، تثرح المنهاج سهر ۲۱۵ طبع مصطفی المحلی مصر

⁽۲) الفتاوي البندرية ۵ر ۵۰ m، المغنى ۵۲۲/۳ مشهاج لطالبين ارا۵ m_

⁽۱) لسان العرب، المصباح الممير ماده " حيا" بَغَير القرطبي ۵ رعه ۲، ۹۸، طبع داد الكتب المصريب

_A1/2 Libry (r)

اضافيج:"ويرحم الله المستقلمين منا والمستأخرين"() (اورالله تعالى تم ميں سے پہلے جلے جانے والے اور بعد ميں جانے والوں پررخم فر مائنیں)۔

ج-تحية المسحد:

۵- جمہور فقہاءیہ کہتے ہیں کہ اگر کوئی شخص با وضومتجد حرام کے علاوہ سن متجدین بین شن سے داخل ہو، صرف گزرنا متصد نہ ہوتو وہ بیٹھنے سے پہلے دویا دو سے زائد رکھتیں پڑھے۔ اور اس کی اصل وہ حدیث ہے جس کے راوی حضرت ابوقیاد ڈ ہیں ،رسول اللہ علیہ نے ارثاوار ماي: "إذا دخل أحدكم المسجد فلا يجلس حتى یو کع رکعتین" (جبتم میں سے کوئی متحد میں وافل ہوتو نہ ببیٹھے تا آئکہ وہ دورکعتیں پڑھ لے)اور جوشخص عدث وغیرہ کی وجہہ ے دو رکعت نہ پڑھ سکے تو اس کے لئے یہ پڑھنا مندوب ے:"سبحان الله، والحمد لله، ولا إله إلا الله، والله أكبر، ولا حول ولا قوة إلا بالله العلى العظيم" ال لخ ك یہ دعاء دو رکعتوں کے ہراہر ہے جیسے کہ اذکار میں ہے اور وہ "الباقيات الصالحات والقرض الحسن" بي (سما

جو محض نماز سے پہلے بیٹھ جائے اس کے لئے مسنون ہے کہ

کھڑے ہوکرنماز اوا کرے اس لئے کرحفرت جابرؓ سے روایت ہےوہ

فرماتے ہیں :"جاء سلیک الغطفانی، ورسول اللہ ﷺ

يخطب، فقال: "يا سليك"قم فاركع ركعتين وتجوّز

فیهما"⁽¹⁾ (رسول الله علیانی خطبه دے رہے تھے کہ سُلیک انطفانی

ے - اگر کوئی محض مجدمیں اس وقت آئے جب کہ امام خطبہ دے رہا

ہوتو اس صورت میں فقہاء کے درمیان اختااف ہے، حفیہ اور مالکید کا

آئے،رسول اللہ علی نے نر ملا:"اے سیک" کھڑے ہوجاؤ اور دو ر کعتیں پر مصواور ملکی پر مصو) **اب**ند اید ور کعتیں بیٹھنے سے ساتھ نبیس ہوتیں۔ نیز ان پر فقہاء کا اتفاق ہے کہ اُنض یا نوانل ہے بھی تحیۃ المسجداداهوجاتی ہے۔ ٧- اگر کوئی شخص بار بار مسجد میں دخل ہوقو حنفیہ اور مالکیہ کے نز دیک (اگراس کلاربارمبحد کی طرف لوٹنامعریف ہو)اور ثنا فعیہ کے بیباں اسح قول کے بالتال قول کے مطابق سے کہ ہرون میں ایک مرتبہ تحیة المسجدال کے لئے کافی ہے اور ثا فعیہ کا اصح قول بیہے کہ جس طرح دیر ہے دوبارہ داخل ہونے برتحیۃ کہسجد ہے ای طرح جلدی جلدی جتنی مرتبہ داخل ہواتی مرتبہ تحیۃ المسجد ہے ^(۴)۔ اور اگر مسجد ہیں قریب قریب ہوں توان میں سے ہر ایک کے لئے تحیة السجد مسنون ہے (اللہ)۔

مذہب ریہ ہے کہ وہ مجد میں آ کر بعیٹھ جائے اور اس کے لئے دور ^{کعت}یں يرا هنا مكروه ب، الله الله تعالى كا ارتا وب: "فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَ أَنْصِتُواْ " (تَوْ اللّ كَي طرف كان لكاما كرواور خاموش ربو) اور (۱) عديث: "يا سليك فيم فاركع ركعين"كي روايت ملم (۵۹۷/۲

طبع کھلی کنے کی ہے۔

⁽۲) مالقيراني.

⁽m) قليوليار ١٥٥هـ (m)

⁽۳) سورهٔ اهراف ۱۳۰۸ س

⁽¹⁾ عديث: "السلام عليكم أهل المعار"كي روايت مسلم (١٤١/٢) طبع کململ)نے حضرت ما کٹانے کی ہے۔

 ⁽٢) عديث: "إذا دخل أحدكم المسجد فلا يجلس حنى يركع و تكعنين" كي روايت بخاري (الفتح الرع٥٥ طبع التلفيه) اورسلم (١٩٥١ م طبع کھلمی)نے کی ہے۔

⁽m) ابن هاید بن ار۵۹ ساز ۵۷ ساه الشرح آمینیر ار ۵ ۴ سام ۴ مطبع وارالمعارف مصر ، جوابر والكبيل ار ٢٣٧، قليو لي ار ٢١٥، روهية الطالبين ار ٣٣٣، أغنى لا بن قد امد ار ۵۵ م، ۵/۴ ساطيع مكتبة الرياض الحديث، كشاف القتاع الر٣٤٤ طبع عالم الكتب بيروت، موامِب الجليل ٢٨ ١٨، ٩٩، القتاوي البنديه ۵٪ ۲۱ ۳۰ الدسوقی ایر ۱۳ ۳۰ ۱۳ ۱۳ س

نماز راصف سے کان لگانا اور جب ربنا نوت ہوجاتا ہے، ال لئے سنت کی وجد سے فرض کوچھوڑ ما جائز نہیں ،شریح، ابن سیرین ،نخعی، قادہ، توری اورایث کا بھی یمی ندیب ہے۔

شا فعیہ اور حنابلہ کا مذہب ہیہ کہ وہ دور ک^{یہ ب}یں پڑھے اور ان میں اختصار کرے، اس کی دلیل سلیک العطفانی کی مذکورہ بالا عدیث ہے۔ حسن ، ابن عیبینہ ، ککول ، اسحاق ، ابو تور اور ابن المنذر کا بھی یبی قول ہے ^(۱)۔

د-تحية الكعيه:

۸- محرم جب مكه پنج كرمجدين واقل بهواور بيت الله براس كى نظر پراس كى نظر پراس نواور بيت الله براس كى نظر البيت تشريفا و تعظيما و تكويما و مهابة، وزد من شوفه و عظمه ممن حجه أو اعتمره تشريفا و تكريما و تعظيما" (۱) الله الله كم كى برت وعظمت اور برا أن اور عب بين اضافير ما، اور حج وعمره كرخ والون بين سے جو شخص الى كى برت وعظمت اور برا كى بين اضافير ما) كى برت وعظمت اور برا كى بين اضافير ما) اور الله مى برت وعظمت اور برا كى بين اضافير ما) كى برت وعظمت اور برا كى بين اضافير ما) كى برت وعظمت كرے الى كى بروايت امام شافعى اور بيبى نے بركى بين اضافير ما) كى بها ور بيبى بين الله مى انت السلام، و منك السلام فحينا ربنا بالسلام" (۱)

حنفیہ کے نز دیک بیدعا پغیر ہاتھ اٹھائے پر بھی جائے۔

- (۱) مبرائع الصنائع الر ۳۶۳ طبع دارالکتاب العربی، ابن عابد بن الر ۵۵۰، القوانین المعهیه ۱۸۲۸، بدلیه الجهجد الا۱۹۲۱ طبع مکتبه الکلیات وا زهر پ روصه الطالبین ۲۴ و ۳۰، المغنی لا بن قد امه ۱۹۸۳
- (۲) حدیث "اللهم زد ها، البت نشویفا....." کی روایت "یکی (۲۰/۵ طبع دی)
 (۳) حدیث "اللهم زد ها، البت نشویفا....." کی روایت "یکی نیمی دین منقطع ہے۔
- (٣) سنن يهي مرسمه، شرح المعهاع ٢٧٣، أمنى سر١٩٩٣، ١٠٠٠، نيز وتكھئة اصطلاح "ج" .

ھ-تىيەمىجدىرام:

9- جہور فقہاء کا مُدیب یہ ہے کہ اگر کوئی شخص باہر سے مکہ مکرمہ میں جائے ،خواہ اس کا مقصد تجارت ہویا تج یا اس کے علاوہ کوئی دومر امتصد ہوتو اس کے لئے مجد حرام کا تحییطواف ہے ، اس لئے کہ عائشہ گا ارشا و ہے:" اِن النبی عُنْ ﷺ حین قدم مکھ تو ضا، ٹیم طاف بالییت" (ایم عَنِی عَنْ اِللّٰ اللّٰہ عَنْ اللّٰہ کا طواف فرنا یا ، پھر بیت اللّٰہ کا طواف فرنا یا) اور متجد حرام میں تحییہ المسجد کی اگر دور کھتیں پڑھ ملی جا کیں تو وہ طواف کے کا میں تو وہ طواف کے بعد کی دور کھتیں پڑھ ملی جا کیں تو وہ طواف کے بعد کی دور کھتوں کی طرف سے کافی ہوجاتی ہیں (۱)

ابنتہ مکہ میں داخل ہونے والے کو اگر طواف سے روکنے والا کوئی عذر ہو، یا وہ طواف کا ارادہ نہ کرے تو وہ دو رکعتیں پڑھ لے، شرط یہ ہے کہ مکروہ وقت نہ ہو، اور اگر یہ اند ایشہ ہوکہ طواف کرنے سے فرض نمازیا جماعت یا وتر، یا سنت مؤکدہ نوت ہوجائے گی توطواف ان کے بعد کرلے، البتہ ان نمازوں سے مجدحرام کے تحیہ کی ادائیگی نہ ہوگی، برخلاف دیگر تمام مساجد کے۔ (ان میں فدکورہ نمازوں سے تحیہ کی ادائیگی تحیہ کی ادائیگی ہوجائے گی ۔

10- مکہ میں رہنے والا آدمی جوطواف کے لئے ما مور شیس، اور وہ مجد حرام میں طواف کی خرض سے بھی نہ آئے، بلکہ وہ نمازیا تا اوت و قرآن یا حصول علم کے لئے آئے تو دیگر تمام مساجد کی طرح اس کے حق میں مجد حرام کا تحدیثی نمازی ہے۔ امام احمد نے صراحت کی ہے کہ باہر سے محبد حرام میں آئے والے کے لئے طواف نمازے افغال ہے اور حضرت این عبائ سے مروی ہے کہ طواف اہل عراق کے لئے ہے، اور حضات کی بے کے النے ہے، اور حضات کی بے کہ اور حضات کی ہے کے النے ہے، اور حضات کی بے کہ اور حضات کی ہے کہ اور حضات کی ہے کہ اور حضات کی ہے کہ اور حضات کی گئے ہے، اور عظاء کا بھی یکی مذہب ہے (سے)۔

- (۱) اس عدید کی روایت بخاری (الفتح سهر ۷۷ مطبع استانیه) نے کی ہے۔
 - (٣) ابن عابدين ٢ م ١٩٥٨، قليو لي ام ٢١٥، كشاف القتاع ٢ م ٧٤ س
- (۳) ابن عابد بن الروم من مده من المراه المشرح المعقبر الروم من مده من المراه من من المعنى الدين قد المد

تغصيل کے لئے و کیھئے:اصطلاح "طواف"۔

و-تىيەمىجدنبوي:

مسلمان کے حق میں غیرسام کے فرر بعیۃ یہ کا تکم:

11 - عام علاء کا ند بب بیہ کہ مسلمان کے حق میں لفظ سلام کے علاوہ سے تحیہ بیس ہے، جیسے کوئی بیہ کہ کہ اللہ تیری صبح فیر کے ساتھ کرے، مجھے فیک بختی حاصل ہو، تو خوش عیش رہے، اللہ مجھے طافت بخشے ، اس کے علاوہ ووہر ہے ایسے الفاظ استعال کرے جنہیں لوگ عادة استعال کرے جنہیں لوگ عادة استعال کرے جنہیں لوگ عادة استعال کرتے ہیں، ان کی کوئی اصل نہیں ہے اور ان کا جواب میں دینا بھی واجب نہیں ہے، لیکن اگر ان جیسے الفاظ کے بدلہ جواب میں دعادے دی جائے تو بہتر اور احیمی بات ہے۔

ساا - عام علاء کا خیال میہ کے کفظ سلام کے علاوہ سے تحید کا جواب واجب نہیں ہے، خواہ میتحید کی دیگر لفظ سے ہو، یا انگل یا ہاتھ یاسر کے اشارہ سے ہو، البنتہ کو شکھی یا بہر ہ کا اشارہ اس سے مشکن ہے، کہ اس کو لفظ کے ساتھ ساتھ اشارہ سے بھی جواب دینا واجب ہے، تا ک

(۱) حاشيه ابن عابدين ٢٥٧٦، حافية الدسوقي الرسماس، منهاج الطاكبين ١٢٩٧٢، أمغني لابن قد امه سهر ١٥٥٧

ال طرح سے جواب مجھ میں آ سکے، اس کئے کہ اس کا اشارہ الفاظ کے قائم مقام ہے (۱)۔

سما - اگر کسی کوسایام کیاجائے اور وہ اس کا جو اب لفظ سایام کے علاوہ سے دینو عام علاء کا خیال ہے ہے کہ بیکا فی ند ہوگا اور ندی اس طرح سے جو اب کا وجوب ساتھ ہوگا، اس لئے کہ جو اب بالمثل واجب ہے جو اب کا وجوب ساتھ ہوگا، اس لئے کہ جو اب بالمثل واجب ہے (۲)، اللہ تعالی کا ارشا و ہے: "وَ إِذَا حُیدَیْتُمْ بِتَجِیدَّةٍ فَحَدُّوا بِ بِالْحُسنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّ وَهَا" (اور جب تہ ہیں سایام کیاجائے تو تم اس سے بہتر طور ریسایام کرویا ای کولونا دو)۔

غیرمسلم کوسلام کے ذریعہ تحییہ کا حکم:

10 - غير مسلم كو "السلام عليكم" كور ميرتي يمنوع يعنى حرام يا مكروه ب، الله كل وليل نبى عليه كا ارتباد ب: "لا تبلده وا اليهود ولا النصارى بالسلام، وإذا سلمواهم على مسلم قال في الود: وعليكم ولايزيد على هذا" (م) (يبود اور نسارى كوابتد ائسام نه كرواور اگر وه خودكى مسلمان كوسام كرين قوه مسلمان جواب مين و عليكم كي، اوراس سازيا ده پجهند كي) مسلمان جواب مين و عليكم كي، اوراس سازيا ده پجهند كي) - اور تقل مين بي جب يه عين السام عليكم " افراس سازيا ده پجهند كي) و اور تقل مين المين السام عليكم " افراس سازيا ده پهره تعين السام عليكم " افراس سازيا ده پهره تعين السام عليكم " افران مين المين مين المين السام عليكم " افران المين المي

سهر ۷۰س،کشاف القتاع ۲۸ ۷۷ س

⁽۱) روهه الطالبين ۱۰ر ۲۳۳، مغنی اکتاج ۱۳ ۱۳، نهايه اکتاج ۸۸۸، الانصاف ۱۳۳۳، لا وکارلمووي ۱۳۳۳

⁽۲) المغوا كه الدواني ۴ سر ۲۳ سم الجمل علي نثر ح أنتج ۵ ر ۸۸ آبشير ابن كثير ۴ ر ۳۵۱ ـ

⁽۳) سورۇنيا پرلام

⁽٣) عديث: "لا دبدءوا اليهود ولا النصارى بالسلام....." كي روايت مسلم (٣/ ١٤٠٤ المع لجلمي) نے كي ہے۔

كُونَى شَكَ وَشِهِ مَنهُ وَ وَ كَيَا اللَّ صَورَت مِيل جُوابِ كَ الدَر "وعليك السلام" كَهَا دَرسَت ہے ، ياسرف "و عليك " پر اكتفاء كرا؟ تو ولائل شرعيه اور قو اعد شريعت كا تقاضه بيہ ہے كه الل كے جواب ميل "و عليك السلام" كے ، اور اللہ تعالى "و عليك السلام" كے ، اور اللہ تعالى في عدل اور جما إلى كا تحكم و يا ہے ، نيز اللہ تعالى كا ارشا و ہے: "وَ إِذَا عَدَلَ مَا ارشا و ہے: "وَ إِذَا عَدَلَ اللهُ اللهُ

اس فرمان خد اوندی ہے معلوم ہوا کہ اللہ تعالی نے اس کے تحیہ اورد عامر زیاده کرنے کو افعنل و بہتر قر اردیا، اور عدل کو واجب کیا ہے، اور اس میں اس سے متعلق احادیث کی کوئی منافات ومخالفت نہیں ہے، اس کئے کہ نبی علی نے جواب دینے والے کو 'و علیہ کم ''ر اكتفاء كاجوتكم ديا ہے اس كا سبب وه طريقه ہے جو يہود ونساري ساام كرنے ميں اختيار كرتے تھے، اور حضرت عائشةً كى حديث ميں آپ عليه ن الطرف الثاروفر مايا ب، آب علي في ارثا فر مايا: "ألاترينني قلت:وعليكم، لمّا قالوا: السامّ عليكم ثم قال: إذا سلّم عليكم أهل الكتاب فقولوا: وعليكم"(أكيا تونے خیال نہیں کیا کہ میں نے "وعلیکم" کہا جب انہوں نے ''السام عليكم" كبار كرآب عليه في فر مايا: جب المل كماب تمہیں سلام کریں توتم "وعلیہ کم" کہو)۔اور انتہار اگرچہ لفظ کے عموم کا ہے، کیکن اس کے عموم کا اعتبار مذکورہ مثال جیسی صورتوں عی میں کیا جائے گا، ان کے علاوہ صورتوں میں نبیں، اللہ تعالی کا ارشا د ے: "وَإِذَا جَاؤُوكَ حَيَّوُكَ بِمَا لَمُ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ، وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمُ لَوُلاَ يُعَلَّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ "^(٣)(اور

جب وہ آپ کے پائی آتے ہیں آپ کو ایسے لفظ سے ساام کرتے ہیں جس جس اللہ نے آپ کوساام نہیں کیا اور آپس میں کہتے ہیں ک اللہ ہم کو ہمارے اللہ نے رپورائسز اکیوں نہیں دے دیتا)۔ لبند اجب بیسبب زائل ہوجائے اور کتابی بیہ کہن "سلام علیکم ورحمہ الله" ، تو تحید میں عدل کا تقاضہ بیہ کے ای کے ساام کے جیسا جو اب دیا جائے۔ وہاللہ اتو فیق (۱)۔

21 - حفیہ ، مالکیہ بعض بٹا فعیہ اور حنابلہ کی رائے یہ ہے کہ کافر کو لفظ سلام کے علاوہ سے بھی تخیہ کر وہ ہے ، الا بید کہ کوئی عذر ہو، یا کوئی غرض مثلاً کوئی ضرورت ہویا وہ پڑوی یا رشتہ دار ہو، چنانچ اگر تخیہ کسی عذر کی وجہ سے ہوتو اس میں کوئی کر اہت نہیں ، اور بٹا فعیہ اور حنابلہ کا رائح مذہب یہ ہے کہ کفار کو تخیہ حرام ہے ، خواہ لفظ سلام کے علاوہ بی کے ذر معیہ ہو (۲)۔

تحيات

د کیھئے:'' تشہد''۔

⁽۱) عدیث: "إذا سكم علبكم أهل الكتاب فقولوا: وعلبكم" كي روایت بخاري (الشخ ۱۱/۱ سطیع التقیر) نے كی ہے۔

⁽۲) سورهٔ مجادله/ ۸_

⁽۱) - احتام مل لذيبه الرووا، ووح طبع داراتعلم للمزاعين، لأ ذكا رليمو ي ٢٣٦٧.

⁽۲) - نهاییه اکتاع ۸۸ ۸ مه، الانصاف سهر ۳۳۳، این هایدین ۱۹۵۵، الاو کار للمووی ر ۲۲۷

تراجم فقههاء جلد ۱ میں آنے والے فقہاء کامخضر تعارف ابن الي لبابه(؟-١٢٤هـ)

آپ کانام عبدہ بن ابی لبابہ ہے، کنیت ابو القاسم، اور نسبت الله الفاضری ہے، آپ نے ابن عمر، ابن عمر و، زربن حبیش اور محاہد وغیرہ سے روابیت کیا ہے۔ اور آپ سے آپ کے بھا نج حسن بن الحر، نیز اعمش، ابن جرتج، اوز آئی، توری اور ابن عیبینہ وغیرہ نے روابیت کیا ہے، ابن سعد کہتے ہیں کہ آپ کوفہ کے فقہاء میں سے تھے، اور یعقوب بن سفیان کہتے ہیں کہ آپ کوفہ کے فقہاء میں سے تھے، اور یعقوب بن سفیان کہتے ہیں کہ آپ کوفہ کے نقہ حضر ات میں سے تھے، نیز ابو عائم بنسائی اور ابن شراش کہتے ہیں کہ آپ فقہ حشر ات میں سے تھے، نیز ابو عائم بنسائی اور ابن شراش کہتے ہیں کہ آپ فقہ حقے۔

[تنبذیب انتبذیب ۱۲ میزا علام النبلا۵ ور ۴۴ طبقات این سعد ۲ ۸ ۳ سا]

ابن اني ليلي :

ان کے حالات ج اص ۴۸ میں گذر چکے۔

ابن الیموی : پیرمحمد بن احمد مبیں: ان کے حالات خاص ۴ ۴۴ میں گذر کیے۔

ابن بربان (؟-٣٨هـ)

بیاته بن ابر ائیم بن داؤد، ابو العباس، المقری الحلی بین، ابن البر بان کے نام سے معروف بین، مسلک حفی کے فقید بین، مسلک حفی کے فقید بین، مسلک علوم میں مہارت رکھتے بتھے، آپ سے لوگوں نے استفادہ کیا۔

بعض تصانیف: "شوح الجامع الکبیو لمحمد بن الحسن الشیبانی" فقد مفی کی جزئیات میں۔
الشیبانی" فقد مفی کی جزئیات میں۔

[البدامية والنهامية سمار ۱۸۴؛ تاج التر اجم صرر الأجمعم المؤلفين ار ٢٣٤] الف

لآمدي:

ان کے حالات ج اص ۲۶ سمیس گذر چکے۔

ابراهيم اللقاني (؟ - الهمواه)

یداہرائیم بن حسن بن محد بن بارون، النقائی مصری ہیں، کنیت ابوالا مداد ہے، مسلکا مالکی ہیں، وہ فقیہ اور محد ثیر دیگر تمام عی علوم میں مہارت رکھتے ہتھے۔ آپ نے بڑے بڑے بڑے علاء مثلاً صدر الدین المحدیاوی، عبد الکریم البرمونی اور سالم السبوری وغیرہ سے علم حاصل کیا، اور ان سے علم حاصل کرنے والوں میں ان کے صاحبز اوہ عبد السام، نیز الخرشی، عبد الباقی الزرقانی، بوسف الحیشی اور احمد الزریانی وغیرہ ہیں۔

بعض تصانف: "الجوهرة"، "نصيحة الإخوان في شرب المدخان"، "حاشية على مختصر خليل"، "قضاء الوطر في نزهة النظر في توضيح تحفة الأثر، "منار أصول الفتوى و قواعد الإفتاء بالأقوى" اور "عقد الجمان في مسائل الضمان".

[شجرة النور الزكيه(١٩٩؛ شرح الصغير (فهرس المأعلام) ١٩٨٢-٨٤: خلاصعه لأثرار٦] ابن جریرالطبر ی ابن عابدین تراجم فقهاء تابن عابدین

يتها، اورتمام على علوم بين مهارت ركفته بتهدآ پ نے موفق الدين عبد اللطف بن بوسف أبعد ادى اور تاج الدين الكندى سے علم حاصل كيا ، مصر بين براحا، اور اپنے شہر كے قاضى رہے۔ بعض تصانف: "أزهار الأفكار في جو اهو الأحجاد" اور "خواص الأحجار و منافعها"۔

[شجرة الوراز كيدر ١٤٠٠ الديباج ١٣٧١ لأعلام ار٢٥٩]

ابن دقیق العید:

ان کے حالات ج سم ص ۲۴ میں گذر چکے۔

ابن الزبیر: بیرعبدالله بن الزبیر میں: ان کے حالات جاس ۲ کے میں گذر کیے۔

ابن سریج:

ان کے حالات جامل مسلم میں گذر چکے۔

ابن سيرين:

ان کے حالات ج اس سوسوم میں گذر کیے۔

ابن شبرمه:

ان کے حالات ج عص ۵۶۶ میں گذر کھے۔

ابن عابدین: ان کے حالات ج اص م سوم میں گذر کیے۔ ابن جربر الطمر ی: پیمحد بن جربر ہیں: ان کے حالات ج ۲س۲۱ میں گذر چکے۔

ابن الجزری: بیرمحد بین: ان کے حالات ج م ص ۹ سوم میں گذر چکے۔

ابن الحاجب:

ان کے حالات ج اص ۹۴۹ میں گذر چکے۔

ابن حامد: بیالحسن بن حامد ہیں: ان کے حالات ج ۲س ۵۶۳ میں گذر چکے۔

ابن صبيب:

ان کے حالات ج اس ، سوہ میں گذر چکے۔

ابن حجر العسقلاني:

ان کے حالات ج موس ۵۶۴ میں گذر چکے۔

ابن حجراً يتمى:

ان کے حالات ج اس ، سوس میں گذر چکے۔

ابن حمرون (۵۸۰–۱۵۱ھ)

یہ احمد بن بوسف بن احمد بن ابی بکر بن حمدون ہیں،شرف الدین لقب ہے، نسبت الفیس المتیعاثی ہے، افریقہ کے مقام'' تفصه'' کاایک گاؤں''میقاش'' کی طرف نسبت ہے، آپ فقیہ اور ادبیب

ابن عباس:

ابن عيبينه:

ان کے حالات ج کس ۹ ۴ میں گذر چکے۔

ابن عبدوس: په محمد بن ابراهیم مبین:

ان کے حالات نے اس ۵ سوم میں گذر کیے۔

ان کے حالات ج اس ہم سوہم میں گذر کیے۔

ابن عمر:

ان کے حالات ج اس اسوم میں گذر کھے۔

ابن العربي:

ان کے حالات ج اص ۵ سوم میں گذر چکے۔

ابن علان (۹۹۲–۱۰۵۷ھ)

یہ محرفل بن محرفان بن اہرائیم بن محرفان، بکری، صدیق، شافعی ہیں۔ مفسر بحدث اور فقید تھے۔ جب آپ ہے کوئی مسلم ہوچا جاتا توجلدی ہے اس کے جواب میں ایک رسالہ تالیف فر مادیتے۔ آپ نے فقہ، حدیث اور نحو کی تعلیم محربین محربین جار اللہ، سید محربین عبد الرحیم بھری، عبد الرحیم بھری، عبد الرحیم بھری، عبد الرحیم بھری، عبد الرحیم بین حسان اور عبد الملک المصامی وغیر ہم ہوئے۔ عبد الرحمٰن الخیار کہتے ہیں کہ آپ این زمانہ کے منصب پر فائز ہوئے ۔ عبد الرحمٰن الخیار کہتے ہیں کہ آپ این زمانہ کے سیوطی ہیں۔ آپ سے ایک بڑی جماعت نے نام حاصل کیا۔ مجی کہتے ہیں کہ آپ این خوان میں الکہ فنون میں ساٹھ سے زائد کیا ہیں تصنیف فر ما نمیں۔ نے مختلف فنون میں ساٹھ سے زائد کیا ہیں تصنیف فر ما نمیں۔ بعض تصانیف: ''اِعلام الا حوان بنت حویہ اللہ حان''، ''تحفة فوی المنع من التنباک''، ''ضیاء السبیل فوی الاحوان بنت حویہ اللہ حان''، ''تحفة فوی المنع من التنباک''، ''ضیاء السبیل فوی المنع من التنباک''، ''ضیاء السبیل المصالحین لطوق ریاض الصالحین''۔

[خلاصته لأنزمهم مهما: لأعلام عمر ١٨٤]

ابن غازی (۴۸۸ – ۹۱۹ ه ۱۹)

بیٹھربن احمد بن محمد بن محمد بن علی ہیں ، کنیت ابوعبد اللہ اور نسبت
العثمانی المکنائی ، الفائی ہے ۔ آپ تاری ، محدث ، مؤرخ ، فقیہ ، تلم
فر انفن کے باہر اور مفسر بتھے ۔ فقہ کی تعلیم استاذ النیجی اور القوری وغیر ہ
سے عاصل کی ، اور آپ سے عبد الواحد الوشر سی ، ابن العباس الصغیر ،
احمد وقون اور مفتی علی بن بارون وغیرہ نے فقہ کی تعلیم عاصل کی ۔
مکناسہ پھر فائس الجد بیر کے خطیب مقرر ہوئے ، پھر اخیر میں جامع
القر وہین میں خطابت و امامت کے عہدہ پر فائز ہوئے۔ آپ کے افتر وہیں میں خطابت و امامت کے عہدہ پر فائز ہوئے۔ آپ کے زمانہ میں آپ سے بڑ اخطیب کوئی نہ تھا۔

بعض تصانف: "شفاء الغليل في حل مقفل مختصر خليل"، إنشاد الشريد في ضوال القصيد في القراء ات" اور "بغية الطلاب في شرح منية الحساب".

[نيل الاجتهاج رسوسوسو؛ بدية العارفين ١٦ ٢ ٣ ٢؛ بتم المؤلفين ١٦/٩]

> ابن فرحون: بیابراہیم بن علی ہیں: ان کے حالات ج اس کے سوس میں گذر چکے۔

ابن القاسم: بيعبدالرحمٰن بن القاسم مالكي بين: ان كے عالات جاص كے سوہم بيں گذر كچے۔ تراجم فقباء

ابن قدامه

ابن مسعود:

ان کے حالات ج اس ۲ کے میں گذر چکے۔

ابن قند امه:

ان کے حالات ج اص ۸ سوم میں گذر کیے۔

ابن القيم:

ان کے حالات ج اص ۸ سوم میں گذر چکے۔

ابن کچ (؟-۵٠ هھ)

یہ یوسف بن احمد بن یوسف، بو القاسم، الدینوری ہیں، ابن کج کے نام سے مشہور ہیں، ائر شافعیہ بیں سے ایک فقیہ تھے، اور دینورکی فضاء پر فائز رہے۔ ابن خلکان کہتے ہیں: آپ نے بہت می کتا ہیں تصنیف فر مائیں جن سے فقہاء نے استفادہ کیا۔ سکی نے کہا ہے کہ مذہب شافعی کو حفظ کرنے میں آپ ضرب المثل تھے۔ لوگ ان کے پاس دوردراز سے سفر کرے آتے تھے، وہ ان لوگوں ہیں تھے جن کے قول کا (شافعی) مذہب میں اعتبار کیا جاتا ہے۔

[وفيات الاعيان ٢٦ س٢٠؛ طبقات الشافعيه ١٩٨٣؛ مرآة الجنان سهر ١٢؛ لأعلام ٩ر ٢٨٨]

ابن المايشون:

ان کے حالات نے اص 9 سوم میں گذر چکے۔

ابن ماجه:

ان کے حالات ج اص ۹ سوم میں گذر کیے۔

ابن المبارك: بيرعبدالله بن المبارك بين: ان كے عالات ج عص ٥٦٨ بيں گذر ڪيے۔

ابن المنذر:

ان کے حالات ج اس ۲ سم میں گذر کیے۔

ابن نا فع : پير عبدالله بن نا فع بين :

ان کے حالات جیسوس ۲۱ سم میں گذر کیا۔

ابن نجیم: یه زین الدین بن ابراهیم میں: ان کے عالات ٹاص ۱۳۴ میں گذر چکے۔

ابن جیم : پیمر بن ابر اہیم ہیں : ان کے عالات جاتس اس سم میں گذر کیے۔

ابن نصر الله (۲۵۵-۱۳۳۸ هـ)

یہ حمد بن نصر اللہ بن حمد بن محمد ہیں ، کنیت او افضل ہے ، بغداد کے رہنے والے اور مسلکا حنبلی ہیں ، آپ این نصر اللہ کے نام سے مشہور ہیں ۔ فقید ، محدث ، مفسر اور شیخ المد بب ہیں ، دیار مصر بید کے مفتی بیچے ، آپ نے سرائ اللہ بین البلقینی ، زین اللہ بین العراقی اور ابن الملقین وغیرہ مشائخ سے علوم حاصل کئے ۔

بعض تصانف: "حاشية على المحور"، "حاشية على الوجيز"، "حاشية على الوجيز"، "حاشية على فروع ابن مفلح" فقد يش، اور "حاشية على تنقيح الزركشي" صديث يس-

[الصوء المال مع عرر سوسوع: شذرات الذبب عر ۴۵۰: مجتم المؤلفين عرر ۱۹۵]

ابوبكرالصديق:

ان کے حالات جاس ۴۴۴ میں گذر چکے۔

ابن البمام:

ان کے حالات ج اص اسم ہمیں گذر چکے۔

لکی باین: م

ابن و ہرب: بیہ عبداللہ بن و ہرب مالکی ہیں: ان کے حالات ج اص عہم ہیں گذر کچے۔

ابن یونس (۱۳۳۸–۸۷۸ھ)

بیاحد بن یونس بن سعید بن بیسی ہیں، الفنظین المز بی نبیت بے، مسلکا مالکی ہیں، ابن یونس کے ام سے معروف ہیں۔ آپ نے فقہ، حدیث ، عربی زبان وادب اورد یگر علوم محد بن محمد بن میسی، ابوالقاسم البرزلی اور قاسم بن عبداللہ البر بری وغیر و سے حاصل کئے۔ اور آپ سے اہل مکہ اور مکہ آ نے والوں میں سے متعددلوگوں نے تملم حاصل کیا۔

بعض تصانيف: "أجوبة عن أسئلة" جو "المغالطات الصنعانية" كاجواب ب-

ينل الا بتهاج رض ۸۴؛ الضوء اللا مع ۱ر سا۵ ۴؛ بتم المولفين ۱۵/۴ [م]

ابولاً حوص: يمجمه بن الهيثم بين:

ان کے حالات ج ۲ ص ۸ ۲۷ میں گذر چکے۔

الواماميه:

ان کے حالات ج سوس ۲۶ میں گذر چکے۔

ابوابوب الانصاري:

ان کے حالات ج ۲ ص ۸ ۲ میں گذر چکے۔

ابوثور:

ان کے حالات ج اص سوہم میں گذر کیے۔

ابوجعفر: بیمحد بن عبدالله الهندوانی میں: ان کے عالات جسم سرم میں گذر کھے۔

الوحنيفية:

ان کے حالات ج اس سمس میں گذر کیے۔

ابوالخ**طاب:**

ان کے حالات ج اص مہم مہم میں گذر چکے۔

الوداؤد:

ان کے حالات جاس مہم میں گذر کھے۔

ابوالسعو د: پیچربن محربین:

ان کے حالات ج سوس ۲۲ ہمیں گذر کیے۔

ابوسعيدالخدرى:

ان کے حالات ج اس ۴۵ مسیل گذر کیے۔

الوعبيد:

ان کے حالات ج اص ۵ سم میں گذر کیے۔

ابوالفرج السنرهسي (٢ سوم - ١٩٩٧م ص)

یہ عبد الرحمٰن بن احمد بن محمد بن احمد، ابو القرح، سرحسی، مروزی ہیں، شافعی مسلک کے فقیہ ہیں، آپ نے قاضی حسین، حسن بن علی المطوعی اور محمد بن احمد المتمیمی سے فقہ حاصل کی ۔ اور آپ سے ابو طاہر تھی، عمر بن ابی مطیع اور احمد بن محمد بن اسماعیل نیسا پوری و فیر در وابیت کرتے ہیں ۔ آپ کے تعلق ابن السمعانی کا قول ہے کہ آپ المد اسلام میں سے ایک تھے اور فد بب شافعی کے حفظ میں آپ دور در از تک ضرب المثل تھے۔ مفظ میں آپ دور در از تک ضرب المثل تھے۔ بعض تصانیف: "سکتاب الأمانی" فقہ میں۔

[طبقات الشافعيه سورا۴۴؛ شذرات الذبب سور۲۰۰، ۴۰ تبذيب الانهاء واللغات ۴رسال ۴؛ مجم المولفين ۱۳۱۸]

ابوقباره:

ان کے حالات ج م ص سوے ۵ میں گذر چکے۔

ابواللیث السمر قندی: بینصر بن محمد بیں: ان کے عالات ج اس ۲ ۲۲ میں گذر کیے۔

ابوما لك الأشعرى (؟ -؟)

آپ کے نام میں اختلاف ہے، ایک قول کے مطابق آپ کا نام حارث بن الحارث، ایک قول کے مطابق آپ کا نام حارث بن الحارث، ایک قول کے مطابق عبید، اور آپ کے مطابق کعب بن عاصم ہے، اور آپ کے نام کے متعلق ان کے علاوہ دیگر قوال بھی ہیں۔ آپ صحابی ہیں، آپ نے نبی علیہ ہیں۔ آپ حابی ہیں، آپ نے نبی علیہ ہیں۔ آپ حابی ہیں، آپ نے نبی علیہ ہیں۔

روایت بیان کی، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں عبدالرحمٰن بن عنم الاشعری، ابوصالح الاشعری، شہر بن حوشب اور ابوساام لا سود وغیرہ ہیں۔

ابن حجر کہتے ہیں کہ ابو ما لک الاشعری جن سے ابوساام اور شہر بن حوشب روایت کرتے ہیں وہ حارث بن الحارث الاشعری ہیں،
اور بدابو ما لک الاشعری دومر کے شخص ہیں اور قدیم ہیں، ان کی وفات حضرت عمرٌ کی خلافت میں ہوگئی تھی۔ پھر انہوں نے مزید کہا کہ ان دونوں کے درمیان فرق بہت می مشکل ہے، جتی کہ ابواحمہ الحاکم نے ان کے حالات بیان کرتے ہوئے کہا کہ ابو مالک الاشعری کا معاملہ نہایت مشتبہ ہے۔

[للإصابة مهمرا كما: ۱ لاستيعاب مهم ۵۸ مهما: أسد الغالبة ۲۵ ۴۲۷ تبذيب النبذيب ۲۸ ساز ۲۱۸ [۲۱۸]

> ابوموسیالاشعری: سرور میروری ا

ان کے حالات ج اص کے ہم ہم میں گذر چکے۔

ابو هرريه ه:

ان کے حالات ج اص کے مہم میں گذر چکے۔

ابو يوسف:

ان کے حالات ج اس کے سم میں گذر چکے۔

احمد(امام):

ان کے حالات جاس ۴۸ مم میں گذر چکے۔

"مناسك الحج".

مقدمة الفواك العديدة في مسائل مفيده، جس ميں محمد بن عبدالعزيز بن مافع كے قام سے لكھے ہوئے آپ كے حالات ميں ارد]

السحاق بن را ہو ہے: م

ان کے حالات ج اص ۹ سم میں گذر کیے۔

اساء ہنت الی بکر الصدی**ق:** ان کے عا**لات** خاص ۴ مہم میں گذر چکے۔

اشہب: بیہاشہب بن عبدالعزیز میں: ان کے حالات ناص ۵۰ میں گذر کیے۔

امام نصر الشیر ازی: پینصر بن علی الشیر ازی بیں: ان کے حالات ج ۴ ص ۲۰۵ میں گذر کچے۔

اً م سلمہ: ان کے حالات ج اص ۵۰ سم میں گذر کیے۔

اُم عطيه (؟ -؟)

آپ کا نام نسیبہ بنت کعب ہے، اور بنت التارث کہا گیا ہے،
ام عطیہ کنیت ہے، اور آپ انسار میں سے ہیں، آپ نے ہر اور است
رسول الله علیہ اور حضرت عمرؓ سے روایت کی ہے۔ اور آپ سے
حضرت انس بن مالک، محد بن حیرین، حصلہ بنت حیر کین اور
عبر الملک بن میسر وغیرہ روایت کرتے ہیں۔ ابن حجر نے ابن عبدالبر

احمد بن محمد بن الجزري (۸۰۰ -؟)

بیاحمد بن محمد بن محمد بن محمد بن بیل بن بوسف بن الجزری بیل،
کنیت او بکر اور نسبت شیر ازی ہے، مسلکا آپ شافعی بیل اور ابن الجزری ہے مسلکا آپ شافعی بیل اور ابن الجزری ہے مشہور بیل، آپ قاری، مجود، حافظ اور دیگر بعض علوم بیل مہارت رکھتے تھے۔آپ کو الحسلاح بن الجامح، حافظ ابو بکر بن الحب اور ابن قاضی شہبہ وغیر ہ نے اجازت دی۔اور محمد بن عثمان الکامل اور سعید مصطفی وغیرہ نے آپ ہے علم حاصل کیا۔آپ شہر بروسہ بیل الجامع الا کبر البایز بیری کے متولی رہے، سلطان اشرف نے آپ کو مدرسہ عادلیہ کبری اور مدرسہ ام العمالح بیل شیخ القراء کے منصب پر بحال کیا، اور دشق بیل الصلاحیہ اور شیخ قاسیون بیل تا بکیہ کی قرایس برما مور رہے۔

بعض تصانف: "شوح طيبة النشو"، "شوح مقدمة التجويد" اور "شوح مقدمة علوم الحديث" ـ

[غليته النهالية فى طبقات القراء الر18: الصوء الملامع الرسووا]

احد بن محمد المنقوريا ميمي (؟-١٢٤هـ)

یہ حمد بن محمد آمیمی انجدی ہیں، المعقور سے مشہور ہیں، آپ کا نسب سعد بن زید مناق بن تمیم کک پنچا ہے۔ اور'' المعقور'' آپ کالقب ہے، اس لئے کہ آپ قیس بن عاصم المعقوری السحابی کے قبیلہ سے ہیں۔ آپ نے فقد اپنے شیخ، شیخ عبد اللہ بن ذبلان سے حاصل کی۔ حیا حب '' الوابلہ'' کہتے ہیں کہ آپ نے تفقوی اور دیانت وقناعت کے ساتھ محنت فرمائی، اور فقد میں مہارت نامہ حاصل کی، اور بہترین کتا ہیں تصنیف فرمائیں۔

بعض تصانف: ''الفواكه العديدة في مسائل مفيلة" اور

الأوزاعي:

ان کے حالات ج اص ۵۱ میں گذر چکے۔

سے نقل کیا ہے کہ ام عطیہ رسول اللہ علیہ کے ساتھ غزوات میں شرکت فر ماتی تحییں، اور مریفوں کی دیکھ بھال اور زخمیوں کی مرہم پٹی کرتی تحییں، نبی علیہ کی صاحبزادی کے شمل میں آپ شریک ہوئیں، صحابہ اور بھر دیے تابعین علاء کی ایک جماعت آپ سے شمل میں تیسل میں تیسی سے شمل میں تیسی تھی۔

[الاصاب ۱۳۲۲هم؛ أسد الغابه ۱۳۷۲هم؛ تبذیب التبذیب ۱۳۵۵/۱۲

الأمير (١١٥٧-٢٣٢هـ)

یہ جمر بن محر بن عبد القادر بن عبد العزیز ہیں، ابوعبد اللہ کنیت ہے، السنبا وی لاا زہری فبدت ہے، اور امیر کے نام ہیں۔
ہیں۔ آپ فقہا عمالکیہ میں سے ہیں اور عربی زبان کے عالم ہیں۔
آپ نے فقہ وغیرہ شیخ الصعیدی اور السید البلیدی سے حاصل کی، اور سالہا سال حسن الجبرتی کی شاگر دی میں رہ کر ان سے فقہ خفی اور دیگر فنون حاصل کے، اور بوسف الحفی وغیرہ سے اکتباب فیض کیا۔ اور آپ سے آپ کے صاحبز ادہ محمد، نیز دسوقی اور احمد العماوی وغیرہ نے نام حاصل کیا۔

بعض تصانف: 'الإكليل شوح مختصو خليل"، حاشية على شوح على شوح الزرقائي على العزية" اور "حاشية على شوح ابن توكى على العشماوية"، بيب فقم السيارية

[علية البشر سور ١٣٦٦؛ الشرح الصغيرتهم الاعلام ١٨٥٣، لأعلام ٢٩٨٨]

> انس بن ما لک: ان کے حالات ج ۲ص ۵۷ میں گذر کیے۔

البابلي (۱۰۰۰–۲۷۰۱ه)

آپ کا نام محر بن علاؤ الدین، لقب مش الدین، کنیت ابوعبر الله، اور نبعت البابلی، القاہری اور لا زہری ہے، شافعی المسلک ہیں، فقید، محدث اور حافظ بھے، آپ نے شیخ علی الجلسی، عبدالرؤف المناوی، سالم المنہوری، علی لا جموری اور صالح بن شہاب الدین المنقینی وغیرہ سے علوم حاصل کئے۔ اور آپ سے اکتساب فیض کرنے والوں میں شمس محد بن فلیفہ الشویری، عبدالقادر المسفوری اور احد بن عبدالرؤف وغیرہ ہیں۔

بعض تصانیف: "الجهاد و فضائله"، اور "فهرست مجمع مرویاته و شیو خه و مسلسلاته".

[خلاصند لأثر مهمر ٩ سو؛ لأ علام ١٥٢]

الباقلانی: پیچمر بن الطیب ہیں: ان کےعالات خاص ۵۴ میں گذر کیے۔

البغوى:

ان کے حالات ج اس ۲۵۴ میں گذر کیے۔

البهوتى: يېمنصور بن يونس بين:

ان کے حالات ج اص ۵۴ میں گذر کیے۔

البيضاوي (؟-١٨٥هـ)

بیام الله بن عمر بن محمد بن علی بین القب باصر الدین اکنیت الوسعید، اور نبیت البیصاوی ، الشیر ازی ہے، آپ شافعی المسلک بین ، بیغا وی شیر از کے ایک گاؤں بیغا وی طرف نبیت ہے۔ آپ فقید ، مفسر ، اصولی اور محدث تھے ، اور شیر از بین قاضی القضا قا کے عہدہ برفائز رہے، آپ نے این والد ، معین الدین الوسعید اور زین الدین حجة الاسلام ابو حامد الغز الی وغیر و سے علم فقد حاصل کیا۔

بعض تصانف: "منهاج الأصول إلى علم الوصول"، الغاية القصوى في دراسة الفتوى" فقد ثانعى كى جزئيات على، "أنوار التنزيل وأسوار التأويل" يُقْدِر بيناوى كام مصابيح السنة للبغوى" -

[طبقات الشافعية ٥٩/٥٥؛ البداية والنهالية سلام ٩٠ سو؛ مرآة البخان سهر ٢٠٤٠ مجم المؤلفين ٢١/٩٤]

ث

الثوري:

ان کے حالات جاس ۵۵ میں گذر چکے۔

ج

جابر بن عبدالله:

ان کے حالات ٹی اص ۵۹ میں گذر کیے۔

الجصاص: بیاحمد بن علی میں: ان کے حالات خاص ۴۵۶ میں گذر کیے۔

الجو يي:

ان کے حالات جا ص ۵۶ میں گذر کیے۔

<u>...</u>

التر مذي:

ان کے حالات ج اس ۵۵ میں گذر کیا۔

الحطاب:

ان کے حالات جاس ۵۹ میں گذر کیے۔

ځميد بن عبدالرحمٰن (؟-؟)

یہ حمید بن عبدالرحل انجمر کی، البصر کی ہیں۔ آپ تا بعی اور افقہ ہیں، جمیر بن سبا بن یہ ہب کی طرف منسوب ہیں، آپ او بکرہ، ابن جمیر بن سبا بن یہ ہب کی طرف منسوب ہیں، آپ او بکرہ، ابن جمیر اور این عباس رضی الله عنیم وغیرہ سے روایت کرتے ہیں۔ اور آپ سے روایت کرنے والے آپ کے صاحبز او بے عبید الله، نیز محمد بن المستشر ، محمد بن میر بن اور عبدالله بن ہر بیدہ وغیرہ ہیں۔ پھرمز بید کہا، وغیرہ ہیں۔ پھرمز بید کہا، ابن میر بن کا قول ہے کہ آپ نا بعی اور ثقتہ ہیں۔ پھرمز بید کہا، ابن میر بن کا قول ہے کہ آپ اہل بھرہ میں سب سے بڑے فقیم ابن میر بین کا قول ہے کہ آپ اہل بھرہ میں سب سے بڑے فقیم ہیں۔ بات حبار ان نے ثقات میں آپ کا ذکر کیا ہے۔

[تبذیب انتبذیب سراس، طبقات این سعد کار کاما، طبقات الفقهاء ۸۸] -

الحموى(؟-٥٦١هـ)

آپ کانام احمد بن محمد، شہاب الدین لقب، اور اُٹھوی، اُلمصری نبیت ہے، حقی المسلک ہیں، فقیدا ور متعدد علوم کے ماہر تھے، آپ نے المدرستہ السلیمانیہ ہیں قدرایس کفر اُنفس انجام دیئے۔

بعض تصانيف: "حاشية على الدور والغور"، "كشف الرمز عن خبايا الكنز" جو" كنزالد قائق" كى شرح ب، عاشيه مسمى به "غمز عيون البصائر على محاسن الأشباه و النظائر لابن نجيم"، اور "القول البليغ في حكم التبليغ" - الجرتى الركاة بدية العارفين الركاة : مجم الموافين الموافين

ح

الحسن البصري:

ان کے حالات تی اص ۵۸ میں گذر کیے۔

الحن بن زياد:

ان کے حالات ج اص ۵۸ سمیں گذر چکے۔

حسن اشطی (۴۰۵ – ۲۲ م ۱۲ م ۱۲ ه

بعض تصانيف: "منحة مولى الفتح في تجريد زوائد الغاية"، "الشوح" فقد عنبلى كى جزئيات بيس، "شوح الكافي" تلم عروض قو انى بيس، اور "النثار على الإظهار"-

[حلية البشر الر ٤٦٨م، بثم المؤلفين سور ٢٦٤]

ا الح**صک**فی:

ان کے حالات ٹی اص ۵۹ ہمیں گذر کیا۔

الرافعي

تراجم فقبهاء

حنش بن عقيل

الخر قي:

حنش بن عقيل (؟ -؟)

ان کے حالات جاس ۲۹ میں گذر کیے۔

آپ کا نام صنص بن عقیل ہے، غفار بن ملیک کے بھائی انعلیہ بن ملیک کی اولا دہیں سے ہیں۔ آپ صحابی رسول ہیں، "ولائل النبو ق"میں آپ کی طویل صدیث ہے، رسول اللہ علیہ ہے۔ آپ کی طویل صدیث ہے، رسول اللہ علیہ ہے۔ آپ کو اساام کی وجوت آپ نے ملا قات کی تو رسول اللہ علیہ ہے۔ دی تو آپ حافقہ بگوش اساام ہوگئے، اور آپ علیہ ہے ان کو بچا ہوا مند ملا ا

الخطیب الشربینی: ان کےعالات ٹاک ۲۳ میں گذر کیے۔

[الإصابة الر24 ملا؛ أسدالغابة الروسو2]

•

الدرور:

ان کے حالات جاس سواس بیں گذر کیے۔

ػ

الدسوقی: پیچر بن احمدالدسوقی میں: ان کےعالات جاس سالاس میں گذر کیے۔

غالدين احمر (؟ - ١٠١٣ هـ)

یہ خالد بن احمد بن محمد بن عبداللہ، کنیت او البقاء اور نبیت اللہ اللہ بیں محبد حرام کے المغربی ہے، مسلکا مالکی ہیں، اپنے زمانہ بیں محبد حرام کے صدرالمدرسین رہے۔ آپ نے شمس الرقی اور سالم استہوری وغیرہ سے تلم حاصل کیا۔ اور آپ سے محمد بن علی بن علیان اور تاج الدین المالکی وغیرہ نے اکتباب فیض کیا۔

[غلاصة لأثر ٢ م ٩ ١٣: شجرة النور الزكيد ٢٩١]

الرافعي:

ان کے حالات ج اس ۲۴ سم میں گذر کھے۔

خالد بن الوليد:

ان کے حالات ج ۲ ص ۸۵ میں گذر چکے۔

تراجم فقبهاء

ربيعة الرأى

ربيعة الرأى:

ان کے حالات ج اص ۶۲ سمیں گذر کیے۔

الرحيبانی: يەم مسطفی بن سعد ہیں: ان کے حالات ج ۲ص ۸۴ ۵ میں گذر کچے۔

الرشيدي (؟-١٠٩٦هـ)

یه حدین عبد الرزاق بن محدین احد، المغربی الرشیدی ہیں، آپ شافعی المسلک ہیں، آپ فقید، عالم اور ادبیب بنے، آپ نے عبدالرحمٰن البرلسی، محمد الشاب اور علی الخیاط سے علم حاصل کیا، اور علاء الشمر الملسی کی رفاقت اختیار کی، اور اپنے شہر رشید میں جومصر میں ہے، مقرر السی کی خدمت انجام دیتے رہے۔ وہاں آپ نے بڑی شہرت حاصل کی، اور آپ وہاں شافعیہ کے شخر اربائے۔

بعض تصانیف: "حاشیة علی شوح المنهاج للوملي" اور "تیجان العنوان"۔

[غلاصته لأكرَّار ٢ سوم: لأعلام ار ١٣٥]

رفاعه بن رافع (؟-١٣مه)

یہ رفاعہ بن رافع بن مالک، ابو معاذ، الرزقی الانساری الخزرجی، صحابی بین، آپ نبی علیق معنزت ابو برصد ایل اور حضرت عبادہ بن الصامت ہے روایت کرتے ہیں، اور آپ سے حضرت عبادہ بن الصامت ہے دو بیٹے عبید اور معاذ اور آپ کے بیٹیج روایت کرنے والوں بیں آپ کے دو بیٹے عبید اور معاذ اور آپ کے بیٹیج بختی بن خلاد بن رافع وغیرہ ہیں۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کرآپ بنگ برر، احد، خند ق، بیعت رضو ان اور دیگر تمام غز وات میں رسول الله علیہ عبد البر کہتے ہیں کر حضرت میں رسول الله عبد البر کہتے ہیں کہ حضرت

رفائد مخضرت علی کے ساتھ جنگ جمل اور صفین میں شریک ہوئے۔ [الاستیعاب ۱۷ م ۹۷ م)؛ اُسدالغابہ ۱۷ ساک ، تبذیب النہذیب سار ۲۸ ا

الرويانى:

ان کے حالات ج اس ۲۵ سم رگذر کھے۔

ز

الزركشى: يەمجىد بن بها در بين:

ان کے حالات ج م ص ۵۸۵ میں گذر چکے۔

زفر:

ان کے حالات ٹی اص ۲۶ سم میں گذر چکے۔

زكريا الانصارى:

ان کے حالات ج اص ۶۲ سم میں گذر چکے۔

زېري:

ان کے حالات ج اس ۲۲ سمیں گذر چکے۔

ان کے حالات ج اص ۱۲ سم میں گذر چکے۔

زيدېن وېب(؟-۹۶ھ)

آپ کا نام زید بن وبب ، کنیت ابوسلیمان ، اور ابجهی نبیت ابوسلیمان ، اور ابجهی نبیت به ساله به بی علیق کی زمانه میں اسلام لا چکے تھے کین آپ علیق کی زیارت نہ کر سکے ، آپ نے اپنی قوم کی ایک جماعت کے ساتھ آپ علیق کی زیارت نہ کر سکے ، آپ نے اپنی قوم کی ایک جماعت کے ساتھ آپ علیق کی زیارت کے لئے سفر کیا ہیکن راستہ بی میں آپ علیق کی وفات کی خبر مل گئی ، آپ کا شار کوفہ کے کبارتا بعین میں سے مقال آپ نے حضرت علی ، حضرت ابو فرر مضرت ابنی مسعود اور حضرت ابو لدرواء وغیر ہ رضی الله منام سے روایت کی ۔ اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ابو اسحاق آسیمیں بھم بن حسیم ہم بن حسیم ہما دبن ابی سلیمان اور عدری بن ثابت وغیر دہیں۔

ابن سعد، المجلق اور ابن معین نے کہا کہ وہ تفتہ ہیں، اور ابن حبان نے بھی آپ کا ذکر'' الٹھات''میں کیاہے۔

[لإصابه ارسو۵۸، أسد الغابه ۱۳۹۶؛ لاستیعاب ۱۳۹۸؛ تبذیب انتبذیب سور ۲۴۷]

الزي**لع**ى:

ان کے حالات ج اص ۲۲ سم میں گذر کیے۔

س

سالم بن محمدالسنهو ري (۵۳۵–۱۰۱۵ھ)

بیسالم بن محدمز الدین بن محمد اصر الدین، ابوالنجاق، استبوری المصری بین، آپ کا مسلک مالکی ہے، آپ فقید، محدث اور مالکی مسلک کے مفتی جیے اگر سے تلم مسلک کے مفتی جیے ۔ آپ نے مشم محمد البنونری مالکی جیسے اگر سے تلم حاصل کیا، اور آپ سے ناصر الفقائی اور جم الحیظی وغیرہ نے تلم فقہ حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی، نور حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی، نور حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی، نور حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی، نور حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی، نور حاصل کیا، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں ہر بان الفقائی انور کیا ورخیر الرحل وغیرہ بیں ۔

بعض تصانیف: ''حاشیة علی مختصرالشیخ خلیل'' فقہ میں،اور''لیلة نصف شعبان ''رِایک/سالہہے۔

[نیل الاجهاج ۱۳۶ شجرة النورالزکیهر ۲۸۹ فلاصنه لاأثر ۱۲ ۲۴ و لا علام ۱۲۳ [۱۲]

> سحون: بيرعبدالساإم بن سعيد بين: ان كے مالات ج ٢ص ٨٦ ٨ ين گذر چكے۔

> > السنرهسي: ر

ان کے حالات ج اس ۲۸ سمیں گذر کیے۔

سعید بن جبیر: ان کے حالات جا ص ۶۹ سم میں گذر کھے۔ شيخين

تراجم فقبهاء

الشر نبلا لی: بی^{حس}ن بن عمار میں: ان کے عالات جا ص اسم میں گذر چکے۔

الشروانی: پیعبدالحمید ہیں: ان کےعالات ٹاص اسم میں گذر کھے۔

لشعمی : بیرعامر بن شراحیل ہیں : ان کے عالات جاس ۲۲۴ میں گذر بچے۔

الشوكانی: يەمجمە بن علی الشوكانی بیں: ان كے عالات ج ع ص ۵۹۰ میں گذر چکے۔

شیخ علی القاری: ییلی بن سلطان الهروی ہیں: ان کے حالات جاس 24 میں گذر کچے۔

خ علیش: ان کے حا**لات ج م**ص ۵۹۰ میں گذر <u>ک</u>ے۔

بخین: ان کے حا**لات ج**اص 424 میں گذر <u>ج</u>کے۔ سعيدبن المسيب

سعيد بن المسيب:

ان کے حالات ج اص ۶۹ سم بیں گذر چکے۔

سلمہ بن الما کوع: ان کے حالات ج ۲ ص ۸۸ مہیں گذر چکے۔

السیوطی: ان کےحالات جاس ۲۹ میں گذر کیے۔

ش

الشاطبی: بیابراہیم بن موی ہیں: ان کے حالات ج ۲ص۵۸۸ میں گذر کچے۔

الشافعي:

ان کے حالات ج اس ۲۷ سم میں گذر چکے۔

الشمر المكسى:

ان کے حالات ج اس ۲۷ میں گذر چکے۔

الشر قاوی: پیمبراللہ بن حجازی ہیں: ان کےعالات جاس اسم میں گذر کیے۔ ام سے معروف ہے۔ سلطان ابو المظفر محد اور بگ زیب بہادر (۱۰۴۸ –۱۱۱۸ه هـ) ملقب به المالگیر العین فات عالم کے علم سے شخ فظام اللہ بن پر بان پوری کی زیر گر انی بندوستان کے کبار فقنها و کی ایک مسینی نے بید فقاوی مرتب کئے بتھے، اس کے ابو اب "الهدابی" کی ترتیب کے موافق ہیں، نیز اسے فقاوی کے نام سے موسوم کرنے کی ترتیب کے موافق ہیں، نیز اسے فقاوی کے نام سے موسوم کرنے کی وجہ بیہ ہو کی بیسائل پر مشتمل ہیں۔ بید کتاب متعدد مرتبہ چھ جلد وں میں طبع ہو کی ہے اور اس کے حاشیہ پر" فقاوی فاک" وار" الفتاوی الم زازیہ" ہیں۔

[نزمة الخواطر ٧٥/ ٣٠٠؛ مجلة الوئل الاسلامي الكويةيه شاره ٧٧-١٧: جثم ألمطبو عات ر ٩٨]

> مفار صاحب الفروع: بیمحمد بن کے ہیں: ان کے حالات ج اص ۲۳۴ میں گذر چکے۔

صاحب الكافى: بيرالحاكم الشهيد بين: ان كے عالات خ اص ۵۵ سميں گذر يجے۔

صاحب الكافى: يەعبداللە بن احمد بن قىدامە بىي: ان كے عالات خاص ٨ سوم میں گذر بچے ہیں۔

صاحب کشاف القناع: بیه البهو تی میں: ان کے عالات جاس ۴۵۴ میں گذر چکے۔

صاحب کنایتہ الطالب: بیعلی المنو فی ہیں: ان کے عالات جسم ۳۵۸ میں گذر پچے۔ ص

صاحب تہذیب الفروق: بیچم علی بن حسین مالکی ہیں: دیکھئے: محیلی ۔

> الحساندرالمختار: و تکھئے: الحسکفی : ان کے حالات ج اص ۵۹ میں گذر چکے۔

> لمنتقى: يەمجەبىن على الحصكفى بىي: صاحب الدرامتقى: يەمجەبىن على الحصكفى بىي: ان كے حالات خ اص ۵۹سىس گذر چكے۔

صاحب روضة الطالبين: يبحيى بن شرف النووى ہيں: ان كے عالات ج اص ٩٥ سم ميں گذر چكے۔

> صاحب الشرح الكبير: بيمجمه بن احمد الدسو قي بيں: ان كے حالات ج اص ٣٦٣ ميں گذر كچے۔

> صاحب العنامية: بيرمحمد بن محمود البابرتي بين: ان كے عالات خ اس ۵۵ ميں گذر تھے۔

صاحب الفتاوی الہندیہ: '' الفتاوی اہندیہ'' (جوفقہ حنّی میں ہے) فآوی عالمگیریہ کے

صاحب المغنی: بیرعبدالله بن قندامه بیں: ان کے حالات ج اص ۴ سوم میں گذر کیے۔

الصاوی: بیاحمد بن محمد ہیں: ان کے حالات ج اس سوسے ہم میں گذر بچے۔

ع

عائشه:

ان کے حالات جاس ۵ کے میں گذر کیے۔

عامر بن رہیعہ: ان کے عالات جسس ۵۵سم میں گذر چکے۔

عامر بن سعد (؟-۴٠١ه)

بیعام بن سعد بن ابی و قاص بن انہیب بن عبد مناف، الزمری المد نی بنابعی ہیں، آپ نے اپنے والد، نیز حضرت عثان جضرت عباس بن عبد المطلب ، حضرت ابو ابوب انساری اور حضرت اسامہ بن زید رضی اللہ عنیم وغیرہ سے روایت کی، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں آپ کے صاحبز اوہ داؤد، آپ کے بھا نج اسامیل بن موفو والوں میں آپ کے صاحبز اوہ داؤد، آپ کے بھا نج اسامیل بن موفو وغیرہ ہیں۔ آپ تقد اور زیادہ صدیت بیان کرنے والے ہیں، ابن وغیرہ ہیں۔ آپ تقد اور زیادہ صدیت بیان کرنے والے ہیں، ابن حبان نے آپ کا ذکر ' ثقات' میں کیا ہے۔ اور جلی کا کہنا ہے کہ آپ مدنی نامجی اور ثقد ہیں۔

[طبقات ابن سعد ۵؍ ۱۶۷؛ تبذیب اینهذیب ۵٫ سو۲]

عبدالرحمٰن بن جبیر (؟ -۱۱۸ھ) پیعبد الرحمٰن بن جبیر بن نفیر ، ابوحمید ، الحضر می ، انجمصی منا بعی Ь

طاؤك:

ان کے حالات ج اص ۲ کے ہیں گذر چکے۔

الطبر انى:

ان کے حالات ج ۲ ص ۵۹۱ میں گذر چکے۔

الطمر ی المکی: بیرالمحب الطمر ی بیں: ان کے عالات ج اص ۴۹۰ میں گذر چکے۔

الطحطاوی: بیاحمد بن محمد میں : ان کے حالات ج اس ۲۵ میں گذر چکے۔

ہیں، آپ نے اپنے والد ، حضرت انس بن بالک ، حضرت خالد بن معدان اور حضرت کثیر بن مرہ رضی اللہ عنیم سے روایت کی ہے، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں بھی بن جابر الطائی ، معاویہ بن صالح ، برزید بن حمیر اور زہیر بن سالم وغیرہ ہیں ۔ نسائی اور ابن سعد کہتے ہیں: آپ تقدیجے ۔ ابو حاتم نے آپ کوصالح الحد بیث کہا ہے۔ اور ابن حبان نے آپ کا ذکر ثقات میں کیا ہے۔

[تبذیب التبذیب۲۱۵۳؛ شذرات الذبب۱۷۵۳؛ طبقات این سعد ۷۵۵۲۲]

> عبدالرحمٰن بنعوف: ان کےعالات ج ۲ص ۵۹۴ میں گذر کیے۔

> > عبدالرحمٰن العمادى: ديكھئے: العمادى۔ عبدالغني النابلسي :

ان کے حالات ج اس ۷۷ میں گذر کیے۔

عبدالقادر بن محمد بن يحيى (٧١٩ - ١٠٣٣ هـ)

بیت برالقادر بن محد بن کی بن کرم الحینی، اللم ی، کی، شافعی بیس، آپ عالم، اویب، نظم ونثر اور دیگر انسام علوم کے ماہر نظم، باره سال کی عمر بیس آپ نے آن کریم حفظ کرلیاتھا، اور متعد دمتون کے حافظ بھے، آپ نے شمس محد الربل المصر ی الشافعی، محد الحر اوی الحقی اور عبد الربل المصر ی الشافعی، محد الحر اوی الحقی اور عبد الربل المصر ی الشافعی، محد الحر اوی الحقی اور عبد الربل المصر ی الشافعی، محد الحر اوی الحقی اور عبد الربل المصر ی الشافعی، محد الحر اوی الحقی اور عبد الحرب وغیرہ سے علم فقد حاصل کیا۔

العض تصانیف: "عیون المصدائل من آعیان الوسائل"، العض تعلی حسن المسیرة"، اور آپ کے بعض علمی رسائل المسیروة علی حسن المسیرة"، اور آپ کے بعض علمی رسائل

بي جيد: "إفحام المجاري في أفهام البخاري" اور "سل السيف على حل كيف" وغيره.

[خلاصته لاأثر ۴ر ۵۵۷؛ البدر الطالع ۱/۱۶ سو؛ لاأعلام سهر۱۹۸؛ جم المولفين ۵ر سوسو]

> عبدالله بن احمد بن صنبل: ان کے عالات جساص ۸۶ سم میں گذر کھے۔

> > عبدالكريم بن محد الفكون: د كيھئے: الفكون -

عبدالله بن الحسن (۵۰۵–۵۱۴۵)

ی عبد اللہ بن الحسن بن الحسن بن علی بن ابی طالب ہیں، ابو محمد

کنیت ، اور ہائمی وقرشی نسب ہے، آپ تا بعی اور مدینہ کے رہنے

والے ہیں، آپ اپنے والمدین، اپنے دادا کے بتیازاد بھائی عبداللہ

بن جعفر، ایرائیم بن محمد بن طلحہ اور عکرمہ وغیرہ سے روایت کرتے

ہیں۔اور آپ سے روایت کرنے والوں میں آپ کے دو
صاحبزادے موتی اور تحیی ، نیز مالک، لیث بن ابی سلیم، او بکر بن
صاحبزادے موتی اور تحیی ، نیز مالک، لیث بن المطلب بن عبداللہ وغیرہ

حفص بن عمر، ثوری ، اور عبدالعزیز بن المطلب بن عبداللہ وغیرہ

ہیں۔طبری نے کہا ہے: آپ بڑے وجید، بڑے زبان آ ور،صاحب

زبان وبیان اور صاحب عزت بھے۔حضرت عمر بن عبدالعزیز کے

زبان وبیان اور صاحب عزت بھے۔حضرت عمر بن عبدالعزیز کے

یباں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

یباں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

یباں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

یباں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

یہاں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

یہاں آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

المین بیان آپ کو بلند مقام حاصل تھا۔ ابن معین کہتے ہیں کہ آپ ثقنہ

المین بیان نے آپ کاذ کر ثقات کے تیسر کے طبقہ میں کیا ہے۔

المین بیان آپ کو بلند میا کہ کہند نیب گائید نیان کے کائید نیب گائید کیب گائید ک

عبدالله بن الزبيرالحميدي (؟ - ١٩ ٢ هـ)

ریعبد اللہ بن الزبیر بن سیسی بن عبید اللہ بن اسامہ، ابوبکر،
الحمیدی، کی ہیں، آپ المرحدیث میں سے ہیں۔ آپ نے
اکن عبینہ محد بن اور ایس الثافعی، ولید بن مسلم اور عبد العزیز بن ابی حازم
وغیرہ سے روایت کی۔ اور آپ سے روایت کرنے والوں میں بخاری،
مسلم، ابود اور دبر مذی بانسائی اور ابن ماجہ وغیرہ ہیں۔ آپ امام ثافعی
کے ساتھ مکہ سے مصر تشریف لائے اور وفات تک ان کے ساتھ
رہے، پھر مکہ واپس آئے اور وہاں فتوی دینے میں مشغول رہے، آپ
سے بخاری نے (۷۵) احادیث روایت کیس، اور 'مند الحمیدی' آپ بی کی ہے۔
آپ بی کی ہے۔

[تبذیب البندیب ۱۵۰۳، الطبقات الکبری ۵۰۳،۵؛ لأعلام ۱۹۸۴]

عبدالله بن الزبير:

ان کے حالات ٹی اص ۲ کے ہم میں گذر چکے۔

عبداللہ بن زید لاأ نصاری: ان کے عالات ج سوس ۸۶ سمیں گذر کھے۔

عبدالله بن سام (؟ - سومهم ه

یہ عبد اللہ بن ساام بن الحارث ہیں، کنیت ابو یوسف اور فہبت الکانساری ہے، آپ صحابی ہیں، آپ پہلے یہودی بتھ، نبی علی اللہ اللہ جب مدید تشریف الائے تو آپ مسلمان ہوگئے، آپ کا پہلا نام "مسین" تھا، پھر رسول اللہ علی آپ کا نام "عبد اللہ" رکھ دیا تھا۔ آپ کا حام اللہ علی آپ کا الم من بنی دیا تھا۔ آپ کے متعلق آیت : "وشھد شاھد من بنی

اِسوائيل" اور آيت "ومن عنده علم الكتاب" ازل ہوئی۔
آپ نبی عليف ہے روايت كرتے ہيں، اور آپ ہے روايت كرنے
والوں ہيں آپ كے دوصاحبز ادے يوسف اور محداور آپ كے پوت محزہ بن يوسف بن عبد اللہ اور حضرت ابو ہر رہ فغيرہ ہيں، آپ حضرت عمر محمد من ہيں، آپ

[الاصابه ۲۰۱۴ اسد الغابه سر۱۶۰ تبذیب النبذیب۵/۹۶ و: لأعلام ۲۰ سر۲۳۰]

عبدالله بن مغفل (؟-۵4ھ)

یے عبد اللہ اور ایک قول کے مطابق عبد منہ منہ اور ایک قول کے مطابق عبد منہ بن عفیف ہیں ، کنیت ابوسعید اور نسبت المو نی ہے ، آپ اصحاب شجر ہ رضی اللہ تعالی عنہ میں سے ایک صحابی ہیں ، آپ مدینہ میں ہے ، پھر آپ ان دی حضرات میں سے ہیں جنہیں حضرت عمر نے لوگوں کوفقہ سکھانے کے لئے بھر ہ بھیجا تھا۔ آپ نے نبی علی اللہ اور حضرت اللہ اور حضرت وایت کی ، اور آپ سے ابو بکر وحضرت عثمان رضی اللہ عنہ ما وغیر ہ سے روایت کی ، اور آپ سے روایت کی ، اور آپ سے مید اللہ اور سعید بن جبیر وغیرہ ہیں ۔

[لإصابه ۲۶۲۶۳؛ تبذیب انبذیب۱۲۴۳؛ لأعلام ۱۲۸۲م

> عبدالملک بن المایشون: ان کےعالات جاص ۹ سوہ میں گذر چکے۔

> > عبده بن الي لبابه: د يکھئے: ابن الي لبابه-

العما دی(۸۷۹-۵۱۱ه)

بی عبد الرحمان بن محد بن محد بن محد بن عما والدین، العمادی ہیں،
و شق کے رہنے والے بتھے، آپ کا مسلک حنی ہے۔ آپ فقید، مفسر
اور ادبیب بتھے، آپ و شق میں افقاء وقد رایس کے منصب پر فائز
رہے، پھر ال کے بعد مدرسہ سلیمانیہ کے ذمہ داررہے۔ آپ نے
حسن البورینی ، محد بن محب الدین الجھی، قاضی محب الدین اور شمس
بن المعقاری وغیرہ سے علم حاصل کیا، اور آپ سے علم حاصل کرنے
والوں میں احد بن زین الدین المعظی وغیرہ ہیں۔

بعض تصانيف: "تحوير التأويل" تفير بين، "المستطاع من الزاد" حقى مسائل حج بين، "كتاب الهدية" عبادات فقد بين، اور "الروضة الريافي من دفن بداريا".

علامة الأثر ٢٠/٨ سوة بدية العارفين الر٩٨٥: لأعلام مر٨٠١: مجتم المولفين ١٩١٨]

> عمر بن الخطاب: ان کے حالات خاص ۲۹ میں گذر کیے۔

> عمر بن عبدالعزیر: ان کےعالات جاس ۲۸ میں گذر کھے۔

عمروبن دینار: ان کے حالات ج کے سس ۱۳۴۴ میں گذر چکے۔

عمروبن شعیب: ان کے حالات جسم ۳۵۸ میں گذر چکے۔ عتبان بن مالك (؟ -تقريباً ٥٠ ص

یہ عتبان بن ما لک بن عمر وبن العجلان بن زید ، الانساری ، الخزرجی ، السالمی ہیں ، آپ غز وہ بدر میں شریک ہونے والے صحابہ میں سے ایک صحابی ہیں ، آپ علی ہے نے آپ کے اور حضرت عمر ﷺ نے آپ کے اور حضرت عمر ﷺ کے مالین موافات کر اوی تھی ۔ آپ نے نبی علی ہیں ، آپ میں اور آئے اور آئے اور آئے سین آس مجمود بن الربی اور آئے سین اس مجمود بن الربی اور آئے سین بین ۔ آپ کی (۱۰) حدیثیں ہیں ۔

[لإصابه ۱۳۵۲، تبذیب انتبذیب ۲۰۳۷؛ لأعلام ۱۳۵۹مره۳۵]

> عثان بن عفان: سر

ان کے حالات ج اس ۷۷۴ میں گذر کیے۔

العز بن عبدالسام : بيعبدالعزيز بن عبدالسام بين : ان كے حالات ج موس ۵۹۴ ميں گذر كيے۔

عطاء:

ان کے حالات ج اص ۷۷ سم میں گذر چکے۔

على بن اني طالب:

ان کے حالات ج اص ۹ کے میں گذر کیا۔

علی لااُجہوری: بیلی بن محمد ہیں: ان کے حالات ج اص ۴۳۸ میں گذر بچکے۔

عميره بنت مسعود (؟-؟)

آپ کا نام عمیرہ بنت مسعود انساریہ ہے۔ آپ محابی ہیں۔ جعفر بن محمود بن محمد من مسلمہ کہتے ہیں کہ ان کی دادی عمیرہ بنت مسعود نے ان سے بیان کیا کرا وہ اور ان کی بہنیں رسول اللہ علی ہے کہ پاس بیعت کی غرض سے گئیں اور وہ کل پاپٹی تحمیں، انہوں نے آپ علی ہوگا کوشت کھاتے ہوئے پایا، آپ علی ہوئی نے ان کے لئے ایک بوٹی چہائی ، پھر وہ ان کود سے دی، چنا نچ ہم نے وہ آئیم کرلی، ان میں سے ہر ایک نے ایک حصہ چبایا، تو وفات تک انہوں نے کرلی، ان میں سے ہر ایک نے ایک حصہ چبایا، تو وفات تک انہوں نے اپنے منہ میں کوئی بربونہیں پائی، اور نہ آئیں منہ کی کوئی بیاری ہوئی "۔

[لإصابه ٤٠٨/٢ عنو: أسد الغابه ٢٠٨/١]

اعینی: اعینی:

ان کے حالات ج من ۵۹۶ میں گذر کیے۔

غ

الغزالي:

ان کے حالات ج اص ۸۱ سم میں گذر کیے۔

ف

الفكون(؟-٣٧٠١هـ)

بی عبدالکریم بن محد بن عبدالکریم ، ابو محد ، الفکون بسطینی ، مالکی بیس ، آپ اور بیس اور نحوی بیس ۔ آپ نے اپنے والد اور عمر الوز ان اور طاہر بن زیان معطینی وغیرہ سے علوم حاصل کئے ، اور آپ سے علم حاصل کرنے والوں میں آپ کے صاحبز اور محد ، نیز عیسی التعالی اور سالم العیاشی وغیرہ بیس ۔

بعض تصانف: "شوح نظم المكودي"، ايك رماله "تحويم الدخان" پر ہے، "حوادث فقراء الوقت"، اور اجروم پر "شوح شواهد الشويف" -

[شجرة النورالز كيدرو، سوزلاً علام مهر ١٤٩]

ق

ماضی ابویعلی: ان کے حالات ج اص ۱۹۸۳ میں گذر کیے۔ الكرمى صاحب دليل الطالب: بيمرى بن يوسف الكرمى مدن.

ان کے حالات ج کس مہم میں گذر کیے۔

ل

اللقانی: پیچمر بن حسن ہیں: ان کے حالات جاس ۴۸۸ میں گذر کیجے۔

اللكنوي(١٢٦٣-١٨-١١١ه)

آپ کا نام محمد عبدائی بن محمد عبدانحلیم، کنیت ابو الحسنات ہے، بندوستان میں لکھنو کے رہنے والے، انساری تھے، آپ عدیث اور تراجم رجال کے ماہر بن اور فقہاءاحناف میں سے تھے۔

بعض تصانف: "مجموعة الفتاوى"، "نفع المفتى والسائل بجمع متفرقات المسائل"، "تحقيق العجيب" فقد شن، "الآثار المرفوعة في الأخبار الموضوعة"، "الفوائد البهية في تواجم الحنفية" اور "الرفع والتكميل في الجرح والتعليل".

[بدية العارفين ١٦٠ ٨٠٠؛ لأعلام ١٩٥٤]

قاضى حسين

قاضى حسين:

ان کے حالات ج عص ۵۹۸ میں گذر کیے۔

قاضى عياض:

ان کے حالات ج اص ۸۹۳ ہمیں گذر چکے۔

قاده:

ان کے حالات ج اص ۸۴ میں گذر چکے۔

القرافي:

ان کے حالات ج اس ۸۴ مهیں گذر چکے۔

القرطبي:

ان کے حالات ج عص ۹۸ میں گذر چکے۔

لقليو بي:

ان کے حالات ج اص ۸۵ سم میں گذر کیے۔

ک

الكرخى: يى عبيد الله بن الحسين بيں: ان كے عالات خ اص ٨٦ س بيں گذر كيے۔ تراجم فقباء

المازري

استعفا وسےدیا۔

بعض تصانيف:"الفتاوى المهدية في الوقائع المصوية"-[إيناح المكنون ٢/١٥٨: لأعلام كرسوه: معمم المؤلفين ١٢١/١]

محرعلی المالکی (۱۲۸۷–۲۳۳۱ھ)

یہ محرطی بن حسین بن اہر ائیم، مالکی ہیں، فقید اور فضا اوتجاز میں سے بھے، آپ مغربی الاصل ہیں، آپ کی ولادت اور تعلیم مکد میں ہوئی، اور ۲ ہم سلاھ میں مکدی میں مالکی افتاء کے منصب پر فائز ہوئے۔

بعض تصانیف: "تھلیب الفروق" فقد میں، جس میں آپ نے منفر وق القر افی "کرتہذ ہیں کی ہے، اور "تعدریب الطلاب" نحو میں۔

[لأ علام محر 194 ؛ جم المؤلفين ١١ر ١٨ سو]

المرداوى:

ان کے حالات جاس ۹۴ میں گذر کیا۔

المرغيناني:

ان کے حالات ج اص ۴۹۴ میں گذر چکے۔

المزنی: بیاساعیل بن بخی میں: ان کےعالات جاس ۴۹۲ میں گذر کیے۔

ر معافرین انس الجهینی : ان کے حالات ج۲ ص ۹۷ میں گذر چکے۔ المازري:

ان کےحالات ج اس ۸۹ مہیں گذر چکے۔

ما لك:

ان کے حالات ج اص ۸۹ سمیس گذر چکے۔

الهتولی: به عبدالرحمٰن بن مامون مبی: ان کےحالات ج ۴س ۲۰۰ میں گذر چکے۔

محامد:

ان کے حالات ج اص ۹۰ ہم میں گذر چکے۔

محد بن الحن:

ان کے حالات ج اص ۹۱ میں گذر چکے۔

محد العباس المهدي (۱۲۴۳ – ۱۵ ۱۳۱۵)

آپ کا نام محمد العباس المهدی بن محمد المین ہے، آپ فقید اور مسلکا حنی ہیں، دیار مصرید کے فقی رہے، آپ جامع ازہر کی مشیخت پر فائز ہوئے، پھر مشیخت کے منصب سے معز ول کئے گئے، پھر اس پر فائز کئے گئے، پھر آپ نے افقاء اور مشیخت دونوں مناصب سے تراجم فقهاء ميمون بن مهران

مکحول:

ان کے حالات ج اس سوم میں گذر کیے۔

معاویہ بن انی سفیان معاویہ بن انی سفیان : ان کے عالات نے موس ۲۰۶۳ میں گذر کیے۔

معاويه بن الحكم (؟ -؟)

یہ معاویہ بن انجام اسلمی صحابی ہیں، آپ نبی علی ہے۔ روایت کرتے ہیں، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں آپ کے صاحبز اور کثیر، نیز عطاء بن بیار اور ابوسلمہ بن عبد ارجمن ہیں۔ ابوعم کاقول ہے کہ آپ مدیند آ کر بنوسلیم میں قیام فر مایا کرتے تھے۔ آپ نے رسول اللہ علی ہے ایک روایت کی ہے جو کبانت ،طیر ہ، خط، چھینئے والے کا جواب و بنے اور بائدی کو آزاد کرنے کے مضامین پر مشتمل ہے۔ ابن جحر کاقول ہے کہ آپ کی ایک دوسری حدیث ہے مشتمل ہے۔ ابن جحر کاقول ہے کہ آپ کی ایک دوسری حدیث ہے جے آپ ہے صاحبز ادہ کثیر بن معاوید وایت کرتے ہیں۔ جستم ہے ہے آپ کے صاحبز ادہ کثیر بن معاوید وایت کرتے ہیں۔ آئبذیب المہد یب ۱۱۷۵ء

معمر بن راشد (۹۵–۱۵۳ھ)

یہ معمر بن راشد بن ابی عمر وہ ابوعروہ بنبت لا زدی اور ولاء
کے خاظ ہے الحد انی ہیں ، آپ فقیعہ خافظ حدیث ، متقن اور ثقہ ہیں۔
اہل بھرہ میں ہے ہیں۔ آپ ٹابت البنانی ، قیادہ ، زہری ، عاصم لا حول ، صالح بن کیبان اور عبد اللہ بن طائس وغیرہ ہے روایت کرتے ہیں ، اور آپ ہے روایت کرنے والوں میں آپ کے شیخ کرتے ہیں ، اور آپ ہے روایت کرنے والوں میں آپ کے شیخ بن ابی کثیر ، عمر و بن و بنار ، ابو اسحاق المبعی ، این مبارک ، این عبینہ اور نیسی بن یونس وغیرہ ہیں ، ابن معین اور نسانی کا کہنا ہے کہ آپ لاکھیں ، اور تعربی ، اور تعربی کرتے ہیں ، این معین اور نسانی کا کہنا ہے کہ آپ لاکھیں ہیں ، اور تعربی ، این معین اور نسانی کا کہنا ہے کہ آپ لاکھیں ہیں ، اور تعربی کی آپ لوکوں میں ہیں ہیں ۔ آپ تھی ہیں ، اور تعربی ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ ۱۸ اور المام ۱۸ میز ان الاعتدال سام ۱۸ میز ان الاعتدال ان الاعتدال سام ۱۸ میز ان

مهنالاً نباری(؟ - ؟)

آپ کا نام مہنا بن تحیی ، کنیت ابو عبداللہ ، اور نبیت الثامی ، السلمی ہے۔ آپ محدث وفقید اور امام احمد کے تاافدہ میں سے بیں ، آپ بقید بن الولید ، سمرہ بن رہید ، مکی بن ابرائیم ، اور امام احمد بن حنبل وغیرہ سے روایت کرنے بیں ، اور آپ سے روایت کرنے والوں میں حمدان الوراق ، ابرائیم نیسا پوری اور عبداللہ بن احمد بن حمنبل وغیرہ بیں۔

ابو بکر بن الخاول نے کہا: مہنا امام احمد کے کبار تالدہ میں سے
عضر، اور امام احمد ان کا اگر ام کرتے تھے، اور ان کے حق صحبت کا لحاظ
فر ماتے تھے، وہ وفات تک ان کے ساتھ رہے، ان کے مسائل
کثرت کی وجہ سے مے شار ہیں ۔عبد اللہ بن احمد نے ان سے مروی
بہت سے مسائل کو دی سے زائد اجز او میں لکھا ہے۔عبد اللہ کہتے
ہیں: مہنا کا قول ہے کہ میں ابوعبداللہ کے ساتھ تینتا لیس سال رہا۔
اور دارقطنی کا قول ہے کہ مینا شامی ثفتہ اورشر بف ہیں۔

[طبقات الحنابلدلاً بي يعلى الره ١٠٥٣ من مناقب للإيام احمد لا بن الجوزي ريوم ١١٠١١٨]

میمون بن مبران (۷۳–۱۱۷ھ)

آپ کا نام میمون بن میران، کنیت ابو ابوب، نسبت الجزری ہے، اور (جزیر ہُ فرات پیر کے علاقہ میں سے) رقہ کی طرف نسبت کرتے ہوئے آپ کی نسبت الرقی بھی ہے، آپ تا بعی اور فقیہ و قاضی تھے۔ آپ حضرت عائشہ، حضرت ابو ہریر د، حضرت ابن عباس

اور حضرت این عمر رضی الله عنیم وغیر و سے روایت کرتے ہیں ، اور آپ

القویل جعفر بن بر قان ، حبیب بن الشہید اور علی بن الحکم البنائی وغیر و

القویل جعفر بن بر قان ، حبیب بن الشہید اور علی بن الحکم البنائی وغیر و

ہیں ۔ آپ کو حضرت عمر بن عبد العزیز نے ''رقہ'' کے خراج کا عامل
اور قاضی بنایا تھا۔ عبد الله بن احمد کہتے ہیں : میں نے اپنے والدکو کہتے
ہوئے سنا کہ میمون بن مہر ان عکر مہ سے زیا دہ ثقتہ ہیں ۔ جلی اور نسائی

گھتے ہیں کہ آپ جزری ، تا بعی اور ثقتہ ہیں ۔ ابن حبان نے آپ کا ذکر
شقات میں کیا ہے ۔ اور الوالمین کا قول ہے کہ میں نے میمون بن میر ان
سے انعنل کوئی آدی نہیں دیکھا۔

ایک میں نے میمون بن میں دیکھا۔

[تبذیب التبذیب۱۰/۹۰۰ تذکرة الحفاظ ۱/۳۹۰ لأعلام۱/۸/۳۰]

التشبه "اور"الكواكب السائوة" ـ

[خلاصته الانژسمر۱۸۹؛مقدمة الكواكب السائره الرسوة لأعلام ۲۷ (۲۹۳]

> انحی: بیابرا ہیم انحی ہیں: انحی این کے حالات جاس ۴۲۷ میں گذر کیے۔

> > النووى:

ان کے حالات ٹی اص ۹۵ میں گذر کیے۔

ي

يجل بن معين:

ان کے حا**لات** ج اس ۹۷ سم میں گذر چکے۔

يوسف الصفتى (؟-١١٩٣هـ)

به بوسف بن امائل بن سعید، انسفتی مصری، مالکی بیس، آپ فقیه نبوی اور واعظ بیضه -

بعض تصانف: "حاشية على الجواهر الزكية في حل الفاظ العشماوية لابن تركي" فقديش، "نزهة الأرواح في بعض أوصاف الجنة دار الأفراح" اور "شرح القناعة"۔

[بدية العارفين ٢/٥٦٩؛ إليناح أنمكون ٢/٢٦، ١٣٥٥ معجم المؤلفين سوار ٤٤٣] ك

مجم الدين الغرسي (١٤٧٥ - ١٠٦١هـ)

بیر محد بن محمد بن احمد، او الدکارم، جم الدین، الغزی، العامری، القرشی، الدشتی بیل-آپ مؤرخ محقق اوراد بیب بتھ، آپ نے شخ عثان الیمانی، شخ یجلی العماری، زین الدین عمر بن سلطان اور شہاب الدین العیثا وی وغیرہ سے علوم حاصل کئے، پھر درس وقد رایس میں مصروف ہو گئے، اور شامیہ اور عمر بیا میں پڑھایا، عیثا وی نے آپ کو فتا وی نویمی کی اجازت دی۔

بعض تصانف: "تحفة الطلاب"، 'فرائض المنهاج"، "تحفة النظام في تكبيرة الإحرام" فقد ش، "التنبه في